पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय

गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार

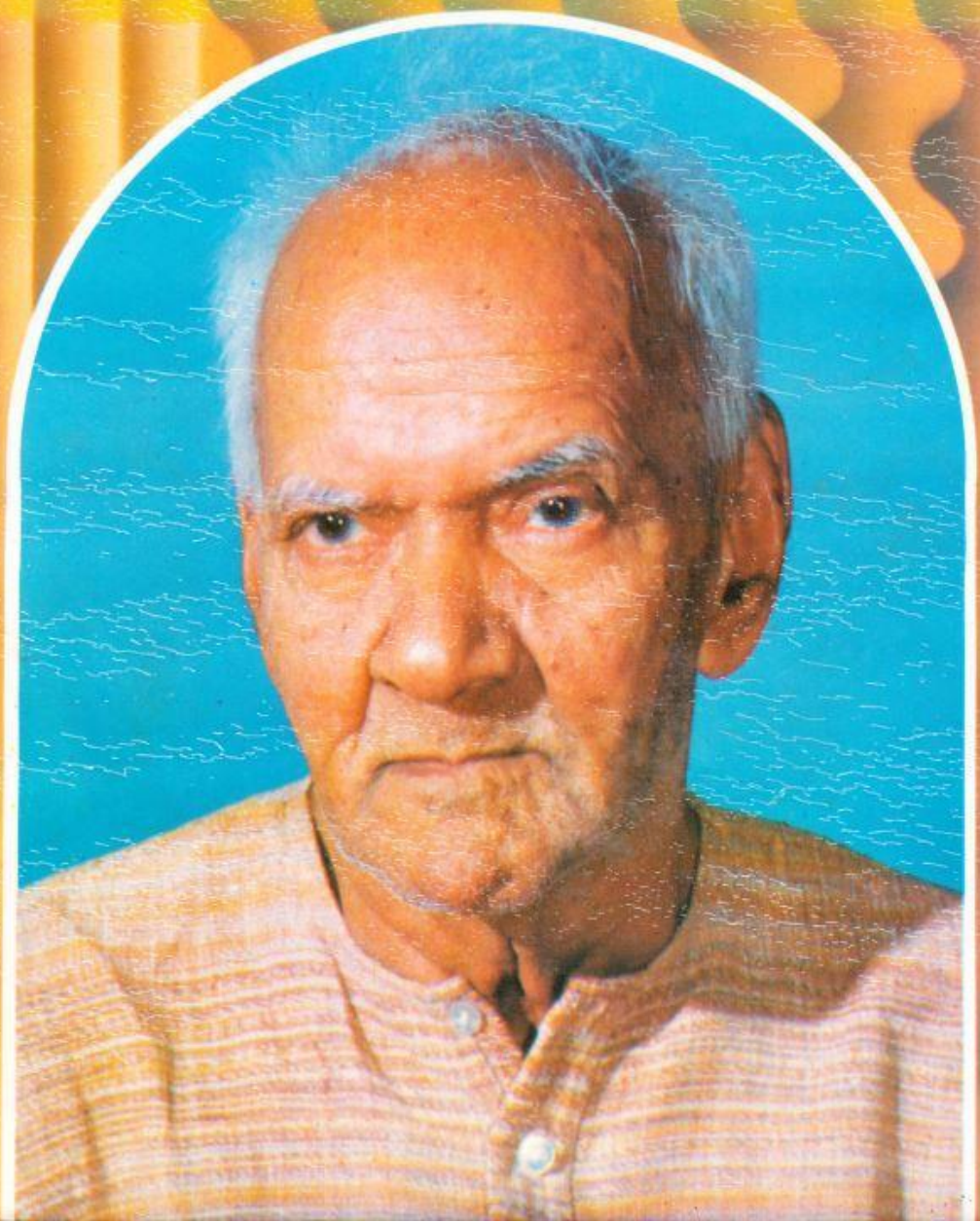

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषय-सूची

गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार

गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार

सर्वशक्तिमान गायत्री १.१

गायत्री की दिव्य सिद्धियाँ

आत्मोन्नति का सुनिश्चित मार्ग २.१
गुप्त शक्ति-भण्डार की कुंजी २.२
गायत्री द्वारा सम्पूर्ण दुःखों का निवारण २.३
गायत्री कथा प्रसंगों में २.७
गायत्री उपासना से ब्रह्मवर्चस् की प्राप्ति २.९
गायत्री-साधना से वेदज्ञान की प्राप्ति २.१०
ध्रुव को परमपद मिला २.१२
गायत्री उपासना से लौकिक और आत्मिक सफलताएँ २.१४
गायत्री उपासना के मूर्तिमान चमत्कार
महात्मा आनन्द स्वामी २.१७
माधवाचार्य की वाणी-सिद्धि २.१९
विद्यारण्य की प्रज्ञा प्राप्ति २.२०
गायत्री का आग्नेयास्त्र २.२१
काठिया बाबा की गायत्री साधना २.२४
उघड़ जोशी का अतीन्द्रिय ज्ञान २.२४
विद्या विभूषण मुकुटराम जी २.२५
गायत्री उपासना की सिद्धियाँ २.२६
गायत्री की तन्त्र साधना २.२७
पूर्व जन्मों का ज्ञान २.२८
मृत्यु का पूर्व ज्ञान २.२९
इच्छा मृत्यु २.२९
बाबा खूटी सिंह २.३०
गायत्री उपासना के सत्यपरिणाम सुनिश्चित हैं २.३०
गायत्री उपासक सौम शर्मा २.३१
सन्त चरणदास और उनकी गायत्री सिद्धि २.३२
बाबा राम भरोसे की गायत्री साधना २.३३
पानी वाले महाराज की दिव्य दृष्टि २.३३
स्वामी दयानन्द और गायत्री उपासना २.३४
गायत्री साधना से दूसरा जन्म २.३५
आद्यशक्ति की साधना एवं सिद्धियों से साक्षात्कार २.३६
गायत्री साधना की सिद्धि २.३८
बूटी सिद्ध श्री महाराज २.३९
गायत्री सिद्ध—मथुरादत्त ब्रह्मचारी २.३९

गायत्री द्वारा भौतिक सफलताएँ

गायत्री द्वारा भौतिक सफलताएँ ३.१
सिद्ध पुरुषों की झांकी ३.१
गायत्री सिद्ध हरीहर बाबा ३.२
स्वामी मगनानन्द जी ३.३
स्वेच्छा निर्माण ३.३
गायत्री उपासक का ब्रह्मतेज ३.४
एक ब्रह्मनिष्ठ तपस्वी ३.५
नैष्ठिक गायत्री साधक ३.६
गायत्री महिमा का प्रत्यक्ष दर्शन ३.६
पूजा प्रतिष्ठा का महँगा सौदा ३.६
गायत्री के कुछ अनुभव ३.७
गायत्री की सिद्धियाँ ३.८
कुण्डलिनी में आत्म साक्षात्कार ३.९
सुख शान्ति की दिव्य धारा ३.१०
मृत्यु की वापिसी ३.११
माता का प्रत्यक्ष अनुग्रह ३.१२
पतिदेव के तीन आदेश ३.१२
गायत्री साधना मेरी प्रवृत्ति ३.१३
यज्ञ आयोजन की पूर्ति ३.१४
तरण तारिणी माता ३.१४
नारी प्रतिष्ठा का पुण्य आन्दोलन ३.१५

विपत्ति निवारिणी गायत्री

समस्त उलझनों का एक हल ४.१
दुर्वृत्तियों से पीछा छूटा ४.३
गायत्री उपासना का प्रयोजन ४.४
आत्मिक काया-कल्प ४.५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भयंकर अभियोग से निर्दोष मुक्ति ४.६
कठिनाईयों का निवारण ४.६
निराशा में आशा की किरण ४.७
गायत्री के अनुग्रह का परिचय ४.७
सेवा और सात्विकता का विकास ४.८
तपस्विनी रामप्यारी देवी ४.९
परम करुणामयी माता ४.१०
आत्म विकास के पथ पर ४.११
लड़के का सुधार ४.१२
कष्टरहित महायात्रा ४.१३
अन्धे होने पर भी सर्वशास्त्र पारंगत ४.१४
सर्वोपरि गायत्री ४.१४
पच्चीस रुपये वेतन से तीन सौ हो गये ४.१५
सकाम से निष्काम साधना ४.१५
चिकित्सा में सफलता ४.१६
छोटी नौकरी से धनी व्यापारी ४.१६
गई लक्ष्मी का पुनरागमन ४.१७
पिताजी की तपस्या का प्रतिफल ४.१८
पुत्र एवं स्वर्ण घट की प्राप्ति ४.१८
गायत्री के निजी अनुभव ४.१९
असफलता में सफलता का झांकी ४.१९
नौकरी मिली ४.२०
गायत्री की कृपा से प्रिंसिपल बना ४.२०
गायत्री की कृपा से उच्च पद ४.२१
परीक्षा में उत्तीर्ण ४.२२
बिगड़ी को बनाने वाली माता ४.२३
स्वभाव परिवर्तन ४.२३
प्रलोभन से पतन ४.२३
प्रतिष्ठा और सम्पन्नता चौगुनी ४.२४
विद्या बुद्धि की प्रखरता ४.२४
मनोवांछित पति-पत्नी ४.२५
उच्च शिक्षा की सुविधा ४.२६
जप से मैट्रिक परीक्षा में पास ४.२७
पुरश्चरण और पाठ कराने से लाभ ४.२७
गायत्री पर अटूट विश्वास ४.२७
गायत्री द्वारा प्राण रक्षा ४.२८
अनेक आपत्तियों से छुटकारा ४.२८
सर्प विष विसर्जन ४.२९
डकैती के अभियोग से रिहाई ४.२९
घातक अनिष्ट से प्रतिरक्षा ४.३०
जेल से छुटकारा ४.३१

गायत्री साधना से आपत्तियों का निवारण

गायत्री साधना से आपत्तियों का निवारण ५.१
गायत्री उपासना से सन्तान लाभ ५.२
वन्ध्या को सन्तान मिली ५.४
सुसन्तति के लिए गायत्री साधन ५.४
महात्मा उड़िया बाबा ५.५
अधूरी साधना में भी दिव्य अनुभव ५.५
बिछुड़े हुए बालक की पुनर्मिलन ५.६
गायत्री द्वारा सुसंतति की प्राप्ति ५.७
साधना के प्रारम्भिक अनुभव ५.८
साधना के पथ पर ५.८
असाध्य बीमारियों से छुटकारा ५.९
शत्रुओं का षड्यंत्र विफल ५.९
गायब लड़के का लौटना ५.१०
आश्चर्यजनक अनुभव ५.११
गायत्री का जादू ५.१२
डॉक्टरी बिलों से छुटकारा ५.१२
गायत्री द्वारा प्राण रक्षा ५.१३
मृतक को जीवन दिया ५.१३
तपैदिक से जीवन रक्षा ५.१४
महामारी और रोग की शान्ति ५.१४
निराशा में आशा ५.१५
वेदमाता गायत्री ५.१५
२० वर्ष पुराने रोगों से छुटकारा ५.१६
पागलपन ठीक हुआ ५.१७
नवजीवन का वरदान ५.१७
दुष्ट वीर्यरोगों से छुटकारा ५.१८
स्वप्नदोष से छुटकारा ५.१९
रक्त-विकार की शुद्धि ५.२०
कठिन उदर रोगों से निवृत्ति ५.२०
कन्या के लिए सुयोग्य वर मिला ५.२१
टूटा जहाज पार लगा ५.२२
शत्रुता का अन्त ५.२३
गृह-कलह का निवारण ५.२४
पति और सास का सुधार ५.२५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कन्या का शानदार विवाह ५.२७
अन्याय का प्रतिफल ५.२७
गायत्री द्वारा विघ्नों का विनाश ५.२८
अशान्ति से शान्ति की ओर ५.२९
प्रेतात्मा का शमन ५.३०
भूतबाधा से निवृत ५.३१
प्रेत प्रकोप से शमन ५.३२
व्यभिचारी का अन्त ५.३२
चिकित्सा में सफलता का अद्‌भुत चमत्कार ५.३२

गायत्री से व्याधि-निवारण

गायत्री से व्याधि-निवारण ६.१
नया जीवन मिला ६.३
मरणासन्न रोग से मुक्ति ६.८
पांडु रोग से छुटकारा मिला ६.९
स्वास्थ्य रक्षक-माँ गायत्री ६.१२
गायत्री उपासना के अनुभव ६.१४
सन्तोषजनक स्थिति प्राप्त ६.१५
निराशा के बादल हट गये ६.१८
निराशा में आशा ६.१९
दुर्भाग्य की समाप्ति ६.२२
प्रारब्ध भागों का सरल भुगतान ६.२२
गायत्री का शरण से नवजीवन दान ६.२४
महाशक्ति की समीपता ६.२५
अनेक कठिनाईयों का निवारण ६.२५
बच्चों को सुख शान्ति ६.२६
माँ की कृपा के अनुभव ६.२७
कुष्ठ निवारिणी माता ६.२८
तन्दुरुस्ती, प्रतिष्ठा और आजीविका की पुनः प्राप्ति ६.२८
गायत्री माता की शान्ति दायक गोद ६.२९
गायत्री द्वारा रोग निवारण ६.३०
गायत्री की महिमा ६.३१
गायत्री की अलौकिक शक्ति ६.३१

गायत्री द्वारा संकट निवारण

गायत्री द्वारा संकट निवारण ७.१
संकट और कष्टों के निवारण में गायत्री शक्ति का प्रयोग ७.१२
गायत्री उपासना के अनुभव ७.१५
माता की कृपा के अनुभव ७.१८
गायत्री उपासना के अनन्त लाभ ७.२४
बाघ को भी परास्त करने वाला अस्त्र ७.२६
संकट में सहायता करने वाली गायत्री माता ७.२६
गायत्री साधना निष्फल नहीं होती ७.२७
उपासना के कुछ प्रत्यक्ष परिणाम ७.२८
कठिन प्रारब्ध से सहज छुटकारा ७.२९
अनेक समस्याओं का समाधान ७.३२
गायत्री द्वारा प्रेतबाधा का निवारण ७.३३
पिताजी की प्राण रक्षा ७.३४
महात्मा गायत्री स्वरूप जी ७.३४
अभीष्ट स्थान पर नियुक्ति ७.३५
श्री गायत्री सिद्धि ७.३६
गायत्री की अद्‌भुत शक्ति ७.३६

गायत्री द्वारा सम्पूर्ण दुःखों का निवारण

गायत्री द्वारा सम्पूर्ण दुःखों का निवारण ८.१
गायत्री से सद्‌बुद्धि और सुमति ८.३
विद्या बुद्धि की अधिष्ठात्री गायत्री ८.८
एक सच्ची घटना ८.९
गायत्री एक अमोघ अस्त्र ८.९
परीक्षा में सफलता ८.११
स्वभाव में परिवर्तन ८.१२
गायत्री उपासना कुछ अनुभव ८.१२
गायत्री जप के लाभ ८.१३
गायत्री शक्ति और मेरे अनुभव ८.१४
पारिवारिक वातावरण में सुधार ८.१५
निराशा में आशा की प्रकाश ८.१५
सच्ची शिक्षा का महान आयोजन ८.१६

गायत्री-साधना से श्री समृद्धि और सफलता

गायत्री-साधना से श्री समृद्धि और सफलता ९.१
गायत्री द्वारा भौतिक सफलताएँ ९.२

गायत्री-साधना के चमत्कार

गायत्री-साधना के चमत्कार १०.१
मुझे प्रेरणा कैसे हुई ? १०.१
भयानक संकटों से प्राण-रक्षा १०.२
गायत्री के प्रत्यक्ष अनुभव १०.४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

बिछुड़े हुए की वापसी एवं मिलन १०.५
आर्थिक कठिनाइयों से छुटकारा १०.५
बहिन का सुखपूर्ण विवाह १०.५
कठिन रोगों से छुटकारा १०.६
भूत व्याधा से मुक्ति १०.६
विविध प्रयोजनों की सिद्धि १०.६
गायत्री द्वारा आश्चर्यकारी लाभ १०.६
माता ने प्राण-रक्षा की १०.७
सिंह ने चंगुल से बचा १०.८
नास्तिक से आस्तिक बन गया १०.९
जीवन के सभी क्षेत्रों में लाभ १०.९
निराश माता-पिता को सान्त्वना १०.१०
गायत्री माता के आश्रय में १०.१०
गायत्री उपासना के कुछ अनुभव १०.११

गायत्री मन्त्र की अनुभूतियाँ

गायत्री मन्त्र की अनुभूतियाँ ११.१
माता को आत्म-समर्पण ११.२
साधकों को चेतावनी ११.३
सच्चे धन की याचना ११.४
गायत्री साधना में वाक्य सिद्धि ११.४
मन्त्र-लेखन की साधना ११.५
गायत्री उपासना के प्रत्यक्ष परिणाम ११.६
माँ के प्रताप से जीवन के संताप मिटे ११.१०
माँ की सहायता से भौतिक-सफलता ११.१३
रोग-शोक से छुटकारे का मार्ग मिला ११.१४
श्रेय, सफलता और यश प्रदायिनी
गायत्री उपासना ११.१६
गायत्री यज्ञ का व्यक्तिगत अनुभव ११.१९
गायत्री उपासना से श्रेय, श्री और सफलता ११.२१
जीवन के संताप माँ की शीतल छाया ११.२२
माँ के अनुग्रह से श्री-समृद्धि सफलता ११.२६
माँ गायत्री—अमृत, पारस और कल्पवृक्ष ११.२९
अनन्त वत्सला के आँचल की छांव में ११.३३
गायत्री उपासना से आत्मिक प्रगति ११.३६

गायत्री द्वारा आत्मोत्कर्ष

गायत्री द्वारा आत्मोत्कर्ष १२.१
गायत्री साधना से सात्विक सिद्धियों का विकास १२.२

सुख व शान्ति दायिनी गायत्री

सुख व शान्ति दायिनी गायत्री १३.१

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार

सर्व शक्तिमान गायत्री

गायत्री, गीता, गंगा और गौ यह भारतीय संस्कृति की चार आधारशिलाएँ हैं । इनमें सर्वप्रथम स्थान गायत्री का है।

हिन्दू धर्म के सभी शास्त्र, सभी सम्प्रदाय, सभी ऋषि एक स्वर से गायत्री की महिमा को स्वीकार करते हैं । अथर्ववेद १९-७१-१ में गायत्री की स्तुति की गई है जिसमें उसे आयु, प्राण, शक्ति, कीर्ति, धन और ब्रह्म तेज प्रदान करने वाली कहा गया है । विश्वामित्र ऋषि का कथन है कि "गायत्री के समान चारों वेदों में और कोई मन्त्र नहीं है । सम्पूर्ण वेद, यज्ञ, दान, तप, गायत्री मंत्र की एक कला के समान भी नहीं हैं ।" भगवान मनु का कथन है कि "ब्रह्माजी ने तीनों वेदों का सार गायत्री मंत्र निकाला । इसे जानने से वेद जानने का फल प्राप्त होता है ।" महर्षि याज्ञवल्क्य का कथन है—"गायत्री को एक ओर और दूसरी ओर षटअंगों समेत वेदों को रखकर तराजू में तोला गया तो गायत्री भारी निकली ।"

पाराशर कहते हैं—जो गायत्री से हीन है वह शूद्र है। शंख ऋषि कहते हैं कि नरक रूपी समुद्र में गिरते हुए को हाथ पकड़ कर बचाने वाली गायत्री ही है । शौनिक ऋषि कहते हैं कि गायत्री अगणित सांसारिक और पारलौकिक सुख सम्पदाओं की जननी है । अत्रि ऋषि कहते हैं कि जो गायत्री तत्व को समझता है उसके लिए संसार में कोई दुःख शेष नहीं रहता है । व्यास जी कहते हैं कि—सिद्ध की गई गायत्री कामधेनु के समान है । गंगा शरीर के पापों को दूर करती है, गायत्री से आत्मा निर्मल होती है । भारद्वाज ऋषि का वचन है कि गायत्री से ब्रह्म साक्षात्कार होता है और मनुष्य स्वर्ग तथा मुक्ति का अधिकारी होता है । नारद जी कहते हैं कि गायत्री साक्षात् शक्ति का अवतार है। वशिष्ठ जी का मत है कि मंदमति और कुमार्गगामी भी गायत्री के प्रभाव से उच्च पद को प्राप्त करते हैं । धर्म-ग्रन्थों में गायत्री की महिमा पर इतना साहित्य भरा पड़ा है कि उस सबका संग्रह किया जाय तो एक बड़ा ग्रन्थ ही बन सकता है ।

वर्तमान शताब्दी के महापुरुष भी गायत्री का वैसा ही महत्व स्वीकार करते हैं जैसा कि प्राचीन काल के ऋषियों ने स्वीकार किया था । महात्मा गाँधी कहते थे कि स्थिर चित्त और शांत हृदय से किया हुआ गायत्री का जप आपत्तिकाल के संकटों को दूर करने का प्रभाव रखता है । लोकमान्य तिलक का कथन है कि गायत्री मंत्र में कुमार्ग छोड़ कर सुमार्ग पर चलाने की प्रेरणा विद्यमान है । महामना मदनमोहन मालवीय जी कहते थे कि—ऋषियों ने जो अनेक अमूल्य रत्न हमें दिए हैं उन सब में श्रेष्ठ गायत्री रत्न है ।

कवीन्द्र रबीन्द्रनाथ टैगौर का कथन है कि निर्विवाद रूप से गायत्री मंत्र राष्ट्र की आत्मा को जगाने वाला है । योगी अरविन्द घोष गायत्री में महत्त्वपूर्ण शक्ति सन्निहित बताते थे । स्वामी रामकृष्ण परमहंस का अनुभव था कि गायत्री से बड़ी-बड़ी सिद्धियाँ मिल सकतीं हैं । स्वामी विवेकानन्द का वचन है कि गायत्री सब मंत्रों की मुकुटमणि है । जगद्गुरु शंकराचार्य का मत है कि गायत्री की महिमा वर्णन करना मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर है । स्वामी रामतीर्थ कहते थे कि गायत्री बुद्धि को 'काम' में से हटाकर 'राम' में लगा देती है ।

महर्षि रमण की उक्ति है कि—गायत्री से आध्यात्मिक और भौतिक दोनों ही प्रकार के लाभ मिलते हैं । स्वामी शिवानन्द जी कहते हैं कि गायत्री जप से शरीर निरोग रहता है, स्वभाव में नम्रता आती है, बुद्धि सूक्ष्म होती है, दूरदर्शिता बढ़ती और मानसिक शक्तियों का विकास होता है।

आर्य समाज के जन्मदाता स्वामी दयानन्द सरस्वती गायत्री के श्रद्धालु उपासक थे । वे गायत्री उपासना पर बहुत जोर देते थे । ग्वालियर के राजा साहब से स्वामी जी ने कहा था कि भागवत सप्ताह कराने की अपेक्षा गायत्री पुरुश्चरण कराना अधिक श्रेष्ठ है । श्री स्वामी दयानन्द ने कई स्थानों पर विशाल गायत्री अनुष्ठानों का आयोजन कराया था जिनमें चालीस-चालीस विद्वान ब्राह्मण बुलाये गये थे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

१.२ गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार

गायत्री भूलोक की कामधेनु है । इसका आश्रय लेकर मनुष्य उन सब कामनाओं को पूर्ण कर सकता है जो उसके लिए उचित एवं आवश्यक है । इसे अमृत भी कहा है क्योंकि यह आत्मा की समस्त क्षुधाओं, पिपासाओं को शांति करती है । वह भव-बन्धनों के जन्म-मृत्यु के चक्र से छुड़ाने की सामर्थ्य के परिपूर्ण है। गायत्री का अंचल पकड़ने वाला व्यक्ति कुछ से कुछ बन जाता है । इसलिये उसे पारसमणि भी कहा गया है । चाहे कोई गृहस्थ हो या विरक्त, पुरुष हो या स्त्री, बालक हो या वृद्ध, गायत्री उपासना प्रत्येक द्विज का आवश्यक धर्म-कृत्य है । उसकी उपेक्षा करना अपने पुनीत धार्मिक कर्त्तव्य से च्युत होना है ।

गायत्री मन्त्र से आत्मिक कायाकल्प हो जाता है । इस महामन्त्र की उपासना आरम्भ करते ही साधक को ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे आन्तरिक क्षेत्र में एक नई हलचल एवं रद्दोबदल आरम्भ हो गई है । सतोगुणी तत्वों की अभिवृद्धि होने से दुर्गुण, कुविचार, दुःस्वभाव एवं दुर्भाव घटने आरम्भ हो जाते हैं और संयम, नम्रता, पवित्रता, उत्साह, स्फूर्ति, श्रमशीलता, मधुरता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, उदारता, प्रेम, सन्तोष, शान्ति, सेवा भाव, आत्मीयता आदि सद्गुणों की मात्रा दिनों-दिन बड़ी तेजी से बढ़ती जाती है । फलस्वरूप लोग उसके स्वभाव एवं आचरण से सन्तुष्ट होकर बदले में प्रशंसा, कृतज्ञता, श्रद्धा एवं सम्मान के भाव रखते हैं और समय-समय पर उसकी अनेक प्रकार से सहायता करते रहते हैं । इसके अतिरिक्त सद्गुण स्वयं इतने मधुर होते हैं कि जिस हृदय में इनका निवास होगा वहाँ आत्म सन्तोष की परम शांतिदायक शीतल निर्झरिणी सदा बहती रहती है । ऐसे लोग सदा स्वर्गीय सुख का आस्वादन करते रहेंगे ।

गायत्री साधन से साधक के मनःक्षेत्र में असाधारण परिवर्तन हो जाता है । विवेक, दूरदर्शिता, तत्व ज्ञान और ऋतम्भरा बुद्धि की अभिवृद्धि हो जाने के कारण अनेक अज्ञान जन्य दुःखों का निवारण हो जाता है । प्रारब्धवश, अनिवार्य कर्म फल के कारण कष्टसाध्य परिस्थितियाँ हर एक के जीवन में आती रहती हैं । हानि, शोक, वियोग, आपत्ति, रोग, आक्रमण, विरोध, आघात आदि की विभिन्न परिस्थितियों में जहाँ साधारण मनोभूमि के लोग मृत्यु तुल्य कष्ट पाते हैं वहाँ आत्म-बल सम्पन्न गायत्री साधक अपने विवेक, ज्ञान, वैराग्य, साहस, आशा, धैर्य, सन्तोष, संयम और ईश्वर विश्वास के आधार पर इन कठिनाइयों को हँसते-हँसते आसानी से काट लेता है । बुरी अथवा साधारण परिस्थितियों में भी अपने आनन्द का मार्ग ढूँढ़ निकालता है और मस्ती, प्रसन्नता एवं निराकुलता का जीवन बिताता है ।

संसार का सबसे बड़ा लाभ, 'आत्म बल' गायत्री साधक को प्राप्त होता है । इसके अतिरिक्त अनेक प्रकार के सांसारिक लाभ भी होते देखे गये हैं । बीमारी, कमजोरी, बेकारी, घाटा, गृह-कलह, मनो-मालिन्य, मुकदमा, शत्रुओं का आक्रमण, दाम्पत्य सुख का अभाव, मस्तिष्क की निर्बलता, चित्त की अस्थिरता, सन्तान दुःख, कन्या के विवाह की कठिनाई, बुरे भविष्य की आशंका, परीक्षा में उत्तीर्ण होने का भय, बुरी आदतों के बंधन, ऐसी कठिनाइयों से ग्रसित अगणित व्यक्तियों ने गायत्री आराधना करके अपने दुखों से छुटकारा पाया है ।

कारण यह है कि हर एक कठिनाई के पीछे, जड़ में निश्चय ही कुछ न कुछ अपनी त्रुटियाँ, अयोग्यताएँ एवं खराबियाँ रहती हैं । गायत्री उपासना से सतोगुण की वृद्धि होती है । साथ ही अपने आहार, विहार, दिनचर्या, दृष्टिकोण स्वभाव एवं कार्यक्रम में परिवर्तन होता है । यह परिवर्तन ही आपत्तियों के निवारण का, सुख शांति की स्थापना का राजमार्ग बन जाता है । कई बार हमारी इच्छाएँ, तृष्णाएँ, लालसाएँ, कामनाएँ, ऐसी होती हैं जो अपनी योग्यता एवं परिस्थितियों से मेल नहीं खातीं। मस्तिष्क शुद्ध होने पर बुद्धिमान व्यक्ति उन मृग तृष्णाओं को त्याग कर अकारण दुःखी रहने के भ्रम जंजाल से छूट जाता है । अवश्यम्भावी, न टलने वाले प्रारब्ध का भोग जब सामने आता है तो साधारण व्यक्ति बुरी तरह रोते चिल्लाते हैं किन्तु गायत्री साधक में इतना आत्म बल साहस बढ़ जाता है कि वह उन्हें हँसते-हँसते झेल लेता है ।

किसी विशेष आपत्ति का निवारण करने एवं किसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए गायत्री की साधना की जाती है । बहुधा इसका परिणाम बड़ा ही आशाजनक है । देखा गया है कि जहाँ चारों ओर निराशा, असफलता, आशंका और भय का अन्धकार ही अन्धकार छाया हुआ था, वहाँ वेदमाता की कृपा से एक दैवी प्रकाश उत्पन्न हुआ और निराशा आशा में परिणत हो गई, बड़े कष्ट साध्य कार्य तिनके की तरह सुगम हो गए । ऐसे अनेकों अवसर अपनी आँखों के सामने देखने के कारण हमारा यह अटूट विश्वास हो गया है कि कभी किसी की गायत्री साधना निष्फल नहीं जाती ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री साधना आत्म-बल बढ़ाने का एक अचूक आध्यत्मिक व्यायाम है । किसी को कुश्ती में पछाड़ने एवं दंगल में जीत कर इनाम पाने के लिए कितने ही लोग पहलवानी और व्यायाम का अभ्यास करते हैं । यदि कदाचित कोई अभ्यासी किसी कुश्ती को हार जाय तो भी ऐसा नहीं समझना चाहिए कि उसका प्रयत्न निष्फल गया । इसी बहाने उसका शरीर जो मजबूत हो गया वह जीवन भर अनेक प्रकार से अनेक अवसरों पर बड़े-बड़े लाभ उपस्थित करता रहेगा । निरोगता, सौन्दर्य, दीर्घ जीवन, कठोर परिश्रम करने की क्षमता, दाम्पत्य सुख, सुसंतति, अधिक कमाना, शत्रुओं से निर्भयता आदि कितने ही लाभ ऐसे हैं जो कुश्ती पछाड़ने से कम महत्त्वपूर्ण नहीं । साधना से यदि कोई विशेष प्रयोजन प्रारब्धवश पूरा भी न हो तो भी इतना तो निश्चय है कि किसी न किसी प्रकार साधना की अपेक्षा कई गुना लाभ अवश्य मिलकर रहेगा ।

आत्मा स्वयं अनेक ऋद्धि-सिद्धियों का केन्द्र है । जो शक्तियाँ परमात्मा में हैं वे ही उसके अमर युवराज आत्मा में हैं । समस्त ऋद्धि-सिद्धियों का केन्द्र आत्मा में है परन्तु जिस प्रकार राख से ढका हुआ अंगार मन्द हो जाता है वैसे ही आन्तरिक मलिनताओं के कारण आत्म-तेज कुंठित हो जाता है । गायत्री साधना से वह मलीनता का पर्दा हटता है और राख हटा देने से जैसे अंगार अपने प्रज्वलित स्वरूप में दिखाई पड़ने लगता है, वैसे ही साधक की आत्मा भी अपने ऋद्धि-सिद्धि समन्वित ब्रह्म तेज के साथ प्रकट होती है । योगियों को जो लाभ दीर्घकाल तक कष्ट साध्य तपस्यायें करने से प्राप्त होता है, वही लाभ गायत्री साधकों को स्वल्प प्रयास से प्राप्त हो जाता है ।

प्राचीन काल में महर्षियों ने बड़ी-बड़ी तपस्याएँ और योग साधनाएँ करके अणिमा, महिमा आदि ऋद्धि-सिद्धियाँ प्राप्त की थीं । उनकी चमत्कारी शक्तियों के वर्णन से इतिहास पुराण भरे पड़े हैं। वह तपस्या और योग साधना गायत्री के आधार पर ही की थी । अब भी अनेकों महात्मा ऐसे मौजूद हैं जिनके पास दैवी शक्तियाँ और सिद्धियों का भंडार है । उनका कथन है कि गायत्री से बढ़कर दैवी मार्ग से सुगमतापूर्वक सफलता प्राप्त करने का दूसरा मार्ग नहीं है । सिद्ध पुरुषों के अतिरिक्त सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी सभी चक्रवर्ती राजा गायत्री के उपासक रहे हैं । ब्राह्मण लोग गायत्री की ब्रह्म-शक्ति के बल पर जगद्गुरु थे, क्षत्रिय गायत्री के गर्भ-तेज को धारण करके चक्रवर्ती शासक थे ।

वशिष्ठ जी के पास कामधेनु थी, जिस्की कृपा से उन्होंने विश्वामित्र की सेना को परास्त किया था । दिलीप और दशरथ के वंश को नष्ट होने से बचाया था, उन्हें सुसन्तति दी थी । यह कामधेनु गायत्री ही थी । राजा दलीप अपनी रानी समेत इसी कामधेनु की आराधना में निमग्न रहते और उसी का पय पान करते थे । इस प्रकार प्राचीन काल में प्राय: सभी ऋषि मुनि गायत्री उपासना द्वारा ही अनेक प्रकार की योग साधनाएँ करते थे । दधीच ऋषि तप करते-करते साक्षात गायत्री के तेज पुंज बन गए थे । उनकी अस्थियों का वज्र बनाकर इन्द्र ने असुरों को जीत पाया था । गायत्री को ब्रह्मास्त्र कहा है । इसका प्रहार कभी निष्फल नहीं जाता । गायत्री भूलोक की कामधेनु है, इस माता का पय पान करने वाला कभी दु:खी, निराश, असन्तुष्ट एवं अतृप्त नहीं रहता ।

ब्रह्मा जी ने गायत्री मंत्र के २४ अक्षरों को लेकर चारों वेद बनाए, वेदों की व्याख्या करने के लिए शास्त्र, दर्शन, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, स्मृति, सूत्र, पुराण, इतिहास आदि की रचना हुई । इसी प्रकार समस्त ज्ञान विज्ञान की जननी वेदमाता गायत्री ही हुई। गायत्री को भली प्रकार समझ लेने पर सम्पूर्ण वेद शास्त्रों के रहस्यों की जानकारी हो जाती है ।

गायत्री के चौबीस अक्षर जीवन की गतिविधि का निर्णय करने में कसौटी का काम देते हैं । प्रत्येक अक्षर एक-एक स्वर्ण शिक्षा का प्रतीक है । 'ॐ' की शिक्षा है कि सर्वत्र परमात्मा को व्यापक समझ कर कहीं भी गुप्त या प्रकट रूप से बुराई न करो । 'भू:' की शिक्षा है कि अपने अन्दर सम्पूर्ण उत्थान पतन के हेतुओं को ढूंढ़ो । 'भुव:' का अर्थ है—कर्त्तव्य कर्म में तत्परता से प्रवृत्त रहो और फल के लालच में अधिक न उलझो । 'स्व:' का अर्थ है कि—स्थिर रहो, हर्ष, शोक में उद्विग्न न बनो । 'तत्' से तात्पर्य है कि इस शरीर के क्षणिक सुखों को ही सब कुछ मत समझो, जन्मजन्मान्तरों के स्थायी सुखों का महत्त्व समझो । 'सवितु:' का भावार्थ है—अपने को विद्या, बुद्धि, स्वास्थ्य, धन, यश, मैत्री, साहस आदि शक्तियों से अधिकाधिक सुसम्पन्न करना । 'वरेण्यं' का सन्देश है कि इस दुरंगी दुनियाँ में से केवल श्रेष्ठता का ही स्पर्श करो । 'भर्गो' का उपदेश है—शरीर, मन, मकान, वस्त्र तथा व्यवहार को स्वच्छ रखना । 'देवस्य' का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अर्थ है—उदारता, दूरदर्शिता । 'धीमहि' अर्थात्-सद्गुण, उत्तम स्वभाव, दैवी सम्पदाएँ, उच्च विचार । 'धियो' का तात्पर्य है—किसी व्यक्ति, ग्रन्थ या सम्प्रदाय का अन्धानुयायी न होकर विवेक के आधार पर केवल उचित को ही स्वीकार करना । 'योनः' की शिक्षा है—संयम, तप, ज्ञान, सहिष्णुता, तितीक्षा, कठोर श्रम, मितव्ययता, शक्तियों का संचय और सदुपयोग । 'प्रचोदयात्' अर्थात् प्रेरणा देना, गिरे हुओं को ऊँचा उठाना, उत्साहित करना, प्रफुल्लित, संतुष्ट एवं सेवा-परायण रहना ।

सम्पूर्ण वेद शास्त्रों में अनेक शिक्षाएँ अपने-अपने ढंग से दी गई हैं उन सबका सार भाग उपर्युक्त पंक्तियों में आ गया है । उनकी बातें भली प्रकार हृदयंगम करली जायें तो समझ लीजिए कि चारों वेदों के पण्डित हो गए । गायत्री के २४ अक्षरों में दिव्य जीवन की समस्त योजना, नीति, विचारधारा, कार्य-प्रणाली सन्निहित है, इस पर चलने में व्यवहारिक सहयोग देना, पथ प्रदर्शन करना, गुरु का काम है । इस प्रकार गायत्री माता और गुरु पिता द्वारा हमारे आदर्शवादी जीवन का जन्म होता है । यही द्विजत्व है ।

गायत्री के चौबीस अक्षरों का गुंथन ऐसा विचित्र एवं रहस्यमय है कि उसके उच्चारण मात्र से जिह्वा, कण्ठ, तालु एवं मूर्धा में अवस्थित नाड़ी तन्तुओं का एक अद्भुत क्रम से संचालन होता है । टाइपराइटर की कुंजियों पर उंगली रखते ही जैसे कागज पर अक्षर की चोट पड़ती है वैसे ही मुख में मन्त्र उच्चारण होने से शरीर में विविध स्थानों पर छिपे हुए शक्ति चक्रों पर उसकी चोट पड़ती है और उनका सूक्ष्म जागरण होता है, इस संचालन से शरीर के विविध स्थानों में छिपे हुए षट् चक्र, भ्रमर, कमल, ग्रन्थि, संस्थान एवं शक्तिचक्र झंकृत होने लगते हैं । मुख की नाड़ियाँ गायत्री के शब्दों के उच्चारण का आघात सीधा उन चक्रों तक पहुँचता है । जैसे सितार के तारों पर क्रमबद्ध उंगलियाँ फिराने से एक स्वर लहरी एवं ध्वनि तरंग उत्पन्न होती है वैसे ही गायत्री के चौबीस अक्षरों का उच्चारण उन चौबीस चक्रों में एक झंकार मय गुंजार उत्पन्न करता है, जिससे वे स्वयंमेव जाग्रत होकर साधक को योग शक्तियों से सम्पन्न बनाते हैं । इस प्रकार गायत्री के जप से अनायास ही एक महत्त्वपूर्ण योग साधना होने लगती है और उन गुप्त शक्ति केन्द्रों के जागरण से आश्चर्यजनक लाभ मिलने लगता है ।

गायत्री उपासना के दो कार्यक्रम हैं । (१) गायत्री के अक्षरों में सन्निहित शिक्षाओं को व्यवहारिक जीवन में उतारते हुए अपने को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाना, (२) तपश्चर्या द्वारा दैवी शक्तियों को अपनी अन्तरात्मा में प्रकट करके आत्मबल से सुसज्जित होना । दोनों ही उपाय आवश्यक हैं । धर्म, नीति, सदाचार आदर्श, सिद्धान्त एवं आचरण यदि गायत्री माता के आदेशों के अनुकूल होंगे तो आत्मिक उन्नति अवश्य होगी । इसी प्रकार साधना की तपश्चर्या द्वारा जो घर्षण-ऊष्मा पैदा होती है उससे एक विशिष्ट दैवी तेज आविर्भूत होता है जिसके द्वारा हम अनेक सांसारिक कठिनाइयों का शमन कर सकते हैं और जीवन के परम लक्ष्य आत्म-कल्याण को प्राप्त कर सकते हैं ।

गायत्री को त्रिपदी कहा गया है । वह तीन नेत्रों वाली त्रिशूल धारणी है । यह तीन तत्व हैं—भूः भुवः स्वः (१) भूः—अर्थात्—ज्ञान, बुद्धि, विवेक, प्रेम सदाचार । (२) भुवः—अर्थात्—धन, वैभव, पद, प्रतिष्ठा, भोग, ऐश्वर्य । (३) स्वः—अर्थात्—स्वास्थ्य बल, साहस, पराक्रम, पुरुषार्थ । गायत्री उपासना का तात्पर्य है—इन तीनों प्रकार की शक्तियों को प्राप्त करने का प्रयत्न । साधना में जैसे-जैसे प्रगति होती चलती है वैसे ही वैसे साधक में ऐसे गुण, कर्म और स्वभाव बढ़ते चलते हैं जो ज्ञान, वैभव और शक्ति के जनक होते हैं। जहाँ गुण हैं वहाँ वस्तुएँ अवश्य ही प्राप्त होकर रहती हैं ।

हजारों धर्म ग्रन्थों का हमने अन्वेषण किया है और पाया है कि गायत्री से बढ़कर साधना और कोई नहीं । प्राचीन ऋषि, महर्षियों ने इसी महामन्त्र की साधना करके उच्च महानता को प्राप्त किया था । हमने अपने छोटे से जीवन में गायत्री उपासना के जो चमत्कार देखे हैं उनके कारण हमारी इस महामन्त्र पर अटूट श्रद्धा हो गई है। अब तक हमने चौबीस-चौबीस लक्ष के २४ महापुरुश्चरण किए हैं । इस बीच में हमने ो चमत्कार व्यक्तिगत रूप से देखे हैं, उनका वर्णन न करना ही उचित है । हमारे पथ-प्रदर्शन में अन्य अनेक लोगों ने जो छुटपुट उपासनाएँ की हैं, उनके जो परिणाम रहे हैं उनको देखते हुए भी यह कहा जा सकता है कि वेदमाता की साधना का स्वल्प प्रयास भी निरर्थक नहीं जाता ।

हमें अनेक ऐसे व्यक्तियों का पता है जो आरम्भ में दरिद्रता का अभाव ग्रस्त जीवन व्यतीत करते थे, अपने मामूली गुजारे की भी व्यवस्था जिनके पास न थी । कर्ज के बोझ से दबे हुए थे । व्यापार में घाटा जा रहा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

था । उन्होंने गायत्री की उपासना की और अर्थ संकट को पार करके ऐसी स्थिति पर पहुँच गये जिनके लिए अनेकों को ईर्ष्या होती है । कम पढ़े और छोटी नौकरी पर काम करने वालों को ऊँचे पद पर पहुँचने के उदाहरण मौजूद हैं । जिनकी बुद्धि बड़ी भौंड़ी और मन्द थी वे चतुर, तीक्ष्ण बुद्धि और विद्वान बने हैं। जिनकी परीक्षा में उत्तीर्ण होने की कोई आशा नहीं करता था, ऐसे विद्यार्थी अच्छे नम्बरों से पास हुए हैं । झगड़ालू, चिड़चिड़े, क्रोधी, व्यसनी, बुरी आदतों में फँसे हुए, आलसी एवं मूढ़मति लोगों के स्वभावों में ऐसा परिवर्तन हुआ है कि लोग दाँतों तले उंगली दबाए रह गये ।

गायत्री साधना के चमत्कारी लाभ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रकट होते हैं । जिनके दाम्पत्य जीवन बड़ा कर्कश था, पति-पत्नी में कुत्ता-बिल्ली का सा बैर रहता था, वहाँ प्रेम की निर्झरिणी बहते देखी गई, भाई-भाई जो एक दूसरे के जानी दुश्मन बने हुए थे उनमें भरत-मिलाप हुआ । जो कुटुम्ब परिवार क्लेश और कलह की अग्नि में झुलस रहे थे, वहाँ शान्ति की वर्षा हुई । जहाँ फौजदारी, मुकदमा बाजी, कत्ल, चोरी, डकैती की आशंका से हर घड़ी भय रहता था, वहाँ निर्भयता का एकछत्र राज हुआ । शत्रुओं के आक्रमण में जो लोग घिर रहे थे, राजदण्ड के कठोर चक्र में फँस जाने की जिनको पूरी सम्भावना जान पड़ती थी, वे इन आपत्तियों से बाल-बाल बच गये ।

बीमारी से तो कितने ही गायत्री साधकों का पिंड छूटा है । कई तो तपैदिक की मृत्यु शय्या पर पड़े-पड़े यमराज से लड़े हैं, और उसकी दाढ़ों में से वापिस लौटे हैं । भूतोन्माद, दुःस्वप्न, मूर्छा, हृदय की निर्बलता, गर्भाशय का विषैला होना आदि रोगों से कितनों ने ही मुक्ति पाई है । कोढ़ी शुद्ध हुए हैं । असंयत जीवन-क्रम और कुविचारों से उत्पन्न होने वाले स्वप्नदोष, प्रमेह आदि रोगों में मनः शुद्धि के साथ-साथ तुरन्त कमी होना आरम्भ हो जाता है । दुर्बल, जीर्ण रोगों से ग्रस्त व्यक्तियों को वेदमाता की गोद में पहुँच कर बड़ी शान्ति मिलती देखी गई है । सन्निपात, शीतला, हैजा, प्लेग, मोतीझरा, निमोनिया आदि कठिन रोगों में गायत्री ने चक्र-सुदर्शन की तरह रक्षा की है ।

चिन्ताओं के दबाव से जो मस्तिष्क फटते रहते थे, उन्हें निश्चिन्तता और सन्तोष की सांस लेते हुए देखा गया है । मृत्यु-शोक, सम्पत्ति नाश, ऋण ग्रस्तता, बात बिगड़ जाने का भय, कन्या-विवाह का खर्च, प्रिय जन का विछोह, जीविका का आश्रय टूट जाना, अपमान, असाध्य रोग, दरिद्रता, शत्रुओं का प्रकोप, बुरे भविष्य की आशंका आदि कारणों से हर घड़ी जिन्हें चिन्ता घेरे रहती थी उन्हें माता की कृपा से निश्चिन्तता प्राप्त हुई है । या उन्हें कोई आकस्मिक सहायता मिली है या भीतरी प्रेरणा से उद्धार का कोई उपाय सूझ पड़ा है या अन्तःकरण में ऐसा विवेक और आत्म-बल प्रकट हुआ है जिससे उस अवश्यम्भावी अटल प्रारब्ध को हँसते-हँसते वीरतापूर्वक सहन कर लिया गया है ।

सबसे उत्तम यह है कि निष्काम होकर अटूट श्रद्धा और भक्तिभाव से गायत्री की उपासना की जाय, कोई कामना पूर्ति की शर्त न लगाई जाये । क्योंकि मनुष्य अपने वास्तविक लाभ या हानि और आवश्यकता को स्वयं उतना नहीं समझता जितना कि घट-घट वासिनी सर्व-शक्तिमान माता समझती है । वह हमारी वास्तविक आवश्यकता को स्वयं पूरा करती है । प्रारब्धवश कोई अटल दुर्भाग्य न भी टल सके तो भी साधना कभी भी निष्फल नहीं जाती । वह किसी न किसी मार्ग से साधक को उसके श्रम की अपेक्षा अनेक गुना लाभ अवश्य पहुँचा देती है । सबसे बड़ा लाभ आत्म कल्याण है, जो यदि संसार के समस्त दुखों को अपने ऊपर लेने से प्राप्त होता हो तो भी प्राप्त करना चाहिए । ●●●

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री की दिव्य सिद्धियाँ

आत्मोन्नति का सुनिश्चित मार्ग

ईश्वर की अनेक शक्तियों में गायत्री एक अत्यन्त महत्वपूर्ण महान शक्ति है । इस शक्ति को अधिकाधिक मात्रा में प्राप्त करने का जो विज्ञान-सम्मत मार्ग है वह 'उपासना' कहलाता है । उपासना की वैज्ञानिक पद्धति का अवलम्बन करने से गायत्री महाशक्ति को प्रचुर मात्रा में अपने में धारण किया जा सकता है । जैसे धन, स्वास्थ्य, विद्या, चातुर्य, शिल्प, कला आदि योग्यताओं को अधिक मात्रा में संचित करने वाला मनुष्य बड़ा आदमी, प्रतिष्ठित, सुसम्पन्न बन जाता है । उसी प्रकार गायत्री द्वारा आत्म बल संचय कर लेने वाला व्यक्ति भी महात्मा बन जाता है सामान्य मनुष्यों की अपेक्षा उसमें अनेकों विशेषताएँ उत्पन्न हो जाती हैं ।

गायत्री चारों वेदों की जननी है । जितना भी ज्ञान-विज्ञान संसार में है वह सब गायत्री के महान ज्ञान भंडार का एक अंश मात्र है । उसमें अभी अनेकों अविज्ञात रहस्य छिपे पड़े हैं । कोई-कोई गायत्री साधक उनमें से कुछ रहस्यों को कभी-कभी जान लेते हैं तो ऐसे कार्य करने में सक्षम होते हैं जिन्हें देखकर आश्चर्य होता है । अनेक सिद्ध पुरुष अनेक प्रकार की ऋद्धि सिद्धियों से सम्पन्न होते हैं । इन सिद्धियों का कोई अन्त नहीं, जो जितना ही गहरा उतरता है वह उतना ही बहुमूल्य अनुभव प्राप्त करता है । अन्त में वह सर्वश्रेष्ठ सिद्ध-आत्म कल्याण-को प्राप्त करके भव बन्धन से मुक्त हो जाता है ।

योग साधना में गायत्री सबसे सुगम, सबसे श्रेष्ठ, सब से शीघ्र सफल होने वाली है । इस महामंत्र के जप मात्र से शरीर और मन के गुप्त प्रदेशों में सन्निहित अनेक शक्तिशाली एवं रहस्मय चक्र-उपचक्र अपने आप जागृत तथा विकसित होते हैं । कुण्डलिनियोग, षट्चक्र बेधन, नाड़ी शोधन, आदि हठ योग की कष्ट-साध्य क्रियाएँ करने से जो लाभ होते हैं वे गायत्री साधना से आनायास ही प्राप्त हो जाते हैं । इस मंत्र के उच्चारण से कुछ ऐसी नाड़ियों तथा पेशियों पर प्रभाव पड़ता है जो गुप्त योगिक ग्रंथियों को धीरे-धीरे स्वयमेव जाग्रत करती रहतं। हैं और साधक अनायास ही सिद्धि के मार्ग पर बढ़ता चलता है ।

आत्म कल्याण के लिये गायत्री से बढ़कर दूसरा साधन नहीं । योगी और तपस्वी दीर्घकाल तक कष्ट-साध्य साधनाएँ करके जो लाभ प्राप्त करते हैं वह गायत्री द्वारा स्वल्प काल और स्वल्प श्रम में ही मिल जाता है । अनेक ऐसे महानुभाव देखे गये हैं जो ग्रहस्थ रहते हुए भी गायत्री की कृपा से योग की उच्च श्रेणी तक पहुँच गए ।

साधारण व्यक्ति अपने अनेक दोषों से गायत्री माता का आसरा लेकर छुटकारा पा सकता है । कुविचार, कुकर्म, दुर्गुण एवं दुर्भाव ही जीवन को दुःखी, अस्त-व्यस्त एवं पतित बनाते हैं, उनके हट जाने पर साधारण परिस्थितियों में भी सुख-शान्ति का साक्षात्कार होता है और आनन्द, उल्लास एवं प्रसन्नता से जीवन भर जाता है । गायत्री की शिक्षायें सर्वश्रेष्ठ धर्मशास्त्र का सार हैं । उन्हें अपनाने का तात्पर्य है आध्यात्मिकता, सात्विकता, पवित्रता एवं आस्तिकता को अपनाना । उसे अपनाने के बाद अन्य सभी सम्पदाएँ मनुष्य को स्वयमेव प्राप्त हो जाती हैं ।

गायत्री साधना द्वारा अनेक सांसारिक लाभ होते देखे गए हैं । पर सबसे प्रधान लाभ आध्यात्मिक हैं । (१) आत्म कल्याण, जीवन मुक्ति, ब्रह्म निर्वाण, (२) आत्मा का अन्तराल स्वच्छ हो जाने में उसमें छिपी हुई अनेक सिद्धियों का जागरण, (३) अपने दोष-दुर्गुणों के दूर हो जाने से प्रतिष्ठा, पुण्य एवं आनन्द की वृद्धि, यह तीन अत्यन्त महत्वपूर्ण लाभ ऐसे हैं जिन्हें गायत्री की उपासना करने वाला प्राप्त करता है । उसकी श्रद्धा जितनी सुदृढ़ होती है उसकी अभिरुचि जितनी संलग्न होती है, उतनी ही गति से सफलता प्राप्त होती चलती है । न्यून श्रद्धा वाला व्यक्ति भी थोड़ा बहुत आध्यात्मिक लाभ अवश्य प्राप्त करता है इतना निश्चित है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मेरा निज का अनुभव है कि गायत्री आत्मोन्नति के लिए अचूक उपाय है । अनेकों को इस मार्ग पर चलकर आशाजनक लाभ उठाते मैंने देखा है । इसलिए यह दृढ़ विश्वास हो गया है कि जो भी माता का अंचल पकड़ेंगे आत्मोन्नति की दिशा में अवश्य ही ऊँचे उठेंगे । गायत्री की महिमा-महत्ता का गान करते हुए कह गया है

'तद्वियृच : समो नास्ति मन्त्रों वेद चतुष्टये ।
सर्वे वेदाश्च दानानि च तपांसि च ।।
समानि कलया प्रहुर्मुनयो नतदित्यृ च ॥'

— विश्वामित्र:

गायत्री मंत्र के समान मंत्र चारों वेदों में नहीं है । सम्पूर्ण वेद, यज्ञ, दान, तप गायत्री मंत्र की एक कला के समान भी नहीं हैं । ऐसा मुनि लोग कहते हैं ।

गुप्त शक्ति-भण्डार की कुंजी

सृष्टि के आदि काल से जिन महात्माओं ने तपश्चर्या एवं योग साधना की है उन्होंने 'गायत्री' को आधार रखा है । सम्पूर्ण आध्यात्मिक तत्वों की चाबी गायत्री है इसके बिना आत्म सिद्धि का ताला खुल नहीं सकता। कितने ही ऋषि, मुनि, राम, कृष्ण, शङ्कर, विष्णु, ब्रह्मा, दुर्गा, सूर्य आदि को इष्ट मानकर उन्हें प्रसन्न करके शक्ति प्राप्त करने के लिए योग साधन करते रहे हैं । कितनों ने निराकार ब्रह्म की उपासना की है । परन्तु हर एक को 'गायत्री' का प्रथम आश्रय अवश्य लेना पड़ा है । बिना गायत्री के कोई भी तप या साधन सफल नहीं हो सकता ।

शास्त्र का वचन है :—

अस्य कस्यापि मंत्रस्य पुरुश्चरणमारभेत् ।
व्याहृति त्रय संयुक्ता गायत्री चायुतं जपेत ॥
नृसिंहार्क बराहाणां कौला तांत्रिका तथा ।
बिना जप्त्वातु गायत्री सत्सर्व निष्फलं भवेत् ।।

अर्थात्—चाहे किसी मंत्र का साधन किया जाय पर उस मंत्र को व्याहृति समेत गायत्री के साथ जपना चाहिए । चाहे नृसिंह, सूर्य, वाराह आदि की उपासना हो या वाम मार्ग के कौल तांत्रिक प्रयोग किये जायें बिना गायत्री को आगे लिए वे सभी निष्फल होते हैं ।

गायत्री चारों वेदों की माता है । उसके बिना वेदोक्त दक्षिणमार्गी साधनाएँ सफल नहीं होतीं।साथ ही तांत्रिक, कौल, अवधूत, कापालिक, अघोर आदि वाममार्ग में जिस शक्ति की आवश्यकता पड़ती है उसका मूल उद्गम भी गायत्री ही है । बिना गायत्री के जिन सावर मंत्रों को लोग सिद्ध करते हैं वे क्षणिक चमत्कार दिखाकर शक्तिहीन हो जाते हैं । जिनके मूल में ठोस शक्ति होगी वही सफलता देर तक ठहरेगी और कठिन कार्यों को भी पूरा करेगी । गायत्री से रहित मंत्र चिरस्थायी और तीव्र शक्ति सम्पन्न नहीं होते, उनके लिए किया गया श्रम बहुत कम लाभ दे पाता है ।

प्राचीन इतिहास पुराणों से पता चलता है कि सभी प्रमुख ऋषि महर्षि गायत्री के आधार पर ही योग साधना और तपश्चर्या करते थे । गीता में भगवान ने स्वयं कहा है— "गायत्री छन्द सामहम्" अर्थात्-गायत्री मैं ही हूँ । भगवान की उपासना के लिए गायत्री से बड़ा और कोई मंत्र नहीं हो सकता ।

वशिष्ट, याज्ञवल्क्य, अत्रि, विश्वामित्र, भरद्वाज, नारद, कपिल, कणादि, गौतम, व्यास, शुकदेव, दधीचि, वाल्मीक, वन, शंख, लोमस, तैत्तिरेय, जावालि, उद्दालक, वैशम्पायन, दुर्वासा, परशुराम, पुलिस्त, दत्तात्रेय, अगस्त्य, सनत्कुमार, कण्व, शौनक आदि ऋषियों के विस्तृत जीवन चरित्र लिखकर इस लेख में यह बताने का स्थान नहीं कि उन्होंने वेदमाता की उपासना करके किस प्रकार परम सिद्धि प्राप्त की थी और गायत्री की शक्ति द्वारा वे कितनी महान् सफलताएँ सम्पादित कर सके थे । इतिहास-पुराण के ज्ञाताओं से इन महर्षियों के चरित्र छिपे नहीं हैं ।

थोड़े समय पूर्व अनेक ऐसे महात्मा हुए हैं जिन्होंने गायत्री का आश्रय लेकर अपनी प्रतिभा को प्रकाशित किया । उनके इष्टदेव आदर्श सिद्धान्त भिन्न रहे हों पर वेदमाता के प्रति सभी की अनन्य श्रद्धा थी, उन्होंने प्रारम्भिक कुच पान इसी महाशक्ति का किया था जिससे वे इतने प्रतिभा सम्पन्न महापुरुष बन सके । शंकराचार्य, समर्थ गुरु रामदास, नरसी महता, दादूदयाल, संत ज्ञानेश्वर, स्वामी रामानन्द, गोरखनाथ, मछीन्द्रनाथ, हरिदास, तुलसीदास, रामनुजाचार्य, माधवाचार्य, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, रामतीर्थ, योगी अरविन्द, महर्षि रमण, गौरांग महाप्रभु, महात्मा एकरसानन्द आदि प्रातः स्मरणीय महात्माओं का आत्मिक विकास इस महाशक्ति के अंचल में ही हुआ था ।

वर्तमान काल में तीर्थ स्वरूप शरीर धारण किये हुए अनेक महात्मा, जिनमें से कुछ ज्ञात, कुछ अज्ञात स्थानों में तप कर रहे हैं, गायत्री की अनन्य श्रद्धापूर्वक उपासना करते हैं । महात्मा गांधी, महामना मालवीय, कवीन्द्र रवीन्द्र, टी. सव्वाराय, सर राधाकृष्णन्,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जगद्गुरु शंकराचार्य, स्वामी शिवानन्द, आदि महापुरुषों ने गायत्री की महानता के सम्बन्ध में अपने जो उद्गार प्रकट किये हैं वे बहुत ही विचार-पूर्ण और मनन करने योग्य हैं । अखंड-ज्योति संचालक आचार्य जी द्वारा गायत्री का जो असाधारण प्रकाश हुआ है वह तो आश्चर्यजनक है ।

अनेक महात्मा भूतकाल में गायत्री द्वारा असाधारण सिद्धियाँ प्राप्त कर चुके हैं और आज भी प्राप्त कर रहे हैं । जो शास्त्र-मर्म के ज्ञाता हैं, भारतीय योग विद्या से परिचित हैं, उन सभी साधकों की आराधना में गायत्री का प्रारम्भिक ज्ञान है फिर चाहे उसके इष्ट देव एवं विशेष साधन विधान कुछ भी क्यों न हों । आरम्भ से ही योग विद्या की प्रमुख सड़क गायत्री रही है अन्त तक और कोई मार्ग ऐसा नहीं मिल सकेगा जो गायत्री से अधिक सीधा, सरल, स्वल्प, श्रमसाध्य और निश्चित सफलता प्रदान करने वाला हो । गायत्री की नौका पर सवार होकर ही भवसागर को तरा जा सकता है । गृही और विरोगी दोनों को ही यह गायत्री रूपी कामधेनु समान स्नेह से अपना पय पान कराती है । दोनों ही उसकी कृपा से अभीष्ट सिद्धियाँ प्राप्त करते हैं ।

गायत्री साधना की विशेषता यह है कि वह जिस प्रकार बन पर्वतों में रहने वाले विरक्त महात्माओं के द्वारा साधित होने पर जैसी सिद्धि सफलता प्रदान करती है वैसे ही सत्परिणाम ग्रहस्थों को भी उपलब्ध हो सकते हैं । आध्यात्मिक सात्विकता बढ़ाना गायत्री का निश्चित परिणाम है । जो भी मनुष्य इस महामंत्र का श्रद्धापूर्वक अवलम्बन करता है, उसमें दिन-दिन सतोगुणी, गुण कर्म स्वभाव बढ़ते जाते हैं, बुराइयाँ घटती जाती हैं और उत्तमताएँ बढ़ती जाती हैं । जिस प्रकार मैला बर्तन माँज देने से चमकने लगता है, दर्पण का मैल हट जाये तो उसमें चेहरा साफ दीखने लगता है, अंगार के ऊपर से राख हटा देने पर वह पुनः प्रज्ज्वलित हो जाता है, उसी प्रकार गायत्री द्वारा परिमार्जित हुआ आत्मा अपनी दैवी विशेषताओं से सुसम्पन्न दृष्टिगोचर होने लगता है । ग्रहस्थ हो या विरागी, गायत्री माता का दूध पीने पर सभी का आत्मिक शरीर परिपुष्ट होता है ।

गायत्री द्वारा सम्पूर्ण दुखों का निवारण

मनुष्य ईश्वर का उत्तराधिकारी एवं राजकुमार है। आत्मा परमात्मा का ही अंश है। अपने पिता के सम्पूर्ण गुण एवं वैभव बीज रूप से उसमें मौजूद हैं। जलते हुए अँगार में जो शक्ति है वही छोटी चिनगारी में भी मौजूद है। इतना होते हुए भी हम देखते हैं कि मनुष्य बड़ी निम्न कोटि का जीवन बिता रहा है, दिव्य होते हुए भी दैवी सम्पदाओं से वंचित हो रहा है।

परमात्मा सत् है परन्तु उसके पुत्र हम असत् में निमग्न हो रहे हैं। परमात्मा चित् है, हम अन्धकार में डूबे हुए हैं। पमात्मा आनन्द स्वरूप है, हम दुःखों से संत्रस्त हो रहे हैं। ऐसी उल्टी परिस्थिति उत्पन्न हो जाने का कारण क्या है? यह विचारणीय प्रश्न है। जबकि ईश्वर का अविनाशी राजकुमार अपने पिता के इस सुरम्य उपवन संसार में विनोद क्रीड़ा करने के लिये आया हुआ है तो उसकी जीवनयात्रा आनन्दमय न रहकर दुःख-दारिद्र से भरी हुई क्यों बन गई है? यह एक विचारणीय पहेली है।

अग्नि स्वभावतः उष्ण और प्रकाशवान् होती है, परन्तु जब जलता हुआ अंगार बुझने लगे तो उसका ऊपरी भाग राख से ढक जाता है तब उस राख से ढके हुए अंगार में वे दोनों ही गुण दृष्टिगोचर नहीं होते जो अग्नि में स्वभावतः होते हैं । बुझा हुआ, राख से ढका हुआ अंगार न तो गर्म होता है और न प्रकाशवान, वह काली कलूटी, कुरूप भस्म का ढेर मात्र बना हुआ पड़ा रहता है। जलते हुए अंगार को इस दुर्दशा में ले पहुँचाने का कारण वह भस्म है जिसने उसे चारों ओर से घेर लिया है। यदि यह राख की परत ऊपर से हटा दी जाय तो भीतरी भाग में फिर वैसी ही अग्नि मिल सकती है जो अपनी उष्णता और प्रकाश के गुण से सुसम्पन्न हो।

परमात्मा सच्चिनान्द है, वह आनन्द से ओत-प्रोत है। उसका पुत्र आत्मा भी आनन्दमय ही होना चाहिए। जीवन की विनोद क्रीड़ा करते हुए इस नन्दनवन में उसे आनन्द ही अनुभव होना चाहिए। इस वास्तविकता को छिपाकर जो उसके बिल्कुल उल्टी दुःख-दारिद्र और क्लेश-कलह की स्थिति उत्पन्न कर देती है वह कुबुद्धि रूपी राख है। जैसे अंगारे को राख ढककर उसको अपनी स्वाभाविक स्थिति से वंचित कर देती है, वैसे ही आत्मा की परम सात्विक, परम आनन्दमयी स्थिति को यह कुबुद्धि ढक लेती है और मनुष्य निकृष्ट कोटि का दीन-हीन जीवन व्यतीत करने लगता है।

'कुबुद्धि' को ही माया, असुरता, अन्धतमिसा, अविद्या आदि नामों से पुकारते हैं। यह आवरण मनुष्य की मनोभूमि पर जितना मोटा चढ़ा होता है, वह उतना ही दुःख पाता जाता है। शरीर पर मैल की जितनी मोटी तह जम रही होगी उतनी ही खुजली

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मचेगी और दुर्गन्ध उड़ेगी। यह तह जितनी ही कम होगी उतनी ही खुजली और दुर्गन्ध कम होगी। शरीर में दूषित, विजातीय विष एकत्रित न हो तो किसी प्रकार का कोई रोग न होगा, पर यह विकृतियाँ जितनी अधिक जमा होती जायेंगी शरीर उतना ही रोगग्रस्त होता जायेगा। 'कुबुद्धि' एक प्रकार से शरीर पर जमी हुई मैल के तह या रक्त से भरी हुई विषैली विकृति है जिसके कारण खुजली, दुर्गन्ध, बीमारी तथा अनेक प्रकार की अन्य असुविधाओं के समान जीवन में नाना प्रकार की पीड़ा, चिन्ता, बैचेनी और परेशानी उत्पन्न होती रहती है।

लोग नाना प्रकार के कष्टों से दुःखी हैं। कोई बीमारी में कराह रहा है, कोई गरीबी से दुःखी है, किसी का दाम्पत्य जीवन कष्टमय है, किसी को सन्तान की चिन्ता है, व्यापार में घाटा, उन्नति में अड़चन, असफलता की आशंका, मुकदमा, शत्रु के आक्रमण का भय, अन्याय से उत्पीड़न, मित्रों का विश्वासघात, दहेज की चिन्ता, प्रियजनों का विछोह आदि का दुःख आये दिन दुःखी बनाये रहता है। व्यक्तिगत जीवन की भाँति धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में भी अशांति कम नहीं है। यदि कोई व्यक्ति अपने आपको बहुत संभाल कर रखे तो भी व्यापक बुराइयों एवं कुव्यवस्थाओं के कारण उसकी शांति नष्ट हो जाती है और जीवन का आनन्दमय उद्देश्य प्राप्त करने में बाधा पड़ती है।

दुःख चाहे व्यक्तिगत हो या सामूहिक, उसका कारण एक ही है और वह है-कुबुद्धि। संसार में इतने प्रचुर परिमाण में सुख-साधन भरे पड़े हैं कि इन खिलौनों से खेलते सारा जीवन हँसी-खुशी में बीत सकता है। मनुष्य को ऐसा अमूल्य शरीर, मस्तिष्क एवं इन्द्रिय समूह मिला हुआ है कि इनके द्वारा साधारण वस्तुओं एवं परिस्थितियों में भी इतना आनन्द लिया जा सकता है कि स्वर्ग भी उसकी तुलना में तुच्छ सिद्ध होगा। इतना सब होते हुए भी लोग बेतरह दुःखी हैं, जिन्दगी में कोई रस नहीं, मौत के दिन पूरे करने के लिए जीवन बोझ की तरह काटा जा रहा है। मन में चिन्ता, बेबसी, भय, दीनता और बेचैनी की अग्नि दिन भर जलती रहती है, जिसके कारण पुराणों में वर्णित नारकीय यातनाओं जैसी व्यथायें सहनी पड़ती हैं।

यह संसार चित्र सा सुन्दर है, इसमें कुरूपता का एक कण भी नहीं । यह विश्व विनोदमयी क्रीड़ा का प्रांगण है, इसमें चिन्ता और भय के लिए कोई स्थान नहीं। यह जीवन आनन्द का निर्बाध निर्झर है, इसमें दुःखी रहने का कोई कारण नहीं। स्वर्गादपि गरीयसी-इस जननी जन्मभूमि में वे सभी तत्व मौजूद हैं जो मानस की कली को खिलाते हैं। इस सुर दुर्लभ नर तन की रचना ऐसे सुन्दर ढंग से हुई है कि साधारण वस्तुओं को वह अपने स्पर्श मात्र से ही सरस बना लेता है। परमात्मा का राजकुमार आत्मा इस संसार में क्रीड़ा कल्लोल करने आता है, उसे शरीर रूपी रथ, इन्द्रियों रूपी सेवक, मस्तिष्क रूपी मन्त्री देकर परमात्मा ने यहाँ इसलिये भेजा है कि इस नन्दन वन जैसे संसार की शोभा को देखे, उसमें सर्वत्र बिखरी हुई सरलता का स्पर्श और आस्वादन करे। यदि इस महान उद्देश्य में बाधा उपस्थित करने वाली, स्वर्ग को नरक बना देने वाली कोई वस्तु है तो वह केवल कुबुद्धि ही है।

स्वस्थता हमारी स्वाभाविक स्थिति है, बीमारी अस्वाभाविक एवं अपनी भूल से पैदा हुई है। पशु-पक्षी जो प्रकृति का स्वाभाविक अनुसरण करते हैं, बीमार नहीं पड़ते, वे सदा स्वास्थ्य का सुख भोगते हैं, पर मनुष्य नाना प्रकार के मिथ्या आहार-विहार के द्वारा बीमारी को न्योंत बुलाता है। यदि वह अपना आहार-विहार प्रकृति के अनुकूल रखे तो कभी बीमार न पड़े। इसी प्रकार सद्बुद्धि स्वाभाविक है । यह ईश्वर प्रदत्त है, दैवी है, जन्मजात है, जीवन संगिनी है। संसार में भेजते समय प्रभु हमें सद्बुद्धि रूपी कामधेनु भी देते हैं ताकि हमारे सम्पूर्ण सुख-साधन जुटाती रहे, परन्तु हम भूलवश, भ्रमवश, अज्ञानवश, मायाग्रस्त होकर सद्बुद्धि को त्यागकर कुबुद्धि को अपना लेते हैं और जैसे मिथ्या चरण से बीमारी न्योंत बुलाई जाती है, वैसे ही मानसिक अव्यवस्था के कारण कुबुद्धि को आमंत्रित किया जाता है। यह पिशाचिनी जहाँ आई नहीं कि जीवन का सारा क्रम उल्टा नहीं, दोनों एक साथ रह नहीं सकतीं। जहाँ कुबुद्धि होगी वहाँ तो अशांति, चिंता, तृष्णा, नीचता, कायरता आदि की कष्टकारक स्थितियों का ही निवास होगा।

गायत्री सद्बुद्धि ही है। इस महामन्त्र में सदबुद्धि के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई है। इसके २४ अक्षरों में २४ अमूल्य शिक्षा सन्देश भरे हुए हैं, वे सद्बुद्धि के मूर्तिमान प्रतीक हैं। उन शिक्षाओं में वे सभी आधार मौजूद है, जिन्हें हृदयंगम करने वाले का सम्पूर्ण दृष्टिकोण शुद्ध हो जाता है और उस भ्रमजन्य अविद्या का नाश हो जाता है जो आये दिन कोई न कोई कष्ट उत्पन्न करती है। गायत्री महामन्त्र की रचना ऐसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

वैज्ञानिक आधार पर हुई है कि उसकी साधना से अपने भीतर छिपे हुए अनेकों गुप्त शक्ति-केन्द्र खुल जाते हैं और अन्तःस्थल में सात्विकता की निर्झरिणी बहने लगती है। विश्वव्यापी अपनी प्रबल चुम्बक शक्ति को खींचकर अन्तःप्रदेश में जमा करने की अद्भुत शक्ति गायत्री में मौजूद है। इन सब कारणों से कुबुद्धि का शमन करने में गायत्री अचूक रामबाण मंत्र की तरह प्रभावशाली सिद्ध होती है । इस शमन के साथ-साथ अनेकों दुःखों का समाप्त हो जाना भी पूर्णतया निश्चित है। गायत्री दैवी प्रकाश की वह अखण्ड ज्योति है जिसके कारण कुबुद्धि का अज्ञानान्धकार दूर होता है और अपनी स्वाभाविक स्थिति प्राप्त हो जाती है जिसको लेकर आत्मा इस पुण्यमयी धरती माता की परम शक्तिदायक गोदी में किलोल करने आया है।

रंगीन काँच का चश्मा पहन लेने पर आंखों से सब चीजें उसी रंग की दिखती हैं जिस रंग का वह काँच होता है। कुबुद्धि का चश्मा लगा लेने से सीधी साधारण सी परिस्थितियाँ और घटनाएँ भी दुःखदायी दिखाई देने लगती हैं। जिस मनुष्य को भौंरा रोग हो जाता है, सिर घूमता है मस्तिष्क में चक्कर आते हैं, उसे दिखाई देता है कि सारी पृथ्वी, मकान, वृक्ष आदि घूम रहे हैं। डरपोक आदमी को झाड़ी में भूत दिखाई देता है। जिसके भीतर दोष है उसे बाहर के सुधार से कुछ लाभ नहीं हो सकता, उसका रोग मिटेगा तभी जब बाहरी अनुभूतियों का निवारण होगा। पीला चश्मा पहनने वाले के सामने चाहे कितनी ही चीजें बदल कर रखी जायें, पर पीले पन के अतिरिक्त और कुछ दिखाई न देगा। बुखार से मुँह कड़आ हो रहा है तो उसे स्वादिष्ट पदार्थ भी कडुए लगेंगे। कुबुद्धि ने जिसके दृष्टिकोण को, विचार प्रवाह को दूषित बना दिया है वह चाहे स्वर्ग में रखा जाय, चाहे कुबेर सा धनपति या इन्द्र सा सत्ता सम्पन्न बना दिया जाये, तो भी दुःखों से छूट न सकेगा।

गायत्री महामन्त्र का प्रधान कार्य कुबुद्धि का निवारण है। जो व्यक्ति कुबुद्धि से बचने और सद्मार्ग की ओर अग्रसर होने का व्रत लेता है, वही गायत्री का उपासक है। इस उपासना का फल तत्काल मिलता है। जो अपने अन्तःकरण में सदबुद्धि को जितना स्थान देता है, उसे उतनी ही मात्रा में तत्काल आनन्दमयी स्थिति का लाभ प्राप्त होता है।

इसे यह नहीं मान लेना चाहिए कि गायत्री उपासना जीवन सुधार का एक मनोवैज्ञानिक प्रयोग मात्र है। वस्तुतः उसका दर्शन और भाव पक्ष इतना समर्थ है कि सांसारिक कठिनाओं के निवारण के साथ ही साधक के शरीरस्थ शक्ति केन्द्रों का तेजी से विकास होता है । इन चक्रों, उपत्यिकाओं आदि में ऐसी विलक्षण क्षमतायें भरी पड़ी हैं जो साधक को अणिमा, गरिमा, लघिमा, महिमा, ऋद्धि-सिद्धियों से विभूषित कर देती है। इस जागृति का प्रभाव मनुष्य के व्यक्तित्व को समान रूप से विकसित करने में सहायक सिद्ध होता है।

व्यायाम से शरीर पुष्ट होता है, अध्ययन से विद्या आती है, श्रम करने से धन कमाया जाता है, सत्कर्मों से यश मिलता है, सद्गुणों से मित्र बढ़ते हैं । इसी प्रकार उपासना द्वारा अन्तरंग जीवन में प्रसुप्त पड़ी हुई अत्यन्त ही महत्वपूर्ण शक्तियाँ सजग हो उठती हैं और उस जागृति का प्रकाश मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में एक विशिष्टता का रूप धारण करके प्रकट हुआ प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता है। गायत्री उपासक में तेजस्विता की अभिवृद्धि स्वाभाविक है। तेजस्वी एवं मनस्वी व्यक्ति स्वभावतः हर दिशा में सहज सफलता प्राप्त करता चलता है ।

मानवीय मस्तिष्क में जो शक्ति केन्द्र भरे पड़े हैं, उनका पूरी तरह से उपयोग कर सकना तो दूर, अभी मनुष्य को उनका परिचय भी पूरी तरह नहीं मिलता है। मनोवैज्ञानिकों को अन्तर्मन की जितनी जानकारी अभी तक विशाल अनुसंधानों के बाद मिल सकी है उसे वे दो प्रतिशत के लगभग ही मानते हैं। प्रस्तुत मन की ९८ प्रतिशत जानकारी प्राप्त करना अभी शेष है। इसी प्रकार शरीर-शास्त्री डाक्टरों ने बाहरी मस्तिष्क का केवल ८ प्रतिशत ज्ञान प्राप्त किया है, शेष के बारे में वे अभी अन्जान हैं। मस्तिष्क सचमुच एक जादू का पिटारा है, इसमें सोचने-समझने की क्षमता तो है ही, साथ ही उसमें ऐसे चुम्बक तत्व भी हैं जो अनन्त आकाश में भ्रमण करने वाली अद्भुत सिद्धियों, विभूतियों एवं सफलताओं को अपनी ओर खींचकर आकर्षित कर सकते हैं, सूक्ष्म जगत में अपने अनुकूल वातावरण बना सकते हैं। जिन व्यक्तियों के साथ अपनी कामना, आकांक्षा का सम्बन्ध है, उन पर ऐसा प्रभाव डाला जा सकता है कि हमारे अनुकूल गतिविधि ही अपनानी पड़े। गायत्री उपासना से ऐसे ही मानसिक चुम्बक तत्व सक्रिय हो उठते हैं। मनोबल बढ़ने से ऐसी विद्युत धारा अन्तर्मन के प्रसुप्त क्षेत्रों में गतिशील हो जाती है कि अब तक अपने प्रयोजन में आया हुआ मस्तिष्कीय चुम्बक सक्रिय हो उठता है

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और वे उपलब्धियाँ लाकर खड़ी कर देता है जिन्हें आमतौर से सिद्धियों, विभूतियों का वरदान एवं दैवी सहायता कहा जा सके।

उपासना में बरती गई तपश्चर्या से द्रवित होकर गायत्री माता ने अमुक सिद्धि या सफलता प्रदान की। यह भावुक भक्त का दृष्टिकोण है। इसी तथ्य का वैज्ञानिक दृष्टिकोण यह है कि कठोर नियम प्रतिबन्धों का पालन करने से जो प्रतिरोधात्मक क्षमता बढ़ी, उसने मनोबल का विकास किया, उसने अन्तर्मन के प्रसुप्त शक्ति-केन्द्रों का चुम्बकत्व जगाया और उसी जागरण ने अभीष्ट सफलताएँ खींचकर सामने लाकर खड़ी कर दीं। मनुष्य अपने आप में एक देवता है। उसके भीतर वे समस्त दैवी शक्तियाँ बीज रूप में विराजमान रहती हैं। जो इस विश्व में अन्यन्त्र कहीं भी हो सकती हैं। अन्यत्र रहने वाले देवता अपनी निर्धारित जिम्मेदारियाँ पूरी करने में लगे रहते हैं। वे हमारे व्यक्तिगत कामों में इतनी अधिक दिलचस्पी नहीं ले सकते कि अगणित उपासकों या भक्तों की अगणित प्रकार की समस्याओं को सुलझाने में संलग्न हो सकें। यह हल करने की क्षमता हमारे अपने भीतर रहने वाले देवता में ही होती है और उसी को किसी अनुष्ठान द्वारा सशक्त एवं गतिशील बना करके साधक को अपना प्रयोजन वस्तुतः आप पूरा करना पड़ता है।

गायत्री-उपासक मनुष्य जीवन को बहिरंग एवं अंतरंग दोनों ही दृष्टियों में समृद्ध और समुन्नत बनाने का राजमार्ग है। बाह्य उपचार से बाह्य जीवन की प्रगति होती है, पर अन्तरंग विकास के बिना उसमें पूर्णता नहीं आ पाती। बाहरी जीवन की विशेषतायें छोटा-सा शोक-सन्ताप, रोग, कष्ट, अवरोध, दुर्दिन सामने आते ही अस्त-व्यस्त हो जाती है, पर जिस व्यक्ति के पास आंतरिक दृढ़ता, समृद्धि एवं क्षमता है, वह बाहर के जीवन में बड़े से बड़ा अवरोध आने पर भी सुस्थिर बना रहता है और भयानक भँवरों को चीरता हुआ अपनी नाव पार ले जाता है। भौतिक समृद्धि और आत्मिक शांति के लिए उपासना की वैज्ञानिक प्रक्रिया अचूक साधना है और कहना न होगा कि उपासनाओं में सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोपरि एक मात्र गायत्री महामन्त्र की उपासना ही है।

शास्त्रकारों ने गायत्री की सर्वोपरि शक्ति, स्थिति और उपयोगिता को एक स्वर से स्वीकार किया है। इस सन्दर्भ में पाये जाने वाले अगणित प्रमाणों में से कुछ नीचे प्रस्तुत हैं-

सर्वेषां जपसूक्तानां ऋचाँश्च यजुषां तथा।
साम्नां चैकाक्षरादीनां गायत्री परमो जपः॥

— वृहत् पाराशर स्मृति

अर्थ—समस्त जप सूत्रों में, समस्त वेद मन्त्रों में, एकाक्षर बीज मन्त्रों में गायत्री ही सर्वश्रेष्ठ है।

इति वेद पवित्राण्य भिहितानि एभ्य सावित्री विशिष्यते।

— शंख स्मृति

अर्थ—यों सभी वेद के मन्त्र पवित्र हैं, पर इन सब में गायत्री मन्त्र सर्वश्रेष्ठ है।

सप्त कोटि महामन्त्रा, गायत्री नायिका स्मृता ।
आदि देवा ह्युपासन्ते गायत्री वेद मातरम् ॥

— कूर्म पुराण

अर्थ—गायत्री सर्वोपरि सेनानायक के समान है देवता इसी की उपासना करते हैं। यही चारों वेदों की माता है।

तादित्यृचा समो नास्ति मन्त्रो वेदचतुष्टये ।
सर्वेवेदाँश्च यज्ञाश्च दानानि च तपांसि च ॥
समानि कलया प्राहुर्मुनयो न तदित्यृक् ॥

— याज्ञवल्क्य

अर्थ—गायत्री के समान चारों वेदों में कोई मन्त्र नहीं है। समस्त वेद, यज्ञ, दान तप मिलकर भी एक कला के बराबर भी नहीं हो सकते, ऐसा ऋषियों ने कहा है—

दुर्लभा सर्वमन्त्रेषु गायत्री प्रणवान्विता ।
न गायत्र्यधिंक किंचित् त्रयीषुपरिगीयते ॥

— हारीत

अर्थ—इस संसार में गायत्री के समान परम समर्थ और दुर्लभ मन्त्र कोई नहीं है। वेदों में गायत्री से श्रेष्ठ कुछ और नहीं है।

नास्ति गंगा समं तीर्थ न देवः केशवात्परः ।
गायत्र्यास्तु परं जाप्यं न भूतं न भविष्यति ॥

— अत्रि

अर्थ—गंगा के समान कोई तीर्थ नहीं, केशव के समान कोई देवता नहीं। गायत्री से श्रेष्ठ कोई जप न कभी हुआ है और न कभी होगा।

गायत्री सर्वमन्त्राणां शिरोमणिस्तथा स्थिता ।
विद्यानामपि तेनैतां साधने सर्वसिद्धये. ॥
त्रिव्याहृतियुतां देवीमोंकारयुगसम्पुटाम् ।
उपास्यचतुरो वर्गान्सादयेद्यो न सोऽन्धधीः ॥
देव्या द्विजत्वमासाद्य श्रेयसेऽन्यरतास्तु ये ।
ते रत्नानिवांछन्ति हित्वा चिंतामणि करात् ॥

— महा वार्तिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्थ—गायत्री सब मन्त्रों तथा सब विद्याओं में शिरोमणि है। उससे इन्द्रियों की साधना होती है। जो व्यक्ति इस उपासना के द्वारा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पदार्थों को प्राप्त करने से चूकते हैं वे मन्द-बुद्धि हैं. जो द्विज गायत्री मन्त्र के होते हुए भी अन्य मन्त्रों की साधना करते हैं वे ऐसे ही हतभागी हैं जैसे कि चिन्तामणि को फेंककर छोटे-छोटे चमकीले पत्थर ढूँढ़ने वाले।

यथा कथं च जप्तैषा त्रिपदा परम पावनी।
सर्वकामप्रदा प्रोक्ता विधिना किं पुनर्नृय ॥

अर्थ—हे राजन! जैसे-तैसे उपासना करने वाले की भी गायत्री माता कामना पूर्ण करती है, फिर विधिवत् साधना करने के सत्परिणामों का तो कहना ही क्या है।

कामान्दुग्धे विप्रकर्षत्यलक्ष्मी,
पुण्यं सूते दुष्कृतं य हिनस्ति॥
शुद्धां शान्तां मातरं मंगलानां,
धेनुं धीरां गायत्रीमन्त्रमाहुः ॥

—वशिष्ठ

अर्थ—गायत्री कामधेनु के समान मनोकामनाओं को पूर्ण करती है, दुर्भाग्य, दरिद्रता आदि कष्टों को दूर करती है, पुण्य को बढ़ाती है, पाप का नाश करती है। ऐसी परम शुद्ध-शांतिदायिनी, कल्याणकारिणी महाशक्ति को ऋषि लोग गायत्री कहते हैं।

प्राचीन काल में महर्षियों ने बड़ी-बड़ी तपस्यायें और योग साधनायें करके अणिमा-महिमा आदि ऋद्धि-सिद्धियाँ प्राप्त की थीं। इनकी चमत्कारी शक्तियों के वर्णन से इतिहास-पुराण भरे पड़े हैं। वह तपस्या थी, इसीलिये महर्षियों ने प्रत्येक भारतीय के लिए गायत्री की नित्य उपासना करने का निर्देश दिया था। गायत्री उपासना नित्य-नियमित रूप से की जानी चाहिए। त्रिकाल संध्या में प्रातः, मध्याह्न और सायं तीन बार उसी की उपासना करने का नित्यकर्म शास्त्रों में आवश्यक बतलाया गया है।

पौराणिक कथा प्रसंगों में भी स्थान-स्थान पर गायत्री उपासना द्वारा उल्लेखनीय आध्यात्मिक भौतिक सफलतायें प्राप्त करने के आख्यान मिलते हैं। इस युग में भी ऐसे बहुत से गायत्री उपासक हुए हैं जो सर्व-शक्तिमान गायत्री का आश्रय लेकर सांसारिक विभूतियाँ और सिद्धियाँ अर्जित कर सुख-शांति और लोकयश के शिखर तक पहुँचे। कई उपाख्यान अटपटे से हैं, पर उनमें भी गायत्री उपासना के सुनिश्चित सत्परिणामों का संकेत मिलता है।

गायत्री कथा-प्रसंगों में

यजुर्वेद में गायत्री महामन्त्र को एक विचित्र वृषभ के रूप में अलंकृत किया गया है-

चत्वारिश्रृंगा त्रयो अस्य पादा,
द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽअस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति,
महादेवो मर्त्या आविवेश॥

—यजु०१७/१९

चार सींग वाला, तीन पैर वाला, दो सिरवाला, सात हाथों वाला, तीन जगह बंधा हुआ यह गायत्री महामन्त्र रूपी वृषभ जब दहाड़ता है तब महान् देव बन जाता है और अपने सेवक का कल्याण करता है।

चार वेद-चार सींग। आठ-आठ अक्षरों के तीन चरण अर्थात् तीन पैर। ज्ञान और विज्ञान दो सिर। सात व्याहृतियाँ, सात हाथ, जिनके द्वारा सात विभूतियाँ मिलती हैं, ज्ञान, कर्म, उपासना से तीन जगह बँधा हुआ है तो देवत्व की दिव्य परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं और सान्निध्य में रहने वाला व्यक्ति सब कुछ पा जाता है।

गायत्री के २४ अक्षरों को दक्ष प्रजापित की, परब्रह्म की २४ कन्यायें बताया गया है। इनका पाणिग्रहण धर्म ने किया, ऐसा लिखा है। इसमें यह संकेत है कि धर्मात्मा व्यक्ति इस महाशक्ति की २४ उपलब्धियों से लाभान्वित हो सकता है।

चतुर्विंशति कन्याश्च सृष्टवान् दक्ष उत्तमः ।
श्रद्धा लक्ष्मीर्धृतिस्तुष्टिः पुष्टिर्मेधा क्रिया तथा ॥
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिर्ऋद्धिः कीर्तिस्त्रयोदशी ।
पत्न्यर्थं प्रतिजग्राह धर्मो दाक्षायणः प्रभुः ॥

-गरुड़ पुराण

दक्ष ने चौबीस कन्याओं को जन्म ग्रहण कराया था जिनके शुभ नाम श्रद्धा, लक्ष्मी, धृति, पुष्टि, तुष्टि, मेधा, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, वपु, शांति, ऋद्धि, कीर्ति आदि थे। इनका दाक्षायण प्रभु धर्म ने अपनी पत्नियाँ बनाने के लिए ग्रहण किया था।

देवी भागवत के अश्वपति उपाख्यान में अनुदान का वर्णन इस प्रकार आता है-

ततः सावित्र्युपाख्यानं तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ।
पुरा केन समुद्रभुता सा श्रुता च श्रुतेः प्रसः ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

केन वा पूजिता लोके प्रथमे कैश्च वा परे ॥
ब्रह्मणा वेदजननी प्रथमें पूजिवा मुने ।
द्वितीये च वेदगणैस्तत्पश्चाद्दिषां गणैः ॥
तदा चाश्वपतिर्भूपः पूजयामास भारत ।
तत्पश्चात्पूजयामासुर्वर्णाश्चत्वार एव च ॥

—देवी भागवत (सावित्री उपाख्यान)

नारदजी ने भगवान से पूछा-प्रख्यात है कि श्रुतियाँ गायत्री से उत्पन्न हुई हैं, कृपा करके उस गायत्री की उत्पत्ति बताइये।

भगवान ने कहा-वेद जननी गायत्री की उपासना सर्वप्रथम ब्रह्माजी ने की, फिर देवता उनकी आराधना करने लगे। फिर विद्वान, ज्ञानी-तपस्वी उसकी साधना करने लगे। राजा अश्वपति ने विशेष रूप से उसकी तपश्चर्या की और फिर तो चारों ही वर्ण उस गायत्री की उपासना में तत्पर हो गये।

महाभारत वन पर्व में भगवती सावित्री से अग्निहोत्र की अग्नि में से प्रकट होने और राजा की साधनायुक्त उपासना से प्रसन्न होकर उसे वरदान देने की चर्चा इस प्रकार आती है-

रूपिणी तु तदा राजन् दर्शयामास तं नृपम् ।
अग्निहोत्रात् समुत्थाय हर्षेण महतान्विता ॥
उवाच चैनं वरदा वचनं पार्थिवं तदा ।
सा तमश्वपतिं राजन् सावित्रीनियमेस्थितम् ॥

—महाभारत वन पर्व

राजन ! तब मूर्तिमयी सावित्री देवी ने अग्निहोत्र की अग्नि से प्रकट होकर बड़े हर्ष के साथ राजा को प्रत्यक्ष दर्शन दिया और वर देने के लिए उद्यत हो अनुष्ठान के नियमों में स्थित उस राजा अश्वपति से इस प्रकार कहा—

ब्रह्मचर्येण शुद्धेन दमेन नियमेन च ।
सर्वात्मना च भक्त्या च तुष्टास्मि तव पार्थिव ॥

सावित्री ने कहा-राजन्! मैं तेरे विशुद्ध ब्रह्मचर्य, इंद्रिय संयम, मनो-निग्रह तथा सम्पूर्ण हृदय से की हुई भक्ति के द्वारा बहुत सन्तुष्ट हुई हूँ।

इसी उपाख्यान में महर्षि पाराशर ने अश्वपति को गायत्री महाशक्ति का माहात्मय तथा उपासना विधान विस्तारपूर्वक बताया है। राजा की बन्ध्या पत्नी को सुसंतति प्राप्त होने तथा अन्य भौतिक एवं आत्मिक लाभ मिलने की चर्चा भी इसी प्रसंग में आती है।

दुर्भिक्ष निवारण के लिए गायत्री महाशक्ति का उपयोग करने का प्रसंग भी देवी भागवत में आता है जिसमें महर्षि द्वारा सामूहिक गायत्री उपासना के निर्देश तथा उसके पुण्य प्रतिफल से उस कष्ट-निवारण का उल्लेख है—

कदाचिदथ काले तु दशपंचसमा विभो ।
प्राणिनां कर्मवशतो नववर्ष शतक्रतु : ॥
अनावृष्ट्याऽतिदुर्भिक्षमभवत्क्षयकारकम् ॥
गृहे-गृहे शवानां तु संख्या कर्तु न शक्यते ॥
ब्राह्मणाः बहवस्तत्र विचारं चक्रुः रुत्तमम् ।
तपोधनो गौतमोऽस्ति स नः खेदं हरिष्यति ॥
सर्वेमिलित्वा गंतव्यं गौतमस्याश्रमेऽधुना ।
गायत्रीजपसंसक्तगौतमस्याश्रमेऽधुना ॥
इति सर्वान्समाश्वास्य गौतमी मुनिराट् तदा ।
गायत्रीं प्रार्थयामास भक्तिसन्नद्धचेतसा ॥
पूर्णपात्र ददौ तस्मै येन स्यात्सर्वपोषणम् ॥
उवाच मुनि मंबा सा यं कामं त्वमिच्छसि ॥
तस्य पूर्तिकरं पात्रं मया दत्तं भविष्यति ।
इत्युक्त्वाऽन्तर्दधे देवो गायत्री परमा कला ॥
अन्नानां राशयस्तस्मान्निर्गताः पर्वतोपमाः ।
इत्थंद्वादशवर्षाणि पुपोष मुनिपुंगवान् ॥
पुत्रवन्मुनिराड्गर्वगंधेन परिवर्जितः ।
यत्रसर्वैर्मुनिवरैः पूज्यते जगदम्बिका ॥
त्रिकालं परया भक्तया पुरश्चरणकर्मभिः ॥

—देवी भागवत

व्यासजी ने जनमेजय से कहा-एक बार पन्द्रह वर्षों तक वर्षा नहीं हुई। इस अनावृष्टि के कारण भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा। असंख्य प्राणी भूख से तड़प कर मर गये । उनकी लाशें घरों में सड़ने लगीं।

तब सज्जनों ने इकट्ठे होकर विचार किया कि गायत्री के परम उपासक तपोनिष्ठ गौतम के पास चलना चाहिए, वे इस विपत्ति को दूर कर सकेंगे। वे सब मिलकर गौतम के पास गये और कष्ट सुनाया।

आगन्तुकों को सम्मानपूर्वक आश्वासन देकर गौतम ऋषि ने सर्व-शक्तिमान गायत्री से उस संकट के निवारण के लिए प्रार्थना की।

जगद्माता गायत्री ने प्रसन्न होकर गौतम ऋषि को समस्त प्राणियों का पोषण कर सकने में समर्थ एक पूर्णपात्र दिया और कहा—इससे तुम्हारी समस्त अभीष्ट कामनायें पूर्ण हो जाया करेंगी। यह कहकर वेदमाता अन्तर्ध्यान हो गयीं और उस पात्र की कृपा से अन्न के पर्वतों जैसे ढेर लग गये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

२.९ गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार

गौतम ऋषि ने आगन्तुकों को गायत्री का एक परम तीर्थ बतला दिया, जहाँ रहकर वे सब गायत्री माता के पुरश्चरण भक्तिपूर्वक करने में संलग्न हो गये।

गायत्री उपासना से ब्रह्मवर्चस की प्राप्ति

एक समय की बात है कि पृथ्वी पर घोर दुष्काल पड़ा। अनावृष्टि के कारण सब ओर सूखा दिखाई पड़ने लगा। बड़े-बड़े सरोवर भी सूख गये। पशु-पक्षी सभी जल के लिए भटकने लगे। घरों में मनुष्यों की लाशें सड़ने लगीं। नीचे से पृथ्वी का रस सूखा और ऊपर से सूर्य का ताप इतना बढ़ा कि अग्नि वर्षा-सी होने लगी।

यह बात सभी जानते थे कि महर्षि गौतम की तप-शक्ति बहुत बढ़ी-चढ़ी थी। गौतम गायत्री के उपासक थे । सर्वत्र घोर दुर्भिक्ष होते हुए भी उनके आश्रम की भूमि सुरक्षित थी। वहाँ पर जल और अन्न की कोई कमी नहीं थी।

इस स्थिति में बहुत से ब्राह्मण एकत्र होकर महर्षि के आश्रम पर पहुँचे और कुशल प्रश्न के अनन्तर उन्होंने अपना कष्ट कह सुनाया। महर्षि ने उन्हें हर प्रकार सान्त्वना दी और उनसे वहीं रहने का अनुरोध किया। तदनन्तर महर्षि ने भगवती गायत्री से प्रार्थना की। अम्बे! मैं तुम्हें बारम्बार नमस्कार करता हूँ। तुम प्राणियों की विपत्तियों को दूर करने में समर्थ हो। इस घोर दुर्भिक्ष के समय में भी प्राणियों की सेवा कर सकूँ, ऐसा बल दो। जगत् जननी तुम्हीं इस घोर संकट से उद्धार करने वाली हो।

माता गायत्री ने कहा-'महर्षि! मैं तुम्हें अक्षय-पात्र देती हूँ। कल्प वृक्ष के समान यह पात्र तुम्हारी इच्छित वस्तुओं से सदा पूर्ण रहेगा'। वही हुआ। अक्षय पात्र के द्वारा अन्न, वस्त्र, आभूषण, धन-धान्य सभी के ढेर लग गये। ब्राह्मणों की पत्नियाँ श्रेष्ठ वस्त्रालंकारों में देवांगनायें जैसी लगने लगीं। महर्षि जब जिस वस्तु की इच्छा करते तभी उस वस्तु को अक्षय पात्र पूर्ण कर देता। उस समय वह आश्रम चारों ओर सौ-सौ योजन बढ़ गया था और वहाँ की शोभा इन्द्रपुरी से भी बढ़ी-चढ़ी हो गयी।

उस समय गौतम नगरी में यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म विधिवत् होते थे। देवगण भी यज्ञ भाग पाते हुए प्रसन्न थे। गौतम का यश सर्वत्र छा गया था। देवराज इन्द्र ने भी अपनी सभा में इनकी अत्यन्त प्रशंसा की। भगवती गायत्री के अनुग्रह से बारह वर्षों तक परिवारों का भरण-पोषण करते रहे।

महर्षि गौतम की प्रसंशा सर्वत्र फैल गयी। उन्होंने प्राणी-मात्र के कल्याण की जो प्रार्थना भगवती गायत्री से की थी, उसके फलस्वरूप जलवृष्टि और धन-धान्यादि की उत्पत्ति होने लगी। सूर्य का ताप अपनी विकरालता छोड़कर पूर्वमान पर आ गया। इससे उत्पन्न हुए उत्कर्ष को कुछ ईर्ष्यालु व्यक्ति सहन न कर सके, उन्होंने माया की एक गौ निर्मित की जिसकी देह जीर्ण-शीर्ण थी। उनकी प्रेरणा से वह गौ महर्षि के आश्रम के सामने जाकर मर गई। तब उन दुष्टों ने उसकी हत्या का आरोप महर्षि पर लगाने की चेष्टा की।

महर्षि को इस कार्य से अत्यन्त क्षोभ हुआ। वे नेत्र मूँदकर समाधि में लीन हो गये तब उन्हें इस चाल का पता लग गया। समाधि भंग होने पर महर्षि ने उन्हें शाप दिया-मूर्खो! तुम अपने कर्म का फल भोगो और वेदादि कर्म से विमुख हो अधोगति प्राप्त करो।

शाप के कारण उन ईर्ष्यालु व्यक्तियों का सभी ज्ञान लुप्त हो गया था, उन्होंने जो कुछ अध्ययन आदि किया था उस सबको भी भूल गये, उनका सम्मान नष्ट हो गया, समाज में उनकी प्रतिष्ठा न रही। मनुष्य उनसे घृणा करने लगे।

अब उन्हें अपने दुष्कर्म पर पश्चाताप होने लगा। वे उस स्थिति से मुक्त होने का उपाय सोचने लगे। जब कोई युक्ति न सूझी तब वे झिझकते हुए, सिर झुकाये महर्षि के आश्रम में पहुँचे और उनके चरण पकड़ कर क्षमा-याचना करने लगे। उन्होंने कहा-महर्षि! हम से भीषण अपराध हो गया, परन्तु आप उदार मन वाले हैं, हमारे दुष्कर्म को क्षमा कर दीजिए। हे ऋषि श्रेष्ठ! हम पर प्रसन्न हो जाइये! हमारे अपराध को भूल जाइये।

उनका रुदन सुकर गौतम का हृदय करुणा से भर उठा। वे बोले-"उपासना से तुम्हारा कल्याण सम्भव है। अतः एकाग्र मन से उन्हीं का जाप करो।"

उन्हें विदा करने के पश्चात् महर्षि ने सोचा कि इन बेचारों का कोई दोष नहीं था, यह सब प्रारब्ध का ही खेल है। भगवती गायत्री इनका कल्याण करे यह कह कर वे पुनः भगवती की उपासना करने लग गये। भक्ति-विभोर गौतम को पुनः भगवती के दर्शन हुए तथा उन्होंने माता की स्तुति की और निवेदन किया कि हे अम्बे! संसार में पुनः समृद्धि छा गई है। सभी प्राणी आपकी कृपा से सुखी हैं। सर्वत्र सम्पत्ति और महान ऐश्वर्य ही दृष्टिगोचर हो रहा है। सभी प्राणी

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने घरों को जा चुके हैं, अब आपका यह अक्षय पात्र मेरे किस काम आवेगा?

माता ने गौतम के सिर पर स्नेहपूर्वक हाथ फेरा और बोली-'गौतम ! मेरी दी हुई भक्ति सदा तुम्हारे पास रहे।'

गौतम बोले—'मातेश्वरी! तुम्हारी यह सिद्धि अब मैं अपने पास रखने का इच्छुक नहीं हूँ। अब लोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति में इसका उपयोग करना चाहते हैं, इससे मेरी लोकमंगल की साधना में बाधा उत्पन्न होती है।' माता ने महर्षि का हृदय भाव समझ लिया और बोली—'जैसी तुम्हारी इच्छा होगी वही होगा।' ऐसा कहकर मातेश्वरी अन्तर्ध्यान हो गई। महर्षि की इच्छानुसार अक्षय पात्र की शक्ति समाप्त हो गई। आश्रम में इन्द्रपुरी-सी शोभा विराजमान थी, वह अब नितांत नीरव एवं शांत हो गया।

अब महर्षि का मन भी शांत था। वे पुनः भगवती की उपासना में लीन हो गये।

आश्रम में आगन्तुकों की भीड़ अभी भी लगी रहती थी, पर उनमें सांसारिक कामनाओं से ग्रस्त याचक अधिक होते थे। महर्षि उन्हें सान्त्वना तो देते, पुरुषार्थ का, प्रायश्चित का मार्ग भी सुझाते, किन्तु केवल शारीरिक और भौतिक सुखों के लिए ब्राह्मी शक्ति का अपव्यय उन्होंने बन्द कर दिया जिससे निरर्थक भीड़ छँटने लगी। अब जो लोग आया करते थे उनमें आत्म-जिज्ञासुओं की संख्या अधिक रहती । महर्षि उन्हें तत्वज्ञान सिखाते, साधनायें कराते और उन्हें आत्म-कल्याण के राजमार्ग पर चलने की रीति-नीति समझाते। इस ब्रह्मविद्या के प्रभाव से धीरे-धीरे सम्पूर्ण प्रदेश से स्वयमेव दैन्य-दारिद्र मिटता चला गया और सुख-शांति की निर्झरिणी प्रवाहित हो उठी। भगवती गायत्री की उपासना और उनकी कृपा पाकर देश निहाल हो गया, साथ ही महर्षि गौतम की तप साधना भी सार्थक हो गई।

गायत्री-साधना से वेदज्ञान की प्राप्ति

नारायण तीर्थ नामक स्थान में महर्षि विदग्ध शाकल्य का आश्रम था। वहाँ वे अपने एक हजार शिष्यों सहित निवास करते थे। महर्षि के एक शिष्य याज्ञवल्क्य भी उन दिनों उन्हीं के पास थे। महर्षि ने उन्हें ऋग्वेद में पारंगत कर दिया था।

एक दिन आनर्त देश के नरेश सुप्रिय उनके आश्रम पर पहुँचे और वहाँ की सुख-शांति देखकर कुछ दिन वहाँ रहकर ऋषि-मुनियों का सत्संग करने की उन्हें इच्छा हुई। महर्षि ने उनके निवास के लिए अपनी आश्रम-भूमि में ही व्यवस्था कर दी और एक विद्यार्थी को यह कार्य सौंपा कि वह नित्य प्रति राजा सुप्रिय का अभिषेक कर उन्हें सुखी रहने का आशीर्वाद दिया करे।

नित्य की भाँति आज भी याज्ञवल्क्य राजा को शुभाशीष देने के लिए गये, परन्तु राजा को नित्य कर्म से निवृत्त होने में देर हो गई। उन्होंने नम्रता से कहा-ऋषिवर! आप कुछ देर रुकें।

याज्ञवल्क्य ने सोचा कि आश्रम-जीवन में आलस्य नहीं करना चाहिए। उन्होंने राजा से भी ऐसा कहा कि—'राजन्! यह आश्रम-जीवन है। इसमें एक-एक क्षण बहुमूल्य है।'

राजा पर इसका उल्टा प्रभाव पड़ा। उसने सोचा कि यह विद्यार्थी अभिमानी है। वह बोला-'ऋषि कुमार! 'यदि तुम रुकना नहीं चाहते तो सामने पड़े लक्कड़ पर जल डालकर चले जाओ।'

याज्ञवल्क्य ने ऐसा ही किया। सूखे लक्कड़ पर पानी डालकर चले गये। सायंकाल राजा की दृष्टि उस पर पड़ी। लक्कड़ हरा हो गया और उसमें नवीन पत्तियाँ तथा फल-फूल लग गये। यह देख राजा अत्यन्त आश्चर्यचकित हो गये। उन्होंने सोचा-मैंने यह स्वर्ण अवसर गवाँ दिया। जिस जल ने इस शुष्क काष्ठ को हरा-भरा कर दिया यदि मुझ पर पड़ता तो क्या मुझे भी सब प्रकार सुखी न कर देता।

राजा के मन की अशांति बहुत बढ़ गई। वे स्वयं महर्षि की सेवा में उपस्थित हुए। विदग्ध शाकल्य ने राजा को सादर आसन दिया और अभिप्राय जानकर याज्ञवल्क्य को समीप बुलाकर बोले-'वत्स! राजा हमारे अतिथि हैं, इनका इच्छित करना हमारा कर्तव्य है। अतः जिस कार्य से इनका हित हो, वही करो।

याज्ञवल्क्य ने नम्रता से कहा- गुरुदेव! यह तपोभूमि है, यहाँ प्रमादी पुरुष का कल्याण सम्भव नहीं है। राजा के प्रमाद का इन आश्रमवासियों पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा।

राजा ने याज्ञवल्क्य से क्षमा-याचना की, तब विदग्ध शाकल्य बोले-'वत्स याज्ञवल्क्य! क्षमा माँगने वाले पर क्रोध कैसा? अतः राजा पर प्रसन्न होकर इनकी कामना पूर्ण करो।'

याज्ञवल्क्य बोले-'गुरुदेव! राजा मेरे सामने नहीं मेरे चमत्कार के सामने झुका है। मैं इनके हित में कुछ कर सकूँ यह सम्भव नहीं है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

२.११ गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार

विदग्ध शाकल्य क्रोधित हो उठे, उन्होंने कर्कश स्वर में कहा-'अरे मूर्ख! मिथ्याभिमानवश हमारा अपमान कर रहा है। ऐसे प्रमादी शिष्य का इस आश्रम में कोई काम नहीं है। अतः तू मुझसे प्राप्त वेद विद्या को मुझे लौटा कर यहाँ से चला जा।'

याज्ञवल्क्य ने सोचा-'जो गुरुजन अभिमान के वशीभूत होकर अनुचित आज्ञा दें, उनसे विलग हो जाना ही उचित है।

विदग्ध शाकल्य से प्राप्त ऋग्वेद विद्या को लौटाकर याज्ञवल्क्य वहाँ से चल दिये। भ्रमण करते हुए कई मास व्यतीत हो गये। एक दिन वे प्रभास तीर्थ के निकट पहुँचे, वहाँ उनके नाना महर्षि वैशम्पायन निवास करते थे। महर्षि से याज्ञवल्क्य ने अपना सब वृत्तान्त कहा और उनकी आज्ञा पाकर उन्हीं के पास रहने लगे।

वैशम्पायन ने याज्ञवल्क्य को यजुर्वेद की शिक्षा दी। अल्पकाल में ही वे यजुर्वेद के पूर्ण ज्ञाता हो गये। उनकी दिव्य प्रतिभा से वैशम्पायन अत्यन्त प्रसन्न हुए और वे शीघ्र ही आश्रम के कुलगुरु घोषित कर दिये गये।

इसके पश्चात् एक दिन सुमेरु पर्वत पर महर्षियों की एक वृहद सभा हुई। उसकी सूचना सात दिवस पूर्व प्रसारित की गई और उसमें सम्मिलित न होने वाले को ब्रह्म-हत्या लगने वाली बात कही गई। यह जानकर महर्षि वैशम्पायन ने वहाँ जाने का विचार किया, परन्तु चलने की शीघ्रता में किसी प्रकार उनका पाँव एक शिशु पर पड़ गया और उसकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार बाल हत्या तो लगी ही, साथ ही सभा में जाना स्थगित करने के कारण ब्रह्म-हत्या का पाप और लग गया।

वृद्धावस्था और कृश शरीर के कारण प्रायश्चित की महर्षि में शक्ति न रही। अतः उन्होंने याज्ञवल्क्य से कहा कि किसी विद्यार्थी से इसका प्रायश्चित कराओ।

याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया-'भगवन्! इन विद्यार्थियों की शक्ति सीमित है, यदि मुझे प्रायश्चित करने की आज्ञा दें तो मैं इस कार्य को भली प्रकार पूर्ण कर सकूँगा।'

महर्षि ने समझा याज्ञवल्क्य को बड़ा अभिमान हो गया है, यह अन्य शिष्यों को अत्यन्त निस्तेज समझता है । अतः वे बोले —'याज्ञवल्क्य ! तू इन विद्यार्थियों को इतना हीन समझता है कि इनका अपमान करने में नहीं चूका। अतः मुझे तेरे जैसे अभिमानी शिष्य का त्याग करना ही उचित लगता है। तू मेरी दी हुई वेद-विद्या को लौटाकर चाहे जहाँ चला जा।'

याज्ञवल्क्य को इससे बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने कहा कि 'प्रभो! मेरे मन में आपके प्रति अत्यन्त भक्ति-भाव था, उसी के वशीभूत होकर मैंने ऐसा कहा है। इन विद्यार्थियों का निरादर करने का मेरा किंचित अभिप्राय न था।'

परन्तु वैशम्पायन का क्रोध शांत न हुआ। याज्ञवल्क्य ने उनसे प्राप्त हुआ यजुर्ज्ञान लौटा दिया और भारी हृदय से आश्रम त्यागकर चल दिये।

भ्रमण करते हुए याज्ञवल्क्य विश्वामित्र तीर्थ में पहुँचे । वहाँ उनके पिता देवरात तप करते थे। पुत्र को आया देखकर वे प्रसन्न हुए। उन्होंने याज्ञवल्क्य की दुःख-कथा सुनकर उन्हें सान्त्वना देते हुए कहा-'पुत्र! हमारे वंश से अब तक कोई भी निराश नहीं हुआ, क्योंकि हमारे कुल-गोत्र के आदि प्रवर महर्षि विश्वामित्र हैं। उन्होंने गायत्री साधना द्वारा महान् ब्रह्मवर्चस्व को प्राप्त किया है। उसी गायत्री मन्त्र के द्वारा तुम्हारे मन का पूर्ण विषाद और निराशा शीघ्र ही दूर हो जायगी।

याज्ञवल्क्य ने पूछा-'पिताजी! महर्षि विश्वामित्र क्षत्रिय हैं, यह हमारे कुल के आदि प्रवर किस प्रकार हुए?'

देवरात ने उत्तर दिया-'महर्षि अंगिरा के वंश में अजीगर्त नामक एक पुरुष हुए। उनके तीन पुत्र थे। शुनःपुच्छ, शुनःशेप और शुनोलांगूल । राजा रोहिताश्व ने शुनःशेप को यज्ञ पशु के रूप में क्रय किया, उसे जाते समय मार्ग में विश्वामित्र का आश्रम मिला तब शुनःशेप ने उनसे प्राण रक्षा की प्रार्थना की। महर्षि ने राजा रोहिताश्व से उसे मुक्त कराया और अपने दत्तक पुत्र के समान रखा। वह शुनःशेप ही मेरे पिता थे, मैने भी गायत्री मन्त्र द्वारा भगवान सविता देव को प्रसन्न कर उन्हीं के समान तेजस्वी पुत्र की याचना की थी। तुम भी उन्हीं सविता देव की उपासना करो, वही तुम्हारा कल्याण करेंगे।

पिता की आज्ञा पाकर याज्ञवल्क्य ने गायत्री साधना आरम्भ की तब सविता देव प्रसन्न हुए । उन्होंने प्रकट होकर वर माँगने को कहा। याज्ञवल्क्य ने उन्हं बारम्बार प्रणाम किया और बोले-प्रभो! आप अन्तर्यामी हैं, मेरी कामना आप से छिपी हुई नहीं है। मैं समस्त वेदशास्त्रों के ज्ञान की याचना करता हूँ, यही मुझे प्रदान करो।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इच्छित वर देकर सविता देव अन्तर्ध्यान हो गये। उसी समय से याज्ञवल्क्य के हृदय में सूर्य के समान ही अलौकिक ज्ञान ज्योति प्रकट हुई और वे सम्पूर्ण वेदशास्त्रों के ज्ञाता हो गये ।

ध्रुव को परमपद मिला

देवी भागवत् में ऐसी अनेक कथायें मिलती हैं जिनमें इस तथ्य का प्रतिपादन है कि देव, दानव, ऋषि-मुनि, पुरुष और स्त्रियाँ समय-समय पर माता का आश्रय ग्रहण करके दुःखों से सुखों की ओर, अशांति से शांति की ओर अग्रसर होने में समर्थ होते रहे हैं ।

अनेक देवताओं ने तथा महापुरुषों ने भी अपने अनुभव की चर्चा इसी प्रकार की है, जिससे महा महिमामयी माता की महत्ता का प्रतिपादन होता है और इस तथ्य का समर्थन होता है कि इस कल्पवृक्ष के नीचे बैठने वाले की कामनायें पूर्ण ही होती रही हैं । इस कामधेनु का पय-पान करने वाला सदैव अतृप्तियों की क्षुधाओं से छुटकारा पाकर पूर्ण रूप ही बना है । यह उद्धरण हमारी श्रद्धा को जाग्रत करते हैं कि उपासना में तथा जीवन साधना में उन तत्वों का समावेश करें, जिनका प्रतिपादन गायत्री तत्व ज्ञान के अन्तर्गत किया गया है ।

ध्रुव कुमार अपना अनुभव सुनाते हुए राजाओं से महा महिमामयी सावित्री (गायत्री) का प्रभाव-परिणाम बताते हुए निर्देश करते हैं कि उपासना सर्वश्रेष्ठ तथा सर्वोपरि है—

किं ब्रवीमि महिपालाअस्याश्चरितमुत्तमम् ।
ब्रह्मादया न जानन्ति सेशाः सुरगणास्तथा ॥

ध्रुव कुमार से जब गायत्री का माहात्म्य पूछा गया तो उसने राजाओं से कहा—हे नृपगण । मैं उस सावित्री देवी के अत्युत्तम चरित्र के विषय में क्या वर्णन करूँ । उसका चरित्र ऐसा अप्रमेय है कि ब्रह्मादि बड़े-बड़े देवगण उसे नहीं जानते हैं ।

सर्वस्याद्या महालक्ष्मीर्वरेण्या शक्ति उत्तम ।
सात्विकीयं महीपाला जगपालनतत्परा ॥३६॥

हे नृपगण ! यह देवी परम सात्विकी, सबसे आद्य, महालक्ष्मी, वरेण्या और उत्तम शक्ति स्वरूपा है तथा इस जगत् के पालन, रक्षण करने में सर्वदा तत्पर रहा करती है ।

सृजते वा रजोरूपा सत्वरूपा च पालने ।
सहारे च तमो रूपा त्रिगुणा सा सदा मता ॥
निर्गुणा परमा शक्तिः सर्वकाम फल प्रदा ।
सर्वेषां कारणं सा हि ब्रह्मादीनां नृपोत्तमाः ॥
निर्गुणा सर्वथा ज्ञानतुमशक्या योगिभिर्नृपाः ॥

वह सावित्री देवी रजोगुण के स्वरूप वाली इस जगत् का सृजन किया करती है और सत्वगुण का स्वरूप धारण करके इसका पालन करती है । जब इस प्रपंचात्मक विश्व का वह संहार करके लय करना चाहती है तो तमोगुण के रूप को धारण कर लेती है । इसके सर्वदा त्रिगुण सम्पन्न स्वरूप माने गये हैं । इसका जो निर्गुण स्वरूप है उसमें परम शक्ति है और वह समस्त कामनाओं के फलों को प्रदान करने वाली है । हे नृपोत्तमगण । ब्रह्मा आदि सबका यह कारण स्वरूप है । हे नृपगण ! इसका निर्गुण स्वरूप तो बड़े-बड़े योगियों के द्वारा भी नहीं जाना जा सकता है।

यस्येच्छया सृजति विश्वमिदं प्रजेशो नानावतारकलनं कुरुते हरिश्च । नूनं करोति जगतः किल भस्म शमभुस्तां शर्मदां न भजतेनु कथं मनुष्यः ॥

जिसकी इच्छा से प्रजा का स्वामी ब्रह्मा इस सम्पूर्ण विश्व का सृजन किया करते हैं यहाँ तथा भगवान हरि अनेक अवतार धारण करते हैं एवं भगवान शम्भु इस जगत को संहार करके भस्म कर देते हैं । यह मनुष्य कैसा है जो ऐसी कल्याणकारिणी सावित्री देवी का भजन नहीं किया करता है ।

नारदजी की जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए भगवना विष्णु ने देवर्षि नारद से कहा था कि सर्वोपरि उपास्यतत्व भगवती ही है । उसका आश्रय लेने वाला समस्त अशांतियों से छुटकारा पा सकता है और अपनी आत्मिक तथा भौतिक प्राप्ति का पथ प्रशस्त कर सकता है । प्राचीनकाल के महामानवों की भाँति इस समय भी सर्वसाधारण के लिये इसी महान् आश्रय का अवलम्बन करना उचित है ।

देव देव ! महादेव ! पुराण पुरुषोत्तम ।
जगदाधार सर्वज्ञ ! श्लाघनीयोऽसि सदगुणैः ॥
जगतस्तत्वमाद्यंयत्तन्मे वद यथेप्सितम् ।
जायते कुत एवेदं कुतश्चेदं प्रतिष्ठितम् ॥
कुतन्स्तं प्राप्नुमःकाले कुत्र सर्वफलोदयः ।
केन ज्ञातेन मायैषा मोहभूर्नशिमाप्नुयात् ॥
कयार्चया किं जपेन किंध्यानेनात्महत्कजे ।
प्रकाशो जायते देव तमस्यर्कोदयों यथा । ।
एतत्पृश्नोत्तरं देव ब्रूहि सर्वमशेषतः ।
यथा लोकस्तरेदन्धतमर्स त्वन्जसैवहि ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

२.१३ गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार

अर्थ—एक समय देवर्षि नारदजी ने भगवान नारायण के समीप में उपस्थित होकर उनसे पूछा था—हे परम देवों के भी देव ! आप तो श्रेष्ठतम एवं परम पुराण पुरुष हैं तथा इस समस्त जगत् के आधार और सभी कुछ के ज्ञाता हैं । आप इस जगत का, जो आद्य तत्व हो, तो वह मुझे बताइये, इसकी उत्पत्ति कहाँ से होती है ? किसमें यह प्रतिष्ठित हैं तथा कैसे इसका अंत होता है ? समस्त पुलों का उदय कहाँ से होता है ? किसका ज्ञान प्राप्त कर लेने पर मोह की भूमि इस माया का नाश होता है ? किस जप, ध्यान, अर्चना से अन्धकार में सूर्योदय की भाँति हृदय में प्रकाश होता है ? हे भगवान ! आप कृपाकर इन मेरे प्रश्नों का उत्तर प्रदान कीजिए, जिससे यह लोक इस अन्धकार से आसानी से तर जावे ।

एवं देवर्षिणा पृष्टः प्राचीनो मुनिसत्तमः ।
नारायणी महायोगी प्रतिनन्द्य वचोऽब्रवीत ॥
श्रृणु देवर्षिवर्यात्र जगतस्तत्वमुत्तमम् ॥
येन ज्ञातेन मर्त्योहि जाप न जगत भ्रमे ॥
जगत स्तत्वमित्येव देवी प्रोक्ता मयामि हि ।
ऋषिभिर्देव गन्धर्वै रन्यैश्चापि मनीषिभिः ॥
सा जगत् सृजते देवी तयाच प्रति पाल्यते ।
तयया च नाश्यते सर्वमिति प्रोक्तं गुणत्रयात् ॥
तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि देव्याः सिद्धर्षिं पूजितम् ।
स्मरतां सर्वपापघ्न कामदं मोक्षदं तथा ॥

अर्थ—महर्षि व्यासजी ने कहा—इस प्रकार से देवर्षि नारदजी ने जब पुराण पुरुष महायोगी भगवान् नारायण से पूछा तो नारायण ने नारदजी की इस जिज्ञासा का अभिनन्दन करते हुए कहा— हे वर्षे ! इस जगत् का जो उत्तम तत्व है, उसे मैं बतलाता हूँ तुम श्रवण करो । इस तत्व का ज्ञान प्राप्त कर लेने पर मनुष्य को जगत् का भ्रम नहीं रहता । मैंने बतलाया है कि इस जगत् का तत्व देवी है और यही अन्य देव, ऋषि, गन्धर्व और मनीषियों ने भी बतलाया है । यह देवी ही इस जगत् का सृजन करती है और उसी के द्वारा इसका पालन होता है तथा अन्त में नाश भी वही किया करती है । उसका वह स्वरूप मैं बतलाता हूँ जो सिद्ध ऋषियों के द्वारा समर्पित होता है । इस स्वरूप का स्मरण करने वालों के समस्त पापों का क्षय हो जाता है, सारे मनोरथ सफल होकर इससे मोक्ष की प्राप्ति होती है ।

स्वायम्भुव मनु ने जब कामना की कि उन्हें अपनी गोदी में भगवान् जैसा पुत्र खिलाने और सृष्टि आदि का उद्घाटनकर्ता एवं नियम व्यवस्था बनाने का श्रेय प्राप्त हो तो उनकी यह कामना भी माता के सहारे ही पूरी हुई । कामना पूर्ति का उपाय जब मनु ने ब्रह्माजी से पूछा तो उन्होंने भगवती का आश्रय लेने का ही निर्देश दिया और उसका पालन करने पर उन्होंने अभीष्ट भी प्राप्त किया—

त्वाद्यः मनुः स्वायम्भुव स्वाद्या पदमपुत्रः प्रतापवान ।
शतरूपा पतिः श्रीमान् सर्वमन्वन्तराधिपः ॥
स मनुः पितरं देवं प्रजापतिमकल्मषम् ।
भक्त्या पर्यचरत्पूर्व तमुवाचात्मभ् सुतम् ॥
पुत्र-पुत्र त्वया कार्यं देव्याराधनमुत्तमम् ।
तत्प्रसादेन ते तात ! प्रजासर्गः प्रसिद्धयति ॥

अर्थ—समस्त मनुष्यों के स्वामी शतरूपा के पति स्वायम्भुव मनु ने अपने पिता की परिचर्चा की थी । उस समय ब्रह्माजी ने उससे कहा— हे पुत्र! तुमको देवी की आराधना करनी चाहिए । उसी के प्रसाद से प्रजा का सर्ग करने का तुम्हारा कार्य सफल होगा ।

एवमुक्तः प्रजास्त्रष्टा मनुःस्वायम्भुवो विराट ।
जगद्योनिं तदा देवी तपसाऽतर्पयद् विभुः ॥
तुष्टाव देवीं देवेशीं समाहितमतिः किल ।
आद्यां मायां सर्वशक्तिं सर्वकारणकारणाम् ॥
नमो नमस्ते देवेशि ! जगत्कारणकारणे ।
शंखचक्रगदाहस्ते ! नारायणहृदाश्रिते ॥
एव स्तुता भगवती देवी नारायणी परा ।
प्रसन्ना प्राह देवर्षि स ! ब्रह्मपुत्रमिदं वचं ॥

अर्थ—प्रजा के सृजन करने वाले पितामह के द्वारा इस प्रकार से आदेश दिये जाने पर विराट् स्वायम्भुव मनु ने इस जगत की समुत्पत्ति करने वाली देवी को उस समय अपनी उत्कृष्ट तपश्चर्या के द्वारा संतृप्त कर दिया था । समाहित बुद्धि वाले मनु ने समस्त देवों की स्वामिनी देवी का स्तवन किया । हे देविशि ! आप सम्पूर्ण शक्ति से सम्पन्न हैं और सब कारणों के भी कारण स्वरूप वाली हैं, अर्थात् जो इस जगत् के कारण हैं उनको भी आपने समुत्पन्न किया है । हे जगत्कारणकारणे ! आद्यमाये ! आपके चरणों में मेरा प्रणाम है । शंख, चक्र और गदा को हाथों में धारण करने वाली और भगवान नारायण के हृदय में आश्रय ग्रहण करने वाली हैं । इस प्रकार से मनु के द्वारा स्तुत नारायणी देवी बहुत प्रसन्न हुई और ब्रह्मा के पुत्र स्वायम्भुव मनु से यह वचन बोली —

बरं वरय राजेन्द्र ! ब्रह्मपुत्र ! यदिच्छसि ।
प्रसन्नाहं स्तवेनात्र भक्त्या चाराधनेन च ॥
यदि देवि ! प्रसन्नाऽसि भक्तया चाराधनेन च ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तदा निर्विघ्नतः सृष्टि प्रजायाः स्यात्तवाज्ञया ॥
प्रजासर्गः प्रभवतु ममानुग्रहतः किल ।
निर्विघ्नेन च राजेन्द्र ! वृद्धिश्चाप्युत्तरोत्तरम् ॥
यः कश्चित्पठते स्तोत्रं मद्भक्तः त्वकृतं सदा ।
तस्य विद्या प्रजा सिद्धिः कीर्तिं कान्त्युदयः खलु॥

अर्थ—देवी ने कहा—हे राजेन्द्र ! हे ब्रह्मा के पुत्र! जो भी तुम चाहते हो वरदान माँग लो ! तुम्हारे इस स्तवन और आराधना से मैं प्रसन्न हूँ । मनु ने कहा—यदि आप मुझ पर करुणा कर प्रसन्न हैं तो मैं यही चाहता हूँ कि प्रजा की सृष्टि निर्विघ्न होवे । देवी ने कहा हे राजेन्द्र ! तेरी सृष्टि की उत्तरोत्तर वृद्धि होगी । मेरा यह स्तवन जो भी कोई पढ़ेगा उसकी भी विद्या और प्रजा की तथा कीर्ति सिद्धि होगी ।

वेद ज्ञान और विज्ञान के उद्गम हैं, उनमें विश्व के सुख-शांति और प्रगति के महान् रहस्य छिपे पड़े हैं। ब्रह्माजी ने वेदों का निर्माण किया और उनसे कहा—तुम पग-पग पर भगवती महाशक्ति का प्रतिपालन करना । गायत्री के शीर्ष भाग तथा तीन चरणों को मिलाकर इस महामन्त्र के चार खण्ड किये गये हैं और प्रत्येक खण्ड से एक-एक वेद बनाया गया है । वेद गायत्री की व्याख्या हैं और वे अपनी आदि जननी वेदमाता के गुणानुवाद निरन्तर गाते रहते हैं । वेदों की समस्त ऋचाओं को गायत्री की व्याख्या मात्र कहा जाय तो कुछ अत्युक्ति नहीं । गायत्री सम्पूर्ण विद्याओं, सुख और समृद्धि का बीज है, उसे जानकर और कुछ जानना, उसे पाकर और कुछ पाना शेष नहीं रह जाता ।

गायत्री उपासना से लौकिक और आत्मिक सफलतायें

सती सावित्री द्वारा अपने पति के प्राण वापस लाने की कथा प्रसिद्ध है । अपने पति सत्यवान के प्राण जब उसने अपने तप-बल द्वारा यमराज से वापस ले लिये और अपनी आत्मिक महत्ता द्वारा उन्हें प्रसन्न भी कर लिया, तब सावित्री सुअवसर का लाभ उठाकर धर्मराज से कुछ आध्यात्मिक प्रश्न पूछने लगी । उसने पूछा—"भगवन् ! कौन व्यक्ति आपके पुर अर्थात् नरक को नहीं जानते ? नरक की यातना से कैसे बचा जा सकता है ?" इसका उत्तर देते हुए यमराज ने भगवती महाशक्ति की महिमा बताई और कहा—"जो निष्ठापूर्वक उसकी उपासना करते हैं और तपश्चर्या द्वारा अपने जीवन को आत्म-शक्ति सम्पन्न बनाते हैं, उन्हें नरक की पीड़ा सहन करने की आवश्यकता नहीं पड़ती ।

कुन्डानि यमदूतैश्च रक्षितानि सदा शुभे ।
नहि पश्यन्ति स्वप्ने च पञ्च देवार्चका नराः ॥
देवी भक्ति विहीना ये ते पश्यन्ति ममालयम् ।
यान्ति ये हरितीयम्बाश्रयन्ति हरि वासरम् ॥
प्रणमन्ति हरि नित्यं हर्यर्चां कलयन्ति च ।
न यान्ति तेऽपि घोरां च यम संयमिनी पुरीम् ॥
त्रिसन्धिपूतः विप्राश्च शुद्धाचार समन्विताः ।
निवृत्तिं नैव लप्स्यन्ति देवी सेवां बिना नराः ॥

अर्थ—सती सावित्री ने जब धर्मराज से कर्म-बन्धनिकृन्तन के सम्बन्ध में प्रश्न किये तो धर्मराज ने सावित्री को उत्तर देते हुए कहा—'हे शुभे ! मेरे दूतों के द्वारा कुण्ड सुरक्षित रहा करते हैं किन्तु जो पंच देवों में किसी भी एक देव की उपासना किया करते हैं, वे मनुष्य स्वप्न में भी उन कुण्डों को अर्थात् नरकों को कभी भी नहीं देखते हैं । जो पुरुष देवी की भक्ति से हीन होते हैं वे ही मेरे पुर को देखते हैं । जो मनुष्य हरि के तीर्थों का अटन करते हैं या हरिवासर का आश्रय लेते हैं एवं हरि को नित्य प्रणाम करते हैं तथा हरि का अर्चन किया करते हैं, वे मनुष्य भी मेरी महाघोर संयमनीपुरी में नहीं जाया करते हैं । त्रिकाल में संध्या-वन्दना करने से पवित्र एवं शुद्ध आचार से युक्त रहने वाले भी विप्र देवी की सेवा के बिना, निवृत्ति की प्राप्ति नहीं किया करते हैं ।

देयी मन्त्रो पासकानां नाम्नाञ्चैव निकृन्तनम् ।
करोति नख लेखन्या चित्रगुप्तश्च भीतवत् ॥
मधुपर्कादिकं तेषां कुरुसुतै च पुनः पुनः ।
विलंघड्य ब्रह्म लोकं च लोकं गच्छन्ति ते सति॥
दुरितानि च नश्यन्ति येषां संस्पर्श मात्रतः ।
ते महाभाग्य वन्तो हि सहस्त कुल पावनाः ॥

अर्थ—धर्मराज ने कहा—हे सति ! जो पुरुष देवी के मन्त्र की उपासना करने वाले हैं, उनके तो नाम से ही कर्म-बन्ध का निकृन्तन हो जाता है और चित्रगुप्त बहुत डरा-सा होकर नख की लेखनी से उनके कर्म-बन्ध को काट दिया करता है । जब वे ब्रह्मलोक का लंघन कर लोक को जाते हैं तो चित्रगुप्त उनके लिये बारम्बार मधुपर्क आदि का उपचार किया करता है । उनके स्पर्शमात्र से ही पापों का नाश हो जाता है । ऐसे पुरुष महान् भाग्यशाली हैं और सहस्त्र कुल का उद्धार करने वाले होते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देवी-भक्तिं देहि मह्यं साराणां चैव सारकम् ।
पुंसी मुक्ति द्वार बीजं नरकार्णव तारकम् ॥
कारणं मुक्ति साराणां सर्वाशुभ विनाशतम् ।
दारकं कर्म्म वृक्षाणां कृत पायौद्य गुहारणम् ॥
तत्त्व ज्ञान विहीना च स्त्री जातिर्विधि—निर्मिता ।
किञ्चिज्ज्ञानं सारभूतं वद वेदविदांवर !
सर्व दानं च यज्ञश्च तीर्थस्नानं व्रतं तपः ।
अज्ञानि ज्ञान दानस्य कलां नार्दन्ति षोडशीम् ॥
पितुः शतगुणा माता गौरये चेति निश्चितम् ।
मातुः शत गुणः पूज्यो ज्ञान दाता गुरुः प्रभो ! ॥

अर्थ—सती सावित्री ने धर्मराज से कहा—मुझे और कृपा करके देवी की भक्ति प्रदान कीजिये, जो समस्त सार वस्तुओं का भी सार स्वरूप है । देवी की भक्ति मनुष्यों के लिये मुक्ति प्राप्त करने का द्वार एवं बीज है और इसके द्वारा नरकों के घोर सागर से मनुष्य पार हो जाया करता है । यह मुक्ति प्रद सारों का भी कारण है और इस देवी की भक्ति से सभी प्रकार के अशुभों का नाश हो जाता है । यह कर्मों के वृक्षों का विहारण करने वाला है तथा किये हुये पापों के समूह का नाशक है । सावित्री ने धर्मराज से कहा—विधाता ने हमारी सती जाति को तत्त्व-ज्ञान से विहीन बनाया है । अतः हे वेदों के वेत्ताओं में परम श्रेष्ठ देव ! जो कुछ सारभूत ज्ञान हो उसे ही बतला देवें । सब प्रकार के दानं, यज्ञ, तीर्थस्नान, व्रत और तप ये सब अज्ञानी को ज्ञान का दान करने की सोलहवीं कला को भी प्राप्त नहीं हो सकते हैं । पिता से माता का सौ गुना अधिक गौरव होता है, किन्तु माता से भी सौ गुना ज्ञान के प्रदान करने वाले गुरु का गौरव होता है ।

श्रोतुमिच्छसि कल्याणि! श्री देवी-गुण कीर्त्तनम् ।
नक्तणां पृच्छ कानाञ्च श्र तृष्णां कुल तारणम् ॥
न यद्वक्तुं क्षमाः सिद्ध मुनीन्द्रा योगिन स्तथा ।
के चान्ये च वयं केवा श्रीदेव्या गुण वर्णने ॥
ध्यामन्ते यत्पदाम्भोजं ब्रह्म, विष्णु शिवादयः ।

अर्थ—धर्मराज ने सती सावित्री से कहा—हे कल्याणि ! श्री देवी के गुणों, कीर्तन, वक्ता, श्रोता और पूछने वालों के फलों को तारने वाला है । देवी के गुणों का कीर्तन सिद्ध-मुनीन्द्र और योगी भी, कहने में समर्थ नहीं हैं । दूसरे और हम तो क्या हैं । ब्रह्मा, विष्णु और शिवादि भी उसके चरण कमल का ध्यान करते हैं ।

एक बार नागाधिराज हिमिवान ने भगवती से उनके स्वरूप, वैभव एवं उपास्य साधन के बारे में प्रश्न किया तो भगवती ने उन्हें स्वयं बताया कि उनकी शक्ति सामर्थ्य का क्षेत्र कितना व्यापक है और किस मनोभूमि के व्यक्ति उनके अनुग्रह को प्राप्त कर सकते हैं ।

इस वर्णन में उन्होंने साधक की उत्कृष्ट मनोभूमि, उज्जवल चरित्र और भक्ति-भावपूर्ण अन्तःकरण की आवश्यकता विशेष रूप से बताई है । जप, ध्यान, स्तवन और पूजा विधान के कर्मकाण्ड तो असानी से किये जाते हैं पर इतने से ही काम नहीं चलना । साधक का अन्तःकरण जितना निर्मल और चरित्र जितना उज्जवल होगा, उसी अनुपात से उसे दिव्य अनुग्रह भी उपलब्ध होगा ।

स्वीयां भक्तिं वदस्वाम्वा येन ज्ञानं सुखेन हि ।
जायेत मनुजस्यास्य मध्यमस्याविरागिणः ॥
मार्गासजयो मे विख्याता मोक्ष प्राप्तौ नगाधिप ।
कर्म्म योगो ज्ञान योगो भक्ति योगश्च सत्तम ॥
गुणभेदान्मनुष्याणां सा भक्ति स्त्रिविधामता ।
पर पीड़ां समुद्दिश्य दम्भं कृत्वा पुरः सरम् ॥
मात्सर्य क्रोध युक्तो यस्तस्थ भक्ति स्तुतमसी ।
पर पीड़ादि रहितः स्वकल्याणार्थ मेव च ॥
नित्यं सकामो हृदयं यशोऽर्थी भोग लोलुपः ।
तत्तत्फलसमावाप्त्यै मामुपास्तेऽति भक्तितः ॥
भेद बुद्धचर तु मां स्वस्मादन्यांजानाति पामरः ।
तस्य भक्तिः समाख्याता नगाधिप तु राजसी ॥
परमेशार्यणं कर्म्म पाप संक्षाल नाय च ।
वेदोक्तत्वाध्वश्यं तत्कर्त्तव्यं तु मया निशम् ॥
इति निश्चित बुद्धिस्तु भेद बुद्धि मुपाश्रितः ।
करोति प्रीतये कर्म भक्तिः सा नग सात्विकी ॥

अर्थ—नागराज ने एक बार जगत्जननी देवी से पूछा—हे समस्त संसार की माता ! आप कृपा कर मुझे अपनी भक्ति के विषय में बताइये जिसके करने से विराग रहित मध्यम श्रेणी के मनुष्य को सुखपूर्वक ज्ञान की उत्पत्ति हो जावे । नागाधिराज हिमवान् के इस जिज्ञासापूर्ण प्रश्न को सुनकर भगवती ने कहा—मेरी उपासना करने के तीन मार्ग सुविख्यात हैं। हे नगाधिप! इन तीनों मार्गों से मेरी अराधनोपासना करने पर मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है । हे सत्तम ! वे तीन मार्ग कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग इन तीन नामों से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रसिद्ध हैं । गुणों के भेद होने से वह मनुष्यों के द्वारा की हुई भक्ति भी तीन प्रकार की होती है । दूसरे को पीड़ा पहुँचाने के उद्देश्य से दम्भपूर्वक मात्सर्य और क्रोध से युक्त होकर जो कोई मनुष्य मेरी भक्ति किया करता है, वह उसकी भक्ति तामसी कही जाती है, क्योंकि उसमें तमोगुण की प्रधानता रहती है । दूसरों को पीड़ा देने की भावना से रहित होकर केवल अपने ही कल्याण करने की कामना वाला, यश प्राप्त करने का इच्छुक एवं भोगों के भोगने का लालसी मनुष्य अपने समुद्दिष्ट फलों की प्राप्ति के लिये जो भक्तिपूर्वक मेरी उपासना किया करता है और भेद की बुद्धि से मुझे वह पामर अपने से अन्य ही समझता है। हे नागाधिराज ! उसकी भक्ति राजसी कही गई है, क्योंकि इस प्रकार की भक्ति और आराधना में रजोगुण की प्रधानता विद्यमान् रहा करती है, क्योंकि सर्वदा अपने सुखोपभोग प्राप्त करने की ही भावना इस उपासना का एकमात्र लक्ष्य होता है । जो कर्म परात्पर के निमित्त किया जाता है, अर्थात् उसका कोई भी फल अपने लिये न चाहकर जो कुछ भी हो वह सब अपने आराध्य के ही चरणों में समर्पित कर दिया जावे और केवल पापों के प्रक्षालन होने से अपनी आत्मशुद्धि की भावना रहे और उपासना करने वाले के हृदय में ऐसी निष्ठा बनी रहे कि यह वेदोक्त विधान का करना मेरा परम कर्त्तव्य है, अतएव मुझे यह अनवरत करना ही चाहिये—ऐसी बुद्धि के द्वारा भेद बुद्धि का उपाश्रय करके देव की प्रीत्यर्थ जो कर्म अर्थात् आराधना की जाती है, जिसमें एक प्रकार का हृदय सुदृढ़ निश्चय बना रहता है, वह देव भक्ति को सात्त्विक कहा जाता है, क्योंकि इसमें सतोगुण की प्रधानता रहती है और केवल अपने समाराध्य की प्रीति के लिये ही यह कर्त्तव्य कर्म समझ कर की जाती है और इसके द्वारा अपनी आत्म शुद्धि इष्टदेव की कृपा से हो जाने की भावना सुदृढ़ रहती है ।

राजा जन्मेजय के प्रश्न और भगवान् व्यास के उत्तर के रूप में प्रस्तुत एक सम्वाद यह प्रतिपादन करता है कि कलियुग के प्रभाव और उसके दुष्परिणामों से बचे रहने के लिये भगवती महाशक्ति का आश्रय लेना सर्वोत्तम है । उनकी शरण में जाने वाले की अन्तःप्रेरणा उसे दुष्कर्मों से और दुष्ट भावनाओं से बचाती है, फलतः वह उन बाह्य एवं आन्तरिक यातनाओं से भी बच जाता है, जो कलियुग के कुपथगामी मनुष्यों को निरन्तर मिलती रहती है ।

भगवन् ! सर्वधर्मज्ञ ! सर्वशास्त्र विशारदा ।
कलाव धर्मबहुले नराणां का गतिर्भवेत् ? ॥
यद्यस्ति तदुपायश्चेद्दयया तं वदस्व मे ।
एकएव महाराज तत्रोपायस्तु नायरः ॥
सर्व दोष निरासार्थं ध्यायेद्देवी पदाम्बुजम् ।
म सन्त्यघामि तावन्ति मावती शक्तिरस्ति हि ॥

अर्थ—महर्षि वेदव्यास जी से राजा जन्मेजय युग-धर्म के कराल समय में सद्गति का उपाय पूछते हुए कहते हैं—हे सम्पूर्ण धर्म के तत्त्व के ज्ञाता और समस्त शास्त्रों के महामनीषी । इस अधर्म से परिपूर्ण इस घोर कलियुग में मनुष्यों की गति कैसे होगी, यदि इसका कोई उपाय हो तो आप कृपा करके बतलायें । व्यास महर्षि ने कहा—इसका केवल एक ही उपाय है दूसरा कोई नहीं है । कलि में समस्त दोषों के विनाश करने के लिये देवी के चरण कमलों का ध्यान करना चाहिये । उतने पापों में सामर्थ्य नहीं है, जितनी देवी की शक्ति होती है ।

स्मृता सम्पूजिता भक्ता ध्याता चोच्चारिता स्तुता ।
ददाति वाञ्छितानर्थान्कामदा तेन कीर्त्यते ॥
समाराधिता च तथा नृभिरेभिः सदाऽम्बिका ।
यतोऽमी सुखिनः सर्वे संसारेऽस्मिन्न संशयः ॥
इति राजञ्चद्भुतं तत्रमया मुनिसमागमे ।
लोमशस्य मुखात्कामं देवी माहात्म्य मुत्तमम् ।
इति सच्चिन्त्ये राजेन्द्र कर्त्तव्यं च सदार्चनम् ।
भक्तया परमया देव्याः प्रीत्या च पुरुषर्षभ ॥

अर्थ—सत्यव्रत के आख्यान में देवी की महिमा का वर्णन करते हुए कहा गया है—भगवती के स्मरण से वह स्वपूजित, भक्तिभाव से ध्यान की हुई, मुख से उच्चारण किये जाने पर और स्तुत होती हुई मानवों के सभी इच्छित मनोरथों का प्रदान कर देती है । इसीलिये उसका 'कामदा'— यह नाम कहा जाता है । मनुष्यों के द्वारा सदा समाराधित वह देवी होती है, इसीलिये इस संसार में सब सुखी हैं, इसमें संशय नहीं है । व्यास ने कहा—हे राजन् ! मैने लोमश के मुख से देवी का माहात्म्य सुना है अतः प्रेम-भक्ति से देवी का सदा अर्चन करना चाहिये ।

पिछला जीवन कुमार्गगामी भी रहा हो तो इस महाशक्ति का आश्रय लेने वाला एक दिव्य प्रकाश से अपने अन्तःकरण को त्याग कर धर्मपय का अनुगामी बनकर अपना लोक परलोक सुधारता है ।

महर्षि बाल्मीक का प्रसङ्ग ऐसा ही है, वे जीवन के प्रथम चरण में डाकू थे पर जब वे आत्म-कल्याण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

की उपासना में प्रवृत्त हुए तो सारे दोष-दुर्गुणों से छुटकारा पाकर ऋषि जीवन बिताने लगे और जीवन को पूर्णता का लक्ष्य प्राप्त कर सकने में समर्थ हुये ।

बीजोच्चारण तो देव्या विद्या प्रस्फुरिताऽखिला।
बाल्मीकेश्च यथा पूर्व तथा स द्युभवत्कविः ॥

अर्थ—सावित्री भगवती के केवल बीज मात्र के उच्चारण करने से बाल्मीकि की समस्त विद्यायें प्रस्फुरित हो गई थीं और सर्वप्रथम महान् कवि हो गये थे ।

भगवती महाशक्ति गायत्री यह नहीं देखतीं कि साधक का पिछला जीवन कैसा रहा है, इस आधार पर वे किसी से घृणा भी नहीं करतीं । शरण में आने वाले को वे दिव्य प्रकाश देती हैं और उसे सन्मार्गगामी प्रेरणा देकर सच्ची सुख-शांति का अधिकारी बना देती हैं—

न वैषम्यं न नैर्घृण्यं भगवत्यां कदाचन ।
केवलं जीव मोक्षार्थं यतते भुवनेश्वरी ॥

अर्थ—भगवती गायत्री में कोई भी विषमता का भाव नहीं रहता है, अर्थात् वह सबको समान भाव से ही देखती है और उसमें किसी से भी घृणा नहीं होती है । वह इस सम्पूर्ण भुवन की स्वामिनी केवल जीवों के कल्याण के लिये ही सदा यत्न करती है ।

भौतिक जीवन की सुख-समृद्धि और आध्यात्मिक जीवन की शांति सद्गति का उन्हें अधिकार मिलता है, जो सच्चे मन से, वचन और कर्म से माता की शरण में जाते हैं और उनके निर्देश अनुरूप जीवन क्रम का निर्धारण करते हैं ।

यदज्ञानाद्भवोत्पत्ति र्यज्ज्ञानाद्भव नाशनम् ।
सं विद्रूपां च तां देवीं समरामः साप्रचोदयात् ॥

अर्थ—जिस गायत्री देवी के ज्ञान न होने से इस संसार में उत्पत्ति हुआ करती है अर्थात् यह मानव संसार के जन्म-मरण रूपी बन्धन का दुःख निरन्तर भोगता रहा करता है और जब भगवती गायत्री देवी का ज्ञान हो जाता है तो फिर इस संसार के आवागमन रूपी दुःख का नाश हो जाता है । हम उस संवित्वरूपिणी देवी का सदा-सर्वदा स्मरण करते हैं । वह भगवती हमको सत्प्रेरणा प्रदान करे।

गायत्री उपासना के मूर्तिमान् चमत्कार महात्मा आनन्द स्वामी

सुप्रसिद्ध महात्मा आनन्द स्वामी अपने युग के महान् गायत्री उपासकों में से एक थे । आर्य समाज के उच्च पदों पर वे आसीन रहे हैं और सफल पत्रकार माने गये हैं । ९२ वर्ष की आयु तक वे देश-विदेश में गायत्री का प्रचार करते रहे हैं । उनकी अपनी साधना भी ऐसी थी जो उनके मन, वचन और कार्य में समान रूप से उतरी थी ।

उक्त महात्मा आनन्द स्वामी ने 'गायत्री मन्त्र' 'आनन्द गायत्री कथा' आदि अनेक महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक पुस्तकें लिखी हैं । उनमें से आनन्द गायत्री कथा में अपने निज के जीवन में प्रकट हुई गायत्री साधना के चमत्कारों का वर्णन है, यह आप बीती सुनने और ध्यान देने योग्य है । उन्हीं के शब्दों में यह अनुभव इस प्रकार है—

"बचपन की बात है, मैं छठी या सातवीं कक्षा में पढ़ता था और बहुत ही बुद्धू था । कुछ नहीं आता था, इस कमजोरी के कारण अध्यापक-गण मुझे घन्टी आरम्भ होते ही बेंच पर खड़ा कर देते थे तथा यह क्रम लगभग प्रत्येक विषय के घन्टे में चलता रहता था। स्कूल से घर आने पर पिताजी मारते थे तथा कहते थे कि तू सर्वथा अयोग्य है, किसी काम का नहीं है । मैं रो-रोकर कहता—पिताजी ! मैं बहुत ध्यानपूर्वक पढ़ता हूँ, किन्तु क्या करूँ, जो पढ़ता हूँ, वह याद नहीं रहता। वे कहते—तू पढ़ता ही नहीं, तू सर्वथा निकम्मा है, मूर्ख है । इस दैनिक अपमान एवं नित्य पीटे जाने से इतना दुखी हुआ कि इस छोटी-सी आयु में आत्महत्या की बात सोचने लगा, जीने की कोई इच्छा नहीं रही । सोचा इस दुःख और अपमान से भरे जीवन से तो मर जाना ही अच्छा है । एक दिन बारह बजे स्कूल से छुट्टी हुई तो मैं सीधा उस बरसाती नाले पर गया जो हमारे गाँव के पास बहता था । वर्षा के दिन थे, नदी बाढ़ के पानी से भरी हुई थी तथा पानी तीव्र गति से बह रहा था । मैंने पुल पर खड़े होकर छलांग लगा दी । दृढ़ निश्चय कर लिया था कि मर जाऊँगा, परन्तु भगवान को इस शरीर से कुछ काम लेना था, इसलिए यत्न करने पर भी मैं मर नहीं सका । गोते खाता हुआ मूर्छा की अवस्था में कोई दो मील नीचे किनारे इस्लामगढ़ के पास जा लगा । वहाँ के लोगों ने मुझे पहचानकर घर पहुँचा दिया ।"

एक दिन आर्य समाज के स्वामी नित्यानन्द हमारे गाँव जलालपुर में आये । हमारे बाग में ठहरे, पिताजी की आज्ञा हुई कि इन्हें तू रोटी खिलाने जाया कर । मैं प्रतिदिन जाता और उन्हें रोटी खिला आता । एक दिन पिताजी ने कहा—जा भैंस को पानी पिला ला । मैं गाँव के बाहर तालाब में पानी पिलाने भैंस को ले

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गया। भैंस पानी पीकर गहरे पानी में चली गई । मैं छोटा था, उसे बाहर निकालूँ तो कैसे ? बहुत चिल्लाया, ढेले मारे तो भैंस तालाब के दूसरे किनारे पर जाकर निकली तथा बाहर निकलकर जमींदार के खेत में घुस गई । जितनी देर में मैं दूसरी ओर पहुँचा उतनी देर में उसने खेत में लगी फसल का कितना ही भाग नष्ट कर दिया । इधर से मैं भागा हुआ गया, उधर से जमींदार आ गया । मुझे पकड़कर इतना मारा कि हड्डियाँ दुखने लगीं । उस दिन मुझे स्कूल में भी मार पड़ी थी । घर आया तो पिताजी ने क्रोध से कहा कि इतनी देर लगाकर आया है ? और तब उन्होंने भी पीटा । मैं भगवान से प्रार्थना करने लगा कि मैं क्या करूँ ? तभी पिताजी ने कहा—जा बाग में स्वामी जी को रोटी दे आ । मैं रोटी लेकर स्वामीजी के पास पहुँचा, उन्हें खाने को कहा और एक ओर निराश एवं उदास-सा खड़ा रहा । महात्माजी मेरी ओर देखते रहे। भोजन कर चुके तो बोले—खुशहालचन्द्र ! क्या बात है ? तू आज उदास क्यों है ? सहानुभूति की बातें सुनकर मेरी आँखों में आँसू आ गये, फूट-फूट कर रो उठा स्वामीजी ने प्यार से मुझे अपनी गोद में बैठा लिया और बोले—तुझे क्या हुआ ? क्यों इतना दुःखी है ? मैंने रोकर सारी कथा उन्हें सुनाई । उन्हें बताया कि यत्न करने पर भी मुझे कुछ याद नहीं होता, मेरी बुद्धि खोटी है । उन्होंने कहा—आ बैठ मेरे पास । मैं इसकी औषधि बताता हूँ । एक कागज लेकर उन्होंने पेन्सिल से गायत्री मन्त्र लिख दिया और बोले—यह है तेरे रोग की औषधि । जब परिवार के सभी लोग सोये हुए हों, प्रातः दो-तीन बजे उठकर स्नान करके इसका जाप किया कर । तब उन्होंने गायत्री मन्त्र के अर्थ भी बताये वह आज भी मुझे भूले नहीं हैं ।

तभी से मैं प्रातः उठने लगा । जप के लिए बैठने पर नींद आती थी । मेरी चोटी लम्बी थी । मैंने छत में रस्सी बाँध दी तथा उसका सिरा अपनी चोटी में बाँध लेता था जिससे झपकी आते ही नींद खुल जाती थी । इस प्रकार ५-६ माह जप करते हो गये तो मैंने इसका प्रभाव देखना प्रारम्भ किया । पहले परीक्षा होती थी तो मेरे सभी प्रश्न अशुद्ध हुआ करते थे, अब मैं पास होने लगा । अध्यापकों ने कहा कि तूने अवश्य किसी की नकल की है, तेरी सफलता की आशा न थी । मैंने कहा—'नकल नहीं की ।' मैंने केवल गायत्री मन्त्र का जप किया है । अध्यापकों को सम्भवतः यह बात समझ में नहीं आई परन्तु इसके बाद परीक्षा में मैं अच्छे नम्बरों से पास होने लगा । इन्हीं दिनों मैंने एक कविता भी लिखी जिस पर हमारे गुरु अध्यापक ने एक पौण्ड पारितोषिक में मुझे दिया । मैंने घर पिताजी को कविता एवं पारितोषिक दिखाया, उन्होंने मुझे एक पौण्ड और इनाम दिया ।

इसके कुछ महीने बाद एक और घटना हुई । आर्य समाज जलालपुर जट्टा का वार्षिक उत्सव था । महात्मा हंसराजजी का एक व्याख्यान इस उत्सव में हुआ । मैंने महात्माजी के व्याख्यान की रिपोर्ट तैयार करके उन्हें दिखाई । उन्होंने पूछा—तू किसका लड़का है ? मैंने कहा—आर्य समाज के मन्त्री लाला गणेशदासजी मेरे पिता हैं । उसी समय मेरे पिताजी आ गये । महात्माजी ने मेरे पिता से पूछा— इस लड़के से क्या कराते हो ? पिताजी ने कहा—यह पढ़ने में अच्छा नहीं है । इसके लिए जुराबें बुनने का कारखाना लगवा दिया है । महात्माजी ने यह सुनकर कहा—'इस काम के लिए यह लड़का ठीक नहीं मुन्शी जी ! इसे मुझको दे दो । मैं उसे उस काम पर लगाऊँगा, जिसके योग्य है ।' पिताजी ने कहा—'मैं अस्वीकार कैसे कर सकता हूँ, यह आपका बच्चा है, जैसे आप चाहें करें।'

इसके कई दिनों बाद महात्माजी का पत्र आया कि खुशहालचन्द्र को लाहौर भेज दो । मैं वहाँ गया, आर्य गजट में ३० रुपया मासिक पर नौकर रख लिया गया । आर्य गजट में कार्य करते हुए इसका सम्पादक भी बना । इन्हीं दिनों मालावार में मोपला विद्रोह हुआ। यवनों ने हजारों हिन्दुओं की गरदनें काट डालीं, कितनों को जबरन मुसलमान बना दिया गया । हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिये कुछ ठोस कदम उठाया जाना आवश्यक था । देश के पत्र-पत्रिकायें इस दिशा में निष्क्रिय थे । हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचार को कोई भी छापना नहीं चाहता था । मैंने अनुभव किया कि इस प्रकार हिन्दू-मुस्लिम एकता कभी स्थापित न होगी। इसका विचार करके हमने हिन्दुओं को संगठित करने एवं परस्पर एकता स्थापित करने के लिए 'मिलाप' पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया । इसका उद्देश्य ही था हिन्दू-मुस्लिम एकता, आचरण को उन्नत करने की, सदाचार को प्रोत्साहन देने की, रक्षा करने की आकांक्षा उत्पन्न की जाये।

माँ की कृपा से मिलाप पत्र का प्रकाशन सफल रहा । आरम्भ में तो लाख रुपये का घाटा हुआ, किन्तु इतने पर भी चलता रहा । भगवान की कृपा होने लगी। मोटर-गाड़ियाँ, मकान, गाय, भैंस सभी कुछ हो गया। बेटे-बेटियाँ, लाखों की सम्पत्ति सब कुछ मिला,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्योंकि गायत्री माँ ने कहा कि मैं सब कुछ देती हूँ, धन-दौलत, बल-कीर्ति सब कुछ । माँ की कृपा से सब कुछ मिला ।

इन्हीं दिनों लाहौर के अन्दर यूनिवर्सिटी हॉल में पंजाब के गवर्नर पर गोली चली । चार युवक पकड़े गये, इन पर गवर्नर की हत्या करने की साजिश का अभियोग चला । मेरा पुत्र रणवीर भी इनमें से एक था। सेशन जज ने फाँसी के दण्ड की आज्ञा सुना दी । तभी एक और दुर्घटना हुई । मैं जोगेन्द्र नगर आर्य समाज के उत्सव पर आया था । एक पत्थर से पाँव फिसल गया । मैं पहाड़ से नीचे जा गिरा, रीढ़ की हड्डी टूट गयी । घायल होकर लाहौर अस्पताल में पहुँचा । सारा शरीर प्लास्टर में जकड़ दिया गया, लोग रणवीर को फाँसी की आज्ञा होने के कारण मेरे पास सहानुभूति प्रदर्शन के लिए आने लगे । सीढ़ियों पर चढते समय वे रोना-सा मुख बना लेते । आँखों में आँसू ले आते, किन्तु वे जब हमारे पास आते तो मैं उन्हें हँसता हुआ मिलता । वे मुझे मुस्कराते हुए देखते तो अचम्भे से कहते—'तेरी छाती में हृदय है या पत्थर।' बेटे को फाँसी की आज्ञा हुई है स्वयं तख्त पर पड़ा है फिर भी हँसता है । तो इस पर मैं विश्वास के साथ कहता सुनिये—'यदि मेरा कल्याण इस बात में है कि मेरा बच्चा मेरे साथ न रहे तो वह कभी नहीं रहेगा और यदि कल्याण इसमें है कि मेरा बच्चा बच जाये तो संसार की कोई शक्ति उसको मुझसे छीन नहीं सकेगी । लोग रणवीर के लिये रोते थे किन्तु मैं तो नहीं रोया । एक दिन स्वामी सत्यदेवजी, जो महाराजा जम्मू कश्मीर के गुरु थे, मिलने आये । मेरी तरफ देखकर बोले कि इतनी विपत्ति में भी तू इस प्रकार हँस सकता है तो तेरे बेटे को कौन छीन सकता है ? और उनकी बात सत्य निकली । रणवीर का बाल बाँका नहीं हुआ तथा अभियोग से बरी कर दिया गया ।

गायत्री माँ केवल लोक ही नहीं देती परलोक भी देती है । लोक-परलोक दोनों का सुधार करती है । आत्मा को पवित्र करने वाली वह माता आयु, प्राण, पशु, कीर्ति, धन-सम्पत्ति और ब्रह्मवर्चस् को देकर ब्रह्मलोक को ले जाती है, इसलिये कीर्ति, धन-सम्पत्ति, सन्तान, बेटे-बेटियाँ, मोटरें, सम्बन्धी आदि सब कुछ देने के बाद इस प्यारी गायत्री माँ ने कहा—"मार सबको लात, मेरे साथ आ । मैं ब्रह्मलोक को ले चलूँगी । सबको छोड़कर मैं गेरुए वस्त्र पहनकर माँ के दिखाये हुए मार्ग पर चल पड़ा ।"

"आठ वर्ष की आयु से लेकर अब तक एक भी दिन मुझे ऐसा याद नहीं कि जब मैंने गायत्री माँ की गोद में बैठकर अमृत न पिया हो । यह सारी कहानी सुनाने का मात्र एक ही उद्देश्य था कि आजकल कलियुग अवश्य है, किन्तु कलियुग में भी गायत्री की उपासना करने से वह सब कुछ मिलता है जो भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को बताया था । जो दूसरे ऋषियों, योगियों और महात्माओं ने बताया था । जो जगत्गुरु शंकराचार्य, महर्षि दयानन्द, गाँधी, टैगोर, तिलक, रामकृष्ण ने बताया वह असत्य नहीं हो सकता। अतः मैंने जीवन में स्वयं अनुभव करके देखा है, मैं कहता हूँ वह सत्य है, सत्य है ।"

माधवाचार्य की वाणी—सिद्धि

'माधव-निदान-आयुर्वेद में निदान विषयक एक सुप्रसिद्ध ग्रन्थ है । उसकी रचना इतनी अच्छी तरह से हुई कि उसको रोग निदान सम्बन्धी श्रेष्ठ ग्रन्थ कह सकते हैं । इस ग्रन्थ के रचयिता श्री माधवाचार्यजी महाराज की शिक्षा सामान्य थी । गायत्री उपासना से ही उनकी प्रगति हुई ।

उन्होंने एक सच्चे नैष्ठिक ब्राह्मण जैसी तपस्या से गायत्री पुरश्चरण किये । वृन्दावन में १३ वर्ष तक उन्होंने निरंतर गायत्री उपासना की, इतना करने पर भी खुद मे विशेषता नहीं दिखाई दी और कोई लाभ भी नहीं दिखाई दिया । लम्बे समय तक निरन्तर इतना परिश्रम करने पर भी लाभ न मिलने से बहुत निराशाजनक स्थिति थी । वे निराश हो गये और साधना तथा वृन्दावन छोड़ कर काशी चले गये ।

काशी में कितने ही दिनों यहाँ-वहां भटकते रहे। निराशा और खिन्नता के कारण मन कहीं लगता नहीं था । एक दिन मणिकर्णिका घाट पर एक अवधूत से मुलाकात हुई । उनके बीच घनिष्ठता बढ़ी । माधवाचार्य ने मन की सारी व्यथा उनको बताई । अवधूत तांत्रिक थे, उन्होंने माधवाचार्य को भैरव की उपासना करने को कहकर उपासना का विधि-विधान भी बता दिया ।

एक वर्ष तक भैरव का अनुष्ठान करते-करते उनकी साधना सफल हुई । उस दिन साधना कर रहे थे तब एक आवाज सुनाई दी—"मैं प्रसन्न हूँ, वरदान माँग।"

माधवाचार्य बहुत धैर्यवान और गम्भीर व्यक्ति थे। वे स्थिर भाव से अपनी साधना में लगे रहे और कुछ भी बोले नहीं । फिर से दूसरी बार आवाज सुनाई

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दी—वरदान माँग । वे फिर भी चुप रहे, तब तीसरी बार फिर से वही आवाज आई । तब माधवाचार्य ने कहा—"मुझे आपके दर्शन की इच्छा है । कृपा करके पीछे से बोलने के बदले मेरे सामने आकर अपने असली स्वरूप में मुझे दर्शन दीजिए ।" तो आवाज आई—"मैं तुम्हारे सामने आ नहीं सकता । इसका कारण गायत्री पुरश्चरण है, जो तुमने पूर्व में किये थे । मेरी शक्ति इतनी नहीं है कि गायत्री उपासक के सामने प्रकट हो सकूँ, तब माधवाचार्य ने कहा—'जब आप में गायत्री उपासक के सामने प्रकट होने की सामर्थ्य नहीं है तो आपका वरदान भी अल्प सामर्थ्य वाला होगा । इसलिये मुझे आप से कुछ और चाहिए नहीं । हाँ, आप प्रसन्न हों तो मुझे इतना बतलाइये कि मेरी गायत्री साधना निष्फल क्यों गई और उसकी सिद्धि प्राप्त करने का कौन-सा मार्ग है ? अदृश्य भैरव ने पीछे से ही जवाब दिया—'तुम्हारे पूर्वजन्म के पापों का नाश करने में १३ वर्ष की साधना खर्च हो गई, अभी एक वर्ष वही साधना और करो तब तुम्हारे पूर्वजन्मों के पापों का पूर्ण नाश होगा । जब तुम्हारी आत्मा पूर्णतः निष्पाप हो जायेगी तब तुमको गायत्री का ब्रह्मतेज मिलेगा । वृन्दावन जाकर फिर से एक साल तक साधना करने से तुमको इस बार सिद्धि मिलेगी, इतना कहकर भैरव अन्तर्ध्यान हुए । माधवाचार्य वृन्दावन आये और उन्होंने एक साल तक उसी स्थान पर फिर से साधना की । एक वर्ष के बाद उनको गायत्री का साक्षात्कार हुआ और उनकी वाणी सिद्धि हुई । 'संसार की भलाई हो और स्वयं को यश मिले ऐसे ग्रंथ की रचना करूँ यह प्रार्थना उन्होंने भगवती से की । उनकी इच्छा पूर्ण हुई । शिक्षा सामान्य होते हुए भी उन्होंने 'माधव निदान' जैसे ग्रन्थ की रचना की ।

गायत्री सतोगुणी शक्ति है, उसका सबसे पहला प्रभाव मनुष्य के जन्म-जन्मान्तरों से संचित हुए पाप, कुसंस्कारों को नाश करने में होता है । जब सर्व पापों का नाश होता है और आत्मा निर्मल बनती है तब उसका कोई विशेष प्रत्यक्ष लाभ दिखाई देता है । जिस स्थान में गहरी खाई खोदी गई हो उस स्थान पर सुन्दर महल बनवाना हो तो पहले खाई को पाटने में शक्ति लगानी पड़ेगी । खाई पूरने के बाद भूमि समतल होगी तभी महल बनाने का क्रम आरम्भ होगा । जो पूर्व जन्मों के संचित कुसंस्कारों के नाश हुए बिना थोड़ी ही साधना का तुरन्त लाभ उठाना चाहते हैं, उनको माधवाचार्य की शुरुआत की असफलता जैसा निराश होना पड़ता है किन्तु जो धैर्यपूर्वक इस महाशक्ति की उपासना करते हैं उनको मधुर फल अवश्य प्राप्त होता है ।

विद्यारण्य को प्रज्ञा प्राप्ति

भारतवर्ष के धार्मिक और संस्कृत साहित्य से परिचित हर व्यक्ति ने विद्यारण्य स्वामी का नाम तो सुना होगा । वे विद्या के भण्डार सरस्वती के वरदपुत्र, महान् तपस्वी और अद्भुत प्रतिभा सम्पन्न थे । संस्कृत भाषा में उनकी उच्चकोटि की कृतियाँ हैं, उनको उस युग का व्यास कहते हैं । गायत्री उपासना से ही उनकी प्रतिभा का इतना विकास हुआ था ।

श्री स्वामी विद्यारण्य जी का दक्षिण भारत के एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार में जन्म हुआ था । इस परिवार के सब बच्चे बहुत बुद्धिमान और कर्तव्यनिष्ठ हुए हैं । स्वामी जी ने अपना बचपन विद्याध्ययन में बिताया । युवावस्था में प्रवेश करते ही उन्होंने गायत्री महामन्त्र द्वारा तपस्या शुरू की । यह तपश्चर्या पूरे २४ महापुरश्चरणों तक चलती रही, उसकी पूर्णाहुति करने के बाद जीवन मुक्त स्थिति में रहकर वे संसार का कल्याण करते रहे ।

साधना काल में दो राजपुत्र उनकी शरण में आये। उनका राज्य छीन लिया गया था । वे मारे-मारे फिर रहे थे । स्वामी जी का आशीर्वाद पाकर अपना खोया हुआ राज्य फिर से प्राप्त किया और जीवन भर उन्होंने स्वामी जी के उपदेशों और आदर्शों के अनुसार ही अपना राज्य चलाया । समर्थ गुरु रामदास जी महाराज की प्रेरणा से छत्रपति शिवाजी ने आर्य संस्कृति की रक्षा के लिए राज्य की स्थापना की थी । उसी तरह स्वामी विद्यारण्य ही की कृपा और प्रेरणा से ये दो राजपुत्र विजयनगर नामक राज्य की स्थापना करने में समर्थ बने ।

स्वामीजी को तप करते-करते लम्बा समय बीत गया । २४ पुरश्चरण पूरे हुए फिर भी उनको गायत्री माता का साक्षात्कार न हुआ । अपनी असफलता का उनको भारी दुःख हुआ और निराश होकर उन्होंने संन्यास धारण कर लिया, संन्यास धारण करने के बाद वे स्वामी विद्यारण्य के नाम से प्रसिद्ध हुए ।

वे संन्यासी बन गये तब एक दिन गायत्री माता ने उनको दर्शन दिये । इससे स्वामीजी को बहुत प्रसन्नता हुई और आश्चर्य भी हुआ । स्वामीजी ने माता से पूछा—'मैंने २४ पुरश्चरण आपके दर्शन के लिए किये, आपने मुझे दर्शन क्यों नहीं दिये ? जब मैं सब प्रकार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

की कामना छोड़कर संन्यासी हो गया हूँ तब आप अनायास ही दर्शन के लिए क्यों उपस्थित हुई हैं ?' तब माता ने उत्तर दिया—'उसके दो कारण हैं । एक जब तक साधक के पूर्व जन्म के संचित पापों का नाश नहीं होता तब तक साक्षात्कार करने वाले दिव्य नेत्र नहीं खुलते हैं । तुम्हारे २४ महापुरश्चरणों से पूर्वजन्मों के २४ महापापों का नाश हुआ है । तत्पश्चात् मेरे दर्शन के लिये योग्य बन सके हो । दूसरा कारण है— साधक के मन में रहने वाली कामनायें । इनके रहते साधक मेरा साक्षात्कार नहीं कर सकता । साधना में कामना की प्रवृत्ति जुट जाने से भावनाओं में पवित्रता नहीं रह पाती । साधना का स्नेह स्वार्थपूर्ण रहता है । निष्काम बने बिना मेरा दर्शन पा सकना सम्भव नहीं है। तुम्हारे मन में मेरे दर्शन की कामना थी, यद्यपि यह इच्छा सतोगुणी थी किन्तु यह भी एक प्रकार की कामना थी। जब तुमने सभी कामनाओं का परित्याग कर दिया, समर्पित भाव से हमारी आराधना में प्रवृत्त हुए तब अपने वात्सल्य प्रेम को रोक नहीं सकी और तुरन्त दर्शन देने के लिये चली आई ।' माता की स्नेहयुक्त वाणी को सुनकर विद्यारण्य जी भाव-विह्वल हो उठे। नेत्रों से प्रेमाश्रु बहने लगे तथा माँ के चरण धोने लगे ।

गायत्री माता ने विद्यारण्य से कहा—'वत्स ! हम तुम्हारी निष्काम भक्ति भावना से अत्यन्त प्रसन्न हैं । तुम जो चाहो वर माँगो । माँ की दिव्य छवि के अवलोकन के आनन्द में डूबे स्वामीजी ने विह्वल होकर कहा—'माँ ! आपकी असीम कृपा से जिस दिव्यदर्शन आनन्द का अधिकारी बन सका हूँ उसे मैं भौतिक कामनाओं के बदले गँवाना नहीं चाहता । मुझे कुछ भी नहीं चाहिए, आपके चरणों में श्रद्धाभक्ति बनी रहे ।' माँ गायत्री प्रसन्न होकर बोलीं—'तथास्तु !' उन्होंने निर्देश दिया कि लोकमंगल के लिए, सद्ज्ञान के प्रसार के लिए सद्ग्रंथों की रचना करो । स्वामी विद्यारण्य जी माँ की आज्ञा को शिरोधार्य कर सद्ग्रंथों की रचना में लग गये । उन्होंने अनेकों आर्षग्रन्थों का भाष्य किया, तथा नवीन ग्रन्थों की रचना की।

स्वामी विद्यारण्यजी की प्रसिद्ध रचनायें इस प्रकार हैं—

(१) ऋग्वेद भाष्य, (२) यजुर्वेद भाष्य, (३) सामवेद भाष्य, (४) अथर्ववेद भाष्य, (५) शतपथ एतरेय, तैतरीय, ताण्ड्य आदि ब्राह्मण ग्रनथों का भाष्य, (६) दशोपनिषद् दीपिका, (७) जैमिनीय न्यायमाला विस्तार, (८) अनुभूति-प्रकाश, (९) ब्रह्म-गीता, (१०) सर्वदर्शन-संग्रह, (११) माधवीय धातु वृत्ति, (१२) शंकर-दिग्विजय, (१३) काल-निर्णय, (१४) श्री विद्या महार्णव तन्त्र, (१५) पंचदशी आदि। इन सबके अलावा भी उनके कई ग्रन्थ हैं जिनमें से कुछ प्राप्त भी नहीं हैं । उनकी अगाध विद्वत्ता और महान आध्यात्मिक अनुभूति में गायत्री माता की कृपा का प्रत्यक्ष प्रकाश दिखाई देता है ।

स्वामीजी के जीवन की अनेक चमत्कारी घटनायें हैं किन्तु इन चमत्कारों में से सबसे बड़ा चमत्कार उनका ब्रह्मतेज था । उससे वे स्वयं का और संसार के असंख्य प्राणियों का कल्याण करने में समर्थ बन सके और शृंगेरी पीठ के अधिपति के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

गायत्री का आग्नेयास्त्र

गायत्री उपासकों में स्वामी योगानन्द का नाम बड़ी श्रद्धा के साथ लिया जाता है । गायत्री उपासना में उनकी अगाध श्रद्धा थी, माँ की कृपा से उनको अनेकों सिद्धियाँ भी प्राप्त थीं । जीवन-पर्यन्त उन्होंने गायत्री उपासना का प्रचार-प्रसार किया । अपनी भौतिक एवं आध्यात्मिक सफलताओं का कारण गायत्री उपासना को बताते हैं । उनका कहना है कि जगत् जननी ने हमारा सदा मार्गर्शन किया तथा विकट परिस्थितियों में रक्षा की । प्रस्तुत है उन्हीं के शब्दों में जीवन की रोमांचक घटना जिसमें गायत्री महामन्त्र का चमत्कार दिखाई पड़ा ।

परमतत्व की जिज्ञासा और आत्म साक्षात्कार की अभिलाषा से प्रेरित होकर मैंने भोग का मार्ग छोड़ा और त्याग को अपनाया । संन्यास लेकर साधना मार्ग और गायत्री महामन्त्र की शोध में अनेक तीर्थ क्षेत्रों में घूमता रहा । हिमालय प्रदेश को भी मैंने छान मारा और कितने ही महात्माओं की लँगोटी धोई फिर भी परम शान्ति नहीं मिली । जिसने जो बताया वह सब किया । अनेक प्रकार की साधनायें, अभ्यास, जप, प्राणायाम, पाठ आदि करता रहा किन्तु किसी भी तरह से आत्मा में प्रकाश के दर्शन नहीं हुए ।

यही भ्रमण करते एक यात्री से भेंट हुई, उसके द्वारा भी 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका एवं गायत्री साहित्य की प्रशंसा सुनी । वे किताबें भी अनायास मिल गयीं, मैंने सब पढ़ीं । पढ़ते-पढ़ते ऐसा प्रत्यक्ष अनुभव होता था कि वे पुस्तकें किसी अनुभवी साधक द्वारा लिखी गई हैं । मेरी आत्मा ने पुस्तकों को ही गुरु मान लिया और बताये हुए विधि-विधान के अनुसार गायत्री उपासना आरम्भ कर दी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साधना की पहली अनुभूति यह हुई कि मुझे बार-बार परेशान करने वाली मेरे मन में छिपी हुई चिर-संचित वासनायें और दुर्भावनायें दूर हो गयीं । दिन-प्रतिदिन चित्त में शांति, स्थिरता और सात्विकता बढ़ने लगी । मेरा शरीर जो अधिकांशतः अस्वस्थ रहता था, बिना किसी औषधि के अपने आप स्वस्थ हो गया ।

मुझे ऐसा लगता कि गायत्री माता मेरी रक्षा करने के लिए सदा उपस्थित रहती हैं और मेरे अन्दर कोई दैवी शक्ति बढ़ रही है । एक बार बहुत ही आश्चर्यजनक अनुभव मुझे हुआ ।

भ्रमण करते-करते एक बार 'बेहरा' नामक गाँव में पहुँचा । उस गाँव के लोगों को प्रोत्साहन देकर गायत्री हवन करवाया । उस गाँव में विधर्मियों की संख्या अधिक थी, स्वयं के संकुचित दृष्टिकोण के कारण उन लोगों ने हवन में ईंटें फेंकी और विविध विघ्न उपस्थित किये । मैंने विरोध किया तब वे लोग मारने के लिए तैयार हुए । मैं यहाँ कुछ दिनों रहा, वे लोग प्रतिदिन कोई न कोई दुष्टता मेरे लिए तैयार रखते थे । एक दिन तो उन्होंने रात्रि को मेरे एकांत स्थान पर हमला करके मुझे मारने का षड्यन्त्र रचा ।

जब रात को सो रहा था तब माँ गायत्री सामने खड़ी थीं । उन्होंने मुझे हाथ पकड़कर उठाया और कहा-देखो ! तुमको मारने के लिये सामने दुष्टों की टोली खड़ी हुई है । मैं खड़ा हुआ और देखा तो थोड़ी ही दूर पर कुछ लोग हथियारों से सुसज्जित होकर मुझे मारने के लिये आ रहे हैं । अब मैं क्या करता ? मैंने गायत्री मन्त्र का आग्नेयास्त्र प्रयोग किया । मैंने उस विद्या का अभ्यास तो किया था किन्तु उसका प्रयोग तो पहली ही बार कर रहा था । उन आताताइयों पर मैंने मन्त्र का प्रहार किया, इससे उनके शरीर जलने लगे और वे चिल्लाते हुए गाँव की ओर भागने लगे । उनकी चिल्लाहट से लोग जाग गये । वे लोग कह रहे थे—हम जल रहे हैं, हमारे प्राण बचाओ । उनके कथन पर किसी को विश्वास नहीं हो रहा था, क्योंकि वहाँ आग कहीं नहीं दिखाई दे रही थी ।

लोगों ने इसे उनका पागलपन समझकर चिल्लाने वालों को पकड़ा तो सचमुच ऐसा लगा कि मानो आग को स्पर्श किया हो । जो पकड़ने के लिए आगे बढ़े थे दूर हट गये ।

यह एक आश्चर्यजनक घटना थी । पूरा ही गाँव एकत्रित हो गया । पूछताछ करने पर आक्रांताओं ने बताया कि—'हम स्वामीजी को मारने गये थे, वहाँ से वह पीड़ा होने लगी है । सब लोग मेरे पास आये । मैंने शांति पाठ किया तब उनके शरीर का दावानल शान्त हुआ । मेरी इस चमत्कारी शक्ति की विज्ञप्ति हुई और लोग मेरे पास लाभ उठाने के लिए भेंट सौगात लेकर आने लगे । यह सोचकर कि यह सब मेरी साधना में विघ्न उपस्थित करेंगे, मैं वहाँ से दूसरे ही दिन चल दिया ।

उपरोक्त प्रयोग में एक उल्लेखनीय बात यह हुई कि प्रयोग की विधि ठीक प्रकार मालूम न होने से गायत्री का आग्नेयास्त्र प्रयोग करने से मेरे मुँह और हाथ भी जल गये थे जो १५ दिन में ठीक हुए ।

उस दिन से गायत्री पर मेरी श्रद्धा और भी दृढ़ हो गई । निरन्तर गायत्री तपश्चर्या में लगा रहा हूँ । मेरी सलाह से गायत्री उपासना करके कई लोगों ने लाभ प्राप्त किया है । सीकरी गाँव में एक ब्राह्मण के कोई सन्तान न थी, उसने गायत्री की साधना की, उसको एक पुत्र प्राप्त हुआ, वह लड़का सुसंस्कारी और सुन्दर है । एक रोगी का छः मास पुराना आधा सिर का दर्द इसी महाशक्ति की आराधना से अच्छा हुआ । नगरिया गाँव का एक लड़का साल में तीन माह तक स्कूल में नहीं गया, इसलिये पास होने की आशा नहीं थी । गायत्री जप करने से वह प्रथम श्रेणी में पास हुआ । इस तरह कई लोगों को छोटे-बड़े लाभ मिलते रहे हैं किन्तु गायत्री उपासना का वास्तविक लाभ सतोगुण की वृद्धि और आत्म-कल्याण ही है । मैं उसी मार्ग पर प्रवृत्त हूँ और इसी भावना से गायत्री उपासना करने की सलाह देता रहता हूँ ।

उनका कहना है कि गायत्री हृदय रूपी मानसरोवर में प्रकट होकर सपरिवार साधक को भवसागर से पार ले जाती है । गायत्री साधना के फलस्वरूप सूक्ष्म शरीर के कुछ गुप्त कोषों, चक्रों, गुच्छकों, ग्रंथियों का विकास होता है जिसके कारण दिव्य शक्तियों का बढ़ना अपने आप शुरू हो जाता है। बुद्धि की तीव्रता, शरीर की स्वस्थता, सत्पुरुषों की मित्रता, व्यावसायिक सहायता, कीर्ति, प्रतिष्ठा, पारिवारिक सुख-शान्ति, सुसन्तति, व्याधियों से निवृत्ति, शत्रुता का निवारण सरीखे अनेकों लाभ अनायास ही मिलने लगते हैं । कारण यह है कि आत्मबल बढ़ने से, दिव्य शक्तियाँ विकसित होने से, गुण कर्म स्वभाव में आशाजनक परिवर्तन हो जाने से, अनेक ज्ञात-अज्ञात बाधाएँ हट जाती हैं, और सूक्ष्म तत्व अपने में बढ़ जाते हैं, जो उन्नति की ओर ले जाते हैं ।

उपरोक्त आग्नेयास्त्र सम्बन्धी प्रयोग तो इस सेवक का साधारण सा अनुभव था । गायत्री माता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सर्वशक्तिमान है, इसलिए इसमें अचम्भे की कोई बात नहीं है । उसकी शक्ति अनन्त है जिसका वर्णन वेद भी नेति-नेति करते हैं ।

१९५२ ई. में मिर्जापुर नगरिया में गायत्री पाठशाला चल रही थी उस समय की बात है । यहाँ पर एक नदी बहती है और उस नदी की गोचर भूमि में चार-पाँच गाँव की गाय चुगती हैं । उसको असुरवृत्ति के लोगों ने कब्जाना चाहा और गऊ वालों ने रोका तो उसमें कुछ झगड़ा हो गया था, असुरवृत्ति वाले लोगों ने पुलिस को अपने पक्ष में मिला लिया था उनकी मदद करने को वहाँ आये और उनकी गाय हर लीं तो नगरिया में बैठक हुई । सब लोग अपनी-अपनी कह रहे थे मुझसे पूछा कि स्वामी जी आप भी कुछ मदद करेंगे या नहीं । मैंने कहा मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूँ । लोगों ने कहा आल्हा और ऊदल की सहायता अमर गुरुदयाल करते थे । उसी प्रकार आपको हमारी सहायता करनी होगी । भगवान श्रीकृष्ण जी ने तो गऊ खुद चराई थीं । तुम्हारा तो गायों की सेवा करना धर्म है इसके बाद उनमें एक सभा हुई और उनमें सरपंच लालसिंह वर्मा भी थे । वह सब मिलकर वहाँ आये जहाँ पर गऊ थीं, तो दरोगा जी ने सबको गिरफ्तार कर लिया, और उन सब लोगों को बुलन्दशहर जेल खाने भेज दिया और मुकदमा चलाना शुरू किया, जो लोग पकड़े गये थे उनका पक्ष न्यायपूर्ण था । मुझे उन पर दया आई । मैंने गायत्री शक्ति का सहारा लिया । माता गायत्री का विशेष साधन करने लगा, आठ ही दिन कर पाया था कि नौंवे दिन जेल में ३ बजे कैदियों को माता का दर्शन हुआ । माता ने कहा आज चार बजे ही घर को आ जाना तुम लोगों को कोई नहीं रोक सकता है । ऐसा ही हुआ उन लोगों को कैद से रिहा किया गया और चरागाह भी उनको दे दिया गया । उन लोगों ने मिलकर गायत्री यज्ञ किया और प्रसाद भी बाँटा ।

ठा. रामचन्द्र जी वर्मा बड़ी मुसीबल में फँसे थे उनके बालकों को सुसराल वाले नहीं भेजते थे और वह टुकड़ा-टुकड़ा को तङ्ग थे । वह हमारे पास आये और हमसे कहा स्वामीजी मुझे ऐसा उपाय बताओ, जिससे मेरे बालक मुझे मिल जायँ, तो आपका बड़ा अहसान होगा, मैंने इतवार का उपवास बताया । उसने ऐसा ही किया, माता की कृपा से उसे आर्थिक उन्नति भी हुई और उसके बालक भी मिल गये । जब से वह इतवार का व्रत रखता है और माता की थोड़ी बहुत उपासना भी करता है ।

मङ्गलपुर के राधारमन गुप्ता को शादी की बड़ी चिन्ता थी । माता की थोड़ी ही उपासना कर पाया है सन् १९५३ ई. में उसकी शादी अलीगढ़ से बड़ी धूमधाम से हुई और तीन-चार हजार रुपया भी मिला था । हमारे साथी जनकाराम, जय प्रकाश शर्मा भहोरी निवासी की शादी की कोई आशा नहीं थी । माता की कृपा से उनकी भी शादी बड़ी धूमधाम से हुई और योग्य पत्नी मिली ।

गायत्री माता की कृपा से रोगियों को स्वास्थ लाभ मिला है । यह अनेक रोगियों पर आजमाया है । ५-८-१९५२ में गायत्री प्रचार करने मैथना गया था वहाँ हमारा नाम सुनकर महाशय वेदरामसिंह वर्मा की बहन भी आई हुई थीं । उनको प्रसूत का रोग पड़ता था उनको दस-दस बार दौरा होता था । डाक्टर और हकीमों ने उसको लाइलाज कर छोड़ दिया था । हमसे उसकी चिकित्सा करने को कहा गया । मैंने उसकी चिकित्सा आरम्भ की गायत्री मन्त्र से । मन्त्रित जल सुबह और शाम पिलाया करता था । माता की कृपा से १५-८-१९५२ ई. में उसे पूर्ण आराम हो गया था और अब पूर्ण निरोग है ।

श्री सोराजसिंह कोटा निवासी को प्रमेह रोग हो गया था उसने दिल्ली, मेरठ और बुलन्दशहर आदि में चिकित्सा कराई, मगर सिवाय निराशा कहीं पर आशा नजर नहीं आई । रोग यहाँ तक बढ़ गया कि चिकित्सक लोगों ने असाध्य करके छोड़ दिया था, फिर उसके ससुर साहब अशोकगढ़ लाये वहाँ पर भी चिकित्सा कराई गई, कोई फायदा नहीं हुआ । मैं उस समय में ठा. हरपालसिंह के यहाँ आया था । श्री हरपालसिंह वर्मा ने सोराजसिंह को हमें दिखाया था । मैंने उसे देखा तो उसकी बहुत बुरी दशा थी, बचने की कोई आशा नहीं थी, उनको डाक्टर टी. बी. बताते थे मैंने उसकी चिकित्सा आरम्भ की प्रातःकाल गायत्री मन्त्र से पढ़कर जल पिलाया जाता था और गायत्री चालीसा पाठ और गायत्री मन्त्र जाप कराया जाता था माता-की कृपा से वह निरोग हो गये । अब सानन्द हैं और १९-१-१९५२ ई. को अखत्यारपुर से मैथना जगतपुर आया था, वहाँ पर एक लड़की भूतबाधा से परेशान थी, वहाँ बहुत से चिकित्सक लोग दवाओं की देमार थी मैंने उसे देखा था और सारे शरीर में दर्द हो रहा था मैंने गायत्री मन्त्र से पढ़ कर जल पिलाया, तो उसे उसी दम आराम हो गया वह लोग अचम्भे में हो गये थे और भी अनेक अनुभव हुए हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री सद्बुद्धि जिस मस्तिष्क में प्रवेश करती है वह अन्धानुकरण करना छोड़कर हर प्रश्न पर मौलिक विचार करता है वह उन चिन्ता, शोक, दुःख आदि से छुटकारा पा लेता है जो कुबुद्धि की भ्रान्त धारणाओं के कारण मिलते हैं । संसार में आधे से अधिक दुःख कुबुद्धि के कारण हैं, उन्हें गायत्री की सद्बुद्धि जब हटा देती है तो मनुष्य सरलता, शान्ति, सन्तोष और प्रसन्नता से परिपूर्ण रहने लगता है ।

काठिया बाबा की गायत्री साधना

कुछ समय पहले वृन्दावन में एक परमसिद्ध महात्मा थे । नाम तो उनका था—महात्मा रामदास, परन्तु वे लकड़ी की लँगोटी धारण करते थे । इसी कारण काठिया बाबा के नाम से ही प्रसिद्ध थे ।

काठिया बाबा ने अपनी साधना की सफलता का वर्णन इन शब्दों में किया है—'विद्याध्ययन के उपरान्त मैं गुरु के पास से वापस अपने घर आया तब सर्वप्रथम मुझे गायत्री मन्त्र सिद्ध करने की इच्छा हुई ।

हमारे बगीचे के पास एक बड़ा वट वृक्ष था । उसकी के नीचे शापोद्धार कवच आदि विधि-विधान के साथ गायत्री मन्त्र का जप, अनुष्ठान आरम्भ किया । विधि की जानकारी मुझे गुरु-गृह में दी जा चुकी थी ।

७५ हजार मन्त्र जप कर चुकने पर आकाशवाणी हुई—'बेटा ! शेष जप ज्वालामुखी पर जाकर कर, तुझे सिद्धि मिलेगी ।'

आकाशवाणी से स्वाभाविक ही मुझ में उल्लास उमड़ा । आनन्दित भाव से मैं ज्वालामुखी की ओर चला, साथ में मेरा समवय भतीजा था । हमारे यहाँ से ज्वालामुखी ३५—४० मील दूर है । मार्ग में एक तेजपुंज महात्मा मिले । उनके प्रति मेरे मन में आकर्षण हुआ और मैंने उनसे वैराग्य की दीक्षा ली । दीक्षा लेने से मेरे भतीजे ने मना किया, मैंने उसकी नहीं मानी । तब वह लौटकर गाँव गया और पिताजी को ले आया । मुझे संन्यासी बने देख पिताजी दुःखी हुए, वे मुझे पुनः संसारी बनने का आग्रह करने लगे । डराया भी, जब उनके सभी प्रयास निष्फल हो गये तब वे मेरे गुरुदेव से कहकर मुझे अपने गाँव ले गये । वहाँ वट-वृक्ष के नीचे मैंने आसन लगाया व साधना शुरू की। रात्रि में आकाश-मण्डल को भेदकर गायत्री देवी प्रकट हुईं और बोली—'वत्स ! मैं तुझ पर प्रसन्न हूँ वर माँग ।' मैंने साष्टांग प्रणाम कर कहा—'माँ ! मैं तो वैराग्य ले चुका हूँ, अब कोई कामना नहीं । बस आप प्रसन्न रहें यही विनम्र प्रार्थना है ।' एवमस्तु कहकर देवी अन्तर्ध्यान हो गई ।

गायत्री की सिद्धि प्राप्त कर लेने पर काठिया बाबा को और कुछ पाना बाकी न रहा । वे आप्त काम हो गये, उन्हें दूर दृष्टि प्राप्त हो गई थी । वे कोई भी बात जान लेते थे, शिष्यों पर आये संकटों को दूर कर देते थे । उनकी वाणी-सिद्धि विलक्षण थी ।

महापुरुष—सन्त की तरह स्वयं को छुपाने की यह शक्ति बाबा में अनुपम थी । द्रव्य का अभाव उनके यहाँ कभी नहीं रहा । उनकी लकड़ी की लँगोटी को देखकर सब लोग आश्चर्य में डूब जाते थे । सेवक लोग समझते थे कि बाबाजी ने सोने की मुहरें इकट्ठी की हैं, उन्हें छुपाने के लिए यह लकड़ी की लँगोटी बनवाई है । लोभ-लालच में पड़कर उनके सेवकों ने उन्हें तीन बार दो-दो तोला जहर दिया, तब भी उन पर विशेष असर इस विष का नहीं हुआ । तब लोगों ने उनकी शक्ति का अनुभव किया । उनका आत्मतेज प्रचण्ड था, उनके सामने पहुँचने वाला उनसे अभिभूत हो जाता था ।

उद्यड़ जोशी का अतीन्द्रिय ज्ञान

श्री दयाशंकर गिरजाशंकर जोशी चौरासी भट्ट एक सिद्ध पुरुष हो गये हैं । लोग उन्हें चाँदोद क्षेत्र के गुप्त योगेश्वर का उद्यड़ जोशी महाराज कहते थे ।

उन्होंने एक बार आत्मानुभूति बताई—'मैं तो बचपन से गायत्री उपासना करता हूँ । प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में एक लोटा और धोती लेकर नर्मदा नदी में जाकर स्नान करना, वहाँ एक बड़े पेड़ के नीचे पूर्वाभिमुख बैठकर, एकाग्रचित्त से गायत्री मन्त्र का जप करना, यह मेरा क्रम था' । शाम को घर आकर एक बार भोजन लेकर फिर शंकर जी की आराधना करता ।

मोक्ष की अभिलाषा से मैं समर्थ गुरु की खोज में था । माँ गायत्री की उपासना के प्रभाव से एक दिन एक महात्मा का दर्शन-लाभ हुआ । उनकी सेवा में लग गया । सेवा करते-करते एक दिन मध्य रात्रि में मुझ पर प्रसन्न होकर उन्होंने मेरी नाभि में हाथ से जोरदार धक्का लगाया । उसी क्षण मेरी कुण्डलिनी जागृत हुई और मुझे आत्म-साक्षात्कार हो गया । सारे जगत को मैं ब्रह्मरूप में देखने लगा । स्थावर-जंगम रूप में मुझे चैतन्य स्वरूप दिखने लगा, उसी दिन से मुझे रात्रि में समाधि होने लगी ।

मैं जिस मनुष्य को देखता उसके भूत, भविष्य, वर्तमान को जानने लगा, किन्तु किसी को कहता नहीं, आवश्यकतानुसार ही उत्तर देता । मेरे अन्दर ही सभी देवी-देवताओं का निवास है । मैं तो 'कर्तुम्-अकर्तुम्

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अन्यथा कर्तुम्' रूप हूँ । जो होनेवाला है और जो नहीं होने वाला है दोनों को ही बदल सकता हूँ ।

एक दिन एक गृहस्थ अपनी हाथ की मुट्ठी में एक रुपया लेकर जोशी जी के पास आया और कहने लगा—"महाराज ! आप महात्मा हैं, बताइए कि मेरे हाथ में क्या है ?" महाराज ने हँसते-हँसते कहा—'भाई ! मेरी परीक्षा मत लो । पर वह माना नहीं, अपने आग्रह पर अड़ा रहा ।'

तब महाराज जी ने कहा—'तुम्हारी मुट्ठी में जो है वह तुम्हारी चमड़ी के रंग में मिल जायेगा ।' उस व्यक्ति ने हाथ खोला तो देखा मुट्ठी का रुपया गायब है, उसकी जगह उतना ही बड़ा सफेद दाग पड़ गया है ।

महाराज जी का एक भक्त एक समय नर्मदा नदी में बाढ़ आने से उसमें डूब गया । महाराज जी को यह समाचार मिला तो वे मुँह ढककर सो गये । तीन घण्टे तक हिले-डुले नहीं । तब तक वह डूबने वाला भक्त आ गया, उनके चरण स्पर्श कर बोला—'महाराज जी! डूबने के बाद मैं बहुत दूर तक बहता गया । तभी उस अथाह जलराशि में से किसी महात्मा ने मुझे बाहर खींच निकाला और किनारे लाकर छोड़ा ।'

उसकी बातें सुनकर महाराज हँसने लगे । उसके जाने के बाद बोले 'भक्तों की रक्षा करना तो मेरा काम है ।'

एक दिन महाराज जी ने एक भक्त को नर्मदा के किनारे पर जाने से मना किया । उसी दिन उसका सामान नाव से आने वाला था, इसलिये उसको नदी-तट जाना पड़ा । वह एक पत्थर पर बैठकर माल को देखने लगा, इतने में ही वह पत्थर खिसक गया और वह डूब गया । इस तरफ उद्यत महाराज सिर ओढ़कर सो गये । एक घण्टे के बाद मुँह खोलकर बैठ गये । थोड़ी देर बाद वह भक्त आया और पैर पकड़कर बोलने लगा—'भगवान! आपकी आज्ञा का उल्लंघन करके मैं नर्मदा के किनारे गया । वहाँ पत्थर खिसक जाने से मैं डूब गया । फिर भी उसी क्षण मेरे मुँह से गुरुदेव-गुरुदेव शब्दों का उच्चारण होने लगा, एक सन्त ने मुझे पैर पकड़कर बाहर लाकर छोड़ दिया । महाराज आपकी कृपा को मैं कैसे भूल सकता हूँ, आपने ही मुझे बचाया है ।

एक बार महाराज जी एक भक्त महिला से मिलने गये । यह देवी महाराज जी की अनन्य भक्त थी और उनकी खूब सेवा करती थी । महाराज जी मिलने गये उस समय उसको १०४ डिग्री बुखार चढ़ा था । महाराजजी के दर्शन करके वह बोली—'प्रभो ! आपकी प्रसादी स्वरूप भस्म मुझे चाहिए । मेरा बुखार उससे भाग जायेगा ।' महाराज जी ने कहा 'माताजी ! आज सोमवार है, शुक्रवार को भस्म मिलेगी । शुक्रवार को उनकी मृत्यु हुई और वह भस्म में मिल गई ।'

एक बार एक भक्त अपने मित्र के साथ महाराज जी से मिलने गया । सब लोग दरवाजे के पास बैठ गये। दरवाजे से होकर जोर की हवा आ रही थी । महाराज जी के पास में रखा हुआ घी का जो दीपक जल रहा था वह हवा के कारण न बुझ जाये इस विचार से एक व्यक्ति को दरवाजा बन्द करने के लिए संकेत किया । इतने में ही महाराज जी ने दीपक के आसपास अँगुली घुमाकर दरवाजा बन्द न करने के लिए इशारा किया । हवा जोर से आ रही थी फिर भी दीपक बुझा नहीं । ऐसे कई चमत्कार महाराज जी के सम्पर्क में आने वालों ने स्वयं देखे थे और अनेक लोग उनकी अलौकिक शक्ति से बहुत लाभान्वित हुए ।

विद्या विभूषण मुकुटराम जी

बड़ौदा राज्य के मंजुसर गाँव के निवासी श्री मुकुटराम जी महाराज ने गायत्री की उपासना से परम सिद्धि प्राप्त की थी । महाराज जी अपने बचपन में ब्रह्ममुहूर्त में उठकर ठण्डे पानी से स्नान करके गायत्री का जाप करने बैठ जाते थे । चतुर्मास में रात के ३-४ बजे तक एक ही आसन से जप करते थे । उन्होंने कितने ही पुरश्चरण किये और मरने तक जप और पुरश्चरण का क्रम चलता ही रहा । इस प्रकार की गायत्री साधना से उनको ये अलौकिक सिद्धियाँ प्राप्त हुई थीं—

(१) विश्व दृष्टि—महाराज अपने गाँव में बैठे यूरोप, अमेरिका और जर्मनी की बातें बताते थे । लोक-लोकांतर की अद्‌भुत बातें वे सुनाते थे । पिछले महायुद्ध में जर्मनी की एक स्टीमर डूब रही थी, तब उसी समय वह समाचार उन्होंने लोगों को दिया था ।

(२) सर्वभाषा ज्ञान—वे गुजराती दूसरी कक्षा से ज्यादा पढ़े भी न थे, किन्तु गायत्री जप के प्रभाव से कितनी ही भाषाओं पर मातृभाषा जितना प्रभाव आ गया था । एक दिन उनके पास बड़ौदा के एक सरकारी कर्मचारी आये । वे तेलंगाना के निवासी थे, उनके साथ उन्होंने तेलगू भाषा में बात की । बाद में उसके साथ कन्नड़ में बात करने लगे । एक फकीर के

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साथ फारसी में बातें करने लगे । कभी-कभी वे अंग्रेजी में बात करते हुए देखे गये । उनका कहना था कि—'येन ज्ञातेन इदं सर्व विज्ञातं भवति' गायत्री को जान लेने से और कुछ अज्ञात नहीं रहता ।

(३) अगाध शास्त्र ज्ञान से वे सम्पन्न थे ।

(४) **ज्योतिष ज्ञान**—वे कभी ज्योतिष पढ़े नहीं थे, लेकिन पास आने वाले मुँह देखकर भूत, वर्तमान, भविष्य की बातें बताते थे । जन्म कुण्डली भी बनाते थे और जमीन में गढ़ा हुआ द्रव्य भी दिखाते थे ।

(५) **योगशास्त्र ज्ञान**—शरीर और शरीर के अन्दर की शक्तियाँ स्वयं ने देखी हों, ऐसी वे बातें करते थे । उसी वक्त षटचक्रों की कितनी ही महत्वपूर्ण बातें कहते थे ।

(६) **वैदिक शास्त्र**—आयुर्वेद सम्बन्धी कितनी ही चमत्कारी बातें बतलाते थे। वे कहते कि नक्षत्रों के साथ वनस्पतियों का घनिष्ठ सम्बन्ध है। अमुक नक्षत्र में अमुक औषधि-वनस्पति को अमुक विधि के साथ लिया जाय तो अमुक प्रकार के रोग वाले मनुष्य को निश्चित रोग से मुक्ति मिलेगी। इसी तरह अमुक-अमुक औषधियों से अमुक-अमुक रोग निश्चित रूप से ठीक हो जाता है।

(७) **मन्त्र शास्त्र सिद्धि**—मन्त्रशास्त्र बहुत गहन विषय है। कौन-सा मन्त्र कौन-सी प्रकृति के व्यक्ति को दिया जाये तो उसको तुरन्त सिद्धि मिले, यह बात मन्त्र की आत्मा और व्यक्ति की आत्मा को पहचानने वाली शक्ति से सम्बद्ध है, उनमें यह शक्ति थी।

(८) **वचन सिद्धि**—वचन सिद्धि के कितने ही चमत्कार उन्होंने दिखाये थे। एक बार ब्राह्मण लोग खाने पर बैठे थे तभी बारिश शुरू हुई, महाराज ने वर्षा बन्द होने को कहा और वह बन्द हो गई। तुरन्त बुखार उतर जायेगा ऐसा कहने के साथ ही कितनों के ही बुखार उतर गये थे। कहने मात्र से कई लोगों को सन्तान प्राप्त हुई। तुमको अब कभी दुःख भुगतना नहीं पड़ेगा। ऐसा जिसको भी कहा उसे फिर सुख ही मिला। महाराज जी ने जब-जब जो कुछ भी कहा वह अवश्य सिद्ध हुआ।

(९) **अन्य शरीर धारणा**—अपने शरीर को वैसा ही रखकर उन्होंने कितनी ही बार परकाया प्रवेश किया। एक बार उन्होंने एक मृत व्यक्ति के शरीर में प्रविष्ट होकर ऐसी गुप्त बातें बतायीं जिन्हें सुनकर सब लोग ही आश्चर्य में डूब गये।

(१०) **परावाणी ज्ञान**—परावाणी में दक्षता होने से उनको अनेक भाषाओं का ज्ञान था। वे पक्षी और जानवरों की भाषा भी समझते थे क्योंकि परावाणी में सब भाषाएँ एक हो जाती हैं।

(११) **लक्ष्मी सिद्धि**—वे कभी कुछ करते नहीं थे और न कभी किसी से कुछ लेते थे, तो भी उनका राजाओं जैसा खर्च था। अपनी जिन्दगी में उन्होंने लाखों व्यक्तियों को दक्षिणा और अन्न दिया था। महायज्ञ, अतिरुद्र यज्ञ, महारुद्र यज्ञ आदि शाही ठाठ से किया था। ब्रह्मभोज भी किया था और उसके लिए याचना नहीं की थी और न किसी से दान लिया था। उनका चौका सबके लिए हमेशा खुला रहता था।

इन सबके बावजूद भी कितने ही चमत्कारों को आगन्तुकों ने एवं जिनके यहाँ वे जाते थे, उन्होंने देखा था। वे कहते थे कि यह सब गायत्री के ही प्रताप से है।

गायत्री माता की कृपा से लोगों में आत्मबल बढ़ता है और वे परमात्मा के समीप पहुँचते हैं। इससे उनको स्वाभाविक ढंग से ईश्वर की शक्तियों पर अधिकार होता है। आत्मा-परमात्मा का अंश है। गायत्री द्वारा इन दोनों में एकता हो जाती है, यह एकता ही सिद्धियों की जननी है।

गायत्री उपासना की सिद्धियाँ

शेखावटी नामक प्रान्त में एक कस्बा है—लक्ष्मणगढ़। यहाँ पण्डित विश्वनाथ जी गोस्वामी एक जाने-माने गायत्री उपासक हो गये हैं। १९२७ विक्रम सम्वत में वे जन्मे और विक्रम सम्वत १९८७ में ६० वर्ष की आयु में उनका स्वर्गवास हो गया।

एक संस्कारवान मारवाड़ी सारस्वत ब्राह्मण परिवार में उनका जन्म हुआ। पहली पत्नी के निधन के बाद दूसरा विवाह हुआ। जब दूसरी पत्नी का भी देहावसान हो गया तो उन्हें गहरे आघात से वैराग्य उत्पन्न हुआ। एक समय भोजन, भूमि पर शयन और न्यूनतम वस्त्रों से देह ढकने का क्रम उनका चला, जो अन्त तक जारी रहा।

गायत्री के तीन पुरश्चरण उन्होंने किये। दो तो विधिवत् समाप्त हो गये, तीसरा चल ही रहा था जब उनका देहान्त हुआ। इसी तीसरे पुरश्चरण की अवधि में यह देखा गया कि नित्य सन्ध्या-बन्दन के बाद जब वे गायत्री जप में तल्लीन होते थे तो उस समय एक लम्बा काला नाग आता था और अपना फन फैलाकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उनके आसन से करीब १ मीटर दूर बैठ जाता था। जैसे ही गोस्वामी जी मन्त्र जप पूर्ण कर विसर्जन बोलकर उठते, वह नाग चला जाता था। यह दृश्य भक्तों और दूसरे लोगों ने कई बार देखा। सर्प के इतना समीप होने पर भी साधक विश्वनाथ जी तनिक भी विचलित हुए बिना प्रशांत गम्भीर मुद्रा में ध्यान एवं जप का क्रम जारी रखते थे। गायत्री माता की ही शक्ति, सम्भवत: इस रूप में उन्हें दर्शन-संरक्षण देने आती थी।

इन्हीं गोस्वामी के आशीर्वाद के फलस्वरूप सीकर का एक भक्त वीरावत, जो पहले नितांत सामान्य आर्थिक स्थिति का था बहुत वैभव-सम्पन्न एवं समृद्धिशाली हो गया। उस परिवार के सदस्य तब से गोस्वामी जी को ही अपना कुलगुरु मानते हैं और अपने कुल के छोटे बालकों के मुण्डन संस्कार बराबर उनकी समाधि पर करते हैं। संकटों के समय उन्हीं गोस्वामी जी की ही मनौती यह परिवार करता है और उन्हीं में विश्वास रखकर अपनी मनोकामनाओं की पूर्णता पाता है। इसी प्रकार अनेकानेक अन्य लोगों को भी उनके आशीर्वाद के कारण प्रत्यक्ष भौतिक एवं आंतिरक लाभ मिले हैं। अब उनकी जप-स्थली 'गोसाईं जी का बाग' नाम से मशहूर है और उनके स्वर्गारोहण की तिथि पर लक्ष्मणगढ़ के कितने ही लोग उनके दर्शन के लिए जाते हैं। गोस्वामी जी १२ वर्षों तक मात्र दूध और फलों के आहार पर ही रहे थे। इस त्यागी एवं तपोनिष्ठ आत्मा को गायत्री का साधना-स्वरूप, वचन-सिद्धि की प्राप्ति हुई थी। इसी कारण सामान्य स्थिति वाला वीरावत परिवार करीब २० लाख की सम्पत्ति का स्वामी बना।

अनेक अन्य संकटग्रस्त सज्जनों ने उनसे लाभ पाया था। उनके दत्तक पुत्र पं. ज्वालादत्त जी अभी उसी 'गोसाईं जी के बाग' में रहते हैं। वे न तो अधिक पढ़े-लिखे हैं, न ही विशेष पूजा-पाठ करते हैं, फिर भी अपने पिताजी के आशीर्वाद से वे स्वस्थ-सानन्द, शान्तिपूर्ण जीवन जी रहे है। गोस्वामी की गायत्री उपासना से उनका स्वयं का कल्याण तो हुआ ही, दूसरे कई व्यक्तियों ने भी लाभ प्राप्त किये, यह स्वाभाविक ही है। सर्वशक्तिमान गायत्री माता की शरण में जाने वाला कोई भी साधक गोसाई जी जैसों से प्रेरणा प्राप्त कर, श्रद्धापूर्वक साधना करके भौतिक एवं आध्यात्मिक सम्पदायें निश्चय ही प्राप्त कर सकता है।

गायत्री की तन्त्र-साधना

महात्मा शुभानन्द जी एक अच्छे बंगाली महात्मा थे। उनका स्वर्गवास ६५ वर्ष की उम्र में हुआ था। उन्हें अंग्रेजी, संस्कृत और बंगाली भाषाओं का उत्तम ज्ञान था। वेदों का भली-भाँति अध्ययन उन्होंने किया था।

वे जब वर्दमान में आते तो उनके दर्शन के लिए लोगों की बड़ी भीड़ एकत्र होती । शिक्षित वर्ग में भी उनका बहुत मान-सम्मान था।

उनकी चेष्टाओं से कभी-कभी विक्षिप्तता का सा आभास होता। बैठे-बैठे कभी सहसा चौंक उठते, कभी ऐसे देखने लगते मानों कोई उनकी कुछ चीज उठाकर भागा है और वे उसे खोज रहे हों। कभी विकल हो उठते जैसे कोई संकट उन पर टूटने वाला हो, उनकी मुखाकृति से व्यग्रता-व्याकुलता स्पष्ट टपकती।

सामान्य स्थिति में, उनसे ज्ञान वैराग्य के अध्ययनपूर्ण एवं अनुभवपूर्ण प्रवचन को लोग सुनते और आनन्दित होते, पर जब उन्हें पागलपन का दौरा आता तो देखने वालों को आश्चर्य भी होता, दु:ख भी। कुछ लोगों ने उनसे शांत स्थिति में पूछा कि स्वामी जी! आपके इस कष्ट का कारण क्या है? तब उन्होंने बतलाया कि-मैं विद्याध्ययन के उपरांत आर्य समाज का उपदेशक बन गया। बहुत स्थानों पर घूमता रहा, एक जगह एक महात्मा से भेंट हुई। उनमें बहुत-सी आध्यात्मिक विशेषतायें देखकर मैं उनके साथ रहने लगा।

उनका मुझ पर बहुत प्रभाव पड़ा। मैंने उन्हें गुरु मान लिया, उनसे शिक्षण प्राप्त किया और उपदेशक का कार्य छोड़कर फिर उन्हीं के बताये विधि-विधान के अनुसार एक निर्जन स्थान में रहकर गायत्री पुरश्चरण करने लगा।

गुरुजी ने योग और तन्त्र के निश्चित विधान से गायत्री पुरश्चरण करने को कहा। यह तीन वर्ष में पूरा होना था, ढाई वर्ष तो सहज ही बीत गये, अन्तिम ६ माहों में नित्य विलक्षण दृश्य दिखाई देने लगे। लोभप्रद और भयदायक अनेक प्रसंग सामने आने लगे। मुझे बता दिया था कि साधना के अन्त में परीक्षा होती है और विभिन्न प्रकार के लोभ, आकर्षण, भय एवं उपद्रव सामने आते रहते हैं अत: मैं ऐसे प्रसंगों को धैर्यपूर्वक टालता रहा, ताकि अपनी तपस्या ठीक से पूर्ण कर सकूँ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परन्तु एक दिन एक नई घटना घटी । रात्रि के लगभग ११॥ बजे थे। मैं कुटी के भीतर बैठा साधना कर रहा था, तभी द्वार पर एक स्त्री बार-बार दीखने लगी, जो टहल रही थी। मैं झोंपड़ी से बाहर निकला। चाँदनी रात थी। उसके प्रकाश में मैंने देखा सामने १८-२० वर्ष की अति सुन्दर युवती। मैंने पूछा-'तुम कौन हो और किस लिए आई हो?' तब उसने बताया कि वह पड़ौस के गाँव में रहती है, अपने भाई के पास जा रही थी तभी रास्ता भूल गई। जंगल में डर लगता है, झोंपड़ी देखकर यहाँ आ गई हूँ, रात भर के लिए आश्रय चाहती हूँ।

मेरी कुटी बीच जंगल में थी। जंगली जानवरों का भी डर था और चोरों का भी। अतः मैंने उसे आश्रय दे देना उचित समझा।

वह युवती भीतर आकर लेट गई। कुटी छोटी ही थी। मेरे आसन के पास ही वह थी। मैं जप कर रहा था, पर दृष्टि बार-बार उसके सुन्दर शरीर पर चली जाती थी। वह मेरी ओर तिरछी नजर से देखती, मन्द-मन्द मुस्करा रही थीं । मेरे भीतर वासना भड़क उठी और उस आवेश को मैं न रोक पाया किन्तु इसके उपरान्त वह स्त्री उठी और उसने मेरी पीठ पर जोर से एक लात लगा दी। इससे मैं चक्कर खाकर गिर पड़ा, वह तूफान की तरह झोंपड़ी को तोड़ती-फोड़ती जाने कहाँ चली गयी।

सारी रात मैं बेहोश पड़ा रहा। सुबह होश आने पर देखा-मैं ज्वरग्रस्त था और पीठ का भाग बुरी तरह छिल गया था। मेरे दो दाँत टूट गये थे और मुँह से खून बह रहा था।

गुरुजी को यह समाचार मिल गया, वे आये और मुझे उठाकर ले गये। उपचार किया, एक माह में मैं ठीक हो गया। प्राण तो बच गये परन्तु मस्तिष्क पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा, वह असंतुलित-सा बना रहा और उसी कारण मैं रह-रहकर चौंक पड़ता हूँ। मुझे खतरा बना रहता है, तभी से मैं सबको यही बताता हूँ कि सामान्य जन के लिये गायत्री की वेदोक्त दक्षिणमार्गी साधना ही उपयोगी है। तन्त्र विधि से उपासना में लाभ और चमत्कार तो बहुत मिलते हैं, पर यह पथ कंटकाकीर्ण हैं। उसकी भयंकरता से तो साहसी ही अविचलित रह सकते हैं। साधना क्रम के समय के भयंकर दृश्यों से बचना अपेक्षाकृत कुछ अधिक आसान है, परन्तु प्रलोभनों-आकर्षणों से बच पाना अत्यन्त कठिन है। फिर थोड़ी सी भूल होने पर इस पथ के पथिक को प्राण खोने पड़ सकते हैं। इसलिए तन्त्र की अपेक्षा योग मार्ग सरल एवं उत्तम है, इसमें भले ही धीरे-धीरे उन्नति होती है, पर जितनी भी प्रगति होती है, वह अधिक स्थायी होती है और इस मार्ग में डर तथा हानि नहीं है, लाभ ही लाभ है।

पूर्व जन्मों का ज्ञान

घटना लगभग १५० वर्ष पुरानी है। जयपुर के बूढ़ादेवल गाँव में दधीचि वंश के दाहिवाँ परिवार में एक बच्चे का जन्म हुआ। उसका नाम विष्णुदास ब्रह्मचारी था। वह आठ वर्ष की आयु से ही गायत्री उपासना में प्रवृत्त हुआ तथा आगे चलकर एक महान गायत्री उपासक के रूप में प्रख्यात हुआ।

विष्णुदास परिवार की स्थिति ठीक न होने को कारण चिन्तित रहा करते थे। भला माँ से क्या छिपा था। एक रात माँ गायत्री ने स्वप्न दिया कि "अमुक स्थान पर जमीन में धन गढ़ा है, अपनी आवश्यकतानुसार खोदकर निकाल लो।" ब्रह्मचारी जी माँ की आज्ञा मानकर निर्देशित स्थान को खोदने लगे। नित्य खोदकर धन निकालते तथा अपने आसन के नीचे रख देते थे। उनकी माँ भी साथ ही रहा करती थीं। उनकी माँ को शंका हुई कि पुत्र कुछ करता तो नहीं फिर धन कहाँ से आता है? इसलिए उन्होंने एक दिन आसन उठा कर देखा, ब्रह्मचारी जी को मालूम हुआ कि माँ गायत्री की कृपा से धन प्राप्त होने की बात माँ को मालूम हो गयी है और उन्होंने दूसरों को भी बता दिया है। उनको बड़ा दुःख हुआ, वे पुष्कर नामक स्थान पर जाकर गायत्री का विशेष जप करने में प्रवृत्त हो गये।

पुष्कर की एक झोंपड़ी में उन्होंने गायत्री पुरश्चरण शुरू किया। इस प्रकार २४-२४ लाख के तीन पुरश्चरण किये फिर भी उनको कोई विशेषता दृष्टिगोचर नहीं हुई। उन्होंने समझा कि उनका तप व्यर्थ गया और स्वयं दुःखी होने लगे। एक दिन उन्होंने देखा कि उनके पीछे तीन बड़ी-बड़ी चितायें जल रही हैं और आकाशवाणी हुई कि जन्म-जन्मान्तरों में तुमने तीन ब्रह्म हत्यायें की थीं जो इस तप के प्रभाव से निर्मूल हो गईं, आगे बढ़ो अब सिद्धि प्राप्त होगी।

अब नये उत्साह के साथ फिर गायत्री तप में लग गये, तप के तेज से सर्वत्र उनकी कीर्ति फैल गयी। बड़े-बड़े राजा उनकी झोंपड़ी की धूल सिर पर लगाने लगे। जयपुर और जोधपुर के महाराजा स्वयं उनकी सेवा में उपस्थित होने लगे। उदयपुर के महाराजा ने अपने यहाँ उनको बुलाने का भारी आग्रह किया। ब्रह्मचारी जी ने कहा-हमारे पुरश्चरणों की पूर्णाहुति,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्मभोज, दक्षिणा आदि से नहीं हुई है, इसलिए हम कहीं नहीं जा सकते हैं। महाराज ने स्वयं पूरा करने का वचन दिया और ब्रह्मचारी जी को जयपुर ले गये। उदयपुर में उनका शाही स्वागत किया गया और पुरश्चरण की पूर्णाहुति का सब कार्य आनन्द के साथ सम्पन्न किया गया। ब्रह्मचारी जी की आज्ञा से महाराज ने और भी अनेक धार्मिक कार्य सम्पन्न किये।

महाराज के कल्याण के लिए दोषों और पापों के निवारण के लिए ब्रह्मचारी ने 'काल पुरुष का दान' नामक एक उल्लेखनीय कृत्य कराया। सुवर्ण आदि आठ धातुओं, नव रत्नों से एक 'कालपुरुष' की मूर्ति बनवाई। उसकी शास्त्रोक्त विधि से भूतशुद्धि और प्राण-प्रतिष्ठा की। कहा जाता है कि जो कोई ब्राह्मण काल-पुरुष की मूर्ति का दान लेने आता था, उसकी मूर्ति स्पष्ट दान न लेने के लिए संकेत करती थी, परिणामस्वरूप उसे लेने के लिए कोई तैयार नहीं हुआ।

अन्त में जिसका वंश कई पीढ़ियों से गायत्री का परम उपासक था, ऐसा एक ब्राह्मण दान लेने के लिए तैयार हुआ। उसने जैसे ही मूर्ति दान लिया, उसका शरीर काला पड़ गया। उसने मूर्ति का सब धन और अपनी सम्पत्ति दान में दी तब उसके शरीर की कालिमा दूर हुई, किन्तु जिस हथेली पर दान जल लिया था वह काली हो गयी। तीन गायत्री पुरश्चरण करने के बाद हथेली की कालिमा भी चली गयी। महाराज के कल्याण के लिए इस ब्राह्मण को इतना कष्ट सहन करना पड़ा। उसके लिए महाराज सदा उसके प्रति कृतज्ञ बने रहे और उसके परिवार को सदा सहयोग करते रहे।

ब्रह्मचारी जी के तप के प्रभाव से असंख्यों का कल्याण हुआ। वे ब्रह्मनिष्ठ और गायत्री उपासक बनने के लिए प्रयत्नशील रहे हैं। उनके प्रभाव और उपदेश से कई ब्राह्मणों ने गायत्री की शरण ली और परम कल्याण का लाभ प्राप्त किया।

मृत्यु का पूर्व ज्ञान

विक्रम सम्वत् १९१४ में पं. भुदरमल जी के घर पर एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका नाम रखा-गया नन्दकिशोर! लड़का सुशील एवं आज्ञाकारी निकला, इसलिए घर पर उसका नाम हुकमीचन्द रखा गया। हुकमीचन्द जब ३० साल के हुए तब उनकी माता का देहान्त हो गया, पिता पहले ही स्वर्ग सिधार चुके थे।

व्यवसाय के क्रम में संयोगवश उन्हें कलकत्ता जाना पड़ा। वहाँ से वे १९५७ में वापस रतनगढ़ लौटे। शहर के बाहर एक धर्मशाला में ठहरकर गायत्री जप करने लगे। वहीं रहकर उन्होंने गायत्री के तीन पुरश्चरण किये, इसके उपरान्त वे काशी में जा बसे और अन्त तक काशी में रहे। उन्हें भी वचन सिद्धि प्राप्त हो गई थी, अनेक सेठ-साहूकार उनके भक्त बन गये थे। और उनके आशीष से अपनी आर्थिक समृद्धि बढ़ाते रहे। कई सामान्य स्तर के लोग उनके आशीर्वाद से सेठ और लक्षाधिपति हो गये।

उन्हें अपनी मृत्यु की जानकारी, गायत्री माँ की कृपा से एक माह पहले ही हो गई थी। उसी दिन से उन्होंने अन्नाहार छोड़ दिया था और केवल थोड़ा सा-दूध ही लेते थे। मृत्यु के लिए जब १८ दिन ही शेष रहे तब उन्होंने दूध लेना भी छोड़ दिया और जल पर रहने लगे। चार दिन शेष रहे जानकर उन्होंने जल का भी परित्याग कर दिया। निश्चित दिन को गायत्री जप करते-करते ब्राह्मणों द्वारा वेदपाठ के मध्य उन्होंने आषाढ़ शुक्ल पंचमी विक्रम सं. १९८२ में इस नश्वर शरीर से मुक्त होकर गायत्री लोक को प्राप्त किया।

उन्हीं के सुपुत्र श्री पं. वैद्यनाथ जोशी ने उनकी प्रेरणा से काशी में मारवाड़ी संस्कृत पाठशाला नामक एक छोटी-सी संस्था शुरू की थी। यह संस्था गरीब विद्यार्थियों को संस्कृत पढ़ाने के लिए शुरू की गई थी। यह निरन्तर वृद्धि करती गई । आज यह संस्था काशी में 'मारवाड़ी संस्कृत कालेज' के नाम से सुप्रसिद्ध है। श्री वैद्यनाथ जी के दो पुत्र, श्री शिवलालजी जो कि कथाकार शिरोमणि तथा पं. रामेश्वर जी जोशी कर्मकाण्ड शिरोमणि हैं। दोनों ही आजकल रतनगढ़ में ठाठ से रहते हैं और पुत्र-पौत्रों समेत सुखी-सम्पन्न हैं।

इच्छा मृत्यु

बूँदी राज्य में 'खडकड' नामक एक पुराना गाँव है जिसके समीप ही अरावली पर्वत है। इस पर्वत श्रृंखला के बीच से एक नदी बहती है। दृश्य मनोरम और प्रशांत है।

अब से लगभग ७० वर्ष पहले यहीं पर पं. कन्हैयालाल ब्रह्मचारी नामक महात्मा रहते थे। वे गायत्री के परम उपासक थे। अपने जीवन में उन्होंने कई पुरश्चरण किये तथा सिद्धियाँ प्राप्त कीं, उनके प्रभाव की ख्याति पूरे प्रदेश में थी।

अपनी मृत्यु के बारे में उन्होंने ६ माह पहले से ही जान लिया था, तब वे निकटवर्ती गाँव में जाकर अपने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परिचितों से मिलने लगे। उनसे विदा होते समय वे अत्यन्त प्रसन्न, गम्भीर वाणी में कहते-'भाइयो! अब मैं जा रहा हूँ, मेरा अन्तिम नमस्कार।'

निर्वाण के दिन वे चम्बल नदी के किनारे कोका शहर से ८ मील दूर 'केशोराय पाटन' नामक जगह पर जा पहुँचे। इस स्थान पर चम्बल का प्रवाह पूर्व दिशा की ओर है। इसी से उसकी पवित्रता विशेष मानी जाती है और वहाँ प्रति वर्ष कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता है जिसमें हजारों ग्रामीण सम्मिलित होते हैं।

वहीं पहुँचकर ब्रह्मचारी जी ने भूमि को गोबर से लीपा-पोता, वहीं उन्होंने स्नान आदि के उपरान्त संध्या-वंदन किया, फिर वे उस पोती हुई भूमि पर दर्भासन बिछाकर पद्मासन में बैठ गये। उपस्थित लोगों ने उनके आदेशानुसार एक नया श्वेत वस्त्र उनके सिर पर दूर से ही डाल दिया था। लोगों से उन्होने कह रखा था कि जब तक उनका शरीर स्वतः न गिरे, तब तक उसे स्पर्श न करें। तदुपरांत प्राणायाम द्वारा प्राण को सहस्रार में स्थापित कर वे समाधिस्थ हो गये। उत्सुक लोग चारों तरफ कुतूहलपूर्वक शान्ति से उन्हें ध्यानलीन, निस्पन्द देख रहे थे। एक प्रहर तक वे बिल्कुल अविचल रहे। तभी लोगों ने देखा कि उनके सिर में से एक तेज विस्फोटक ध्वनि निकली, जैसे तोप चली हो और तभी ब्रह्मचारी जी का शरीर भूमि पर लुढ़क गया। उसके उपरांत भक्तों-प्रशंसकों ने अन्तिम संस्कार किया व जगह-जगह पर ब्रह्मभोज हुए। उनका नाम और महत्व आज भी प्रान्त में चर्चा का विषय है।

बाबा खूँटी सिंह

कानपुर के श्री रूपलाल शर्मा की आत्मानुभूति है। कानपुर जिले में खांडेराव नामक एक प्रसिद्ध विद्वान बिठूर में पटकापुर गाँव के पास एक आश्रम में रहते थे। आश्रम के सामने एक विशाल वट वृक्ष था, जिसमें वर्षा और ग्रीष्म ऋतु में हजारों लोग आश्रय ले सकते थे। श्री खांडेराव ने वहाँ दीर्घकाल तक गायत्री अनुष्ठान की पूर्णाहुति पर ब्रह्मभोज किया, इसमें मैं भी सम्मिलित हुआ था।

ब्रह्मभोज भारी धूमधाम से चला, दिन भर पंगतें बैठती रहीं तो भी बहुत से लोग बाकी ही थे। रात में व्यवस्थापकों ने खबर दी कि घी समाप्त हो गया है और अभी ४ डिब्बे घी और चाहिए। खाँडेराव जी को चिन्ता हुई। फिर शांत चित्त से वे ध्यान में बैठ गये और व्यवस्थापकों से बोले-'जाओ! गंगा जी से गंगाजल भर लाओ, उसका घी की जगह प्रयोग करो। लोगों ने इसे परिहास माना, पर जब वे बार-बार आग्रह करने लगे तब ४ व्यक्ति गये और डिब्बों में गंगाजल भरकर ले आए। सबने गंगाजल में तली पूड़ियाँ खायीं। आज तक कभी भी मैंने कहीं वैसी स्वादिष्ट पूड़ी नहीं खायीं।

दूसरे दिन ४ डिब्बे घी ले जाकर गंगा जी में डाल दिया गया, क्योंकि खांडेराव जी ने कहा—'मैने ४ डिब्बे घी कल गंगा जी से उधार माँगे थे, जो लौटाने जरूरी हैं।'

१९ वीं शताब्दी की बात है। अलवर राज्य का एक सामान्य नागरिक वैराग्य लेकर मथुरा आया। यहाँ एक पहाड़ी पर जाकर गायत्री पुरश्चरण किया। एक करोड़ जप पूर्ण होने पर वे सिद्ध पुरुष बन गये । उन्हें गायत्री का साक्षात्कार हो गया। यह सिद्ध-भूमि आज भी गायत्री टेकरी के नाम से प्रसिद्ध है। वहाँ पंचमुखी कमलासना गायत्री-मूर्ति स्थापित है।

इन महापुरुष को लोग खूँटी सिद्ध महाराज के नाम से जानते हैं। वे आजीवन मौन रहे। मूक आशीर्वाद से उन्होंने अनेक मृत व्यक्तियों को जीवित किया, बन्ध्याओं को सन्तान दी, निर्धनों को धन दिया। दो बार ब्रह्मभोज कराया, जिसके धन का प्रबन्ध कहाँ से हुआ? यह सभी के लिए विस्मय की बात रही। उनकी सिद्धियों के बारे में अनेक कथायें प्रसिद्ध हैं। अलवर के महाराज उनकी प्रशंसा सुनकर मथुरा आये थे। दूर-दूर से लोग उनके दर्शन को आते थे। उनका तेज अपूर्व था, वे कुछ भी बोलते नहीं फिर भी उनके पास जाने वालों की शंकाओं का समाधान हो जाता। उनकी अन्न-जल की व्यवस्था स्वतः ही हो जाती । कभी भी किसी से उन्हें उस हेतु कहते नहीं देखा-सुना गया। अपनी गुफा में वे प्रवेश करने के बाद सप्ताहों वहीं रहते। प्रेतबाधा से पीड़ित कितनी ही स्त्री-पुरुषों के प्राणों की उन्होंने रक्षा की थी।

गायत्री उपासना के सत्परिणाम सुनिश्चित हैं

भौतिक और आत्मिक क्षेत्र की प्रगति में गायत्री उपासना कितनी प्रभावशील होती है, यह उसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। वस्तुतः हमारी जानकारी में ऐसे असंख्य उदाहरण हैं जब गायत्री उपासकों को ऐसी परिस्थितियों में लाभ मिला जिनकी रत्ती भर भी आशा नहीं थी। यह एक नहीं अनेक व्यक्तियों के जीवन में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

घटित हुआ उससे यह विश्वास हो गया है कि गायत्री उपासना के चमत्कारिक पक्ष को भी झुठलाया नहीं जाना चाहिए। यों हमारा सारा प्रतिपादन बौद्धिक, तार्किक तथा वैज्ञानिक रहता है तथा श्रद्धा की शक्ति-सामर्थ्य प्रत्यक्ष देवता की शक्ति सामर्थ्य के समान होती है। अनायास मिलने वाले, चमत्कारिक लाभ उसके प्रतिफल होते हैं। किसी विशेष आपत्ति का निवारण करने एवं किसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए जो गायत्री साधना की जाती है, उसका परिणाम बड़ा ही आशाजनक होता है। देखा गया है कि जहाँ चारों ओर निराशा, असफलता, आशंका और भय-अन्धकार ही छाया हुआ था, वहाँ वेदमाता की कृपा से दैवी प्रकाश उत्पन्न हुआ और निराशा आशा में परिणत हो गई, बड़े कष्टसाध्य कार्य तिनके की तरह सुगम हो गये। ऐसे अनेक अवसर अपनी आँखों के सामने देखने के कारण हमारा यह अटूट विश्वास हो गया है कि कभी किसी की गायत्री साधना निष्फल नहीं जाती।

गायत्री साधना आत्म-बल बढ़ाने का अचूक आध्यात्मिक व्यायाम है। किसी को कुश्ती में पछाड़ने एवं दंगल में जीतने, इनाम पाने के लिए कितने लोग पहलवानी और व्यायाम का अभ्यास करते हैं। यदि कदाचित कोई अभ्यासी किसी कुश्ती को हार जाये तो भी ऐसा नहीं समझना चाहिए कि उसका प्रयत्न निष्फल गया । इसी बहाने उसका शरीर तो मजबूत हो गया। वह जीवन भर अनेक प्रकार से अनेक अवसरों पर बड़े-बड़े लाभ अर्जित करता रहेगा। निरोगता, सौन्दर्य, दीर्घजीवन, कठोर परिश्रम करने की क्षमता, दाम्पत्य सुख-सुसन्तति, अधिक कामना, शत्रु से निर्भयता आदि कितने ही लाभ ऐसे हैं जो कुश्ती पछाड़ने से कम महत्वपूर्ण नहीं। साधना से यदि कोई विशेष प्रयोजन प्रारब्धवश पूरा न हो तो भी इतना निश्चय है कि किसी न किसी प्रकार साधना की अपेक्षा कई गुना लाभ अवश्य मिलकर रहेगा।

आत्मा स्वयं अनेक ऋद्धि-सिद्धियों का केन्द्र है। जो शक्तियाँ परमात्मा में हैं वे सभी उनके अमर युवराज आत्मा में हैं। समस्त ऋद्धि-सिद्धियों का केन्द्र आत्मा में है, परन्तु जिस प्रकार राख से ढका हुआ अंगार मन्द हो जाता है वैसे ही आंतरिक मलीनताओं के कारण आत्मतेज कुण्ठित हो जाता है। गायत्री साधना से मलीनता का पर्दा हटता है और राख हटा देने से जैसे अंगार अपने प्रज्ज्वलित स्वरूप में दिखाई पड़ने लगता है, वैसे ही साधक की आत्मा भी अपने ऋद्धि-सिद्धि समन्वित ब्रह्मतेज के साथ प्रकट होती है। योगियों को जो लाभ दीर्घकाल तक कष्टसाध्य तपस्यायें करने से प्राप्त होता है, वही लाभ गायत्री साधकों को स्वल्प प्रयास से प्राप्त हो जाता है।

गायत्री उपासक सोम शर्मा

गायत्री जप के विषय में अनेक आख्यान प्रचलित हैं, उनमें से सोम शर्मा नाम के ब्राह्मण का एक रोचक आख्यान 'श्री गायत्र्यार्थ प्रकाश' से यहाँ उद्घृत करते हैं—

सोम शर्मा नाम के एक ब्राह्मण गायत्री का परम भक्त हो गया है। उसने अपने जीवन में गायत्री के (निष्काम) कई पुरश्चरण किये थे। उसकी स्त्री बड़ी साध्वी-सुशील-सुरूपा और पतिपरायण और चार पुत्र थे। उनमें तीन पुत्र तो बड़े विद्वान, बुद्धिमान, धर्मात्मा थे। परन्तु दैवयोग से सबसे छोटा चौथा पुत्र चोर निकला। पिता-माता और भाइयों ने बहुत कुछ समझाया, पर उसने किसी का कहना नहीं माना। अन्त में सोम शर्मा की मृत्यु के समय जब सारा कुटुम्ब एकत्र था, उसने अपने छोटे पुत्र से कहा कि इस समय केवल तुम्हारी चिन्ता से मैं दुःखी हूँ यदि तुम मेरी एक बात मान लोगे, तो मेरी मृत्यु बहुत सुख से होगी।

समय का विचार करके छोटे पुत्र ने पिता के कान में जाकर कहा कि चोरी छोड़ने के सिवाय और कुछ थोड़ी देर का काम बताओगे वह मैं मान लूँगा।

पिता ने कहा कि मैं चोरी छोड़ने को नहीं कहूँगा। तुम्हारी इच्छा हो सो करते रहना, परन्तु ठीक सूर्योदय के समय स्नान करके एक माला गायत्री की जप लिया करना।

लड़के ने सोचा-एक माला जपने के लिए अधिक से अधिक दस मिनट लगेंगे। उसने स्वीकार कर लिया और उसके पिता की सुख से मृत्यु हो गई।

छोटा लड़का भी यथासमय अपने काम में (चोरी करने में) लग गया। परन्तु जहाँ कहीं जैसे ही सूर्योदय हो कि तत्काल स्नान करके माला जपने का नियम दृढ़ता से पालन करता रहा।

एक बार उसके मन में स्फुरणा हुई नित्य छोटी-छोटी चोरी करने से एक बड़ी चोरी करना अच्छा है। उससे पकड़े जाने पर तो प्राण दण्ड होगा, परन्तु दैवयोग से बच गये, तो सारे जीवन की चिन्ता दूर हो जायेगी। यह सोच उसने अपनी कला से राजमहल में प्रवेश कर रानियों के जेवर का डिब्बा चोरी करके अपने घर का रास्ता लिया। जैसे ही वह शहर के बाहर हुआ कि सूर्योदय का समय हो गया । वहीं पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक जलाशय था। उसने कपड़े उतार उनमें जेबर का डिब्बा लपेट कर तालाब के किनारे रख दिया और आप स्नान करके गायत्री का जप करने लगा।

उतने ही में चोर को पकड़ने के लिए फौज के सिपाही चारों तरफ दौड़ पड़े। कुछ लोग इस तरफ भी आ पहुँचे तो क्या देखते है कि एक दिव्य तेज युक्त सोलह वर्ष की लड़की उन कपड़ों के पास बैठी है और ब्राह्मण स्नान करके जप कर रहा है। यह देखकर उनके अफसर ने कहा-अरे यह ब्राह्मण तो निर्भय होकर जप कर रहा है और यह बाई उसके कपड़ों की रखवाली कर रही है। दूसरी तरफ चलो, चोर कहीं निकल न जाय। ऐसा कह कर वे लोग दूसरी तरफ चल दिये। उधर ब्राह्मण माला पूरी करके अपने कपड़ों के पास उस लड़की को बैठी देखकर कहने लगा—बाई ! तुम कौन हो और मेरे कपड़ों के पास क्यों बैठी हो ?

दूसरी तरफ मुँह फेरे हुए ही उस देवी ने उत्तर दिया कि तेरा पिता सोम शर्मा मेरा परम भक्त था। तू उसका पुत्र है। आज तेरे प्राणों पर संकट देख मुझे आना पड़ा।

ब्राह्मण समझ गया कि भगवती गायत्री देवी है। उसने साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करके कहा—माँ! इतनी दया मुझ पर है फिर मुझे दर्शन क्यों नहीं होते।

भगवती ने कहा—यह सब तेरे पिता के पुण्य का प्रताप था कि मुझे आज तेरे प्राणों की रक्षा के लिए यह सब करना पड़ा है और तू ब्राह्मण होकर नीच कर्म करता है। ऐसे लोगों को मेरा दर्शन होने लगे, तो वेद-शास्त्रों की मर्यादा और मेरा महत्व ही क्या रहेगा।

ब्राह्मण ने पुनः-पुनः साष्टांग प्रणाम किया और क्षमा याचना की, तो भगवती ने कहा—मैं तुमसे प्रसन्न हूँ कि तूने एक माला जप करने को पिता की आज्ञा का पालन किया है। अब इस कर्म को छोड़कर तू जप ही को अपने जीवन का लक्ष्य बना ले, तो सर्वथा सुखी होगा और उचित समय पर दर्शन होंगे। इतना कह कर भगवती अन्तर्ध्यान हो गईं।

इस आख्यायिका से हमें यह उपदेश मिलता है कि (१) नित्य बिना नागा, (२) समय पर, (३)श्रद्धा और सत्कारपूर्वक, (४) दीर्घ काल तक (संसारी धन्धों में लगे रह कर भी) जप करते रहने से महान भय से रक्षा होती है और जीवन सफल हो जाता है।

सन्त चरणदास और उनकी गायत्री सिद्धि

नादिर शाह ने दिल्ली पर आक्रमण कर दिया। दिल्ली के तत्कालीन शासक मुहम्मदशाह ने मुँह-तोड़ जबाव दिया। फलस्वरूप नादिरशाह को पीछे हटना पड़ा । उसने कुछ दिन तक मेरठ में पड़ाव डाला वहीं से वह ईरान वापस लौट गया। आजकल मेरठ का नादिरशाह का यही दरबार उ. प्र. खाद्य निगम का सम्भागीय कार्यालय है।

नादिरशाह ने दिल्ली आक्रमण की योजना को इतना गुप्त रखा था कि उसके प्रधान सभासदों तक को उसके मन्तव्य का भाव नहीं हो पाया था. उसे कल्पना भी न थी कि मुहम्मदशाह युद्ध के लिये इतना तैयार मिलेगा मानों वह स्वयं ही आक्रमण करने का इच्छुक रहा हो। नादिरशाह इसी आश्चर्य में डूबा था तभी उसे दिल्ली के मुहम्मदशाह का एक पत्र मिला जिसमें उसने लिखा था मुझे आक्रमण की जानकारी ६ माह पूर्व ही एक महान् संत से ज्ञात हो गई थी। इस बात की पुष्टि में उसने ६ माह पूर्व मिला एक पत्र भी नादिरशाह को पत्र के साथ संलग्न कर भेजा। पत्र की तिथि से ज्ञात हुआ कि उन दिनों नादिरशाह के मन में दिल्ली आक्रमण का विचार तक नहीं आया था फिर यह पूर्व सूचना कैसे मुहम्मदशाह तक पहुँच गई।

यह पत्र लिखने वाले संत चरणदास एक महान् गायत्री उपासक थे। उनकी स्मृति में आज भी उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के ग्राम शुक्रताल में आज भी गायत्री जयन्ती पर विशाल मेला भरता है।

श्री चरणदास जी का जन्म राजस्थान के अलवर जिले में ग्राम डेहरा में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। पिता का नाम मुरलीधर तथा माता का नाम कुंजो बाई था। साधारण शिक्षा के विपरीत उनकी अभिरुचि विद्याध्ययन और स्वाध्याय में बहुत अधिक थी। उन्होंने गायत्री उपासना की महत्ता पर जितना अधिक पढ़ा भगवती गायत्री के चरणों में उनकी उतनी ही अनुरक्ति बढ़ती चली गई। उनका यज्ञोपवीत संस्कार हो चुका था, गायत्री मन्त्र की दीक्षा भी ग्रहण कर चुके थे किन्तु किसी ने भी उन्हें यह नहीं बताया था कि इस संस्कार में सन्निहित शिक्षायें और प्रेरणायें क्या हैं। एक दिन रात में उन्होंने स्वप्न में शुकदेव के दर्शन किये, उन्हीं से श्री चरणदास को स्वप्न में ही गायत्री उपासना की प्रेरणा मिली। तब से उन्होंने नियमित गायत्री उपासना प्रारम्भ की।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

२.३३ गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार

प्रारम्भ में वे बहुत समय तक नर्मदा के तट पर गायत्री के अनुष्ठान और पुरश्चरण सम्पन्न करते रहे पीछे वे भ्रमण पर निकल पड़े, मुजफ्फर नगर का शुकेताल स्थान उन्हें बहुत ही मनोरम लगा। यहीं पर उन्होंने अनेक चान्द्रायण व्रत तथा गायत्री उपासना के साथ आष्टांग योग साधना का अभ्यास किया। उसी के फलस्वरूप उन्हें गायत्री जयन्ती के पावन पर्व पर भगवती गायत्री का साक्षात्कार हुआ।

आत्म बोध के बाद उन्हें एक दिन दिल्ली में नादिरशाह के आक्रमण का पूर्वाभास हुआ और लगा कि यदि इस युद्ध में नादिरशाह विजयी हो गया तो सारा देश उसकी बर्बरता का शिकार हो जायेगा। सन्त की इसी करुणा ने मुहम्मदशाह को पत्र लिखने को विवश किया । कौन जाने यदि उनका तप साथ न देता 'परिस्थितियाँ जाने' क्या होतीं ?

सिद्धि का लक्ष्य चमत्कार नहीं आत्मोत्कर्ष और लोक मंगल का व्रत है। श्री चरणदास ने गायत्री उपासना से अनेक सिद्धियाँ पाईं किन्तु वे उनके जाल में फँसे नहीं। स्वयं मुहम्मदशाह ने उन्हें उपकार के फलस्वरूप अनेक गाँवों की सम्पन्न जागीर देनी चाही किन्तु उन्होंने उसे अस्वीकारते हुए उस सम्पत्ति को शिक्षा संस्थान खोलने और समाज कल्याण में लगाने की ही प्रेरणा मुहम्मदशाह को दी। नादिरशाह ने उन्हें अपना गुरु वरण किया और उन्हीं का आदेश पाकर अपने देश वापस लौट गया।

बाबा राम भरोसे की गायत्री साधना

महाराष्ट्र के अकोला जिले में बाबा रामभरोसे नाम के एक सन्त हुये हैं। महाराष्ट्र में गायत्री उपासना के सर्वाधिक प्रचार-प्रसार का श्रेय उन्हें ही दिया जाता है।

बाबा रामभरोसे जन्म से मुसलमान थे। अपनी धार्मिक मान्यता के अनुरूप उन्हें मूर्तिपूजा में कोई विश्वास नहीं था। एक दिन वे अपने किसी सम्बन्धी के यहाँ जा रहे थे। मार्ग भटक जाने से उन्हें रात जंगल में बने एक शिवालय में बितानी पड़ी।

रात में उन्हें विलक्षण स्वप्न दिखाई दिया। उन्हें एक साधु वेषधारी पुरुष ने दर्शन देकर कहा—तुम पूर्व जन्म में हिन्दू थे। माँस खा लेने के कारण इस जन्म में मुसलमान हुए। जिस गाँव जा रहे हो, वही तुम्हारे पूर्व जन्म का गाँव है। अमुक तुम्हारे माता-पिता और सम्बन्धी थे। जीवितों के नाम भी स्वप्न में ज्ञात हुए। साधु ने यह भी कहा कि तुम गायत्री उपासना करो उसी से उद्धार होगा।

बाबा कुतुबशाह को इस स्वप्न से बड़ा असमंजस हुआ। अगले दिन रिश्तेदारी जानने और पता लगाने पर स्वप्न की सभी बातें सच मिलीं। उससे उनकी जिज्ञासा विश्वास में बदल गई। उन्होंने गायत्री मन्त्र की विधिवत् दीक्षा ली और दस वर्ष तक अनवरत साधना पुरश्चरण सम्पन्न कर माँ के दर्शन प्राप्त किये। बाबा रामभरोसे ने सैकड़ों विधर्मियों को भी गायत्री उपासना की प्रेरणा दी।

पानी वाले महाराज की दिव्य दृष्टि

गायत्री महामन्त्र की सामान्य उपासना से बौद्धिक क्षमताओं का विकास होता है तथा साधक उसका लाभ उठाते रहते हैं। बुद्धि परिमार्जित एवं परिष्कृत होकर सांसारिक सफलताओं के रूप में दृष्टिगोचर होती है । इस महामन्त्र की विशेष साधनाओं द्वारा धिय: तत्व को इतना सूक्ष्मतम बनाया जा सकता है जिसे समझ एवं देख सकने से सामान्य दृष्टि एवं बुद्धि समर्थ नहीं होती है। इस स्थिति में पहुँचा हुआ साधक अतीन्द्रिय क्षमताओं से सम्पन्न बन जाता है।

ऐसे ही अतीन्द्रिय शक्तियों से सम्पन्न साधकों में श्री जीवराम व्यास का नाम सारे महाराष्ट्र तथा दक्षिण भारत में विख्यात है जिन्हें जन सामान्य 'पानी वाले महाराज' के नाम से जानते हैं। महाराष्ट्र के जलगाँव जिले में एक सामान्य परिवार में उनका पालन-पोषण हुआ। धार्मिक पुस्तकों के माध्यम से गायत्री महामंत्र की उपासना की उन्हें प्रेरणा मिली। साधना में उनकी श्रद्धा एवं निष्ठा दृढ़ होती गयी । फलस्वरूप उन्होंने गायत्री महामंत्र का अनुष्ठान करना आरम्भ किया। साधना काल में उन्हें अपने हृदय में दिव्य प्रकाश का दर्शन हुआ। शरीर की प्रत्येक कोशिका उस दिव्य प्रकाश से आलोकित होने लगी। स्वयं की सत्ता उस परम प्रकाश में एकात्म हो गयी। उन्हें आकाश एवं पृथ्वी के भीतर अदृश्य वस्तुओं का भी ज्ञान अपनी सूक्ष्म दृष्टि से होने लगा। अपने सम्पर्क क्षेत्र के व्यक्तियों से सम्बन्धित उन बातों का रहस्योद्घाटन करने लगे जिनसे वे लोग सर्वथा अनभिज्ञ थे। इसका परिणाम यह हुआ कि उनकी अतीन्द्रिय क्षमता का उपयोग लोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के लिए करने लगे।

उपलब्ध विवरण के अनुसार एक रात्रि भगवती गायत्री ने जीवराम व्यास को स्वप्न में दर्शन दिया तथा यह निर्देश दिया कि अपनी सिद्धि का उपयोग परमार्थ प्रयोजनों में करो । स्वार्थ कामनाओं, तृष्णाओं के पूरा

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करने में इसका अपव्यय न करो। उन्हें अपनी भूल ज्ञात हुई। तब से उन्होंने अपनी क्षमता का सदुपयोग भूगर्भ में छिपे पानी के स्रोत को पता लगाने में किया। कई स्थानों पर जहाँ जनता पानी के अभाव से त्रस्त थी पानी का स्थान बताकर उन्हें अनुगृहीत किया।

'पानी वाले महाराज' अपनी सूक्ष्म दृष्टि से एक मील धरती की गहराई में निहित वस्तुओं का पता लगा लेते थे। दिल्ली के निकट जनता पानी की समस्या से त्रस्त थी, उन्होंने एक स्थान बताया, जहाँ लगाये गये पम्प से अब भी सैकड़ों गैलन पानी प्रतिदिन निकलता रहता है।

विज्ञान वेत्ताओं को तो कई बार उनकी इस विलक्षण शक्ति के समक्ष नतमस्तक होना पड़ा। फरीदाबाद में वैज्ञानिकों ने यह घोषणा की थी कि वहाँ पानी निकलने की सम्भावना नहीं है। उनकी यह चुनौती पानी वाले योगी ने स्वीकार कर अपनी अतीन्द्रिय क्षमता द्वारा ऐसे आठ स्थानों का पता बताया जहाँ नलदार कुएँ अब ३५,००० गैलन पानी दे रहे हैं। भूगर्भ वैज्ञानिकों द्वारा इस आश्चर्यजनक क्षमता के विषय में पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि मनुष्य के मस्तिष्क की दोनों भवों के मध्य आज्ञा चक्र अद्भुत शक्तियों का केन्द्र है। आज्ञा चक्र से निकलने वाली अदृश्य सूक्ष्म किरणें भूगर्भ में छिपे तत्वों के देख सकने में सक्षम हैं। साधना द्वारा यदि आज्ञा चक्र को जाग्रत किया जा सके तो मनुष्य अदभुत शक्तियों का भण्डार बन सकता है जिन्हें सामान्यतः सिद्धि एवं चमत्कार कहते हैं।

पानी वाले महाराज ने अपनी दिव्य दृष्टि से ऐसे अनेकों स्थानों पर जल का स्रोत बताकर जनसामान्य को लाभान्वित किया। सौराष्ट्र की जनता इनके प्रति सदा आभारी रहेगी। जहाँ इन्होंने सूखे फील के मै दान में भी पानी का स्रोत ढूँढ़ निकाला। उनके पानी देखने का ढंग अनोखा था। किसी क्षेत्र विशेष के मानचित्र पर हाथ फेरते थे, उस स्थान पर जहाँ पानी की सम्भावना होती थी पिन से छेद कर देते थे। तत्कालीन प्रधान मंत्री पं. नेहरू एवं श्री के. एम. मुन्शी ने अपने वक्तव्यों में 'पानी वाले महाराज' को अद्भुत शक्ति सम्पन्न कहा था।

स्वामी दयानन्द और गायत्री उपासना

भारत के धार्मिक और आध्यात्मिक गगन में जितने भी नक्षत्र हुए हैं उन्होंने अपनी दीप्ति गायत्री साधना के अवलंबन द्वारा ही अर्जित की है। अनादिकाल से भारतीय ऋषि-महर्षियों ने गायत्री साधना द्वारा ही सिद्धियों के वह क्षितिज छुए जहाँ से विश्व वसुधा को आलोकित किया जा सके। गायत्री साधना से ऋतम्भरा प्रज्ञा-ब्रह्मतेज की प्राप्ति होती है, यह आज भी उतना ही सत्य है जितना कि प्राचीन काल में।

अभी १०० वर्ष भी पूरे नहीं हुए, महर्षि दयानन्द इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं जिन्होंने इस ऋतम्भरा प्रज्ञा और ब्रह्मतेज के बल पर पूरे देश के वातावरण में एक हलचल उत्पन्न कर दी और एक नई क्रांति का सूत्रपात किया। महर्षि दयानन्द को गायत्री के प्रति निष्ठा उनके गुरु प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द से प्राप्त हुई थी। वे स्वयं गायत्री के अनन्य उपासक थे। स्वामी विरजानन्द ने ऋषिकेश में गायत्री मन्त्र द्वारा उपासना की थी । इस सम्बन्ध में स्वामी वेदानन्द ने उनके जीवन चरित्र के विषय में लिखा है—

"आज से डेढ़ सौ वर्ष पूर्व ऋषिकेश में न कोई अन्न क्षेत्र था और न ही कोई धर्मशाला। यहाँ झाड़ियों में महात्मा लोग पर्ण-कुटिया बनाकर तपस्या में रत रहते थे। पेट की ज्वाला शान्त करने के लिए जंगली बेर या अन्य कोई जंगली खाद्य पदार्थ खा लेते थे । तपस्वी लोग तो पूरा पेट कभी भरते ही न थे। उस समस्त ऋषिकेष में दो प्रकार के प्राणी साम्राज्य करते थे। एक तप एवं स्वाध्याय में निरत महात्मा, दूसरे हिंसक व्याघ्रादि, ऐसे ऋषिकेश में १५ वर्ष की आयु में विरजानन्द पहुँचे। मानव जीवन के चरम लक्ष्य की सिद्धि की अनुपम धारणा के साथ विरजानन्द ऋषिकेश में आकर कुटी बनाकर रहने लगे । कई बार जंगली पशु उनकी कुटिया तोड़ जाते । रात को भी अनेक बार वे उनकी कुटिया खटखटाते किन्तु विरजानन्द सदा अभय भाव से अपने मनोरथ की सिद्धि के प्रयत्न में निमग्न रहते। प्रातः सायं जब भी देखो वे गायत्री जप में लगे रहते थे। प्रातःकाल कण्ठ तक गंगा जल में खड़े होकर साधना करते रहते। विरजानन्द की इस तपश्चर्या से मालूम पड़ता है कि उनके उपनयन संस्कार में उनके पिता अथवा आचार्य ने उन्हें गायत्री मन्त्र की उपासना की विधि और महत्ता अच्छी तरह बतायी होगी। इसी से उनका यह सुनिश्चित विश्वास दृढ़ हुआ कि गायत्री जप के अनुष्ठान से सभी प्रकार के मनोरथ पूर्ण होते हैं। "

स्वामी विरजानन्द के शिष्य महर्षि दयानन्द ने गायत्री उपासना की प्रेरणा अपने गुरु से ही प्राप्त की थी और उसकी-साधना कर इतना आत्मबल-ब्रह्मवर्चस् अर्जित किया कि उस आधार पर सारे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

भारतवर्ष में एक धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक क्रांति का वातावरण बनाया। गायत्री उपासना के सम्बन्ध में स्वामी दयानन्द ने कहा है—"गायत्री महामन्त्र के अर्थ पर विचार करना चाहिए। इस मन्त्र द्वारा परमात्मा के तेज का ध्यान करने से बुद्धि की मलीनता दूर हो जाती है और धर्माचरण में श्रद्धा तथा निष्ठा उत्पन्न होती है, दूसरे किसी मन्त्र में ऐसी गहराई और सच्चाई नहीं है।"

उपासना के लिए उपयुक्त वातावरण का अपना महत्व है। स्थान कैसा हो! इसके विषय में महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में कहते हैं—"जब उपासना करना चाहें, तब एकान्त, शुद्ध प्रदेश में जाकर, आसन लगा प्राणायाम कर, बाहरी बातों से इन्द्रियों को रोक, मन को नाभि में, चित्त में कण्ठ में, आँखों में, शिखा में या पीठ के बीच की रीढ़ की हड्डी में किसी स्थान पर टिकाकर आत्मा और परमात्मा को स्मरणकर अपने आपको वश में करें।"

इस प्रकार से की गई उपासना के प्रतिफल के विषय में वे कहते हैं कि—

"जो इन साधनाओं को करता है, तब उसकी आत्मा और अन्तःकरण पवित्र होकर सत्य से पूर्ण हो जाती है। प्रतिदिन अपने ज्ञान और विज्ञान को बढ़ाकर वह मुक्ति तक पहुँच जाता है।"

स्वामी दयानन्द गायत्री के प्रति अनन्य श्रद्धा रखते थे। उनके गुरु श्री विरजानंद गायत्री के अनन्य भक्त थे और नियमित रूप से गायत्री का जप करते थे। 'श्रीमद्दयानंद प्रकाश' श्री स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्र की प्रामाणिक पुस्तक है। उसमें से कुछ ऐसे उद्धरण नीचे दिये जाते हैं जिनसे श्रीस्वामीजी के गायत्री प्रेम का पता चल सकता है।

"ग्वालियर महाराज को स्वामी जी ने सलाह दी की भागवत सप्ताह की बजाय गायत्री पुरश्चण किया जाय"।

"मुलतान में उपदेश के समय स्वामी जी ने गायत्री मंत्र का उच्चारण किया और कहा कि यह मन्त्र सबसे श्रेष्ठ है। चारों वेदों का यही मूल गुरु मन्त्र है। सब ऋषि मुनि इसी का जप किया करते थे।"

"फर्रुखाबाद के पण्डितों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए स्वामी जी ने कहा—गायत्री जप जो वेदोक्त रीति से करें तो बड़ा अच्छा फल होता है।"

"रियासत जयपुर के इलाके के हीरालाल, कायस्थ से माँस मदिरा छुड़ाकर उसे गायत्री याद कराई। उन दिनों स्वामी जी उपासना की विधि लोगों को संध्या और गायत्री बताते थे।"

"स्वामीजी की आज्ञानुसार अनूप शहर, दानपुर, कर्णवास, अहमदगढ़, रामघाट, जहाँगीराबाद से अनुमानतः चालीस के लगभग विद्वान् ब्राह्मण गायत्री का जप करने के लिए बुलाये गए और जप अर्ध शुक्ल पक्ष में पूरा हुआ। तत्पश्चात् स्वामी जी की कुटिया पर हवनकुण्ड बनाया गया, कर्मकाण्डी वेदपाठी ब्राह्मणों को ? होता आदि बनाकर यज्ञ हुआ।"

"धोड़लसिंह आदि के यज्ञोपवीत कराये, हवन एक दिन हुआ परन्तु गायत्री का जप दूसरे दिन हुआ"

गायत्री साधना से दूसरा जन्म

नर्मदा तट पर बसे एक गाँव मेखलमती में एक धर्म सभा आयोजित की गई। उसी दिन यहाँ मन्त्र दीक्षा संस्कार सम्पन्न हुए थे। बहुत बड़ी संख्या में ग्रामवासियों ने पशु-बलि न करने का संकल्प लिया था और काली के स्थान पर गायत्री उपासना का व्रत लिया था। धर्म सभा का आयोजन उन्हीं के उद्बोधन के लिये हुआ था।

बात उस समय की है जब गोंडवाना प्रदेश में व्यापक रूप से पशुहिंसा का प्रचलन था। काली को प्रसन्न करने के नाम पर निरीह जीवों की हत्या का क्रम इस तेजी से चलता था कि नवरात्रियों पर कई बार एक-एक लाख पशुओं तक को देवबलि के नाम पर वध कर दिया जाता था। इस समय वहाँ चतुर्भुज नामक एक महापुरुष का अवतरण हुआ। वे ऐसी निर्दय जीव हिंसा देखकर द्रवित हो गये। उन्होंने लोगों को बहुतेरा समझाने का प्रयत्न किया किन्तु समर्थ को मानने और प्रभावशील व्यक्तित्व का आदेश स्वीकार की अनादि काल से चली आ रही परम्परा झूठी कैसे होती। प्रभाव हीन व्यक्तित्व और प्राण पूर्ण वाणी ही जन दिशा मोड़ती है उसके अभाव में अत्यन्त करुणार्द्र चतुर्भुज का भी कोई प्रभाव पड़ा नहीं।

तब उन्होंने विधिवत गायत्री उपासना प्रारम्भ की। गायत्री उपासना से उन्हें न केवल आत्म बोध हुआ अपितु वह शक्ति भी मिली जिससे दूसरों को प्रभावित कर पाते। उनकी वाणी में वह शक्ति उभरी जिससे सुनने वाले ठगे से रह जाते, गायत्री उपासना से विमल हुई बुद्धि में विद्वता की तीव्र धार चढ़ती चली गई जिससे आध्यात्म विद्या के गूढ़ रहस्य एक के बाद एक परतों की तरह खुलते चले गये। प्रतिफल यह हुआ कि बड़ी संख्या में लोग उनकी दीक्षा ग्रहण करने लगे। उन्होंने लोगों को बताया कि काली गायत्री की ही एक

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शक्ति है जिसका अर्थ पशु प्रवृत्तियों का उन्मूलन होता है पशु वेध नहीं। फलतः गोंडवाना प्रदेश का यह कलंक छूटा और लोग गायत्री की सात्विक दक्षिण मार्गी उपासना में प्रवृत्त हो सके। श्री चतुर्भुज ने सर्वत्र घूम-घूमकर गायत्री उपासना की दीक्षा दी और इस अन्धकार युग में भी इस महाविद्या को वनेष्ट-विलुप्त होने से बचाये रखा।

जिस समय यह सभा चल रही थी श्रोताओं में चोरी के माल सहित एक चोर भी उत्कंठा वश आ बैठा। उसी सभा में वह व्यक्ति भी उपस्थित था जिसकी चोरी हुई थी, सन्त ने कहा गायत्री दीक्षा का अर्थ है दूसरा जन्म अर्थात् पाप पूर्ण अन्धकार मय जीवन का अन्त और पवित्र प्रकाश पूर्ण जीवन का प्रारम्भ, यद्यपि वह चोर को पहचान नहीं सके तथापि चोर के मन में सन्त की वाणी का ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसने अपने कृत्य का वहीं प्रायश्चित करने का निश्चय कर लिया। जैसे ही सभा विसर्जित हुई उसने चोरी का सारा सामान उनके चरणों पर रखते हुए स्वीकार किया, उसने अभी तक अनेक अपराध किये हैं। उसकी सजा भुगतने के लिए तैयार है।

चतुर्भुज ने चोरी का माल जिसका था उसे लौटा दिया और चोर से प्रायश्चित स्वरूप कृच्छ चान्द्रायण करा कर उसे शुद्ध कर लिया।

गोंडवाना नरेश सारी शक्ति लगाकर हार चुके थे और उस दस्यु को पकड़ नहीं पाये थे । यह समाचार पाकर वे स्वयं भी जन सभा में उपस्थित हुए। गायत्री उपासना से विकसित सन्त की तेजस्विता देखकर वे पराभूत हो उठे और उन्होंने स्वीकार किया कि लोगों का हृदय परिवर्तन राजतन्त्र से नहीं आध्यात्मिक धरातल पर ही सम्भव है, सो उनने भी विधिवत गायत्री उपासना की दीक्षा ग्रहण की और मांसाहार जैसी दुष्प्रवृति का परित्याग किया।

अब तो जन-जन में उत्साह की लहर दौड़ गई। लोग देवसाक्षी में अपनी बुराइयों को बलि देने लगे और इस तरह गोंडवाना प्रदेश में व्यापक रूप से लगा पशु-हिंसा का पाप पूरी तरह धुलकर स्वच्छ हो गया।

गोंडवाना प्रदेश में विद्या-व्यसन जाग्रत हुआ लोग अध्यवसायी बने । देखते-देखते यह प्रान्त देश का समुन्नत और साक्षर क्षेत्र बन गया। श्री चतुर्भुज की गायत्री उपासना का फल उस क्षेत्र की उन्नति के रूप में उभरा। गोंडवाना की प्रजा ने अपना दूसरा जन्म हुआ अनुभव किया ।

आद्यशक्ति की साधना एवं सिद्धियों से साक्षात्कार

गायत्री उपासना के महिमाबखान से शास्त्र भरे पड़े हैं। इससे भौतिक और आत्मिक सफलताएँ जिस प्रकार साथ-साथ अर्जित की जा सकती हैं, वैसा सुयोग अन्य मंत्रों के साथ कदाचित ही देखने को मिलता है। यह इसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू है। इसी के साथ इसमें एक कड़ी यह भी जुड़नी चाहिए कि जितनी सामर्थ्य महापुरुषों की अहैतुकी कृपा को आकर्षित करने की इसमें है, उतनी शायद किसी अन्य में नहीं।

घटना खिदिरपुर (चिनसुरा) कलकत्ता की है। फणीन्द्रनाथ घोष तब वहाँ सब डिप्टी मजिस्ट्रेट थे एवं अच्छे गायत्री साधक भी। नित्य प्रति ब्रह्ममुहूर्त में उपासना करना, फिर कचहरी जाना और वहाँ से लौटने के उपरांत लोकसेवा में जुट पड़ना-यह उनकी नियमित दिनचर्या थी। पिछले दस वर्षों से अप्रतिहत उनका उक्त क्रम चला आ रहा था। समय ज्यों-ज्यों गुजरता जा रहा था, वैसे ही-वैसे उनमें इष्ट दर्शन की अभीप्सा भी तीव्र से तीव्रतर होती जा रही थी। एक प्रातः वे उपासना की तैयारी करने में जुटे थे, तो उन्होंने अपने पूजा कक्ष की खिड़की से एक छायाकृति को अन्दर आते देखा। वह छायामूर्ति उनसे करीब छः फुट की दूरी पर आकर सामने खड़ी हो गई। दरवाजा अन्दर से बन्द था और कक्ष की दोनों खिड़कियों में लोहे की छड़ें लगी हुई थीं, इसलिए निकट खड़ी मानव-मूर्ति के स्थूल देहधारी होने की सम्भावना समाप्त हो गई। उनके मन में विचार उठा कि यह कोई दिव्य देहधारी महापुरुष हैं और निश्चय ही किसी विशेष प्रयोजन के लिए यहाँ उपस्थित हुए हैं। यह बात मानस में उठते ही छाया पुरुष ने एक स्निग्ध मुस्कान बिखेर दी, स्वीकृति में सिर हिलाया और कहा-"तुम्हारी उपासना और अकुलाहट ने मुझे यहाँ आने के लिए विवश कर दिया। शायद न भी आता, पर जहाँ स्वयं आद्यशक्ति विराजमान हों, वहाँ मेरा नहीं आना, विश्वमाता के अपमान के समान होता है, इसलिए उपस्थित होना पड़ा। चलो, चलें।" इतना कहकर मुण्डित मस्तक, गौर वर्ण, काषाय वस्त्रधारी महात्मा ने अपना एक हाथ आगे बढ़ाया, किंतु फणीन्द्रनाथ ने यह कहते हुए असमंजस दर्शाया कि-"आप तो सूक्ष्म शरीरधारी हैं, इस प्रकार की दिव्य देह धारण कर सकने की क्षमता मुझमें नहीं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

फिर भला मैं आपके साथ कैसे चल सकता हूँ?'' यह प्रश्न सुनकर उन अल्पवयस्क महापुरुष ने अपना बायाँ हाथ आगे बढ़ाया, उससे उनकी दाहिनी कलाई पकड़ी, कहा ''चलो, अब कोई समस्या नहीं।'' इतना कहते ही उन्होंने देखा कि दोनों के शरीर हवा में तैरते हुए कमरे से बाहर निकल गये।

वह दिव्य पुरुष फणीन्द्रनाथ के हाथ थामे बड़ी द्रुत गति से ऊपर अंतरिक्ष में बढ़े चले जा रहे थे और साथ-साथ आस-पास के ग्रह-पिण्डों का भी परिचय देते चल रहे थे। काफी ऊँचाई पर पहुँचने पर उन्होंने पृथ्वी की ओर इशारा करते हुए बताया कि जितनी मंथरगति इसकी मालूम पड़ती है, वस्तुतः उतना मंद वेग इसका है नहीं। फणीन्द्रनाथ ने देखा कि सचमुच पृथ्वी बहुत भीषण वेग से घूम रही है। दोनों और आगे बढ़े। रास्ते में पड़ने वाले मंगल ग्रह की ओर महात्मा ने इंगित किया और उसके लाल रंग एवं गति के बारे में विस्तार से समझाया।

देवपुरुष एक ऐसे मार्ग से आगे बढ़ रहे थे, जो सूर्य से काफी फासले से होकर निकल रहा था। उनकी गति और भी क्षिप्र हो गई। अब वे ऐसे वेग से बढ़ रहे थे, जिसकी तुलना किसी भी भौतिक गति से नहीं की जा सकती थी। कुछ दूर इस प्रकार चलने के बाद प्रकाश पुरुष का स्वर गूँजा। 'रुको'। दोनों रुके, तो उन योगी ने अंतरिक्ष के उस विशेष भाग का परिचय देना आरम्भ किया। कहा ''देखो, यह वह स्थान हैं, जहाँ रात-दिन एक जैसी स्थिति बनी रहती है। न प्रकाश है, न अंधकार ही। कोई शब्द भी नहीं। पूर्ण शान्ति छायी हुई है।'' इस स्थल पर पहुँच कर फणीन्द्रनाथ को ऐसा आभास होने लगा, जैसे उनका सूक्ष्म शरीर और अधिक हल्का हो गया हो और उन्होंने कोई अन्य और भी ज्यादा सूक्ष्म देह धारण कर लिया हो।

कुछ क्षण रुक कर वहाँ देखने के बाद उनकी यात्रा पुनः आरम्भ हुई। देवमूर्ति ने कहा—''जितनी दूर हम आये हैं, उससे भी ज्यादा दूर अभी चलना है, इसलिए गति को और वेगवान बनाना होगा।'' इतना कह कर गति को उनने और अधिक बढ़ा दिया। वे किस वेग से चलकर कितनी देर में अंतरिक्ष की किस गहराई में प्रवेश कर चुके थे, कहना मुश्किल है। थोड़ी दूर चलने के उपरांत देववाणी उभरी—''मन को तनिक एकाग्र करो और सुनो।'' चित्त स्थिर होते ही गम्भीर ओंकार ध्वनि कर्ण कुहरों से टकराने लगी। फणीन्द्रनाथ को ऐसा प्रतीत हुआ, मानों शत-शत मृदंग और झाँझें निनादित होकर यह नाद पैदा कर रहे हैं। नाद कुछ ऊपर उठकर एक बिंदु पर केन्द्रीभूत हो रहा है, ऐसा आभास मिल रहा था। जहाँ यह दिव्य निनाद पुंजीभूत हो रहा था, उस बिंदु से एक ज्योति-धारा निस्सृत हो रही थी। बिंदु को घेरे हुए एक वृत्त था। उसके भीतर शुभ प्रकाश हो रहा था। उसमें किसी प्रकार का कोई रंग नहीं था। केन्द्र से झरने वाली ज्योति कोटि सूर्य की आभा से भी अधिक उज्ज्वल और प्रकाशवान थी, किंतु साथ ही करोड़ों चन्द्रों की ज्योत्स्ना से भी अधिक शीतल और शांतिदायक थी। इस प्रकार धारा का निचला हिस्सा लाल, नीला एवं बैंगनी आभा लिए हुए था।

फणीन्द्रनाथ उस दिव्य ज्योति को निहार और नाद को सुनकर एक प्रकार से समाधिस्थ हो गये थे, तभी महात्मा की गम्भीर वाणी प्रस्फुटित हुई—''यह जो शब्द सुनाई पड़ रहा है, वह ब्रह्मांडव्यापी है। अन्यत्र यह अव्यक्त बना हुआ है, पर प्रयासपूर्वक इसे सुना जा सकता है। सृष्टि का आदिमूल यही है। इसी से इस विश्व की उत्पत्ति हुई है। इस प्रकार से उत्पन्न जगत के अंतर में यह नाद ही प्राण या जीवन शक्ति के रूप में प्रकट होता है। अनंत विश्व को गर्भ में धारण किये यही प्रसुप्त भुजंग के आकार में रहता है। इस अवस्था में इसका नाद भाव अभिभूत और प्राणात्मक भाव उन्मुक्त होता है। जब यह विश्व को गर्भ में धारण किये रहता है, तब इसका नाम पराकुंडली होता है। जब यह नादात्मक रूप में स्फुरित होता है, तब इसे वर्णकुण्डली कहते हैं और जब यह नादरूप भी डूब कर गहरी सुषुप्ति में अवस्थान करता है, तो इसे प्राणकुंडली के नाम से पुकारते हैं।''

इतना कह कर मार्गदर्शक सत्ता मौन हो गई। फणीन्द्रनाथ अब भी उस तेज बिन्दु की ओर मुग्ध भाव से देख रहे थे। जब उनसे न रहा गया, तो कह ही डाला-''मेरी उत्कट इच्छा हो रही है कि उस प्रकाश बिंदु में प्रवेश करूँ और देखूँ कि वह क्या और कैसी अनुभूतियों से युक्त है। आप मुझे छोड़ दीजिए। मैं कुछ क्षण अन्दर रह कर फिर वापस आ जाऊँगा।

देवविग्रह मुस्कराये, बोले-''जितना सरल प्रकट रूप में यह लग रहा है, वास्तव में उतना आसान है नहीं। जो शब्द तुम सुन रहे हो, वह और कुछ नहीं 'ब्रह्म' है—शब्द ब्रह्म और यह जो ज्योति केन्द्र है, वही 'ब्रह्मबिंदु' है। उसको घेरे हुए जो प्रकाश पुंज है, वहाँ सत्, रज, तम यह तीनों गुण साम्य की अवस्था में हैं। सृष्टि वहाँ नहीं है। वहाँ से प्रस्फुटित होकर नीचे

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की ओर जो प्रकाश धारा फैल रही है, उसके अधोभाग में जो रंगीन आभा दिखाई पड़ती है, वहीं से सृष्टि-बीज ब्रह्मांड में विकीर्ण होता है। इस समय तुम उस ब्रह्मबिंदु में प्रवेश के लिए मचल रहे हो पर शायद तुम्हें नहीं मालूम कि यदि वहाँ प्रविष्ट हो गये, तो फिर बाहर न निकल सकोगे, कारण कि उस व्यूह से बहिर्गमन का रास्ता तुम्हें नहीं ज्ञात है। यदि ऐसा हुआ, तो पृथ्वी पर जो तुम्हारी स्थूल काया है, उसकी और सूक्ष्म शरीर के बीच का सम्बन्ध सूत्र भंग हो जायेगा और तुम्हारे स्थूल देह की मृत्यु हो जायेगी। ऐसे में उत्तम यही है कि तुम कुछ समय और प्रतीक्षा करो मैं दुबारा आऊँगा और तुम्हें साथ लेकर ब्रह्मबिन्दु में प्रवेश करूँगा। तब उससे बाहर आने का मार्ग भी बता दूँगा। आज यहीं तक रहने दो।''

इसके पश्चात् महात्मा मौन हो गये और अत्यंत वेग से फिर पीछे वापस लौट चले। कुछ ही समय में वे दोनों वनसुरा वाले मकान में पहुँच गये। पुनः आने का आश्वासन देकर महापुरुष अंतर्ध्यान हो गये। थोड़ी देर उपरांत स्थूल शरीर की तंद्रा टूटी, तो फणीन्द्रनाथ पूजा कक्ष से बाहर आये। नीचे वाले तल में आते ही सामने उनकी भानजी मिल गई। छूटते ही उसने कहा—''मामा! लगता है आज कोई अद्भुत बात हुई है। आपकी दिव्य मुखाकृति और अपार्थिव सुगंध यह दोनों ही इस बात के प्रमाण हैं।'' बाद में फणीन्द्रनाथ को विदित हुआ कि उनके पूरे शरीर, वस्त्र और श्वांस-प्रश्वांस से एक विशिष्ट प्रकार की सुगंधि उत्सर्जित हो रही थी। यह स्थिति लगभग एक सप्ताह तक बनी रही। फिर धीरे-धीरे सामान्य हो गई।

इस प्रकार के दिव्य सहयोग से गायत्री साधकों का उपासनात्मक जीवन भरा पड़ा है। जो निष्ठापूर्वक वेदमाता का आँचल पकड़ते हैं, वे निहाल हुए बिना नहीं रहते। उन पर देवपुरुषों का अनुग्रह बरसता रहता है और समय-समय पर आपत्तियों में, कठिनाइयों में अथवा साधनात्मक जीवन में उनकी समर्थ सहायता एवं मार्गदर्शन मिलते हैं। जिनका साधनात्मक जीवन एकांगी बना हुआ है और जो मात्र जप तक स्वयं को सीमाबद्ध रखते हैं, सम्भव है उन्हें गायत्री के वास्तविक फलितार्थ और महापुरुषों के अपूर्व सहयोग से वंचित रहना पड़े, पर जो उपासना, साधना और आराधना रूपी त्रिपटा के त्रिविध आधार को अपनाये हुए हैं, वे कृतकृत्य होकर रहते हैं, इसमें दो मत नहीं।

गायत्री साधना की सिद्धि

कानपुर जिले में खांडेराव नामक एक सिद्ध संत हुए हैं। बिठूर में पटकापुर गाँव में उनका आश्रम था। आश्रम के निकट ही एक विशाल वट वृक्ष था, जिसमें वर्षा और गरमी से बचने के लिए हजारों लोग आश्रय ले सकते थे।

श्री खांडेराव ने वहाँ रह कर लम्बे समय तक गायत्री की साधना की थी। एक बार गुरु पर्व के अवसर पर विशाल स्तर पर ब्रह्मभोज का आयोजन किया गया। तैयारियाँ एक सप्ताह से चल रहीं थीं। सभी आवश्यक सामग्री इकट्ठी की जा रही थीं। समीपवर्ती क्षेत्र में इसकी जोरों की चर्चा थी कि अमुक दिन पूर्णाहुति के उपलक्ष में महात्मा खांडेराव जी ने एक भोज का आयोजन किया है। प्रचार को देखते हुए प्रबन्ध भी बड़े स्तर पर किया गया। निश्चित दिन आया, तो सबेरे से ही लोगों का तांता लगना आरम्भ हो गया। देखते-ही-देखते चारों ओर से भारी भीड़ आश्रम की ओर उमड़ पड़ी। भीड़ की विशालता और स्थान की कमी को देखते हुए सुबह से ही भोज की पंगतें भी आरम्भ कर दी गईं। बड़ी धूम धाम से दिन भर भोज चलता रहा, किन्तु लोग अभी भी आते ही चले जा रहे थे। व्यवस्था मंडली उन्हें खिला-खिला कर उसी क्रम में विदा भी करती जा रही थी।

शाम से रात हो चली, पर लोगों का आना अभी भी जारी रहा। अतः भोजन भी चलता रहा। यद्यपि व्यवस्था बड़ी संख्या में लोगों की उपस्थिति के अनुमान के आधार पर की गई थी, मगर अनुमानित संख्या से भी बड़ी तादाद में लोग उपस्थित हुए। ऐसी स्थिति में सामानों की कमी पड़ जाना स्वाभाविक ही था। उस रात भी यही हुआ। अनेक आवश्यक सामग्री घट गई। औरों की तो जहाँ-तहाँ से पूर्ति कर ली गई, किन्तु घी कहीं उपलब्ध नहीं हो सका। आसपास की दुकानों में भी तलाश की गई, पर कहीं भी व्यवस्था नहीं बन सकी। सभी चिन्तातुर हो उठे, मगर करते क्या? जितना कुछ हो सका, सामर्थ्य भर प्रयत्न किया। इससे अधिक वे कुछ कर भी नहीं सकते थे। उधर भीड़ बाहर इस आशा में बैठी थी कि भोजन अभी बन रहा है, तैयार होते ही परोसा जायेगा। बड़ी असमंजस की स्थिति थी। व्यवस्थापक परेशान हो रहे थे। इन्तजार कर रहे लोगों को न तो वस्तुस्थिति से अवगत कराया जा सकता था, न व्यवस्थापकगण उन्हें भोजन कराने की स्थिति में थे। स्थिति बोध कराने में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपमानित होने का भय था। पर ऐसे और कब तक लोगों को टाला जा सकता था? कुछ न कुछ तो प्रबन्ध करना ही था। अन्ततः बड़ा सोच विचार कर व्यवस्था-मंडली ने समस्या को खांडेराव जी के समक्ष रखने का विचार किया, यह समझ कर कि शायद वे कोई उपाय निकाल सकें। महात्मा जी ने जब यह सुना कि चार डिब्बे घी की कमी पड़ गई है और इसके बिना अभीष्ट परिमाण में भोजन नहीं पकाया जा सकता कि सभी उपस्थितजन संतुष्ट हो सकें, तो फिर शान्त चित्त से ध्यान में बैठते हुए व्यवस्थापकों से बोले-"जाओ, गंगा जी से गंगा-जल भर लाओ और घी की जगह उसका ही प्रयोग करो।" लोगों ने इसे परिहास माना पर जब बार-बार उनका आग्रह हुआ, तो वे उसे टाल न सके। चार व्यक्ति गये और चार डिब्बों में गंगा-जल भर लाये । उसी में पूड़ियाँ तली गयीं और अन्य व्यंजन बनाये गये तथा सभी को परोसा गया। उस रात जिन-जिन लोगों ने भोजन किया, उनका कहना था कि ऐसा स्वादिष्ट भोजन उसने इससे पहले कभी नहीं किया था।

दूसरे दिन चार डिब्बा घी उनके निर्देश पर गंगा जी में डाल दिया गया। लोगों ने जब इसका कारण पूछा तो उनने बताया कि कल हमने चार डिब्बा घी गंगा जी से उधार माँगे थे, जो लौटाने जरूरी हैं। गायत्री साधना की शक्ति अपरम्पार है। सुपात्रों को वह मिलती है एवं वे प्रकृति की व्यवस्था से सामयिक तालमेल बिठाकर उसका चमत्कारी स्वरूप यदा-कदा दिखला देते हैं किन्तु परब्रह्म की व्यवस्था में कभी व्यतिक्रम नहीं आने देते।

बूंटी सिद्ध जी महाराज

अलवर राज्य के एक अति सामान्य व्यक्ति किसी कारण से वैराग्य मय होकर मथुरा आये यह इसी उन्नीसवीं सदी की बात है और यहाँ के एक टीले पर रहकर गायत्री का पुरश्चरण किया। १ करोड़ गायत्री जपने के अनन्तर उन्हें गायत्री का साक्षात्कार हुआ और वे सिद्ध हो गये।

उनकी वह सिद्ध भूमि आज भी गायत्री टीले के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ पर उन सिद्ध महापुरुषों द्वारा प्रतिष्ठापित श्री गायत्री की मूर्ति है जो पंचमुखी और कमलासना है। यह स्थान किशोरी रमण कालेज के पूर्व में सड़क के किनारे अवस्थित है।

इन महापुरुष का नाम बूंटी सिद्ध था। उनको गत हुए ५०-६० वर्ष के लगभग हो गये। वे साधना काल से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक मौनी रहे। उन्होंने अपने आशीर्वाद से कई मृत व्यक्तियों को जिन्दा किया, संतानहीनों को संतान दी और धन हीनों को धन लाभ कराया। दो बार मथुरा के चतुर्वेदियों का गांव (समस्त चतुर्वेदियों के चार हजार व्यक्ति हैं भोजन कराना गांव कहलाता है।) किया। इतने बड़े भोज के लिए आर्थिक प्रबन्ध कैसे हुआ इस रहस्य ने सबको आश्चर्य में डाल दिया था।

उनकी सिद्धियों के बारे में अनेकों कथाएँ प्रसिद्ध हैं महाराज धौलपुर और महाराज अलवर उनकी प्रशंसा सुनकर स्वयं मथुरा आये थे। और दर्शन लाभ करके बहुत प्रभावित हुए थे, दूर-दूर से अनेक महापुरुष उनके दर्शन के लिए आते थे। जिन्होंने उन्हें देखा है वे कहते हैं कि उनका तेज दर्शनीय था। मौन रहते थे तो भी उनके पास जाने मात्र से लोगों की सारी शंकाओं का समाधान हो जाता था। वे सदा उस टीले पर रहते थे, भोजन आदि तक के लिए कहीं न जाते थे पर उनके अन्न जल की आवश्यकता अपने आप ही होती रहती थी । उसी टीले पर उनकी गुफा थी। जिसमें प्रवेश कर जाने पर वे हफ्तों बाद निकलते थे। कितने ही प्रेत ग्रस्त स्त्री पुरुषों की भी उन्होंने प्राण रक्षा की थी।

गायत्री सिद्ध—मथुरादत्त ब्रह्मचारी

मथुरादत्त नाम के एक ब्रह्मचारी काशी में विद्याध्ययन करते थे, उनका भोजन एक समय का दो किलो का होता था, कोई उन्हें खिलाने को तैयार नहीं होता था, एक तेली उन्हें खाना देने के लिए तैयार हुआ । उस समय आटे की मशीन नहीं चलती थी उसकी स्त्री स्वयं पीसकर देती थी । कुछ दिनों बाद वह ऊब गई और अनुचित शब्दों द्वारा एक दिन फटकारने लगी और कहने लगी कि इस निगोड़े को अब मैं आटा पीस कर नहीं दूँगी, इससे अपमानित होकर ब्रह्मचारी जी चल दिये, परन्तु तेली ने अपनी स्त्री को बहुत कटुवचन कहते हुए ब्रह्मचारी जी से प्रार्थना करने लगा—महाराज! आप प्रतिदिन की तरह मेरे यहाँ से भोजन सामिग्री ले जाया करें किन्तु वे नहीं लौटे और किसी महात्मा के पास जाकर आपने इस व्यथा को व्यक्त किया। महात्मा ने उन्हें गायत्री मन्त्र जप का विधानतः निर्देश दिया और वे असी से दक्षिण, रामनगर के सामने निरन्तर रहकर जप प्रारम्भ कर दिया। जैसे-जैसे दिन बीतने लगे लोग उनके पास भोजन के लिये नाना प्रकार की वस्तुएँ ले जाने लगे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लेकिन वे सबको मना कर देते, अन्त में जप पूर्ण होने पर, श्रीकाशी नरेश जी स्वयं उनके पास आये और कहने लगे कि महाराज! हवनादि में जो खर्च लगे मैं दूँगा आप विधिवत् इसको पूर्ण करें। किन्तु उन्होंने कहा-हमारा सम्पूर्ण कार्य जप से ही पूर्ण होगा, मुझे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं है, इस तरह जप पूर्ण कर यहाँ से वे प्रयाग चले गये और वहाँ प्रयाग के दूसरे किनारे पर झूँसी के पास कुटिया बनाकर रहने लगे।

कुछ काल के बाद यह बहुत प्रसिद्ध हो गये, और अनेक प्रकार के चमत्कारों द्वारा लोगों का कार्य भी समय-समय पर कर दिया करते थे। जब गोरखपुर के विख्यात संत (पवहारी) बाबा ने इनकी इस प्रशंसा को सुना तो एक दिन अपने दलबल के साथ लगभग १० बजे रात्रि को आ पहुँचे और परीक्षा लेने की दृष्टि से उनके यहाँ कहलवा दिया कि मैं आपका आज अतिथि हूँ और हमारे यहाँ आज एकादशी होने के कारण हाथी, घोड़े, ऊँट तक फलाहार ही करते हैं, आप इसका उचित प्रबन्ध कर दें। ब्रह्मचारी जी के पास उस समय एक व्यक्ति बैठा था जो एक पाव सिंघाड़े का हलुआ और आधा सेर दूध लेकर आया था । ब्रह्मचारी जी ने कहा कि भाई इतना कष्ट करो कि दो नाँद कोरी ला दो । वहाँ से गाँव एक मील था वह आदमी जाकर दो नाँद ले आया । ब्रह्मचारी जी ने उससे कहा कि एक नाँद में दूध और एक में हलुआ रखकर कपड़े से ढक दो और जाकर बाबा जी से कह दो कि अपने आदमियों को भेजकर सामान यहाँ से मँगवा लें और तुम घर चले जाओ । वह बाबाजी को सन्देशा देकर घर चला गया और बाबाजी के सभी आदमी, घोड़े ऊँट आदि उस नाँद के सामान से ऊब गये और वह समाप्त नहीं हुआ। प्रातःकाल बाबाजी आकर चरणों पर गिर पड़े और कहने लगे कि मैंने बड़ा अपराध किया जो इस तरह आपकी परीक्षा ली, आपका बहुत चमत्कार है। ब्रह्मचारी जी ने कहा कि हमारे में कोई चमत्कार नहीं है । यह सब गायत्री माता का चमत्कार है। कुछ दिनों के बाद अपने यहाँ आने वालों से उन्होंने कहा कि अब मैं अमुक दिन यहाँ से जाने वाला हूँ और उस दिन यमुनाजी में एक प्रकाश दिखलाई दिया और ब्रह्मचारी जी उठकर उस प्रकाश के पास गये और उसी के साथ लुप्त हो गये।

●●●

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री द्वारा भौतिक सफलताएँ

सिद्ध पुरुषों की झांकी

महात्मा शतानन्द जी, परिव्राजक के गुरु देव श्री. देवगिरि जी महाराज गायत्री के एक निष्ठ उपासक थे। उनके अनुसार उन्होंने गायत्री के असंख्य जप करके सिद्धियाँ पाई थीं। वे अपना वृतान्त सुनाया करते थे । कि किस प्रकार गायत्री की दीक्षा उन्हें प्राप्त हुई। उनका कहना था कि—

"योगाभ्यास की उत्कट लालसा से प्रेरित होकर मैं उत्तराखण्ड हिमालय में किसी सद्गुरु की खोज करने के लिए चल दिया, छोटी-मोटी साधनाएँ करते हुए बहुत दिन बीत चुके थे, उनसे कोई विशेष सफलता मिलती दिखाई नहीं देती थी, इसलिए मैं चाहता था कि कोई ऐसा सिद्ध पुरुष मिले जो मुझे अपनी शक्ति से सफलता की आखिरी मंजिल पर पहुँचा दे । सुना था कि सिद्ध पुरुष शिष्य पर शक्तिपात करते हैं और उसके सिर पर हाथ फेर कर कुण्डलिनी जाग्रत कर देते हैं जिससे उसका सिद्धियों पर अधिकार हो जाता है । मैं ऐसा ही कोई गुरु चाहता था, उसी की तलाश में हिमालय का उत्तराखण्ड तलाश करने की मेरी अभिलाषा हुई थी ।

चार वर्ष भ्रमण करते हुए मुझे हो गये । लगभग सभी तीर्थ छाने, जहाँ जिस महात्मा की प्रशंसा सुनी वहीं गया । कितने ही महात्मा बड़े तपस्वी मिले । घोर शीत के दिनों में भी नंगे रहते थे, बर्फ के जल में नित्य नियमित स्नान करते थे, कन्द मूल खा कर जीवन यापन करते थे, कई महात्मा दीर्घ काल से मौन धारण किए थे और रात भर जाग कर तपस्या करते थे। उनमें से कई ने तो मुझे अपने साथ ठहरने नहीं दिया । पर कई ने कुछ समय रहने की आज्ञा देदी । उनके आध्यात्मिक प्रभाव के कारण वहाँ रहने में मुझे बड़ी शान्ति मिलती थी, पर जैसा मैं चाहता वैसा अवसर कहीं न मिला । या तो वे सिद्ध पुरुष थे नहीं, या मुझ पर अपनी शक्ति प्रकट नहीं कर रहे थे । चार वर्ष में लगभग दस महात्माओं की सेवा की, हजारों मील की यात्रा की, और इतनी कठिनाइयाँ सहन कीं कि कई बार तो धैर्य छूट जाता था और घर लौट चलने की इच्छा होती थी ।

भ्रमण करते हुए एक दिन मुझे भीतर से उत्साह सा उठा और गंगोत्री से उत्तर दिशा की ओर इस प्रकार चल दिया मानो कोई अज्ञात शक्ति मुझे इस ओर खींचे लिए जा रही है । चलते-चलते मैं एक गुफा के समीप जा खड़ा हुआ, भीतर झांक कर देखा तो एक तेजस्वी महात्मा विराजमान थे। मैंने उन्हें दंडवत किया और वहीं बैठ गया । उस स्थान में एक विलक्षणता मैंने देखी कि वहाँ गायत्री मन्त्र की ध्वनि सूक्ष्म रूप से गूंज रही थी, ऐसा सुनाई पड़ता था मानों चारों ओर अनेक व्यक्ति बैठे हुए गायत्री का जप कर रहे हों । परन्तु दूर दूर तक नजर पसार कर देखने पर भी कोई मनुष्य दिखाई न पड़ता था । कानों को भ्रम होने की सम्भावना का विचार करके बार बार कान में उँगली डालता था पर फिर वही प्रतिध्वनि वहाँ गूँजती दिखाई पड़ती थी। इन महात्मा से मैं बहुत प्रभावित हुआ और विशेष विनय करके उनसे वहाँ रहने की आज्ञा प्राप्त करली ।

कुछ ही दिनों वहाँ रहने पर यह पता चल गया कि यह महात्मा चार सौ वर्ष की आयु के हैं गायत्री इनका इष्ट है, और निरन्तर गायत्री द्वारा ही तप करते रहते हैं । मुझे तो वे गुफा में से निकल कर कन्द मूल फल देते थे पर स्वयं उन्हें खाते कभी नहीं देखा और न कभी मल-मूत्र त्यागते एवं स्नान करते देखा । अपने नियत स्थान पर ही विराजे रहते थे।

मैं चाहता था, कि उनसे अपने मन की बात कहूँ पर वैसा साहस न होता था । वे महात्मा सब कुछ जानते थे, एक दिन स्वयं ही मुझ से कहा कि—"संसार में किसी वस्तु का अभाव नहीं है । सिद्ध पुरुष भी हैं । पर मनोभूमि शुद्ध न होने से उनकी सहायता तुम्हें नहीं मिल सकती । तुम साधन के परिश्रम से बचना चाहते हो, अपने धैर्य और पुरुषार्थ की परीक्षा नहीं देना चाहते, अन्तरात्मा को पवित्र बनाने के लिए आवश्यक कष्ट नहीं उठाना चाहते और दूसरों से यह आशा करते हो कि वे तुम्हें अपनी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कमाई हुई तपस्या मुफ्त में ही देकर सिद्ध बना दें । तुम्हारे मन में जो इच्छा काम कर रही है वह निकृष्ट श्रेणी की है । ऐसी इच्छा के लोग योगी की दृष्टि में कुपात्र होते हैं और वे उन पर कोई कृपा नहीं करते। तुम्हें बहुत परेशान देखकर मैंने बुला लिया था, तुम्हारे लिए यही उचित है कि उतावली छोड़कर धैर्यपूर्वक आत्मोन्नति करो, जब अधिकारी हो जाओगे तो कोई सत्पुरुष तुम्हें अपने आप ऊपर खींच लेगा ।''

एक दिन वे मुझे अपने साथ लेकर बर्फ से ढँके हुए पर्वतों को पार करते हुए चले, उनके साथ चलते हुए मुझे जरा भी ठंड और थकान अनुभव नहीं होती थी । उन्होंने कई महात्माओं के दर्शन कराये और उनकी विशेषताएँ बताईं । उनका प्रकृति पर अधिकार था । जो वस्तु चाहते तत्काल उत्पन्न कर लेते थे । अदृश्य होना, बिना आहार के रहना, सर्दी गर्मी के प्रभाव को अनुभव न करना, शरीर को कल्प करके बदल लेना, आकाश गमन आदि अनेक सिद्धियाँ उनको प्राप्त थीं । महात्मा जी के कहने पर उन्होंने वे सिद्धियाँ प्रत्यक्ष करके भी मुझे दिखलाईं । वे सभी महापुरुष गायत्री का आधार अपनाए हुए थे ।

मुझे विदा करते हुए महात्मा जी ने कहा—''अब तुम यहाँ न आना, जिस स्थान पर मैं तप करता हूँ वह ढूँढा नहीं जा सकता । तुम भविष्य में उसे ढूँढने का या वहाँ आने का प्रयत्न न करना । तुम्हें अधिक दुःखी देखकर अपनी इच्छा से बुलाया था । अब तुम चले जाओ और स्वयं गायत्री की उपासना करो तथा दूसरों को उसकी शिक्षा दो । इससे तुम्हारा आत्मबल बढ़ेगा और ईश्वर प्राप्ति कर सकोगे । गुरुदेव के आदेशानुसार मैं वहाँ से चला आया और उनके बताये हुए विधान के अनुसार गायत्री तप करता हूँ मुझे अपनी साधना के परिणाम पर पूर्ण सन्तोष है ।''

गायत्री सिद्ध हरीहर बाबा

श्री गुरुदत्त जी सारस्वत बानप्रस्थी लिखते हैं कि अब से चालीस वर्ष पहले रामटेकरी के नीचे लगभग सात हजार एकड़ का घना जंगल था उसमें जंगली वृक्ष बहुत ही घने उगे हुए थे । कहीं-कहीं वे इतने अधिक घने थे कि उधर से निकलना मुश्किल होता था । छाया इतनी घनी थी, कि अधिकांश भूमि को सूर्य का दर्शन नहीं हो पाता । जानवरों के झुण्ड इन झाड़ियों में छिपे रहते थे । इस सुनसान जंगल में अब से सत्तर वर्ष पूर्व हरीहर नामक एक महात्मा रहते थे। अब वह जंगल कट गया है ।

इस जंगल के दक्षिण पार्श्व में एक वट वृक्ष के नीचे महात्मा हरीहर जी की गुफा थी । सायंकाल दो तीन घंटे के लिए वे गुफा से बाहर आते थे, उसी समय कभी किसी को उनके दर्शन होते थे । बड़े-बूढ़े कहते हैं कि हमने अपने जन्म काल में जितना वृद्ध उन्हें देखा था वैसा ही उनका शरीर अन्त तक रहा । उनकी आयु कितनी थी इसका भेद किसी को मालूम न था ।

जिस स्थान पर वे रहते थे वहाँ किसी दूसरे को ठहरने की सुविधा न थी । कोई गाँव सात मील से कम दूर न था इसलिए शाम को उनके दर्शन करके वापिस लौटने में भारी कठिनाई होती थी । कोई बिरले ही कभी-कभी उनके पास पहुँचते थे । पहुँचने पर दर्शन तो हो जाते थे पर वे बातें कभी-कभी ही किसी से करते थे । उनके सम्बन्ध में अनेक बातें पुराने लोग बताया करते हैं जिनमें से कुछ बातें नीचे लिखी जाती हैं—

हरीहर बाबा को गायत्री सिद्धि थी । वे सदा गायत्री का जप करते थे और उसी के ध्यान में मग्न रहते थे उन्हें गायत्री का साक्षात्कार होता था ।

उनकी गुफा से डेढ़-दो मील तक कोई जलाशय न था । पर उनके घड़े में सदा बड़ा ही शीतल और मधुर जल भरा रहता था । कई प्यासे पशुओं तक को गुफा से जल लाकर तृप्त कर देते थे ।

गुफा के पास भेड़िया, चीते, बघेरे, जंगली सुअर आदि रहते थे, और वहाँ बैठे रहते थे पर दर्शन के लिए जाने वाले किसी मनुष्य से न बोलते थे । एक बार नगराई गाँव का एक अहीर गुफा पर जा रहा था, रास्ते में झाड़ी से निकल कर बाघ सामने आ गया । अहीर ने हाथ जोड़कर कहा मैं बाबा जी के दर्शन को जा रहा हूँ । बघेरा चुपचाप रास्ते में से हट कर एक ओर चला गया ।

एक साधु उनका चेला बनने गया था । गुफा में से निकल कर विकराल दाँतों वाले सूअर ने उसका पीछा किया। वह उलटे पाँवों भागा ! जब तक उसे जंगल से बिल्कुल न खदेड़ दिया तब तक सूअर पीछा ही करता रहा। अन्त में सूअर से साधु बनकर हरीहर बाबा ने उस साधु से कहा खबरदार, अब कभी चेला बनने आया तो ठीक न होगा । यह वृत्तान्त उस साधु ने खुद सुनाया था ।

कितने ही लोगों को उनकी कृपा से बड़े-बड़े लाभ हुए थे, कई अन्धों को दृष्टि दी थी, एक कोढ़ी शुद्ध शरीर हुआ था । वे हर एक से कह देते थे कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अपने लाभ के बारे में वह किसी से न कहे कि अमुक महात्मा की कृपा से ऐसा हुआ है । कारण कि स्वार्थी लोगों की भीड़ वहाँ न रहे ।

वे क्या खाते थे इसका कुछ पता नहीं । उस जंगल में कोई खाने लायक ऋतु फल न थे, कोई भेंट वे स्वीकार न करते थे । फिर उसका भोजन क्या होता है और कहाँ से आता है यह किसी की समझ में नहीं आता है । उनकी गुफा से सदा चमेली के फूलों जैसी महक आती थी । अन्त में नर्मदा तट पर उन्होंने शरीर त्यागा था ।

स्वामी मगनानन्द जी

(कुं. वीरेन्द्र सिंह जी, कोटा)

श्री स्वामी मगनानन्द जी महाराज छोटी अवस्था में यह घर-बार छोड़कर विरक्त हो गये थे । कोटा से खातौली और ग्वालियर से श्योपुर कस्बे में १२-१४ वर्ष विराजे और यहीं उन्होंने शरीर छोड़ा । खातौली से सात मील की दूरी पर शंकर जी का स्थान है। वहाँ पर धौकड़े में वृक्षों की भरमार है इसी कारण वह स्थान धौकड़ेश्वर महादेव के नाम से प्रसिद्ध है यह स्थान बिल्कुल निर्जन है तथा प्रायः शेर आदि जंगली जानवर यहाँ तथा इसके आस-पास पड़े रहते हैं ।

स्वामी जी कहा करते थे कि यह स्थान सिद्ध पीठ है इसीलिए मैं नासिक छोड़कर यहाँ आया हूँ । आज भी इस इलाके के ४० वर्ष की अवस्था से ऊपर के किसी भी व्यक्ति से स्वामी जी की चर्चा की जाय तो वह उनका नाम सुनते ही गद्‌गद् हो जाता है । यह सभी को विदित है कि उन्होंने गायत्री की उपासना करके सिद्धावस्था को प्राप्त किया था । उनकी सिद्धियों के बारे में वहाँ के सत्संग प्रेमी सज्जनों के मुख से अनेक गाथाएँ सुनी जा सकती हैं ।

ठिकाना खातौली के एक सज्जन के ठिकाने के विरुद्ध जमीन का मामला चल रहा था । मुकदमे के कारण ठिकाने की आर्थिक स्थिति खराब हो चुकी थी। कोटा के पोलिटीकल एजेण्ट का दफ्तर भरतपुर होता था । एजेण्ट ने उसका अपमान करके दफ्तर से बाहर निकलवा दिया था ।

इन ठिकानेदार महोदय को भरतपुर में घूमते-घूमते इन स्वामी जी महाराज के दर्शन हुए । उन्हें दुःखी देखकर स्वामी जी ने पूछा क्या भूखे हो ! उनके हाँ कहने पर उन्होंने धूनी में से निकाल कर एक अखरोट दिया । इसी में उनकी क्षुधा पूर्ण रूप से तृप्त हो गई इसके बाद उन्होंने अपनी दुख भरी गाथा स्वामी जी को सुनाई । सुनकर स्वामी ने गम्भीरता तथा उदासीनता के साथ कहा कि कल स्वयं एजेण्ट तुझे बुलाकर अनुकूल फैसला कर लेगा । सचमुच ऐसा ही हुआ । एजेण्ट ने दूसरे दिन उन ठिकानेदार को स्वयं बुलाया और उनकी जब्त की हुई भूमि की वापसी का हुक्म दे दिया ।

लगभग एक साल स्वामी जी विचरण करते हुए उधर से निकले तो ठिकानेदार ने बड़े आग्रह पूर्वक उधर रख लिया और आजीवन उनकी सेवा की । आज भी उनके घर पर महाराज की धूनी की अंशभूत अखण्ड अग्नि जलती रहती है वह कभी बुझने नहीं दी जाती है ।

एक दूसरी घटना यह है कि मेरे नानाजी जो बड़े ही शुद्ध हृदय तथा साधु सेवी थे, महाराज की सेवा में प्रायः रहा करते थे । एक दिन नानाजी महाराज जी के पास जा रहे थे जो चुपके से मामा जी (जो उस समय पाँच साल के थे) उनके पीछे हो लिए नानाजी को इसका कुछ ध्यान न था । रास्ते में नदी थी । नानाजी तो नदी पार कर गये पर मामा जी जब उसे पार करने लगे तो बीच में ही डूब गये । मामाजी अब भी सुनाया करते हैं कि जब वे डूब गये तो उन्हें ऐसा लगा कोई महात्मा हाथ पकड़ कर उन्हें बाहर निकाल रहे हैं । वे निकल आए और बच गये ।

नानाजी जब स्वामी जी के पास पहुँचे तो उन्होंने बहुत डाँटा कि "बच्चों को साथ क्यों लाते हो ?" नानाजी ने कहा कि मैं तो नहीं लाया । थोड़ी देर में मामा जी आ गये और डूबने का वृतान्त उन्होंने सुनाया। वास्तव में स्वामी जी के सूक्ष्म शरीर ने ही उन्हें डूबने से बचाया था ।

इस प्रकार की अनेक घटनाएँ हैं जिनका उल्लेख इस छोटे लेख में होना सम्भव नहीं । गायत्री उपासना की महिमा अपार है उससे गृहस्थ और महात्मा सभी उच्च स्थिति पर पहुँच सकते हैं ।

स्वेच्छा निर्माण

पं. यमुना शंकर त्रिपाठी शास्त्री, उज्जैन, लिखते हैं कि लगभग ५० वर्ष पहले की एक सत्य घटना है । बूँदी (राजस्थान) राज्य में 'खटकड़' नामक एक प्राचीन ग्राम है जिसके अत्यन्त समीप से अरावली पहाड़ को श्रेणी चली गई है । इसी पर्वत श्रेणी के बीच में एक नदी बहती है । दृश्य अत्यन्त रमणीय एवं शान्त है यहीं पर उस समय पं. कन्हैयालाल जी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्मचारी नामक एक महात्मा रहते थे । वे गायत्री के परम उपासक थे, उन्होंने जीवन भर अनेकों पुरश्चरण किये थे, समस्त ऋद्धि-सिद्धियाँ उनके करतल गत थीं जिनका वर्णन इस लेख में असम्भव है । उस प्रान्त के सभी सज्जन उनके प्रभाव से परिचित थे ।

६ मास पूर्व ही अपने निर्वाण काल को तत्वज्ञान से जानकर वे उन ग्रामों में जाकर अपने परिचित स्नेही व्यक्तियों से मिले एवं अत्यन्त प्रसन्न गम्भीर वाणी में उनसे अन्तिम विदाई ली और कहा 'बन्धुओ! अब हम जाते हैं, अन्तिम नमस्कार ।' निर्वाण के दिन 'केशीराय पाटन' नामक स्थान (जो कि चम्बल नदी के किनारे पर कोटा शहर से ८ मील दूर है एवं नदी का प्रवाह पूर्व दिशा में होने से गंगा के तुल्य पवित्र तीर्थ माना जाता है तथा प्रति वर्ष कार्तिक की पूर्णिमा को मेला लगता है) पर सहस्त्रों ग्रामीणजन उपस्थित हुए । पहले गाय के पवित्र गोबर से भूमि लिपाई गई । स्नान, सन्ध्योपासनादि नित्य कर्म से निवृत्त हो ब्रह्मचारी जी लिप्तभूमि पर कुशासन बिछाकर पद्मासन से बैठ गये । उनके आदेशानुसार उनके सिर पर एक नवीन श्वेत वस्त्र दूर से ही ओढ़ा दिया गया । ब्रह्मचारी जी ने कहा कि जब तक मेरा शरीर अपने आप गिर न जाय तब तक कोई स्पर्श न करे । सब लोगों को इस प्रकार समझा कर ब्रह्मचारी जी ने प्राणायाम द्वारा जीव को सहस्त्रार कमल में चढ़ा लिया। करीब एक पहर तक सब लोग शान्त व आश्चर्य पूर्वक देखते रहे । इसके उपरान्त एकाएक उनके सिर से तोप छूटने के समान ध्वनि हुई और ब्रह्मचारी जी का शरीर भूमि पर गिर पड़ा । अतः उनका शरीर नदी के बीचोंबीच छोड़ दिया गया । स्थान-स्थान पर उनके निर्वाण के उपलक्ष में ब्रह्मभोज हुए । आज भी उस प्रान्त के वृद्ध व युवक लोग उनके तप के प्रभाव से परिचित हैं ।

गायत्री उपासक का ब्रह्मतेज

श्री शिव भगवान प्रसाद अग्निहोत्री, पठानान पुरवा लिखते हैं कि हमारे नाना सूरज बली गायत्री के अनन्य उपासक थे । उनका अधिकांश समय पूजा पाठ में ही व्यतीत होता था । उनके द्वारा यदि किसी रोगी को कोई औषधि दे दी जाती तो उसका असर तुरन्त होता था । उनको सभी लोग बड़ी आदर की दृष्टि से देखते थे ।

बिजुआ रियासत के राजा साहब इनको बहुत मानते थे। प्रति वर्ष उनके कृष्ण उत्सव पर राजा साहब अपने अहलकारों के साथ स्वयं आते थे । राजा साहब ने उन्हें बहुत सी भूमि दान दी थी जिसके उत्तराधिकारी होने के नाते आज कल हन लोग काविज हैं । नाना जी के घर अतिथियों और अभ्यागतों की सदा भीड़ लगी रहती थी, उनके द्वार पर लोग अनेक प्रयोजन लेकर आते थे और गायत्री माता की कृपा से सभी लोग सन्तुष्ट होकर जाते थे ।

गायत्री साधना के फलस्वरूप नानाजी में बहुत ब्रह्मतेज पैदा हो गया था जो उनका चेहरा निरन्तर चमकता रहता था । उन्हें सताने या छेड़ने की किसी की हिम्मत न होती थी जो ऐसा दुस्साहस करता था उसे उसका समुचित परिणाम भी मिल जाता था ।

एक बार इनके एक पण्डिताई के गाँव बोकरिहा के भूधर जी जोशी ने अपने यहाँ श्रीमद्भागवत की कथा कहने को नाना जी को आमन्त्रण दिया । उन्होंने उसे स्वीकार कर लिया परन्तु पीछे भूधर जी बदल गये और उनने एक दूसरे पण्डित को कथा कहने को बुला लिया । नानाजी को यह बात बुरी लगी । उनका अपमान भूधर जी तथा उनके भाई के लिए बहुत ही हानिकारक हुआ । कथा के यज्ञ के समय अचानक ऐसा अन्धड़ आया की जलता हुआ हवन ऊपर आकाश में सैकड़ों गज ऊँचा उड़ गया और इसी समय से वे पागल हो गये । किसी को यह समझने में देर न लगी कि यह सूरज बली जी के कोप का फल है । उनके अपराध के लिए बहुत क्षमा माँगी, उन्हें सन्तुष्ट किया, उनके शिष्य बने तब कहीं जाकर उनका पागलपन दूर हुआ ।

एक बार एक लोधा नाना जी का शिष्य बना । उसके घर में कोई और न था अकेला होने के कारण उन्हीं के यहाँ रहने लगा । उन्हीं का काम करता और रोटी खाता । एक दिन उसकी नीयत बिगड़ी और नानाजी का सोना चुरा लिया। जब कोई अपनी चोरी मन्जूर करने को तैयार न हुआ तो वे एक पीपल के नीचे कुछ विशेष साधना करने चले गये । इधर वह लोधा जब थाली में भोजन करने बैठा तो हमारी मौसी ने देखा कि वह जो ग्रास भोजन का उठाता है वह काँप-काँप कर थाली में बार-बार गिर जाता है । उसके हाथ बिलकुल निकम्मे हो गये थे मानो लकवा मार गया हो। लोधा घबरा गया और उसने चुराया हुआ सोना लाकर चुपचाप वापिस कर दिया ।

ऐसी-ऐसी उनके जीवन की अनेकों घटनाएँ हैं । करीब ४० वर्ष पूर्व ८० वर्ष की आयु में उनका स्वर्गवास हुआ था । जो कोई उनके समीप रहा उसे भली-भाँति विश्वास हो गया कि गायत्री माता में तथा उसके भक्त में कितनी शक्ति होती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

हम लोग भी नानाजी का अनुगमन करके गायत्री उपासना में लगे हुए हैं । जितना कुछ बन पड़ता है माता की सेवा पूजा करते हैं । अपने थोड़े से प्रयत्न को देखते हुए, उससे प्राप्त होने वाले सप्तपरिणामों की मात्रा बहुत भारी है। जब हम स्वल्प साधना से इतना लाभ उठाते हैं तो नानाजी की तपस्या को देखते हुए इतना प्रताप उचित ही था ।

एक ब्रह्मनिष्ठ तपस्वी

श्री सरयूशरण गुप्त, नवाबगंज लिखते हैं कि जिनकी दृष्टि संकुचित और प्रज्ञा मलीन होती है वे धन, भोग, यश आदि की कामना करते हैं और उसी की उधेड़ बुन में नर तन जैसे अमूल्य अवसर को गँवा देते हैं । परन्तु भगवान जिन्हें दूर दृष्टि, स्वच्छ प्रज्ञा और तात्विक ज्ञान देते हैं वे मनुष्य जीवन की महानता को समझते हैं और उसका सदुपयोग करके जन्म मरण की फाँसी काटने का प्रयत्न करते हैं ।

जैसे कोई मनुष्य चाहे अपने लाभ के लिए ही दीपक जलाता हो तो भी उस दीपक का प्रकाश दूर तक होता है और उस स्थान के अनेक व्यक्तियों को प्रकाश मिलता है । अपने लिए यज्ञ किया जाय तो भी उससे आकाश की शुद्ध वायु होकर जल वर्षा आदि के लाभ असंख्य प्राणियों को मिलते हैं । इसी प्रकार आत्म कल्याण के लिए जो परमार्थिक कार्य किये जाते हैं उससे अपना कल्याण तो होता ही जाता है साथ ही अन्य अनेकों का भी हित साधन होता है ।

नवाबगंज के निकट सरयू तट पर लगभग २५ वर्ष से एक महात्मा तप कर रहे हैं । इनका नाम तो पं: बलभद्र जी है पर नैष्टिक ब्रह्मचर्य का पालन करने का आरम्भ से ही व्रत धारण करने के कारण उन्हें ब्रह्मचारी जी कहा जाता है अब वे ब्रह्मचारी के नाम से ही प्रसिद्ध हैं । इन महात्मा का संक्षिप्त सा परिचय नीचे की पंक्तियों में उपस्थित किया जाता है ।

ब्रह्मचारी जी संस्कृत भाषा के उत्कृष्ट विद्वान हैं । उन्होंने प्रारम्भिक जीवन में ही पूर्व संचित शुभ संस्कारों के कारण यह जान लिया था कि मनुष्य जीवन का सच्चा लाभ क्या है ? और उस लाभ को प्राप्त करने का एक मात्र मार्ग क्या हो सकता है ? उन्होंने अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए गायत्री माता का आश्रय लिया है क्योंकि सृष्टि के आदि से लेकर अब तक प्राय: सभी वेदानुयायी साधक गायत्री के आधार पर ही तप करके परम पद के अधिकारी बने हैं ।

अपनी राज तुल्य सम्पत्ति में लात मार कर ब्रह्मचारी जी सरयू तट पर एक छोटी सी कुटी में गायत्री तप का महान अनुष्ठान कर रहे हैं । अब तक वे २४ करोड़ से अधिक जप कर चुके हैं । पहले वे सर्वथा मौन रहते थे, कुछ समय तक उन्होंने दिन में मौन रखने का नियम रखा । वे नित्य प्रति यज्ञ करते हैं। गत वर्ष एक सज्जन ने अपने संतति सुख के उपलक्ष में प्रति पूर्णमासी को एक बड़ा यज्ञ करते रहने की व्यवस्था कर दी थी और त्रिशक्तियों के लिए उपयुक्त वस्त्र परिधान भी दान किया था । ब्रह्मचारी जी मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा को हर साल तीन कन्याओं का वस्त्र भोजन आदि से पूजन करते हैं ।

इन पच्चीस वर्षों में उन्हें जो महान आत्मिक लाभ हुआ है । उस सम्बन्ध में कुछ प्रकाश डालना ब्रह्मचारी जी को अभीष्ट नहीं है इसलिए उस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं लिखा जा रहा है । फिर भी स्थानीय लोगों की उनके प्रति अगाध श्रद्धा है क्योंकि ऐसे तपोनिष्ठ महात्मा आसानी से दृष्टिगोचर नहीं होते ।

कुछ वर्ष पूर्व इधर दूर-दूर स्थानों तक चेचक तथा हैजा का रोमांचकारी प्रकोप हुआ था पर जो लोग ब्रह्मचारी जी की छाया में रहते थे वे सपरिवार उस आपत्ति से अछूते रहे । इसी प्रकगत वर्ष जल प्रवाह की प्रलय तुल्य दशा होने पर भी ब्रह्मचारी जी का आश्रय लेने वाले लोग समस्त आपदाओं से रहित रहे हैं । उनके उपदेशों से प्रभावित होकर अनेकों लोगों ने गायत्री उपासना का व्रत लिया हुआ है । मैंने भी उन्हीं से गायत्री उपदेश लिया और यथा शक्ति उस कल्याण मार्ग पर चल रहा हूँ ।

स्वर्गीय ला. रामसहाय जी की धर्म पत्नी के हृदय में अपने पतिदेव का स्मारक बनाने के लिए इस गायत्री तीर्थ को सुन्दर बनाने की प्रेरणा हुई । उन्होंने अपने धन का परम सात्विक उपयोग यह किया है कि पूज्य ब्रह्मचारी के निवास स्थान पर गायत्री यज्ञशाला, कूप, तथा वृक्षारोपण किया है जिसका समारोह इसी साल माघ सुदी ५ को अखण्ड कीर्तन के साथ समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ था ।

गायत्री उपासना में जो लोग लगे हुए हैं उनमें से अनेकों को आत्मिक लाभ के अतिरिक्त सांसारिक लाभ भी मिले हैं । एक सज्जन जेल खाने के दण्ड से सर्वथा छूट गये । एक सज्जन ने बड़ी प्रतिकूल परिस्थितियाँ होते हुए भी पर्याप्त लाभ कमाया है । एक सज्जन की कन्या-विवाह की चिन्ता बड़ी सरलता से हल हो गई । ब्रह्मचारी जी अक्सर कहा करते हैं जितनी निष्ठा एवं श्रद्धा पूर्ण हृदय से जगज्जननी की उपासना की जायेगी उसका उतने ही परिमाण में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुमधुर तथा चिरस्थाई परिणाम प्राप्त होगा । यह कहने सुनने की नहीं करके देखने की बात है ।

नैष्ठिक गायत्री साधक

पं. अयोध्या प्रसाद जी दीक्षित, कानपुर लिखते हैं कि हमारे गाँव में जुगराजपुर में जो कि कानुपर जिले के अन्तर्गत है । जंगल में एक कुटी बनी हुई है । एक ब्राह्मण जिनका कि नाम छेदीलाल जी है । उनको हम अच्छी तरह से जानते हैं । क्योंकि विद्यार्थी जीवन में जब कभी हमें छुट्टी मिलती थी हम अपने गाँव पहुँच कर उस कुटी पर अवश्य जाया करते थे । वे गायत्री माता की उपासना में लगे हुए हैं । अब उनकी अवस्था ५० के करीब होगी । भगवान सूर्यदेव के सन्मुख खड़े होकर साधन किया करते हैं और दोपहर में नित्य प्रति हवन करते हैं तथा एक अनोखा तेज है। वाणी में मधुरता है, संस्कृत का उच्चारण तो उनका इतना शुद्ध है कि प्रशंसा से बाहर है । उनका घर धन-धान्य से परिपूर्ण है और सभी प्रकार से सुख शान्ति है । उस कुटी पर उनके गुरु बाल ब्रह्मचारी हैं। उन्होंने हमारे पिता के कहने पर कि इनको विद्या नहीं आती है मुझे मन्त्र दिया था और कहा था कि उसके जप मात्र से बुद्धि तीव्र हो जायेगी । सचमुच उसका मुझे बड़ा अच्छा लाभ मिला । उनके दर्शनार्थ बहुत-बहुत दूर से लोग आया करते हैं लेकिन दोपहर के समय उनका कोई पता नहीं चलता कि वे कहाँ चले जाते हैं । जो महानुभाव कानपुर के रहने वाले हैं यदि उनको दर्शन की अभिलाषा हो तो जुकराजपुर जाकर देख लें ।

गायत्री महिमा का प्रत्यक्ष दर्शन

श्री नयन सिंह वर्मा, वसन्तपुर लिखते हैं कि चार पाँच महीने की बात है उत्तराखण्ड की तीर्थ यात्रा से घूमते हुए जागेश्वर से श्री १०८ श्री दूधाधारी बाबाजी महाराज हमारे गाँव बसन्तपुर, अलनमोड़ा पधारे । आप नित्य त्रिकाल स्नान, ध्यान, हवन, यज्ञ, गायत्री जप करते हैं । एक बार फलाहार या दुग्धाहार तथा बोरे ही पहनते व ओढ़ते हैं ।

जिस दिन आप यहाँ आए उस समय आपके पास केवल २ सेर हविष्य समिग्री थी, शहर अल्मोड़ा दूर होने के कारण उस सामिग्री का यहाँ मिलना भी दुर्लभ था, तिल की खेती होने की तैयारी थी परन्तु उन दिनों बिलकुल ही समाप्त थी । परन्तु गायत्री का चमत्कार देखिए आप सात दिनों तक यहाँ रहे, प्रति-दिन ३ बार २ सेर सामिग्री का हवन किया और जाने के आठवें दिन भी आपके पास उतनी ही सामिग्री थी जितनी आने के दिन थी ।

एक दिन बातों के प्रसंग में ही भक्त ने कहा कि महाराज आज ककड़ी नहीं आई बाबा जी बोले अभी आ जायेगी । ठीक दो मिनट के बाद एक भक्त ककड़ी लेकर उपस्थित हो गया और भी कई चमत्कार उनके देखे थे ।

पूजा प्रतिष्ठा का मँहगा सौदा

श्री लक्ष्मण जी तरुड़कार, नरखेड़, लिखते हैं कि लायलपुर से दो मील उत्तर में एक सघन उपवन था जिसमें कुछ समय पूर्व एक सात्विक प्रकृति के महात्मा रहते थे । संध्या को एक समय नगर में भिक्षा को आते थे । बाकी सारे दिन अपने ईश्वर भजन में तल्लीन रहते। गायत्री का उन्हें इष्ट था । भगवती माता के परम भक्त थे ।

भिक्षा के लिए वे इने गिने घरों में जाते थे । उन्हीं घरों में एक घर भक्त विशुनदयाल का था । भगत जी का एक सात वर्ष का बालक महात्माजी से बड़ा हिल गया था, भिक्षा का समय होता था तो बालक उनकी बहुत पहले से प्रतीक्षा किया करता था । जिस दिन न आते उस दिन बहुत बेचैन होता । महात्माजी को भी बालक से प्रेम हो गया । वे उसके साथ बैठकर कुछ देर नित्य खेलते ।

एक दिन बच्चा बीमार पड़ा । एक हफ्ते की बीमारी में बालक का देहान्त हो गया । जिस समय उसकी लाश को श्मशान ले जाया जा रहा था, उसी समय महात्मा जी भिक्षा को आ गये । यह सब देखकर उन्हें बड़ा दुःख हुआ । श्मशान तक वे भी साथ गये । अन्त्येष्टि की तैयारी हुई तो उन्होंने लोगों से कहा— 'इस लाश को मुझे दे दो । और तुम सब लोग चले जाओ।' महात्मा जी पर सब लोगों की बड़ी श्रद्धा थी । वे लाश उन्हें देकर लौट आए ।

एक दो व्यक्ति लाश लेने का कारण जानने के लिए वहीं छिपकर बैठे रहे । महात्मा जी ने मृतक के जीवित हो जाने के लिए ईश्वर से बहुत प्रार्थना की, पर वह न जिया । रात इसी प्रकार बीत गई । सबेरा निकलने को था उन्हें अपनी असफलता पर बड़ी झल्लाहट हो रही थी । उन्होंने बड़े जोर से चिल्लाकर कहा—"ईश्वर की इच्छा से नहीं, तो उठ, मेरी इच्छा से जी पड़" बालक ने करवट बदली और वह सचमुच जी पड़ा । एक दिन अपनी कुटि पर रख कर दूसरे दिन उस बालक को उनके पिता को सौंप आए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

मरे को जिन्दा करने के चमत्कार का यश दूर-दूर तक फैल गया। अब उनकी कुटी पर भीड़ लगी रहती थी लोग तरह-तरह की भेंट लेकर वहीं पहुँचते थे, भिक्षा की उन्हें आवश्यकता न रही ।

एक दिन महात्माजी के गुरुजी कुटी पर पधारे । इतना वैभव, इतनी भीड़-भाड़ देखकर उन्हें बड़ा कौतूहल हुआ । भीतर पहुँच कर देखा तो शिष्य फूलों की माला से सजा बैठा था । उनके क्रोध का पारावार न रहा । ऐसी जोर की लात लगाई कि वे औंधे मुँह गिर पड़े ।

गुरु की इस विकरालता को देख कर वे थर-थर काँपने लगे । गुरु ने एक दर्पण झोले में से निकाल कर दिया और कहा इसमें अपना मुँह तो देख । उन्होंने मुँह देखा तो वह काला हो रहा था । मुर्दनी छाई हुई थी, सारा तेज उड़ गया था । प्रशंसा तो फैल रही थी पर आत्मबल की कमाई सब चुक गई थी ।

गुरु जी ने कहा—'ईश्वर के नियमों में और मनुष्य के निर्धारित प्रारब्ध में हस्तक्षेप करना उचित नहीं । भक्त अपने आप के प्रभाव से भगवान को अपनी बात मनवाने के लिए विवश कर सकता है पर ऐसा करने से उसका अपना सारा तप तेज समाप्त हो जाता है ।'' यह कह कर वे उनका कान पकड़ कर घसीटते हुए अपने साथ अज्ञात स्थान को ले गये । ताकि वे पुनः तप करके अपनी खोई हुई आत्मशक्ति का संचय कर सकें । जाते समय उन्होंने उपस्थित लोगों से लोगों से कहा—''आप लोग किसी सन्त को प्रशंसा पूजा का प्रलोभन देकर उसे पथ भ्रष्ट न किया करें । अपने कल्याण के लिए आप लोग स्वयं भगवान का भजन किया करें ।''

यह घटना लगभग ८५ वर्ष पुरानी और बिल्कुल सच्ची है । एक परम विश्वस्त प्रत्यक्ष दर्शी ने कही थी। यह गायत्री साधकों के लिए बड़ी शिक्षाप्रद है । तप के अनुपात से निश्चित रूप से सिद्धि मिलती है । उस सिद्धि को किसी का प्रारब्ध पलटने का चमत्कार दिखाने में खर्च नहीं कर देना चाहिए । वरन् उसे गुप्त रखना चाहिए । कष्ट ग्रस्त लोगों को स्वयं साधना पथ पर चल कर कष्टों से छुटकारा प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए ।

गायत्री के कुछ अनुभव

सूखे पेड़ हरे हुए

सन् १९२९ का जिक्र है । डा. भगवानदास ने जो काशी के एक भारी दार्शनिक विद्वान हैं भारत माता के मन्दिर का शिलान्यास किया । पुण्य तीर्थ मालवीय जी महाराज तथा अन्य प्रतिष्ठत विद्वान वहाँ मौजूद थे । यहाँ पर २०० दिन तक एक बड़ा भारी यज्ञ हुआ जिसमें २० लाख गायत्री मन्त्र जपा गया, जप की पूर्णाहुति के दिन वहीं के एक सूखे हुए पेड़ में हरियाली आ गई, ऐसे ही एक दूसरे पेड़ में फल तक लग गये । इस बात को उपस्थित सभी संत, महंत एवं विद्वान लोगों ने अपनी आँखों से देखा था ।

कल्याण के संतन्त से नीचे ये कुछ घटनाएँ दी जा रही हैं ।

वाक्य सिद्धि

घरसोड़ा में जगत से दूर रह कर एक ऋषिराज गायत्री पुरश्चरण कर रहे थे । ७ वर्ष तक निराहार रहकर उन्होंने ४८ लाख मन्त्र जप के दो पुरश्चरण किए और इन अनुष्ठानों के करने से इन्हें वाक्य सिद्धि मिली थी, ये बहुत कम बोलते थे ।

ब्रह्म तेज

हरे राम ब्रह्मचारी नाम के एक तपस्वी, गंगा नदी के भीतर एक टेकरी पड़ गई थी, वहाँ सूर्योदय से ६ घड़ी पहले जाकर और आसन लगाकर सूर्य के सामने बैठ जाते और गायत्री का निरन्तर जप करते थे । उनका ब्रह्म तेज अवर्णनीय था, सारा शरीर तेज से दमकता था । उन्होंने अपनी सिद्धियों से अनेकों के दुःखों को दूर किया था ।

महाबुद्धिशाली पुत्र का जन्म

माण्डूक्य उपनिषद् पर कारिका रचने वाले महात्मा गौडपाद का जन्म उनके पिता के अन्न जल रहित सात दिन तक एक आसन पर बैठ गायत्री जप करने के फलस्वरूप हुआ था ।

बुद्धि की तीव्रता

इन्दौर के प्रसिद्ध विद्वान ओंकारजी जोशी बड़े प्रतिभावान् व्यक्ति हुए हैं । उनका मान स्वर्गीय महाराज तुकोजीराव भी बहुत करते थे और प्रायः उनके घर जाकर अपने साथ हवा खिलाने के लिए साथ ले जाते थे । वह जोशी जी अपना वृतान्त इस प्रकार बताया करते थे कि—''मैं बचपन में बड़ा मन्द बुद्धि था, स्मरण शक्ति बहुत कमजोर थी, पढ़ने के नाम पर दिमाग को काठ मार जाता था । एक बार हमारे बाबा जिन्होंने संन्यास लिया था मान्धाता (होलकर राज्य) के मन्दिर के पीछे की गुफा में गायत्री की योग साधना करते थे । अन्तिम समय में उन्होंने घर वालों को बुलाया और कहा अब हमारा

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शरीर छूटने वाला है तुम्हें कुछ माँगना हो तो माँग लो। घर के और किसी ने तो कुछ नहीं माँगा पर मैंने उनसे हाथ जोड़कर कहा—मेरी बुद्धि मन्द है । ऐसा आशीर्वाद दीजिए कि मेरी बुद्धि तीव्र हो जाय ।'' उन्होंने गायत्री मन्त्रित जल पिलाया और कहा—''तुम विद्वान हो जाओगे, उसी दिन से मेरी बुद्धि में असाधारण परिवर्तन हुआ और मेरी प्रतिभा इतनी तीक्ष्ण हो गई ।''

गायत्री की सिद्धियाँ

श्री विष्णुदत्त वानप्रस्थी, विरहल लिखते हैं कि मैंने सवा २ लाख गायत्री मन्त्रों के सात अनुष्ठान एक वर्ष के भीतर किये । सातों अनुष्ठानों में चन्द्रायण व्रत किए । चन्द्रमा की कलाएँ पूर्णमासी से लेकर अमावस्या तक घटती हैं इसी प्रकार चन्द्रायण व्रत में साधक का भोजन थोड़-थोड़ा करके घटता है अमावस्या और प्रतिपदा को चन्द्रमा बिल्कुल नहीं निकलता । इन दो दिन बिलकुल निराहार रहते हैं । इसके पश्चात् जैसे-जैसे चन्द्रमा थोड़ा-थोड़ा बढ़ता है वैसे ही वैसे आहार को बढ़ाते हुए पूर्णमासी को पूरा आहार लिया जाता है । ऐसे सात चन्द्रायण व्रत के साथ एक वर्ष कठिन तपस्या की । भूमि पर सोना, नंगे पाँव रहना, धोती दुपट्टा इन दो वस्त्रों से काम चलाना, नमक, मसाले, मिठाई आदि का त्याग, पूर्ण ब्रह्मचर्य, एकान्त सेवन, मौन, सवारी का त्याग, अपने हाथ से बनाकर भोजन बनाना, आदि तप साधना के नियमोपनियमों में अपने को कस कर आत्मजागरण की दिशा में पूरा-पूरा प्रयत्न किया गया ।

एक वर्ष में मेरे शरीर और मन का काया पलट हो गया । देह काफी दुर्बल हो गई, वजन करीब २० पॉण्ड घट गया, मुख और नेत्रों में तेज की चमक बहुत बढ़ गई थी । स्फूर्ति, चैतन्यता, हल्कापन और उत्साह बहुत रहता था । मन में से कुवासनाऐं और तृष्णाऐं निकल गईं थीं, चित्त इतना निर्मल हो गया था जैसे अबोध शिशुओं का रोगद्वेष रहित होता है । अपनी इस स्थिति से मैं परम सन्तुष्ट था और ऐसा लगता था कि जीवन मुक्त अवस्था प्राप्त करके ब्रह्मलोक में विचरण कर रहा हूँ । इस संसार में रहते हुए भी माया के बन्धनों से अपने को सब प्रकार निर्लिप्त अनुभव करता था । एक वर्ष की तपश्चर्या ने मुझे दृढ़ विश्वास करा दिया कि यदि जीवन को इस मार्ग पर उत्सर्ग कर दिया जाय तो एक जन्म में ही मुक्ति को प्राप्त किया जा सकता है ।

उन दिनों मेरा यश दूर-दूर तक फैल गया था । हमारे पहाड़ी प्रदेश में प्राण घातक सर्प और बिच्छुओं की अधिकता रहती है । आए दिन वे लोगों को काटकर उनका प्राण हरण करते रहते हैं। मैंने गायत्री मन्त्र से करीब एक दर्जन ऐसे साँप के काटे हुए लोगों को अच्छा किया जिनकी हालत बहुत खराब हो चुकी थी और जिनके बचने की आशा छूट गई थी । कितने ही लोग अपनी चोरी में गई चीजें पूछने आए मैंने उन्हें इतने सच्चे पते बताए कि खोई हुई चीजें ऐसे मिल गई मानो मैंने ही उन्हें वहाँ रखा हो । एक सज्जन को सट्टा बता दिया तो उसे १५००) का लाभ हुआ । कई व्यक्ति जो मुझसे मिलने आए थे, मैंने उनसे बिना पूछे उनके नाम पते कह दिए और उनके आने का प्रयोजन तथा उस प्रयोजन के सम्बन्ध में अपना अभिमत प्रकट किया । कितने ही लोगों को उनके गत जीवन की ऐसी गुप्त बातें बताईं जिनके उन्होंने आज तक किसी को प्रकट नहीं होने दिया था । कुछ के ऐसे भविष्य बताए जो भविष्य में जाकर बिल्कुल ठीक निकले । एक बार एक चोर हमारे गाँव में होते हुए निकला । उसका भेष भले आदमियों का सा था । मैंने उस गाँव के लोगों से कहा इसे पकड़ लो । यह चोर है । अमुक-अमुक जेवर, एक पिस्तौल और तीस कारतूस इसके पास हैं । लोगों ने उसे पकड़ लिया । पुलिस बुलाई गई। तलाशी में जो समान निकला चोरी का था उसको चार साल की सजा हुई ।

इस प्रकार के कार्यों से दूर-दूर तक मेरी ख्याति फैल गई । भीतर से आत्मा कहती थी कि इस झंझट से बचना चाहिए । पर मन न मानता था । धन और स्त्री को छोड़ना सहज है पर मान बड़ाई नहीं छूटती । खूब पूजा होती अनेकों चेले-चेली बन गये । प्रशंसकों, भक्तों, शिष्यों की भीड़ घेरे रहती थी, मैं फूला न समाता था, अपनी सिद्धि पर मुझे बड़ा गर्व था। अपने को किसी पहुँचे हुए सिद्ध से कम न समझता था ।

साधना का सिलसिला मन्द हुआ, तपश्चर्या भी छूट गई, भक्तों की चापलूसी से कानों को तृप्त करना और उनकी भेंट पूजा का आनन्द उठाना, एक मात्र यही कार्य अपना रह गया। यह क्रम अधिक दिन न चल सका क्योंकि धीरे-धीरे अपनी शक्ति घटने लगी । जो बातें बताना पहले चुटकियों के समान सुगम था वे बातें अब न रहीं । एक वर्ष का संचित कोष आखिर कब तक काम देता । तीन चार वर्ष में वह धीरे-धीरे करके चुक गया और मैं बिलकुल खाली हाथ होकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उसी स्थिति पर पहुँच गया जिस पर साधना से पहले था ।

मुझे अपनी भूल पर भारी पश्चात्ताप है । अब मेरे शिष्य उपहास करते हैं । साधना में मन नहीं लगता । उपहास कराने की बजाय स्थान छोड़कर यहाँ दूर परदेश में पड़ा हूँ । सोचता हूँ फिर गायत्री साधना करूँगा पर मान बड़ाई की गन्दगी ने मनोभूमि को इतना धूमिल कर दिया है कि चित्त एक स्थान पर नहीं जमता ! ईश्वर का भरोसा है, देखें वे नाव को किधर लगाते हैं ।

कुण्डलिनी में आत्म साक्षात्कार

श्री निर्मलानन्द संन्यासी रुद्रप्रयाग लिखते हैं कि पिताजी बड़े ईश्वर भक्त थे । उनको साधु महात्माओं में बड़ी श्रद्धा थी । जहाँ कहीं सुनपाते कि अमुक स्थान पर कोई सन्त-महात्मा, भक्त, विद्वान आए हैं तो वे वहाँ अपना काम छोड़कर पहुँचते थे और कई-कई दिन उनकी सेवा संगति में रहते थे । जब मैं कुछ बड़ा हुआ तो वे ऐसे अवसरों पर मुझे भी साथ ले जाने लगे। पिताजी को लोग 'भगतजी' कहकर पुकारते थे। 'भगत का लड़का' नाम से मुझे भक्त मण्डली के अधिकांश मनुष्य परिचित हो गये ।

कथा, कीर्तन, सत्संग, शंका समाधान, भजन, यज्ञ चर्चा को मैं बड़े ध्यानपूर्वक सुनता था । उसमें ईश्वर के विषय में प्रधान रूप से जिक्र होता था । स्कूल में पढ़ता था, ज्ञान चर्चा भी सुनता था । मेरे मन में यह बात दृढ़तापूर्वक बैठ गई कि ईश्वर के दर्शन करना ही जीवन की सबसे बड़ी सफलता है । १६ वर्ष की आयु में हिन्दी मिडिल पास किया । इसके बाद मैंने पढ़ना छोड़ देने और ग्रहस्थ में न पड़ने का निश्चय किया । एक दिन पिताजी से बिना कहे मैं महात्मा निर्गुणानन्द का शिष्य हो गया । गेरुए कपड़े धारण करके संन्यास ले लिया । पिताजी को जब यह पता चला तो उन्हें बड़ा दु:ख हुआ । उन्होंने मुझे वापिस लेने के भी बहुत प्रयत्न किए पर सफलता न मिली । इसी शोक में तीन मास बाद उनका देहान्त हो गया, माताजी की मृत्यु पहले ही हो चुकी थी । अब मैं पूर्ण स्वतन्त्र हो कर ईश्वर दर्शन के लिए प्रयत्न करने लगा ।

मेरा विश्वास था कि ईश्वर जिस पर प्रसन्न होते हैं। उसके सामने प्रकट होकर अपना चतुर्भुजी रूप दिखाते हैं । इस रूप को नेत्र भर कर देख लेना यही साधना की अन्तिम सफलता है । जो ईश्वर के दर्शन कर लेता है उसे सब ऋद्धि-सिद्धियाँ मिल जाती हैं । अपने इन विश्वासों से प्रेरित होकर मैं किसी ऐसे गुरु की तलाश में था जो मुझे भगवान के दर्शन करादे ।

ऐसे गुरुओं की तलाश में प्राय: सभी तीर्थ, साधु समाज तथा तपोभूमियाँ तलाश कर डालीं पर कहीं सन्तोष न मिला । बहुत से साधुओं की लंगोटियाँ धोईं, बहुतों के पैर दाबे और उन्होंने चींटी चुगाने से लेकर मरघट में शवसाधना करने तक जितने भी उपाय बताए वे सब किए पर सफलता की कोई किरण तक नहीं दिखाई पड़ी । हर जगह निराशा ही निराशा हाथ लगी।

मेरा विश्वास शिथिल होता जा रहा था । अविश्वास और खीज की मात्रा बढ़ रही थी । शान्ति लाभ के लिए बद्रीनारायण की यात्रा के लिए चल दिया । वापसी में रास्ते के तीर्थों के दर्शन करता आ रहा था कि रुद्र प्रयाग के पास एक महात्मा मिले, उनकी ओर मेरा मन विशेष रूप से खिंचा । कुछ दिन वहीं ठहर गया । अवसर पाकर मैंने अपने मन की व्यथा उनसे कह दी । उन्होंने मुझे वास्तविक ज्ञान दिया । दो महीने अपने पास रहकर ब्रह्म, जीव और प्रकृति का तत्व ज्ञान वेदान्त सिद्धान्त के अनुसार समझाया और भली प्रकार सन्तुष्ट करके यह हृदयंगम करा दिया कि जिस प्रकार के दर्शन चाहे गये हैं वे अवास्तविक हैं । परमात्मा का या तो कोई रूप नहीं या फिर जो कुछ यह दिखाई पड़ रहा है सब उसी का रूप है । उन्होंने यह भी बताया कि ईश्वर दर्शन का अनुभव आत्म-साक्षात्कार से होता है । आत्म प्राप्ति के लिए अपनी वृत्तियों को बहिर्मुखी होने से रोक कर अन्तर्मुखी बनाना चाहिए । इन बातों को समझने के अतिरिक्त उन्होंने आत्म साधना के लिए सब से उत्तम उपाय गायत्री का जप बताया ।

मैंने चतुर्मुखी ईश्वर के दर्शन की रट छोड़ दी और अपने अंत:करण में बैठे हुए प्रभु को ज्ञान दृष्टि से देखना आरम्भ किया । गायत्री के जप से मेरी भ्रान्ति कटती गई और अन्त:करण में बैठे हुए प्रभु को ज्ञान दृष्टि से देखना आरम्भ किया । गायत्री के जप से मेरी भ्रान्ति कटती गई और अन्त:करण में एक प्रकार का दिव्य प्रकाश बढ़ने लगा । इस प्रकाश में मुझे सुषुम्ना स्थित छ: चक्र दिखाई पड़ने लगे । एक के बाद एक चक्र प्रस्फुटित हुआ और उसकी पंखुरियाँ खिल कर फूल की तरह विकसित होती गईं । सुषुम्ना में होकर प्राण की गति चलने लगी । छहों फाटक खुलने लगे । बड़ा आनन्द आता । मैं इसी उत्साह-परिश्रम और विश्वास के साथ गायत्री साधना करने लगा । एक दिन जब साधना पर बैठा हुआ था तो प्रात:काल करीब

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चार बजे मुझे अपने कटि प्रदेश में अत्यन्त शुभ प्रकाश दिखाई पड़ा । उस प्रकाश से सूर्य की उपमा दी जा सकती है । इस प्रकाश में एक रक्त वर्ण सर्पिणी प्रकट हुई और मेरे शरीर में इस प्रकार लिपट कर फैल गई मानो आकाश से बिजली गिरी हो और उससे परिवेष्टित हो गया हो । कुछ देर के लिए मैं बेहोश सा हो गया । माला हाथ से छूट पड़ी । सारा शरीर बैंत की तरह थर-थर काँपने लगा । काफी समय पश्चात चित्त सावधान हुआ तो ऐसा लगा कि शरीर तो वही है पर मन बिल्कुल बदल गया है । पहले जो इच्छाऐं वृत्तियाँ काम करती थीं, उनके स्थान पर एक दिव्य दृष्टिकोण प्राप्त हुआ । हर प्रश्न को एक विशेष दृष्टि से देखने लगा । साधारण मनुष्यों द्वारा संसार की समस्याओं पर जिस ढंग से विचार किया जाता है वह ढंग मुझे बिलकुल बालकों का सा प्रतीत होने लगा । अब मैं अनुभव करता हूँ कि गीता की वह उक्ति जिसमें मुनि को रात में जागने वाला और दिन में सोने वाला कहा गया है, योगी के लिए कितना स्पष्ट सत्य है ।

कुछ जादूगरी जैसी बातें कर सकने की शक्तियाँ अपने अन्दर दिखाई देती हैं । पर उनका प्रदर्शन न करने की गुरु के सम्मुख ली हुई प्रतिज्ञा के कारण पथ भ्रष्ट होने से बच जाता हूँ । एक बार चतुर्मुखी ईश्वर के दर्शन से निराश होकर मैं विचलित होने जा रहा था । गायत्री के अवलम्बन ने उससे बचा लिया और अब वहाँ तक पहुँचा दिया है जहाँ से यात्रा का अन्तिम लक्ष्य निकट ही दिखाई पड़ रहा है । ईश्वर दर्शन की मेरी पुरानी इच्छा अब कुण्डलिनी के आत्म दर्शन करके तृप्त हो गई है ।

सुख शान्ति की दिव्य धारा

श्री विश्वनाथ दीक्षित, विष्णुपुर लिखते हैं कि हमारे बाबा श्री भगवान दीक्षित, बिठूर वाले महाराज खांडेराव के शिष्य थे । बहुत रोज तक उनके कोई सन्तान न हुई तो उनने महाराज जी की कृपा से गायत्री का अनुग्रह प्राप्त किया और उनके दो पुत्र हुए उन्हीं में से एक हमारे पिता गुरुदीन जी थे।

पिताजी अध्यापक थे । काकूपुर के सुप्रसिद्ध वेदपाठी विद्वान पं. अयोध्या प्रसाद जी से उन्होंने सस्वर यजुर्वेद पढ़ा था। पिताजी का नित्य नियम था कि प्रातःकाल ३ बजे उठकर गंगा स्नान करते और गायत्री उपासना में तल्लीन हो जाते । अपने हाथ छः छटाँक जौ के आटे की रोटी बनाकर एक समय भोजन करना, तखत पर सोना, खडाऊँ पहनना, गंगाजल पीना जैसे अनेक संयम नियमों को वे पालन करते रहे ।

उनका ब्रह्म तेज ऐसा था कि अफसर भी उठकर अपने हाथ से उन्हें कुर्सी देते थे । जीवन भर किसी ने उनका गंगातट से हटाकर तबादला नहीं किया । मुसलमान और अंग्रेज अफसर तक उनकी प्रतिष्ठा करते थे । एक अंग्रेज अफसर जो अपने बुरे स्वभाव के लिए बदनाम था एक दिन स्कूल का मुआयना करने आया, पिताजी जप पर बैठे थे । अंग्रेज लौट गया। दूसरे समय आंकर उनने अच्छा मुआयना लिखा और स्कूल के समय में भजन करने के लिए कोई शिकायत न की ।

सर्विस में तीन साल बाकी थे तभी उन्होंने इस्तीफा देकर भजन करना आरम्भ कर दिया था । अपने जीवन के अन्तिम अध्याय में माघ सुदी १२ को उन्होंने संन्यास लिया और फागुन बदी २ को गौ माता के सामने कुर्सी पर बैठ कर खुले मैदान में ब्रह्म जप करते हुए प्राण त्याग दिया ।

उनके आशीर्वाद से अनेकों का कल्याण हुआ, उनके प्रेरणा से अनेक दुष्ट लोग सज्जन बने, अनेक विपत्ति ग्रस्तों के संकट छूटे और अनेकों की मनोकामनाऐं पूर्ण हुईं । ग्रहस्थ आश्रम में वे रहते थे, परन्तु आचरण में वे संयासी के समान थे । माया ममता उन्हें छू भी न गई थी ।

पिताजी गायत्री के अनन्य उपासक थे । ब्राह्मण के लिए गायत्री को अनिवार्य मानते थे और कहते थे कि 'वेद माता का आश्रय लेकर साधारण ग्रहस्थ भी परम गति को प्राप्त हो सकता है ।' उन्होंने अपनी सन्तान (हम लोगों) को छोटेपन से ही गायत्री की शिक्षा दी जिस पर श्रद्धापूर्वक चल रहे हैं ।

पिताजी के पुण्य प्रताप से हम सभी लोग सुखी हैं मैंने तीन बार सवा लक्ष के अनुष्ठान किए हैं जिनसे समय-समय पर कई प्रयोजन सफल हुए । दो कन्याओं के विवाह बड़ी आसानी से, जमाने को देखते हुए सस्ते रेट पर समृद्ध घरों में हो गये । समयानुसार बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ हल हो जाती हैं और सन्देहास्पद कार्य पूरे हो जाते हैं । करीब आठ दस साल से प्रणव नाद की स्पष्ट ध्वनि सुनाई पड़ने लगी है, आज्ञा चक्र में स्फुरणा तथा प्रकाश की मात्रा बढ़ रही है । चित्त में बड़ी शान्ति रहती है । यह सब गायत्री की ही कृपा है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

मृत्यु से वापसी

डाक्टर रामनरायण भटनागर, इटौआ धुरा लिखते हैं कि विगत श्रावण की नाग पंचमी को मैं हरिद्वार गया । वहाँ १२ दिन तक ऋषिकेष गंगा तट पर निवास किया तत्पश्चात् जन्माष्टमी के अवसर पर मथुरा पहुँचा। कई दिन तक श्री गुरुदेव आचार्य जी के सम्पर्क में रहा । तदुपरान्त अपने सम्बन्धियों से मिलता हुआ आगरा होता हुआ धौलपुर गया ।

मथुरा से जब मैं विदा ले रहा था तब आचार्य जी चिन्तित, गम्भीर, उद्विग्न और विषाद पूर्ण मुद्रा में थे । उनका कंठ रुँधा हुआ था, विदा करते समय वे बड़े दुखी हो रहे थे । मैंने सोचा मेरे प्रति उनका जो प्रेम तथा वात्सल्य है उसी के कारण वियोग के समय उनकी यह स्थिति हो रही है । परन्तु मन न माना, उनकी समुद्र जैसी गम्भीर मनोभूमि में मेरे जैसे व्यक्ति के जाने की साधारण सी घटना का इतना प्रभाव नहीं हो सकता कि वे ऐसी अधीरता का परिचय दें । चित्त में नाना प्रकार के संकल्प-विकल्प उठने लगे बहुत विचारने पर भी कुछ समाधान न हो सका । बुद्धि ने हार मान ली और मैं धौलपुर पहुँचा रास्ते भर इस गुत्थी को सुलझाता रहा, पर वह सुलझ न सकी ।

धौलपुर पहुँचते-पहुँचते मैं बीमार पड़ गया । चिकित्सा चलती रही पर बीमारी न घटी । एक दिन रोग का तीव्र प्रकोप हुआ । सन्निपात, वमन, अतिसार के कारण मैं मृत्यु शैय्या पर पहुँच गया । मैं स्वयं डाक्टर हूँ । लक्षणों से विश्वास हो गया कि मेरी अन्तिम घड़ी है । अपने भानजे भगवान स्वरूप से मैंने लड़खड़ाती जवान में अपनी अन्त्येष्टि सम्बन्धी सब आदेश दे दिए और शीतल पसीने आने की विपन्न दशा में बेहोश हो गया ।

उधर स्वजन सम्बन्धियों को मेरा कोई समाचार न मिलने से बड़ी चिन्ता हो रही थी । बरेली वाली मेरी बहिन ने चारों ओर को पत्र भेजे और ज्योतिषी अशर्फीलाल जी को बुलाकर गृह दशा दिखवाई । ज्योतिषी जी ने बताया कि वह बड़े संकट में हैं यदि १०-१५ दिन में न आए तो उनके आने की आशा भी नहीं । कारण यह था कि छः ग्रह एक साथ मेरे जन्म स्थान में प्रवेश कर रहे थे और मार्केश बन रहा था ।

जिस समय मैं मृत्यु शैय्या पर पड़ा अन्तिम साँस ले रहा था । उसी समय गढ़वाल में मेरे मित्र पं. रामदत्त शर्मा को स्वप्न हुआ "मैं माला हाथ में लेकर गंगाजी को पार कर रहा हूँ ।" उनकी तुरन्त आँख खुई गई और अपनी पत्नी से कहा "अब डाक्टर साहब नहीं मिलेंगे" ।

जैसे कि पं. रामदत्त जी ने स्वप्न देखा था सचमुच ही मेरा प्राण इस शरीर से सम्बन्ध तोड़ रहा था । मुझे लगा कि मैं बहुत हल्का होकर ऊपर आकश में उड़ रहा हूँ । आश्चर्य, कौतूहल के साथ इस विचित्र दशा में पड़ा हुआ कुछ निर्णय न कर पा रहा था कि मैं किस अवस्था में हूँ, कहाँ हूँ, उड़ता हुआ कहाँ जा रहा हूँ । अकस्मात् इसी अवस्था में मुझे अनन्त तेजमयी, परम रूपवती, दिव्य वस्त्राभूषणों से सुसज्जित हंसारूढ़ वेदमाता गायत्री के दर्शन हुए । मैं उनके चरणों की ओर बढ़ा, उन्होंने मस्तक पर हाथ धर दिया। यह स्पर्श ऐसा सुखद था कि मैं सारी सुधि-बुधि भूलकर एक विचित्र आनन्द सागर में निमग्न हो गया।

कई घंटे बाद संज्ञा शून्य शरीर में चेतना फिर लौट आई। मृत्यु शैय्या पर करवटें बदलीं और धीरे-धीरे अच्छा होने लगा । कुछ दिन दवा दारू करते-करते ठीक हो गया और घर चला आया ।

मन में बार-बार प्रश्न उठता है कि उस माता की शरणागति से अलग होकर मुझे फिर क्यों यह जीवन जीने के लिए लौटना पड़ा ? गुरुदेव ने बताया है कि जो अपूर्णताएँ रह गई हैं उनको पूरा करने के लिए, कच्चेपन को पकाने के लिए, अभी कुछ समय की साधना और आवश्यक है । नया जन्म लेकर उस कमी को पूरा करना संदिग्ध था । इस समय जो सुविधा और परिस्थिति प्राप्त है, कौन जाने अगले जन्म में वे प्राप्त होतीं या न होतीं । इसलिए वर्तमान सुयोग से लाभ उठाकर जीवन लक्ष्य तक पहुँच जाना ही श्रेयष्कर था।

मथुरा से चलते समय आचार्य जी का उद्विग्न हो उठना अब मेरी समझ में आता है । वे अपनी सूक्ष्म दृष्टि से मेरा भविष्य देख रहे थे । उसी से उनका माता जैसा कोमल हृदय पिघल कर छलका पड़ रहा था । मृत्यु से वापिस लौटाने में उनका कितना प्रचण्ड प्रयत्न मेरे प्रति रहा, इसका उल्लेख करना उनका महत्त्व कम करना है ।

अज्ञानी बालक जैसे अपने अभिभवकों के आदेशों का अनुसरण करता है, उसी प्रकार माता की प्रेरणा और गुरुदेव की आज्ञा का संबल पकड़ कर चल रहा हूँ । प्राण माता के चरणों में रम रहे हैं, हर साँस से माता की पुकार उठती है । वे जहाँ मुझे पहुँचा देंगी वहीं मेरा कल्याण होगा ऐसी भावना के साथ गायत्री उपासना में संलग्न हूँ । अब यही एक मात्र मेरी जीवन साधना है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

माता का प्रत्यक्ष अनुग्रह

श्री रमेशचन्द्र जी दुबे, हटा लिखते हैं कि मैं अपनी कुटी में गायत्री का जप किया करता था, तब मुझे बड़े दिव्य अनुभव होते थे । एक रात्रि को मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि दक्षिण दिशा से कोई सितार पर गाता हुआ मेरी कुटी के निकट आया और कुछ देर ठहर कर उत्तर दिशा की ओर चला गया । उठकर देखना चाहा तो अपने को असमर्थ पाया। शरीर ऐसा जड़ हो गया था जैसे लोहे की जंजीरों से जकड़ा हुआ हो । जब वह संगीत काफी दूर चला गया तब उठ सका पर उस समय प्रत्यक्ष दर्शन के लिए कुछ न था । उन दिनों मुझे और भी तरह-तरह के अनुभव होते थे जैसे—अपने चारों ओर सिद्ध महात्मा घिरे दिखाई देना, उनके आदेश मिलना, शरीर पर बड़े-बड़े सर्प चढ़ते उतरने दिखाई देना, भयंकर हिंसक पशुओं का आक्रमण होना, सुन्दरी स्त्रियों का दूषित हाव-भाव करते हुए मेरे निकट फिरना, इस प्रकार के विघ्नों से विचलित न होकर मैंने अपनी साधना की मंजिल पूरी करली ।

साधना पूरी हो जाने पर अनेक प्रयोगों में मुझे आश्चर्य जनक सफलता दिखाई दी है । विशाक्त कीटाणुओं, रोग, दर्द, उन्माद आदि पीड़ित व्यक्तियों को अच्छा कर देना पथ भ्रष्टों में सुबुद्धि उत्पन्न होना, वस्तुओं का पारदर्शक दीखना आदि आदि ।

माता की कृपा से आत्म बल में अभिवृद्धि हुई है। मैं बहुत समय तक सन्त पुरुषों की संगति में रहा हूँ और साधनाओं सम्बन्धी जानकारी विशेष ध्यानपूर्वक प्राप्त करता रहा हूँ । उनके मन्तव्यों और अनुभवों का निचोड़ मुझे यही प्रतीत हुआ कि गायत्री से बढ़कर संसार में और कोई साधना नहीं है । योग विद्या की साधना के सम्पूर्ण साधन इसी महामन्त्र के अन्तर्गत आ जाते हैं ।

मैं लम्बे समय से माता की उपासना कर रहा हूँ । उसके फलस्वरूप आत्म शान्ति का प्रत्यक्ष अनुभव हुआ है। माता की दया दृष्टि अपने ऊपर हर समय परिलक्षित होती है जिसके कारण अन्तःकरण में बड़ा उत्साह रहता है ।

पतिदेव के तीन आदेश

श्रीमती सावित्रीदेवी दुबे, बालापुर अपना अनुभव बताते हुए लिखती हैं कि मेरे पतिदेव मृत्यु से पहले बीमार रहे थे । बीमारी असाध्य बताई जाती थी, इसलिए हम सबको और उन्हें भी यह विश्वास हो गया था कि अब उनका जीवित रह सकना कठिन है। विवाह को थोड़ा ही समय हुआ था । ग्रहस्थ में प्रवेश करने के साथ ही वैधव्य का वज्रपात सिर पर उपस्थित था । प्रभु की लीला बड़ी विचित्र है ।

वैधव्य हिन्दू स्त्री के लिए इतना बड़ा दुःख है कि वह उसको मृत्यु से कम कष्टकारक नहीं समझती । यदि प्राण देकर पतियों की जीवन रक्षा होनी सम्भव हो तो अनेक नारियाँ उसके लिए खुशी-खुशी प्रस्तुत हो जाएँ । पतिदेव बीमार थे, उन्हें अपनी बीमारी से जितना कष्ट था उसकी अपेक्षा कहीं अधिक कष्ट मुझे हो रहा था । छाती फटी जाती थी, कलेजा इठता रहता, रात्रि को निद्रा हराम हो गई। उन दिनों मुझ पर क्या बीत रही थी, इसका वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता । उस पीड़ा को केवल भुक्त भोगी ही जानता है।

मेरे मन में आया कि पति की मृत्यु के साथ ही अपने प्राण दे दूँ । अग्नि, विष, जल आदि किसी का भी आश्रय लेकर प्राण त्यागे जा सकते हैं । मेरे विचार दृढ़ निश्चयी हो गये ।

पतिदेव की आयु तो थोड़ी ही थी पर उनके विचार बड़े सुलझे हुए थे । सच्चे ब्राह्मण की तरह गायत्री का जप करना उनका नित्य नियम था । बीमारी के दिनों में भी वे रोग शैय्या पर पड़े-पड़े माता का ध्यान और जप करते रहते थे । उन्हें मेरे मन की बात न जाने कैसे मालूम हो गई । सम्भवतः गायत्री माता ने ही मेरे गुप्त निश्चय को उन्हें सुझा दिया था ।

एक दिन एकान्त पाकर उन्होंने मुझसे कहा—"तुम मुझे पति परमेश्वर कहा करती हो, तो तुम्हारा यह भी कर्त्तव्य है कि तुम मेरा कहना मानो।" मैंने उत्तर दिया—"आप जो भी कहते हैं मैं सदा मानती हूँ, फिर आप ऐसी क्या बात कहते हैं । कोई भूल हुई हो तो मुझे बताइए।" उनकी आँखों में आँसू भर रहे थे । बोले प्रतिज्ञा करो कि मेरी बात मानोगी । मैंने कहा—ईश्वर साक्षी है, आपकी आज्ञा का कभी उल्लंघन न करूँगी।

उन्होंने धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ शब्दों में कहना शुरू किया—"मेरा अब अन्तिम समय निकट है । कुछ ही दिन का मेहमान हूँ । मृत्यु पर किसी का बस नहीं चलता, मैं भी लाचार हूँ । पर तुम्हें तीन आदेश देता हूँ उन्हें पालन करोगी तो मेरी आत्मा को शान्ति मिलेगी ।

(१) अपने शरीर को नष्ट करने का कोई प्रयत्न मत करना क्योंकि कलियुग में सती होने का घोर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

निषेध है । सतयुग में योगाग्नि प्रकट कर सकने वाली स्त्रियाँ बिना कष्ट के शरीर त्यागती थीं पर इस युग में यह सम्भव नहीं । घोर कष्ट के साथ ही इन दिनों आत्म हत्या होती है जिसका पाप मृत पति पर भी पड़ता है और वह नरक में जाता है । साथ ही जीवित मनुष्य के जलने के पाप से सती होने में उत्साह देने वालों को भी रौरव नरक का भागी बनना पड़ता है। इसलिए तुम आत्म हत्या करने की भूल कदापि न करना ।

(२) शेष जीवन विद्या पढ़ने पढ़ाने में लगाना । स्वयं अपनी ज्ञान वृद्धि करना, आवेश में आत्मघात कर लेना सहज है पर जीवन भर तिल-तिल जलने का तप करना कठिन है । तुम सत्य के लिए तप करते हुए जीवन बिताना ।

(३) गायत्री माता का अंचल मत छोड़ना, वह तुम्हारी सगी माता के समान रक्षा करेगी ।'' यह तीन आदेश देकर वे चुप हो गये ।

मेरा गला रुँध रहा था, मुख से शब्द न निकलते थे पर अपनी सारी श्रद्धा को समेट कर उन्हें आश्वासन दिया कि आपके वचन मेरे लिए परमेश्वर के वचन होंगे । पतिदेव ने मेरी मूक वाणी सुनली । सन्तोष की लम्बी साँस छोड़ते हुए उनके चेहरे पर एक हलकी प्रसन्नता दौड़ गई ।

दो चार दिन बाद ही उनकी मृत्यु हो गई । सांसारिक क्रिया कर्म करके उनका देह समाप्त कर दिया गया । पर मुझे वे अभी तक जीवित मालूम पड़ते हैं । ऐसा लगता है मानो सामने खड़े हुए तीन आज्ञाएँ अभी भी दे रहे हैं । उनके आदेश का पालन करते हुए लम्बा समय बीत गया, जितनी साँसें शेष हैं वह भी इसी मार्ग में व्यतीत हो जाएँगी । गायत्री उपासना मेरे लिए पति परमेश्वर का आदेश है । कई लोग कहते हैं कि स्त्रियों को गायत्री न जपनी चाहिए, मैं कहती हूँ मेरे परमेश्वर से अधिक सही निर्णय और किसी का नहीं हो सकता । माता मेरे रोम-रोम में सतीत्व बनकर निवास करती हैं । उन्हें मुझसे केवल मृत्यु ही छुड़ा सकती है ।

गायत्री साधना मेरी प्रवृत्ति

पं. सूर्यदेव शर्मा वानप्रस्थी, मानिकपुर ने अपना अनुभव लिखते हुए कहा है कि जब मैं ४६ वर्ष की अवस्था में पहुँचा तब मेरे मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि मेरे पूर्वज लोग ४५ से ५० वर्ष की आयु में ही स्वर्गवासी होते रहे हैं, अब मुझे लगभग उसी आयु में इस असार संसार को त्यागना पड़ेगा । मेरे पिताजी पूर्व में मुझसे कहते थे कि जो ब्राह्मण सन्ध्या गायत्री से वंचित रहता है वह शूद्र के तुल्य होता है । इससे मैं प्रथम ही सन्ध्योपासना तथा गायत्री १०८ बार जपा करता था परन्तु इस विचारधारा में पड़ने से मेरा चित्त इस तरफ विशेष रूप से झुका । ग्रन्थावलोकन करने से भी गायत्री की महिमा बहुत बड़ी प्रतीत हुई । एक सुदिन निश्चित कर मैंने प्रथमतः पूर्वार्जित पाप का प्रायश्चित्त विधानोक्त किया । शास्त्रों में यह विधान आया है कि सवा लक्ष गायत्री जपने तथा हवन, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन कराने से इस जन्म के पातक, उपपातक तथा महापातक नष्ट हो जाते हैं ।

इन सब बातों को समझ-बूझकर मैंने नियमित रूप से किसी माह में तीन हजार प्रति दिवस तथा किसी माह में चार हजार प्रति दिवस जप करना आरम्भ कर दिया । उस समय मैं प्रचुर कष्टों से वेष्टित था । कतिपय ग्रामीण सज्जन तथा और लोग मेरा अनिष्ट करने पर दिलोजान से उतारू थे। परन्तु इसकी उपासना करने से दिनोदिन वे लोग स्वयं ही शान्त होते गये तथा उन लोगों की यह विचारधारा मेरे लिए प्रेम में परिणित हो गई, मुझे प्रतीत हुआ कि मेरी सब बुराइयाँ गायत्री माता की कृपा से दूर हो गयीं । जो कुछ भी जप मैंने किया सो सब निष्काम भाव से ही किया । सकाम भाव से नहीं । सकाम भाव में साधना करने से साधकों को निश्चित पदार्थ ही मिलता है न कि दुष्प्राप्य वस्तु ।

अधुना में वानप्रस्थ आश्रम में हूँ गायत्री उपासना के कुछ ही दिनों के पश्चात् मेरी बुद्धि और स्वभाव में परिवर्तन हो गया जिससे मेरे हर्ष की सीमा न रही । धन्य गायत्री माता की कृपा, उन्हीं की कृपा से मेरे उद्धार होने की सम्भावना है। सात्विक आचार-विचार तथा आहार-व्यवहार से साधकों को विशेष लाभ होने की आशा है मुझे भी ऐसा ही हुआ ।

पहले मैं गृहस्थ आश्रम में था तो खटाई, मिठाई, तेल, नमक छोड़ा । आमवात; गठिया होने पर वैद्यों ने राय दी कि थोड़ा सा सैन्धा नमक ले लो । ११ वर्ष के बाद खाना शुरू किया, मगर जब मैं गृहस्थ आश्रम छोड़कर वानप्रस्थ आश्रम में आया तो तरकारी में मसाला और पकवान खाना छोड़ दिया उबली हुई तरकारी और भात रोटी खाने लगा । मसाला छोड़ने से मुझे गर्मी की कमी मालूम हुई दूसरे मन भी स्थिर हो गया । ५ वर्ष पकवान भी नहीं खाया । बगैर मसाला पड़ी तरकारी उसीजी ही खाता हूँ । गायत्री उपासना और सात्विक भोजन के फलस्वरूप मैं आमवात,

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गठिया रोग से भी मुक्त हो गया और आजकल पूर्ण स्वस्थ और सुखी जीवन व्यतीत करता हूँ । इस समय वानप्रस्थ आश्रम में समय व्यतीत कर रहा हूँ ।

शरीर का आमवात गया ही तथा आए दिन बनी रहने वाली अस्वस्थता से छुटकारा भी मिला, साथ ही गायत्री माता ने मेरे मानसिक रोगों और आन्तरिक दोषों को भी शुद्ध किया है । शरीर की तरह मन भी बड़ा हलका रहता है, चित्त में शान्ति, स्फूर्ति तथा प्रफुल्लता अनुभव होती है । वृद्धावस्था आ गई है पर गायत्री माता की गोद में बैठकर मैं अपने को एक बालक की तरह प्रसन्न अनुभव करता हूँ ।

यज्ञ आयोजन की पूर्ति

डाक्टर भगवानदास, हटा ने लिखा है कि गायत्री उपासना में मेरी बहुत दिनों से रुचि है । निर्धारित विधि विधान के साथ मैं उस महामन्त्र की आराधना करता हूँ । नित्य नियमित आराधना के अतिरिक्त नव रात्रियों में २४ हजार के लघु अनुष्ठान किया करता हूँ।

इस साधना के फलस्वरूप मेरे स्वभाव में आकाश पाताल का अन्तर हुआ है । जो बुराइयाँ पहले मुझमें थीं, वे अब धीरे-धीरे करके सब समाप्त हो गई हैं और ऐसे नये गुणों का आविर्भाव हुआ है जिनसे मुझे स्वयं हार्दिक प्रसन्नता है और मेरे शुभ चिन्तक उन्हें देखकर फूले नहीं समाते ।

पिछली बार जब मेरा अनुष्ठान चल रहा था तब आर्थिक गड़बड़ी के कारण कुछ अड़चन आ रही थी। मैं चाहता था कि अनुष्ठान के अन्त में एक अच्छा समारोह ब्रह्म भोज, दान एवं गायत्री साहित्य का प्रसाद वितरण करूँ । पर आर्थिक स्थिति अनुकूल न थी, जितना खर्च करना चाहता था उतने की व्यवस्था नहीं हो पा रही थी ।

इसी चिन्ता में बैठा हुआ था कि मेरे एक बुजुर्ग मित्र गोविन्दराम जी आए और चिन्ता का कारण पूछने लगे । मैंने सब बात कह दी । उन्होंने गम्भीर होकर कहा तुम चिन्ता मत करो । माता के लिए जो कोई सच्चे हृदय से कुछ खर्च करना चाहता है, उसकी वे पूर्ति कर देती हैं । तुम अपना कर्त्तव्य उत्साहपूर्वक करते जाओ कोई काम रुका न रहेगा ।

अनुष्ठान पूर्ति में केवल तीन दिन शेष रह गये थे । कुछ उपाय सूझ न पड़ रहा था, अकस्मात् ऐसा हुआ कि कई चिन्ताजनक रोगों के रोगियों की चिकित्सा के लिए बुलावे आए । दिन भर दौड़ धूप करनी पड़ी, रात को २ बजे उनसे छुटकारा मिला । पर चिकित्सा में आशाजनक सफलता मिली । फलस्वरूप मुझे एक दिन में ही ९० रुपए प्राप्त हुए, शेष जो कमी थी वह भी पूरी हो गई और इच्छानुकूल उत्साह के साथ अनुष्ठान यज्ञ पूर्ति का दान पुण्य किया ।

तब से माता के चरणों पर श्रद्धांजलि चढ़ाने में मुझे बड़ा उत्साह रहता है । जितना मैं इस मार्ग में खर्च कर देता हूँ यह आगे पीछे माता के द्वारा निश्चित रूप से पूरा हो जाता है । अपने साधना काल में एक बार मुझे अर्धनिद्रित अवस्था में माता का साक्षात्कार भी हुआ । वे गुलाबी साड़ी पहने अत्यन्त दिव्य स्वरूप थीं, हाथ में कुछ लिए हुए मुझे दर्शन दिया । मैं उनसे नत मस्तक होकर कुछ प्रश्न कर रहा था । जिसे सुनकर काकाजी ने मुझे जगा दिया । जगाने पर मुझे बहुत अफसोस हुआ कि न जाने माता क्या कर रही थीं, मैं उसे सुन न पाया ।

एक बार मेरे प्रेमी पं. घनश्याम जी पाण्डे ने सवालक्ष का अनुष्ठान किया उन्होंने स्वप्न में देखा कि माता गायत्री हंस पर सवार होकर मेरे साधना गृह में पदार्पण कर रही हैं । समय-समय पर जो माता की कृपा का परिचय प्राप्त होता रहता है उससे मेरी श्रद्धा निरन्तर बढ़ रही है ।

संसार में जीवन यात्रा बड़ी कष्ट साध्य है, मनुष्य अकेला हाथ पैर पीटता है और अनेक बार सफलता असफलता के झोंकों में डूबता-उतराता रहता है । परन्तु जिसने अपने लिए गायत्री रूपी नौका में स्थान बना लिया है उसके लिए मार्ग निश्चित है, उसे असफलता की कभी चिन्ता नहीं होती, क्योंकि गायत्री उपासक का विश्वास होता है कि चाहे मेरी मनोवांछित वस्तु, किसी कारणवश प्राप्त भले ही न हो पर माता कोई न कोई ऐसा मार्ग, साधन एवं उपाय अवश्य उपस्थित कर देती हैं जिससे जीवन यात्रा सुविधापूर्वक चलती रहे । मुझे माता की दैवी सहायता और प्रेरणा पर सदा भरोसा रहता है ।

तरण तारिणी माता

श्री हरिदयाल जी श्रीवास्तव, गोहाड़ का कहना है कि धार्मिक प्रवृत्ति मुझे अपने माता-पिता से विरासत में मिली । वे दोनों ही बड़े धार्मिक, साधु सेवी, चरित्रवान और प्रभु परायण थे । उनकी छाप मेरे ऊपर पड़ी। सत्साहित्य के स्वाध्याय और सत्पुरुष के सत्संग से यह प्रवृत्ति और भी बढ़ी। मैं आत्म-कल्याण का मार्ग, प्यासे चातक की तरह ढूँढ़ने लगा अनेक सूत्रों से मुझे एक ही उपाय दृष्टिगोचर हुआ—गायत्री उपासना । अखण्ड ज्योति के प्रकाश में मुझे वह मार्ग भी दिखाई दिया जिस पर चलकर पिता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से उस दसगुनी ममता रखने वाली माता की आनन्दमयी गोद प्राप्त हो सकती है ।

एक लम्बे अर्से से मैं गायत्री उपासना में प्रवृत्त हूँ। मुझे हर घड़ी यह अनुभव होता रहता है कि कोई दिव्य शक्ति शरीर को पार करती हुई अन्त:करण में प्रवेश कर रही हे । कई बार स्वप्न में और कई बार अर्ध जाग्रत अवस्था में माता का साक्षात्कार हुआ है । उन क्षणों के आनन्द की याद करके आज भी देह रोमांचित हो जाती है ।

सभी कामनाएँ और लालसाएँ शान्त हो चुकी हैं । इस वृद्धावस्था में केवल एक मात्र यही इच्छा है कि जन्म मरण की फाँसी पर बार-बार गला न फँसाना पड़े। भव सागर में बार-बार न डूबना उतरना पड़े, इसी उद्देश्य के लिए माता का अंचल पकड़े हुए हूँ और उनकी गोदी में चढ़ने के लिए मचल रहा हूँ । गुरुदेव का आश्वासन है कि जब तक यह लक्ष्य पूरा न हो जायेगा तब तक शरीर समाप्त न होगा ।

इस साधना काल में दो बार मेरे प्राण अपनी यात्रा पूरी करने को तैयार हुए हैं, पर किसी गुप्त शक्ति द्वारा वापिस लौटा लिए गये हैं । मैं अपना प्राण ब्रह्म रंध्र में होकर ले जाना चाहता हूँ ताकि जीव ऊर्ध्व गति को प्राप्त हो, पर वह स्थिति प्राप्त नहीं हो पाई है, इसलिए शेष कमी को पूरी करने के लिए प्राण धारण किए रहना उचित प्रतीत होता है और इस पूर्ति तक के लिए मेरे गुप्त सहायक बार-बार मेरी यात्रा को रोक भी देते हैं ।

गत वर्ष सितम्बर मास में मैंने मथुरा जाने का निश्चय किया । ता. १७ को जाना था पर ता. १५ को अचानक ऐसा आकस्मिक शारीरिक आघात लगा कि लेने के देने पड़ गये । पहले दिल की धड़कन बढ़ी फिर तीव्र ज्वर फिर बेहोशी, इठन, वेदना, का कोई ठिकाना न रहा । पसीने से सारा शरीर लथपथ हो गया । वैद्य और डाक्टर बुलाए गये । स्थिति देखकर सभी गम्भीर हो रहे थे । मुझे स्पष्ट दीखने लगा कि अब बचना मुश्किल है । चारपाई से उठाकर जमीन पर ले लिया गया । मैंने टूटे -फूटे अपने शब्दों तथा संकेतों की सहायता से गायत्री का अपना पूजा चित्र मँगाया उसे श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया और अन्तिम विदा माँगी । प्राण वायु सारे शरीर में से एकत्रित होकर मस्तिष्क के मध्य में एकत्रित हो गई परन्तु कई बड़े-बड़े झटके लगने पर भी वह त्रिकुटी से आगे नहीं बढ़ सकी कुछ देर अचेतन अवस्था में इसी प्रकार पड़ा रहा । फिर देखा कि जीव वापिस लौट रहा है और जिस शरीर में से खिंच गया था उसमें पुन: वापिस लौट रहा है । आँखें खुलीं तो आकाश में गुरुदेव की प्रतिमा उड़ रही थी ।

धीरे-धीरे मैं अच्छा हो गया । अच्छा होकर मथुरा गया । मालूम हुआ कि अपूर्णता को पूर्ण करने में दूसरा जन्म लेना पड़ता और बहुत समय लग जाता इस झंझट भरी अनिश्चितता से बचाने के लिए मुझे रोक लिया गया है । प्रभु की लीला अपार है । उनकी कृपा की महिमा किस प्रकार कही जाय ।

दूसरी बार फिर भी उपरोक्त आघात से मिलता जुलता शारीरिक आघात लगा । १५ लंघन हुए पर इस बार पहले की अपेक्षा अधिक शान्ति रही । दो बार जीवन बच गया । जो कमी थी वह सन्तोषजनक रीति से पूरी होती जा रही है। बताए हुए साधनों पर चलते हुए मैं ब्रह्म द्वार को खोल सकूँगा और जीवन को सार्थक कर सकूँगा ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है । मुझ जैसे तुच्छ व्यक्ति को माता तार सकती है तो जो अधिक श्रद्धा और अधिक तपस्या करने वाले हैं वह भी अवश्य तप सकते हैं ऐसा निश्चित है ।

वर्तमान समय में मनुष्य अनेक झंझटों में घिरा रहता है, न तो परिस्थितियाँ अनुकूल होती हैं और न चित्त पर जमे हुए पुराने कुसंस्कार आत्मकल्याण के मार्ग में चलने देते हैं । इतने पर भी माता गायत्री में यह विशेषता है कि वे अपने भक्त को कल्याण मार्ग की ओर बलपूर्वक खींच ले जाती हैं । मुझे अपने बारे में भी ऐसा ही प्रतीत होता है; लगता है कि कोई अज्ञात शक्ति अपने चरणों में आश्रय देने के लिए अपने आप घसीटती लिए जा रही है और मैं चुपचाप उसके पीछे-पीछे चला जा रहा हूँ ।

नारी प्रतिष्ठा का पुण्य आन्दोलन

श्रीमती गोमती देवी शर्मा अध्यापिका लिखती हैं कि भारतीय नारी में असाधारण महत्ता है क्योंकि मानव जाति की उद्गम गंगोत्री नारी ही है । ऋषियों ने नारी को प्रत्यक्ष देवताओं में गिना है और उसके प्रति पूज्य भावना रखने का मनुष्य मात्र को उपदेश दिया है । बेटी-बहिन और माता के तीनों ही रूप में नारी को भारतीय पुरुष सदा से दैवी भावनाओं के साथ सर झुकाता चला आ रहा है ।

यह पूज्य भावना ही हिन्दू जाति की वह श्रेष्ठता थी कि जिसके कारण वह संसार का सिरमौर रहा । भगवान मनु ने स्पष्ट शब्दों में कहा था—''जहाँ स्त्रियों की पूजा होती हे वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ वे तिरष्कृत होती हैं वहाँ (उन्नति के) सारे प्रयत्न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निष्फल होते हैं ।'' विकार पूर्ण वासना की, दूषित दृष्टि की, यहाँ सदा से निन्दा की जाती रही है । 'रमणी' नारी का घृणित और विकृत रूप है । स्त्री की जहाँ शंकराचार्य प्रभृति महात्माओं ने निन्दा की है, उससे दूर रहने का आदेश किया है, वह रमणी रूप ही है माता के रूप में भगवती आद्य शक्ति की स्वयं शंकराचार्य जी ने भी अत्यन्त भावनापूर्ण स्तुति की है ।

आज लोगों की आँखों में कीचड़ भर गई है, वे वस्तु स्थिति को नहीं देख पा रहे । रमणी और कामनी की विषैली प्रति मूर्ति बनाकर नारी को देखा जा रहा है, आज सिनेमा, नाटक, उपन्यास, चित्र, संगीत, कला आदि में स्त्री को विलास सामिग्री के रूप में उपस्थित किया जा रहा है । तरुणी, नवयौवना, अर्ध नग्न, विलासिनी, विकार ग्रस्त, भाव भंगिमा वाली नारी का आज पुरुष समाज चिन्तन करता है, उससे इन्द्रिय सुख की ही कामना करता है । बेटी का वात्सल्य, बहिन का सौहार्द्र, माता का आराधन, लोग भूलते से जा रहे हैं ।

इस दूषित दृष्टि का कितना दुष्परिणाम होता है इसे आज का मन्द बुद्धि समाज नहीं समझता, प्राचीन काल के ऋषि मुनि समझते थे । शारीरिक निरोगता, बलिष्ठता, दीर्घ जीवन, मानसिक सन्तुलन, पारवारिक सुव्यवस्था, सुसन्तति, पारस्परिक विश्वास, रक्त शुद्धि, पितृ भक्ति, पवित्रता, आदि लाभों से मनुष्य जाति तभी लाभान्वित हो सकती है जब दृष्टि में पवित्रता हो। आत्मिक लाभ तो इस तत्व के बिना हो ही नहीं सकता । नारी जैसे पूजनीय परम पवित्र तत्व के प्रति कुविचारों की दोष दृष्टि रहेगी तो उसका यह आध्यात्मिक तिरस्कार समाज का नाश कर देगा । उसे पतन की गर्त में गिरने से कोई बचा न सकेगा । भगवान मनु का वचन असत्य नहीं हो सकता कि ''यदि नारी का तिरस्कार होगा तो (उन्नति के) सब प्रयत्न निष्फल होंगे ।''

अखण्ड ज्योति द्वारा गायत्री प्रचार का जो आन्दोलन चलाया जा रहा है, उसमें मुझे सर्वोत्कृष्ट लाभ यह दिखाई पड़ता है कि ईश्वर की, नारी (गायत्री) के रूप में आराधना करने से स्त्री जाति के प्रति पवित्रता, आदर और श्रद्धा की भावना का जन समाज में विकास होगा ।'

मेरी गायत्री आन्दोलन के प्रति बड़ी श्रद्धा है । शक्ति भर इस पुण्य कार्य में भाग लेती हूँ । मेरा विश्वास है कि आचार्य जी का यह प्रयत्न भारतीय नारी जाति के लिए वैसा ही उन्नायक सिद्ध होगा जैसा कि पूज्य बापू का हरिजन आन्दोलन करोड़ों मूक मानवों के प्राण संचालन करने वाला सिद्ध हुआ । मैं उस सुन्दर भविष्य का आशाजनक स्वप्न देखती हूँ जबकि पुरुषों के हृदय में नारी के प्रति पुण्य भावनाएँ रहेंगी और फलस्वरूप यह भारतभूमि सम्पूर्ण सुख-साधनों से परिपूर्ण होकर देव भूमि बनेगी । भगवान करे यह गायत्री आन्दोलन सफल हो ।

●●●

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विपत्ति निवारिणी गायत्री

समस्त उलझनों का एक हल

आज मनुष्यों के व्यक्तिगत तथा सामूहिक जीवन में अनेक प्रकार की समस्याएँ उपस्थित हैं, अनेक गुत्थियाँ उलझी हुई हैं, हर एक उलझन ऐसी विषम है कि उसकी परेशानी से सब कोई चिन्ता-ग्रस्त एवं दु:खी हो रहा है। इन कठिनाइयों को हल करने के लिए नाना प्रकार के उपाय काम में लाये जा रहे हैं, पर सफलता की कोई आशा-किरण दिखाई नहीं पड़ती।

समस्त कठिनाइयों, व्यथाओं और वेदनाओं का एक ही कारण है और उनके निवारण का उपाय भी एक ही है। कांटा चुभना दर्द का कारण है तो उसे निकाल देना ही दर्द से छुटकारा पाने का उपाय है। मनोवृत्तियों का संकुचित स्वार्थग्रस्त हो जाना ही उलझनों का कारण है। संसार में तब तक शान्ति स्थापित नहीं हो सकती जब तक कि मनुष्य का अन्त: करण परमार्थ की ओर न झुके, सात्विकता, धार्मिकता उदारता को न अपनाये।

गायत्री सात्विकता की प्रतीक है। गायत्री भक्त होने का अर्थ है—जैसे जीवन को सतोगुणी, धार्मिक बनाने का लक्ष स्थिर करना। गायत्री उपासना का अर्थ है—उन आध्यात्मिक उपचारों का अवलम्बन करना है जो अन्त:करण में सतोगुणी परमार्थ भावना का बीजारोपण करते हैं। गायत्री का आश्रय लेने का तात्पर्य बुद्धि को सात्विकता की गोद में डाल देना है, जो मनुष्य के समस्त विचारों, गुणों, स्वभावों और आचरण को दिव्य तन्त्रों से परिपूर्ण कर देती है। इस प्रक्रिया को अन्तस्तल में गहराई तक प्रतिष्ठित करने से मनुष्य उस स्थिति में पहुँच जाता है जिससे कि उसके सामने कोई उलझन शेष नहीं रहती। आइए, अब जीवन की प्रमुख समस्याओं पर विचार करें और देखें कि गायत्री रूपी सद्बुद्धि को अपना लेने पर वे किस प्रकार सुलझ सकती हैं ?

(१) विश्व युद्ध की घटनाएँ आकाश में घुमड़ रही हैं। कह नहीं सकते कि किस क्षण विस्फोट हो जाय और परमाणु बम दुनियाँ को तहस-नहस कर दे, इन युद्धों का कारण साम्राज्यवादी लालसायें ही हैं। एक देश दूसरे देश पर अपना प्रभुत्व जमाने, उनका शोषण करने की मनोवृत्ति को छोड़ दे और न्याय पर दृढ़ रहे तो इन युद्धों का कोई कारण नहीं रह जाता।

यदि आज विश्वराजनीति में गायत्री प्रतिपादित 'न्याय' का समावेश हो जाय तो युद्ध की तैयारी पर जो शक्ति लगी हुई है वह रचनात्मक कार्यों में लगकर जीवन की सुविधाओं को बढ़ावें, और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के आधार पर विश्वबन्धुत्व, सहयोग तथा प्रेमभाव से समुचिति विकास हो सकता है। महायुद्ध की आशंका से आज समस्त संसार संत्रस्त है, इस त्रास को कूटनीतिक माथापच्ची से नहीं, गायत्री की निर्मल भावनाओं द्वारा सुलझाया जा सकता है।

(२) विश्व युद्ध के बाद दूसरी समस्या खाद्य पदार्थों की कमी की है। कुछ देशों को छोड़कर प्राय: सर्वत्र अन्न की कमी पड़ रही है। सिंचाई, रासायनिक खाद, वैज्ञानिक यन्त्रों आदि की सुविधा बढ़ाकर अधिक अन्न उपजाने का प्रयत्न किया जा रहा है। इससे कुछ तात्कालिक सुधार भले ही हो जाय, पर स्थाई सुधार न होगा, क्योंकि जनसंख्या जिस तेजी से बढ़ रही है, उसकी पूर्ति करने लायक शक्ति पृथ्वी में नहीं है । विशेषज्ञों का कहना है कि कृषि योग्य सारी जमीन पर वैज्ञानिक कृषि कर लेने से भी सिर्फ इतनी उपज बढ़ सकती है जो आगामी चालीस वर्षों तक लोगों का पेट भर सके। इसके बाद फिर भी भुखमरी फैलेगी।

इस प्रश्न का एकमात्र हल सन्तान निग्रह है। सभी बुद्धिमान एक स्वर से यह स्वीकार करते हैं कि सन्तान पैदा करना रोका जाय। इसके लिए गर्भपात, औषधियाँ, रबड़ की थैली आदि उपाय काम में लाये जा रहे हैं, पर इनका परिणाम और भी भयंकर होगा। अनैतिकता एवं व्यभिचार में वृद्धि होने से रहे बचे स्वास्थ और भी नष्ट हो जायेंगे। सन्तान निग्रह का सर्वश्रेष्ठ उपाय ब्रह्मचर्य है जो तभी सम्भव है जब गायत्री भावना के अनुरूप नारी के प्रति विकार दृष्टि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को त्यागकर पूज्य भाव स्थापित किया जाय। इससे खाद्य संकट की समस्या हल होगी, जनसंख्या की बृद्धि रुकेगी, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य सुधरेगा। गायत्री की साप्ताहिक उपवास साधना को यदि समर्थ लोग अपनालें तो आज की आवश्यकता पूरी हो जाय और विदेशों से एक दाना भी अन्न न माँगना पड़े।

(३) तीसरी व्यापक कठिनाई अनैतिकता की है। ठगी, विश्वासघात, वचन भंग, खुदगर्जी, वे मुरब्बती, अहंकार, परपीड़न, कर्त्तव्य त्याग की बुराइयाँ बेतरह बढ़ रही हैं। सरकारी कर्मचारी, व्यापारी, धर्म प्रचारक, नेता मजदूर आदि सभी वर्गों में इस प्रकार की दूषित मनोवृत्ति बढ़ रही है। अविश्वास असन्तोष और आशंका से हर एक का मन भारी हो रहा है।

इस स्थिति को कानून, पुलिस, फौज या सरकार नहीं सुधार सकती। जब अन्तर्रात्मा में ईश्वरीय वाणी जागृत होकर धर्म भावना, कर्त्तव्य निष्ठा, ईमानदारी, त्याग, प्रेम और सेवा की भावना पैदा करेगी तभी व्यापक अनैतिकता की दुःखदायक स्थिति का अन्त होगा, यह परिवर्तन गायत्री की आत्म-विज्ञान सम्मत प्रक्रिया द्वारा सुगमतापूर्वक सम्भव हो सकता है।

पाप, अनाचार, कुकर्म एवं दुर्बुद्धि के कारण ही मनुष्य नाना प्रकार के दुःख भोगता है। जब जड़ कट जाती है, पापवृत्ति में परिवर्तन हो जाता है, तो नाना प्रकार के दैविक, दैहिक, भौतिक दुःखों से मानव जाति को सहज ही छुटकारा मिल जाता है। कलह, संघर्ष द्वेष के बीज स्वार्थपरता में है। जहाँ परमार्थिक दृष्टिकोण होगा, वहाँ प्रेम गंगा की शान्तिदायक निर्मल धारा प्रवाहित होगी।

(४) भ्रान्ति, अविद्या, अन्ध-परम्परा, अदूरदर्शिता, लोलुपता, संकुचित दृष्टि को 'कुबुद्धि' कहते हैं। सुशिक्षित और चतुर समझे जाने वाले लोग भी इस कुबुद्धि से ग्रसित रहते हैं, फलस्वरूप उन्हें अकारण अनेक प्रकार के त्रास प्राप्त होते हैं। आज के युग में सन्तान न होना एक ईश्वरीय वरदान है, पर लोग इसमें भी दुःख मानते हैं। कुरीतियों का अन्धानुकरण करने के लिए धन न मिलने पर दुःख होता है। परिजनों की मृत्यु पर ऐसा शोक करते हैं मानों कोई अनहोनी घटना घटी हो। धन की कामना में ही व्यस्त रहना, जीवन के अन्य अंगों का विकास न करना, विलासिता, फिजूलखर्ची व्यसन, फैशन-परश्ती आदि में डूबे रहना आदि भ्रान्तियों में लोग अपनी बुद्धिमानी समझते हैं।

गायत्री रूपी सद्बुद्धि जिस मस्तिष्क में प्रवेश करती है, वह अन्धानुकरण करना छोड़कर हर प्रश्न पर मौलिक विचार करता है, वह उन चिन्ता, शोक, दुःख आदि से छुटकारा पा लेता है। जो कुबुद्धि की भ्रान्त धारणाओं के कारण होते हैं, उन्हें गायत्री की सद्बुद्धि जब हटा देती है तो सरलता, शान्ति, सन्तोष और प्रसन्नता से परिपूर्ण रहने लगता है।

(५) बीमारी और कमजोरी आज घर-घर में घुसी हुई है। इसका कारण आहार विहार का असंयम है। पशु-पक्षी प्रकृति को आदर्श मानकर चलते हैं और निरोग रहते हैं। प्रकृति के आदेशों का उल्लंघन करने से ही मनुष्य बीमार पड़ता है। कमजोर होता है और जल्दी मर जाता है।

गायत्री मंत्र की शिक्षा में आहार-विहार का संयम और प्राकृतिक जीवन की विशेष प्रेरणा है। सादगी और सात्विकता के ढाँचे में ढली हुई जीवन चर्या निरोगता की प्रामणिक गारंटी है।

चिड़चिड़ापन, आलस्य, लापरवाही, अनुदारता, अहंकार, कटु भाषण, निराशा, चिन्ता, आवेश, द्वेष आदि मानसिक बीमारियों से आन्तरिक स्वास्थ्य खोखला हो जाता है और व्यावहारिक जीवन में पग-पग पर ठोकरें लगती हैं। गायत्री साधना मनुष्य स्वभाव में सात्विक परिवर्तन करती है, सद्गुण बढ़ाती है, फलस्वरूप मानसिक अस्वस्थता नष्ट होकर मनोबल बढ़ता है और उसके द्वारा अनेकों लाभ प्राप्त होते रहते हैं।

(६) आन्तरिक निर्बलता, एक ऐसी व्यक्तिगत कमी है जिसके कारण मनुष्य इच्छा करते हुए अपनी त्रुटियों के कारण कुछ कर नहीं पाता। मानव तत्त्व का पूर्ण विकास कुछ ऐसे तथ्यों पर निर्भर है जो बहुधा अपने हाथ में नहीं होते। सूक्ष्म शरीर में उसकी जड़ें होने के कारण ऐसा मानना पड़ता है कि अमुक विशेषताओं से, भाग्य ने या भगवान् ने हमें वंचित कर रखा है। गायत्री साधना का प्रवेश सूक्ष्म शरीर के उस भाग तक हो जाता है जहाँ भाग्य को फेरने वाली कुँजी छिपी रहती है।

गायत्री साधना के फलस्वरूप सूक्ष्म शरीर के कुछ गुप्त कोषों, चक्रों, गुच्छकों, ग्रन्थियों का विकास होता है, जिसके कारण दिव्य शक्तियों का बढ़ना अपने आप शुरू हो जाता है। बुद्धि की तीव्रता, शरीर की स्वस्थता, सत्पुरुषों की मित्रता, व्यावसायिक सफलता, कीर्ति प्रतिष्ठा, पारिवारिक सुखशान्ति, सुसंतति,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

व्याधियों से निवृत्ति, शत्रुता का निवारण सरीखे अनेकों लाभ अनायास ही मिलने लगते हैं। कारण यह है कि आत्मबल बढ़ने से दिव्य शक्तियाँ विकसित होने से गुण, कर्म, स्वभाव में आशाजनक परिवर्तन हो जाने से अनेक ज्ञात एवं अघात बाधाएँ हट जाती हैं और ऐसे सूक्ष्म तत्त्व अपने में बढ़ जाते हैं जो दिन-दिन उन्नति की ओर ले जाते हैं।

राजशासन पर जनता की कठिनाइयों का उत्तरदायित्व है उससे कहीं अधिक जनता की मनोवृत्तियों पर है। जनता प्रतिमा है, राज्य उसकी छाया है। जनसाधारण का चरित्र ऊँचा उठाकर, उनकी मनोदशा में श्रेष्ठ तत्त्वों को बढ़ाकर, सम्पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय, अन्तर्देशीय, देशीय, सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक एवं मानसिक समस्याओं को सुलझाया जा सकता है। केवल कानून या सरकार में हेर-फेर देने से स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हो सकता ।

मानव-जीवन की जितनी गुत्थियाँ उलझी पड़ी हैं, उन सबको गायत्री रूपी सद्बुद्धि, सात्विकता एवं सत्प्रवृत्ति को अपनाने से सुलझाया जा सकता है।

दुर्वृत्तियों से पीछा छूटा

श्री अमोलकचन्द गुप्ता, शेखपुरा लिखते हैं कि पिता जी मुझे तीन वर्ष का छोड़कर स्वर्ग-सिधार गये थे। माता जी का इकलौता पुत्र था। उन्होंने अपने वैधव्य दु:ख को मेरे ऊपर लाड़-प्यार में बदल कर किसी प्रकार मन का बोझ हलका करने का प्रयत्न किया। उनका मैं अत्यधिक लड़ैता था। पिता जी काफी धन छोड़ गये थे, मकानों के किराये की और जमींदारी की आमदनी भी काफी थी। माता जी ने मुझे अच्छा खिलाने में, पहनाने में कोई कसर न रहने दी, मेरी हर एक इच्छा को तुरन्त पूरा किया जाता । पास-पड़ोस का कोई लड़का मुझे छेड़ता तो माता जी मेरा पक्ष लेकर उससे लड़ने पहुँचतीं।

अत्यधिक लाड़-चाव, प्रत्येक इच्छा और आग्रह की पूर्ति हर भले-बुरे कार्य का अन्धा समर्थन, इन सब बातों ने मुझे आवारागर्दी के मार्ग पर बढ़ाया। बारह-तेरह वर्ष की आयु होने पर मैं स्कूल भेजा जाने लगा । स्कूल का बहाना करके बुरे लड़कों के साथ दिन भर खेल-कूद में, मटरगस्ती में फिरता रहता, इसी बीच अप्राकृतिक बुराइयों में मुझे फँसा दिया गया। बड़ी उम्र के लड़के लोभ और भय दिखाकर मुझे अपना शिकार बनाते, उन्हीं बुराइयों को मैं अपने से छोटी आयु वाले लड़कों के साथ प्रयोग करता। माता जी समझती लड़का नित्य स्कूल जाता है, पर मैंने एक दिन भी स्कूल का दरबाजा न लाँघा। फीस जेब खर्च में उड़ती। कई वर्ष इसी प्रकार बीत गये। माता जी को मेरे ऊपर कोई अविश्वास न था, सोचती थीं लड़का दिन भर पढ़ने में लगा रहता है, हर साल दर्जा चढ़ जाता है पर मैं उतना ही पढ़ सका जितना आरम्भ के एक दो वर्षों में पढ़ चुका था।

आयु १६ वर्ष से ऊपर हो रही थी। एक दिन मामूली-सी बीमारी के बाद माता जी का स्वर्गवास हो गया। मैं अब पूर्ण स्वतन्त्र था। बुरे-बुरे लोगों की अच्छी-खासी चौकड़ी मेरी मित्र बन गई । दोस्तों का दिन भर जमघट लगा रहता। ताश, शतरंज, गाना बजाना, वेश्या नृत्य, सिगरेट, शराबा, जुआ, व्यभिचार, नाच तमाशा, सैर-सपाटे भोजन-पार्टियाँ आदि के दौर चलते रहते और उन सबका खर्च मेरे ही ऊपर ही पड़ता। इन दिनों में एक प्रकार के नशे में चूर था। जितना नकदी पैसा था वह चुक गया, जायदाद गिरवी रख गई और बेची गई पाँच वर्ष में लगभग बीस हजार रुपये की जायदाद स्वाहा हो गई । जब रुपया बिलकुल न रहा, कर्ज मिलना भी बन्द हो गया तो जिगरी दोस्त बनने वाले लोग भी किनारा कर गये। सहायता के नाम पर सब ओर से हरी झंडी दिखाई जाने लगी।

एक ओर पैसे की समाप्ति, दूसरी ओर तरह-तरह की कुवासनाओं का उभार, इन दोनों के बीच मेरा मस्तिष्क बुरी तरह पिस रहा था, उसने नयी तरकीबें सोची। जुए के अड्डे, व्यभिचार की दलाली, चोरी, बहकाना, ठगी, धोखाधड़ी आदि की नई-नई तरकीबें निकाल कर एक छोटे गिरोह के साथ किसी प्रकार अपना गुजारा करने लगा। खर्च तो चल जाता था, पर मन में भारी अशान्ति रहती थी। अपनी स्थिति पर मुझे कभी-कभी पश्चाताप भी होता था।

एक दिन मैं अपनी स्थिति पर बहुत पश्चाताप कर रहा था। सामने से एक तेजस्वी महात्मा निकले। मेरी चिन्ताग्रस्त दशा को देखकर वे कुछ ठहरे और मेरे बिना कुछ पूछे ही कहा—'बेटा, जो हो गया उसके लिए पश्चाताप करना व्यर्थ है, अब तुम अपने को संभालो। गायत्री का जप किया करो। मैं गायत्री न जानता था उन्होंने मुझे स्नान कराके वह मन्त्र याद कराया और जप करने के साधारण नियम समझा दिये। अधूरे मन मैंने जप आरम्भ कर दिया।

धीरे-धीरे मेरे मन में उत्तम विचारों की वृद्धि हुई। भूतकाल में किए हुए पापों पर आत्म-ग्लानि रहने

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लगी। पश्चाताप स्वरूप एक मास का चन्द्रायण व्रत किया, नमक का त्याग, भूमि पर शयन, नंगे पैर तीर्थ यात्रा, दान आदि तपश्चर्याओं द्वारा आत्म-शुद्धि के लिए प्रयत्न किये। स्वाध्याय सत्सङ्ग में लगने लगा और दिन-दिन सन्मार्ग में प्रवृत्त होने लगा।

अब मेरी आयु २८ वर्ष की है। इन्द्रियों पर काफी काबू हो चुका है। पुरानी आदतें भड़क कर बार-बार पुनः कुमार्गगामी होने के लिए प्रेरित करती हैं, परन्तु आत्मिक दृढ़ता के कारण कुछ बस नहीं चलता। स्टेशनरी की एक साधारण-सी दुकान करके अपनी उदरपूर्ति करता हूँ और सद्विचारों में अपने को लीन रखता हूँ। गायत्री का जप और अखण्ड ज्योति का स्वाध्याय अब मेरे जीवन के यह दो प्रधान अवलम्बन हैं।

गायत्री उपासना का प्रयोजन

श्री अशर्फीलाल जी, मुख्तयार बिजनौर का कहना है कि गायत्री ईश्वरीय शक्ति है। ब्रह्म निर्विकार, निरपेक्ष, निर्गुण निराकार है। उसका जो कुछ वैभव विस्तार परिलक्षित होता है वह ईश्वरीय प्रकृति, माया एवं शक्ति के कारण ही है। शास्त्रों में कहा गया है कि शक्ति के बिना 'शिव' भी 'शव' अर्थात मृतक हो जाता है। जितना भी पदार्थ, जितना भी चैतन्य दृष्टिगोचर होता है उस सबके मल में महामाया ब्राह्मी शक्ति ही काम कर रही है। उस शक्ति को ही आध्यात्मिक भाषा में गायत्री कहते हैं।

इस महाशक्ति से सम्पर्क स्थापित करने के दो मार्ग हैं—(१) स्थूल बल द्वारा (२) सूक्ष्म बल द्वारा। स्थूल बल के अन्तर्गत बुद्धि, परिश्रम, धन, पदार्थ, विज्ञान, यंत्र आदि हैं । इनके द्वारा, नित्य-प्रति के जीवन में अनेकों कार्यों का आयोजन किया जाता है, और उस प्रयत्न के फलस्वरूप अनेक प्रयोजनों को पूरा किया जाता है। यह स्थूल प्रयोग नित्य-प्रति मानव जीवन में व्यहृत होता है। दूसरा मार्ग सूक्ष्म बल का है। चैतन्य जीवात्मा, अंतःकरण चतुष्टय, सूक्ष्म शरीर, पंच कोष, षट चक्र, ग्रन्थि गुच्छक आदि अदृश्य आन्तरिक शक्तियों को एक विशेष प्रक्रिया से इस प्रकार प्रयुक्त किया जाता है कि उस महामाया सूक्ष्म प्रकृति सत्ता से सम्बन्ध स्थापित हो सके। इस प्रकार जब सम्बन्ध स्थापित हो जाता है तो अनेक उपयोगी प्रयोजन सिद्ध हो सकते हैं।

महामाया अनन्त वैभवों और ऐश्वर्यों की भण्डार है। उसके पास किसी वस्तु की कमी नहीं, वह इतनी दयालु है कि अपने ऐश्वर्य का द्वार हर एक के लिए सदैव खुला रखती है। प्रश्न केवल पात्रता का है। जो अपने में जितनी पात्रता उत्पन्न कर लेता है, वह उतना ही लाभ उठा सकता है। समुद्र में अतुलित जल राशि भरी पड़ी है, पर उसमें से उतना ही जल लिया जा सकता है जितना भरने को पात्र हो। जिसके हाथ में गिलास है वह गिलास भर लेगा, घड़े वाले का घड़ा भर जायगा, मेघ मालाएँ लाखों मन पानी उसमें से भर लेंगी। समुद्र का द्वार सबके लिए खुला है, पर मिलता उतना ही है जितना कि पात्र है।

संसार में स्थूल बल की पात्रता जितनी होती है उतना ही लाभ मिलता है। मजदूर उतनी ही कमाई कर सकेगा, जितना उसके शरीर में बल होगा। व्यापारी उतना ही बड़ा व्यापार कर सकेगा, जितनी उसके पास पूँजी होगी, मशीन जितनी बड़ी होगी, उसी अनुपात से काम करेगी। बैल और भैंसे के मूल्य हैं पर उसकी योग्यता के आधार पर फर्क रहता है। पात्रता की कीमत पर संसार में हर सजीव या निर्जीव वस्तु का मूल्यांकन किया जाता है और उसी पर प्रतिफल मिलता है। अयोग्य का अपात्र वस्तु एवं प्राणी को सदैव उपेक्षित ही रहना पड़ता है।

पात्रता का यही नियम आध्यात्मिक जीवन में लागू होता है। अन्तः भूमि जितनी स्वच्छ होगी उतनी ही महामाया के शक्तिस्रोतों में दिव्य तत्त्व प्राप्त करेगी। बीमार बालक, माता के कुचों में भरपूर दूध होते हुए भी उसका पान नहीं कर पाता, परन्तु स्वस्थ बालक उसे पाकर दिन-पर-दिन हृष्ट-पुष्ट होता जाता है। माता दोनों बालकों को समान प्यार करती है, पर उसके प्यार से लाभ उठाना तो पात्रता पर ही निर्भर है।

जैसे श्रम, धन, यंत्र, विज्ञान बुद्धि आदि भौतिक साधनों से स्थूल सम्पत्ति कमाई जाती है, उसी प्रकार सूक्ष्म अन्तःकरण से भी महामाया प्रकृति के गुह्य अन्तःस्थल तक पहुँच कर वे लाभ प्राप्त किये जा सकते हैं, जो स्थूल प्रक्रिया द्वारा भी मिलने सम्भव नहीं है। सदा ही स्थूल की अपेक्षा स्थूल की शक्ति अधिक होती है। जो वस्तुएँ स्थूल पात्रता के प्रतिफल में मिलती है, सूक्ष्म पात्रता से उसकी अपेक्षा कहीं अधिक मूल्यावान और महत्त्वपूर्ण लाभ मिल सकते हैं। इस तथ्य को हमारे पूर्वज भली प्रकार समझते थे, इसलिए उन्होंने दस मन लोहा इकट्ठा करने की अपेक्षा एक छटाँक सोना कमाना अधिक उपयुक्त समझा, स्थूल बल की अपेक्षा सूक्ष्म बल के सम्पादन की ओर अधिक ध्यान दिया । फलस्वरूप वे उन गुप्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

योग्यताओं को प्राप्त कर सके जिसके कारण जगद्गुरु और चक्रवर्ती बनने का सुअवसर उन्हें मिल सका ।

उपासना, आराधना, साधना ऐसी वैज्ञानिक पद्धतियाँ हैं जिनके द्वारा अन्तः चेतना में पात्रता उत्पन्न की जाती है, साधक जैसे आन्तरिक बल एकत्रित करता जाता है, वैसे ही वैसे उसकी उस सूक्ष्म चुम्बक शक्ति का विकास होता है। जो महामाया को अपनी ओर खींचती है, उसकी कृपा प्राप्त करती है और उसके अक्षय भंडार में से उपयुक्त वस्तुओं को उपलब्ध कराती है। गायत्री दयालु माता है वह अपने पुत्रों को बहुत कुछ देने को तत्पर रहती है, पर देती उन्हें ही है जो पात्र होते हैं। अधिकारी लोग बड़ी-बड़ी लालसायें और कामनाएँ करते हैं, पर अपनी पात्रता बढ़ाने के लिए समुचित प्रयत्न नहीं करते । ऐसी दशा में वे बड़े-बड़े मनोरथ पूरे नहीं हो पाते जो साधना के तप में खरे उतरने वाले साधकों को ही उपलब्ध हो सकते हैं।

सभी सुख, शान्ति और समृद्धि चाहते हैं । स्थूल जगत् में यह तीनों ही अस्थिर रहती हैं । चिरस्थायी सम्पदाएँ आत्मिक होती हैं जिन्हें दैवी सम्पदाएँ कहते हैं । उन्हें प्राप्त करने के लिए महामाया के भण्डार की चाबी अपनी 'आन्तरिक पात्रता' ही है । पात्रता के लिए 'तप' करना पड़ता है । यह तप ही उपासना के नाम से प्रसिद्ध है । मैं इस गायत्री उपासना को अपनी सांसारिक कमाई से अधिक महत्त्व देता हूँ ताकि अधिक मूल्यवान लाभ प्राप्त किया जा सके । मैं वकील हूँ, अपनी समस्त तर्क-शक्ति के द्वारा जब सोचता हूँ कि मेरा वास्तविक लाभ किसमें है, तब यही समझ में आता है कि आत्मकल्याण के लिए प्रयत्न करना ही सर्वोत्तम है । गायत्री का आश्रय लेकर वही मैं कर भी रहा हूँ ।

"गायत्री मन्त्र का निरन्तर जप रोगियों को अच्छा करने और आत्माओं की उन्नति के लिए उपयोगी है । गायत्री का स्थिर चित्त और शान्ति हृदय से किया हुआ जप आपत्ति काल के संकटों को दूर करने का प्रभाव रखता है ।"

—महात्मा गाँधी

आत्मिक काया कल्प

श्री बृजमोहन प्रसाद गुप्ता, हजारीबाग ने लिखा है कि मैं सुसम्पन्न परिवार में पैदा हुआ हूँ । अच्छा जमा हुआ व्यापार और सुसंगठित परिवार है । इतना होने पर भी मेरे जीवन के २७ वर्ष अशान्ति और क्लेश में ही व्यतीत हुए ।

माता जी बचपन में ही स्वर्ग सिधार गई थीं । अधिक स्नेह करने वाले चाचा जी भी अधिक समय तक जीवित न रहे । सुव्यवस्थित मानसिक विकास न होने के कारण शुद्ध विचारधारा भी प्राप्त न हो सकी । आठवीं कक्षा से पढ़ाई छोड़ बैठा । विमाता के प्रति मेरे मन में बड़े दुर्भाव थे । उनकी साधारण-सी बातों में मुझे शत्रुता की गन्ध आती थी । उनके हाथ का भोजन तक न करता था । गृहकलह बढ़ने लगे । मुझे अपना सारा परिवार शत्रुवत् प्रतीत होता था । एक बार तो आत्महत्या तक करने का निश्चय कर लिया था।

दुर्बुद्धि, अनेक बुराइयाँ साथ लेकर आती हैं । मुझे भांग, अफीम, सिरगेट आदि की नशेबाजी और वेश्यागमन की बुरी लतें भी लग गईं । सिर में चक्कर आने की बीमारी पैदा हो गई । दूकान पर मन न लगता था । खेती-बाड़ी की देखभाल करने की जो जिम्मेदारी मेरे ऊपर डाली गई थी वह भी पूरी न हुई । पिता जी, पत्नी तथा स्वजन सम्बन्धी सभी मुझसे असंतुष्ट थे । इन परिस्थितियों में रहकर मैं स्वयं भी भारी आन्तरिक जलन में जलता रहता था ।

यही स्थिति यदि इसी प्रकार आगे बढ़ती रहती तो न जाने दुर्दशा का अन्त कहाँ जाकर होता, पर ईश्वर को कुछ दूसरी ही बात मंजूर थी । पटना के एक होटल में आचार्य श्रीराम शर्मा लिखित 'गायत्री के अनुभव' पुस्तक रखी हुई मिली, उसे पढ़ने लगा । पढ़कर बड़ा प्रभावित हुआ और अन्य गायत्री-ग्रन्थ मँगाये तथा आचार्य जी से पत्र-व्यवहार करके उपासना आरम्भ कर दी ।

गायत्री साधना को अपनाये हुए लगभग एक वर्ष हुआ है कि मेरे जीवन का कायाकल्प ही हो गया । सद्बुद्धि का आश्चर्यजनक विकास हुआ । नशेबाजी, वेश्यागमन आदि की सभी बुराइयाँ छूट गईं । पिताजी तथा विमाता से मेरी पूर्ण सद्भावना है, फलस्वरूप उनका वात्सल्य भी पर्याप्त मात्रा में मिल रहा है । राजसिक, तामसिक आहार छोड़कर सात्विक आहार अपना लेने से स्वास्थ्य में सुधार हुआ है । घर में तम्बाकू का व्यवसाय होता है, वह मुझे नहीं रुचा । इसलिए शुद्ध घी का व्यापार करने की ठानी । पूँजी की कठिनाई भी माता की कृपा से दूर हो गई और अब मैं उस सात्विक व्यापार को स्वतंत्र रूप से चलाता हूँ और संतोषजनक आमदनी कर लेता हूँ तथा अपने व्यवस्थित जीवन की सब पर छाया डालता हूँ । सभी स्वजन सम्बन्धी इतनी जल्दी, इतना अधिक,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मुझमें परिवर्तन देखकर आश्चर्य करते हैं । मैं उन्हें बताता हूँ कि गायत्री की महिमा अपार है, उस महाशक्ति की कृपा से हरएक को सांसारिक और आध्यात्मिक सभी प्रकार के लाभ मिल सकते हैं । सुना है कि किन्हीं औषधियों से शारीरिक कायाकल्प होता है । मानसिक कायाकल्प की अचूक औषधि तो मुझे भी मिल गई है, वह है—गायत्री ।

भयंकर अभियोग से निर्दोष मुक्ति

श्री नारायण प्रसाद कश्यप, राजनांदगांव ने लिखा है कि गायत्री की आध्यात्मिक महिमा और शक्ति के विषय में मैं कुछ नहीं कहना चाहता, क्योंकि उसके विषय में बहुत कुछ कहा और लिखा जा चुका है । आज मैं अपने निजी अनुभव की बातें बतलाऊँगा कि किस तरह गायत्री मन्त्र की शक्ति के द्वारा हमारे घर की सब विघ्न-बाधाएँ और आपत्तियाँ दूर हुईं ।

सन् १९४६ में भण्डारे के एक प्रमुख व्यक्ति ने मेरे बड़े भाई को एक बनावटी फौजदारी मुकदमें में फँसा दिया । मुकदमा चार वर्ष तक चलता रहा । अफसरों पर दबाव डालकर वह हम लोगों को बरबाद करना चाहता था । हमने अपनी विपत्ति कथा सत्गुरु स्वामीनाथ तथा ब्रह्मचारी जी को कह सुनाई । उनने हमें आश्वासन दिया और गायत्री जप करने के लिए कहा और श्री ब्रह्मचारी जी ने स्वयं त्रिधि पूर्वक अनुष्ठान किया और मुझे एक अनुष्ठान बतलाया जिसे मैंने चार बार में समाप्त किया । इस अनुष्ठान के प्रताप से वह विपत्ति टल गई जिसके कारण हम लोगों को बहुत ही भय सताता रहता था ।

सन् १९५१ के जनवरी माह में कुछ बड़े आदमी ने पुलिस से मिलकर मेरे छोटे भाई पर कत्ल का मामला चलाया । हमारे परिवार पर वज्रपात हो गया। एक के बाद दूसरी विपत्ति पर विपत्ति आ गई । हमने इस मामले को अपने गुरुजनों के सामने रखा । इस बार भी माता का ही अंचल पकड़ा गया । वही तरण-तारणी है । उसे छोड़कर और किसका अंचल पकड़ा जाय । माता की कृपा हुई । गुरुजनों ने तथा हमने माता की निरन्तर प्रार्थना को ही अपना सहारा बनाया।

हम दिन-रात गायत्री मन्त्र का ही जप करते थे । उसका यह परिणाम हुआ कि आज हमारे दोनों भाई निर्दोष मान कर रिहा कर दिये गये और मेरे छोटे भाई को फँसाने वाला वह आदमी उलटा एक मामले में गिरफ्तार है ।

अन्त में मैं अपने निजी अनुभव के द्वारा अपने सब पाठकों से प्रार्थना करता हूँ कि वे भी रोज गायत्री मन्त्र का जप किया करें ।

कठिनाइयों का निवारण

श्री पुरुषोत्तम आत्माराम साखेर, पवारखेड़ा ने लिखा है कि वैसे तो हमारे परिवार की धार्मिक प्रवृत्ति वंश परम्परा से चली आई हैं, पर श्री रामेश्वर प्रसाद जी सोनी एग्रीकल्चर असिस्टेन्ट की प्रेरणा से मेरे मन में गायत्री साधना के लिए विशेष प्रवृत्ति उत्पन्न हुई । काफी अरसे से मैं गायत्री साधना में लगा हुआ हूँ और देखता हूँ कि उसके कारण आत्मा की दिन-पर-दिन उन्नति हो रही है । अनेक दोष, दुर्गुण छूट गये हैं और उनके स्थान पर नये सद्गुणों का विकास हुआ है ।

यहाँ और भी कई नए महानुभाव गायत्री उपासना करते हैं । उनमें से कई को गायत्री माता की कृपा के चमत्कारी अनुभव हुए हैं जो इस प्रकार हैं—

(१) मेरे परम मित्र विनायक रावजी वैद्य कम्पाउण्डर मेन हॉस्पिटल के बालक ६-६ महीने के होकर मर जाते थे । आप अँग्रेजी, आयुर्वेदिक, होमियोपेथिक, यूनानी उपचार करके तंग आ रहे थे । मेरा उनसे परिचय होने पर आपको गायत्री मन्त्र में विश्वास बढ़ा । उनको बहुत कार्य होने की बजह से यह कार्य मुझे सौंपा गया, तब मैंने वेद माता की अनुमति प्राप्त करके यह कार्य प्रारम्भ किया । माता की अनुकम्पा से एक पुत्र रत्न प्राप्त हुआ जो सबकी गोद में किलोल करता फिरता है ।

(२) श्रीवामन सदाशिव देहाडराय कृषि विभाग के सुप्रिन्टेण्डेण्ट पवारखेड़ा फार्म पर सरकार को कुछ आर्थिक क्षति पहुँचाने के अभियोग में फौजदारी मुकदमा चलाया गया । जब मुझसे अनका परिचय मुकदमे के दौरान में हुआ तो मैंने उनको वेद माता गायत्री का अनुष्ठान कराने को कहा तो उनके आग्रह से मैंने खुद यह अनुष्ठान किया, फलस्वरूप वे मुकदमे से निर्दोष बरी हुए ।

(३) ऐसे ही मेरे मझले भाई निरोत्तम रावजी साखरे सरकारी नौकरी दीवानी मुकदमे से स्तीफा देकर बेकार बैठे थे । उनके लिए वेद माता गायत्री का अनुष्ठान किया और वह आजकल भोपाल में सुप्रिण्टेण्डेण्ट (बेलिफ) की जगह पर काम कर रहे हैं।

यह तो हमारे अत्यन्त निकटवर्ती उदाहरण हैं । गायत्री माता की शरण में जाने वाले मनुष्य सदा लाभ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

में ही रहते हैं । उन्हें आध्यात्मिक लाभों और सांसारिक सुविधाओं की कमी नहीं रहती ।

निराशा में आशा की किरण

श्री अयोध्या प्रसाद दीक्षित, कानपुर से लिखते हैं कि मेरी धर्मपत्नी ने अपने विवाह से पूर्व हिन्दी मिडिल किया था । इस बात को एक लम्बी मुद्दत बीत गई । विवाह के उपरान्त वह घर गृहस्थ के झगड़ों में लग गई । बच्चों का पालनपोषण तथा गृहस्थ के अनेक कामों में शक्ति और समय खर्च होता है । उसके बाद प्राय: स्त्रियों को आगे की परीक्षा देने का न अवकाश रहता है और न उत्साह ।

पिछले वर्ष धर्मपत्नी सौ. शान्ति देवी ने घर पर पढ़ कर मैट्रिक परीक्षा देने का विचार प्रगट किया । उसका मनोरथ अच्छा था, पर उसके पूरे होने के कोई लक्षण न दिखाई पड़ते थे । कारण कई थे—एक तो वह आए दिन बीमार बनी रहती हैं । हाल ही में उसके बच्चे का स्वर्गवास हुआ था । जिसके कारण चित्त में हर घड़ी दु:ख रहता था । फिर घर पर रह कर पढ़ाई की भी कोई समुचित व्यवस्था न थी, इतने वर्षों की छूटी हुई शिक्षा, फिर एक वर्ष में इतने बड़े कोर्स की तैयारी, इन सब बातों पर विचार करने से सहज ही यह दृष्टिगोचर हो जाता है कि मंजिल आसानी से पार होने वाली नहीं है ।

पत्नी ने अपना अभिप्राय प्रगट किया तो मैंने खुशी-खुशी सहमति प्रगट कर दी । इसलिये नहीं कि उसके सफल होने की आशा थी वरन् इसलिये कि पुत्र शोक से उसका चित्त एक दूसरे काम में बँट जायगा और इसी बहाने कुछ न कुछ शिक्षा की वृद्धि भी होगी । पर परीक्षा के लिए जैसी तैयारी होती है उसकी तुलना में तो यह सब मजाक ही हो रहा था ।

गायत्री उपासना को इस शिक्षा के साथ-साथ उसने अपना आधार बनाया । वह पढ़ाई की भाँति ही नहीं वरन् उससे भी अधिक गायत्री उपासना पर ध्यान रखती । इसी प्रकार धीरे-धीरे कई महीने बीते । परीक्षा का फार्म भर दिया गया । देखते-देखते तिथि भी आ गई । तैयारी बहुत कम थी, इसलिए फेल होने की बात मन में बैठी हुई थी । परीक्षा समाप्त हुई तो मैंने पूँछा कि कैसी आशा है ? उत्तर मिला कि-कम्पार्टमैन्टल में नाम आ गया तो बहुत है । दुबारा परीक्षा में शायद एक और अवसर मिले ।

परीक्षाफल निकला । उसका नाम द्वितीय श्रेणी के उत्तीर्ण छात्रों में आया । उत्साह का ठिकाना न रहा । परीक्षार्थिनी कहती है कि जब मैं उत्तर लिखने बैठती थी तो कोई शक्ति कलम पकड़ कर ऐसे उत्तर लिखती जाती थी जो साधारण स्थिति में लिखना मेरे लिए कठिन था । परीक्षा भवन में प्रवेश करते समय वह गायत्री माता का जप और ध्यान करती जाती थी। वह कहती है कि उत्तर लिखते समय मेरी बुद्धि और स्मरण शक्ति बहुत तीव्र रहती थी । अपनी साधारण समय की अयोग्यता और परीक्षा समय में असाधारण प्रतिभा इन दोनों बातों का सामंजस्य वह सोच नहीं सकती थी । इसी से उसे अनुत्तीर्ण होने का सदा भय रहा । अब वह कहती है कि गायत्री माता की कृपा से मनुष्य की बुद्धि इतनी स्वच्छ होती है कि उनसे जीवन की अनेकों परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो सकता है । उसने अभी से अगले वर्ष की पढ़ाई की तैयारी प्रारम्भ कर दी है । देखें माता उसे कहाँ तक ले पहुँचती हैं ।

गायत्री के अनुग्रह का परिचय

श्री अम्बाशंकर गोविंद जी व्यास, जूनागढ़ ने लिखा है कि परिस्थितियोंवश में स्कूली शिक्षा बहुत ही कम प्राप्त कर सका । कक्षा चार उत्तीर्ण करने के बाद रोटी कमाने की चिन्ता हुई और १२) रुपया मासिक की नौकरी पर लग गया । बड़ा परिवार, छोटी नौकरी, अल्प शिक्षा, सहायकों का अभाव, इस प्रकार की विपन्नताओं से घिरे होने पर कोई मार्ग न सूझता था, उस समय मैंने गायत्री माता का आश्रय लिया ।

भगवती का अञ्चल पकड़ने पर मुझे नया प्रकाश प्राप्त हुआ, नया मार्ग सूझा । मैंने कुछ अंग्रेजी सीखी, टेलीग्राफी सीखी, तारबाबू की परीक्षा दी और पास हो गया । इतने पर भी रेलवे की नौकरी मिलना मेरे लिए कठिन था । सबसे बड़ी बाधा तो उस अंग्रेजी डाक्टर की थी जो रेलवे की नौकरी में बहुत अच्छे स्वाथ्य के लोगों को लेने का कट्टर पक्षपाती था । वह कमजोर लोगों को हरगिज पास नहीं करता था । मेरा स्वास्थ्य पहले से ही दुर्बल था, उन दिनों तो मैं बीमारी से उठा था, इसलिए और भी कमजोर हो रहा था । घोर निराशा के वातावरण में मैंने भी एक तारबाबू की खाली जगह के लिए अर्जी दी । ऐसी १५ अर्जी और थीं । हम १६ उम्मीदवार डाक्टरी मुआइने के लिए पेश हुए । मेजर हेन्स बहुत ही उग्र स्वभाव के थे, पक्षपात करना उनकी प्रकृति में ही न था । शेष सभी उम्मीदवार मुझसे स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छे थे । मैं मन ही मन माता का जप और ध्यान करने लगा । डाक्टर ने १५ उम्मीदवार नापास कर दिये और मुझे

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पूर्ण स्वस्थ होने और फिट होने का प्रमाण-पत्र दे दिया इस प्रमाण से हर कोई आश्चर्य-चकित था पर मैं जानता था कि माता की कृपा से दुनिया में सब कुछ सम्भव है ।

मुझे तारबाबू की नौकरी मिल गई । अंग्रेजी की भी योग्यता दिन-पर-दिन बढ़ती गई । मेरे ऊपर छोटे से लेकर बड़े अफसरों तक की विशेष कृपा रहती थी और समय-समय पर सभी का अनुग्रह प्राप्त होता रहता था। इस प्रकार मैं उन्नति करते-करते स्टेशन मास्टर के पद पर पहुँच गया ।

एक बार मैं गार्ड के डिब्बे में से नीचे उतर रहा था तो रेल के तेज रफ्तार पकड़ लेने के कारण मैं बुरी तरह गिरा । टंकी के खम्भे से बुरी तरह टकराया । ठोकर खाकर फिर फुट बोर्ड पर ओंधे मुँह गिरा और उससे धक्का खाकर फिर पटरी पर गिर पड़ा । इस प्रकार की घटना घटित होने पर आमतौर से किसी का प्राण बचना कठिन है, पर गायत्री की कृपा से मैं कुछ घण्टे बेहोश रहकर और मामूली चोट खाकर ही अच्छा हो गया ।

मेरे पिताजी गायत्री के परम भक्त थे । वे अन्तिम समय केवल चार दिन तक बहुत ही मामूली बीमार रहे थे । मृत्यु से दो दिन पूर्व उन्होंने पास बैठे हुए लोगों से कहा कि—''देखो सामने वह कैसी सुन्दर लड़की खड़ी है और मुझ से कह रही है दो दिन बाद तुम मेरे घर चलना'' मैं भी उस समय मौजूद था । मैंने कहा यहाँ तो कोई लड़की नहीं है आपको व्यर्थ ही भ्रम हो रहा है । वे यह कहते हुए चुप हो गये कि ''इन्हें तुम नहीं देख सकते यह गायत्री माता है, मुझे तीसरे दिन इनके धाम को जाना है ।'' तीसरे दिन ब्रह्म मुहूर्त में गायत्री का जप करते-करते उनका शरीर शान्त हो गया ।

एक बार मैं ४२ दिन के टाइफाइड से मरते-मरते बचा । डाक्टर जबाब दे चुके थे और श्वांस निकलने की प्रतीक्षा की जा रही थी, उस बेहोशी में ही माता ने मुझे दर्शन देकर अभयदान दिया और मृतक से जीवित हो गया । एक बार मेरी नौकरी छूट गई थी, पर कुछ समय बाद ही टेलीग्राफी शिक्षक के पद पर मेरी फिर नियुक्ति हो गई ।

ऐसे अनेकों अवसर मैंने अपने जीवन में देखे हैं जिनसे यह अटूट विश्वास हो गया है कि गायत्री उपासक को सदैव सुख-शान्ति की ही प्राप्ति होती है ।

सेवा और सात्विकता का विकास

श्री जगन्नाथ जी शास्त्री ॐ, साक्चीसराय लिखते हैं कि मेरे पिता तांत्रिक साधना के भक्त थे । वे एक बढ़े-चढ़े जुआरी थे । अपनी साधना के बल पर वे जुआ जीतते थे और बहुत कुछ कमाते थे । छोटी आयु में जब मैं स्कूल में पढ़ता था तब वे अपने प्रयोजन के लिए मुझे भी उन साधनाओं में लगाते थे । 'साधना द्वारा जुआ जीता जा सकता है।' इस मान्यता ने मुझे इस मार्ग की ओर आकर्षित किया और मैं पिताजी की अपेक्षा किसी अधिक ऊँची साधना की तलाश में रहने लगा ।

सीबान में एक पहुँचे हुए योगी ''खाकी जी'' रहते थे । उनके द्वारा मेरा यज्ञोपवीत संस्कार हुआ और गायत्री मन्त्र मिला । खाकी जी ने मुझे बताया कि संसार का सर्वश्रेष्ठ मन्त्र गायत्री है । इसे अपनाने वालों का सदा लौकिक और पारलौकिक कल्याण ही होता है । उनकी बात मेरे हृदय में बैठ गई और मैं पूरे उत्साह से गायत्री जप करने लगा ।

गायत्री साधना से थोड़े समय में ही मुझे तीन लाभ प्राप्त हो गये— (१) मेरी बुद्धि पहले की अपेक्षा अधिक तीव्र हो गई । स्कूल में सबसे अधिक नम्बर लाता और प्रथम श्रेणी के विद्यार्थियों में गिना जाता, (२) गायत्री मन्त्र से जल अभिमन्त्रित करके किसी रोगी को दे दिया जाय तो वह जल्दी ही अच्छा हो जाता है, इसलिए कितने ही रोगी रोज मेरे पास आने लगे, (३) कभी-कभी अनायास ही ऐसी भविष्यवाणी कर देता जो पूर्ण सत्य निकलती । कई बार तो ऐसी आश्चर्यजनक बातें बताईं जिनके भविष्य में घटित होने की किसी को भी पूर्व कल्पना न थी ।

मुझे इस प्रकार आत्मोन्नति की ओर अग्रसर होते देखकर पिताजी भी बहुत प्रभावित हुए और मांसाहार तथा तांत्रिक साधना छोड़कर उनने भी गायत्री उपासना को अपना लिया और वे शेष जीवन उसी को अपनाते रहे जिससे उनके स्वभाव में बड़े ही उत्तम सतोगुणी परिवर्तन हुए और शान्तिपूर्ण सद्गति के अधिकारी बने ।

स्कूली शिक्षा काल से अब तक मैं एक निष्ट भाव से गायत्री का उपासक रहा हूँ । इस बीच में जो अनुभव हुए हैं उनसे मेरी श्रद्धा, महा महिमामयी गायत्री माता पर दिन-पर-दिन बढ़ती ही चली आ रही है। माता अंतःकरण में यहाँ प्रेरणा करती हैं कि आत्म-कल्याण की साधना एवं संसार में धार्मिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

प्रवृत्तियों का प्रसार करते रहने में ही जीवन व्यतीत किया जाय । तदनुसार मैं एक पुरोहित एवं धर्म प्रचारक की भाँति इस प्रदेश के लोगों की धार्मिक प्रवृत्तियों को जागृत करने के लिए निरन्तर प्रयत्न करता रहता हूँ । इस सुन्दर सेवा-पथ पर चलने का सौभाग्य मुझे माता की कृपा में ही मिला है । अपने आज के विचार और कार्यों पर जब विहंगावलोकन करता हूँ तो प्रतीत होता है कि माता मुझे श्रेष्ठ मार्ग की ओर तेजी से घसीटे लिए जा रही हैं ।

गायत्री उपासना से अनेकों को अनेक लाभ प्राप्त करते हुए मैंने देखा है, पर सबसे बड़ा लाभ इस साधना का मुझे यह दिखाई पड़ता है कि गायत्री उपासक के विचार और कार्यों में दिन-पर-दिन सात्विकता एवं सेवा का सम्पुट बढ़ता जाता है । उसकी बुराइयाँ अपने आप घटती हैं और सन्मार्ग की ओर चलने की स्वाभाविक प्रवृत्ति पैदा हो जाती है ।

तपस्विनी रामप्यारी देवी

श्रीमती सोनवती पाराशर, नौरंगपुर लिखती हैं कि, मेरी मौसी जी का विवाह १२ वर्ष की आयु में हुआ था, एक वर्ष सुहागिनी रहकर १३ वर्ष की अल्पायु में विधवा हो गईं । जब से उनने होश संभाला तब से धर्म के कार्य में ही जीवन लगा दिया । उनके पिता जी बड़े धार्मिक थे, गायत्री के बड़े भक्त थे, उनने अपनी पुत्री को भी वही शिक्षा दी । गीता और रामायण का अच्छा अभ्यास कराया । भजन-पूजा में रुचि कराई । नानाजी उनके वैधव्य से बड़े दुःखी रहते थे । दुःख के भार को हलका करने के लिए उन्हें धर्म की शिक्षा देते थे । थोड़ा-सा वैद्यक का ज्ञान भी उन्हें करा दिया था। नाना जी अधिक दिन जीवित न रहे और उनका स्वर्गवास हो गया ।

मौसी जी की प्रवृत्ति धर्म में बचपन से ही बहुत अधिक थी । आँगन में पक्की गुमटी का तुलसी का चबूतरा था उसी में सालिगराम स्थापित थे । घण्टों उसके नीचे बैठ कर भजन करती थीं । नाना जी ने उन्हें गायत्री मंत्र दिया था, उसी की माला फेरती थीं, मौसी जी का जन्म का नाम तो रामप्यारी था, पर उनकी भक्तिभावना को देखकर सब लोग उन्हें मीरा देवी कहते थे । वे मामा जी के साथ घर में रहती थीं, पर उनके सब आचरण साधुओं जैसे थे । बिना मिर्च-मसाले का भोजन, जमीन सोना, सफेद वस्त्र, आभूषणों तथा शृंगार सामिग्री का परित्याग इस प्रकार के अनेक संयम नियमों का वे पालन करती थीं, व्रत उपवास तो आये दिन होते रहते थे ।

मैं छः सात वर्ष की आयु में जब से होश सम्हालने लायक हुई तभी से मौसी जी को घर में रहते हुए महात्मा की तरह पुजते देखती आई । दोनों मामा जी दोनों मामी, उनके बच्चे तथा पास-पड़ोस के बाल वृद्ध सभी उनके चरण स्पर्श करते थे । अक्सर "घर का जोगी जोगना आन गाँव का सिद्ध" वाली कहावत चरितार्थ होती है । लोग अपने परिचितों और पास रहने वालों की महानता की कदर नहीं करते, दूर देश के अजनबी आदमी साधारण हों तो भी वे गुणवान् लगते हैं, पर मौसी जी के बारे में ऐसी बात न थी, उनका सब लोग आदर करते थे । कारण कि उनकी तपस्या ऐसी थी जिसका प्रभाव पड़े बिना रह नहीं सकता था ।

किसी शुभ कार्य को आरम्भ करते हुए लोग उनका आशीर्वाद लेने आते थे । परीक्षा के दिनों में लड़के उनके पाँव छूकर तब स्कूल जाते थे । ऋतु स्नान करके सुसंतति के लिए स्त्रियाँ उनके चरण छूने आती थीं, मुकदमे, रोग मुक्ति तथा अन्य कठिनाइयों में दुःखी आदमी उनका आशीर्वाद चाहते थे, सो तो वे सभी को शुभ वचन कहती थीं, पर कभी उत्साह में आकर किसी के सिर पर हाथ रख दिया तो उसे सफलता अवश्य मिलती थी, ऐसे अनेक प्रमाण मौजूद हैं कि उनका आशीर्वाद चमत्कार की तरह फलदायक हुआ। निराशा की स्थिति में आशा प्रगट हुई ।

मौसी जी गायत्री का जप करती थीं । वे बताया करती थीं कि वह सतयुगी मन्त्र है । जो मनुष्य गायत्री को भजता है वह सतयुगी हो जाता है । कलियुग का उस पर प्रभाव नहीं पड़ता । बुरी आदतें छुड़ाने और धर्म में प्रवृत्त कराने वाला यह महामंत्र है । ईश्वर के दर्शन करने के लिए ज्ञान नेत्र खोलने वाला यह अंजन है । वे गायत्री की महिमा बहुत बताया करती थीं और उसकी साधना करने के लिए उपदेश दिया करती थीं । कोई उनका विधवा होने का दुःख या सहानुभूति प्रगट करता तो वे उसे बीच में ही टोक कर कहती- "यह मेरा दुर्भाग्य नहीं सौभाग्य है । बन्धन में बँधने पर मैं ईश्वर की कृपा प्राप्त नहीं कर सकती थी जो कि गृहस्थ सुख की अपेक्षा असंख्य गुनी आनन्ददायक है।"

रात्रि को वे रामायण की कथा कहती थीं । दोहा चौपाई बड़े ही मधुर स्वर में तन्मय होकर कहती थीं, जिसे सुनने वाले गद्‌गद् स्वर हो जाते थे । तुलसी, कालीमिर्च और गंगाजल पीसकर वे एक गोली बनाती

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

थीं, इसे रोगियों को हर मर्ज में देती रहती थीं, इस दवा को लेने बहुत से रोगी रोज आते थे और उससे इतना लाभ होता था जितना कि डाक्टरों की कीमती दवाएँ काम नहीं कर सकतीं ।

घर में ही नाना जी की प्राचीन पुस्तकें वे पढ़ती रहती थीं, इससे उनका धार्मिक ज्ञान इतना बढ़ गया था कि बड़े-बड़े महात्मा उनसे वार्त्तालाप करके अचम्भित रह जाते थे । मौसी जी की आँखें हमेशा नीचे रहती थीं । वे किसी से आँखें मिलाकर बात नहीं करती थीं, शरीर से दुर्बल थीं पर चेहरे पर ऐसा तेज था कि पास जाने पर हर किसी का मस्तक झुक जाता था ।

सत्तावन वर्ष की आयु में उनका स्वर्गवास हुआ था । मृत्यु से एक दिन पूर्व उनने बता दिया था कि कल शाम को चार बजे मैं चली जाऊँगी । उस दिन प्रातःकाल से ही कीर्तन, यज्ञ, गायत्री जप आदि आरम्भ हो गये थे । ठीक चार बजे उनने 'ओ३म्' का उच्चारण करते हुए बोलते, बात करते प्राण त्याग दिये। मृत्यु के समय कुछ भी बीमार नहीं रहीं, केवल कमजोरी अनुभव करती थीं । उस दिन वे स्वयं स्नान नहीं कर सकी थीं । दूसरों की सहायता से स्नान किया था । उनकी शव-यात्रा में हजारों लोग सम्मिलित थे और कीर्तन करते हुए शमशान ले गये थे, विधि पूर्वक अन्त्येष्टि संस्कार हुआ था ।

घर में तपोवन बनाकर रहने वाली, संयम पूर्वक आत्मा उद्धार में लगी रहने वाली ऐसी आत्माएँ कोई बिरला ही होती हैं । गायत्री माता की कृपा से मौसी जी को अखण्ड ब्रह्मचर्य पालने और मोक्ष की अधिकारिणी होने का अवसर मिला, अन्यथा कौन इस जमाने में उस ओर ध्यान देते हैं ।

वे विधवा थीं । विधवा होना साधारणतः दुर्भाग्य समझा जाता है, परन्तु यदि किसी को भगवान् सुमति दे दें तो दुर्भाग्य सौभाग्य में बदल सकता है । मौसी जी ने अपना जीवन इस प्रकार सफल बनाया और परम गति की अधिकारिणी हुईं । वह उनके वैधव्य की ही कृपा थी । यदि वे विधवा न होतीं तो गृहस्थ के चक्कर में इतना तप उनसे किस प्रकार हो सकता था । पुण्य प्रयत्न द्वारा दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदला जा सकता है।

परम करुणामयी माता

श्रीमती कमलावती देवी, नोहगढ़ का कहना है कि अक्सर पिता को पुत्र और माता को कन्याएँ अधिक प्रिय होती हैं । पुत्र को तो सभी चाहते हैं पर माता के हृदय में पुत्री के प्रति भी उतनी ही ममता होती है जितनी कि पुत्र के लिए । माता चूँकि नारी है इसलिए वह नारी हृदय को अच्छी तरह पहचानती है। सब ओर से उपेक्षित और तिरष्कृत हुई नारी अपनी माता की गोद में स्थान पाती है । सीता जी से जब जीवनभार न संभला गया तो धरती माता ने अपनी प्रिय पुत्री को छाती फाड़ कर उसमें छिपा लिया । पुत्री जब रोती है तो माता को ही पुकारती है, क्योंकि वह जानती है कि माता से अधिक सच्चा एवं निस्वार्थ प्यार उसे और कोई नहीं कर सकता ।

स्त्री जाति के लिए विशेष रूप से भगवान को माता के रूप में पूजने का विधान है । "सपनेहु आन पुरुष जग नाहीं" पतिव्रत धर्म का अत्यन्त उच्च आदर्श है । अपने पति के अतिरिक्त भगवान् को भी नारी रूप में मानना यह एक उत्तम भाव है । दुर्गा, गौरी, शीतला, गंगा, तुलसी, गौ आदि नारी परक उपास्य देवों को सदा से ही स्त्रियाँ पूजती रही हैं । गायत्री माता स्त्रियों के लिए विशेष रूप से उपास्य हैं । वे अपनी पुत्रियों पर अतिशीघ्र करुणा करती हैं । पुरुषों को माता की कृपा जितने समय में प्राप्त होती है, स्त्रियों को उससे कहीं अधिक एवं शीघ्र सफलता मिलती है । अपनी असहाय पुत्रियों की करुण पुकार सुनकर परम दयामयी माता कान बन्द नहीं कर सकतीं ।

मुझे गुरु दीक्षा में गायत्री मन्त्र दिया गया था । विवाह के उपरान्त मैंने गुरु दीक्षा ली थी । ससुराल वाले कहते थे कि स्त्रियों को गुरुओं की क्या आवश्यकता है ? पिताजी वेद शास्त्रों के बड़े विद्वान थे । उनने समझाया कि—"गुरु का स्थान आध्यात्मिक पिता का है । जैसे पिता को पर पुरुष नहीं कहते, वैसे ही धर्म पिता गुरु भी पर पुरुष नहीं हो सकता । हर मनुष्य के तीन जीवित देव होते हैं— (१) माता (२) पिता (३) आचार्य । चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष, गुरु सभी का होना चाहिए । पति पत्नी का रिश्ता दूसरा है। गुरु और पति एक नहीं हो सकते । जैसे पिता और पति एक ही मनुष्य नहीं बन सकता, इसी प्रकार गुरु और पति भी एक को ही नहीं माना जा सकता । आत्म-कल्याण के लिए जैसे पुरुष को सुयोग्य पथ प्रदर्शक चहिए, वैसे ही स्त्री को भी ।" पिताजी की इन दलीलों में काफी वजन था । इसलिए सबने उनकी बात मान ली । पिताजी के जो गुरु थे उन्हीं महात्मा ज्ञानानन्द जी ने ही मुझे भी गुरु दीक्षा दी ।

गायत्री साधना की सरल विधियाँ गुरु जी ने मुझे बताईं । उन्हीं के अनुसार मैं नियति रूप से माता का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जप, ध्यान और व्रत करती चली आ रही हूँ । घर में पवित्र स्थान पर गायत्री माता की प्रतिमा स्थापित कर रखी है । उसकी प्रातः सायं पुष्प, धूप दीप, अक्षत्, चन्दन आरती आदि से पूजन करती हूँ । गायत्री चालीसा का एक पाठ भी रोज ही हो जाता है । इतनी मामूली-सी पूजा करने में मुझे बड़ा आनन्द आता है । ऐसा लगता है, मानों सचमुच माता सामने खड़ी होकर मेरी पूजा को ग्रहण कर रही हैं ।

पति गृह के सब लोग यही कहते हैं कि जबसे बहू घर में आई है, तभी से लक्ष्मी का भी आवागमन हुआ है । पहले इस घर में बड़ा कलह रहता था, सभी आपस में लड़ते झगड़ते रहते थे, आलस्य छाया रहता था । कोई बीमार पड़ता था तो किसी की नौकरी छूटती थी, बड़ा कुटुम्ब शामिल तो रहता था, पर अलग रहने से बुरी स्थिति थी । छल, कपट, चोरी, ईर्षा में सभी डूबे रहते थे । आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर हो गई थी कि कर्ज मिलना भी मुश्किल हो रहा था, ऐसी परिस्थितियों के बीच मेरा विवाह हुआ। उस दिन से एक-एक कठिनाइयाँ दूर होती गईं और अब सभी दृष्टियों से यह घर भरा पूरा है । इस उन्नति में मैं गायत्री माता का ही अनुग्रह समझती हूँ । मेरे गुरु महाराज स्त्रियों की गायत्री साधना के अनेक सत्परिणम बताया करते थे । अब स्वर्गवास हो गया है।

मुझे कई बार ऐसे स्वप्न माता ने दिये हैं जो बिलकुल सच निकले । एक बार स्वप्न में एक कन्या आई और छोटा-सा बालक मेरी गोद में देकर चली गई, मैं लड़की को बहुत ढूँढ़ती फिरी कि उसका बच्चा उसे लौटा दूँ पर वह कहीं न मिली । इस स्वप्न के दस महीने बाद मझला लड़का उत्पन्न हुआ, जो सबसे अधिक सुन्दर, बुद्धिमान और धर्मात्मा है । एक बार मुझे स्वप्न हुआ कि ऊपर का चौवारा गिर पड़ा है । मैंने सास जी से कहा कि यह घर गिरने वाला है, पर उन्हें विश्वास न हुआ, क्योंकि वह कुछ कमजोर न था । मैंने धीरे-धीरे उसमें से सब सामान हटा दिया। स्वप्न के पाँचवें दिन वह चौवारा अचानक गिर पड़ा। यदि उसमें से वस्तुएँ न हटाई जातीं तो बहुत नुकसान होता । इस प्रकार बीसियों बार मुझे पूर्वाभास हुए हैं और वे प्रायः सदा ही सच निकले हैं ।

मैंने कई कुमारी कन्याओं को गायत्री पूजन, जप, ध्यान तथा गायत्री चालीसा का पाठ करने की विधि बताई है । माता की कृपा से इन्हें ऐसे अच्छे घर और वर प्राप्त हुए जैसे कि किसी को आशा न थी । उन घरों के लिए लोग बड़ा दहेज देने को तैयार थे, पर उन लड़कियों के सम्बन्ध यहाँ सहज ही हो गये । उनके पिताओं को अधिक परिश्रम तथा खर्च भी नहीं करना पड़ा ।

दूर रिश्ते की एक वृद्धा ताई जी ने मेरे कहने से गायत्री जपना आरम्भ किया । उनकी पुरानी श्वांस और खाँसी की शिकायत बहुत कुछ कम हो गई है और रात को नींद भी अच्छा आने लगी है । अब उनका मन भजन में बहुत लगता है और माता की कृपा का प्रत्यक्ष चमत्कार देखकर वे बहुत प्रसन्न हैं । मेरी देखा देखी पड़ोस के वैद्य जी की पत्नी भी पूजन करने लगी थीं, उन्हें चार कन्याओं के उपरान्त पुत्र प्राप्ति का सुख मिला है ।

मेरी सांसारिक माता का स्वर्गवास हो चुका है, पर दूसरी दिव्य माता को मैं सदा अपने साथ अनुभव करती हूँ । पिता जी तथा गुरु महाराज दोनों ही स्वर्ग सिधार गये, पर उनके इस उपकार को मैं कभी नहीं भूल सकती कि उन्होंने मुझे ऐसा मार्ग बता दिया जो जीवन को शान्तिमय बनाये हुए है ।

आत्म-विकास के पथ पर

श्री जटाशङ्कर जी नान्दी, पट्टन लिखते हैं कि गत साठ वर्ष से मैं गायत्री की उपासना कर रहा हूँ । इस दीर्घाकल में मुझे माता की कृपा से अनेकों अनुपम लाभ हुए हैं । उनमें से कुछ का उल्लेख नीचे किया जा रहा है ।

मुझे हर घड़ी ऐसा अनुभव होता रहता है, मानो गायत्री माता मेरे सन्मुख हर घड़ी उपस्थित रहती हैं और रक्षा करती हैं । इस अनुभव के कारण कोई बुरा काम नहीं बन पड़ता है । जैसे पुलिस की उपस्थिति में पापी भी अपराध नहीं कर सकता उसी तरह नद्य विचार और दुष्कर्मों को माता की उपस्थिति में सफलता नहीं मिलती । हर समय माता का संरक्षण सिर पर देखने के कारण भय, चिन्ता, आशंका और घबराहट नहीं होती । कठिन अवसर आने पर भी यह विश्वास रहता है कि माता की कृपा से सब कठिनाइयों का हल हो जायगा ।

माता की आराधना से अध्यात्म मार्ग में रुचि दिन-पर-दिन बढ़ती गई है । स्वाध्याय, सत्सङ्ग, चिन्तन, मनन और साधन के द्वारा सद् ज्ञान की वृद्धि हुई है । दूसरों की सहायता करने, अपने सद्गुणों को बढ़ाने एवं सबसे सद्व्यवहार करने की प्रवृत्ति का विकास हुआ है । विचार और व्यवहार में सतोगुण की मात्रा संतोषजनक हो गई है ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्मचर्य की महिमा अपार है । ब्रह्मचर्य के प्रताप से अप्राप्य वस्तुएँ भी प्राप्त हो सकती हैं । परन्तु बहुधा मनोविकरों के कारण वीर्य रक्षा हो नहीं पाती । अनेक संयमी साधकों की तरह मेरा भी यह अनुभव है कि गायत्री साधक के मनोविकार निर्बल हो जाते हैं । वासना घट जाती है और ब्रह्मचर्य पालन करना सुलभ हो जाता है जो कि सब सफलताओं का मूल है ।

सांसारिक पदार्थों पर से राग द्वेष छूट गया है । केवल कर्त्तव्य का ध्यान रहता है । न तो संसार इतना मोहक लगता है कि छोटी-छोटी वस्तुओं तथा घटनाओं के कारण मन विक्षिप्त हो जाय और न ऐसी उदासीनता आई है कि सब कुछ असार दीखने लगे । गायत्री माता ने सात्विक दृष्टि प्रदान की है जिसके कारण हर परिस्थिति में मन को शान्त एवं प्रसन्न रखना सम्भव हो सका है ।

संकटपूर्ण अवसरों पर अनेक बार दैवी सहायता प्राप्त हुई है । कोई आफत के प्रसंग आते हैं तो उनकी सूचना पहले ही मिल ही जाती है । जैसे लाल बत्ती दिखाने से रेल गाड़ी ठहर जाती है और खतरे से बच जाती है, इसी प्रकार इन दैवी कृपा से प्राप्त होने वाली सूचनाओं के द्वारा मेरी कई बार रक्षा हुई है । मोटर की प्राणघातक दुर्घटनाओं से तीन बार मरते-मरते बचा हूँ ।

गत साठ वर्ष में मैंने अनेक लक्ष जप किये हैं । इसका फल यह हुआ कि बिना प्रयत्न सहज रीति से, अपने आप गायत्री जप चालू रहता है । जो साधक सतत् जप करके ऐसी स्थिति प्राप्त करता है, उसे प्राण-त्याग समय भी इसी प्रकार अपने आप जप होता रहता है, जिसके कारण उसे निश्चय ही सद्गति प्राप्त होती है।

दिव्य नेत्रों से वन्दनीय देवों और महात्माओं के दर्शन होते हैं । अनहद नाद के मनोहर वाद्य संगीत सुनाई पड़ते हैं । कई बार तो ऐसे गीत सुने हैं जैसे जीवन में कभी नहीं सुने । यह शब्द इतने मधुर होते हैं कि बहुत समय तक उनकी प्रतिध्वनि कानों में गूंजती रहती है ।

सृष्टि के प्रारम्भ काल में आज तक अनेक भाग्यशाली आत्माओं ने गायत्री की सहायता से ईश्वर दर्शन, आत्म-साक्षात्कार और मोक्ष प्राप्त की है । सांसारिक कष्टों से छुटकारा पाकर सृजनी बनने वाले मनुष्य तो अगणित हैं । मेरा विश्वास है कि सत्कल्याण अभिलाषियों के लिए गायत्री की उपासना ही मोक्ष प्राप्त का साधन है ।

लड़के का सुधार

श्री मोतीलाल माहेश्वरी, धर्मपुर लिखते हैं कि मेरा लड़का कुसंग में पड़कर बुरी तरह बिगड़ गया था। जुआरी, चोर, उचक्के और लफंगों से उसकी दोस्ती थी । पढ़ना छोड़ दिया, दुकान पर बैठने में उसे काल का सा डर लगता था, जब भी मौका मिलता घर से रुपये, जेवर, कपड़े, बर्तन आदि ले जाता और महीनों घर से गायब रहता । उसकी करतूतों के ऐसे-ऐसे संदेशे मेरे पास आते कि दिल टूटने लगता हमारा कितना प्रतिष्ठित वंश और उसमें यह कंस कैसे उपज पड़ा, यह सोच-सोचकर बड़ा दुःख होता । ईश्वर से प्रार्थना करता कि हे माता या तो ऐसी संतान मिट जाय, या मेरी मिट्टी उठा लो जिससे यह सब सुनना और देखना न पड़े ।

१३ वें वर्ष से लेकर १७ वें वर्ष की आयु तक चार वर्ष उनके ऐसे कामों में निकाल दिये, पिटना, पीटना, सिनेमा, जुआ, नशा, आबारागर्दी, ताश, यही उसका नित्य कर्म था । लड़के की बदनामी से समाज में हमारा घर बदनाम हो गया । कोई उसके शादी के लिए देखने तक न आता । एक लड़का और तीन लड़कियाँ थीं । ऐसा प्रतीत होता था कि आगे अपना वंश ही डूब जायगा ।

घर में किसी बात की कमी न थी, पर लड़के की बजह से चित्त सदा दुःखी रहता । उसे समझाने के सब प्रयत्न कर लिये थे, पर सब निष्फल हुए । निराशा और अन्धकार ही सामने था । उन्हीं दिनों बद्रीनाथ यात्रा के लिए एक अच्छा संग मिल गया, दुःखी चित्त को कुछ सान्त्वना देने के विचार से अपनी स्त्री के साथ हम बद्रीनाथ चल दिये । रास्ते में भले-बुरे सभी प्रकार के लोगें का साथ हुआ । जो सज्जन पुरुष होते उनसे अच्छी पटती और मधुर वार्त्तालाप के साथ-साथ रास्ता कटता । इन्हीं सुखद दिनों में एक भद्रपुरुष का साथ हुआ । घरेलू चर्चाएँ भी हम लोग आपस में करते। अपने लड़के की चर्चा मैंने उनसे की । उनने कहा कि—"मैं भी इस तरह बहुत समय तक दुःखी रहा। मेरा लड़का भी बहुत दिनों तक ऐसी कुसंग में रहा । तब मुझे एक महात्मा ने गायत्री का जप और हवन करने का उपाय बताया मैंने वही किया और मेरे घर भर का वातावरण बदल गया, सबको सुबुद्धि आई और गृह कलह तथा लड़के की उदंडता दोनों से छुटकारा मिल गया । सो आप भी यदि गायत्री उपासना करें तो बहुत अच्छा हो ।"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

मैंने उस भद्र पुरुष से गायत्री जप और हवन की सारी विधि पूछ ली और यात्रा से लौटने पर वैसा ही साधन आरंभ कर दिया । तीन महीने में लड़के की मति पलटी । मैं उससे बोलता न था फिर भी वह दुकान पर आकर बैठने लगा और घर के कामों में रुचि दिखाने लगा । धीरे-धीरे एक दो महीने में उसका स्वभाव एकदम पलट गया । सारे कुसंगियों से उसने नाता तोड़ लिया और घर तथा दूकान का काम अपने आप ऐसे उत्साह से करने लगा मानों वह कभी बुराई में था ही नहीं । बिगड़ी बात बनने लगी, मेरे चित्त को चैन मिला लड़के की शादी हो गई । उसके तीन लड़के हैं । व्यापार की खूब उन्नति हुई । मैं अब वृद्ध हो गया हूँ । फुरसत का सारा समय गायत्री जप में लगाता हूँ । दिन भर माला हाथ में रहती है । गायत्री की कृपा से लड़का सुधरा और हमारा भारी कष्ट दूर हो गया ।

कष्ट रहित महायात्रा

पं. जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, जयपुर लिखते हैं कि शास्त्रों में लिखा है कि मृत्यु के समय प्राणी को एक हजार बिच्छुओं के काटने जैसी पीड़ा होती है । देखा भी ऐसा गया है कि कितने ही मनुष्य ऐसे कष्ट साध्य रोगों में ग्रसित होकर प्राण छोड़ते हैं कि देखने वालों का कलेजा काँप जाता है । कई-कई दिन आवाज बन्द रहना, गले में कफ घड़घड़ाना, श्वांस भी पूरी तरह न ले सकना, मूर्छा, अकडन, हड़फूटन, दर्द, अश्रुपात, दीनता एवं वेदना के साथ प्राण त्याग हुए मनुष्य को देखकर यही अनुभव होता है कि स्वर्ग नरक सब यहीं पर हैं । नरक के यमदूतों द्वारा दी जाने वाली पीड़ाओं, सजाओं का कुछ आभास, देखने वालों को भी मिलता रहता है । मरने वाले पर जो बीतती है उसे वही जानता है । हमने अपनी आँखों से ऐसी मृत्युएँ देखी हैं जिनमें हजार बिच्छू काटने का दुःख होने वाली बात सत्य प्रतीत होती है ।

यह निश्चित है कि दुःखों का कारण अकर्म ही है । सत्कर्म करने वाला मनुष्य इस लोक या परलोक में कोई कष्ट नहीं पाता, मृत्यु के समय भी उसे कोई पीड़ा नहीं होती । कितने ही सत्पुरुष इस प्रकार प्राण त्यागते हैं जैसे हाथी के गले में पड़ी हुई फूलों की माला टूट पड़े तो हाथी को पता तक नहीं चलता है कि वह माला कब टूट पड़ी । माया मोह ग्रस्त, दुरात्मा मनुष्य ही बहुधा मृत्यु के समय असहनीय पीड़ा सहते हैं ।

हमारे परिवार नेता श्री पं. हरिसहाय जी की मृत्यु पिछले मई मास में ही हुई है । रात को भोजन करके वे सोये प्रातःकाल उठने पर उन्हें कुछ कमजोरी-सी अनुभव हुई । साधारण अवस्था में उन्हें मान हुआ कि अब शीघ्र ही उनकी अन्तिम यात्रा होने वाली है । घर के लोगों को बुला कर उनने कहा कि, "बस मैं अब डेढ़ घण्टे और रहूँगा ।" घर के लोगों को इस बात पर विश्वास न हुआ कि यह कह क्या रहे हैं । उन्होंने फिर समझाया कि मैं असत्य नहीं कहता । जो बात अवश्यभावी है वही कह रहा हूँ । वे डेढ़ घण्टे सदुपदेश देते रहे और भगवान् का नाम उच्चारण करते रहे । बोलते, बात करते, ठीक समय पर उनके प्राण पखेरू उड़ गये ।

मृत्यु से कुछ ही क्षण पूर्व उन्होंने बताया कि मुझे वह विमान लेने आ गया । वह विमान घर के किसी दूसरे को न दिखा तो वे चुप हो गये और कहा—यह तुम लोगों को नहीं दिखेगा । हमारे गाँव में एक हरि भक्त महिला है उसे अपने घर से ही ठीक समय पर वह दिव्य विमान जाता हुआ दिखाई दिया । साधारणतः मृत्यु के समय बड़ा भयंकर और अशान्त वातावरण हो जाता है, पर उनकी मृत्यु के समय ऐसा वातावरण न था । ऐसी शान्तिमयी दिव्य धारा बह रही थी, मानों इस स्थल पर कोई देव पुरुष विराजमान हों।

श्री हरि सहाय जी पृथ्वी के देवता थे । उन्हें सच्चे अर्थों में भूसुर कह सकते हैं । अपने पूरे परिवार की उन्होंने ऐसी रक्षा, उन्नति और सषा की मानों घर ही उनकी आत्म-साधना की तपोभूमि हो । उन्हें सफल गृहस्थ योगी कहा जा सकता है । प्रातःकाल तीन बजे उठकर गायत्री का जप करने लग जाना उनका नित्य नियम था । वे अक्सर कहा करते थे कि—"गायत्री पर श्रद्धा करने वाले मनुष्य की आत्मा पवित्र हो जाती है और उसके सब कार्य यज्ञमय होते हैं । मैं इस छोटे से परिवार को ईश्वर की अमानत समझ कर वैसी ही उच्च भावना से सेवारत रहता हूँ जैसे कि योगी अपनी साधना में लगे रहते हैं । यह शिक्षा और भावना गायत्री माता ने मेरे हृदय में प्रेरित की है।"

एक दिन सबको मरना है, इसलिए मृत्यु की पीड़ा से बचने के लिए हमें स्वर्गीय आत्मा का प्रत्यक्ष उदाहरण अधिक उपयुक्त लगता है । महा कल्याण-कारिणी गायत्री उपासना में आत्मा को श्रद्धा पूर्वक लगाये रहना और शरीर को कर्त्तव्यधर्म में निरत रखना, यह दो कार्यक्रम ऐसे हैं जिन्हें अपनाकर हम

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सब अपनी अन्तिम यात्रा को कष्ट रहित बना सकते हैं। मैंने इसी मार्ग को पकड़े रहने का निश्चय किया है। पाठक बन्धुओं से भी ऐसा ही करने की मेरी प्रार्थना है ।

अन्धे होने पर भी सर्व शास्त्र पारंगत

आर्य समाज के स्थापक नैष्ठिक ब्रह्मचारी स्वामी दयानन्द जी के गुरु प्रज्ञाचक्षु स्वामी श्री विरजानन्द जी सरस्वती ने अनेक कष्ट सहते हुए तीन वर्ष तक गंगा तीर पर रहकर गायत्री का जप किया । उन्होंने खाने-पीने, उठने-बैठने, सोने-जागने आदि जीवन की सब स्थितियों में गायत्री के जप को चालू रखा । घोर तपस्या के फलस्वरूप इस दुबले तथा अन्धे संन्यासी ने अपरिमित विद्या, अलौकिक आत्म-श्रद्धा तथा ब्रह्म तेज इतने प्रबल प्रमाण में प्राप्त किया था कि जयपुर तथा अलवर के महाराज भी इनके अधीन होकर आज्ञाकारी हो गये थे ।

सर्वोपरि गायत्री

पं. मणिशंकर भट्ट, जूनागढ लिखते हैं कि हमारे यहाँ कई पीढ़ी से पौरोहित्य वृत्ति होती रही है । पिता जी कर्मकाण्ड विद्या के असाधारण ज्ञाता थे । उन्होंने मुझे भी वेदपाठी और कर्मकाण्डी पंडित बनाने के लिए भरपूर प्रयत्न किया । मथुरा, काशी, प्रयाग आदि संस्कृत विद्या के केन्द्रों में विद्वान आचार्यों की संरक्षता में रहकर मैंने संस्कार, यज्ञ, अनुष्ठान पुरश्चरण आदि की श्रौत स्मार्त क्रियाऐं भली प्रकार सीखीं । चौदह वर्ष विद्याध्यान के पश्चात घर लौटा, थोड़े ही दिनों में मेरी योग्यता की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। उपरोक्त कार्यों के लिए दूर-दूर तक बुलावे आने लगे।

तब से लेकर अब तक उत्तर भारत के प्रमुख नगरों में मैंने अनेकों कर्मकाण्डों को पूरा कराने का भार अपने ऊपर लिया हैऔर उन्हें पूरा कराया है । अपने जीवन के इस लम्बे अनुभव के आधार पर मुझे यह करने का साहस है कि अन्य प्रकार के समस्त पूजा, पुरश्चरण, पाठ, जप, अनुष्ठान यज्ञ आदिकों की अपेक्षा गायत्री साधन का लाभ अधिक है । गोपाल सहस्त्र नाम, विष्णु सहस्त्र नाम, गंगा लहरी, शिव महिमा आदि के पाठ, महामृत्युंजय अष्टाक्षरी द्वादशाक्षरी मंत्रों के जप, शतवण्डी अनुष्ठान, विविध विधियों से किये जाने वाले सकाम यज्ञ, इन सब के द्वारा जो लाभ लोगों को प्राप्त नहीं हो सके थे, वे गायत्री साधन से प्राप्त हो गये ।

यजमान अपनी इच्छा से कोई कार्य कराते थे, उन्हें ठीक विधि विधान के साथ पूरा करा देता था, पर कोई मुझसे सलाह लेता कि अमुक प्रयोजन के लिए मुझे कुछ कर्मकाण्ड कराना है तो मैं सदा उसे यही सलाह देता कि आप या तो गायत्री स्वयं जप एवं साधना करने का समय नहीं निकाल पाते थे वे उस कार्य को पंडितों द्वारा कराते थे और उन्हें दक्षिणा देकर साधन का फल प्राप्त कर लेते थे । देखा गया कि इस प्रकार पंडितों से कार्य कराने पर भी उन्हें वैसा आनन्ददायक फल मिला, जैसा कि अन्य साधन स्वयं करने पर भी नहीं मिल पाता।

सन्तान प्राप्ति, रोग नाश व्यापार, दुर्दिन निवारण, विपत्ति हटाने या किसी अन्य प्रकार की विशेष सफलता को प्राप्त करने के लिए मेरे द्वारा सैकड़ों ही कर्मकाण्ड कराये गये हैं इसमें से एक भी ऐसा स्मरण नहीं आता जिसमें प्रयत्न निष्फल हो गया हो । अनेकों बार तो जिस कामना के लिए वह किया गया था, वह कार्य अत्यन्त कठिन दिखाई देने पर भी वह सरल रीति से हल हो गया कि जिस प्रयोजन के लिए कार्य किया गया वह तो पूरा नहीं हुआ, पर दूसरा कोई और भी अच्छा लाभ प्राप्त हुआ । बड़ौदा में एक व्यक्ति ने मुकदमेबाजी से छुटकारा पाने के लिए अनुष्ठान कराया । मुकदमा तो वह न जीत सका पर उसका तीस वर्ष पुराना खूनी बवासीर का रोग अच्छा हो गया। अहमदाबाद में एक व्यक्ति चाहता था कि उसे रात्रि में जो भयंकर स्वप्न आते हैं वे बन्द हो जायें । अनुष्ठान के बाद भी उसके बुरे स्वप्न तो बन्द न हुए पर पचास वर्ष की अवस्था तक सन्तान रहित रहने वाले इस व्यक्ति को अनुष्ठान के एक वर्ष बाद एक सुन्दर पुत्र उत्पन्न हुआ । बम्बई के एक व्यक्ति ने अपने पुत्र को बी. ए. में उत्तीर्ण होने की कामना से पुरश्चरण कराया । लड़का तो उत्तीर्ण न हो सका, पर उसी वर्ष सट्टे के व्यापार में उन्हें इतना अधिक लाभ हुआ कि वह साधारण स्थिति के न रहकर बड़े धनिकों में गिने जाने लगे । इस प्रकार कई बार ऐसा भी देखा जाता है कि जिस उद्देश्य के लिए सकाम धन किया गया था, वह पूरा न होने पर भी अन्य मार्गों से भी संतोषजनक लाभ हुआ ।

बीस वर्षों तक दूसरों के लिए मैंने अनुष्ठान कराये और उसके बदले में दक्षिणा लेकर अपना निर्वाह किया । पीछे मुझे ज्ञान हुआ कि जितना श्रम दूसरों के लिए करता हूँ उतना अपने लिए करूँ मुझे गायत्री माता विमुख न रखेंगी । गत पाँच वर्ष से मैंने दूसरों के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

लिए अनुष्ठान या कर्मकाण्ड करना बिल्कुल छोड़ दिया है । अपनी ही साधना में रत रहता हूँ । हमारे परिवार की सांसारिक आवश्यकताएँ ठीक प्रकार पूरी होती जा रही हैं और आत्मोन्नति की जो दिव्य सम्पदा इकट्ठी होती जा रही है, वह संचित कोष की तरह लाभ खाते जमा हो रहा है ।

पच्चीस रुपये वेतन से तीन सौ हो गये

श्री मधु सूदन स्वामी का नाम संन्यास लेने से पहले मायाशङ्कर दयाशङ्कर पंडया था और वे सिद्धपुर में रहते थे । वे आरम्भ में पच्चीस रुपये की नौकरी में दाखिल हुए । उन्होंने हर रोज हजार गायत्री जप से लेकर चार हजार तक बढ़ाया । उसके परिणाम-स्वरूप वे बड़ौदा राज्य में रेलवे असिस्टेन्ट ट्राफिक सुप्रिन्टेन्डेन्ट के औहदे तक पहुँच गये । उनका वेतन तीन सौ था । उत्तरावस्था में उन्होंने संन्यास लिया और आज तक मौजूद हैं ।

सकाम से निष्काम साधना

श्री पं. रामस्वरूप जी चाचोदिया, राठ का कहना है सामान्यतया मनुष्य तत्काल के लाभ को देखता है । तात्कालिक लोभ के लिए वह भविष्य की भारी हानि का खतरा भी उठाता है । इसके विपरीत यदि किसी काम में तुरन्त लाभ न हो किन्तु भविष्य में किसी बड़े सुख की सम्भावना हो तो भी उसे करने का उत्साह नहीं होता । तुरन्त का लाभ लोगों का प्रधान एकमात्र दृष्टिकोण बना हुआ है । ऐसे कई बिरले ही हैं जो भविष्य को स्थाई लाभ के लिए आज के लाभों को जोड़ने का साहस कर पाते हैं ।

आध्यात्मिक साधना में तत्काल कोई लाभ नहीं होता, बल्कि समय खर्च करना पड़ता है एक नीरस कर्मकाण्ड की नियमित साधना का बन्धन ऊपर लेना पड़ता है, हवन, दान पुण्य आदि में कुछ खर्च भी बढ़ता है, यह सब तात्कालिक हानियाँ ही हैं । व्रत, उपवास, तीर्थ यात्रा, संयम नियम आदि का झंझट और मित्र मंडली में उपहास यह सब बातें भी हानि में गिनी जा सकती हैं । भविष्य में इससे कोई लाभ होगा या नहीं, इसका भी निश्चय नहीं, इन सब कारणों से कोई बिरले ही आध्यात्मिकता के मार्ग को अपनाते हैं। जो अपनाते हैं वे सरल-सा कार्यक्रम पूरा करते हैं, दान, तीर्थ यात्रा, कथा ब्रह्मभोज, हवन आदि के लिए एक दिन कुछ पैसा खर्च करके पुण्य हो जाता है, रोज-रोज का झंझट नहीं रहता । कथा प्रवचन सुनने या कीर्तन की स्वर लहरी में सहयोग देने का कार्य भी सुगम है, पर नित्य नियत समय पर मन मार का जप, ध्यान, भजन, पूजन के लिए बैठना और उसे देर तक निभाये रहना सामान्यतः बड़ा अरुचिकर होता है । लोग अरुचिकर कार्यों के लिए प्रायः तैयार नहीं होते ।

उपरोक्त दृष्टिकोण वाले असंख्यों मनुष्यों में से ही एक मैं भी था । मेरी रुचि जप, तप में जरा भी न होती थी, परन्तु भगवान् की कृपा बड़ी विलक्षण है, जिस पर वे कृपा करते हैं उसकी बुद्धि फेरते भी उन्हें देर नहीं लगती ।

एक दिन मुझे एक मित्र से गायत्री सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ने को मिलीं । उनमें से गायत्री द्वारा अनेक सांसारिक लाभ होने का भी वर्णन था, साथ ही ऐसे कुछ उदाहरण भी दिये हुए थे जिनसे विदित होता था कि अमुक व्यक्ति ने इस साधना द्वारा अमुक लाभ उठाये हैं । मेरा मन भी ललचाया । तात्कालिक लाभ सभी का इष्ट है, मुझे भी इसी की आवश्यकता थी । अपना लाभ या स्वार्थ जिस तरह से भी पूरा होता है वही मार्ग ठीक है चाहे वह गायत्री उपासना हो, चाहे व्यापार चाहे नौकरी चाहे और कुछ । साधना से मुझे वस्तुतः कोई प्रेम न था । अपना प्रयोग सिद्ध करने के लिए गायत्री की परीक्षा कर देखने की इच्छा हुई ।

लाभ के लोभ से मैंने गायत्री को अपनाया जानकारों से पूछकर जप, ध्यान, हवन आदि की विधियाँ मालूम कीं और नियमित रूप से उन्हें करने लगा । जीवन में पहली बार यह पथ चुना इसलिये इस सम्बन्ध में उत्साह और कौतूहल विशेष था । उनने मुझे अधिक जानने के लिए प्रेरित किया मैंने गायत्री सम्बन्धी अनेकों पुस्तकें पढ़ डालीं ।

जिस छोटे प्रयोजन को लेकर मैंने अनुष्ठान प्रारम्भ किया था वह सफल हो गया जो आशंकाएँ और बाधाएँ दिखाई पड़ती थीं वे एक भी बाधक नहीं हुई परिणाम सुखद रहा । साधारणतया स्वार्थ सिद्ध हो जाने पर साधन वस्तुओं का छोड़ दिया जाता है, पर वैसा न कर सका । क्योंकि उपासना में एक आन्तरिक रस आने लगा । इस सम्बन्ध में अधिक जानकारी प्राप्त करने की रुचि ने आध्यात्मिक ज्ञान को इतना बढ़ा दिया कि संसारिक लाभों की तुलना में आत्मलाभ का महत्त्व अनेक गुना अधिक मालूम होने लगा । माता के प्रति अगाध भक्ति बढ़ती गई और साधना द्वारा लाभ उठाने की अपेक्षा स्वयं साधना ही एक महान् लाभ प्रतीत होने लगी । अब मैं पूर्ण निष्काम भाव से उपासना करता हूँ और उसका वह प्रतिफल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पाता हूँ जो बड़ी से बड़ी कामना पूर्ण होने की अपेक्षा अधिक सरस है ।

सकाम उपासना अन्ततः निष्काम मातृ श्रद्धा में बदल जाती है । ऐसा मैंने कई व्यक्तियों के उदाहरणों से देखा है । परन्तु यह ध्यान रखने की बात है कि प्रारम्भ में छोटी से छोटी ही कामना करनी चाहिए । प्रारम्भिक साधक की श्रद्धा और साधना अत्यंत निर्बल होती है । जो लोग रत्ती भर श्रम का लाख मन फल पाने का अमर्यादित लोभ करते हैं और प्रबल कर्म भोगों को एक माला फेर कर ही हटाना चाहते हैं उनको निराशा ही होती है । फिर भी जितना शुभ प्रयत्न कर लेते हैं व किसी न किसी रूप में उनके लिए सहायक ही होता है । अपने को असफल समझने वाले गायत्री साधकों का प्रयत्न भी कभी व्यर्थ नहीं जाता, मनोकामना पूर्ण न होने पर भी किसी न किसी प्रकार सत्परिणाम अवश्य मिल जाता है ।

चिकित्सा में सफलता

श्री भूरेलाल जी वैद्य, हर्रई लिखते हैं कि पं. नर्मदाप्रसाद शास्त्री भदरस कानपुर के रहने वाले उद्‌ण्ट विद्यावान भाग्यवश हर्रई (जागीर) के राम मन्दिर में आकर पुजारी हो गये थे, ईश्वर कृपा से उनके पास आया जाया करता था । एक रोज ये प्रसन्न होकर बोले कि हम तुमको ब्राह्मण के नाते एक महामन्त्र बताते हैं, वे मन्त्र का एक-एक शब्द उच्चारण करते गये और मैं उन शब्दों को हृदयांकित करता गया, एक ही बार के बताने से मुझे याद हो गया, वे बहुत खुश हुए और बोले कि इस मन्त्र से बढ़कर संसार में कोई मन्त्र नहीं है, जो चाहोगे इसी में मिलेगा जब से मैंने इसे अपना इष्ट मानकर यहाँ वहाँ न भटककर नित्य नियम से जप करने लगा ।

आज अरसा ३५ साल का होता है, इस अवधि में अनेक झंझटें और बाधाएँ आईं, परन्तु महामन्त्र की बदौलत आप ही पार होती गईं । कई बार आर्थिक संकट भी उपस्थित हुए अनायास मुझे देवी सहायता भी प्राप्त हुई, जब से मैंने गायत्री मन्त्र को अपनाया तब से मेरी बुद्धि में भी परिवर्तन होकर वैद्यक विद्या पर रुचि हुई । गुरु के प्रताप से थोड़े ही समय में मेरी गिनती राजवैद्यों में हो गई और बड़े-बड़े लक्षाधीशों के घर आनाजाना हो गया, कठिन से कठिन रोगों में सफलता हुई । बगैर कुछ माँगे लोग हजारों की तादाद में रुपया देने लगे । इस दैवी सहायता से चार लड़कियों की व एक लड़के की शादी की । आर्थिक कष्ट इस तरह निवारण होते गये । मतलब कहने का यह है कि जिस चीज की इच्छा हुई । वह पूर्ण इसी तरह जमीन जायदाद की भी समझिये ।

अब तो इतना कुछ हो गया है कि जो भी अच्छा-बुरा खुद के लिए होने वाला है, वह स्वप्न में आगाह हो जाता है, इसका भी मैं कई बार अनुभव कर चुका हूँ, आगन्तुक का रूपान्तर होकर स्वप्न होता है और दूसरे दिन वह सत्य हो जाता है, लेकिन स्वप्न की याददास्त पूरी-पूरी रहने से फल स्पष्ट हो जाता है, सत्य निष्टा से जप किया करता हूँ और कोई साधन या अनुष्ठान नहीं किया मुझे इसी में फलीभूत है। प्रेत बाधा या मानसिक बीमारियों में मंत्र पढ़ कर थोड़ा जल पिला देने से सेहत हो जाती है । खोजने से इष्ट की प्राप्ति होती है, ऐसी इस मंत्र की मेरी गाथा है।

छोटी नौकरी से धनी व्यापारी

शा. मोड़कमल केजड़ीवाल, कलकत्ता लिखते हैं कि जोधपुर राज्य के एक गाँव में हमारी जन्मभूमि है। हिन्दी मिडिल पास करने के बाद पास के गाँव में प्राइमरी स्कूल का अध्यापक हो गया । १२) मासिक तनख्वाह के मिलते थे । परिवार छोटा था, सस्ते का जमाना था । किसी प्रकार काम तो चल जाता था, पर तबियत न लगती थी जी में बार-बार यही बात उठा करती कि यदि अच्छी आमदनी का काम मिलता तो जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होता ।

पं. शिवदत्त शर्मा की लिखी हुई एक छोटी-सी पुस्तक गायत्री महिमा मुझे अपने एक मित्र से मिली, उसमें गायत्री मंत्र की बड़ी महिमा लिखी थी । मेरा मन उस ओर आकर्षित हुआ और श्रद्धा पूर्वक गायत्री का जप करने का नित्य नियम बना लिया ।

एक दिन जप करते-करते अचानक मेरे मन में स्फुरणा हुई कि मुझे कलकत्ता जाना चाहिये, वहाँ जाने पर मेरी आर्थिक उन्नति होगी । दूसरे दिन मैं घर वालों को बिना किसी प्रकार की सूचना दिये कलकत्ता चल दिया । हरीसन रोड पर हमारे एक परिचित सज्जन रहते थे, उनकी सहायता से २७) मासिक की नौकरी मिल गई । मैं नौकरी करता था । उन्नति के लिए मार्ग तलाश करता था, साथ ही गायत्री का जप भी पूरी सावधानी से करता था ।

एक नये सज्जन से मैत्री बढ़ी जो एक बड़ी कोठी में हैड मुनीम थे । उन्होंने मुझे अपने सहायक के रूप में मुनीमी विभाग में नौकर करा दिया । अब ५०) मिलने लगे । सस्ते के जमाने में ५०) भी बहुत थे । निजी खर्च चला कर, बच्चों के लिये खर्च भेज कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कुछ बचत हर महीने हो जाती थी । एक वर्ष में मुनीमी का अच्छा ज्ञान हो गया । एक दूसरी कोठी में हैड मुनीमजी की जगह खाली हुई वहाँ ११५) मासिक की नौकरी मिल गई ।

हैड मुनीम होने पर मैंने सवा लाख मन्त्रों का गायत्री पुरश्चरण किया । पुरश्चरण काल में जो अद्भुत अनुभव मुझे हुए उनका वर्णन करने से तो इस लेख का बहुत विस्तार हो जायगा । पर एक घटना का उल्लेख करना आवश्यक है । पुरश्चरण के अन्तिम दिन मैं ध्यान मग्न बैठा था कि अचानक मुझे एक सफेद पहाड़-सा उड़ता हुआ दिखाई दिया । वह पहाड़ा मेरे निकट आता चला गया । जब बिल्कुल निकट आ गया, तो देखा कि यह रुई की गाँठें हैं । वे गाँठें चाँदी की पत्तियों से बँधी हुई हैं और बड़ी मनोहर प्रभा के साथ चमचमा रही हैं, इसके बाद वह पहाड़ गायब हो गया ।

इस विचित्र दृश्य का मैं कुछ भी अर्थ न समझ सका, पर हैरत बहुत हुई । पूजा पाठ और आध्यात्मिक बातों में मेरे एक सच्चे साथी थे, जिनके यहाँ आकर मैं आरम्भ में ठहरा था और जिन्होंने मुझे नौकरी पर लगाया था । उनसे मैंने चाँदी की पत्तियों से जड़ी हुई रुई की गाँठों के पर्वत का वर्णन किया। उन्होंने कुछ सोचकर बताया कि इसका अर्थ यह है कि रुई के सट्टे में लाभ की आशा है । हम दोनों ने रुई की तेजी के ऊपर सट्टा लगा दिया । उसमें हमें पन्द्रह-पन्द्रह हजार का लाभ हुआ । उस रुपये से हम लोगों ने एक सम्मिलित व्यापार किया । व्यापार में काफी उन्नति हुई । फिर हम दोनों अलग-अलग कारोबार करने लगे ।

अब हमारा फर्म अच्छी स्थिति में चल रहा है । आर्थिक दशा काफी मजबूत है। कपड़े के व्यापार में लड़ाई का जमाना भी कुछ बुरा नहीं रहा । हम लोगों का विश्वास है कि १२) मासिक की नौकरी से इस स्थिति तक पहुँच जाने में गायत्री माता की कृपा ही प्रधान कारण है ।

गई लक्ष्मी का पुनरागमन

श्री शंभूचरण विश्नोई, वीरपुर लिखते हैं कि हमारे पिता जी बड़े चतुर और बुद्धिमान थे। उनने अपने हाथों लगभग दस लाख की सम्पत्ति कमाई थी । जमींदारी, देन-लेन, घी और गल्ले का व्यापार तथा और भी अनेक मार्गों से उनकी आमदनी थी । रईसी ठाठ-बाठ से रहते थे, सदा उनके साथ दरबार लगा रहा था । मैं उनका इकलौता पुत्र था । लाड़ प्यार की कमी न थी, जिस दुलार आनन्द और विलासिता से मेरा बचपन बीता वैसा किन्हीं बिरलों को ही नसीब होता है ।

भाग्य ने पलटा खाया । जब मैं तेरह वर्ष का था तो अचानक तीन दिन की बीमारी में पिता जी की मत्यु हो गई । पिताजी के जितने मित्र थे उन सबने मेरी माता पर तथा मुझ पर बड़ी कृपा दिखाई । हर एक ने यह विश्वास दिलाया कि हम लोगों की पूरी सहायता की जायगी । विश्वास करने के अतिरिक्त और कोई चारा न था । सबने कृपा की जो जितना अधिक हित चिन्तक बना, उसने उतनी ही बड़ी दगा की । मिलकर दगा करने वालों की करतूतों का कोई मनोरंजक अनुभव सुनना चाहे तो उसे आप बीती कहानी कई दिनों तक सुनाये जा सकता हूँ ।

पाठकों का कीमती वक्त अधिक खराब करने से क्या फायदा, किस्सा तो यह है कि सात वर्ष के भीतर पिता जी की सारी जायदाद, सारी नकदी, सारी इज्जत आबरू बरबाद हो गई । उन नकली मित्रों ने अपना घर भरने के लिए खानदान भर से हमारी दुश्मनी करादी, तरह-तरह की बुराइयाँ, फिजूली खर्ची, लापरवाही आदि के कारण तबाही बढ़ती गई। माता जी भी, पिता जी से सात वर्ष बाद स्वर्ग सिधार गईं । उनके मरते ही कर्जदारों ने अपने झूठे सच्चे दावे किये और बरस-छः महीने के भीतर ही बचा खुचा भी चला गया ।

बेबसी और शर्मिन्दगी से परेशान होकर मैंने घर छोड़ दिया । स्त्री को उसके मैके पहुँचा कर मैं रोजगार की तलाश में परदेश को निकल पड़ा। जगह-जगह की खाक छानता हुआ मारा-मारा फिर रहा था । बचपन के आराम और इस वक्त की मुफलिसी इन दोनों का मुकाबला करता तो आँखों में आँसू भर आते । ऐसी ही चिन्ता और परेशानी में एक बगीचे में बैठा हुआ था और भी कई महानुभाव वहाँ बैठे हुए थे। उनमें गायत्री सम्बन्धी वार्तालाप हो रहा था । बातें कुछ प्रिय लगीं, ध्यान से सुनने लगा, वे लोग ऐसी चर्चा कर रहे थे कि किस-किस व्यक्ति को किस प्रकार गायत्री साधना से लाभ हुआ ।

झिझकते हुए उन भद्र पुरुषों से पूछा कि क्या मैं भी गायत्री द्वारा लाभ उठा सकता हूँ ? उन्होंने मेरा परिचय पूँछने के बाद उपासना के लिए प्रोत्साहन दिया और सारी विधि बता दी । दूसरे दिन से ही मैं साधना करने लगा । मेरा मन घर जाने को कर रहा था, घर लौट आया । अब मेरे स्वभाव में और विचारों में,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समझ मे भारी हेर-फेर हो रहा था । खेती करने की इच्छा हुई। अपने खानदान वालों से पश्चाताप और क्षमा याचना के साथ मिला । उनमें से कई बड़े उदार थे, भूतकाल में मेरे पिताजी द्वारा किये गये उपकारों की याद करके वे पिघल गये और मेरा पथ-प्रदर्शन और सहयोग करने को प्रसन्नता पूर्वक तैयार हो गये ।

कुटुम्बियों के साथ मैंने खेती आरम्भ कर दी । लगातार कई वर्ष तक अच्छी फसलें हुईं । भाव अच्छा लगा और तीन चार वर्ष में ही मेरे दिन फिर गये । जो लाभ खेती से होता था उससे पिताजी की भाँति घी, गल्ला, किश्त बाँटना, जेवर गिरवी रखना, देन-लेन का कारोबार करने लगा । सुसराल वालों ने सुना कि लड़का सुधर गया तो उनने भी आर्थिक सहायता दी । सब दिशाओं में सफलता मिलती गई । लक्ष्मी को जाते कुछ देर नहीं लगती, पर जब आती है, तब भी दौड़ी हुई आती है। बूँद-बूँद से घड़ा भर जाता है। चारों ओर से जब ईश्वर की कृपा हुई तो हमारा खाली घर धन, धान्य, प्रतिष्ठा, सन्तान, नौकर-चाकर आदि से भरा पूरा हो गया । जिन लोगों ने हमारी जायदाद खरीदी थी, उनमें से कई एक से वापिस खरीद ली है।

यह सब गायत्री माता की कृपा है। उस बगीचे में बैठे हुए सज्जनों की बातों को याद करता हूँ तो मेरा हृदय कृतज्ञता से भर जाता है । उन्होंने मुझे वह ज्ञान दिया जो हजारों रुपये नकद देने की अपेक्षा कहीं अधिक मूल्यवान है। गायत्री मात्रा ने मेरे सब दु:ख दरिद्र को दूर कर दिया। उसका स्मरण और पूजन किये बिना मैं अन्न-जल ग्रहण नहीं करता । प्रति वर्ष गायत्री यज्ञ करता हूँ । मेरी देखा-देखी और भी कई मनुष्यों ने गायत्री का व्रत लिया है और वे भी फल-फूल रहे हैं । मैंने शास्त्र नहीं पढ़े, सीधी-साधी विधि से पूजन, जप और ध्यान करता हूँ । मेरा विश्वास है कि जो माता के चरणों में शीश नवाता है वह जगजननी की कृपा अवश्य प्राप्त करता है ।

पिताजी की तपस्या का प्रतिफल

श्री बामन जी तरुड़कार,बेतूल लिखते हैं कि मेरे पिताजी गायत्री के अनन्य भक्त हैं । उनका अधिकांश समय गायत्री उपासना में जाता है । २४ लक्ष का अनुष्ठान कर चुके हैं और सवा करोड़ की साधना में लगे हुए हैं ।

पिताजी ग्रहस्थ होते हुए भी महात्मा हैं । दूर-दूर तक लोग उन्हें बड़े आदर की दृष्टि से देखते हैं।

गायत्री उपासना से उन्हें स्वयं बहुत लाभ हुए हैं अन्य अनेक व्यक्तियों को भी उनके द्वारा आध्यात्मिक सहायता पहुँचती है ।

मैं उनका पुत्र हूँ । मुझे भी उनकी कृपा और आध्यात्म शक्ति का लाभ अनेक बार मिला है । मैट्रिक की परीक्षा में उत्तीर्ण होने की कम आशा थी । तैयारी पूरी तरह नहीं हो पाई थी, जी धड़कता रहता था । फेल होने की आशंका लगी रहती थी । पिताजी ने मेरे लिए माता की पूजा की और में अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण हो गया ।

नौकरी मिलने में भारी कठिनाई हो रही थी । कहीं जगह न मिली तो 'मेल प्यून' की छोटी जगह लेनी पड़ी । माता की ऐसी कृपा हुई कि चार मास बाद ही एक अच्छा बाबू का पद मिल गया । वेतन भी सन्तोषजनक है और उन्नति की सम्भावना भी काफी है ।

पिताजी की गायत्री साधना मेरे लिए वरदान सिद्ध हो रही है ।

पुत्र एवं स्वर्ण घट की प्राप्ति

श्री जोखूराम मिश्र विशारद, जमुनीपुर लिखते हैं कि—(१) प्रयाग जिले के छतैना ग्राम निवासी प. देवनारायण जी देव भाषा के असाधारण विद्वान और गायत्री के अनन्य उपासक हैं । तीस वर्ष की आयु तक अध्ययन करने के उपरान्त उन्होंने गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया । पत्नी बड़ी सुशील एवं पति परायण मिली, परन्तु विवाह के बहुत काल बीत जाने पर भी जब कोई संतान न हुई तो अपने को बन्ध्यात्व से कलंकित समझ कर दु:खी रहने लगीं । पंडित जी ने उनकी इच्छा को जानकर सवा लक्ष जप का अनुष्ठान किया। कुछ समय पश्चात् उनके एक प्रतिभावान मेधावी पुत्र हुआ जो आज-कल देव-भाषा की सर्वोच्च उपाधि प्राप्त करने की तैयारी कर रहा है ।

(२) प्रयाग के पास जमुनीपुर ग्राम में एक विद्वान ब्राह्मण रहते थे । उनका नाम पं. रामनिधि शास्त्री था। शास्त्री जी विद्या का भण्डार होते हुए भी अत्यन्त निर्धन थे, पर वे गायत्री साधना में भक्ति पूर्वक निरत रहते थे । तपश्चर्याओं में उनका शरीर अस्थि पंजर मात्र रह गया था ।

एक बार शास्त्री जी ने गायत्री के नवान्हिक पुरश्चरण का संकल्प किया । उन्होंने नौ दिन तक केवल जल पीकर ही साधना की । जब पुरश्चरण समाप्त हुआ तो अर्ध रात्रि में भगवती गायत्री ने बड़े

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिव्य स्वरूप में उन्हें दर्शन दिये और वरदान दिया कि तुम्हारे सब मनोरथ पूर्ण होंगे । तुम्हारे इस घर में ही अमुक स्थान पर एक स्वर्ण घट रखा हुआ है उसको निकाल कर अपनी दरिद्रता दूर करो, तुम्हें शीघ्र ही पुत्र भी प्राप्त होगा । यह कहकर गायत्री देवी अन्तर्ध्यान हो गई । पंडित जी ने स्वर्ण से भरा हुआ घड़ा निकाला और वे निर्धन से धनपति हो गये। उनके घर एक गौर वर्ण पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका नाम 'गायत्री प्रसाद' रखा गया ।

—ब्राह्ममुहुर्त में गायत्री का जप करने से चित्त शुद्ध होता है और हृदय में निर्मलता आती है ।

—शिवानन्द

गायत्री के निजी अनुभव

श्री लक्ष्मीनारायण श्रीवास्तव वकील, कनकुआ लिखते हैं कि एक वर्ष के पहले मुझे साढ़े साती आया थ। जिस काम में हाथ डालता था, उसी में हानि दृष्टिगोचर होती थी । हानि पर हानि से मैं बहुत विचलित हो उठा—अतः शान्ति पूर्वक एक रात्रि को विचार किया और दूसरे दिन से गायत्री पूजन व अनुष्ठान प्रारम्भ कर दिया । दैनिक साधन के साथ-साथ पूजन ध्यान व जप का कार्यक्रम चलता रहा । दैनिक कार्यक्रम में ब्राह्म मुहर्त में उठकर नित्य कर्म से निश्चिन्त होकर स्नान आदि से निर्वत्त होकर अनुष्ठान पर बैठ जाता था। रेशम की धोती पीली रंगी हुई, कमीज व चादर रेशम की पीली रंगी हुई थी। जिस कमरे में साधना करता था उसको पीले रंगा दिया था । बिछाने, ओढ़ने के कपड़े भी पीला रंगा लिया थे । भोजन में भी हल्दी का अधिक प्रयोग करता था। ध्यान में हाथी पर सवार पीताम्बर धारी गायत्री माता का ध्यान करता था । इस प्रकार एक माह से कुछ अधिक समय बीत गया । अब मुझे ज्ञात हुआ कि हानि कम होने लगी और लाभ की आशा प्रतीत होने लगी । कुछ ही समय के पश्चात् लाभ ही लाभ दिखाई देने लगा और आकस्मिक धन की प्राप्ति भी हुई ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि जो महानुभाव आर्थिक अभाव से दुःखित हों, इस कार्यक्रम से गायत्री साधना करेंगे, अवश्य लाभान्वित होंगे ।

गायत्री जप के अनुष्ठान का मेरा अनुभव है वह संकटों को दूर करने के लिए सर्वोत्तम है । मेरी स्त्री के जब बच्चा पैदा होता था, तब वे हमेशा ही सख्त बीमार हो जाती थी और जीवन की आशा नहीं रहती थी । इस बार मैंने पहले ही गायत्री माता से प्रार्थना करके संकल्प को लेकर जप किया, फलस्वरूप इस बार कोई ऐसा घोर कष्ट नहीं हुआ और न हालत ही खराब हुई और कुछ दिनों के पश्चात् अच्छी होकर स्वस्थ निकलीं ।

एक बार मेरा बड़ा लड़का जिसकी उम्र करीब ७ साल थी मोतीझरा की बीमारी से ग्रसित हो गया । कई दिनों की बीमारी के पश्चात् एक रात उसकी हालत बहुत खराब हो गई । बिल्कुल बेहोशी की बातचीत करता था और जोरों से चिल्लाता था। बच्चे की दशा देखकर इतनी असहाय अवस्था का अनुभव कर रहा था कि आत्महत्या करलूँ ताकि यह दशा न देखूँ इसी विचार से रात के सुनसान समय में घर से निकल पड़ा और जंगल की ओर गया । सुनसान जंगल में जहाँ पर एक चिड़िया के बोलने की भी आवाज न आती थी घबराया हुआ टहलता रहा इतने में एक कुआँ दिखाई दिया तो विचार किया कि इसी कुएँ में कूद पड़ें, अतः उसी ओर झपटा और कुआँ की जगत पर चढ़ गया । इसी समय माता के शीतल हस्त कमल का ध्यान आया और रो-रोकर माता से बच्चे के स्वस्थ होने की प्रार्थना करता रहा । अपनी उस दीन व असहाय अवस्था को माता के सन्मुख कहता रहा । मुझे नहीं ज्ञान हुआ कि इस दशा में कितनी देर रहा। जब कुछ होश आया तो अपने को उसी कुआँ की जगत में पड़ा पाया । धीरे-धीरे उठकर घर की ओर चला, चित्त में शन्ति थी । घर पहुँचकर देखा बच्चा सुख की नींद सो रहा है । मैंने माता को कोटिशः धन्यवाद दिया और उस दिन से गायत्री माता में इतनी श्रद्धा हो गई कि आजन्म न भूल सकूँगा ।

असफलता में सफलता की झाँकी

श्री बैजनाथ भाई रामजी भाई गुलारे का कहना है कि गायत्री की पूजा में धर्म और अर्थ दोनों का लाभ है, इसलिए दूसरी पूजाओं के बजाय मुझे यही अधिक प्रिय है । गायत्री की मैंने बड़ी प्रशंसा सुनी थी। कई व्यापारियों ने मुझसे कहा था कि हम पंडितों से गायत्री का जप कराते हैं । इससे लक्ष्मी जी की कृपा रहती है। तब से मेरा ध्यान भी उधर गया ।

पहले मैंने सम्वत् २००१ में २४ पंडितों द्वारा गायत्री पुरश्चरण कराया । हमारे ऊपर इनकम टैक्स का मुकदमा चल रहा था, बड़ी रकम का मामला था, माता से यह प्रार्थना की कि इसमें जिता दें । अनुष्ठान में तीन हजार रुपया लगा । मुकदमा हम हार गये,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर एक लाभ ऐसा हुआ जो मुकदमें को जीतने से भी बड़ा था । मेरे छः सन्तान हुई थीं, छओं कन्याऐं हैं । एक मर गई और पाँच जीवित हैं । अनुष्ठान के बाद स्त्री गर्भवती हुई और पुत्र पैदा हुआ, वंश डूबने की जो चिन्ता हो रही थी वह दूर हो गई, घर भर खुशी से फूला न समया । एक तरह से अनुष्ठान असफल रहा पर दूसरी तरह से उसका पूरा लाभ मिल गया ।

दूसरा अनुष्ठान सं. २००३ में कराया । मझली लड़की को तपैदिक हो गई थी उसकी प्राण रक्षा के लिए यह कराया था । लड़की तो न बची मगर मेरा सत्रह साल का बवासीर अच्छा हो गया । इस दुष्ट रोग का तीन बार आपरेशन हो चुका था, हजारों रुपये खर्च हो चुके थे और सदा ही बड़ा कष्ट रहता था उससे छूट जाना भी मेरे लिए लड़की के अच्छी हो जाने जैसी ही संतोष की बात है ।

तीसरा अनुष्ठान संवत् चार में कराया । बड़े दामाद बीमार थे। जलोदर की चिकित्सा कराने हमारे यहाँ ही आ गये थे । डाक्टर इंजेक्शन तो लगा रहे थे पर बचने की किसी को आशा न थी । अनुष्ठान कराया, परन्तु दामाद न बच सके । फिर भी व्यापार में उस वर्ष इतना लाभ हुआ जितना कई वर्षों का मिलाकर भी नहीं हुआ था ।

तब से हर साल अनुष्ठान होता है और स्वयं भी पूजा तथा जप करता हूँ । मुझे उससे लाभ ही होता है । मेरी प्रार्थना तो माता ने एकाध बार ही सुनी है, पर वे अपनी इच्छा से मुझे बहुत कुछ देती हैं । ज्ञानी लोग बताते हैं कि अटल प्रारब्ध भोग नहीं टलते, पर गायत्री की कृपा भी व्यर्थ नहीं जाती । अवश्य ही गायत्री में चमत्कार है उसका भक्त लाभ में रहता है। जैसे-जैसे मेरी आयु बढ़ती है, भजन पूजा में मन बहुत रमता है। माता की कृपा से सब कुछ सम्भव है, परलोक में मेरी सद्गति होना भी सम्भव है ।

मेरी गायत्री भक्ति को देखकर और भी कई आदमियों ने खुद जप करने का नियम आरम्भ किया है । कई ने छोटे-छोटे सवालक्ष के अनुष्ठान भी पंडितों से कराये हैं कई ने अपने यहाँ गायत्री जप तथा हवन कराये हैं। उन सभी को इस महामन्त्र से लाभ हुआ है।

नौकरी मिली

इलाहाबाद के पं. प्रतापनाराण जी चतुर्वेदी पंजाब में नौकरी करते थे । उनकी नौकरी सन् १९२५ में छूट गई । घर आकर उन्होंने बहुत नौकरी की तलाश की पर सफलता न मिली, तब अपने पिता की आज्ञानुसार उन्होंने गायत्री का सवा लक्ष जप किया । जप समाप्त होने पर उन्हें उसी पायनियर प्रेस में पहली नौकरी की अपेक्षा ढाई गुनी वेतन की जगह मिल गई, जहाँ कि पहले उन्हें कितनी ही बार मना कर दिया गया था ।

गायत्री की कृपा से प्रिंसिपल बना

पं. लक्ष्मीनाथ झा व्याकरण साहित्याचार्य, झाँसी लिखते हैं कि यह सेवक मिथिला के (दरभङ्गा) चौमथ ग्राम वास्तव्य राज ज्योतिषी पंडित प्रकाण्ड श्रीयुक्त कृपालु झा का लक्ष्मीकान्त झा नामक पुत्र है। यह यज्ञोपवीत संस्कार के अनन्तर गृहोपदेश से ही कुछ गायत्री मंत्र जप किया करता था। किन्तु दैवयोग से भारताकाश में देदीप्यमान पंडित प्रवर स्वर्गीय दिवाकरदत्त चतुर्वेदी से शब्द शास्त्र पढ़ने खगड़िया (मुंगेर) गया । वहाँ श्यामा के प्रसादभूत श्यामादत्त जी का गायत्री मंत्र पर सुन्दर प्रवचन हुआ । उस प्रवचन का पूर्ण प्रभाव इस सेवक पर पड़ा । उसी दिन मैंने प्रतिज्ञा की कि आज से १००० एक सहस्र गायत्री मंत्र जप करके ही पठन-पाठन करूँगा । उस समय मैंने मध्यमा परीक्षा पास करली थी । गायत्री माता की ऐसी कृपा हुई कि पढ़ने में चित्त अधिक लगने लगा उसी वर्ष से आचार्य तक प्रथम श्रेणी में ही नाम निकला तथा नाम निकलने के पूर्व ही १९३८ ई. में श्रीरामचन्द्र सारस्वत संस्कृति पाठशाला पारेश्वर झाँसी से प्रधानाध्यापक की स्वीकृत मिली । किन्तु यहाँ आकर गायत्री माता की सेवा में कुछ न्यूनता कर दी । परन्तु गायत्री माता का अनुराग इस पुत्र पर अधिक था । अतः एक मित्र मिल गये । मित्र ने कहा लश्कर में आपकी ओर के ओझा जी आये हैं । वे विपरीत प्रत्यंगिरा सिद्ध किये हुए थे । एक सेठ का एकमात्र पुत्र रत्न १६ वर्ष का था । उसके भाई ने शत्रुता से ओझा जी से मिलकर उस बच्चे पर विपरीत प्रत्यंगिरा का प्रयोग करवाया । तीसरे दिन वह सेठ का बेटा जमीन पर बेहोश होकर गिर पड़ा । उस समय हाहाकार सुनकर एक ब्रह्मनिष्ट गायत्री जापी ब्राह्मण वहाँ आ पहुँचे । उन्होंने पूछा क्या बात है? सब समाचार ज्ञात होने पर ब्राह्मण ने गायत्री मंत्र से छींटा दिया । जल के पड़ने से वह बालक उठकर होश में आया । फिर ब्राह्मण के निकलने पर वही दशा हुई । उस प्रकार तीन बार होने पर सेठ ने ब्राह्मण के चरणों पर अपना सिर रख दिया । ब्राह्मण ने कहा मैं जादू टोना नहीं जानता केवल नित्य गायत्री मंत्र १००० एक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सहस्र जप करता हूँ । यदि मेरे रहने से तेरा बेटा बच जाय तो लो ९ दिन गायत्री मन्त्र का अनुष्ठान करता हूँ । फल यह हुआ कि छटे दिन भगवती ने प्रयोगकर्त्ता के सिर को ऐंठकर प्राण ले लिया । वह बालक बच गया । इस सच्ची घटना को सुनकर फिर भी मैंने अपने नियमानुसार जप आरम्भ किया । इसके प्रभाव से १९४३ में प्रथमा का परीक्षक १९४४ से मध्यमा का परीक्षक हुआ ।

१९४७ में साहित्यकार १९४८ में हिन्दी साहित्यरत्न तथा वेद शास्त्री आदि किया इसके अलावा और भी अधिक घटना जिससे परिचय नहीं उससे परिचय होना उत्तम से उत्तम सम्मान्य महापुरुषों से आदर हुआ । इस वर्ष गायत्री माता की अपूर्व कृपा हुई कि यह तुच्छ सेवक दुर्लभ पद संस्कृत कॉलेज झाँसी का प्रिंसिपल हो गया । गायत्री मंत्र के जापक इसका दुरुपयोग करें या सदुपयोग दोनों में इसका पूर्ण प्रभाव है, किन्तु चिन्तामणि को पाकर भी जिसने दुरुपयोग चिन्ता में अपना अमूल्य रत्न खो दिया उसने सब कुछ खो दिया ।

गायत्री की कृपा से उच्च पद

पं. शंभूप्रसाद मिश्र, हृदयनगर कहते हैं कि मुझे अनुभव है कि मेरे इष्ट वेदमाता ने मेरे बड़े-बड़े हानि लाभ के कार्यों में स्वप्नों में ही दिग्दर्शन कराके आने वाली विपत्ति से रक्षा की और शुभ फल दिया है । स्वप्न प्रायः गायत्री इष्ट से सच्चे ही आते हैं और अधिकतर परिचित तथा अपरिचित दिव्य स्त्री रूप में भी दिग्दर्शन प्राप्त होता है । कुछ वर्ष पूर्व मैं असाध्य रक्त विकार से ग्रसित हो गया था बड़े-बड़े वैद्य, डाक्टरों ने अपनी असमर्थता प्रकट की । मेरे लिए तब सिर्फ देवी आराधना ही एक मात्र आशा थी, तब मेरे गुरुदेव ने मुझे गायत्री मंत्र एक लक्ष जप करने को कहा। मैंने एक लक्ष जप पूर्ण किया । इसके पश्चात् मैंने देखा कि जो असाध्य रोग दिन प्रति दिन बढ़ रहा था । वह घट रहा है और बहुत जल्द ही मैं रोग मुक्त हो गया। एक मिल्कियत जमींदारी के झगड़े में मैं एक बार बड़ी बुरी तरह फंस गया, जिसमें जान, माल, प्रतिष्ठा तथा धन नाश आदि सभी जोखिम थे, मैंने वही आद्य शक्ति अपनी इष्टमाता की शरण ली । परिणामस्वरूप मेरी आश्चर्यमयी विजय राजद्वार से हुई और विपक्षी दल की पूर्ण पराजय हुई कि वे कभी सर नहीं उठा सकते, चारों तरफ मेरी सफलता की चर्चा फैल गयी ।

सन् १९३३ ई. मंडला डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अध्यक्ष पद के चुनाव में उम्मीदवार खड़े होने के लिये एकाएक मेरा विचार हुआ । मेरे प्रतिद्वन्दी एक बड़े ताल्लुकेदार थे जिनके पास सैकड़ों मुनीम, गुमाश्ता मोटरें थीं और रुपयों की कोठी भरी थी, मेरे पास सिर्फ दो कारिंदें और एक दो साईकिलें थीं, रुपया पैसा का तो यह हाल था कि रोज आना और रोज जाना, साधारण हैसियत थी, तालुकेदार को व उनके मुनीम, गुमाश्ता, उनके दलाल और मोटरों की दौड़ एक ओर हो रही है, तो दूसरी ओर मेरी दौड़ कहीं पैदल, तो कहीं साईकिल से और कहीं किराये की मोटरों से हो रही थी, आखिर को नोमिनेशन—उम्मेदवारी की दरख्वास्त देने की तारीख आ गई और उम्मेदवारी की दरख्वास्त पेश की । जिलाधीश पोलिंग अफसर कह रहे हैं कि १५ मिनट के अन्दर जिसको उम्मेदवारी की दरख्वास्त पेश करना है कर दे पर १५ मिनट के बदले २० मिनट हो गए तब जिलाधीश ने ऐलान कर दिया कि 'मिश्रजी पं. शम्भुप्रसाद' बिना विरोध के अध्यक्ष, डि. बोर्ड के चुन लिए गए ।' कई सौ उपस्थित जनता के साथ व जयघोष के साथ मैं अपने स्थान को विजयी व सफल होकर आ गया ।

अभी थोड़े दिन पूर्व मैं ज्वर से बीमार पड़ गया । बीमारी बढ़ती गई । भोजन छूट गया सिर्फ पानी ही पीता था । हृदय की गति में ऐसी भारी विषमता थी कि हार्टफैल होने का डर हर वक्त बना रहता थ, स्त्री तथा अन्य कुटुम्बी मेरी बीमारी की भयंकरता के कारण रोया करते थे, इस प्राण सङ्कट के समय मैंने गायत्री माता की ही शरण ली । रोग शय्या पर पड़ा-पड़ा मन ही मन गायत्री का जप करता रहता। मेरे सब परिजन मेरी ओर से हताश हो गये थे, बचने की आशा न थी, पर गायत्री माता ने मुझे बचा लिया। एक रात्रि को शान्ति पूर्ण निद्रा आई। स्वप्न में एक दिव्य सुन्दरी के दर्शन हुए इसके बाद धीरे-धीरे मेरी हालत सुधरने लगी और कुछ दिन में पूर्ण स्वस्थ हो गया।

गायत्री की कृपा से मुझे बड़े-बड़े महापुरुषों की कृपा और समीपता प्राप्त हुई है जिनके लिए दूसरे लोग तरसते हैं । महात्मा गाँधी मंडला पधारे थे । निकट के दर्शन करने की मेरी बड़ी लालसा थी पर उसका पूरा होना कठिन दिखाई पड़ता था, मैं घर से निकल कर मंडला जाने के लिए सड़क पर पहुँचा । सामने से कई मोटरें आती दिखाई दीं । मेरी आत्मा ने

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहा यही महात्मा जी की मोटर है । मैं सड़क पर खड़ा हो गया और हाथ का इशारा देकर मोटर रुकवाने की कोशिश की । मोटर रुक गई । सचमुच ही वह गाँधी जी का दल था । जिस मोटर में पूज्य बापू बैठे थे उसी में मेरे एक परिचित सज्जन बैठे थे । उन्होंने मुझे उसी मोटर में बिठा लिया और गाँधी जी की बगल में बैठा हुआ मंडला पहुँचा । खूब जी भर कर दर्शन किया । जलूस में भी उन्हीं के साथ मोटर में था और कई बार बापू ने सिर पर हाथ फिराकर एक दिव्य स्पर्श किया

जेल में पं. रविशङ्कर शुक्ल से मैंने एक दिन कहा था कि शुक्ल जी जिस दिन आप मिनिस्टर हो जावें उस दिन मेरे घर अवश्य पधारें । शुक्ल जी ने हाँ कर लिया । उस वचन को पूरा करने के लिए मध्यप्रान्त के प्रधानमंत्री होने के बाद मेरे घर पधारे और कहा कि जेल वाले वचन को पूरा करने आया हूँ । मुझे आन्तरिक आनन्द हुआ । इसी प्रकार अन्य महापुरुषों की समीपता मुझे प्राप्त हुई है, इसे गायत्री माता की ही कृपा समझता हूँ ।

परीक्षा में उत्तीर्ण

श्री बसन्त कुमार गौड़, देहरादून, लिखते हैं कि पिछले वर्ष मेरी अच्छी पढ़ाई नहीं हो पाई थी । तीन बार मास्टर बदले । हर एक ने अपने-अपने ढंग से पढ़ाया । मन भी अच्छी तरह न लगा । इसलिए पारसाल मैट्रिक में फेल हुआ । मैं अकेला ही क्यों, हमारे स्कूल मे से ६० फीसदी लड़के फेल हुए। फेल होने का मुझे भी रंज था और घर वालों को भी । इस वर्ष फिर पढ़ाई शुरू हुई । परन्तु संयोगवश ऐसे कुयोग पड़ते गये कि इस वर्ष भी पढ़ाई नहीं के बराबर हो पाई । तीन महीने दस्त और ज्वर में पड़ा रहा । एक महीना बहिन की शादी में बरबाद हो गया । साम्प्रदायिक दंगों के कारण एक महीना स्कूल की छुट्टी-सी रही । हाजिरी भी इतनी कम थी कि मास्टर परीक्षा में शामिल नहीं होने दे रहे थे, बड़ी खुशामदों और सिफारिशों से फार्म भेजा गया ।

परीक्षा का फार्म भर दिया गया और फीस भेज दी गई, पर यह सब भाग्य अजमाने के लिए ही किया गया । क्योंकि इस वर्ष तो पारसाल जितनी भी पढ़ाई न हुई थी । फिर बीमारी के कारण मेरा दिमाग साथ न देता था, थोड़ा पढ़ते ही सर चक्कर खाने लगता और आँखों तले अँधेरा छा जाता, आँसू से आ जाते । स्मरण शक्ति बड़ी कमजोर हो गई थी याद की हुई बातें थोड़ी ही देर में भूल जातीं । ऐसी दशा में पास होने की क्या आशा थी । दो वर्ष फेल होने की बदनामी, समय और धन का बरबाद जाना, साथियों से पीछे रहने की लज्जा, यह सब बातें मेरे मन में रह-रहकर निराशा और दुख उत्पन्न करती थीं।

जैसे-जैसे परीक्षा के दिन निकट आते जाते थे, दिल घबराता था, परीक्षा की तारीख मौत की तारीख जैसी भयंकर दिखाई देती थी । ईश्वर से प्रार्थना करता था उन दिनों बीमार पड़ जाऊँ तो कम से कम अपनी विवशता तो साबित कर सकूँ । एक बार तो मन में ऐसा आया कि दस्त की दवा खालूँ जिससे परीक्षा में शामिल न हो सकूँ और बदनामी से बच जाऊँ । इन संकल्प विकल्पों में डूबते उतराते हुए मैंने एक पत्र 'अखण्ड ज्योति कार्यालय' को लिखा । छटे ही दिन आचार्य जी का उत्तर आ गया उसमें उन्होंने धैर्य बंधाया, प्रोत्साहन दिया और आशा दिलाई कि इस प्रकार डरने की कोई बात नहीं । हिम्मत और उत्साह के साथ परीक्षा दो, ईश्वर तुम्हारी सहायता करेगा । साथ ही उनने यह भी बताया कि इन दिनों एक घन्टे प्रतिदिन गायत्री का जप किया करो । मुझे स्वभावत: अखंड ज्योति के प्रति बड़ी श्रद्धा है । आचार्य जी के आदेशानुसार मैंने हिम्मत बाँधी, पढ़ी हुई किताबों को दुहराया और प्रात:काल एक घण्टे गायत्री का जप करना आरम्भ कर दिया । अब डर के स्थान पर एक उत्साह पैदा हो गया । मुझे विश्वास हो चला कि कोई दैवी शक्ति मेरी सहायता करेगी ।

परीक्षा की तारीखें आईं । मैंने निर्भयतापूर्वक प्रश्नों को हल किया । सभी पर्चे अच्छे हुए और सैकिंड डिवीजन पास हो गया । उस वर्ष अपेक्षाकृत अधिक कड़े पर्चे हुए थे, जिससे अनेकों परिश्रमी और जहीन लड़के फेल हो गये । पर मैं कितनी कठिनाइयों और कमजोरियों के होते हुए भी अच्छे नम्बरों से पास हो गया । इसमें ईश्वर की सद्बुद्धि प्रेरणा का गायत्री को ही कारण मानता हूँ । जब से गायत्री का जप मैंने आरम्भ किया हैं तब से शरीर में स्फूर्ति की और मन में आशा की तरंग उठती रहती हैं । मुझे कुछ ऐसी कुटेब थीं जिनको मैं लेख में नहीं लिखना चाहता उनकी ओर से मुझे स्वत: ही घृणा हो गई है और अच्छे विचार मेरे मन में भरे रहते हैं । विचारों के पवित्रता, उत्तम स्वास्थ्य, तीव्र बुद्धि तथा अच्छा स्वभाव यह सम्पदाएँ माता ने मुझे दी हैं सम्भव हैं वे कुछ और भी दें ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

बिगड़ी को बनाने वाली माता

श्री रामकृष्ण वर्मा, लखनऊ, लिखते हैं कि २४ अप्रैल सन् ४८ में मेरी धर्म पत्नी का स्वर्गवास हो गया । उसने अपनी पीछे दो छोटी कन्याएँ छोड़ीं । पत्नी की मृत्यु का दुःख साथ ही सूने घर में छोटी कन्याओं को छोड़कर सरकारी नौकरी पर जाना, यह भी कम परेशानी न थी । घर पर रहकर इन बच्चों का पालन पोषण किया जाय या रोटी कमाने के लिए जाया जाय ? दोनों काम एक साथ बनते न थे । इधर कुआं उधर खाई की स्थिति थी । क्या किया जाय क्या न किया जाय, कुछ समझ में नहीं आता था । बच्चियों को घर छोड़कर नौकरी पर जाना पड़ता, दिन भर वे रोती रहतीं शाम को घर आने पर उनकी दशा देखकर अपनी भी छाती भर आती ।

दुबारा विवाह का अवसर कम ही था । अधिक आयु दो बच्चे, गिरी हुई आर्थिक स्थिति, दूर देश के निवासी स्वजन और रिश्तेदारों की उपेक्षा इन परिस्थितियों में यह आशा न थी कि दुबारा विवाह हो जायगा । चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार दिखाई देता था । किस प्रकार नाव पार लगेगी यही सोचता रहता और चिन्ता के समुद्र में गोते खाता रहता था ।

गायत्री माता का मैंने मजबूती से आश्रय पकड़ा । यों तो पहले से भी गायत्री का जप मैं करता था, पर कष्ट के समय सदा ही माता की याद आती है । गायत्री साधना के लिए आचार्यजी के आदेशानुसार मैं अधिक तत्परता से आरूढ़ हुआ। विशेष विधि पूर्वक माता का साधन करने लगा ।

माता की कृपा से बिगड़े को बनने में भी देर नहीं लगती । ससुराल से साधारण-सा बुलावा आया । मैं गया । जिस बात की कोई सम्भावना न थी वह हुई । सुसराल वालों ने मेरी साली की शादी प्रसन्नता पूर्वक कर दी । पूरे आठ महीने भी नहीं हुए थे कि मेरा बीरान घर फिर प्रसन्नता से भर गया ।

भय था कि दूसरी पत्नी न जाने इन छोटी बच्चियों से कैसा व्यवहार करेगी, परन्तु वह भय निर्मूल सिद्ध हुआ । उसने अपने निजी बच्चों की तरह इन दोनों कन्याओं को छाती से लगाया और बेटी दमयन्ती तथा सत्यवती अपनी सगी माता को भूलकर अपनी वर्तमान माता जमनी देवी को ही अपनी माता मानती हैं और दिन भर उसी के गले लिपटी रहती हैं ।

दूसरी धर्मपत्नी जमनी देवी इतनी परिश्रमी, व्यवहार कुशल, मितव्ययी, प्रसन्नमुख तथा सेवा स्वभाव की है कि मैं अपने भाग्य को सराहता रहता हूँ । पहले यह पढ़ी लिखी नहीं थी, पर अब अपने प्रयत्न से बहुत कुछ शिक्षा प्राप्त कर चुकी है। हम दोनों परम प्रसन्न और सन्तुष्ट रहते हैं ।

गायत्री माता बिगड़ी को बनाने वाली हैं, उनकी कृपा से शोक सागर में डूबता हुआ मनुष्य पुनः हँसी खुशी की जिन्दगी प्राप्त कर सकता है, इसका मैं प्रत्यक्ष उदाहरण हूँ । मैं और मेरी पत्नी पूर्ण श्रद्धा भक्ति के साथ गायत्री की उपासना करते हैं और विश्वास करते हैं कि दयामयी माता की गोद में हमारा कल्याण ही कल्याण है ।

स्वभाव परिवर्तन

इन्दौर निवासी पं. रक्षपाल जी ने बतलाया है कि एक स्त्री का पति, अपनी पत्नी के साथ बहुत लड़ाई झगड़ा करता था । थोड़े दिन तक गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित पानी पीने से उसका स्वभाव बदल गया और स्नेह उत्तरोत्तर बढ़ता गया । इस प्रकार उनका कटु जीवन बहुत मधुर हो गया ।

प्रलोभन से पतन

पं. पूजा मिश्र, ठोरी बाजार, लिखते हैं कि हमारे यहाँ एक बड़े प्रसिद्ध महात्मा हो गए हैं । इनका असली नाम तो मालूम नहीं, पर उनको परमहंस जी कहा जाता था । ये भूमिहार ब्राह्मण थे । प्रारम्भ में तो इन्होंने त्रिवेणी जंगल में दोन नामक ग्राम के पास तपस्या की, फिर रागपुर के समीप नरायनी नदी के किनारे गुफा बनाकर कठोर तप करने लगे । हमारे गाँव में भी उनका पर्दापण हुआ था । उनका तप तेज बड़ा ही प्रकाशवान् था । बड़े-बड़े उनके आगे झुकते थे ।

परमहंस जी का वाक्य सदा सफल होता था । उनके मुख से जो शाप वरदान निकला वह निष्फल न गया । जिस जंगल में वे तपस्या करते थे, उसमें एक बार एक मुसलमान अफसर शिकार खेलने आया । महात्माजी ने उससे कहा यह तपोभूमि है, यह पशुपक्षी आनन्दपूर्वक विचरण करते हैं यहाँ शिकार न मारो, पर उसने उनकी बात न मानी । बन्दूक चला कर एक जानवर मार लिया । जानवर को घोड़े पर लाद कर वह अफसर नारायणी नदी को पार करने के लिए चला तो घोड़े ने बड़ी जोर से छलांग मारी और वह शिकारी तत्काल मर गया । महात्माजी के शाप से ही यह मृत्यु हुई थी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परमहंस जी की हमारे पिता पं. देवीप्रसाद जी विशेष सेवा करते थे । उनकी सेवा भक्ति से प्रसन्न होकर परमहंस जी ने उन्हें गायत्री की साधना बताई थी और आशीर्वाद दिया था कि तुम्हारी आर्थिक दुर्दशा मिट जायगी, उन दिनों हमारे परिवार की बड़ी शोचनीय दशा थी । हजारों रुपया कर्ज चढ़ा हुआ था गुजर मुश्किल से होती थी । पिता जी ने परमहंस जी के आदेशानुसार गायत्री साधना आरम्भ की, धीरे-धीरे सुधरने लगी । उनके पुण्य प्रताप से माता का अनुग्रह हमें भी प्राप्त हुआ । खेती जैसे साधारण काम से हमें असाधारण लाभ होने लगा अब हमारी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी है । विशुद्ध कृषि की आमदनी से २० हजार रुपये के करीब बैंक में जमा हैं । घर पर भी पशु, जेवर, अन्न, नकदी आदि से संतोषजनक हाल हैं।

महात्मा जी की प्रशंसा चारों ओर फैली तो उनके अनेक भक्त और शिष्य हो गये । अधिक खुशामदियों से घिरे रहने और अधिक सेवा पूजा होने से उनका मत सांसारिक प्रयोजनों में ललचा गया । अब वे अपनी गायत्री तपस्या की ओर कम ध्यान देने लगे और सांसारिक बातों में अधिक रुचि बढ़ा ली । उनने बेतिया रियासत के अधिकारियों से कृषि करने के लिए जमीन माँगी, याचना करते ही तुरन्त एक अच्छी जमीन मिल गई और ठाठ से खेती होने लगी । खूब आमदनी होने लगी । खेती तथा भेंट पूजा से काफी धन आने लगा । उनका पुराना सारा तप तेज नष्ट हो गया । अपने जीवन के उत्तरार्ध में वे एक ब्राह्मण किसान मात्र रह गये थे ।

जंगल में रहना और अधिक धन का संचय, इस परिस्थिति में भी उनने अपनी रक्षा की व्यवस्था नहीं की । फलस्वरूप एक दिन कुछ डाकू चढ़ आये और उनकी बुरी तरह मार-पीट करके उनकी सारी कमाई लूट ले गये । चोटें काफी गहरी थीं । गोरखपुर अस्पताल में भर्ती किये गये, जहाँ उनकी मृत्यु हो गई।

गायत्री एक महान् शक्ति है । वह तपश्चर्या से प्राप्त होती है । तप हीन, स्वार्थी मनुष्य उसके महान् लाभों से वंचित रहते हैं। परमहंस जी जब तक तपोनिष्ठ रहे, तब तक उनका आत्मबल ऐसा रहा जो तत्काल प्रभाव दिखाता था । उनके शाप से शिकारी अफसर को जान से हाथ धोना पड़ा और उनके आशीर्वाद से हमारा परिवार बराबर फलता-फूलता चला आ रहा है । इतना होते हुए भी जब उन्होंने लोगों की खुशामद में तपश्चर्या की संचित पूँजी बाँटनी शुरू कर दी और कष्ट साध्य साधनाओं से मुँह मोड़ने लगे तो उनका शक्ति भण्डार समाप्त हो गया और मामूली चोर डाकू उनको मारपीट कर सब कुछ छीन ले गये । इस उदाहरण से हर गायत्री प्रेमी को शिक्षा लेनी चाहिए कि वह अपना वास्तविक कल्याण चाहता है तो अपनी साधना सम्पत्ति को दिन बढ़ाता चले । संसारिक प्रयोजन में तपोबल को खर्च करते चलना और उसे बढ़ाने में आलस्य करना किसी भी साधक के लिए पतन का कारण बन सकता है ।

परमहंस जी के स्वर्गवास के कुछ दिन पश्चात् हमारे पिता का भी स्वर्गवास हो गया । वे मरते समय अपने बालकों को भली प्रकार समझा गये थे कि गायत्री की उपासना मत छोड़ना । माता का आँचल पकड़े रहोगे तो कभी भूखे नंगे न रहोगे । हम लोग पिताजी के आदेश का अक्षरशः पालन करते चले आ रहे हैं और सब दृष्टियों में शान्तिमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं ।

प्रतिष्ठा और सम्पन्नता चौगुनी

पं. तुलसीराम शर्मा, वृन्दावन लिखते हैं कि "लगभग १० वर्ष हुए होंगे । श्री उड़िया बाबा की प्रेरणा से हाथरस निवासी लाला गणेशीलाल जी ने गंगा किनारे कर्णवास में २४ लक्ष गायत्री का अनुष्ठान कराया था उस समय गणेशीलाल जी की आर्थिक दशा दिन व दिन ऊँची उठती गई और अब उनकी प्रतिष्ठा तथा सम्पन्नता उस समय से चौगुनी है । मैं भी उस अनुपात में मौजूद था ।"

विद्या बुद्धि की प्रखरता

डाक्टर राजाराम जी शर्मा, भार्थू का कहना है कि गायत्री साक्षात् सरस्वती है। बुद्धि बढ़ाने की, स्मरण शक्ति को तीव्र करने की तथा विद्या के लिए अनेक साधन जुटा देने की उसमें विलक्षण शक्ति है । जो विद्यार्थी अपनी शिक्षा के साथ-साथ गायत्री की थोड़ी बहुत उपासना किया करते हैं उनकी उन्नति बड़े सन्तोषप्रद ढंग से होती चलती है । परीक्षा के दिनों में इस महामंत्र का थोड़ा साधन करना भी बड़ा अच्छा रहता है। इससे परीक्षार्थी को पिछला पढ़ा हुआ आसानी से याद हो आता है और परीक्षाकाल में चित्त शाँत रहने से प्रश्न-पत्रों का तात्पर्य भली प्रकार समझने की सुविधा होती है । अक्सर विद्यार्थी लोग परीक्षा काल में उतावली, घबराहट और भय के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कारण अपने मानसिक संतुलन को डांवाडोल कर लेते हैं । फलस्वरूप अच्छी तैयारी होते हुए भी वैसे उत्तर नहीं लिख पाते जैसे कि लिखे जाने चाहिए । फेल होने का बहुधा यही कारण होता है ।

जिन विद्यार्थियों को किसी प्रकार की कठिनाई हो उन्हें गायत्री की उपासना करनी चाहिए, क्योंकि यह विद्या का महान् मंत्र है । इससे पढ़ाई सम्बन्धी अनेक कठिनाइयों का निवारण होता है । मस्तिष्क की कमजोरी, शरीर की अस्वस्थता, घरेलू विघ्न बाधाएँ, आर्थिक अड़चन के कारण जिनकी शिक्षा सम्बन्धी उन्नति रुक रही हो तो विद्यार्थी सच्चे हृदय से वेदमाता की आराधना करें तो उनकी असुविधाएँ दूर हो सकती हैं ।

अपने परिवार के कुछ अनुभव पाठकों के सन्मुख उपस्थित करता हूँ। मेरी पुत्री सावित्री देवी ने गत वर्ष आयुर्वेद की उच्च परीक्षा की तैयारी की, फार्म भर दिया, फीस भेज दी । पर परीक्षा से कुछ ही दिन पूर्व वह टाइफाइड से ऐसी बीमार हो गई कि घर के सब लोगों को बड़ी चिन्ता होने लगी । लड़की को अपनी बीमारी की उतनी चिन्ता न थी जितनी की परीक्षा की। तीव्र ज्वर में पड़े-पड़े उसे परीक्षा की ही धुन लगी रहती । रोग और चिन्ता का दुहरा दबाव शरीर पर बुरे रूप से दिखाई देने लगा ।

मैंने पुत्री को सलाह दी कि बेटी ! मन ही मन गायत्री का जप और ध्यान करो माता की कृपा से बड़े-बड़े कठिन काम सरल हो जाते हैं । सावित्री जितनी कुशाग्र बुद्धि, अध्ययनप्रिय, परिश्रमी और सद्गुण सम्पन्न है, उतनी ही वह धार्मिक एवं श्रद्धालु भी है । मेरी सलाह को उसने उत्साहपूर्वक माना और रोग शय्या पर पड़े-पड़े ही मानसिक जप आरम्भ कर दिया । परिणाम बड़ा आशाजनक हुआ । बीमारी अपनी मियाद से पहले ही सुलझ गई । फिर भी कमजोरी बहुत अधिक थी । इसलिए हम लोग उसके परीक्षा देने के पक्ष में न थे, पर वह न मानी । उसे भीतर से ऐसा उत्साह उमड़ रहा था कि वह सबसे विश्वासपूर्वक कहती कि न तो मेरे स्वास्थ पर कोई बुरा असर पड़ेगा और न मैं अनुत्तीर्ण होऊँगी। उसने उसी दशा में परीक्षा दी और अच्छे नम्बरों से पास हुई।

ऐसी ही घटना मेरे पुत्र की है । चि. व्यासदेव मैट्रिक की पढ़ाई पढ़ने के लिए आग्रह करता था । गाँव में प्राइमरी स्कूल है । दूर शहर में रहकर पढ़ाई में आर्थिक तथा अन्य कठिनाइयाँ थीं । फिर भी उसका आग्रह प्रबल था । मैंने कहा—बेटा, गायत्री माता से सुविधा माँगो वह तुम्हें मार्ग दिखावेंगी, उसने एक अनुष्ठान किया और इलाहाबद चल पड़ा, उसकी पढ़ाई का सब प्रबन्ध असानी से हो गया है और वह अपना मनोरथ शीघ्र ही पूरा करने वाला है ।

हमने अनेक बार ऐसा अवसर देखे हैं, जब कि मन्द बुद्धि और निर्धन स्थिति के विद्यार्थी गायत्री की कृपा से विद्वान बनकर उन्नति की ओर अग्रसर हुए हैं।

मनोवांछित पति-पत्नी

श्री कौशल किशोर माहेश्वरी, संभलपुर लिखते हैं कि हमारे बाबा महेश्वरी थे और दादी राबुत थीं । उनका गन्धर्व विवाह हुआ था । उनकी प्रेम गाथा को लिखकर अपने पूजनीय पूर्वजों की शान में कोई धृष्टता करने की अपनी इच्छा नहीं है, पर जो तथ्य है उसको इसलिए प्रकट करना पड़ता है कि उसके कारण उनकी कई पीढ़ियों को काफी परेशान और अपमानित होना पड़ा ।

हमारे पिताजी चार भाई और एक बहिन थे । जातीय बहिष्कार के कारण उनमें से किसी का विवाह अच्छी तरह न हो सका । पितामह ने निराश होकर एक अपने जैसे ही दूसरे बहिष्कृत परिवार के साथ कुछ साँठ-गाँठ की और अपनी लड़की उन लोगों को देकर उसके बदले में उनके रिश्तेदार की लड़की बड़े लड़के के लिए विवाह ली । उन्हीं से मैं तथा मेरी दो बहिनें हुई। तीनों चाचा कुँवारे ही रहे । उनके विवाह के लिए किये हुए सभी प्रयत्न निष्फल रहे ।

पिताजी एक मिल में दरबान थे । नौकरी तो थोड़ी थी, पर उन्हें बाहर की आमदनी अच्छी हो जाती थी। उन्होंने मुझे पढ़ाया—मैंने मैट्रिक पास कर ली । मेरे जन्मकाल से ही पिताजी को मेरी शादी की चिन्ता थी। वे सदा यही सोचा करते थे कि हम जाति बहिष्कृतों को कोई भला आदमी लड़की न देगा । लड़की के बदले में लड़के के विवाह की साँठ-गाँठ वे भी किया करते थे, केवल इसी एक उपाय पर उनकी आशा अवलम्बित थी । इस प्रकार की चर्चा जब घर में चलती तो मुझे बड़ा दुःख होता । बहिनों को किसी अच्छे घर में विवाहने के बदले उन्हें ऐसी जगह पटकना पड़ेगा जो हमारी तरह बहिष्कृत हों और जो बदले में लड़की देने के लिए तैयार हों । इन शर्तों के साथ अपना और बहिन का विवाह करना बड़ा ही बुरा लगता था । सोचता था कि यदि ईश्वर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को हमारा सम्मान पूज्य जीवन स्वीकार नहीं तो हमें आजीवन कुँवारा ही क्यों न रहना चाहिए ? पिताजी अपने ढंग से सोचते थे, मैं अपने ढंग से सोचता था, पर हम दोनों ही विवाह की समस्या से काफी परेशान थे ।

मैट्रिक पास करने के बाद मैं बैंक में क्लर्क हो गया । दफ्तर के हैड क्लर्क बड़े ईश्वर भक्त थे,उन्हें गायत्री पर बड़ी श्रद्धा थी और वे गायत्री उपासना के लिए सदा दूसरों को प्रोत्साहन देते रहते थे । एक दिन उन्होंने मुझसे गायत्री की महिमा का वर्णन किया मैंने उनसे पूछा कि क्या गायत्री जप से लोगों के मन में हर वक्त घुसी रहने वाली चिन्ता दूर हो सकती है ? उन्होंने जोरदार शब्दों में आश्वासन दिया और कहा कि आप आज के दिन से ही प्रयोग के रूप में उपासना करके देखें आपको स्वयं प्रकट हो जायगा कि किस प्रकार गायत्री द्वारा आत्मिक और सांसारिक सुख-शान्ति बढ़ती है । मुझे उनकी बात पर विश्वास हो गया और दूसरे दिन से ही उनकी बताई हुई विधि के अनुसार गायत्री जप करने लगा ।

दो तीन मास ही बीते होंगे कि हमारे दफ्तर के एक दूसरे बाबू ने मेरी शादी की चर्चा चलाई । उनकी बहिन ने उसी साल मैट्रिक पास किया था अत्यन्त रूपवती तथा गृह शिल्प, संगीत सिलाई आदि में निपुण थी । बाबू साहब वैसे तो अग्रवाल थे पर नवीन विचारों के कायल थे और वे जाति-पाँति को ढकोसला समझते थे । उन्होंने मुझसे प्रस्ताव किया कि महेश्वरी बाबू क्या आप अग्रवालों में अपनी शादी कर सकते हैं ? मुझे मालूम था कि उनके पूछने का क्या मतलब है । मैंने उनके विचारों का समर्थन करते हुए जाति-पाँति की निरर्थकता बताई । पिता जी के सहयोग से मेरी शादी हो गई । उस लड़की को पाकर हम लोगों को इतना आनन्द हुआ जिसकी कुछ सीमा नहीं । साथ ही उन्होंने एक हजार रुपया दहेज के रूप में हमें नकद भी दिया ।

शादी हो जाने के बाद अग्रवाल बाबू के एक मित्र जो बी. ए. पास थे और उसी साल रेलवे में टिकट कलक्टर हुए थे । उनके साथ मेरी बहिन की शादी पक्की हो गई । विवाह बहुत सादगी के साथ हुआ वह लड़की बड़े सुख में चली गई । इसके एक वर्ष बाद दूसरी बहन की शादी जेलर साहब के पुत्र के साथ हो गई । हम तीनों भाई-बहिनों की ऐसे अच्छे स्थानों से शादियाँ हुईं और ऐसे अच्छे जोड़े मिले कि ऐसे सुयोग्य कहीं किन्हीं बिरले ही भाग्यवानों को मिलते हैं । हम तीनों अपने दाम्पत्य जीवनों से बहुत ही सुखी और संतुष्ट हैं ।

हमारी बैंक के हैडक्लर्क साहब अब कभी-कभी पूछते हैं—गायत्री के सम्बन्ध में तुम्हारा क्या अनुभव है? तो मैं उन्हें सदा यही उत्तर देता हूँ कि उस पर मेरी श्रद्धा आपसे कम नहीं है। हम तीनों भाई-बहिन नित्य नियम पूर्वक गायत्री का जप करते हैं ।

उच्च शिक्षा की सुविधा

श्री. रघुनाथ प्रसाद बरनवाल, बलहज, लिखते हैं कि अखण्ड ज्योति के लोगों से प्रभावित होकर मैं गायत्री उपासना के मार्ग में बढ़ा । अति अल्प काल के जप में ही अपने में बड़ा अधिक परिवर्तन अनुभव होने लगा । मैंने अपनी धर्मपत्नी को भी वह मंत्र बताया । तब से हम दोनों बालक की तरह गायत्री माता को माँ के रूप में मानकर माँ की याद करने की साधना करने लगे ।

मैंने यह देखा कि मार्ग में पत्नी मुझसे आगे बढ़ गई । कदाचित नित्य एवं नियम पूर्वक आराधना के कारण । मुझे तो बाहर आने-जाने के कारण कभी-कभी बाधा भी पड़ जाती है।

जब-जब हम लोगों ने थोड़ा भी माँ को याद किया है, माँ की कृपा हुई है । मैं एम. ए. समाप्त कर चुका था । बी. ए. के विषय में बड़ी कठिनाई उपस्थित थी, आगे की पढ़ाई मुश्किल दीख रही थी । अन्त में माता का आश्रय लिया । अपना भविष्य उन्हीं के ऊपर छोड़ दिया, वे जैसी प्रेरणा और व्यवस्था करेंगी वैसा ही करेंगे । इस भावना के साथ मैंने तथा पत्नी माँ की आराधना शुरू की । माँ की कृपा हुई और उसने पत्नी को आकर ऐसा भान कराया मानों प्रत्यक्ष आकर आदेश दे रही हों कि 'जाओ उनसे कह दो कि अभी आगे पढ़े ।' मैंने ऐसा ही किया और आज शिक्षा विभाग की सबसे ऊँची शिक्षा (एम. एड.) भी प्राप्त कर चुका हूँ । जो कार्य बहुत कठिन दिखाई पड़ता था वह सरल हो गया । समय-समय पर जो कठिनाइयाँ मार्ग में आईं वे भी स्वतः ही हल होती गईं और मैं विद्या धन से अपने को धनी बना सका । यह सब माँ की दया से ।

अब भी माँ के चरणों में यही बड़े अति स्वर में प्रार्थना है कि माँ हमें छाती से लगाये रहें ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जप से मैट्रिक परीक्षा में पास

महुवा (कठियावाड़) के रणछोड़लाल भाई की थोड़े समय पूर्व एक गृहस्थ मिला था । उसका एक लड़का दो वर्ष से मैट्रिक में पास नहीं हो रहा था । तीसरी बख्त उसने ब्राह्मण को रुद्राभिषेक के लिए बैठाया और स्वयं गायत्री जप करने लगा, उस वर्ष वह लड़का मैट्रिक में पास हो गया ।

पुरश्चरण और पाठ कराने से लाभ

श्री बलवन्त विष्णु नागदे, राजमहेन्द्री कहते हैं कि व्यापारी को फुरसत नहीं मिलती । हमको बहुत काम रहता है । रात को दो बजे तक अक्सर काम करना पड़ता है । इसलिए सबेरे देर से आँख खुलती है । फिर नहा धोकर शंकर जी के दर्शन करते हैं और भोजन करके दुकान पर चले जाते हैं ।

भजन पूजा का वक्त सबेरे शाम का होता है । सो दोनों ही निकल जाते हैं सबेरे सोते रहते हैं। शाम को व्यापार का खास समय होता है । उस समय काम की इतनी भीड़ रहती है कि जरा भी फुरसत नहीं रहती । मन्दिर में दर्शन करके भगवान को माथा झुकाने का ही साधन सध पाता है । हमारी फर्म के मुनीम गोपाल बारडे ने कहा था कि गायत्री बहुत अच्छा मंत्र है । उससे भगवान प्रसन्न होते हैं और बहुत लाभ देते हैं। तब से मेरे मन में गायत्री की अभिलाषा हुई। खुद तो कर नहीं पाता, पर पंडितों से हर साल नवरात्रि में गायत्री पुरश्चरण कराता हूँ । एक पंडित नित्य गायत्री सहस्रनाम का पाठ करने आता है ।

दो वर्ष पहले की बात है स्वप्न में एक छोटी कन्या दिखाई दी उसने मुझसे कहा—अमुक व्यापारी का दिवाला निकलेगा तुम अपना रुपया निकाल लो । आँख खुल गई । वह व्यापारी बहुत मजबूत था, बहुत कारोबार था, स्वप्न की बात कुछ समझ में नहीं आती थी फिर मैंने दूसरे ही दिन अपना रुपया निकाल लिया। इसके बीस दिन बाद उसका दिवाला निकल गया । स्वप्न की बात सच हो गई । मेरा २२ हजार डूबने से बच गया । इसी प्रकार तेजी मन्दी के चांस कई बार स्वप्न में ऐसे मिले हैं कि उनसे बड़ा लाभ रहा । आंत उतरने की बीमारी में भी दो वर्ष से फायदा है और भी कई लाभ हुए हैं । हमारे मुनीम को भी कई फायदे हो चुके हैं ।

मेरे यहाँ नियमित रूप से जप होता है । जब अनुष्ठान कराता हूँ तो एक रुपया प्रति हजार के हिसाब से सवा लक्ष जप के लिये सवा सौ रुपया पंडित जी को दिए जाते हैं । उन्हें वस्त्र बर्तन आदि से भी सन्तुष्ट करते हैं । हवन आदि को मिलाकर करीब दो सौ रुपया खर्च पड़ जाते हैं, पर उनसे लाभ कई गुना मिल जाता है । पुण्य का फल सुखदायक होता है। ऐसा सुना करते थे अब आँखों से प्रत्यक्ष देख लिया कि गायत्री माता के लिए जो कुछ किया जाता है वह परलोक में ही नहीं इस लोक में भी आनन्द दायक होता है ।

गायत्री पर अटूट विश्वास

श्रीमती मेघायती जी नगीना अपनी अनुभूति प्रकट करती हुई लिखती है कि गायत्री मन्त्र ईश्वर की उपासना के लिये मुख्य मन्त्र है । मेरा तो इस पर अति अटूट विश्वास और श्रद्धा रही है। मुझे बचपन से इस मन्त्र से अति प्रेम है मुझे बचपन की अपनी एक बात का स्मरण है । अपने पास माला न होने के कारण मोटे से डोरे में सौ गाँठें लगाकर मैं उससे गायत्री का जप करती थी। एक दिन मेरे पिताजी ने मेरी माला देखली और गायत्री में मेरा प्रेम समझ कर मुझे सच्चे मूँगों की माला दी थी । गायत्री जप से मुझे ऐसा भासने लगता है मानों मैं अपने प्यारे पिता से बातें कर रहीं हूँ अथवा अपना कण्ठस्थ पाठ सुना रही हूँ । जब-जब मुझे आपत्तियों का सामना करना पड़ा तब-तब मैं गायत्री मन्त्र द्वारा अपने प्रभु के समीप चली जाती हूँ और मुझे विश्वास होने लगता है कि अवश्य पिता मेरे दु:ख सुन रहे हैं और अवश्य निवारण करेंगे। एक बार नहीं अनेक बार मैं अपने पुत्र के इधर-उधर फिरने और कुछ कार्य न करने से अति दुखित थी तब कभी मैंने प्यारे पिता को स्मरण करके गायत्री माता की शरण ली और विधि पूर्वक उसका अनुष्ठान किया। (जिसकी विधि अखण्ड ज्योति में लिखी है) उसका चमत्कार आश्चर्यजनक हुआ । जिस दिन प्रात:काल मैं यज्ञ करने वाली थी रात्रि भर यही विचार रहा कि यज्ञ में सम्मिलित होना उसका अति आवश्यक था और आत्मा से आवाज आ रही थी कि प्रात: वह कहीं से आ जावेगा । प्रात: यज्ञ की तैयारी में लग रही थी और उसके आने की ऐसी प्रतीक्षा लग रही थी जैसी सूचना आने पर लगी रहती थी यज्ञ आरम्भ होने वाला था क्या देखती हूँ कि मेरा पुत्र शतीशचन्द्र आंगन में मेरे सन्मुख खड़ा है । इस प्रकार के चमत्कारिक अनुभव मुझे अनेकों बार हुए हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राचीनकाल में सन्तान न होने पर पुत्रेष्टि यज्ञ किया करते थे । महाराज अश्वपति ने सन्तानोत्पति के लिये गायत्री मन्त्रों से यज्ञ किया था, जिसके फल से एक कन्या उत्पन्न हुई, जिसका नाम भी गायत्री के सदृश्य सावित्री रखा था । राजा जनक के जमाने में जब जनकपुरी में अकाल पड़ा और प्रजा भूखी मरने लगी तब जनकजी ने वर्षा होने के लिये गायत्री यज्ञ किया जिसके फलस्वरूप वर्षा भी हुई और सीता जी की उत्पत्ति भी हुई । ऐसे अनेक उदाहरण हैं। गायत्री मन्त्र का यज्ञ करने से सांसारिक सफलता के साथ-साथ हमारा ईश्वर भक्ति में भी प्रेम बढ़ता है मन के एकत्रित होने में अति सहायता मिलती है और आत्मा को एक विशेष प्रकार की शान्ति प्राप्त होती है यह आत्म शान्ति ही मनुष्य जीवन की सच्ची सफलता है ।

गायत्री द्वारा प्राण रक्षा

श्री शंकरलाल व्यास, महेश कसराबाद, लिखते हैं कि एक समय मेरा बच्चा बीमार हुआ । यहाँ तक कि डाक्टर वैद्यों ने भी हाथ टेक दिये थे । उस वक्त उसकी बड़ी शोचनीय दशा थी । मैंने दस हजार गायत्री जप का संकल्प कर दिया । प्रभु की कृपा से धीरे-धीरे उसे आराम होने लगा और भला चंगा हो गया । इसी प्रकार एक बार मैं घोड़े सवारी से किसी ग्राम को जा रहा था । पहाड़ी प्रदेश होने के कारण विशेषकर पगडंडी की राह से जाना पड़ता है । रात्रि का समय था मैं रास्ता भूलकर एक बीहड़ जंगल में जा फँसा जहाँ भटकते-भटकते कई घण्टे व्यतीत हो गये,जंगली पशुओं की यत्र-तत्र आवाज सुनाई देने लगी। उस समय मैंने मानसिक गायत्री जप शुरू किया। कुछ देर बार मैं फिर आगे बढ़ा । चलते-चलते एक मोटर की आवाज जैसी आहट होती हुई सुनी उस दिशा को जाने से सड़क मिल गई और भयंकर जंगल में मेरे प्राण बच गये ।

अनेक अपत्तियों से छुटकारा

श्री आर. वी. बेद घाटकोपर लिखते हैं कि एक साल पहले मेरे ऊपर कई कानूनी मुकदमे चल रहे थे, सब तरफ से परेशानी थी, आर्थिक नुकसान हो रहा था और बहुत समय से बीमारी चली आ रही थी। वे सभी मित्र जिनसे सहायता की उम्मीदें थीं, इस कठिन समय में मुँह मोड़ चुके थे। उस समय श्री जगदम्ब गायत्री ने ही सब तरह से और सब ओर से मेरी रक्षा की । मुझे सन् १९३७ से वेद माता गायत्री पर अत्यन्त श्रद्धा हो गई है ।

उस समय मैं प्रायः ध्यान मग्न रहा करता था, एक दिन-रात को स्वप्न में मुझे जब कि मैं काफी परेशान था एक दिव्य ध्वनि सुनाई पड़ी कि तुम अपनी सारी परेशानियों को भूल कर श्री जगदम्बा के पास रक्षा के लिए जाओ । मुझे इस ध्वन्यात्मक चमत्कार से आश्चर्य हुआ, दूसरे दिन मैंने पुरश्चरण सम्बन्धी साहित्य जुटाना आरम्भ किया और उसे अन्य ब्राह्मणों की सहायता से हवन तर्पण आदि के साथ ११ दिन में पूरा कर लिया, मैं सुबह जल्दी उठता और प्रतिदिन जप और अग्निहोत्र करता । उससे मुझे चमत्कारी लाभ हुआ । सारी बीमारियाँ, सारी परेशानियाँ हवा की तहर छूमन्तर हो गईं मेरे पुराने दुश्मन भी दास हो गये ।

माँ हमेशा अपने बच्चे की हिफाजत करती रहती है और वह वही सब करती रहती है जिससे बच्चा खुश रहे । मुझे अपने जीवन में इसके कई अनुभव हुए हैं ।

मैं प्रति मंगल और रविवार को महालक्ष्मी दर्शन के लिए नियमित रूप से जाया करता था । जब मैंने पुरश्चरण करना आरम्भ किया तब मैं सोचने लगा कि यह सब कैसे होगा ? क्योंकि मैं दर्शन करने के पश्चात् ही भोजन किया करता था । यह सवाल अपने आप ही हल हो गया । मेरे मित्र ने जो कि मेरे घर के पास ही रहते हैं और किसी सरकारी विभाग में ऑफीसर हैं, आवश्यकता के समय अपनी मोटरकार को उपयोग करने के लिए मुझसे एक दिन मेरे घर आकर कहा । वे सोचते थे कि पत्नी बीमार हैं और कभी भी अचानक इन्हें कार की जरूरत पड़ सकती है। (क्योंकि घाटकोपर पर सिर्फ १ टैक्सी है और यहाँ से बम्बई १५ मील दूर है ।) मैंने उनसे कहा कि इन दिनों मेरे सामने सिर्फ महालक्ष्मी के दर्शनों की समस्या है क्योंकि मैं ११ दिन के लिए वेदमाता गायत्री का पुरश्चरण कर रहा हूँ और मैं अपने प्रत्येक काम के लिए इन्हीं पर निर्भर हूँ । उन्होंने कहा कि तुम अवश्य पुरश्चरण आरम्भ कर दो । सायंकाल ६ बजे जबकि जप आरती आदि से निर्वत्त होंगे यह कार तुम्हें दर्शन करा कर तुम्हारे भोजन के समय तक वापिस ला देगी । इन दिनों मैं एक ही बार भोजन करता था । ये दिन बम्बई में साम्प्रदायिक के थे, और वह इलाका दंगा क्षेत्र घोषित था इसलिए ३०-४०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

घण्टे का एक बार करफ्यू लगा हुआ था । इस कठिन युग में भी यह चमत्कार हुआ । हमारी यात्रा में किसी प्रकार की न कोई मुसीबत आई और न कोई विघ्न ही आया । एक बार तो जब हम कुछ कदम ही आगे बढ़े होंगे, कुछ गुण्डों ने वहाँ कोई बड़ा विस्फोट कर दिया, परन्तु हम सुरक्षित निकल गये ।

इन्हीं दिनों में एक दिन रात्रि को ३०-३० मिनट पर मेरी पत्नी को वमन होने आरम्भ हुए । आध या पौन घन्टे बाद ही मेरे उठकर जप आदि करने का समय आता था । मैंने अपने गृह-चिकित्सक को बुलाया जो कि मेरे अत्यधिक अतरंग मित्र हैं। मैंने उनसे कहा मैं अब क्या करूँ । मैं पत्नी की तीमारदारी करूँ या जप मेरे लिए एक कठिन समस्या खड़ी हो गई। पत्नी को मैं अत्यधिक प्यार करता हूँ और जप आदि एक दिन के लिए भी छूटता है तो सारा सिद्धिकार्य खत्म । डाक्टर ने मुझे ढाँढस बँधाया और कहा कि अपनी साधना जारी रखो माता स्वयं इनकी रक्षा करेंगी । मैं स्नानादि से निवृत्त होकर जप करने बैठ गया, इसी समय मेरी आँखों के सामने पूरे वेग के साथ मेरी पत्नी को फिर वमन हुआ । मैंने मन ही मन कहा माँ आज मेरी लाज तेरे हाथ में है—और मैं पूजन में लग गया। सचमुच ही आश्चर्य की बात है कि सबरे ६-३० बजे जबकि मैं पूजा से उठा मुझे बतलाया गया कि मेरी पत्नी को चमत्कारिक लाभ हुआ है और वे इस समय स्वस्थ व प्रसन्न हैं।

इसी तरह जब मेरी साधना के समय मेरे मुकदमे की एक तारीख थी, जिसमें मैं नहीं जा सकता था और जो एक महत्वपूर्ण मुकदमा था, वह भी मेरे अनुकूल हुआ, क्योंकि उस दिन दूसरे फरीक का वकील ही गैर हाजिर हो गया ।

एक नहीं ऐसे अनेक चमत्कार मुझे देखने को मिले हैं। मैं आज पूर्ण रूप से सुखी हूँ । मुझे कोई अभाव नहीं है इस सब का श्रेय भगवती वेदमाता जगदम्बा गायत्री की कृपा को है जो कि इन्हीं के जप से प्राप्त हुई है ।

सर्पविष विसर्जन

धर्म भूषण कवि शिरोमणि मंत्र मर्म भास्कर, भास्कर त्रयम्बक शास्त्री जोकि इस समय श्री मद् श्री गोवर्धनपीठ के श्री शंकराचार्य हैं अपनी ''मन्त्र शस्त्र योग और मन्त्र शक्ति योग'' नामक पुस्तक के १६७ वें पृष्ठ पर लिखते हैं कि राव साहब मागलतदार, पहालगढ़, कोल्हापुर वाले गायत्री मंत्र से साँप के जहर को उतारते हैं ।

डकैती के अभियोग से रिहाई

ठा. जंगजीतसिंह राठोर, रानीपुरा, लिखते हैं कि हमारे ताऊजी एक अजनबी आदमी से कुछ जेवर सस्तेपन के लोभ में आकर खरीद लिया था । यह षड़यंत्र हमारे एक शत्रु का था वह बड़ा बदमाश, डाकुओं का पक्का ऐजेन्ट और पुलिस का दलाल था। वह धनवान ही इन तरीकों से हुआ था । दो वर्ष से हम लोगों के साथ उसकी रंजिश हो गई थी । इतनी हिम्मत तो उसकी थी नहीं कि सामने आकर अपना जोर अजमाता इसलिए उसने अपनी कूटनीति द्वारा रंजिश का बदला लेने का निश्चय किया ।

एक डकैती में गये जेवर अपने परिचित डाकू से उसने मँगवाये और एक अजनबी आदमी के हाथों हमारे ताऊ को सस्ते दाम पर बिकवा दिये । दूसरी ओर हाथों पुलिस को खबर देकर तलाशी ले आया। तीसरी और एक डकैती के मुखबिर से मिलकर मेरा और मुझसे छोटे भाई का नाम डाकुओं में लिखवा दिया । पुलिस आई तलाशी में जेवर बरामद हुए और हम दोनों भाई गिरफ्तार करके जेल पहुँचा दिये गये ।

इस प्रकार की आपत्ति हमारे परिवार के लिए अनौखी थी । जहाँ तक हमारे वंश का पुराना इतिहास ज्ञात है वहाँ तक इस कुल का कोई आदमी कभी किसी मामले में जेल न गया था । यह घटना सन् १९३६ की है उस जमाने में जेल और पुलिस का भारी आतंक था । इस संकट से सब लोगों के होश उड़ गये। घर भर में कुहराम मच गया । तीन-तीन दिन तक चूल्हा नहीं जला । जेल में घुसने तक हम दोनों भाईयों को भी ऐसा लगता रहा मानों मृत्यु के मुख में जाने के लिए घसिटते हुए जा रहे हैं ।

जेल में बन्द हो गये । रात भर नींद न आई । भय से हृदय धड़क रहा था । डकैती साबित हो गई तो फाँसी, काला पानी या जन्मकैद तक हो सकती है। इस कल्पना मात्र से चित्त बैचेन हो जाता था । एक दो दिन इस प्रकार बिताने के बाद चिन्ता भय, व्याकुलता और घबराहट कम हुई और यह सोचने लगे कि क्या किया जाना चाहिए । घर वाले तो यथा शक्ति यथामति दौड़ धूप कर सकते थे, पर हमारे लिए उस पिंजड़े में बन्द रहते हुए कुछ कर सकना कठिन था ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सोचते-सोचते एक विचार आया कि जब मेरा जनेऊ हुआ था तब गुरुजी ने दीक्षा देते हुए गायत्री मंत्र बताया था और अनेक बातें बताते हुए यह भी कहा था कि अगर कभी कोई आपत्ति आये तो इस मंत्र को जपना, विपत्ति दूर हो जायगी। उस बात की अजमाइश करने का इससे अच्छा अवसर और क्या हो सकता था। मैंने उसी दिन से जप आरम्भ कर दिया। विधि विधान तो कुछ मालूम न था । आसन माला आदि कोई साधन भी न था । स्नान करके शान्त चित्त होकर बैठ जाता उँगलियाँ पर गणना करके दो हजार मंत्र नित्य जप लेता । यह क्रम बराबर नित्य नियमित रूप से चलने लगा ।

दस दिन बीते होंगे कि मुझे स्वप्न में एक वृद्ध स्त्री के दर्शन हुए । उसके बाल सफेद हो रहे थे, सफेद वस्त्र पहने थी। वर्ण गौर और चेहरा तेजवान था । उस वृद्धा ने कहा "मैं तुम्हें सान्त्वना देने आई हूँ, चिन्ता न करो तुम दोनों आज से एक मास बाद छूट जाओगे।" यह कह कर वह वृद्धा चली गई ।

सबेरे उठने पर भाई से मैंने स्वप्न का हाल कहा। उसने निराशा के साथ सिर हिलाते हुए कहा—"डकैती के मुकदमे में दो वर्ष में फैसला होते हैं, जमानत इसमें होती नहीं माल बरामद हुआ है फिर इतनी जल्दी छूट जाने की आशा किस प्रकार की जा सकती है ?" बात उसकी ठीक थी । मैं भी चुप हो गया ।

बुद्धि कहती थी कि छूटना कठिन है । अन्तरात्मा कहती थी कि स्वप्न वाली वृद्धा को ईश्वरीय शक्ति थी, उसका कथन असत्य नहीं हो सकता। आशा-निराशा के झूले में झूलते हुए गायत्री का जप और भी उत्साह से होने लगा । भाई ने भी मेरा अनुकरण किया। वह भी नित्य एक हजार मन्त्र जपने लगा ।

ग्राह के मुख में से गज को छुटा देने वाले के लिए कोई बात कठिन नहीं है । स्वप्न से ठीक तीसवें दिन जेल के वार्डर ने हमें रिहाई का संदेश सुनाया । उसी दिन जेल से मुक्त कर दिया गया । बाहर आने पर मालूम हुआ कि किन्हीं कारणों से पुलिस ने हमारे ऊपर से मुकदमा उठा लिया है ।

उस घटना को १५ वर्ष बीत गये, हम दोनों भाई नित्य नियमित रूप से गायत्री का जप करते हैं और प्रति वर्ष एक बार गायत्री यज्ञ तथा ब्रह्मभोज कराते हैं। हमारे घर की सुख सम्पदा तब से अब तक बराबर बढ़ती ही आई है ।

घातक अनिष्ट से प्रतिरक्षा

श्री आनन्द स्वरूप श्रीवास्तव, गोहाड़, लिखते हैं कि ता. २६ मई ५१ को हमारे चाचा ज़ाद भाई अपने यहाँ शादी के अवसर पर लिवाने आये थे । अम्माजी तथा चाची जी को लेकर हम लोग जैसोरी चले । बालाप्रसाद गाड़ी हाँक रहे थे, मैं साथ था ।

घर से तीन मील चले जाने पर सुनसान जङ्गल में डाकुओं ने हमला बोल दिया । उन्होंने लाठियों से हमें मारा और मेरे सिर में दो कुल्हाड़ी मारी । बालाप्रसाद का बुरा हाल था मेरे सिर में तो इतने गहरे घाव आये थे कि बेहोश हो गया। शरीर खून से बुरी तरह लथपथ हो रहा था ।

डाकुओं ने गाड़ी की तलाशी ली और अम्माजी तथा चाचीजी पर जो कुछ मिला सब छीन लिया । करीब एक हजार के जेवर तथा ८० रुपये लेकर वे चम्पत हो गये ।

किसी प्रकार भाई गाड़ी को बढ़ाकर लाया । मुझे अस्पताल में भर्ती किया गया । घाव इतने गहरे थे कि डाक्टरों को भी मेरी जीवन रक्षा के बारे में सन्देह हो रहा था । परन्तु ईश्वर की लीला बड़ी प्रबल है । वह राई से पर्वत और पर्वत से राई कर देता है । धीरे-धीरे मेरी स्थिति सुधरती गई और गहरे घाव भर गये । डाकू जितना धन लूट ले गये थे उससे कहीं अधिक डाकुओं की नजर न पड़ने के कारण बच गया । समय के कुचक्र और प्रारब्ध के फेर ने कष्टदायक का परिचय दिया, उसे कोई टाल भी नहीं सकता था । यह सत्य है कि विधि का विधान मिटता नहीं । पूर्वकाल में बड़े-बड़े प्रतापियों को प्रारब्ध का भोग भोगना पड़ा है। हम भी उससे बच नहीं सकते और न बच सके ही।

परन्तु मारने वाले से बचाने वाला बलवान होता है । पिताजी गायत्री के अनन्य उपासक हैं, मैं भी यथाशक्ति वेदमाता की उपासना करता हूँ । इस घोर संकट के समय में कठिन प्रारब्ध के बीच में भी माता की कृपा प्राप्त हुई । मृत्यु के मुख में पड़ा हुआ मेरा जीवन बच गया और धन की भी पूर्ण हानि न हुई । अन्यथा डाकुओं की एक नजर पड़ते ही सारा जेवर तथा पैसा हाथ से चला जा सकता था । यह ठीक है कि विधि का विधान टलता नहीं, पर यह भी ठीक है कि गायत्री उपासकों को चोर सङ्कट में डूबने की स्थिति में भी माता की प्रति रक्षा प्राप्त होती है और वह बड़े-बड़े दुर्भाग्यों का असानी से मुकाबला कर लेता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मैं प्राणघातक सङ्कट से माता की कृपा से ही बच सका । डाकुओं के हाथ साथियों का जान माल बचा, यह सब माता की ही दया है ।

जेल से छुटकारा

श्री गुरुचरणजी आर्य, विहिया, लिखते हैं कि यों तो २० वर्ष पहले से ही आर्य समाज में आने पर ऋषि दयानन्द सरस्वती के वैदिक संध्या द्वारा मुझे गायत्री मन्त्र का दर्शन और संध्या का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है और जिसका कि मैं आज तक सोते जागते स्नान करने के बाद संध्या में बार-बार जपता चला जा रहा हूँ ।

अब तक तो मैं इसे यहीं तक सीमित रखता था, लेकिन जब मैंने अखण्ड ज्योति में किन्हीं महानुभाव का गायत्री का चमत्कार लेख पड़ा जो मनुष्य के भौतिक दुःखों पर भी प्रयोग करने पर तत्काल फलदायी होता है । तब लगा डूबकर गोता पर गोता लगाने और जिन-जिन चीजों की प्राप्ति हुई और हो रही है उसको पाकर उसी में डूबा ही रह जाना चाहता हूँ ।इस गायत्री की प्राप्ति के लिए मेरे शरीर का रोआँ—रोआँ जीवन भर ऋषि दयानन्द सरस्वती और आचार्य श्रीराम शर्मा का आभारी रहेगा ।

महात्मा गाँधी का 'भारत छोड़ो' देश में अगस्त आन्दोलन की आँधी आकर जब चली गई तो अंग्रेज सरकार की पुलिस मुस्तैदी से निर्दोष कांग्रेस मैनों को पकड-पकड़ कर जेलों में ठूंस रही थी । इन्हीं पकड़े जाने वालों में एक मैं भी था । मुझ पर रेलवे गोदाम का ताला तोड़कर माल चुराने का झूठा आरोप लगाकर एक वर्ष की सख्त सजा और एक सौ रुपये जुर्माने का फैसला दिया गया । जेल आकर मैं झुंझला रहा था। पुलिस वालों पर, सरकारी हाकिमों पर और साथ ही अपने पर कि साल भर निर्दोष जेल में बन्द हूँ? पर मैं जेल की चहारदीवारियों से घिरा बाहर निकलने से रहा ।

उन दिनों आरा जेल से बदल कर भागलपुर चला आया था । जेलवास में मेरे साथी तथा और लोग जहाँ कुछ खेल तमाशा करके अपना दिल बहलाने में लगे रहते थे वहाँ मैं अकेला एकान्त में बैठा जेल से बाहर जाने के लिये विशेष चिन्तित रहता था । मैं जिस बार्ड में रहता था उसके पास ही जेल की ऊँची दीवारों को लांघ कर लंगूरों का एक बड़ा दल आता, जूठी रोटी, भात खाकर फिर ऊँची दिवारों को सुगमतापूर्वक लांघकर बाहर चला जाता । मैं उन लंगूरों और ऊँची दीवारों को बड़े गौर से देखता ।

भागलपुर आये अभी कुछ ही दिन हुए थे । जेल मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था और तब मैं भक्ति ही के लिये विशेष रूप से गायत्री को जपने में लग गया । सुबह, शाम स्नान के बाद, अपने वार्ड के पीछे एकान्त में कम्बल पर आसन लगा बैठ जाता और घन्टों गायत्री जपता, फिर अकेले उसी में लीन रहता। यह सिलसिला अभी पूरा एक महीना भी नहीं चल पाया था कि जेल के चपरासी ने एक दिन आकर सूचना दी कि आपको जमानत पर रिहाई के लिये आज ही तार आदेश आया है । मैं स्वयं आश्चर्य से चकित हो गया। मेरे सामने गायत्री का पद साक्षात् मूर्तिमान हो उठा। मैंने भक्तिपूर्वक उसे प्रणाम किया। जेल से विदा हो घर आने पर रोज जज साहब के इजलास में हाजिर हुआ। अन्त में मैं जेल से पूर्णतया छुटकारा पा गया । ●●●

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री साधना से आपत्तियों का निवारण

विपरीत परिस्थितियों का प्रवाह बड़ा प्रबल होता है। उसके थपेड़े में जो फँस गया वह विपत्ति की ओर बहता ही जाता है। बीमारी, धन-हानि, मृत्यु, मुकदमा, शत्रुता, बेकारी, गृह-कलह, विवाह, कारज आदि की शृंखला जब जल पड़ती है तो मनुष्य हैरान हो जाता है। कहावत है कि विपत्ति अकेली नहीं आती, वह हमेशा अपने बाल-बच्चे साथ लाती है। एक मुसीबत आने पर उसकी साथिन और भी कई कठिनाइयाँ उसी समय आती हैं, चारों ओर से घिरा हुआ मनुष्य अपने को चक्रव्यूह में फँसा-सा अनुभव करता है। ऐसे विकट समय में जो लोग निराशा, चिन्ता, भय, निरुत्साह, घबराहट, किंकर्त्तव्यविमूढ़ता में पड़कर हाथ-पाँव चलाना छोड़ देते हैं, रोने-कल्पने में लगे रहते हैं, वे अधिक समय तक और अधिक मात्रा में कष्ट भोगते हैं।

विपत्ति और विपरीत परिस्थितियों की धारा से त्राण पाने के लिए धैर्य, साहस, विवेक और प्रयत्न की आवश्यकता है। इस चार कोने वाली नाव पर चढ़कर ही सङ्कट की नदी को पार करना सुगम होता है। गायत्री की साधना आपत्ति के समय इन चार तत्त्वों को मनुष्य के अन्तःकरण में विशेष रूप से प्रोत्साहित करती है जिससे वह ऐसा ठीक मार्ग ढूँढ़ने में सफल हो जाता है जो उसे विपत्ति से पार लगा दे।

आपत्तियों में फँसे हुए अनेकों व्यक्ति गायत्री की कृपा से किस प्रकार पार उतरे उनके कुछ उदाहरण जानकारी में इस प्रकार हैं—

बम्बई के पं. रामकरन शर्मा जब गायत्री-अनुष्ठान कर रहे थे उन्हीं दिनों उनके माता-पिता सख्त बीमार हुए, परन्तु अनुष्ठान के प्रभाव से उनका बाल भी बाँका न हुआ, दोनों ही निरोग हो गये।

बम्बई के श्री मानिकचन्द पाचौटिया व्यापारिक घाटे के कारण काफी रुपये के कर्जदार हो गये थे। कर्ज चुकने की कोई व्यवस्था हो नहीं पाती थी कि सट्टे में और भी नुकसान हो गया, दिवालिया होकर अपनी प्रतिष्ठा खोने और भविष्य में दुःखी जीवन बिताने के लक्षण स्पष्ट रूप से सामने थे। विपत्ति की सहायता के लिए उन्होंने गायत्री-अनुष्ठान कराया। समय कुछ ऐसा फिरा कि दिन-पर-दिन लाभ होने लगा। रुई और चाँदी के कई चान्स अच्छे आ गये, जिनसे सारा कर्ज चुक गया, गिरा हुआ व्यापार फिर चमकने लगा।

दिल्ली के प्रसिद्ध पहलवान गोपाल विश्नोई कोई बड़ी कुश्ती लड़ने जाते थे तो पहले गायत्री-पुरश्चरण कराते थे। वे प्रायः सदा ही विजयी होकर लौटते थे।

बाँसवाड़ा के श्री सीताराम मालवीय को क्षय रोग हो गया था। एक्सरा होने पर डॉक्टरों ने उनके फेफड़े खराब हो गये बताये थे। दशा निराशाजनक थी। सैकड़ों रुपये की दवाएँ खा लेने पर भी जब कुछ आराम न हुआ तो एक विद्वान वयोवृद्ध के आदेशानुसार उन्होंने चारपाई पर पड़े-पड़े गायत्री का जप आरम्भ कर दिया और मन ही मन प्रतिज्ञा की कि यदि मैं बच गया तो अपना जीवन देश-हित में लगा दूँगा। प्रभु की कृपा से वे बच गये। धीरे-धीरे स्वास्थ्य सुधरा और बिलकुल भले-चंगे हो गये। तब से अब तक वे आदिवासियों, भीलों तथा पिछड़ी हुई जातियों के लोगों की सेवा में लगे हुए हैं।

थरपारकर के ला. करनदास का लड़का बहुत ही दुबला और कमजोर था, आये दिन बीमार पड़ा रहता था। आयु १९ वर्ष हो चुकी थी, पर देखने में १३ वर्ष से अधिक न मालूम पड़ता था। लड़के को उनके कुलगुरु ने गायत्री की उपासना का उपदेश दिया। उसका मन इस ओर लग गया। एक-एक करके इसकी सब बीमारियाँ छूट गईं। कसरत करने लगा, खाना भी हजम होने लगा। दो तीन वर्ष में उसका शरीर ड्यौढ़ा हो गया और घर का सब काम काज होशियारी के साथ संभालने लगा।

चन्दन पुरवा के सत्यनारायण जी एक अच्छे गायत्री उपासक हैं। इन्हें अकारण सताने वाले गुण्डों पर ऐसा वज्रपात हुआ कि एक भाई २४ घण्टे के अन्दर हैजे से मर गया और शेष भाइयों को पुलिस डकैती के अभियोग में पकड़ कर ले गई। उन्हें पाँच-पाँच वर्ष की जेल काटनी पड़ी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

५.२ गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार

इस प्रकार ऐसे अनेकों प्रमाण मौजूद हैं जिनसे यह प्रकट होता है कि गायत्री माता का अञ्चल श्रद्धापूर्वक पकड़ने से मनुष्य अनेक प्रकार की आपत्तियों से सहज ही छुटकारा पा सकता है। अनिवार्य कर्म, भोगों एवं कठोर प्रारब्ध में भी कई बार आश्चर्यजनक सुधार होते देखे गये हैं।

गायत्री-उपासना का मूल लाभ आत्म-शांति है। इस महामन्त्र के प्रभाव से आत्मा में सतोगुण बढ़ता है और अनेक प्रकार की आत्मिक समृद्धियाँ बढ़ती हैं साथ ही अनेक प्रकार के सांसारिक लाभ भी मिल जाते हैं जिन्हें उपासना का गौण लाभ समझा जाता है।

गायत्री उपासना से सन्तान लाभ

सुधोपम तुलसी के व्याख्यान को सुनकर महर्षि नारद ने भगवान् विष्णु से नम्रतापूर्वक पूछा "भगवन्! वेद जननी गायत्री की उपासना पहले किस-किस ने की थी।"

ब्रह्मणा वेद जननी पूजिता प्रथमे मुने।
द्वितीये च देव गणैस्तत्पश्चाद्विदुषां गणै।
तथा चाश्वपतिः पूर्व पूजयामास भारते ।।

भगवान् विष्णु ने नारद जी से कहा "हे मुने वेद जननी पहले ब्रह्मा से, दूसरे देव गणों से, तत्पश्चात् विद्वदगणों से पूजि हुई। तदनन्तर भारत में अश्वपति ने इसकी आराधना की।

"अश्वपति कौन था?" नारद ने निज जिज्ञासा नारायण से निवेदित की। उसने सबके द्वारा पूजनीया सावित्री की विशिष्ट आराधना कैसे और क्यों की। "प्रभो! कृपया मेरी जिज्ञासाओं का समुचित उत्तर देकर मुझे अनुग्रहीत करें।"

नारायण ने कहा "नारद! शत्रुओं को निस्तेज और उनकी शक्ति का परिमर्दन करने वाला नरवरेन्द्र अश्वपति मद्र देश का राजा था। उसके राज्य में धन-धान्य, सुख-समृद्धि, कला-कौशल, ज्ञान-विज्ञान सभी यथेष्ट मात्रा में थे। गौ, ब्राह्मण, साधु, महात्माओं की सेवा करके वह अपनी देह और परलोक सुधार रहा था। न्यायशील सम्पन्न उस राजा की महिषी निज धर्म परायणा, सती साध्वी मालती सन्तान प्राप्ति के लिए वशिष्ठ जी के आदेश से गायत्री की आराधना में अपना समय लगाकर कृतार्थ होती थी।

साच राज्ञी महासाध्वी वशिष्ठ स्योपदे शतः।
चकारा राधने भक्तया सावित्र्या श्चैव नारद ।।

भगवान् विष्णु ने नारद से कहा "महामुने! राजा और रानी को सावित्री की आराधना करते हुए जब कुछ दिन व्यतीत हो गये तो एक दिन आकाशवाणी हुई कि तुम दश लक्ष गायत्री का जप करो।"

"शुश्रावा काशवाणीञ्च नृपेन्द्रश्चा शरीरिणीम् ।
गायत्री दशलक्षञ्च जपं कुर्बिसि नारद॥"

उन्होंने अशरीरिणी आकाशवाणी को सुना। (एवं उसके अनुसार) १० लक्ष जप का अनुष्ठान प्रारम्भ कर दिया। प्रातःकाल ब्रह्म-बेला में शय्या त्याग करके शौच स्नानादि से निवृत्त होकर सपत्नीक राजा संध्या करता था। तत्पश्चात् वेद जननी गायत्री माता के विग्रह का शोडषोपचार पूजन करते थे। प्रातःकालीन जपादि कर्त्तव्यों से निवृत्त होकर अपनी धर्मपत्नी के सहित अश्वपति मध्याह्न की पूजा किया करते थे। रात्री में, नीराजन, स्तोत्रादि पाठ के पश्चात् सन्निकट रहने वाले गायत्री उपासक परस्पर गायत्री विषयक ज्ञान-विज्ञान पर विचार-विमर्श किया करते थे। एक दिन महर्षि पराशर भी उस विचार गोष्ठी में उपस्थित हुए। महर्षि ने उपस्थित समुदाय को उपदेश श्रवण की लालसा को पूर्ण करते हुए सुधा प्रवर्षिणी वाणी में सदुपदेश दिया। गायत्री जप के महत्त्व का दिग्दर्शन कराते हुए, पराशर ने कहा—

"सकृज्जपश्च गायत्र्या पावं दिन कृतं हेरत्।
दशधा प्रजपान्नृणां दिवारात्रृध मेवच ॥"

अर्थात् गायत्री के एक बार के जप से दिन में किए हुए पाप तथा दस बार गायत्री मन्त्र का उच्चारण करने से अहोरात्र में किए हुए पापों का विनाश हो जाता है।

"शतधा च जपाच्चैवं पापं मासार्जितं परम्।
सहस्त्रधा जपाच्चैव कल्मषंवत्सरार्जितम ।।
लक्ष्य जन्म कृतं पापं दशलक्षं त्रि जन्मनः।
सर्व जन कृतं पापं शतलक्षो विनश्यति॥"

"एक सौ जप से एक मास के अर्जित पाप, एक सहस्त्र जप करने से एक वर्ष के अर्जित पाप, एक लक्ष जप से एक जन्म के पाप, दस लक्ष जप करने से तीन जन्म के तथा शतलक्ष (एक कोटि) गायत्री जप करने से सकल जन्म जन्मान्तरों के पापों का विनाश हो जाता है।"

"करोति मुक्तिं विप्राणां जपोदश गुण स्ततः।
करं सर्प फणाकारं कृत्वातु ऊद्ध्वं मुद्रितम्॥

महर्षि पराशर कहते हैं कि पूर्वाभिमुख होकर, हाथ को सर्प फणाकृति की उर्ध्व मुद्रा से रखकर किए हुए जप का दस गुणित फल होता है। इस प्रकार के

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जप के लिए श्वेत कमल के बीजों की अथवा संस्कृत स्फटिकादि की माला प्रसस्त कही गई है।'' इसके करने से क्या ? इसका फल महर्षि मद्र देश के सम्राट अश्वपति से कहते हैं।

''एवं क्रमेण राजर्षे दश दसलक्षं जपं कुरु।
साक्षात् द्रक्ष्यसि सावित्री त्रिजन्म पातकक्षयात्।।

हे राजर्षे! इस क्रम से दस लक्ष जप करो। एतत्फल स्वरूप तीन जन्म के पापों का क्षय हो जावेगा, इस लिए तुम साक्षात् सावित्री के दर्शन करोगे''

भगवान् विष्णु देवर्षि नारदजी से कहते हैं:—

''दत्वा सर्वं नृपेन्द्राय प्रययौ स्वालयं मुनीः।
राजा सम्पूज्य सावित्री ददर्श वरमाप च ॥

इस प्रकार मुनी राजा के लिए सर्वस्व देकर अपने आश्रम को चले गये और सावित्री को पूजकर राजा ने दर्शन और वरदान को प्राप्त किया।''

लोक कल्याण की भावना से अभिप्रेरित होकर नारदजी ने भगवान् विष्णु से पूछा—

''नृपः केन विधानेन संपूज्य श्रुति मातरम्।
वरञ्च किं वा संप्राप यद सोऽश्वपतिर्नृपः॥

नरेन्द्र अश्वपति ने किस विधान से वेद माता को पूजकर, क्या वरदान प्राप्त किया?''

भगवान् विष्णु ने नारदजी से देवस्थापन, षोडसोः पचार पूजन, आदि का विधान विस्तार पूर्वक बताया तथा ब्रह्माजी द्वारा कृत सावित्री स्तवराज द्वारा संस्तुति आराधना से प्रसन्न होकर सहस्त्रार्मसम प्रभावाली सावित्री ने दर्शन देकर राजा से कहा—

''जानामि ते महाराज यत्ते मनसि वर्तते।
वाञ्छितं तब पत्न्याश्च सर्वं दाम्यामिनिश्चतम्॥
साध्वी कन्याभिलाषञ्च करोतितब कामिनी।
त्व प्रार्थयसि पुत्रंच भष्यति क्रमेणते॥

हे नवरेन्द्र ! मैं तेरी और तेरी पत्नी की अभिलाषा को जानती हूँ। मैं तुम दोनों की कामनाओं को पूर्ण करूँगी। तेरी साध्वी धर्मपत्नी कन्या की अभिलाषा करती है और तुम पुत्र की अभिलाषा रखते हो। तुम दोनों की मनोकामना कर्मेण पूर्ण होगीं।'' यह वरदान देकर वेदमाता ब्रह्मलोक को चली गई। राज राजेश्वर अश्वपति की अपेक्षा सावित्री देवी ने अपनी पुत्री मालती देवी की इच्छा पूर्ति को प्राथमिकता देकर नारी की महत्ता का उदाहरण विश्व के सम्मुख प्रस्तुत किया।

''आराधनाच्च सावित्र्य बभूव कमला कला।
सावित्रीति च तन्नाम चकाराश्वपति नृपः॥

आदिशक्ति सावित्री आराधना से नृप दम्पति को प्रथम कन्या रत्न की प्राप्ति हुई। यह कन्या सावित्री की आराधना से प्राप्त हुई थी इसलिए अश्वपति उस बालिका का नाम भी सावित्री रखा।

यह ''ब्रह्मवैवर्त्त पुराण के २३ वें अध्याय को सावित्री-उपाख्यान'' से तीन उद्देश्यों का प्रति-पादन करता है—

(१) **''सा च राज्ञीमहासाध्वीवशिष्ठस्योपदेशतः।''**
चकाराराधनं भक्त या सावित्र्याश्चैव नारद॥

इस श्लोक से स्पष्ट है कि स्त्रियों को गायत्री आधिकार है।

(२) दूसरे वह सदा से ऋषि-मुनियों द्वारा समर्थित रहा है । वशिष्ठ जी जैसे महर्षि ने स्वयं, अश्वपति की रानी मालती को उपदेश दिया था कि तुम सावित्री की आराधना करो । यदि स्त्रियों को वेदाधिकार नहीं होता तो वशिष्ठ जी उसे प्रोत्साहित नहीं करते किन्तु उसका विरोध ही करते और यदि राजभय से विरोध नहीं करते तो कम से कम तटस्थ अवश्य रहते । किन्तु इस उद्धरण से स्पष्ट हो जाता है कि स्त्रियों को गायत्री अधिकार सदा से है और वह श्रुति-स्मृति विहित है ।

(३) **साध्वी कन्याभि लाषञ्ज करोति तब कामिनी ।**
त्वं प्रार्थयसि पुत्रंच भविष्यति कर्मेण ते ॥

वेद जननी ने कहा, ''तेरी पत्नि कन्या चहाती है और तुम पुत्र चाहते हो । अभिलाषा तो दोनों की ही पूर्ण होगी पर क्रम से अर्थात् पहले तेरी स्त्री की अभिलाषा से कन्या रत्न की उत्पत्ति होगी ।''

यदि राजा और रानी की एक ही अभिलाषा होती तो यह निर्णय करना कठिन था कि सावित्री अधिक प्रसन्न किसी आराधना से हुई । अर्थात् पुरुष की आराधना से या स्त्री की आराधना से, किन्तु हमारा सौभाग्य है कि उनकी कामना भिन्न-भिन्न थी । जगज्जननी सावित्री ने पुरुष की अपेक्षा स्त्री अधिक श्रेष्ठ है इसका निर्णय स्पष्ट शब्दों में ही कर दिया कि पहले तुम्हारी स्त्री की अभिलाषा पूर्ण होगी । इससे यह सिद्ध होता है कि गायत्री पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों पर शीघ्र प्रसन्न होती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(४) "आराधनाच्च सावित्र्या बभूव कमलाकला।"

अर्थात् सावित्री की आराधना कभी भी निष्फला नहीं होती। अश्वपति दम्पति ने सुसंति की प्राप्ति के लिए आराधना की थी उनकी कामना को वेदमाता ने पूर्ण किया।

बान्ध्या को सन्तान मिली

श्री राधावल्लभ तिवारी, बहावलपुर लिखते हैं कि मेरा विवाह चौदह वर्ष की आयु में हुआ था। स्त्री सात महीने छोटी थी। इस विवाह को हुए १६ साल बीत गये हम लोगों की आयु तीस के करीब हो चली, पर कोई सन्तान न हुई। जनाने अस्पताल में दिखाया। डॉक्टरनियों ने गर्भाशय में गाँठ बताकर आपरेशन किया, जिससे प्रदर की नई शिकायत तो आरम्भ हो गई पर लाभ कुछ न हुआ। इससे पहले दाइयों से भी पेट की मालिश आदि कराई थी। मथुरा और इलाहाबाद से स्त्री रोगों के इलाज का बहुत विज्ञापन होता है, इन दोनों जगहों की स्त्री चिकित्सकों से भी कई-कई बार दवायें मँगाकर सेवन कराई पर लाभ कुछ न हुआ। तीस वर्ष पूरे हो जाने पर आशायें निराशा में बदलने लगीं।

स्त्री अपने को बाँझ कहलाने में अपने ऊपर कोई बड़ा पाप, कलंक या अपमान अनुभव करती थी। माता और पिता, नाती का मुँह देखने को तरसते थे। वंश डूबने की बात कहकर लोग मुझे भी चिन्तित करते थे। कई ओर से दूसरे विवाह के लिए प्रस्ताव आने लगे। माता जी इसके लिए बहुत ज़ोर देती थीं पिता जी भी सहमत थे। माताजी मेरी स्त्री पर मेरे पीछे-पीछे बहुत जोर डाल कर उसके द्वारा मुझसे यह कहलवाती थीं कि "मुझे भी कोई आपत्ति नहीं है। दूसरा विवाह कर लो।" परन्तु 'मैं अखण्ड-ज्योति' का पुराना ग्राहक हूँ। विचारशील मेरी प्रधान प्रवृत्ति रही है। वंश डूबने की बेहूदी बेवकूफी की व्यर्थता को मैं भली-भाँति जानता हूँ। देश की इतनी बढ़ी हुई जनसंख्या में सन्तान होना रोकने की आवश्यकता है न कि और बढ़ाने की, इस प्रत्यक्ष तथ्य को भी मैं भली प्रकार समझता हूँ। इसलिए जिस किसी ने भी मुझे दूसरी शादी की सलाह दी उसे ही मैंने बुरी तरह लताड़ा। मैंने उन्हें बताया कि दूसरी स्त्री से सन्तान हो भी जाय तो भी दो स्त्रियों के दुष्परिणाम की तुलना में वह सन्तान सुख अत्यन्त ही तुच्छ है।

इतने पर भी हममें से किसी को संतोष न था। बालक रहित घर सूना-सूना लगता है, जो आल्हाद, उल्लास और विनोद बाल बच्चों वाले घरों में होता था, वह हमारे यहाँ न था, यह कमी मुझे भी खटकती थी। पर किया क्या जाय कोई उपाय न था। सब कोई मन-मारकर चुप बैठे रहते।

आज से तीन वर्ष पूर्व पत्नी के गुरु हमारे यहाँ आये । बालकपन में ही उन्हें गुरु बनाया था । विवाह के बाद फिर कभी उनसे भेंट न हुई थी । इतने दिन बाद अचानक गुरु के आने से पत्नी को साथ ही हमें भी प्रसन्नता हुई। वे पुराने विचार के अच्छे विद्वान पंडित हैं। तीन-चार दिन उन्हें बड़े आग्रह और सत्कारपूर्वक ठहराया। उन्होंने हम लोगों की आवश्यकता को समझा और अपनी शिष्या को गायत्री मंत्र सिखाया तथा उसकी विधि बताई। गुरुवार का उपवास तथा और भी कई आचार-विचार उन्होंने बताये। वह उसी दिन से उन सब बातों को करने लगी।

गुरु के आदेशों के अनुसार साधन करते हुए पूरा एक वर्ष भी न हुआ था कि पत्नी को गर्भ स्थापित हुआ और समयानुसार एक अत्यन्त सुन्दर और स्वस्थ कन्या उत्पन्न हुई। इसका नाम 'गायत्री' रखा गया, क्योंकि हम सब लोगों का विश्वास है कि वह गायत्री माता की कृपा से ही प्राप्त हुई है। बालिका इतनी सुन्दर और चंचल है कि पड़ोसी और रिश्तेदार तक हैरत में हैं कि इस कुल में कभी भी कोई ऐसा बालक उत्पन्न नहीं हुआ। अब लगभग २ वर्ष की है। मुहल्ला भर उसे गोदी में उठाये फिरता है। एक की गोद में से दूसरे की गोद में दिन भर फिरती रहती है, रात को कहीं उसे घर पहुँचाया जाता है । संबके लिए वह एक खिलौना बनी हुई है।

सुसन्तति के लिए गायत्री साधन

श्री परमानन्द जी ढावर, पंढारी लिखते हैं कि स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन जिसका होगा उसमें सन्तानोत्पत्ति की स्वाभिक क्षमता होगी। शरीर या मन को रोगी होने के कारण ही सन्तानोपत्ति में बाधा पड़ती है। चाहे विशेष रूप से कोई विशेष बीमारी न मालूम पड़े पर उत्पादक अंगों में कोई सूक्ष्म खराबी ऐसी हो सकती है, जो प्रजनन शक्ति कुंठित कर दे। आमतौर पर सन्तान न होने का दोष स्त्रियों पर ही थोपा जाता है, पर अनेक बार स्वस्थ दिखने वाले पुरुषों के भी उत्पादक तत्व इतने दूषित होते हैं कि उनसे सन्तानोत्पत्ति नहीं हो सकती।

गायत्री परम सात्विक शक्ति है। उसकी स्थापना शरीर में होने से एक अदृश्य रीति से शरीर के सूक्ष्म

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अंगों की शुद्धि आरम्भ हो जाती है। अनेक बार मानसिक गड़बड़ी का शरीर के गुप्त संस्थानों से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है । मृगी रोग अक्सर गर्भाशय में उत्पन्न होने वाली दूषित वायु के कारण होता है। जैसे शरीर दोष का मस्तिष्क पर प्रभाव पड़ता है, वैसे ही मानसिक दोषों का प्रभाव शरीर पर पड़ता है, कई बार क्रोधी, लोभी, लम्पट, ईर्ष्यालु संशयी, स्वार्थी मनुष्यों के अन्तराल में ऐसी ग्रन्थियाँ उत्पन्न हो जाती हैं जो सन्तान के मार्ग में रोड़ा सिद्ध होती हैं।

सात्विकता का आह्वान करने से गुप्त मन और सूक्ष्म शरीर में छिपी हुई बीमारियाँ और खराबियाँ शुद्ध होती हैं। गायत्री का अवलम्बन लेने से भीतरी संस्थानों की सफाई आरम्भ हो जाती है और वे बाधाएँ हट जाती हैं जो सन्तानोत्पत्ति में बाधक होती हैं। प्राचीन साल में सन्तानहीनों को ऋषि लोग ऐसे ही उपाय बताते थे। राजा दलीप के सन्तान न होने पर अपनी धर्मपत्नी सहित वशिष्ठ जी के आश्रय में गौ-सेवा और आत्मिक साधना की थी। राजा दशरथ ने सन्तान के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ करके सन्तान पाई थी। इस प्रकार अगणित व्यक्तियों को आत्मिक उपायों से सन्तानें प्राप्त हुई हैं।

माता-पिता की गायत्री साधना का प्रभाव सन्तान पर अवश्य पड़ता है। अभिमन्यु ने माता के गर्भ में रहकर पिता से चक्रव्यूह विद्या सीख ली थी। इस प्रकार की न्यूनाधिक शक्ति सभी गर्भस्थ बालकों में होती है। गर्भावस्था के दिनों में यदि माता-पिता गायत्री उपासना किया करें तो उनकी सन्तान अवश्य ही स्वस्थ, सुन्दर, दीर्घजीवी और बुद्धिमान होगी।

हमारी कन्या छोटेपन से ही गायत्री उपासना करती है । उसको दोनों पुत्र चि. भगवती प्रसाद और चि. माताप्रसाद बड़े सौम्य प्रकृति के चतुर एवं सुन्दर शरीर के हैं । ऐसे अच्छे बालकों को पाकर सभी लोग बड़े प्रसन्न और सन्तुष्ट हैं। जन्म-पत्री बनाने वाले पंडित जी का कहना है कि दोनों ही बड़े भाग्यवान् तथा पुरुषार्थी होंगे।

कई बार पूर्व जन्मों के पापों के फलस्वरूप सन्तान नहीं होती। ऐसे पाप यदि साधारण हों तो उनका प्रायश्चित थोड़े से गायत्री तप द्वारा भी हो जाता है। यदि पाप ऐसे हों जो कई जन्म तक दुःख देने वाले हों तो एक जन्म की साधना से उन सबका प्रायश्चित हो जाता है और अगले जन्म के लिए इस प्रकार बाधायें शेष नहीं रहतीं।

इस युग में बढ़ी हुई जनसंख्या के कारण संसार में भारी सङ्कट आया हुआ है, इसलिये युग धर्म यह है कि सन्तान पैदा न की जाय या कम से कम हो। जिन्हें ईश्वर ने सन्तान नहीं दी है उन्हें आज के युग में अपने आपको परम सौभाग्यशाली समझना चाहिए और सन्तान के पालन-पोषण में जितना धन और समय लगाना पड़ता उतना स्वास्थ्य साधन, स्वाध्याय, पुण्य, परमार्थ, सेवा या आत्म-कल्याण में लगाना चाहिए जिससे अपना वास्तवित हित साधन हो। भगवान् जिस पर प्रसन्न होते हैं कई बार उन्हें भी सन्तानहीन रखते हैं ताकि अनेक झंझटों से बचते हुऐ अपने जीवन का निर्द्वन्द्व होकर सदुपयोग कर सकें।

फिर भी जिन्हें संतति सुख की अभिलाषा हो, अपने गर्भस्थ बच्चों को उत्तम बनाने की जो माता-पिता इच्छा रखते हों, उन्हें गायत्री की श्रद्धापूर्वक साधन करनी चाहिए, परिणाम अवश्य ही आशाजनक होगा।

महात्मा उड़िया बाबा

मैं आठ वर्ष का था तभी मुझे गायत्री मंत्र की दीक्षा दी गई थी। मैंने श्रद्धापूर्वक उसकी उपासना की और ईश्वर की ओर मेरी प्रवृत्ति बढ़ती गई।

मनुष्य शरीर में बुद्धि का प्रमुख स्थान है। गायत्री बुद्धि को पवित्र करती है। जब बुद्धि पवित्र हो गई तो सब कुछ पवित्र हो गया समझना चाहिए। जिसकी बुद्धि पवित्र है उसके लिए संसार में कुछ अप्राप्य नहीं है। गायत्री ब्राह्मणों का तो प्रधान आधार है।

अधूरी साधना में भी दिव्य अनुभव

पं. रूपलाल शर्मा विद्यारत्न, कानपुर, लिखते हैं कि एक समय था जब मेरे मन में गायत्री सिद्धि की बड़ी भारी अभिलाषा रहती थी । मैं पंडितों से पूछता तो कोई कहता कलियुग में गायत्री की सिद्धि होना बड़ा मुश्किल है । कोई कहता गायत्री को शाप लगा हुआ है, इससे वह निष्फल होती है। कोई कहता है सिद्धि करना हँसी खेल नहीं है, उल्टा परिणाम हुआ तो लेने के देने पड़ जायेंगे। इस प्रकार के निराशा उत्पन्न करने वाले आदेश सुनकर भी मेरा उत्साह ठण्डा नहीं हुआ। मैं गायत्री विज्ञान के अनुभवी गुरु की खोज में लगा ही रहा।

एक बार की अचानक भेंट में एक दक्षणात्य सज्जन सोमनाथ जी ने मुझे ग्वालियर में गायत्री विद्या के अनुभवी गुरु का पता बताया। मैं उनके पास

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ग्वालियर पहुँचा उन्होंने कृपापूर्वक अनुष्ठान की सारी विधि मुझे सविस्तार समझा दी और काशी जाकर साधना करने का आदेश किया।

नियत विधि-विधान के साथ मैंने काशी के मणिकर्णिका घाट पर अनुष्ठान आरम्भ कर दिया। ग्यारहवें दिन से ही मुझे दिव्य अनुभव होने लगे। स्वप्न में मुझे एक दिव्य मूर्ति देवी के दर्शन होते, वह मुझ से कुछ कहती, उसके होट हिलते, पर मेरी समझ में कुछ न आता। वह स्वप्न बार-बार दिखाई दिया। देवी की वाणी अधिक स्पष्ट होती जाती थी। ऐसा लगता था कि बहुत जल्दी मैं उस वाणी को समझ सकूँगा।

पच्चीसवें दिन मैं घाट पर बैठा जप कर रहा था कि अचानक सफेद गैस की तरह एक भारी प्रकाश चमका उससे मैं घबराकर हक्का-बक्का-सा रह गया। मेरी आँखें मुँद गई, अधिक न देख सका। उसी रात्रि को मैंने स्वप्न देखा कि एक शुभ्र वस्त्रधारी तेजवान् ब्राह्मण मुझसे कह रहा है कि "तुम अपने घर चले जाओ-वहाँ जरूरी काम है।" मेरी नींद खुल गई और स्वप्न के सम्बन्ध में सोचने लगा।

दूसरे दिन सबेरे ही मुझे तार मिला कि तुम्हारे पिता सख्त बीमार हैं घर चले आओ। मैं अनुष्ठान अधूरा छोड़कर घर चला गया। पीछे नई परिस्थितियां आईं, नई जिम्मेदारियों में फँसा. अनुष्ठान अधूरा का अधूरा रहा। सोचता हूँ कि उसे फिर आरम्भ करूँ। थोड़े ही दिन की साधना में मुझे जो दिव्य अनुभव आये उनके आधार पर मेरा विश्वास है कि पूरी साधना करने वालों को अवश्य ही आशाजनक लाभ होगा।

बिछुड़े हुए बालक का पुनर्मिलन

श्री जीवन लाल वर्मा, सरसई का कहना है यदि छोटे बालक, भावुक हृदय माता-पिता की आँखों के तारे होते हैं। जब पशु-पक्षी तक अपने बालकों को इतना प्यार करते हैं तो बुद्धिजीवी मनुष्यों में बढ़ी-चढ़ी ममता का होना स्वाभाविक ही है। विशेषतया जब कि कोई बालक अधिक सुन्दर, चंचल, बुद्धिमान और प्रेमी स्वभाव का होता है तब तो वह माता-पिता को ही नहीं पडोसियों तक के मन को हर लेता है।

अपने छोटे बालक मोहन में कुछ ऐसी विशेषताएँ थीं कि वह देखने वालों के भी मन में बस जाता था। घर के सब लोग उसे खिलौने की तरह लिए फिरते थे। उसके जीवन के तीन वर्ष घर भर के लिए बड़े ही प्रफुल्लता प्रदान करने वाले रहे।

ईश्वर की माया अपार है। तीन दिन के निमोनिया ने उसके प्राण ले लिए। बोलता हुआ तोता हाथों से उड़ गया। जिसने सुना कलेजा पकड़ कर रह गया। बच्चे की माता की दशा तो पागलों जैसी हो गई । पुत्र शोक में वह ऐसी बीमार पड़ी की कठिनाई से ही वह अच्छी हो सकी। इस बच्चे का सदमा इतना हुआ जितना किसी बड़ी आयु के कमाऊँ आदमी के उठ जाने का भी नहीं होता।

सब जानते हैं कि जो मर गया वह लौटता नहीं। फिर भी मन बड़ा कच्चा होता है, उसकी आत्मा से ही किसी प्रकार भेंट हो, उसका स्वप्न में ही साक्षात्कार हो, उसके सूक्ष्म शरीर की ही किसी प्रकार झाँकी हो सके, इस प्रकार के विचार मन में घूमने लगे, पर इसका उपाय मालूम न था। तलाश आरम्भ की इसी खोज के सिलसिले में अखण्ड ज्योति से प्रकाशित एक छोटी पुस्तक-मरने के पीछे क्या होता है, इस सम्बन्ध की मिली। उससे नई-नई बातें ज्ञात हुईं । कई शंकायें हुईं। उनके लिए अखण्ड-ज्योति से पत्र-व्यवहार हुआ, फिर मथुरा जाकर आचार्य जी के दर्शन का लाभ लिया।

स्वर्गीय बालक को किसी भी रूप में पाने के लिए हम तरसते थे। यह पता चल जाता कि वह किसी पशु-पक्षी में जन्मा है तो उसे लाने का जी-जान से प्रयत्न करते। इतनी प्रबल हमारी ममता थी। आचार्य जी ने शोक मुक्त होने का उपदेश दिया और कुछ साधन बताये कि यदि वह बालक अभी जन्म न ले चुका होगा तो पुनः आपके घर में लौट आवेगा। मैंने और पत्नी ने बड़े नियम संयम से ये साधन किये। दूसरे मास मेरी पत्नी ने देखा कि मेरा मोहन बाहर से खेलता हुआ आया है और गोदी में चढ़ गया है। पत्नी ने जैसे ही उसे छाती से चिपटाना चाहा कि वह पेट में समा गया। उस स्वप्न के साढ़ें नौ मास बाद दूसरा बालक जन्मा। यह बिल्कुल मोहन की आकृत्ति का हुआ । जैसे-जैसे उसकी आयु बढ़ी उसके गुण, स्वभाव, हाव-भाव सब मृत बालक के से ही विकसित होने लगे, अब वह ५ वर्ष का है, इसका नाम भी मोहन ही रखा है, क्योंकि हम सबका यह पूरा-पूरा विश्वास है कि मोहन की आत्मा ने ही दुबारा हमारे घर में फिर जन्म लिया है। जन्म भर तक दुःख देने वाले विरह बिछोह के कष्ट को हटाकर, खोई वस्तु को पुनः प्राप्त करा देने का श्रेय गायत्री माता ही है, अथवा उनको है जिन्होंने यह मार्ग हमें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिखाया । अन्धा जैसे अपनी नेत्र ज्योति को पाकर प्रसन्न होता है वैसे ही हम अपने स्वर्गीय बालक को नये शरीर में पाकर प्रसन्न हो रहे हैं।

कहते हैं कि जो जीव चला गया वह फिर लौट कर नहीं आता, जो शरीर नष्ट हो गया वह फिर पैदा नहीं होता, पर अपना बालक इसका अपवाद है उसके पुराने शरीर और जीव में कोई अन्तर नहीं दिखता।

गायत्री द्वारा सुसंति की प्राप्ति

पं. श्रीकृष्ण शुक्ल, देहली का कहना है कि गायत्री का आश्रय लेने से मनुष्य सब कुछ प्राप्त कर सकता है। कोई वस्तु ऐसी नहीं जिसे गायत्री साधक प्राप्त न कर सके। अनुभवी लोगों ने ऐसा ही कहा है। उसकी पुष्टि में अनेक प्रमाण उपलब्ध हैं। जिन्होंने श्रद्धा और विश्वासपूर्वक माता का अंचल पकड़ा है उन्हें कभी निराश नहीं होना पड़ा। वेद माता की कृपा से जब मनुष्य के अन्त:करण में सतोगुण का प्रकाश होता है तो शारीरिक बीमारियाँ तथा स्वभाव और विचारों की बुराइयाँ आप ही दूर हो जाती हैं। उन्नति और सुख-शान्ति के मार्ग में यह बुराइयाँ ही रोड़ा अटकाती हैं, जब माता की कृपा से उनका निवारण हो जाता है तो कोई भी अभाव या कष्ट या दु:ख शेष नहीं रह जाता। अपना मेरा निज का अनुभव बड़ा उत्साहवर्द्धक है।

कुछ वर्ष पूर्व मेरा स्वभाव बड़ा क्रोधी था। जरा-जरा सी बात पर लड़ बैठता था तथा मस्तिष्क में बुरे-बुरे विचार उठते रहते थे। चित्त में हर घड़ी अशान्ति और भ्रान्ति रहती थी, पर जब से गायत्री माता का पल्ला मैंने पकड़ा है, तब से दोष दुर्गुणों का सफाया हो गया। अब मुझमें पुराना एक भी अवगुण नहीं है। हर तरह से शान्ति अनुभव करता हूँ। कई वर्ष से मैंने नौकरी छोड़ दी है, फिर भी नौकरी की अपेक्षा कहीं अधिक घर बैठे अपने स्वतन्त्र व्यवसाय से कमा लेता हूँ।

मेरे एक मित्र को गायत्री महिमा का बड़ा ही आनन्ददायक चमत्कार मिला है, दिल्ली में ही नई सड़क पर पं. बुद्धू राम भट्ट की दुकान है। आपको ४५ वर्ष तक कोई सन्तान नहीं हुई। इससे पति-पत्नी दोनों ही दु:खी रहते थे, पर ईश्वर की इच्छा और भाग्य की प्रबलता समझ कर संतोष कर लेते थे। कुछ समय पूर्व उन्होंने गायत्री महिमा का परिचय प्राप्त किया और भक्तिपूर्वक माता की आराधना करने लगे। इस आराधना का लाभ यह हुआ कि अब उनके एक पुत्र हुआ है । निराशा के अन्धकार में आशा की यह एक नवीन किरण प्रकाशित हुई है। बच्चा बड़ा स्वस्थ, सुन्दर और होनहार है, उसमें दैवी गुण दिखाई पड़ते हैं। बच्चे का चित्र साथ में दिया जा रहा है।

ऐसी ही एक माता की कृपा इसी वर्ष वृन्दावन में हुई है । संयुक्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के गुरुकुल में रसायन विभाग के कार्यकर्त्ता पं. सुदामा जी एक सुयोग्य सज्जन हैं। चौदह वर्ष से आपके यहाँ कोई बालक नहीं जन्मा था। पंडित जी ने गायत्री का पुरश्चरण किया और अब इसी साल १४ वर्ष पश्चात् एक पुत्र का जन्म हुआ है। वंश चलने और घर के किवाड़ खुले रहने की चिन्ता थी, वह सहज ही दूर हो गई। पं. सुदामा जी का तब से गायत्री पर और भी विश्वास बढ़ गया है।

ऐसी घटनाएँ एक दो नहीं अनेकों हैं । जिनको कन्याएँ ही कन्याएँ होती हैं या कोई सन्तान नहीं है उन्हें मनोवांछित सन्तान मिलने की अनेक घटनाएँ अखंड ज्योति सम्पादक को मालूम है। पूर्व काल में पुत्रेष्ठि यज्ञ गायत्री मंत्र से ही होते थे। राजा दशरथ ने सन्तान के लिए जो पुत्रेष्टि यज्ञ कराया था वह गायत्री मंत्र से ही हुआ था। राजा दलीप ने गुरु वशिष्ठ के आश्रम में रहकर नंदनी गौ की सेवा और गायत्री की उपासना करके ही सन्तान पाई थी, कुन्ती ने कुमारी अवस्था में गायत्री मंत्र द्वारा सूर्य की तेज को धारण करके कर्ण को जन्म दिया था।

गायत्री अपने भक्तों की अनेक आवश्यकताओं को पूरा करती है। सन्तान सम्बन्धी बाधाओं को भी वह दूर करती है। कुपात्र, अवज्ञाकारी , दुर्गुणी, सन्तान के विचार और स्वभावों में परिवर्तन होकर उनके सौम्य बनने के चमत्कार भी माता की कृपा से अनेक बार होते हैं। कितने ही कुसंग में पड़े हुए, जिद्दी, चोर, दुराग्रही, अवज्ञाकारी, आलसी एवं मंद बुद्धि बालकों में आशाजनक परिवर्तन गायत्री की कृपा से होता देखा गया है।

जिन्हें सन्तान सम्बन्धी असन्तोष है, संतान नहीं होती होकर मर जाती है, कन्याएं ही होती हैं, बालक रोगी कमजोर और कुरूप होते हैं, वे गायत्री उपासना करके देखें, उन्हें मनोवांछित लाभ होगा। माता-पिता गायत्री का आश्रय लेकर इच्छानुकूल सन्तान उत्पन्न कर सकते हैं । ऐसे अनेक उदारहण अनेक बार देखे गये हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

साधना के प्रारम्भिक अनुभव

श्री गिरीशदेव वर्मा, बहरायच, लिखते हैं कि जब मैं पाँच वर्ष का था तभी पिता जी ने मुझे गायत्री शिक्षा देना आरम्भ कर दिया था। वे जब संध्या करते थे तो मुझे पास बिठा लेते थे। अयोध्या ले जाकर उन्होंने मुझे एक महात्मा से विधिवत् मंत्र भी दिलवाया था। वे सब बातें मुझे अब भी भली प्रकार याद हैं।

समय बीता, गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया, कुछ दिन यों ही बीत गये फिर दैवयोग से अपने ही एक ऐसे साथी का सत्सङ्ग प्राप्त हो गया जो गृहस्थ होते हुए भी महात्मा तथा योगी थे। चार साल उनके साथ रहा। उनके सत्सङ्ग से आध्यात्मिक प्रेम जागृत हुआ। स्वाध्याय और साधना में रुचि बढ़ी। समय के कुचक्र से हम दोनों विछुड़ गये उनकी बदली दूसरी जगह हो गयी, मेरी बदली दूसरी जगह।

परिस्थितियों के झंझावात ने जीवन नैया को बहुत थपेड़े दिये और अन्त में सबसे बड़ा धक्का पुत्र शोक का लगा। मेरा एक १८ वर्ष का पुत्र था जो बड़ा होनहार कुशाग्र बुद्धि का योगी था। वह यक्ष्मा का शिकार हो गया। ऐसे सुशील युवक पुत्र के चल बसने से मेरा मन शोकाकुल रहने लगा, चित्त में निशदिन अशान्ति रहने लगी।

उन्हीं दिनों हमारे नगर में एक तांत्रिक स्वामी जी आये, उनकी काफी ख्याति थी। उन्होंने मुझे गायत्री जप का उपदेश दिया। उन्हीं दिनों 'गायत्री महाविज्ञान' पुस्तक प्राप्त हुई। उसे पढ़ कर अन्धकार में विद्युत प्रकाश चमक उठा। तब से मैं श्रद्धा पूर्वक गायत्री उपासना कर रहा हूँ। 'अभियान' का प्राण यज्ञ विधि पूर्वक चल रहा है।

आन्तरिक शान्ति और सात्विकता एवं सद् बुद्धि के रूप में माता की कृपा का प्रत्यक्ष परिचय मुझे मिल रहा है। कई बार मुझे ऐसे अनुभव हुए जिनसे यह प्रगट होता है कि माता का मंगलमय हाथ मेरे मस्तक पर रखा हुआ है।

मेरे दफ्तर का एक कर्मचारी कुछ वर्षों से कागजों में गोल माल करके गबन करता रहा। उन्होंने दो महीने मेरे अधीन भी काम किया था। अन्त में वह पकड़ा गया और जिन-जिन लोगों के अधीन उसने काम किया था वे लोग भी अपराधी समझे जाने लगे, यद्यपि उस गबन से किसी अन्य का सम्बन्ध नहीं था। अनुष्ठान आरम्भ करने के बाद ऐसा सुनाई पड़ा कि मेरे ऊपर भी अभियोग चलेगा। चिन्ता बढ़ी किन्तु मैंने माता से ही अपना दुःख निवेदन किया।

एक दिन मैंने स्वप्न में देखा कि एक विशालकाय मनुष्य मेरी हत्या करने आ रहा है। उसके हाथ में एक छुरा भी है। उसने मेरा हाथ पकड़ लिया। मैं किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया। इतने में एक दिव्य रूप वाली देवी आई और उस मनुष्य को पटक कर पैर से दबा लिया, फिर मुझसे कहा निर्भय चले जाओ। अब यह कुछ नहीं कर सकता। इतने में आँख खुल गई। इस स्वप्न का मैंने यह अर्थ लगाया कि माता ने उस अभियोग से मेरी रक्षा कर दी है। चूंकि अभी मामला विचाराधीन था अतएव यह बात मैंने किसी से प्रकट नहीं की। कई महीने बाद जब यह निश्चय हो गया कि मेरे ऊपर अभियोग नहीं चलेगा, तब आज इस बात को लिख रहा हूँ कि इस घटना के बाद माता के प्रति मेरी श्रद्धा अति बढ़ गई। मेरा दृढ़ विश्वास हो गया कि स्वल्प श्रम में फलदायिनी साधना गायत्री से बढ़कर और कोई नहीं है।

अभी मेरी साधना का शैशव है। मगर मुझे इतने में ही अनेकों लाभ हुए हैं। मन की चंचलता कम होकर विषयों से अरुचि उत्पन्न हो रही है। दैनिक जीवन में आये दिन ऐसे अनुभव होते हैं कि अनेक बातें प्रतिकूल होते हुए भी अनुकूल हो जाती हैं। मुझे विश्वास है कि जैसे-जैसे मेरी श्रद्धा बढ़ेगी, वैसे-वैसे कल्याण का मार्ग अधिक प्रशस्त होता जायेगा।

साधना के पथ पर

पं. राधेमोहन मिश्र, वैद्य बहरायच, लिखते हैं कि मेरी प्रकृति अपनी बाल्यावस्था से ही आध्यात्मवाद की ओर रही । मुझे ऐसे मित्र तथा मार्ग-प्रदर्शक मिलते गये जिनसे और सहायता मिलती गयी। घर में अपने वयोवृद्धों को गुरु मंत्र जपते देखा करता, जब मेरा यज्ञोपवीत संस्कार हुआ, मुझे गायत्री मंत्र दिया गया, मैं उसे अपना गुरुमन्त्र जानकर यदा-कदा जपा करता, जब कभी रात्रि में कहीं जाना पड़ता अथवा संङ्कट में पड़ जाता तो भय की अवस्था में गायत्री मंत्र की शरण में पड़ जाने से मुझे एक शक्ति अनुभव होती और भय दूर हो जाता था। धीरे-धीरे इस मन्त्र पर दृढ़ विश्वास होने लगा।

मैं एक साधारण मनुष्य हूँ, इस मन्त्र के जप के प्रभाव से और गुरुदेव के आशीर्वाद से इस संकट काल एवं चरमसीमा पर पहुँची हुई महँगाई के समय में न जाने कहाँ से व्यय पूरा हो रहा है, मुझे स्वयं आश्चर्य होता है। दो बार जप करने के लिए माला उठाते ही उसे बिखरा हुआ पाया। यह मेरे लिये खतरे की घण्टी

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

थी। मैं दो बार कठिन रोग से पीड़ित हुआ। मुझे अपनी बीमारी में जरा भी भय मालूम नहीं हुआ और आन्तरिक स्फूर्ति का अनुभव होता था। मैं मन में ही गायत्री मंत्र का जप करता । धीरे-धीरे रोग से छुटकारा मिल गया। अब तो श्री आचार्य जी द्वारा खोज पूर्ण लिखित गायत्री महाविज्ञान नामक पुस्तक के आधार पर गायत्री साधना कर रहा हूँ इसके द्वारा मुझे पूर्ण सहायता मिल रही है। मेरे एक मित्र का गायत्री मन्त्र के सवा लक्ष के अनुष्ठान से पुत्र रत्न का लाभ हुआ एक-दूसरे मित्र ने गायत्री माता की शरण में जाने से मृत्यु के मुख से अपने पुत्र को बचा लिया।

गायत्री ब्राह्मण का आवश्यक धर्म कर्त्तव्य है। शास्त्रकारों का कथन है कि गायत्री हीन द्विज, अपने धर्म से पतित और पशु तुल्य हो जाता है। मैं उस कलंक से बचने और अपने धर्म-कर्त्तव्य का पालन करने के लिए गायत्री साधना के लिए सदैव सजग रहता हूँ, इससे जो धर्म लाभ होता है उसे आत्म-शान्ति के रूप में सदैव प्रत्यक्ष अनुभव करता हूँ। सात्विक वृत्ति का होना माता की महान् कृपा ही है।

असाध्य बीमारियों से छुटकारा

ठा. रामकरणसिंह वैद्य, जफरापुरा, लिखते हैं कि कुछ वर्ष पूर्व मेरी स्त्री को संग्रहणी रोग हुआ था, बहुत चिकित्सा की पर कुछ लाभ न हुआ। दो वर्ष इस रोग से ग्रसित रहने के कारण उसका शरीर अस्थि पंजर हो गया था और अच्छा होने की आशा घटती जा रही है। उसका यह हाल देखकर हम सभी को बड़ा दुःख रहता था। उसी साल अखण्ड ज्योति का गायत्री अङ्क छपा था। मैंने गायत्री मंत्र की महिमा पढ़ी और बताई हुई विधि से सवा लक्ष का अनुष्ठान किया। हवन तथा ब्राह्मण भोजन के साथ जप समाप्त किया। उसी दिन से स्त्री की बीमारी घटनी आरम्भ हो गई। जो कार्य दो वर्ष की कीमती चिकित्सा न कर सकी थी वह गायत्री की कृपा से कुछ दिनों में ही पूरी हो गयी।

स्त्री का जर्जर शरीर फिर अच्छी स्थिति में आने लगा। मैंने उत्साहपूर्वक माता की आराधना जारी रखी। ईश्वर की कृपा से एक पुत्र भी उत्पन्न हुआ जो स्वास्थ्य की दृष्टि से अपनी माता से अच्छा है। यह सब भगवती की ही कृपा है।

अप्रैल सन् ५० की बात है। मैं अपनी सुसराल जा रहा था तो रास्ते में बैनीपुर गाँव में एक ऐसी रोगिणी थी जिसे पन्द्रह वर्ष से रक्त प्रदर का स्राव होता था। बीस दिन अधिक रक्त जाता था, दस दिन कुछ कम हो जाता था। उसका शरीर अत्यन्त कृश हो रहा था। न जाने उसे ईश्वर ने कैसे जीवन दान दे रखा था, सदा चारपाई पर ही पड़ी रहती थी। मुझे वह रोगिणी दिखाई गई। मैंने उसके घर वालों को सलाह दी कि गायत्री का अनुष्ठान कराओं। उसके घर वालों ने मेरी सलाह मानकर वैसा ही किया।

संयोगवश मैं २८ मई, ५१ को सुसराल जाते समय बैनीपुर उस रोगिणी के घर फिर गया। देखा कि वह घर का काम-धन्धा कर रही थी, स्वस्थ थी और उसे गर्भ था। दो चार महीने में बालक उत्पन्न होने वाला है। जैसे ही मैं उनके यहाँ गया वह स्त्री मेरे पैर छूने दौड़ी। मैंने उसे रोककर कहा आप ब्राह्मण हैं, मैं क्षत्रिय हूँ। ऐसा अनुचित कार्य न करें। आप हमारी पूज्य हैं। उन लोगों ने बताया, कि आपके कथनानुसार हमने गायत्री का अनुष्ठान कराया था तभी से यह अच्छी होने लगी थी।

मेरा गायत्री पर भारी विश्वास है। जो रोगी मेरी चिकित्सा में आते हैं उन्हें मैं गायत्री का जप भी औषधि अनुपान की तरह बताता हूँ।

शत्रुओं का षड़यंत्र विफल

श्री गोकुलचन्द सक्सेना, खड़गपुर, लिखते हैं कि हमारे लोको दफ्तर के हैडक्लर्क और सुपरिटेण्डेण्ट से एक बार मेरी गरमा-गरम बहस हो गई। आपस में अशिष्ठ और अवांछनीय शब्दों का भी प्रयोग हो गया। उस समय तो दूसरे लोगों ने बीच-बचाव करा दिया और मामले को ऊपर जाने से रोक दिया पर मनों में काफी मन-मुटाव जम गया। मैंने अपनी ओर से उस कटु घटना की स्मृति को मन में से निकाल दिया था, पर वे लोग मन के बहुत मैले निकले। उन्होंने मेरे लिये स्थायी द्वेष धारण कर लिया और जब भी मौका मिलता मुझे नीचा दिखाने और नुकसान पहुँचाने की पूरी-पूरी कोशिश करते रहे। उच्च अधिकारियों के पास मेरी शिकायतों की एक बड़ी फाइल बन गई थी। कई बार मुझसे जवाब तलब हो चुके थे, चेतावनियाँ मिल चुकीं थीं। जुर्माना तनज्जुली या बदली की आशङ्का थी। नौकरी छूट जाने के भय से मैं सदा चिन्तातुर बना रहता था। ११५ रु. मासिक मिलते थे। यह नौकरी छूटने पर इसकी आधी तनुख्वाह पर भी कोई काम करने की आशा न थी। वृद्धा माता, पत्नी तथा बच्चे सभी को इस परिस्थिति ने चिन्ता में डाल रखा था, मेरा शरीर दिन पर दिन दुबला होने लगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

इसी बीच मेरे श्वसुर का आना हुआ, उन्होंने बताया कि सङ्कट और चिन्ता की परिस्थिति उत्पन्न होने पर गायत्री का आश्रय लेना अमोघ उपाय है। वे स्वयं कई बार इसका स्वयं अनुभव कर चुके थे, उन्होंने वे सब घटनाएँ सुनाईं जिनमें गायत्री की कृपा से बड़ी-बड़ी विपत्तियों से पार हुए थे। इससे मेरी श्रद्धा बढ़ी और दूसरे ही दिन से उनके बताये हुए उपाय द्वारा गायत्री उपासना करने लगा।

जप करते हुऐ एक महीना बीत गया। दफ्तर में मालूम हुआ कि हमारे महकमें के सबसे बड़े अफसर दौरे पर आ रहे हैं। विरोधी लोगों ने मेरे विरुद्ध पूरा षड़यंत्र बना रखा था, मुझे बरखास्त करा देने के लिए उन्होंने पूरी तैयारी कर ली थी। ऐसा मालूम होता था कि इस संकट से बचना मुश्किल है।

नियत तारीख पर साहब का दौरा हुआ। दफ्तर के सभी प्रमुख कर्मचारियों ने मेरे विरुद्ध शिकायतों की एक बहुत बड़ी सूची पेश की, साथ ही सबूतों का एक बहुत बड़ा पुलन्दा भी। साहब ने उन कागजातों को अपने पास रख लिया और आदमी भेजकर मुझे अपनी कोठी पर शाम को ६ बजे मिलने के लिए बुलाया। मैं गया और आदि से अन्त तक सारा ब्यौरा एक-एक शब्द की सच्चाई के साथ कह दिया। जो मुझसे भूलें हुई थीं वे भी बिना लाग-लपेट के एक-एक शब्द सच कह दीं। इस बात का जरा भी ध्यान न रखा कि अपनी ग़लतियाँ स्वयं मान लेने से नालायक करार दिया जा सकता हूँ और मुझे सजा मिल सकती है। आदि से अन्त तक सारी बात सुन लेने पर साहब मेरी सच्चाई पर बड़े प्रसन्न हुए और विरोधियों के षड़यन्त्रों पर उन्हें बहुत क्रोध आया। वे दौरा पूरा करके वापस चले गये।

कुछ दिन बाद उन्होंने फैसला भेजा। मेरे विरुद्ध षड़यन्त्र करने वाले सभी अग्रणी लोगों का तवादिला कर दिया गया। मुझे भी उस स्थान से बदला गया पर मेरी बदली तरक्की तथा सुविधा की जगह हो गई। साहब मुझ पर अत्यन्त प्रसन्न थे। उनसे मिलने मैं साल में एक दो बार अवश्य जाता रहता था, उनके जमान में मेरी काफी तरक्की हुई। २०० रु. जगह पर पहुँच गया। विरोधी मुझसे सदा जलते रहे, पर मेरा कुछ बिगाड़ न सके। यह गायत्री माता का ही प्रताप है। हमारा पूरा परिवार गायत्री का भक्त है और हमारे अनेक मित्र, परिचित एवं रिश्तेदार भी गायत्री की नियमित उपासना करते हैं।

गायब लड़के का लौटना

श्री विनोद बिहारी गर्ग, विशनगढ़, का कहना है कि आजकल शहरों में बच्चों की सुरक्षा भी एक पेचीदा समस्या है। लड़के स्कूल में पढ़ने जाते हैं, वहाँ कोई जन्मजात दुष्ट प्रकृति के ऐसे लड़के मिल जाते हैं जो अपनी बदमाशी का प्रभाव दूसरों पर भी डालते हैं। छुट्टी के समय यह बुरे लड़के भोले-भाले लड़कों से दोस्ती गाँठते हैं और उन्हें अपनी बुराइयाँ सिखा देते हैं। इस प्रकार चोर और आवारागर्दी लड़कों का एक अच्छा खासा गिरोह बन जाता है। यह लड़के घर से पैसे तथा वस्तुएँ चुराते हैं और फिर उनसे आवारगर्दी करते हैं।

हमारा लड़का सुरेश दस वर्ष की आयु तक बड़ा सुशील और आज्ञाकारी था, उसमें सभी सुसंस्कार थे, जहाँ भी जाता वहीं उसकी प्रशंसा होती थी, यह आशा की जाती थी कि बड़ा होकर यह बड़ा सभ्य एवं सुसंस्कृत बनेगा, उसकी आदतें उच्च कुल के बालकों जैसी थीं।

कुसंग ने हमारे अच्छे लड़के का नाश कर दिया। बुरे लड़कों की चांडाल चौकड़ी में पहले घुमक्कड़ बना, स्कूल की छुट्टी हो जाने के बाद बहुत समय इधर-उधर बिताकर तब घर आता। घर से स्कूल का बहाना करके जाता और रास्ते में ही रुक जाता । इस प्रकार कई कई दिन की उसकी गैर हाजिरी मिलती पैसे चुराना ही नहीं, घर के जेवर बर्तन कपड़े चुराना भी उसने आरम्भ कर दिया।

पहले तो कुछ दिन उसकी यह आदतें घर वालों की नजर में न आईं, जब थोड़ी-थोड़ी देखभाल हुई तो उन पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया पर जब उसकी आदतें बहुत खराब हो गईं तो आँखें खुल गईं और इस पर कड़ाई की जाने लगी। मारपीट, धमकाना, समझाना, नाराजगी सभी उपाय काम में लाये गये, पर सुधार होना तो दूर वह उल्टी नई-नई शरारतों पर उतर आया, अब वह १४ वर्ष का हो गया था, ४ वर्ष में उसने बुरी आदतें अच्छी तरह सीख लीं और वह भी आवारा लड़कों में प्रमुख बन गया। मुहल्ला पडोस की शिकायतें उसके सम्बन्ध में आने लगीं, वह दूसरों के लड़कों को भी बिगाड़ता था। हम लोगों का मस्तक शर्म से नीचा हो जाता, मन में बड़ी कुढ़न रहती, पर कुछ वश न चलता।

एक दिन वह अपनी माँ के वक्स में से १५४ रु. नगद तथा कुछ जेवर लेकर भाग गया। एक दो दिन तो

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऐसा ख्याल रहा कि कहीं घूमता होगा, रूपये खराब करके वापस आ जायगा, पर जब सात महीने हो गये और वह न आया तो चिन्ता होने लगी। हिन्दू मुस्लिम दंगों का जमाना था, जान न गँवा बैठा हो । १४ वर्ष की छोटी आयु, अनुभवहीन, आवारा लड़का सहज ही किसी मुसीबत में फँस सकता है ।

इसकी माता को बड़ी बेचैनी रहती, रात-रात भर रोया करती, घर में सबसे अधिक दुःख उसी को था । बच्चे को वापस पाने के लिए दूर-दूर तक तलाश की, अखबारों में विज्ञापन छपवाये । सिनेमा में स्लाइड दिखाये पर कहीं कुछ पता न लगा ।

एक मित्र के घर पर एक विद्वान सज्जन पधारे हुए थे, मैं भी कारणवश वहाँ गया हुआ था, वे सज्जन गायत्री मन्त्र की कुछ चर्चा कर रहे थे । उत्सुकतावश मैंने भी अपने लड़के के चले जाने का हाल उन्हें बताते हुए पूछा कि क्या गायत्री मन्त्र से मेरे लड़के की वापसी के सम्बन्ध में कुछ सहायता मिल सकती है । उन्होंने मुझे गायत्री मन्त्र तथा उसका विधान बताते हुए कहा कि आप इसकी साधना कीजिए आपको सत्परिणाम मिलेगा ।

दूसरे दिन से ही मैंने जब और ध्यान आरम्भ कर दिया । मन ही मन कुछ ऐसा आभास होता था कि उस साधना से बच्चा अवश्य लौट आवेगा । २१वें दिन देखा तो लड़का अपने आप घर आ गया । उसका बुरा हाल हो रहा था । घर आते ही फूट-फूट कर रोने लगा । हम लोगों की भी छाती भर आई और उसे सांत्वना देते हुए कहा—जो हो गया उसकी चिन्ता न करो अब भले लड़कों की तरह घर रहो । लड़का परदेश की अनेक ठोकरें खाकर अक्ल सीख आया था, तब से वह अच्छे आचरण से रहने लगा और सब बुरी आदतें छोड़ दीं ।

सुरेश ने बताया कि मैं अपने साथियों सहित कई शहरों में घूमता रहा । कहीं मजूरी, कहीं चोरी, कहीं खामना आदि करके पेट भरता रहा । जिस दिन यहाँ आया हूँ उससे १५ दिन पहले हर रात में एक भयंकर स्त्री स्वप्न में दिखाई पड़ती थी और पीठ में चाबुक जमाती हुई कहती थी कि सीधे घर चलो, नहीं तो तुम्हारी खैर नहीं । कई रात को मुझे बड़ा डर लगा और बैठकर जागते हुए समय निकालना पड़ा, रोज के ऐसे भयंकर दृश्यों से भयभीत होकर मैं घर वापस आया हूँ ।

बच्चे को स्वप्न में त्रास देकर उसे घर लाने वाली शक्ति कौन थी ? इस पर अधिक विचार करने की आवश्यकता नहीं, निश्चय ही वह गायत्री माता थी । उसने न केवल बालक को घर ही ला पटका वरन् उसकी बुद्धि भी सुधार दी । सुरेश की माता उसी दिन से श्रद्धापूर्वक गायत्री जप करती है । मैं भी थोड़ा बहुत कर ही लेता हूँ ।

आश्चर्यजनक अनुभव

चौधरी अमरसिंह जी, इन्दौरा लिखते हैं कि अन्य साधनाओं की अपेक्षा मैं गायत्री मंत्र को इस वास्ते महत्त्व देता हूँ कि जब मैं इस साधन के पूर्व अन्य प्रणालियों से साधना करता रहा तो किसी भी सिद्धि की प्राप्ति मुझे इतनी मात्रा में नहीं हुई जितनी कि इसके साधन से थोड़े काल में हुई जिनका वर्णन संक्षेप से नीचे दिया जा रहा है ।

मुझे कई बार इसके साधन से बिना इच्छा किये अद्भुत लाभ प्राप्त हुए हैं । उनमें से थोड़े से का वर्णन इस प्रकार का है । (क) कई बार आप या अन्य किसी प्रिय व्यक्ति के रोग ग्रसित होने के मन में ज्ञान प्राप्त हुआ कि इस रोग को अमुक उपचार किया जावे तो लाभ होगा अन्यथा अमुक प्रकार की व्याधि उत्पन्न होगी । इन संकेतों से तदनुसार ही फल मिला । (ख) तीन वर्ष पूर्व मैं एक ऐसे कार्य में प्रवृत्त हुआ था जो कि मेरी बुद्धि, शक्ति पराक्रम से बाहर था । उस कार्य में जहाँ त्रुटि होती तो स्वयं एक अव्यक्त शक्ति साथ ही साथ बताती जाती कि यहाँ यह त्रुटि हुई है सुधार लो, तो उसी त्रुटि को अन्य प्रकार से जाँच करने पर वह त्रुटि विदित हो जाती व सुधार ली जाती। इस प्रकार वह कर्या भी आलौकिक रीति से पूर्ण हो गया । (ग) सन् १९५० ई. में गर्मी के दिनों में मैं एक ग्राम में था कि पास ही छोटे-छोटे बच्चे व मेरी एक कन्या एक फूस के मकान में खेल रहे थे कि एक छोटे से बच्चे ने वहाँ आग लगा दी । आग लगने से दस मिनट पूर्व किसी अज्ञान शक्ति ने मुझे स्पष्ट शब्दों में बताया कि मकान से बाहर निकलो—बाहर निकल कर मैं एक पानी के नल के नीचे नहाने लगा कि इतने में आग लग गई । परन्तु मैंने तुरन्त लोग इकट्ठे किये व अधिक हानि नहीं हुई । इन बातों का प्रमाण है कि यह सब गायत्री के प्रभाव से हुआ है । माता गायत्री मेरे साथ माता का-सा बर्ताव कर रही है ।

मेरे ग्राम से १५ मील दूर पर कुछ समय एक साधु रहते थे जो कि गायत्री की साधना में सिद्ध थे । वह कई बार आश्चर्यजनक कार्य लोक समूह के सामने भी करके दिखा देते थे । जैसे खाली बोतल को झट

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

किसी द्रव्य से भर कर दिखा देना व लोगों को वह द्रव्य पिला भी देना ।

श्री विद्याचरण ऋषि के प्रार्थना करने पर गायत्री देवी ने सोने की वर्षा दक्षिण देश में की है (देखिये जपयोग—पृष्ठ ६५ श्री स्वामी शिवानन्द ऋषिकेश द्वारा प्रकाशित) श्री मधुसूदन स्वामी ने १७ बार पुरश्चरण किया, क्योंकि उसने पूर्व जन्म में १७ ब्राह्मणों की हत्या की हुई थी, उसे कोई सिद्धि प्राप्त न हुई । अठारहवाँ पुरश्चरण करते ही उसे भगवान् के दर्शन हुए (देखिये उपरोक्त जपयोग पृष्ठ ६६) प्रायः आजकल के साधक जहाँ भजन करके हटते हैं तो तुरन्त झूठ बोलना इत्यादिक कुकर्मों को करने लग पड़ते हैं । उन्हें सिद्धि मिले तो कहाँ से और कैसे मिले ?

गायत्री का जादू

श्रीमती चन्द्रकान्ता जेरथ बी. ए., दिल्ली लिखतीं हैं कि मुझे बचपन से ही गायत्री मन्त्र सिखाया गया था सो स्नान के बाद इसका १०८ बार उच्चारण करने का स्वभाव हो गया था । पिता जी से सत्यवादी होना तो सीखा हुआ था और फिर बापू की आत्म-कथा से सर्व प्रेम करना व निर्दोषी होना सीखा, क्यूरों और नैन्हम की पामिस्टरी पढ़ कर हस्तरेखा का कुछ ज्ञान हासिल किया तो पता लगा कि मनुष्य अपने आप को बहुत कुछ हाथ देखकर अपनी भूलों का सुधार कर सकता है फिर हस्तरेखा को बदल सकता है । पता चला कि कुछ आत्म-विश्वास कम है, तो दृढ़ निश्चय किया कि यह भी हासिल करना है । गायत्री मन्त्र, गायत्री 'देवी' को सूर्य में ध्यान करके पढ़ती थी । एक-एक शब्द का अर्थ मन में समझ कर करती और प्रार्थना सदा ही रहती कि "विद्या, बुद्धि, भक्ति दो जिससे देश सेवा, लोगों की भलाई, स्वार्थ रहित होकर करूँ" । मन्त्रोचारण भी करती पर प्रार्थना मुँह से यही निकलती।

ऐसा एक साल किया होगा कि वाकई हस्तरेखाएँ बहुत कुछ बदल गईं । मेरा स्वभाव, प्रकृति, रहन-सहन सब बदल गया । हाँ मैं प्राणायाम भी करती थी, प्राणायाम एक दूसरा जादू है—पर गायत्री ने अपना रंग अकेले ही काफी दिया । वह यों—

मेरी माताजी बड़ी सख्त बीमार पड़ीं । माताजी की टाँगें, पाँव बहुत सूजे हुए थे, बहुत दर्द होता था । उनके दर्द के कारण चिल्लाने की आवाज दूर दूर तक जाती । हम सब बहिनों ने तीन-तीन घंटे की ड्यूटी लगाई हुई थी । मैंने रात की ले रखी थी पर चित्त न मानता चौबीस घंटे ही उनके पास व्यतीत करती । जब उन्हें दर्द होता वह मुझे ही बुलाती । मैं उनके पाँव को हाथों से पकड़ कर आँखें बन्द कर 'गायत्री' का जप शुरू कर देती । उनका दर्द जादू की तरह शान्त हो जाता । सो फिर तो जब मैं कभी सोई हुई भी होती तो माताजी यही कहतीं कि कान्ती को बुलाओ मैं फिर वैसे ही करती और वह शान्त हो जातीं ।

उसके बाद मेरे छोटे पाँच वर्ष के भाई की पीठ और टाँग में जहरीला फोड़ा निकलने से ऑपरेशन हुआ, दर्द होता । घाव में जब-जब दर्द अधिक उठता कहता मन्त्र पढ़ो और मेरे मन्त्र पढ़ने के बाद ही शान्त होकर सो जाता, मुझे भी उसके शान्त होने पर अपार आनन्द मिलता । फिर तो जिस किसी के भी दर्द होता, वही कहता मन्त्र पढ़ दो । पिता जी हैरान हुए—पूछने लगे कौन-सा मन्त्र पढ़ती हो । पहले तो मैंने नहीं बतलाया क्योंकि सुन रखा था कि बताने से मन्त्र की शक्ति कम हो जाती है । पर फिर पिताजी से तो मैं सदा ही जैसा कि उन्होंने सिखाया था मित्र का-सा सम्बन्ध रखती । सो मैंने बताया यदि हम ध्यान से प्रेम से इस मन्त्र को पढ़े तो वाकई जादू ही है ।

उन दिनों तब तो मेरी इतनी आदत हो गई थी कि सोते भी यह मन्त्र मुँह में रहता, काम करते-करते भी गायत्री मन्त्र मुँह में रहता । मुझे पता भी न होता और गायत्री मन्त्र का उच्चारण होता रहता सो 'गायत्री' ने 'जादू' का ही असर दिखाया ।

डॉक्टरी बिलों से छुटकारा

पं. राधेश्याम शर्मा पोस्ट मास्टर दीक्षितपुरा लिखते हैं कि जब से मैंने गायत्री माता की शरण ली, तब से मेरा जीवन उत्तरोत्तर उन्नतशील दृष्टिगोचर होता है । पहले की अपेक्षा मुझे अपने स्वभाव में पर्याप्त परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है । क्रोध व मिथ्या भाषण से घृणा हो गई है । मेरा स्वतः का मन बुरे विचारों की ओर तनिक नहीं जाता । आशाजनक परिवर्तन हो गया है ।

मेरा अटल विश्वास है कि वेदमाता की शरण लेने वाला दुःखी नहीं रह सकता । मनः शान्ति व ईश्वर प्राप्ति का सुगम मार्ग वेदमाता की शरण है । जो वेदमाता का आसरा रखे उसको ईश्वर प्राप्ति होती है, यह निश्चित है । जीवन का महान् उद्देश्य ईश्वर-प्राप्ति माता की शरण से भली-भाँति पूर्ण हो सकता है। प्रधान उद्देश्य के अतिरिक्त अन्य सङ्कट भी माता की कृपा से दूर होते हैं । मेरी अवस्था २७ वर्ष की है

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इतनी छोटी अवस्था में इतना प्रत्यक्ष मेरा अनुभव है कि जब से मैंने गायत्री साधना की, लाभ के अतिरिक्त हानि नहीं हुई ।

जब से मैंने गायत्री माता की शरण ली, तब से डाक्टर वैद्य के लिए मुझे एक पाई औषधोपचार के लिए नहीं खर्चना पड़ी । मामूली स्वास्थ्य जब बिगड़ा तो अपने आप ठीक हुआ । इसके पूर्व डॉक्टरों के बिल इतने देने पड़ते थे कि कभी तो वेतन का चतुर्थांश उनको अर्पण करना पड़ता था व कभी-कभी तो अर्द्ध वेतन तक की बाजी लग जाती थी । यही हाल मेरी पत्नी का था । एक अनुष्ठान सवा लक्ष का उन्होंने भी ज्योंही किया त्योंही आरम्भ करते ही बीमारियाँ रफू होने लगीं और अनुष्ठान पूर्ण होते सब रोगों से मुक्ति मिल गई और तब से वे भी पूर्ण रीति से आरोग्य हैं । कभी-कभी अस्वस्थता हो भी तो अपने आप ठीक होती है । डाक्टरों की आवश्यकता नहीं पड़ी । मेरा काल तक एक समय टल गया । मैं फाल्गुन शुक्ल पूर्णमा के रोज रात्रि को २ बजे के करीब जब होलिका दहन हुआ तब अकेला नंगे पैर आ रहा था। उस समय मानसिक जप महामन्त्र का कर रहा था । एक काला सर्प ढाई हाथ लम्बा मेरे दोनों पैरों के बीच से निकल गया । मैं खड़ा रहा व जप मानसिक चालू रखा व सर्प जब पूरा निकल गया, तब वहाँ से भगवती को प्रणाम करके आगे घर की ओर बढ़ा । मुझे मृत्यु के मुख से भगवती ने बचाया । माता मेरी क्षण-क्षण में रक्षा करती है । उपर्युक्त उदाहरण तो उदाहरण मात्र है । कितनी बार सहायता मिली । इसका वर्णन करने में असमर्थ हूँ । अनेको कठिनाइयों के समय दयामयी माता ने मेरी सहायता की है ।

''गायत्री ने बहुतों को सुमार्ग पर चलाया है । कुमार्गगामी पुरुष की पहले तो गायत्री की ओर रुचि ही नहीं होती । यदि ईश्वर कृपा से हो जाय तो वह कुमार्गगामी नहीं रहता । गायत्री जिसके हृदय में वास करती है उसका मन ईश्वर की ओर जाता है । विषय विकारों की व्यर्थता उसे भली प्रकार अनुभव होने लगती है ।

कई महात्मा गायत्री का जप करके परम सिद्ध हुए हैं । परमात्मा की शक्ति ही गायत्री है । जो गायत्री के निकट जाता है । वह शुद्ध होकर रहता है । आत्म-कल्याण के लिए मन की शुद्धि आवश्यक है । मन की शुद्धि के लिए गायत्री मन्त्र अद्‌भुत है । ईश्वर प्राप्ति के लिए गायत्री जप को प्रथम सीढ़ी समझना चाहिए ।''

गायत्री द्वारा प्राण रक्षा

पं. प्रभुदयाल शर्मा, संपादक 'सनाढ्य-जीवन', लिखते हैं कि (१) मेरे बड़े पुत्र की स्त्री को कई वर्ष तक एक प्रेतात्मा लग गई थी। उससे उसे बड़ा कष्ट होता था। बार-बार बेहोश हो जाती थी। उसे कभी प्रतीत होता था कि कोई उसका हाथ तोड़े डालता है, कभी मस्तक पर हथौड़े की चोटें मारता है। कभी हाथ पैरों को जलाये देता है। उसी प्रकार के कष्ट, मस्तक के दर्द आदि की पीड़ा उसके बालकों को भी होती थी। हम इससे बहुत दुःखी थे। झाड़ फूँक दवा-दारू के बहुत प्रयत्न किये पर कोई लाभ न हुआ।

अन्त में गायत्री का आश्रय लिया गया। गायत्री से अभिमंत्रित जल उन्हें पिलाया जाता, उसी से उनका मार्जन किया जाता । इस उपचार से उस दुःखदायी व्यथा से छुटकारा मिला।

(२) मेरे ताऊजी जो एक प्रसिद्ध वैद्य थे। वे एक बार दाकापुर (पटना) गये हुए थे। स्नान करने के अनन्तर वे गायत्री का जप नित्य करते थे। वहाँ वे जप कर ही रहे थे कि उनके कान में एक दम शब्द हुआ कि 'जल्दी निकल! मकान गिरता है।' एक बार सुनकर भी वे पूजा में व्यस्त रहे, किन्तु फिर वही शब्द और भी जोर से हुआ। वे पास की किड़की से कूदकर भागे, मुश्किल से कुछ कदम ही गये होंगे कि मकान गिर पड़ा। वे बाल-बाल बच गये।

(३) एक बार हमारे चचेरे भाई का पुत्र बहुत बीमार था। बीमारी काबू से बाहर थी, सब प्रकार जब निराशा दिखने लगी तो बालक की माता, दादी आदि घर के लोग उसकी मृत्यु की आशंका से बुरी तरह रोने लगे। इतने में ताऊजी आ गये। उन्होंने मृत्यु के मुख में अटके हुए बालक को गोदी में लिया और उसे लेकर एक घंटे तक आँगन में चक्कर लगाते रहे तथा गायत्री जप करते रहे। बालक पूर्ण स्वस्थ हो गया और आज वह ५१ वर्ष का है।

मृतक को जीवन दिया

पं. बालाचरण मिश्र, नसरुल्लाह गंज, लिखते हैं कि मेरे पिता जो इटावा जिले के निवासी थे श्री गायत्री के पक्के उपासक थे। प्रातःकाल ४ बजे उठकर शौच क्रिया स्नान आदि के बाद सन्ध्या करने के समय गायत्री देवी की आराधना किया करते थे । कई बार तो देवी जी की आराधना में इतने मस्त हो जाते थे कि वे अपने तन की सुध-बुध को भूल जाते थे यानी ध्यान मग्न होकर देवी जी के रूप के दर्शन तक किये। एक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

समय मेरी दादी माँ बहुत बीमार हो गयी दवा बहुत की, मगर आराम नहीं हुआ कोई १५ दिन हो गये मगर पीड़ा नहीं हटी। सब लोग पितामह से कहने लगे कि पंडित जी इनको भूत बाधा है आप इन्हें कहीं ले जाओ तो ठीक हो जावेंगी, नहीं तो यह बच नहीं सकतीं। बाबा ने हँसकर कहा कि मेरी जगदम्बा ही ठीक करेगी में कहीं नहीं ले जा सकता। बाबा साहब दादी माँ को उठाकर जिस स्थान पर संध्या पूजन किया करते थे वहाँ वेद माता का एक काँच में मढ़ा चित्र रखा था बस उसके ही सामने दादी माँ को सुला दिया कि माँ तेरी शरण में यह पड़ी है, रक्षा करो तथा गायत्री देवी का जप प्रारम्भ कर दिया बाबा ने अन्न जल तक त्याग दिया । दूसरे या तीसरे दिन दादी माँ ने करवट ली तथा मेरे पिता जी से कहा कि मुन्ना प्यास लगी है। पिता जी ने जल पिलाया, तीसरे दिन इस तरह का हाल देखर सब लोग दंग रह गये । पितामह के चेहरे पर खुशहाली छाई तथा नौ दिन के अन्दर दादी माँ धीरे-धीरे चलने-फिरने लगीं । १५ वें दिन भोजन बनाकर सब को खिलाया। पितामह को कई प्रकार के अनुभव प्राप्त हुए। मुझे और तो मालूम नहीं हम तीन भाई भी उसी देवी के प्रसाद दिये हुए हैं। पिताजी भी गायत्री का अनुष्ठान कई प्रकार का किया करते थे। मैं भी वेद माता को याद किया करता हूँ जिसके द्वारा महान् से महान् कष्ट हट जाते हैं।

तपैदिक से जीवन रक्षा

श्री शिवभगवान जी सोमानी, सीकर, ने लिखा है कि माले गाँव (नासिक) में मेरी सुसराल है। गत वर्ष मैं बहुत सख्त बीमार पड़ा, बीमारी बढ़ गयी। बम्बई के सुप्रसिद्ध डॉक्टरों से बीमारी की परीक्षा कराई तो उन्होंने टी. बी. (तपैदिक) निर्धारित की। डॉक्टर मोरिया ने बताया कि दाहिना फेफड़ा खराब हो गया है। पसली की तीन हड्डियाँ काटनी पड़ेगीं, तभी ठीक होने की सम्भावना है। अन्यथा पन्द्रह दिन में रोग की हालत काबू से बाहर हो जायेगी।

मेरे साले शिवरतन जी मारू और मैं दोनों ही काफी घबराहट में थे। जीवन जैसी अमूल्य वस्तु को नष्ट होते हुए देखकर मनुष्य के हृदय पर क्या बीतती है इसका अनुभव भुक्त-भोगी ही जानता है। तीन पसलियाँ कटवा देने का भयंकर आपरेशन, अपनी कमजोर अवस्था के देखते हुए कराने की हिम्मत न पड़ी, हम लोग बम्बई से मालेगाँव वापस लौट आये।

शिवरतन जी मालेगाँव में साड़ियों के सुप्रसिद्ध व्यापारी हैं उन्होंने आचार्य जी के सब गायत्री ग्रन्थ पढ़े हैं और श्रद्धापूर्वक उपासना करते हैं। इससे उन्हें बड़े लाभ हुए हैं। उनके घर का सार कलह शान्त होकर अब बड़ा प्रेम उत्पन्न हुआ है। जब उनकी पत्नी गर्भवती थी तो उसे जप के पश्चात् अपनी माला धोकर पिलाते थे, क्योंकि प्रसव के समय सदा ही उसे भारी कष्ट होता था, पर इस बार माला के धोवन रूपी अमृत को पीते रहने से प्रसव बड़ा ही सुखपूर्वक हुआ और इतनी सुन्दर कन्या उत्पन्न हुई कि उसकी शोभा देखकर सभी का चित्त प्रसन्न हो जाता है। ऐसे ही अनुभवों के कारण शिवरतन जी की भक्ति बढ़ती जा रही है। सवा लक्ष का अनुष्ठान वे कर चुके हैं और नित्य नियमित जप करते हैं।

शिवरतन जी ने मुझे सलाह दी कि मैं रोगशय्या पर पड़ा-पड़ा गायत्री का जप और ध्यान करता रहूँ। मृत्यु के भय ने मुझे तत्काल उनकी बात स्वीकार करा दी। उसी दिन से माता का दिन-रात जप और ध्यान करने लगा। डॉक्टर मोरिया के कथनानुसार पन्द्रह, बार स्थिति काबू से बाहर होने वाली थी, अर्थात् मुझे मृत्यु के निकट पहुँच जाना था, पर वैसा हुआ नहीं मेरी स्थिति दिन-पर-दिन सुधरने लगी। स्थानीय चिकित्सकों की चिकित्सा भी चल रही थी और गायत्री का जप ध्यान भी। स्थिति में निरन्तर सुधार होता गया।

माता की कृपा से मेरी बीमारी अब चली गई है। अब पूर्ण स्वस्थ हूँ। अपने इस नये जन्म को पाकर मुझे बड़ी प्रसन्नता है। गायत्री माता ने मुझे जीवन दान दिया है मैं और मेरी धर्मपत्नी दोनों ही हार्दिक प्रेम और श्रद्धा से माता की साधना करते हैं।

महामारी और रोग की शान्ति

डॉ. रामगोपाल प्रसाद 'वंशी' बेतिया, लिखते हैं कि (१) मेरे मुहल्ले के संस्कृत विद्यालय में पहले श्री पुरुषोत्तम पंडित रहते थे। वे परम विद्वान थे और उनका नाम एवं यश दूर-दूर तक फैला हुआ था। बहुत वर्ष पहले बेतिया में भंयकर प्लेग आया था और काफी लोग प्रतिदिन मर रहे थे। नगरवासियों में भगदड़ मच गई थी। चारों ओर मुर्दनी छाई थी। शहर उजाड़-सा हो गया था। पंडित जी कहीं नहीं गये और धूनी जलाकर रहते थे । कुछ दिनों के बाद पंडित जी ने गायत्री के जप का पुरश्चरण आरम्भ किया। फलस्वरूप उन्हें एक दिन अर्द्धरात्रि के समय एक स्त्री के दर्शन हुए जो उज्ज्वल वस्त्र पहने थी। उनके साथ में अर्दली और मिलटरी पुलिस भी थी। पंडित जी स्तम्भित हो गये और कुछ कह न सके। इसके बाद वे

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने अनुचरों के साथ अदृश्य हो गयीं। उसके दूसरे दिन से प्लेग का प्रकोप कम होने लगा और सदा के लिये शान्त हो गया।

(२) यहाँ लालबाजार मुहल्ले में बाबू विश्वनाथसिंह जी रहते हैं। लोग इन्हें 'बाबू साहब' कहते हैं। ये इस समय चम्पारन जिले से एम. एल. ए. हैं। ये एक आध्यत्मिक पुरुष हैं। इनकी दिनचर्या संयमित और नियमित है। ये कठोर व्रती और तपस्वी व्यक्ति हैं। उनके पड़ोस में पहुँचने पर भी ओज और स्फूर्ति इनके रग-रग में भरी हुई है। स्वाध्याय और आचरण के बल पर इनके मस्तिष्क का अद्‌भुत विकाश हुआ है। राजनीति अध्यात्म और साहित्य से इन्हें विशेष प्रेम है। उन्हें गायत्री में अत्यधिक श्रद्धा है और अपनी उन्नति का कारण गायत्री को मानते हैं। एक बार उनके मित्र बेतिया अस्पताल में संङ्कट ग्रस्त अवस्था में पड़े थे। जब डॉक्टर हताश होने लगे तो बाबूजी ने उनके लिए गायत्री पुरश्चरण कराया, जिसके समाप्त होने तक मरीज भी बिलकुल अच्छा हो गया। बाबूजी ने अपने बछड़े तक के बीमार होने पर गायत्री जप कराया था। उनकी गायत्री निष्ठा असाधारण है।

निराशा में आशा

श्री प्रकाशनारायण जी, मुन्दावज, लिखते हैं कि मुझे १० वर्ष की अवस्था में गायत्री मन्त्र की दीक्षा दी गई थी और तभी से मैं इस महा मंत्र की साधना करता हूँ। मैंने इसका लाभ स्वयं आँखों देखा है। मेरे विद्यार्थी जीवन का अनुभव है कि मैं कक्षा १० में अध्ययन करता था कि दैवी कुचक्र से छमाही परीक्षा के समय मेरे परिवार के आधार मेरे ताऊजी का स्वर्गवास हो गया और मैं परीक्षा न दे सका । इसके तीन मास बाद ही मेरे पिता जी का देहान्त हो गया। मेरे अध्ययन में महा संकट उपस्थित हुए। जब मेरे पिता जी का देहान्त हुआ वार्षिक परीक्षा के केवल २५ दिन रह गये थे, परन्तु मैं इसी महामन्त्र के विश्वास पर डटा रहा। पिता जी की क्रिया समाप्त कर परीक्षा देने गया, सफल होने की कोई आशा न थी पर परीक्षा के पश्चात् ग्रीष्मावकाश में मैंने इस महामंत्र की साधना बढ़ा दी और इसी के प्रभाव से मैं परीक्षा में सफल हो गया।

इसके पश्चात् मैंने जितने भी कार्य इस मंत्र के विश्वास पर किये अभी तक सभी सफल होते गये हैं।

मेरे एक पितामह थे, उनको गायत्री का ही इष्ट था । एक बार वे शत्रुओं के कुचक्र में पड़ गये थे और शत्रु उनको जेल भिजवाने का प्रयत्न कर रहे थे, परन्तु सवा लक्ष महामंत्र के जप से वे इस कुचक्र से बच गये और उनका शत्रु नष्ट हो गया । यह मेरे आँखों देखा अनुभव है। वे प्रतिदिन १० माला जप करते थे। इनका देहान्त गत ३ अप्रैल ४८ को हुआ है। मृत्यु पर्यन्त भी उनके मुख की आभा ऐसी जान पड़ती थी, मानों हँस रहे हैं। इस महामंत्र के विषय में जितना लिखा जावे कम है।

वेदमाता गायत्री

श्री सुरेन्द्र शर्मा बी. ए. मथुरा, का कहना है कि माता गायत्री की शक्ति महान् है। वैसे तो संसार में अन्य दैवी शक्तियाँ भी हैं, परन्तु उनकी शक्ति एक विशेष सीमा तक ही अपना कार्य करती है। उन शक्तियों को प्राप्त करने के लिए मनुष्य को नाना प्रकार के कष्ट सहन करने पड़ते हैं और कभी-कभी ऐसे भी कार्य करने की आवश्यकता पड़ती है जो बड़े कष्ट साध्य कार्यों की श्रेणी में गिने जाते हैं। गायत्री की साधना अति सरल, सुखद तथा लाभदायक है। साधारण-सी योग्यता रखने वाला व्यक्ति भी गायत्री की लघु साधना के द्वारा अपरिमित ज्ञान उपार्जन कर सकता है।

सबसे ध्यान देने की बात तो यह है कि गायत्री-परायण करने से साधक बड़ा ही सरल हृदय, उदार, संयमी, विनम्र और पवित्र भावनाओं वाला बन जाता है। ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, सन्तोष और आत्मीयता जैसे सद्‌गुणों का समावेश उसकी प्रकृति में हो जाता है। साधक का हृदय सदैव हर्षोल्लास से प्रफुल्लित रहता है। सांसारिक परिस्थितियों द्वारा निर्मित सुख तथा दुःख उसके जीवन में विशेष महत्त्व नहीं रखते । आत्म-बल वृद्धि में गायत्री के समान अन्य किसी की साधना इतनी सफल नहीं हो सकती। यहाँ तक देखने में आया है कि यदि अन्य शक्तियों की उपासना उचित विधि पूर्वक न की जाय तो उनका परिणाम कभी-कभी बहुत ही गम्भीर हो जाता है। आसुरी शक्तियाँ तो अपने साधक के मस्तिष्क को भी दूषित और विकृत कर देती हैं । माता गायत्री बड़ी दयावान् है। वह किसी भी प्रकार की गलती करने पर अपने साधक से रुष्ट नहीं होती। यहाँ तक कि अशुद्ध, साधना से भी कुछ न कुछ लाभ अवश्य ही होता है।

हमें पूर्ण स्मृति है एक बार हमारे एक अनन्य मित्र को टाइफाइड नामक रोग हो गया था। अच्छे डॉक्टर जवाब दे चुके थे । रोगी के जीवन की आशा विशेष न रह गई थी। सब ओर से निराश होकर उनकी माता ने अपने कुल पुरोहित को बुलवाया।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कुल पुरोहित माता गायत्री के बड़े उपासक थे। उन्होंने रोगी को लेटे-लेटे गायत्री मन्त्र का जप करते रहने को कहा। २४ घण्टे रोगी के कमरे में गायत्री मन्त्र का जप होता रहा। रोगी की स्थिति में कोई परिवर्तन न हुआ। रोग बढ़ता ही चला गया। स्थिति यहाँ तक बिगड़ी कि उसे वायु का प्रकोप हुआ । वायु के प्रकोप में मनुष्य के मस्तिष्क की दशा ऐसी अनिश्चित हो जाती है कि वह चाहे जो कुछ बकने लगता है, परन्तु गायत्री के जाप के कारण इस रोगी की मन और मस्तिष्क की दशा में एक विशेष प्रकार का परिवर्तन हो गया था। संस्कृत भाषा का कतई ज्ञान न होने पर भी उसने अनेको पुराने ग्रन्थों के श्लोक बोले। अधिक आश्चर्य तो जब और हुआ कि उसने अपने पहले जन्म की घटनाएँ सुनाना प्रारम्भ कर दिया। मृत्यु पर्यन्त तक यह रोगी भगवत् भजन करता रहा। माता गायत्री की कृपा से ही अन्त समय भगवान् का नाम लेना उसे सम्भव हो सका । यह प्रसिद्ध रोगी हाथरस के एक रईस खत्री खानदान का था जिसका कि नाम श्री बालकृष्ण वर्मन था।

एक और महानुभाव ने मुझे बताया था कि वे बड़ी आयु तक निःसन्तान थे। सर्व प्रकार के उपचार और इलाज करा कर सन्तान होने की आशा सदैव को त्याग चुके थे। इनको भी सन्तान का सुख गायत्री मंत्र के जाप से प्राप्त हुआ। कहने का तात्पर्य है कि माता गायत्री सब फलों को देने वाली है। यदि साधक तनिक से संतोष और लगन से निःस्वार्थ होकर माँ गायत्री की शरण में जाये तो माता प्रसन्न होकर पुत्र को अपने कंठ से लगा लेती है।

२० वर्ष पुराने रोग से छुटकारा

स्त्री नैनूराम जी जानी, रोहेड़ा, लिखते हैं कि लगभग १५ वर्षों से गायत्री-माता पर मेरी साधारण श्रद्धा चली आ रही है। परन्तु, अपान वायु की उर्ध्वता और विकृति के कारण कमर से ऊपर का भाग गरदन तक जकड़ हुआ सा रहता था जिसके फलस्वरूप मैं अपनी गायत्री सम्बन्धी उपासना में प्रवृत्त नहीं हो सकता था। रोग की भयंकरता दिनों-दिन बढ़ती चली गई यद्यपि मैं इसके निवारणार्थ कुछ व्यायाम, आसन, इत्यादि किया करत था। यह रोग गत २० सालों से चला आ रहा था और मुझे तो वह असाध्य ही मालूम पड़ता था। कई-कई दिनों तक मुझे ज्वर में रहना पड़ता था। इस रोगापत्ति के होते हुए भी मैं अपने जीवनोपयोगी सारे कार्य किया करता था। परन्तु वे सारे कार्य भार रूप मुझे प्रतीत होते थे। न तो मुझ में स्फूर्ति थी और न किसी प्रकार का उत्साह। इन सारी बातों ने मेरे मन में एक समस्या पैदा करदी थी।

लगभग तीन चार साल पहले की बात है कि जब मेरे मन में गायत्री माता के प्रति श्रद्धा के भाव बढ़ते गये तो इस शक्ति के सम्बन्ध में उचित ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा उत्तरोत्तर बढ़ती हुई दिखाई दी। यह निर्विवाद सत्य है कि जहाँ चाह है वहाँ राह भी है । कुछ ही समय के बाद देवी की कृपा से 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका हाथ लग गई और उसमें गायत्री महाविज्ञान सम्बन्धी पुस्तक प्रकाशित हो जाने की सूचना मिलने पर मैंने उस पुस्तक को मँगवा कर मनन और चिन्तन द्वारा अध्ययन किया। इस सम्बन्ध में बहुत कुछ जानकारी प्राप्त होने पर मेरे मन में काफी जागृति का प्रसार होने लगा। दृढ़ता के साथ नियमित उपासना करना तभी से प्रारम्भ कर दिया। परन्तु शारीरिक अस्वस्थता के कारण मनोवृत्तियों को केन्द्रीभूत करने में बहुत कुछ कठिनाई होती थी। फिर भी मैंने अपनी उपासना का कार्य जारी ही रखा। इस प्रकार उपासना करते हुए कुछ ही महीनों के अनन्तर गायत्री माता के प्रति मेरा प्रेम अधिकाधिक बढ़ता गया। सांसारिक वस्तुओं से मोह उठता गया। वैराग्य की भावनाएँ काफी जागृत होने लगी। हर समय भगवती माता की ही धारणा बनी रहती थी सोते-उठते-बैठते । सच पूछा जावे तो मेरी दशा उन्मत्त की-सी हो रही थी।

इस अवस्था में कुछ ही दिनों में गोते लगाने के पश्चात मेरे मने में एक दिन भगवती माता के दर्शन की प्रगाढ़ इच्छा उत्पन्न हुई। जिनके फलस्वरूप मेरी आँखों में से प्रेमाश्रु धारा बहने लगी। मैं बैठा हुआ बहुत कुछ रो गया। इसी समय मैंने माता को ढाढ़स बँधाते हुए अपने सम्मुख उपस्थित देखा।

दूसरा दिन हुआ। भोजन करने के पश्चात् जब मैं बैठा हुआ था, ध्यान तो मेरा भगवती माता की ओर ही रहता था। सो उस अवस्था में एकाग्रता बढ़ती गई। कटि के नीचे के भाग से कुछ शक्ति ऊपर उठती हुई अनुभव होने लगी। ज्यों-ज्यों एकाग्रता के कारण माता के दर्शन की भावनाएँ प्रबल होती गईं त्यों-त्यों वह शक्ति ब्रह्मरंध्र में पहुँच कर एक विजय की सी झलक में बिलीन हो गई। उस क्षण मात्र के अलौकिक आनन्द का वर्णन करना मेरी पहुँच के बाहर है। उस अनुभूति के कारण मेरे अन्तःकरण में शान्ति का साम्राज्य स्थापित हो गया। मन और बुद्धि में अनोखा ही परिवर्तन हो गया। ऐसा प्रतीत होता था मानों जीवन का कायाकल्प हो गया हो। देवी की कृपा से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उस समय से रोग-मुक्ति होती गई और जीवन में अब नये उत्साह की तरंग हिलोरें खा रही हैं।

पागलपन ठीक हुआ

श्री शोभाराम गोप, शंकरपुर, लिखते हैं कि हमारा भतीजा राम किशोर बड़े उत्साही स्वभाव का था। सब कामों में आगे रहता था। साथियों को पहलवानी करने का शौक हुआ तो वह भी अखाड़े जाने लगा । दूकान का काम करते हुए भी प्राइवेट मैट्रिक परीक्षा देन की ठानी । रात भर पढ़ता रहता, एक वर्ष फेल होकर दूसरे वर्ष द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हो गया। कीर्तन मंडली में नियमित रूप से जाता। किसी का ब्याह-कारज होता तो राम किशोर की लोग खुशामद करते, जब वह पहुँच गया तो समझना चाहिए कि सब काम पूरा हो गया। उसका उत्साह परिश्रम, प्रबन्ध तथा चातुर्य देखते ही बनता था।

चार वर्ष हुए न जाने क्या आकस्मिक घटना घटी कि वह पागल हो गया। कहाँ तो वह सबकी पार लगाता था, कहाँ उसके लिए एक आदमी बंधुआ रखने की जरूरत पड़ गयी। अकेला छोड़ देन से वह खतरनाक गड़बड़े उत्पन्न करने लगा। घर के सब लोग अधिक चिन्तित थे, क्योंकि अकेला कमाने वाला पाँच सेर अनाज नित्य खाने वाला कुटुम्ब, गुजारा कैसे हो ? साथ ही उसके उपद्रवों की देखभाल वैद्य, ओझा, आदि की मिन्नत और भेंट स्थिति से घर वालों के अतिरिक्त मुहल्ला, पड़ोस के लोग, नाते रिश्तेदार सब कोई दुःखी थे।

उसके पागल हो जाने के सम्बन्ध में लोगों के तरह-तरह के अनुभव थे कोई कहता था अधिक पढ़ने से पागल हुआ है किसी की समझ में अधिक व्यायाम करना और घी दूध से वंचित रहना इसका कारण है। कोई कहता तथा ब्रह्मचर्य पर ध्यान न देने का परिणाम है। किसी का मत था कि किन्हीं देवी-देवता का प्रकोप है या किसी शत्रु ने मन्त्र चलवा कर वैसा करा दिया है। जितने मुँह उतनी बात, जिसने जो उपाय बताया वही किया गया । दिमाग को ताकत देने वाली दवाइयाँ खिलाईं, ओझा सयानों ने कुछ बताया वह सब किया गया। मेंहदीपुर बालाजी के दर्शन कराये पर किसी से कुछ फायदा न हुआ । डेढ़ वर्ष बराबर यही दशा रही। इतने दिनों में लड़के को तथा उसके कुटुम्ब की जो दयनीय दशा हो गई उसे देखकर सुनने वालों को भी रोना आता था। लोग यथासंभव सहायता भी करते, पर रीता कुआँ पत्तों से पटता । परिस्थिति दिन-पर-दिन शोचनीय होती जा रही थी।

ईश्वर को जब किसी का भला करना होता है तो उसका निमित बना देते हैं। पड़ोस में एक सज्जन के यहाँ रिश्तेदार आये । वे गायत्री के बड़े भक्त थे। प्रातः काल बहुत तड़के उठकर गायत्री का जप करते थे। उन्होंने जब पागलपन की बात सुनी तो स्वयं आये और घर के सब लोगों को गायत्री मन्त्र सिखाया और कहा आप लोग इसे जपते रहें, माता की कृपा होगी तो लड़का अच्छा हो जायेगा। मन्त्र जप तो क्या, कोई कठिन से कठिन काम बताया जाता तो भी उसे वे करने को तौयार थे, उसी दिन से जप होने लगा।

लड़के की स्थिति दिन-पर-दिन सुधरती गई। ढाई तीन महीने में वह पूर्ण तथा ठीक हो गया। धीरे-धीरे वह अपने सब कामकाज करने लगा। अब उसमें कोई लक्षण ऐसा नहीं है जिससे यह कहा जा सके कि यह कभी पागल रहा होगा । हाँ, उसका स्वास्थ्य पहले जैसा अच्छा था अब वैसा नहीं है।

गायत्री के इस चमत्कार को देखकर अब अनेको मनुष्य उपासना करने लगे हैं। एक लड़का जो आरम्भ से ही कुछ बेवकूफ और आवारा सा था, पिता जी की साधना के प्रभाव से बहुत कुछ सुधारने लगा है। हमारे कुछ गुरु जी भी गायत्री की बड़ी महिमा बताया करते हैं। वे कहते हैं कि राम किशोर के अच्छा होने की बात साधारण-सी है । इस मन्त्र के द्वारा सब कट सकते हैं

नवजीवन का वरदान

श्रीमती यशोदा देवी, भुरई, लिखती हैं कि विवाह के बाद ढाई वर्ष तक तो स्वस्थ रही, इसके बाद बीमारियों की शुरूआत हो गई । पहले मासिक धर्म में गड़बड़ी शुरू हुई। उन दिनों कमर में दर्द, पेट ऐंठन, सिर में चक्कर, उलटी आदि उपद्रव होते थे। शर्म के कारण किसी से इसका जिक्र न किया। थोड़े से दिनों बाद रज प्रवाह की अधिकता रहने लगी। पन्द्रह बीस दिन तक खून जाता रहा। शरीर पीला पड़ गया, मांस आधा भी न रहा, चेहरा बैठ गया। १८ वर्ष की आयु में विवाह हुआ था, ५ वर्ष के भीतर बुढ़ापा आ गया। तेईस वर्ष की आयु में बुढ़िया दीखने लगी।

विपत्ति अकेली नहीं आती। स्वास्थ्य की खराबी में चित्त बड़ा दुःखी रहता था। महीने में चार-छः दिन हलका बुखार हो आता। जुकाम, खाँसी, पेट में दर्द, सिर में चक्कर गर्मी, खुश्की, मुँह में छाले आदि छोटी मोटी शिकायतें लगी ही रहतीं। मैं दूसरी पत्नी थी इसलिये पतिदेव मुझ पर अधिक कृपा रखते थे। दवा-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

दारू में उन्होंने बहुत खर्च किया, पर दस पाँच दिन कुछ लाभ दिखने के सिवाय किसी इलाज से कुछ फायदा न हुआ। एक डॉक्टर ने तो टी. बी. की पहली स्टेज बता दी थी।

विवाह के बाद पाँच वर्ष तक भी सन्तान न होना किसी स्त्री के लिये बड़ा लोकापवाद है। घर, कुटुम्ब और नाते-रिश्ते की स्त्रियाँ ताने कसती थीं। मेरे पढ़ी-लिखी होने का उपहास उड़ाती थीं। इलाज में खर्च, घर वालों को परेशानी, गृह प्रबन्ध में बाधा, और स्वयं मुझे दिन रात की पीड़ा, इन सब परेशानियों से चित्त बड़ा दुःखी रहता। ईश्वर से प्रार्थना करती कि हे भगवान् ! ऐसी जिन्दगी से तो मरना अच्छा, यदि तू मेरे दुःखों को दूर नहीं कर सकता तो इस मिट्टी को समेट ले।

पतिदेव भी मेरी ही तरह चिन्तित थे। किसी ओझा ने उन्हें बताया कि उनकी पूर्व पत्नी का आसेब है, वही पीछे लगी हुई है । उसने कुछ तंत्र-मंत्र भी दिये। पतिदेव ने वह सब बातें मुझसे कहीं। चूँकि मेरे पिताजी कट्टर आर्य समाजी थे, उनका प्रभाव घर भर पर था, मैं भी भूत प्रेत को नहीं मानती थी। इसलिए उनके कथन से सहमत नहीं हुई और न उन तंत्र मंत्रों का ही उपयोग स्वीकार किया। दूसरे उपाय होते रहे। दिन-पर-दिन शरीर गलता जाता था अब मुझे एक नयी व्यथा उत्पन्न हुई। रात में बड़े-बड़े डरावने स्वप्न दिखते कई बार तो अर्द्ध निद्रित अवस्था में बड़ा डर लगता। पेशाब, पखाने के लिए भी अकेले न जाया जाता।

इस नई व्यथा से मेरा दुःख और भी बढ़ा। उधर सौत का दफेला होने की चर्चा घर में रोज ही होने से अपना मन भी उससे प्रभावित होने लगा। संयोगवश एक दिन पतिदेव के विद्वान मित्र काशी से आये। उन्होंने मेरी स्थिति देखकर कहा—इनकी बीमारी का कारण चाहे कुछ भी हो पर गायत्री का जप करना उसके लिए सब प्रकार उत्तम है। गायत्री की महिमा मैंने पहले भी सुनी थी, मैं इसके लिए तैयार हो गई। मुझे गायत्री चालीसा का पाठ, गायत्री पूजन तथा मन ही मन जप करना बताया गया। उसी दिन से मैं वह सब बड़े प्रेम पूर्वक करने लगी।

बीमारी ने मुझे एक तरह अपाहिज कर दिया था, तपैदिक के मरीज जैसी बुरी दशा हो गई थी। हाथ पैर सूख कर लकड़ी हो गये थे। आँखें गड्ढे में धंस गई थीं। मौत की प्रतीक्षा की जा रही थी। इस बुरी दशा में मैंने गायत्री का जप और ध्यान आरम्भ किया। पहले ही दिन ऐसा लाभ हुआ मानो शरीर में कोई नई वस्तु प्रवेश कर रही हो। धीरे-धीरे हालत सुधरने लगी। पाँच महीने में बीमारी सब चली गयी। थोड़ी कमजोरी बाकी रह गई, उसे ठीक होने में पूरा एक वर्ष लग गया। जिस दिन से मैंने गायत्री जप आरम्भ किया था उस दिन से लेकर एक वर्ष के भीतर अपने को पूर्ण स्वस्थ अनुभव करने लगी । दूसरे वर्ष माता ने गोदी को भर दिया। एक बालक का जन्म हुआ।

दुष्ट वीर्य रोगों से छुटकारा

श्री गोपालप्रसाद पाण्डे नहरी, बांदा, लिखते हैं कि मेरा स्वास्थ्य खराब देखकर मेरे चचेरे भाई जो विंध्य प्रान्त में रहते हैं उन्होंने बताया था कि इसी तरह मेरा स्वास्थ भी बिगड़ गया था। मैंने गायत्री की साधना से अपना खोया हुआ स्वास्थ्य सुधारा। मैंने वैसा ही किया और आश्चर्य जनक रीति से मेरा स्वास्थ्य सुधर गया। भाई साहब अपना वृत्तान्त इस प्रकार बताया करते हैं:—

मेरी उम्र लगभग १८ वर्ष की थी। तब मैंने कुसंगति में फँसकर अपना जीवन बरबाद कर दिया था। मुझे वीर्य सम्बन्धी अनेकों बीमारियों ने ग्रसित कर लिया। मेरी हालत बहुत खराब हो गई। मुझे कमजोरी ने दबा लिया तथा स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया। काम काज करने को हिम्मत न पड़ती थी। जो हमजोली के लड़के थे वे हमेशा दिल्लगी द्वारा शर्मिन्दा करते थे और कमजोर समझ कर मुझे कष्ट देते थे । मैं बहुत निराश था। मैंने बड़े-बड़े विज्ञापन देखकर दवाइयाँ मँगाई लेकिन सब व्यर्थ। किसी से कुछ लाभ न हुआ। इसके बाद डॉक्टरों व हकीमों द्वारा खुपिया तौर से दो वर्ष तक दवा कराता रहा, मगर कोई लाभ नहीं हुआ। अगर मुझसे कोई मेरी हालत देखकर पूछता तो मैं उन्हें शर्मिन्दगी के कारण कुछ जवाब न देता, मेरी तबियत बहुत खराब थी, मैं घबड़ा रहा था। किसी के सामने बाहर निकलने की हिम्मत नहीं पड़ती थी। एक दिन मेरे मन में आया कि मुझे इस दुनियां में रहना व्यर्थ है, ये सोच समझ कर मैं शरीर त्यागने के लिए चल पड़ा।

दो तीन मील में एक नदी थी, मैं वहाँ पहुँचा। मैंने सोचा यहीं पर प्राण त्याग दूँ, थोड़ी देर खड़े कुछ सोचता रहा इसके बाद एक दम नदी में कूद गया। मुझे नदी में गिरा हुआ देख लोग दौड़ पड़े और लोगों ने मुझे पकड़ लिया। मेरे तमाम नाक व मुख के द्वारा पानी पेट के अन्दर जा चुका था और मैं बेहोश था । इसके बाद लोगों ने मेरे को उल्टा खड़ा कर पानी पेट

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के अन्दर से निकाला, इसके बाद कुछ देर में मुझे होश आया। तब लोगों ने मुझसे नदी में गिरने का कारण पूछा, में रोने लगा । कुछ जवाब नहीं दिया । तब विवश हो वे लोग अपनी बैलगाड़ी द्वारा मुझे मेरे मकान तक कर गये।

मेरी हालत दिन-पर-दिन और खराब होती गई एक दिन का किस्सा है कि मैं टट्टी के बहाने फिर से भागा। इस बार मैंने जङ्गल की राह ली, चलते-चलते एक घने जंगल में पहुँचा । सामने एक छोटी सी पहाड़ी दिखलाई दी मैं उसी पहाड़ी की ओर तो बढ़ा। मेरी इच्छा थी कि मैं अब इसी जंगल में अपना जीवन व्यतीत करूँगा, जंगल अत्यन्त घना था। वहाँ पर मनुष्य जाति की कहीं पर खोज न थी। मैं चारों ओर जगह देखता हुआ चला जा रहा था । जब उस पहाड़ी के पास पहुँचा तो एक भारी पत्थर की चट्टान पड़ी हुई थी मैं रास्ते का थका था ही चूँकि वह साफ पत्थर देखकर मेरी तबियत हुई कि आज रात को यहीं पर विश्राम किया जाय, भूख बड़े जोरों से लग रही थी मगर वहाँ पर क्या था? मैं उसी पत्थर पर बैठ गया । शाम का वक्त को रहा था। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। इतने ही में पहाड़ी से आवज सुनाई दी, मानों कोई आ रहा है। पत्तों की खड़खड़ाहट सुनाई पड़ रही थी और पेड़ हिलते हुए दिखलाई पड़ते थे। कुछ ही देर बाद वहाँ से एक भारी भयानक जंगली जानवर निकल पड़ा जिसके देखते ही मेरी हिम्मत छूट गई । वह इतना भयानक था कि मैं उसका कुछ हाल नहीं कह सकता, डर कर भागा और थोड़ी देर में ही बेहोश हो गया। होश में आया तो सामने खटपट की आवाज सुनाई दी, अब मैं सोच रहा था कि ये क्या नया बबाल आ रहा है। मैंने सोचा कि मैं अब भागूँगा नहीं और वहीं आँख मूंदकर राम-राम रटने लगा। वह खटपट की आवाज मेरे सामने तक सुनाई दी और फिर बन्द हो गई, तब मुझसे मारे डर के न रहा गया । मैने ज्यों ही आँखें खोली तो एक महात्मा सामने खड़े थे जिनकी लम्बी-लम्बी जटायें बड़ी-बड़ी आँखें थीं, चेहरा तेज से चमक रहा था। मैं उनके चरणों में गिर पड़ा और रोने लगा। उन्होंने मुझे उठाकर कहा तुम कौन हो ? यहाँ पर क्यों आये। मैंने उनसे पूरा-पूरा किस्सा सब सही-सही बतला दिया और ये भी बतलाया कि मैं यहाँ अपनी जिन्दगी समाप्त करने के लिए आया हूँ । वे महात्मा कुछ देर सोच समझ कर बोले कि बच्चा, तुम मेरे साथ चलो। अब मैं उनके पीछे-पीछे चला गया । एक ऊँची जगह में उनका स्थान था । वहाँ पहुँच कर उन्होंने मुझे फल वगैरह खाने को दिया और बोले कि आराम करो, मैं पड़ते ही सो गया। जब सबेरा हुआ तो मुझे महात्मा जी स्नानादि के लिए एक तालाब में ले गये, स्नान भजन आदि के पश्चात् उन्होंने मुझे एक मन्त्र सिखाया और कहा—बच्चा इसी से तुम्हारा कल्याण होगा तथा उसके पूरे नियम भी बताये, उसी को मैं जपता रहा और वहीं आनन्द पूर्वक महात्मा जी के साथ समय व्यतीत करता रहा, मेरा रोग धीरे-धीरे नष्ट हो गया।

पहले मुझे रात को कई बार स्वप्न दोष होता, पेशाब करते समय वीर्य निकल जाता और धीरे-धीरे मैं बिल्कुल नामर्द हो गया था, लेकिन अब मुझे कोई बीमारी नहीं है । मैं पूर्ण स्वस्थ हो गया, तब एक दिन महात्मा जी ने कहा चलो अब कहीं तीर्थ यात्रा के लिये चला जाय। हमारे यहाँ प्रसिद्ध स्थान किला कलींजर स्वामी नीलकण्ठ जी हैं, वहाँ गये । वहां उन्होंने मुझे गायत्री मंत्र सम्बन्धी अनेक उपदेश दिये। वे महात्मा मुझे एक दिन रात को सोता छोड़ वहाँ से चले गये। मैंने उनका बहुत पता लगाया मगर वह नहीं मिले । उनके न मिलने पर मैं घर चला आया । अब मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ । ईश्वर की दया से मेरे बाल बच्चे भी हैं। ऐसा होता है माता जी का प्रभाव।''

यह मेरे भाई साहब ने अपना किस्सा मुझे बताया था । यह बिल्कुल सही किस्सा सन् ४६ का है। उनके कहने के मुताविक मैंने गायत्री माता की सेवा की। तब से मेरा स्वास्थ भी ठीक हो गया है । किसी बराबर वाले कि हिम्मत नहीं पड़ती कि मेरा हाथ पकड़ सके और माता जी की दया से मेरे जेब से पैसा नहीं हटता। न मुझे तब से कोई कष्ट हुआ ।

स्वप्न दोष से छुटकारा

श्री कैलाश चन्द्र आर्य, खुसरूपुर, लिखते हैं कि मुझे स्वप्न दोष की बीमारी थी । कुछ ही दिनों में बीमारी बिना दवा के ठीक हो गई। मैं नित्य सोते वक्त हाथ-पैर धो लेता था। गायत्री मन्त्र जपना शुरू करता था। गायत्री मन्त्र जपते-जपते निद्रा आ जाती थी । सिर्फ दस ही दिन में मुझे यह बमारी ठीक हो गई और अब स्वस्थ हूँ। गायत्री माता बुरे कर्म से बचाती है और अच्छे मार्ग पर ले जाती है। गायत्री माता अपने भक्त की सदैव रक्षा करती रहती है। सचमुच जिन-जिन लोगों ने गायत्री मन्त्र का जप किया उन लोगों ने लाभ उठाया और उठा रहे हैं।

आज से दस महीना पहले हम कलकत्ता चले गये थे। उस समय हमारी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

एक दिन ऐसा आया कि हमारे पिता जी के पास एक शाम खाने तक को पैसा नहीं रहा। उस समय घर पर चार भाई एक बहन तथा माता-पिता थे। हम कलकत्ते में भी गायत्री मन्त्र जपते रहते थे। दो महीने के बाद कलकत्ता से घर आये । उस समय हमारे पिता जी कपड़े का काम करते थे और कहते हैं एक-एक दिन में चालीस, पचास रु. मुनाफा होता था। हमारी माता जी ने मुझे बताया कि हम लोगों के सामने कैसा समय अभी गुजारा है। जब मुझे याद आता है दिल घबड़ा उठता है। हमारे पिता जी ने सिर्फ ३०) रु. से काम करना शुरू किया था। कुछ कर्ज थे, चुका दिया गया तथा अब सुख से हम लोग रहते हैं। इतनी गिरी दशा से इतनी अच्छी आर्थिक दशा बना देने में किसका हाथ है ? यदि यह पूछा जाय तो हम कहेंगे कि उसी जगत् जननी गायत्री माता की कृपा है।

मुझे विद्यार्थियों से अनुरोध है कि वे अवश्य इस अमृत तुल्य गायत्री मंत्र का पान करने की कोशिश करें। नित्य सूर्योदय के पहले स्नान आदि से निवृत हो कर १०८ बार गायत्री मन्त्र जप लिया करें। जो भी मनुष्य गायत्री मन्त्र जप करेगा, बुरे कर्म अपने आप छूट जायेंगे। मन एकाग्रचित होकर अपना काम ठीक करेगा। वह विद्यार्थी जो भी पाठ याद करेगा वह बहुत जल्द याद हो जायगा और परीक्षा में अच्छे नम्बर लाकर पास करेगा। हर एक विद्यार्थी को चाहिए कि गायत्री माता का नित्य स्मरण करे।

रक्त विकार की शुद्धि

श्री प्रह्लाद चन्द गोयल, भाखरी, लिखते हैं कि मेरे लड़के चि. लालचन्द का शरीर १६ वर्ष की आयु तक बिल्कुल स्वस्थ रहा उसमें कोई रोग या खराबी न थी, पर इसके बाद उसे चर्म रोग उठ खड़े हुए। प्रारम्भ में उसे खुजली हुई, खुजली की मामूली दवा दारू होती रही, पर कोई विशेष लाभ न हुआ । रोग ने नया रूप धारण किया, लड़के के सारे शरीर में लाल चकत्ते से उठ आये, जो बीच-बीच में पक कर फटने लगे। डॉक्टरों से बहुत इंजेक्शन लगवाये, वैद्यों ने जुलाब दिये और लगाने की दवाएँ भी दीं पर रोग की जड़ न गई।

लाल चकत्तों में खुजली मचती थी । वे पक कर फूटते थे तो चिपचिपा पानी सा निकल जाता था। एक जगह का चकत्ता अच्छा होता तो दूसरा नया उठ आता । कुछ दिन ऐसा मालूम पड़ता कि रोग काफी घट गया और थोड़े ही दिन में बिल्कुल अच्छा हो जायगा पर फिर उभर आता और सारा शरीर चकत्तों से भर जाता।

दो वर्ष हो चले खुजली और चकत्तों की बीमारी से उसका पीछा नहीं छूटा था कि सफेद दाग पड़ने का नया विकार पैदा हो गया। दाहिने पैर में छोटे-छोटे १५-२० निशान हो गये जो धीरे-धीरे बढ़ कर काफी जगह में फैल गये। इस रक्त विकार को कोई छूत का रोग बताता था, कोई कोढ़, कोई कुछ, कोई कुछ।

लड़का जहाँ शारीरिक कष्ट से दुःखी रहता था, वहाँ उसे मानसिक चिन्ता भी कम न थी। क्योंकि उसका भविष्य अन्धकार मय हो रहा था। उसे छूने और पास बिठाने तक में लोग कतराते थे फिर वह इस प्रकार बहिष्कृत बन कर अपनी जीवन यात्रा को किस प्रकार पार करता। उसे अपनी पढ़ाई भी बन्द करनी पड़ी। लड़के के दुःख से घर के और सब लोग भी चिन्तित और दुःखी रहते थे।

एक दिन हनुमान जी के मन्दिर में अखण्ड कीर्तन और यज्ञ हुआ था उसमें कई महात्माओं का प्रवचन भी हुए। लालचन्द भी उस उत्सव में सम्मिलित था, उसने एक महात्मा के मुख से सुना कि "गायत्री के द्वारा शरीर और मन के सभी रोग दूर होते हैं।" यह बात उसने गिरह बाँध ली और नित्य गायत्री का जप करने लगा।

ईश्वर की लीला कहें, बुरे समय का अन्त कहें या गायत्री की कृपा कहें कुछ ऐसा चमत्कार हुआ कि उसका रोग उसी दिन से घटना आरम्भ हो गया। पहले खुजली में कमी हुई, फिर नये चकत्ते उठना बन्द हुआ। जो पुराने चकत्ते थे वे भी धीरे-धीरे अच्छे हुए इसके पश्चात् सफेद दाग भी घटते गये और पाँच छः महीने में उसकी सारी बीमारी चली गयी। अब उसके शरीर में घाव अच्छे होने के चिह्नों को छोड़कर और कोई रोग नहीं है और लड़का अपना नया जन्म हुआ अनुभव करता है।

शरीर के रोग दूर होने का यह प्रत्यक्ष प्रमाण है, इसी प्रकार मन के रोग भी गायत्री की कृपा से अवश्य दूर होंगे। उन महात्मा का वचन सत्य निकला जिन्होंने हनुमान जी के मन्दिर पर अपने प्रवचन में कहा था कि "गायत्री की कृपा से शरीर और मन के सब विकार नष्ट होते हैं।"

कठिन उदर रोग से निवृत्ति

श्री हरमानभाई, सोमाभाई पटेल, सदनपुरा, लिखते हैं कि गायत्री माता द्वारा उपार्जित शक्ति का मैंने प्रथम

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बार उपयोग किया और वह बहुत ही सफल रहा । मेरे बड़े भाई डाह्यभाई के पेट में कुछ दिन पूर्व बड़ा भंयकर दर्द उठा। नलों के आस-पास से पीड़ा आरम्भ होती थी और सारे शरीर में फैल जाती थी। रात को वेदना का ऐसा प्रकोप होता था कि कई बार तो वे पीड़ा से चीखने लगते थे। दस्त हो रहे थे। कई बार मल के साथ रक्त भी जाता था।

डॉक्टरों का इलाज कराते हुए १५ दिन बीत गये, पर कुछ लाभ न हुआ। उनका कहना था कि यह आँतों की सूजन और पुराना मरोड़ रोग है । इलाज को इतने दिन बीत गये और कुछ लाभ न हुआ तो बड़ी चिन्ता हुई, घर के सब लोग बड़े दुःखी हो रहे थे।

जब काफी दिन चिकित्सा कराते हो गये और कोई लाभ न हुआ, तो मैंने आध्यात्मिक प्रयोग किया। प्रति-दिन जप के समय प्रयुक्त हुए जल पात्र में से मैं जल लेता और गायत्री मन्त्र से अभिमंत्रित करके उसे भाई साहब को पिला देता इस उपचार से आश्चर्य जनक लाभ हुआ। कुछ ही समय में उनकी पीड़ा बन्द हुई, दस्त बन्द हुए और आठ ही दिन में रोग के सब लक्षण दूर हो गये।

यह माता की कृपा है, जो कठिनाई डॉक्टरों से दूर न हो सकी वह माता की कृपा कण में हल हो गयी। संसार में अनेक कठिनाइयाँ हैं और वे आये दिन किसी न किसी रूप में सामने आती रहती हैं। इसमें से कुछ को तो मनुष्य अपने प्रयत्न और पुरुषार्थ से हल कर सकता है, पर कुछ का निवारण उसके बस की बात नहीं होती, ऐसे अवसरों पर माता की कृपा परम कल्याण-कारिणी सिद्ध होती है।

कन्या के लिये सुयोग्य वर मिला

श्री बद्री प्रसाद वर्मा बुलढाना, लिखते हैं कि सवर्ण हिन्दुओं में कन्या के लिए लड़का तलाश करना कितना कठिन है, इसे भुक्त भोगी ही समझ सकते हैं। भारत गरीब देश है इसमें 'खाते-पीते' कहलाने वाले लोगों की संख्या बहुत थोड़ी है। सभी बेटी वाले चाहते हैं कि मेरी लड़की किसी खाते-पीते घर में पहुँचे। माल कम हो और ग्राहक अधिक हों तो माल महँगा हो जाता है, इस नीति के अनुसार उनका दिमाग सातँवें आसमान पर चढ़ जाते हैं और वे अपने लड़कों की ऊँची से ऊँची कीमत वसूल करने के लिए नीलाम बोलते हैं। कहते हैं कि गरज वावली होती है। गरज वाले लोग अपने कपड़े बर्तन गिरवी रख कर दहेज की ऊँची कीमत चुकाते हैं और अपनी बेवशी पर पेट पकड़ कर रह जाते हैं।

जिन्हें हिन्दू जाति में जन्म लेकर कन्या का पिता बनने का दुर्भाग्य प्राप्त है ऐसे ही विपत्तिग्रस्त लोगों में एक मैं भी था। लड़के तलाश करने के लिए किराये-भाड़े में काफी पैसे खर्च हो चुके थे। बड़ी आशा के साथ जाते, पर निराशा के साथ लौटते। लड़के के घर वाले तो थोड़ा शिष्टाचार बताते पर उनके गुर्गे पेट में पानी कर देते। ऐसे मन गढंत किस्से सुनाते-परसों अमुक जगह के बेटी वाले आये थे, इतने हजार रुपये दे रहे थे, अतरसों अमुक जगह के आये थे वे इतने हजार रुपये और इतना सोना पेशगी दे रहे थे, पर अभी यह लोग शादी करते ही नहीं। न जाने कितना लेने की इनकी मर्जी है।

मुझे ५०) मासिक वेतन मिलता था । इतने में गृहस्थी का पालन मुश्किल से हो पाता था, फिर हजारों दहेज, सोना, जेवर, बर्तन कीमती दावत यह सब कहाँ से किया जाय। चुपचाप लौट आता। इच्छा थी कि स्वयं कष्ट सहकर भी कन्या को किसी अच्छे घर में पहुँचा देते पर ऐसा लगने लगा कि अपनी से भी गई बीती स्थिति के घर में ही कन्या को पहुँचाना पड़ेगा। कन्या १९ वर्ष की हो चुकी थी, बीसवाँ वर्ष चल रहा था। कहीं लड़का तय न हो पा रहा था। चिन्ता के मारे नींद हराम हो रही थी।

''हारे को हरिनाम'' उक्ति के अनुसार दुःखी होकर भगवान् की प्रार्थना का अवलम्बन पकड़ा। मैंने कई बार सुना था, ईश्वर प्रार्थना का सब से श्रेष्ठ मन्त्र गायत्री है। मैं दोनों संध्या गायत्री जपता और भक्ति-भाव से परमात्मा से प्रार्थना करता कि हे प्रभु! इस अन्धकार में प्रकाश उपस्थिति करो, कोई मार्ग दिखाओ।

थोड़े ही दिन में एक विलक्षण घटना घटित हुई। मूंगा-प जी डिप्टी कलक्टर के लड़के की शादी जम्होरी के धनी जमींदार शङ्कर के यहाँ हुई थी। बरात मामूली सी थी । लड़की के लिए जेवर भी ३०-४० तोले से अधिक न थे । डिप्टी साहब रिश्वत न लेते थे इसलिए उनकी आमदनी मामूली थी। साधु-स्वभाव होने के कारण उन्होंने बरात का अधिक आडम्बर भी नहीं बनाया था। यह सादगी बेटी वाले जमींदार को बहुत बुरी लगी, उसने डिप्टी साहब से अपमान जनक शब्द कहे जिन्हें ये बर्दाश्त न कर सके, उन्होंने तुरन्त बरात को वापस लौटा लिया।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

क्रोध में बरात तो लौट गई, पर बिना वधू के घर पहुँचने में डिप्टी साबह को भी अपनी तौहीन मालूम पड़ी। उन्होंने अपने एक मित्र से कहा कि रास्ते में किसी गरीब के यहाँ से भी शादी हो जाय तो की जा सकती है। जिन मित्र से जिक्र किया था वे हमारे परिचित थे। डिप्टी साहब हमारे सजातीय थे। उन्होंने मेरी तथा मेरी कन्या की बड़ी प्रशंसा की और अपनी जिम्मेदारी पर कह दिया कि बरात उनके यहा ले जाई जाय। बरात हमारे कस्बे में आ गयी।

वे दौड़े हुए मेरे पास आये। उन्होंने सब हाल कहा। डिप्टी साहब की प्रतिष्ठा उनके उच्च परिवार, एम. ए. लड़का, इन सब बातों का मुझे पता था। खुशी के मारे जमीन पर पैर न पड़ते थे। दौड़ा हुआ बरात को लिवाने पहुँचा, धर्मशाला में उन लोगों को टिकाया। सभी मित्रों और सहयोगियों को बुला कर दो घण्टे में बरात के भोजन की व्यवस्था कर दी गयी। रात को बड़े प्रेम पूर्वक विवाह हुआ। दूसरे दिन बरात लड़की को विदा कराके विदा हो गई। सारे विवाह में हमारे मुश्किल से ३५०) रुपये खर्च हुए।

लड़का आज कल नहर विभाग में इंजीनियर है। ६००) मासिक तनख्वाह मिलती है। लड़की उसके साथ सब प्रकार सुखी है। जब कभी डिप्टी साहब से मिलना होता है तो वे उलटे उनकी बात रख लेने के लिए कृतज्ञता प्रकट करते हैं, जब कि हमें ऐसा स्वर्ण सुयोग मिल जाने के लिए उनके प्रति कृतज्ञता प्रगट करनी चाहिए। हम दोनों 'समधी' आपस में सगे भाई की तरह प्रेम करते हैं और छोटी-छोटी बातों में एक दूसरे की सलाह लेकर काम करते हैं।

उस स्वर्ण सुयोग को ईश्वर की आकस्किम कृपा के अतिरिक्त और क्या कहा जाय? गायत्री माता की कृपा से मेरा इतना बड़ा लाभ हुआ जितना कि कभी कल्पना भी न की गई थी।

टूटा जहाज पार लगा

श्रीमती गुणवन्ती देवी, शिलांग, लिखती हैं कि 3 अगस्त सन् ३२ में मेरे ऊपर वज्र टूटा। पतिदेव दफ्तर से लौटे तो उन्हें बुखार चढ़ा हुआ था। रात को हैजा हुआ सवेरा होते-होते उनका स्वर्गवास हो गया। मुझे विवाह बन्धन में बँधे चार ही वर्ष हुए थे पर इन थोड़े दिनों में हम दोनों के बीच इतना घनिष्ट प्रेम हो गया था जिसकी तुलना करना कठिन है। पति के वियोग में मुझे जो पीड़ा हुई उसका वर्णन करना असम्भव है। डेढ़ वर्ष का शिशु ही वह बाधा था जिसने मुझे जीवित रहने के लिए हटात् रोका, अन्यथा मुझे बार-बार ऐसा लगता था कि प्राण स्वयं ही निकल कर पतिदेव के लोक को जा रहे थे।

पति वियोग के बाद भी बालक ने मेरे प्राण तो रोक लिये, पर मेरा मस्तिष्क विक्षप्त-सा हो गया। भूख-प्यास विदा हो गई, दैनिक कार्यों का क्रम बिगड़ गया, सूझ न पड़ता था कि क्या करूँ? एक महीने में ही मेरा १३० पौण्ड का शरीर हड्डियों का ढांचा मात्र रह गया। मन में विभिन्न-विभिन्न विचारों के तूफान उठा करते थे। जीते हुए भी अर्द्ध मृतक की अवस्था में पड़ी रहती।

पति देव की मृत्यु में जितना दुःख मुझे हुआ, वैसा ही मेरे पूज्य स्वसुर जी व सासु जी को भी हुआ। क्योंकि उनके वे इकलौते पुत्र थे। घर में अंधेरा छाया हुआ था। बेटे की मृत्यु के बाद बहु की मृत्यु इन्हें नजदीक दिखाई देने लगी। डेढ़ साल के बच्चे की भी क्या आशा थी। क्योंकि एक ही महीने में वह भी आधा रह गया था। दस्त और ज्वर उसके भी पीछे लग गये थे।

मैं शोक के कारण अर्द्ध विक्षिप्त हो रही थी। बालक की ममता प्राणों को शरीर में अटकाये हुए थी, पर होश-हवाश गुम थे। कोई काम ठीक तरह न होता था, यहाँ तक कि शरीर के नित्य कर्म भी व्यवस्था पूर्वक न होते थे, किसी की पूछी हुई बात का उत्तर तक ठीक प्रकार न बन पड़ता था।

मेरे स्वसुर जी पुत्र मृत्यु से दुःखी थे ही, पुत्र वधू व नाती का भविष्य डांवाडोल देखकर उन्हें चारों ओर अँधेरा दिखने लगा। इन्हीं दुःख के दिनों में उनके गुरुजी आये। उन्हें यह सब देखकर बड़ा दुःख हुआ और इस विषम स्थिति से उबरने के लिए गायत्री की साधना बताई। स्वसुर जी श्रद्धालु हैं, उन्होंने उसी दिन से गायत्री का जप आरम्भ कर दिया। एक सप्ताह बीता होगा कि मुझे एक रात्रि को अर्द्ध निन्द्रित अवस्था में एक विचित्र स्वप्न हुआ। मैं तन्द्रा में पड़ी थी। पर स्वप्न में जो देखा और वार्त्तालाप किया वह ऐसा था मानों सचमुच वह सब हो रहा है और मैं सब प्रकार ठीक होश-हवास में वह सब देख रही हूँ और कह सुन रही हूँ। मैंने देखा कि एक अत्यन्त सुन्दर अधेड़ आयु की स्त्री तपस्विनी वेश धारण किये मेरे निकट बैठ गई है और अनेक प्रकार के प्राचीन इतिहास सुनाकर मुझे शोक दूर करने और बालक के पालन का उपदेश कर रही है। उस तपस्विनी की वाणी इतनी मधुर और मुखाकृति इतनी सुन्दर थी कि मैं

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एकटक उसकी ओर देखती रही और ऐसा लगा मानों उसका एक-एक शब्द कानों के रास्ते घुसकर मेरे हृदय में उठ रहा है। बहुत देर तक उसकी बात सुनने के बाद ऐसा लगा कि मानों यह हमारी कोई चिरपरिचित ही है। मैं उनके चरणों पर मस्तक रख कर रोने लगी, उसने उठाकर छाती से लगाया, सिर पर हाथ फेरा और कहा—शान्ति धारण करो, बच्चे का पालन करो मैं, तुम्हारी पीठ पर हूँ, किसी प्रकार का कष्ट न होने दूँगी। मैंने पूछा आप कौन हैं और यहाँ किस लिए पधारी हैं? उसने कहा तुम्हारे श्वसुर ने मुझे बुलाया है, मेरा नाम गायत्री है, कभी तुम्हें मेरी जरूरत पड़ा करे तो मुझे यादकर लिया करो, यह कह कर वह अकस्मात वहाँ से विलीन हो गई।

मेरी आँख खुली, मैंन देखा कि मेरे अन्दर अद्भुत परिवर्तन हो गया। शोक करते रहने के बजाय अब मुझे वृद्ध सास स्वसुर को धैर्य बँधाने, उनकी सेवा करने, बालक की जीवन-रक्षा करने, अपने जीवन को तपस्या मय बनाने की इच्छायें उठने लगीं। उन इच्छाओं के अनुसार मेरे कार्य भी होने लगे।

उस दिन से मैंने गायत्री का जप करना अपना नित्य का साधन रखा, घर में रहकर संन्यासिनी का-सा जीवन बनाया। सास-सुसर को परमेश्वर समझ कर उनकी पूजा की और घर की सारी व्यवस्था को संभाला । इन १६ वर्षों में अनेक आपत्तियाँ आईं, पर वे सब टल गईं । बालक अब १८ वर्ष का हो चला है। इण्टर पास करके बी. ए. में प्रविष्ट कर रहा है। ४०) मासिक सरकारी छात्रवृत्ति पाता है। ट्यूशन करके ६०) ले आता है। इससे उसके उज्ज्वल भविष्य का सहज ही पता चल जाता है। मेरे सास श्वसुर अभी जीवित हैं वे भी बेटे के दुःख को भूल गये हैं। अठारह वर्षों से हमारे टूटे हुए जहाज को गायत्री माता ने खेकर किनारे पर लगाया। बालक समेत हम चार प्राणी घर में हैं। चारों ही श्रद्धा पूर्वक गायत्री की उपासना करते हैं, कोई कितना ही जरूरी काम क्यों न हो, पर इस उपासना को नित्य सबसे ऊपर स्थान दिया जाता है।

शत्रुता का अन्त

बा. उमाशङ्कर खरे, बिझौली, लिखते हैं कि मैं यह नहीं कहता कि हम लोगों का कोई दोष न था और दूसरे लोग बिना कारण हमारे दुश्मन बन गये थे। दोष हम लोगों का भी था। चाचा जी बड़े कटुभाषी थे, उन्हें दूसरों के दोषों की कड़ी आलोचना करने में न जाने क्या मजा आता था। जिन लोगों से वे निन्दा करते थे उनके बारे में सोचते थे कि ये इस बात को सुनकर किसी से न कहेंगे परन्तु होता इसके विपरीत था, वह निन्दा थोड़ी ही देर में उसी के पास पहुँच जाती थी। इस प्रकार चाचाजी की दुश्मनी दिन-पर-दिन बढ़ती जाती थी। उनसे बदला लेने और नीचा दिखाने के लिए दूसरे लोग जो आक्रमण करते थे उसे रोकने और प्रत्युत्तर देने के लिए चाचाजी का पक्ष हम लोग लेते। इस प्रकार हमें भी दुश्मन बनना पड़ता। शाखा में से प्रशाखा फूटती । एक में से दूसरी नई लड़ाई पैदा होती। शुरूआत कभी इधर से होती, कभी उधर से, पर उन झगड़ों का ताना बाना दिन-पर-दिन उलझता ही जाता। इस प्रकार एक ओर हमारा कायस्थों का अकेला घर था दूसरी और गाँव में ७० घर जाटों के थे। दोनों में भारी दुश्मनी ठन गई।

हमारे यहाँ दो बार डकैतियाँ हुई, जिनमें कई हजार का माल गया। डाकुओं ने मेरे बड़े भाई को पकड़ लिया था और इतना मारा कि वे अस्पताल में मर गये। मुकद्मा चला हमसे दुश्मनी रखने वाले गाँव के कई आदमियों को लम्बी सजायें हुई। हमे अकेला देखकर उन लोगों की हिम्मतें बढ़तीं और वे जिस भी उचित अनुचित मार्ग से हमें परेशान कर सकते थे उसमें कोई कसर न रखते । हम लोगों का मन सदा भयों से भरा रहता था, और किसी भी क्षण निश्चिन्तता तथा सुरक्षा प्रतीत न होती। चोर डाकुओं के भय से रात-रात भर जागते बीतती। कत्ल, फौजदारी और आक्रमण का भय सदा बना रहता।

हमारा घराना सरकारी नौकरियों में रहा है। ताऊजी पेशकार थे, पिताजी कानूनगो, बड़े भाई रियासत में मैनेजर थे आमदनी अच्छी थी, रौब दौब भी अच्छा था, पर सत्तर के आगे एक की क्या चले। पन्द्रह वर्षों में दोनों पक्षों का काफी नुकसान हुआ और दोनों ओर से काफी परेशानी उठानी पड़ी।

पिताजी जहाँ कानूनगो थे वहीं नये तहसीलदार बदल कर आये। वे गायत्री के बड़े भक्त थे। जो भी उनके सम्पर्क में आता उसे गायत्री का भक्त बनाते, पिता जी को भी उन्होंने अपने रंग में रंग लिया। वे भी गायत्री का जप करने लगे। धीरे-धीरे उनकी प्रकृति में परिवर्तन होने लगा । उन्होंने शराब पीना छोड़ा, मांस खाना छोड़ा, बीड़ी पीना छोड़ा, रिश्वत लेना छोड़ा और तरह तरह के व्रत-उपवास, कथा कीर्तन, तीर्थ यात्रा आदि में दिलचस्पी लेने लगे। घर के लोगों पर वे हमेशा तिरछी नजर रखते थे, कोई उनके सामने पड़ने की हिम्मत न करता था, पर अब तो वे बालकों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

की तरह सरल हो गये। सबसे बालकों की-सी सरलता के साथ बात करते । इस परिवर्तन का प्रभाव घर के दूसरे लोगों पर पड़ा। मद्य-मांस तो घर भर का बन्द हो गया और भी अनेको बुराई चली गई।

इतने बड़े परिवर्तन का प्रभाव गाँव वालों पर न पड़ता यह कैसे हो सकता था? पिताजी नम्र हो गये थे, गाँव वालों से सज्जनता और नम्रता से व्यवहार करने लगे तो उन लोगों का भी मन पसीजा। कटुता धीरे-धीरे कम होने लगी । एक वर्ष होली पर पिताजी ने अपने यहाँ गाँव के सब बड़े-बूढ़ों को प्रीत भोज दिया। सबको बुलाने खुद गये। भोजन के उपरान्त उन्होंने एक बड़ा ही हृदयग्राही भाषण दिया। दोनों ओर से जो पिछले पन्द्रह वर्षों में भूलें हुई थीं वे उन्होंने बताईं और उनके कारण दोनों पक्षों को जो हानि उठानी पड़ी उसका ब्यौरा बताया। दोष सबका अपने ऊपर लिया और हाथ जोड़ कर सब से माफी माँगी सुनने वालों के हृदय गद्‌गद हो गये। सब लोग छाती मिले और प्रतिज्ञा की कि पिछली बातों को पूर्णतया भुला देंगे।

जाट जाति दूसरों की अपेक्षा अधिक उदार होती है। सचमुच ही दोनों ओर से सारी शत्रुताएँ भुला दी गईं। अब हम सब लोग गाँव के लोंगों के साथ बिना किसी भेदभाव के रहते हैं। सब प्रकार शांति है और हम सब लोग पूर्ण सुरक्षा का अनुभव करते हुए अपनी उन्नति की योजनाओं में संलग्न हैं। पिता जी कहा करते हैं कि यह सब गायत्री माता का चमत्कार है। माता की शरण में जाने से अभी हमारी थोड़ी-सी कठिनाइयाँ दूर हुई हैं। आगे सभी दुःख शोकों के दूर हो जाने की आशा है। पिता जी नौकरी से छुटकारा पाकर घर आ गये हैं, वे अपने मिलने वालों में सदा गायत्री की महिमा का वर्णन करते रहते हैं।

तांत्रिक प्रयोगों की भाँति गायत्री द्वारा शत्रु का सर्वनाश भले ही न हो पर शत्रुता का नाश अवश्य हो जाता है। कलह, द्वेष, विरोध और फूट की जगह माता की कृपा से प्रेम, एकता और सहयोग की स्थापना होती हमने देखी है।

गृह-कलह का निवारण

श्री शिव नारायण जी श्रीवास्तव, टोंक, लिखते हैं कि पिता की मृत्यु के बाद परिवार की सारी जिम्मेदारी मेरे ऊपर आ पड़ी। हम पाँच भाई, दो बहिनें एक विधवा भावज, चाची, भुआ, छोटे भाइयों की स्त्रियाँ तथा इन सब के बाल बच्चे थे। हमारे परिवार में १९ व्यक्ति थे। जमींदारी की आमदनी थी। दो हजार रुपया सालाना के करीब जमींदारी का मुनाफा था, उसी से सब खर्च चलाता।

जमींदारी की आमदनी थोड़ी थी उसमें किसी प्रकार गुजर हो सकती थी, पर घर के लोग समझते थे कि बड़ी भारी आमदनी है और घर के लोगों को कम सुविधायें देकर मैं गुप्त रूप से उस रकम को अपने लिए बचा लेता हूँ। दूसरी बात यह थी कि पिता जी का नियंत्रण तो सब लोग मानते थे, उनसे डरते थे और उनका सामना करने की कोई हिम्मत न करता था। उनकी मृत्यु के बाद सब लोग आजाद हो गये सबकी नई-नई फरमायशें होने लगीं। हर कोई चाहता था कि उसे अधिक आराम और अधिक खर्च करने को मिले, पर आमदनी थोड़ी थी उसमें मामूली खर्च चला सकता था । पिता जी तो और अनेको बातों से आमदनी कर लेते थे वह मुझे मालूम न थी और जो मालूम थी वह अनुभव हीनता तथा व्यक्ति की कमी के कारण हो नहीं पाती थी।

पिता जी के मरने के एक वर्ष के भीतर ही हमारा घर गृह-कलेश का अखाड़ा बन गया। कोई काम-धन्धा न होने से सब लोग बेकार थे, नियंत्रण न होने से सब मुँहफट हो गये थे। दिन भर कलेश मचा रहता। गाली-गलौज, बकझक, कोसना, रूठना, बाहर के लोगों से आपस की बुराई करना यहाँ तक कि एक दूसरे को मारने तक पर उतारू हो जाता । यह सब बातें रोजमर्रा की चीज हो गई थीं।

पिता जी की मृत्यु का दुःख गृह-व्यवस्था का भार, अनुभव हीनता, जमींदारी के उलट पेच, साथ ही घर में शिवतांडव नृत्य, इन सब बातों से मेरा जी बुरी तरह जलता रहता। कभी-कभी इच्छा होती कि विष खाकर आत्महत्या कर लूँ। इन चिन्ताओं से मैं दिन-पर-दिन दुबला होने लगा। चहरा पीला पड़ता गया। रात को नींद न आती। बुरे दिन के कुचक्र से मेरा मन बड़ा दुःखी और निराश रहता।

हमारे कस्बे से तीन मील दूर एक महात्मा रहते हैं। मैं उनके पास अपने बुरे दिनों के निवारण का उपाय पूछने गया। उन्होंने मुझे बताया कि—"तुम्हारे घर में बुद्धि निभ्रम है, तुम गायत्री का जप करो उससे सद्‌बुद्धि उत्पन्न होती है" उन महात्माओं के आदेश तथा विधि व्यवस्था के अनुसार मैंने गायत्री जप शुरू कर दिया। मैं देखता था कि दिन-पर-दिन गृह-कलह में कमी हो रही है। इसी दरम्यान एक दिन हमारे बहनोई के पिता जी हमारे यहाँ आये। हम लोगों की

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दशा सुनकर उन्हें भी बड़ा दुःख था। उन्होंने घर के सब लोगों को इकट्ठा करके, सबकी शिकायतें सुनीं। फिर जो भी गलतफहमी थी उसे बड़े सुन्दर ढंग से उन्होंने समाधान किया और अन्त में इस तरह के फैसले किये जिनके अनुसार झगड़े की सारी जड़ें कट गईं । उन्होंने हम पाँचों भाइयों की रसोई अलग-अलग करा दी। जमींदारी शामिल रही । घर-भीतर सबका बँटवारा करा दिया। जो भाई कमाने लायक थे उनको उन्होंने एक हफ्ते कोशिश करके नौकरी से लगाया। सबसे छोटे भाई की पढ़ाई की व्यवस्था कराई। दो बहिनों की शादी पक्की करा गये और जो पिता जी का रुपया बचा हुआ था उसे बहिनों की शादी में लगवा दिया। इस तरह लड़ाई-झगड़े के जो-जो कारण थे उन सबको दूर कर दिया।

इस बात को दस वर्ष हो गये । हमारे घर में शान्ति और एकता कभी नष्ट नहीं होती। सब लोगों को सुबुद्धि आ गई है। मेरा विश्वास है कि गायत्री माता ही, बहनोई साहब के पिता को लेकर आई थीं और उन्होंने अप्रत्यक्ष होते हुए भी प्रत्यक्ष रूप से हमारे गृह कलह को मिटा दिया, तब से मैं नित्य दस हजार गायत्री जप करता हूँ।

पति और सास का सुधार

श्रीमती विमला देवी रस्तोगी नौरंगाबाद, लिखती हैं कि दुर्भाग्य मेरा जन्म का साथी रहा है। जब डेढ़ वर्ष की थी तभी माता जी का स्वर्गवास हो गया। बूआजी ने मुझे पाला। बूआजी की तो मेरे प्रति बड़ी ममता थी, पर उनके घर वाले मुझे फूटी आँखों भी न देख सकते थे। पराया कूड़ा समेट लाने के लिए बूआजी की सुसराल वाले उन्हें ताने देते रहते थे, मेरा तो सब ओर से तिरस्कार होता था। पिता जी फौज में नौकर थे। किसी प्रकार तिरस्कार और उपेक्षा सहते-सहते पली। विवाह में रुपया तो पिता जी का लगा पर शादी बुआजी के घर से हुई। घर वर सभी अच्छे तलाश किये। शादी क बाद में सुसराल आ गई।

कहते हैं कि बारह वर्ष बाद घूरे की भी घड़ी फिरती है, मैं पन्द्रह वर्ष की हो चुकी थी। अनुमान था कि अब मेरे दिन भी फिरेंगे और पति के घर सम्मान और शान्ति का जीवन व्यतीत कर सकूँगी। पर ऐसा हुआ नहीं। जन्म का साथी दुर्भाग्य यहाँ मेरे साथ आया, उसने यहाँ भी पल्ला नहीं छोड़ा। सास बड़ी ककर्श थी, जरा भी भूल हो जाने या उनका मन मर्जी बात न होने पर वे बुरे-बुरे अपशब्द कहती, गाली गलौज तो उनकी जवान पर रखी रहती अपनी ओर से मैं सदा ही ऐसा प्रयत्न करती कि उन्हें प्रसन्न रख सकूँ पर मेरे प्रयत्न कभी सफल न होते। तर्क खुशामद, सेवा, समझाना, नम्रता, क्षमा माँगना, सफाई देना, विरोध करना आदि सभी उपाय करके देख लिए पर कोई कारगर न हुआ वे पुराने ठेठ देहाती चलन की थीं। मैंने स्कूल में शिक्षा पाई थी, शहर में शिक्षित लोगों के बीच पली थी । रहन-सहन बोल-चाल, पहनाव उढ़ाव सभी शहरी था, इन बातों को वे वेश्यापन कहती थीं। मैंने अपने को बहुत हद तक बदला पर जैसा वे चाहती थी वैसा न बन सकी। उनका विरोध भी कभी बन्द न हुआ। पास-पडोस में, रिश्तेदारों में, घर वालों में वे मेरी भरपेट बुराई करती और मेरी ओर से सबके ख्याल खराब करतीं। दिन-रात की लड़ाई, मन मुटाव, बकझक, विरोध, बुराई सहते-सहते मुझे जीना हराम मालूम होने लगा।

विवाह से लेकर एक वर्ष तक तो पतिदेव का व्यवहार ठीक रहा। मैं उनके बारे में अधिक न जानती थी इसलिए कोई शिकायत करने की बात न थी। पर जैसे-जैसे उनके चरित्र के बारे में जानकारी मिलने लगी, वैसे ही वैसे हमारे मन में एक-दूसरे से दूर होने लगे। कुसंग की आदतें उन्हे बचपन से लगी हुई थीं। आवारा लड़के उनके पीछे लगे रहते थे। छिप कर मैंने उनकी कुचेष्टाएँ देखीं। वेश्यावृत्ति की लत लग गई थी। कई बार शराब के नशे में घर लौटे, सिगरेट तो दिन भर फूँकते रहते। बाप की कमाई को बैठे-बैठे इस प्रकार उड़ाना उनका एक मात्र काम था। घर का व्यापार था पिता जी उन्हें हर तरह समझाते और डाँटते पर दूकान पर बैठने में उनका मन न लगता। कुटेवों ने उन्हें अपने चंगुल में बुरी तरह कस रक्खा था। मैंने समझाना-बुझाना और विरोध करना शुरू किया तो वे मेरे ही दुश्मन बन गये। मारना, पीटना, गाली गलौज देना, महीनों न बोलना आदि व्यवहार मेरे साथ करने लगे। सास और पति दोनों ही मेरे विरोधी थे। कारण अलग-अलग थे, पर मुझे सताने में दोनों एक-दूसरे से बाजी मार ले जाना चाहते थे। चिड़ाने, अपमान करने, सताने में दोनों का तरीका एक था। यह विपत्तियां बूआ के घर की अपेक्षा अनेक गुनी विकट थीं। मेरे धैर्य का बाँध टूटने लगा। रोते-रोते रात बीत जाती। आत्महत्या कर लेने के विचार मन में आते रहते।

सावन में बुआजी ने बुलाया, मैं गई। मेरे हट्टे कट्ठे शरीर में हड्डियाँ रह गई थीं। बूआ जी को आशा थी कि लड़की धनी घर में पहुँची है, वह हर प्रकार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सुखी होगी। पर मेरा यह हाल देखकर उनकी छाती भर आई। हम दोनों एक-दूसरे से लिपट कर बहुत देर रोते रहे। मानों वेवशी और लाचारी की दो साक्षात् प्रतिमाएँ अपने हृदय के छाले फोड़कर उनके जल आँखों के रास्ते वहाँ रही हों। बुआजी क्या कर सकती थीं? लड़की—फिर वह भी हिन्दू लड़की—अपने भाग्य में कुछ परिवर्तन नहीं कर सकती। वह तो पराई दया पर जीने के लिए ही भगवान् ने पैदा की है।

बुआ जी के एक वयोवृद्ध गुरु थे। वे गृह दशा और हस्तरेखा दिखाने के लिए मुझे उनके पास ले गई। उन्होंने मुझे कहा कि बेटी! अगर तुम कर सको तो मैं एक अचूक उपाय तुम्हें बताता हूँ। तुम यहाँ अभी एक दो महीने तो रहोगी ही। चालीस दिन का गायत्री अनुष्ठान कर डालों। भगवती गायत्री की कृपा से तुम्हारे सारे दुःख दूर हो जायेंगे।

मैं कठिन से कठिन उपाय करने को तैयार थी। उन्होंने गायत्री उपासना का सारा विधान मुझे बता दिया। तीसरे दिन से मैंने साधना आरम्भ कर दी। प्रारम्भ में तो मन न लगा, कठिनाई भी प्रतीत हुई, पर एक सप्ताह बाद उसमें खूब मन लगने लगा और ऐसी इच्छा होती कि और अधिक देर तक इस साधन को चालू रखा जाय। मैं सच्चे हृदय से गायत्री माता से प्रार्थना करती कि माता! या तो मुझे दुःख से मुक्त कर दो या मुझे इस संसार से उठालो। एक दिन जप करते-करते मुझे झपकी-सी आ गई और ऐसा लगा कि कोई श्वेत केशों वाली वृद्धा मेरा सिर अपनी गोदी में लिए हुए बैठी है और सिर पर हाथ फिरा रही है। मैंने पूछा—माता जी आप कौन हैं? उसने बड़ी शान्ति भरी मुस्कराहट के साथ कहा—बेटी, तेरा दुःख दूर करने आई हूँ। झपकी खुली। आँखें मलकर चारों ओर देखा पर वहाँ कोई स्त्री न थी। इस अद्भुत—बैठे-बैठे दिखाई दिये स्वप्न के बारे में मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। बुआजी को स्वप्न सुनाया तो वे इसे गायत्री माता का आशीर्वाद समझ कर बड़ी प्रसन्न हुईं।

साधन पूरा हुए एक हफ्ता भी न हुआ था कि पतिदेव मुझे लिवाने आये। आशा न थी कि वे आयेंगे, क्योंकि जब मैं आई थी तब उन्होंने कहा था कि अब तेरा जन्म भर मुँह न देखूँगा और अपनी दूसरी सादी करूंगा। पर जब वे स्वयं आये तो बड़ी प्रसन्नता हुई। बुआ जी ने उन्हें अकेले में बहुत नीच-ऊँच समझाई तो वे रो गये। उसने कहा बुआजी मैं स्वयं बहुत शर्मिन्दा हूँ। अब आप और अधिक लज्जित न करें। भविष्य में आपको ऐसी कोई शिकायत सुनने को न मिलेगी। सुसराल पहुँची तो वहाँ सास तीव्र ज्वर में पड़ी थीं। उन्हें दस्त भी बेतरह हो रहे थे। चारपाई पर ही टट्टी होती थीं मैंने अपनी तन-बदन की सुध छोड़ कर उनकी सेवा की। दिन-रात उनके पास ही बैठी रहती। रात को घंटे दो घंटे के लिए बैठी-बैठी झपकी ले लेती, वरना हर वक्त उनकी सेवा सुश्रुषा पंखा करना, सिर मसलना, कपड़े बदलना, टट्टी धोना दवादारू देना आदि बातों में लगी रहती। बीस दिन की भंयकर बीमार के बाद उनका एक प्रकार से पुनर्जन्म हुआ। वे अच्छी हुईं तो उनका पुराना द्वेष बिलकुल उलट कर मेरे लिए प्रेम में परिणित हो गया पहले वे जितना द्वेष करतीं थीं अब वे उससे अधिक मुझसे प्रेम करने लगीं।

इधर पतिदेव के रवैये में भी भारी परिवर्तन हो गया। वे मुझसे बार-बार क्षमा माँगते और पिछली भूलों के लिए पश्चाताप करते। उन्होंने कुसंग छोड़ दिया और पिताजी के साथ जमकर दूकान पर बैठने लगे। एक दिन अवसर पाकर मैंने उनसे इस परिवर्तन का कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि—जब तुम अपने मैके गईं हुई थीं तो एक बड़ा विचित्र स्वप्न हुआ। स्वप्न में मैं मर गया हूँ, मेरी आत्मा को यमदूत यमलोक में पकड़ कर ले गये हैं। वहाँ मैं न्यायाधीश के सामने पेश किया गया हूँ। न्यायाधीश की विकट आकृति देख कर मैं डर के मारे मरा सा जा रहा था। उन्होंने आज्ञा दी कि यह बड़ा दुष्ट है। इसने बड़े कुकर्म किये हैं। माता-पिता को दुःख दिया है और निर्दोष स्त्री को सताया है। इसके चूतड़ों पर आग से धधकते हुए लाल लोहे के हंटर लगाओ। यमदूतों ने हंटर निकाले। अग्नि सा लाल लोहा मेरी पीठ पर सटाक से लगा। उसकी इतनी भारी पीड़ा हुई कि मैं कह नहीं सकता। चीत्कार करता हुआ मैं बिलबिलाने लगा। यमदूत हंसने लगे उन्होंने कहा—"अभी से इतनी उछल कूद मचाता है, अभी तो ऐसे निन्यानवे कोड़े और लगने हैं। पाप करते वक्त नहीं डरता था, अब ऐसा सुकुमार बनता है । दूसरा हंटर लगने को ही था कि इतने में परीलोक की रानी आ गई। उसका सौन्दर्य और प्रकाश कैसा था यह कुछ कहते नहीं बनता। उसने आज्ञा दी कि आज इसे छोड दो। इसकी स्त्री बड़ी सती है। उसके पुण्य से इसे अब छोड़ा जाता है और अभी कुछ समय इसे जीवन भी दिया गया है। जिससे यह अपनी भूलें सुधार सके और सही रास्ते पर आ सके। यमदूतों ने रानी की आज्ञानुसार मुझे छोड़

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिया। उन्हां ने मेरी पीठ में कस कर एक लात जमाते हुए ऊपर से नीचे धकेल दिया और कहा—जा! अब की बार बच गया। इन हन्टरों की याद रखना और हरकतों से बाज आना, नहीं तो अब के जो दुर्दशा होगी उससे सारी हेकड़ी भूल जायगा।

मैं ऊपर से गिरकर एक झटके के साथ अपने घर आ गया। आँख खुली तो सारा शरीर थरथरा रहा था। पीठ में भारी दर्द हो रहा था। ऐसा लगता था कि हन्टर के मारे पीठ सूज गई है और आग सी जल रही है। हाथ फिराया तो ऐसे कोई प्रत्यक्ष चिह्न तो नहीं मिले पर दर्द का अनुभव वैसा ही होता रहा। उस स्वप्न को करीब एक मास व्यतीत होने को आता है, पर अब भी पीठ का दर्द गया नहीं है और जब ख्याल आ जाता है, ऐसा मालूम होता है मानों लाल-लाल आँखें निकाले यमराज सामने बैठे हैं और आग में तपाया हुआ लाल हन्टर पीठ में लगने ही वाला है। साथ ही मैं उस परलोक की रानी की कृपा को भी नहीं भूलता जिसके द्वारा उस दिन प्राण बचे और फिर जीवन मिला। अब मैं ऐसा धर्मानुकूल जीवन व्यतीत करूँगा, जिससे इस प्रकार के दण्ड न भुगतने पड़ें।

पति का यह स्वप्न गायत्री माता की कृपा कोर की एक किरण थी। उन्होंने मुझे दुःख से मुक्त किया, पतिदेव को सुधार दिया, सासजी को बदल दिया। तीनों दिशाओं में इतना साधारण हेर-फेर करके उन्होंने मेरी दुनियाँ ही बदल दी। अब मेरा वर्षों का नित्य नियम है कि एक हजार मन्त्र जपे बिना अन्न जल ग्रहण नहीं करती। परलोक की रानी-गायत्री-को पतिदेव भी मेरी ही भाँति श्रद्धा पूर्वक भजते हैं। हमारे घर में सब प्रकार आनन्द ही आनन्द है।

कन्या का शानदार विवाह

श्रीमती सुंतिचा देवी अग्रवाल, दिल्ली, लिखती हैं कि हम लोगों का कुटुम्ब सब प्रकार से सम्पन्न था । दिन सबके एक से नहीं रहते। कुछ समय से हम लोगों की आर्थिक स्थिति आवश्यकता से अधिक खराब है। कारण इसका कमाने वाला एक और कुटुम्ब में अधिक व्यक्तियों का होना और कमाने वाला भी ऐसा कि इंजीनियर जैसे लाभदायक पद पर रहते हुए भी, रिश्वत की एक कोड़ी लेना हराम समझे। धर्म पर भरोसा रख कर पसीने की कमाई से ही गुजारा होता है।

वर्तमान काल की महँगाई इतनी बढ़ी हुई है कि मध्यम श्रेणी का मनुष्य धर्म की कमाई से केवल गुजारा कर सकता है, पीछे के लिए जमा करते चलना आजकल की स्थिति में असम्भव है। हम लोगों का भी ऐसा ही हाल है पतिदेव की नौकरी से जो पैसा मिलता है वह किसी प्रकार जरूरी आवश्यकता पूरी कर पाता है। कई बार प्रयत्न किया कि कुछ बचाते चलें, जो भविष्य के काम आवे पर सारी योजनाएँ निष्फल रहीं, कुछ संचय न किया जा सका।

हमारी एक कन्या विवाह योग्य हो चुकी थी। अपनी पारिवारिक प्रतिष्ठा तथा कन्या की योग्यता के अनरूप वर खोजने में सदैव आर्थिक अड़चने सामने आइं । वैश्य समाज में अन्य व्यापार की भाँति दहेज लेना भी एक व्यापार है। जिनकी स्थिति थोड़ी अच्छी है वे अपने लड़के के पैदा होने से वसूल करना चाहते हैं। हम लोगों ने कई लड़के ढूँढे पर इसी समस्या की चट्टान से टकराकर सारे प्रयत्न निष्फल होते रहे।

पतिदेव धार्मिक विचारों के व्यक्ति हैं। उन्हें गायत्री पर बहुत अधिक श्रद्धा है। जब मैं चिन्तित होकर कहती कि कन्या २१ वर्ष की हो चुकी है उसके विवाह के लिए साधन जुटाने आवश्यक हैं तो वे हँसकर यही उत्तर देते—"मेरी गायत्री माता शादी करेगी" मैं उनके इस उत्तर पर प्रायः झुंझला पड़ती थी। भला बिना रुपये के भी कहीं अच्छे घर वर मिल सकते हैं? गायत्री माता क्या अपनी गाँठ से दहेज दे जायेंगी? यह विचार मेरे मन में उठते रहते थे।

परन्तु धन्य हो गायत्री माता, तुमने असम्भव को सम्भव करके दिखा दिया । ता. १३ जुलाई सन् ५१ को बड़े ही सन्तोषजनक ढङ्ग से कन्या का विवाह हो गया। पैसे की सारी असुविधा दूर हो गई। विवाह भी ऐसा जैसा बड़े आदमियों का होता है। अब मेरा मन श्रद्धा से भर गया है। भविष्य के बारे में जो अनेको चिन्ताएँ रहती थीं वे सब शान्त हो गई हैं, विश्वास हो गया है कि माता की कृपा का एक कण भी जिन्हें प्राप्त हो जाता है उन्हें किसी बात का अभाव नहीं रहता। मैंने निश्चय किया है कि पतिदेव की भाँति मैं भी गायत्री माता की शरण में अपने को सौंप दूँगी।

अन्याय का प्रतिफल

श्री सत्यनारायण जी चन्दन पुरवा, लिखते हैं कि गायत्री माता की शरण लेने से मेरी प्रवृत्ति धार्मिक मार्ग में दिन-पर-दिन बढ़ती गई। गीता, रामायण आदि धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय बढ़ा और स्वभाव एवं चरित्र में सात्विकता की वृद्धि होती गई। लोगों के मन में मेरे प्रति सद्भाव बढ़े और वे मुझसे कई सेवाएँ लेने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

के लिए आग्रह करने लगे। कभी अपनी तुच्छता प्रगट करके उन सेवा भारों मैं अपने के असमर्थ बताता तो लोग घमंडी कहते और मुझे उनका आग्रह मानने को विवश होना पड़ता।

ग्राम पंचायत तथा गाँव की अन्य समस्याओं में पूछ होने लगी। खरी स्पष्ट और न्यायानुकूल मत प्रगट करने के अपराध में वे लोग मुझसे नाराज रहने लगे जिनके स्वार्थों को धक्का पहुँचता था। मैं अपनी समझ से किसी का बुरा नहीं बनना चाहता था, पर सही बात कहने में भी बुराई गले बँध जाती है। कुछ लोग मुझसे घोर असन्तुष्ट रहने लगे। वे इस बात की घात लगाने लगे कि किस प्रकार इसे नुकासन पहुँचाया जाय।

एक ठाकुर इनमें अग्रणी थे। हर अन्याय में उनका हाथ आगे रहता था। एक काछी का नीम का पेड़ अन्याय पूर्वक काटकर अपने घर में रख लिया। काछी ने सब भले आदमियों से पुकार की पर उसे न्याय न मिला। मैं काछी को न्याय तो न दिला सका पर मेरी सहानूभूति उसके साथ अवश्य थी। उस ठाकुर की दृष्टि में किसी पीड़ित के साथ सहानुभूति रखना अक्षम्य अपराध था। यह मुझे मारने का षड्यन्त्र करने लगे।

एक दिन मैं गाँव के एक सुनार के दरवाजे पर बैठा हुआ था। इसी समय ठाकुर का जवान लड़का आया और जोर से लाठी मार कर भाग गया। चोट करारी लगी थी। मैं स्वयं तो उसका प्रतिकार नहीं कर सका पर गाँव वालों में रोष छा गया। लोग मेरा बदला लेने की तैयारी करने लगे। झगड़ा बढ़ने का लक्षण दिखाई दे रहा था। मैंने पूरा प्रयत्न करके उस उपद्रव को टालने की कोशिश की, क्योंकि इस प्रकार झगड़ों से द्वेष की बेल बढ़ती है और गांव के गांव तवाह हो जाते हैं। उत्तेजित लोगों को शान्त करने के लिए उनसे कहा—''मैं गायत्री का उपासक हूँ'', वह सर्व शक्तिमान है, तुम न्याय माता पर छोड़ दो, वे स्वयं ही न्याय कर देंगी। इस प्रकार समझाने से वे मान गये, एक बड़ी गड़बड़ी होते-होते बच गई।''

माता का कोप बड़ा कठोर है। रावण और कंस जैसे बलवान को जो शक्ति धूल में मिला सकती है, उसके लिए बरसाती मेढकों की क्या बिसात है। लाठी मारने वाले, युवक को अचनाक एक दिन हैजा हुआ और २४ घण्टे के भीतर उसकी जीवन लीला समाप्त हो गयी। इस दुर्घटना को थोड़े ही दिन बीते कि उस अन्यायी के शेष भाइयों को पुलिस पकड़ ले गई और डकैती के अभियोग में उनको पाँच-पाँच साल की कैद हो गई। लोगों ने आँखों देख लिया कि अन्याय को दबाने की शक्ति रखने वाली कोई दैवी शक्ति संसार में अवश्य मौजूद है।

एक दूसरी घटना मेरी लड़की के सम्बन्ध में है। उसे अन्दरूनी बीमारी थी। जिससे उसे पीड़ा रहती थी। लड़की पढ़ी-लिखी है। मेरी गायत्री पुस्तकों को देखा करती है, इसने मेरी सलाह लेकर जप आरम्भ किया और उसका रोग बिल्कुल अच्छा हो गया।

गायत्री द्वारा विघ्नों का विनाश

श्री भगवान सिंह ठेकेदार, दमोह, लिखते हैं कि पहले में साधारण भगवत भजन किया करता था जब से मैंने गुरुदीक्षा ली तब से गायत्री मन्त्र में प्रवृत्ति हुई क्योंकि मेरे गुरु एक तपस्वी महात्मा हैं जो 24 वर्ष से फलाहारी हैं और दमोह शहर से तीन मील दूर एक पहाड़ी पर रहते हैं। यह स्थान बँदकपुर तीर्थ सड़क पर है इनकी सच्ची शिक्षा ने मेरे मन को गायत्री की तरफ झुका दिया और ''अखण्ड ज्योति'' की पुस्तकें पढ़ने से मुझे और भी श्रद्धा हुई । इस तरह जप करना शुरू कर किया।

गुरु के आदेश से तथा गायत्री का महत्त्व सुनने-पढ़ने से यह मालूम हुआ कि गायत्री माता स्वयं आदि शक्ति हैं और उसी से जड़ चेतन संसार उत्पन्न हुआ, इसलिए मैं इस शक्ति को महत्त्व देता हूँ तथा मानता हूँ कि इसके बराबर पवित्र करने वाली कोई भी शक्ति नहीं है । इस साधन से मेरा मन निर्मल होता जा रहा है।

शादी होने के ५-६ वर्ष बीते थे इसी बीच में तीन सन्तानें गुजर चुकीं तथा स्त्री भी तपैदिक की बीमारी से गुजर चुकी । उसकी बीमारी में मेरा पैसा खत्म हो गया और ९००) का ऋणी भी हो गया। इस बात से मुझे बड़ा रञ्ज रहता था, मन में बड़ी अशान्ति रहती थी ऐसी अवस्था में मुझे सहायक कोई नहीं दिखता था इसी समय गायत्री माता की कृपा से मुझे शान्ति मिली। इसका यह कारण है कि जब मैं घबड़ाने लगता तो गायत्री जपने से शान्ति मिलती थी। नित्य प्रति ब्रह्म मुहुर्त में उठकर शौच स्नानादि से निवृत होकर १५०० जाप करता रहा ऐसा क्रम करीब १ वर्ष चलता रहा। इसके बाद मैंने गायत्री तन्त्र की पुस्तक में से पढ़ कर गायत्री तप शुरू किया । ता. ५-८-५० से इस प्रकार एक पैर पर तथा ऊपर को हाथ किये, बिना किसी आश्रय के १३०० मंत्र तथा दसांश हवन किया करता

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

था । इस तप से मुझे चौथे दिन १००) की प्राप्ति हुई तथा जो आदमी पैसा देने से इन्कार करते थे वे भी सहायता करने लगे।

अभी हाल की बात है ता. ६-३-५१ को मेरे पास पैसे की कमी थी और काम रुक गया था मगर माता की कृपा से मुझे ३००) काम करने को मिल गये और मेरा रुका हुआ काम चलने लगा। मैं मामूली परिस्थिति का ठेकेदार हूँ। मेरे उपर ब्याज का कुछ रुपया साहूकार का आता था। साहूकार चाहता था कि मेरा सब काम रुक जाय पर उसे एकदम पूरा रूपया मिल जाय। मैं चाहता था कि आधा एक बार में और आधा किश्तों में दूँ। इसके लिए मैंने इकरारनामा भी लिख दिया था। इस पर भी साहूकार को विश्वास न हुआ। वह दफ्तर में किराये के गुण्डे लेकर पहुँचा और तरह-तरह की धमकियाँ देने लगा। जिस दिन मुझे रुपया मिलने वाला था उस दिन वह बड़ी तैयारी में था, पर उसकी एक न चली और उस लक्ष्मी पुत्र घमण्डी साहूकार को मुँह की खानी पड़ी और बड़ा शर्मिन्दा हुआ। इस शर्मिन्दगी से उसका क्रोध बढ़ा और गुण्डों को पैसा खिलाना शुरू किया मेरे मारने के लिये ,मैं भी माता के सहारे व विश्वास से शहर में लकड़ी लेकर घूमता रहा मगर गुण्डा लोग कुछ न कर सके । मेरी आत्मा को ऐसा मालूम पड़ता था कि माता मेरे साथ रक्षा के लिए चल रही हैं। जब वह शान्त हो गया, तब मैंने उसका रुपया चुका दिया।

स्त्री और सन्तान के चले जाने का शोक माता की दया से दूर हुआ। आर्थिक तंगी के अंधकार में समय-समय पर रास्ता निकला और आक्रमणकारियों से रक्षा हुई। माता मेरी रक्षा करती है और आत्म-बल बढ़ाती है, इसका मैं प्रत्यक्ष अनुभव करता हूँ।

अशान्ति से शान्ति की ओर

श्री हेमचन्द्र गुप्ता, दिल्ली, लिखते हैं कि अब से कोई १० वर्ष पहले तक मैं गायत्री-साधना के विषय में नितान्त अनिभिज्ञ था। परन्तु अखण्ड ज्योति में प्रकाशित गायत्री सम्बन्धी लेखों को पढ़कर हृदय में आकांक्षा जोर पकड़ती गई कि हमें भी गायत्री साधना अवश्य करनी चाहिए। एक और बात जिसने हमारी गायत्री साधना को नियमित तथा सफलभूत बनाया । इस साधना का और साधनाओं की अपेक्षा आडम्बर रहित होना। विवेचना करने पर यही प्रतीत हुआ कि यह साधना अन्य साधनाओं की अपेक्षा धार्मिक बन्धन एवं नियमों से मुक्त तथा आडम्बर से रहित है, और इस कारण सहज ही यह साधना मनुष्य के दैनिक जीवन का अङ्ग बन सकती है । इन बातों से प्रेरित होकर मैंने गायत्री साधना आरम्भ कर दी और वास्तव में इस साधना को करते हुए कभी भी अपने दैनिक कार्यक्रम में किसी प्रकार की कठिनाई अथवा अड़चन अनुभव नहीं हुई।

इस साधना के करने के फलस्वरूप मेरे स्वभाव एवं आचरण में आश्चर्यजनक परिवर्तन स्वयमेव हो गया है। कलह आदि की बात तो दूर रही प्रत्येक सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति के लिए हृदय में खुद व खुद प्रेम, सहानुभूति, उदारता और सेवा के भाव उत्पन्न हो जाते हैं। एक प्रकार का ऐसा प्रभाव सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति पर पड़ता है । उसके आचरण से भी प्रेम, सहानुभूति, उदारता और सेवा के भाव टपकने लगते हैं । हमारे घर में नीचे ऊपर लगभग आठ परिवार और रहते हैं और उन सब बातों में जरा-जरा सी बात प्रति दिन समय कुसमय लड़ाई झगड़ा, गाली-गलौज होती रहती थी, परन्तु अब यह बहुत हद तक बन्द हो गई है। क्योंकि प्रत्येक परिवार यह और देखता है कि हमारी तो लड़ाई प्रत्येक से होती रहती है, परन्तु इनकी (हमारी) किसी से नहीं होती। अतएव क्यों व्यर्थ में लड़ाई झगड़ा करें, इस प्रकार परोक्ष रूप से हमारी गायत्री साधना ने हमारे समस्त घर में शान्ति स्थापित कर दी है।

सन् १९४९-५० में स्वयं हमारे परिवार पर कुछ अत्यन्त भीषण प्रहार नियति के पड़े, और उन प्रहारों के कारण एक बारगी भविष्य अत्यन्त अन्धकारमय दिखाई देने लगा था। परन्तु ऐसे समय में हमने आचार्य जी की सलाह से गायत्री अनुष्ठान किया और वेदमाता गायत्री की अनुकम्पा से हम उन विपत्तियों से मुक्त हो गये। इन विपत्तियों से मुक्त होना इतना असम्भव और आश्चर्य जनक लगता था कि हमें अब भी सहसा यह विश्वास नहीं होता कि वास्तव में उन विपत्तियों से मुक्त हो चुके हैं।

इसी प्रकार का एक आश्चर्यजनक अनुभव गायत्री साधना का हमें हो चुका है। हमारे एक मित्र के दस वर्षीय पुत्र का दिमाग कुछ खराब था और इस दिमागी खराबी के कारण एक दिन वह बगैर किसी को कुछ बताये घर से कहीं निकल गया। हमारे मित्र ने काफी ढूँढ़ा, परन्तु कहीं पता न चला। इस प्रकार एक मात्र पुत्र के खो जाने से मित्र महोदय बहुत चिन्तित और दु:खी रहने लगे। एक दिन उसका इस बावत जिकर मुझसे आया, मैंने उन्हें वेद माता गायत्री की शरण में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जाने को कहा और उन्हें गायत्री मन्त्र याद कर दिन में तीन समय उसका जाप करने को कहा। मित्र महोदय को जाप करते तीन दिन हुए थे कि चौथे दिन उनके रिश्तेदार उनके लड़के को लिए हुए उनके घर पर पहुँचे और लड़के को मित्र महोदय को सौंपकर बोले कि इत्तफाक से बेइरादे मैं गुडगाबें पहुँच गया था, वहाँ एक हलवाई की दूकान पर इसे बैठे देखा। हलवाई से कहकर मैं इसे आपके पास ले आया हूँ खोये हुए पुत्र को पाकर मित्र महोदय आनन्द से गद्‌गद हो गए और हमारे प्रति कृतज्ञ होने लगे कि हमने उन्हें ऐसे अमूल्य मंत्र की शिक्षा दी।

इस प्रकार मेरा तो अपना अनुभव वह पक्का हो चुका है कि गायत्री-साधना सर्व शक्तिमान साधना है और यह मनुष्य को अलौकिक गुणों से युक्त बना देती है।

प्रेतात्मा का शमन

श्री धरणीदत्त जी शास्त्री, वेदान्ताचार्य वाराणसी काशी, लिखते हैं कि मेरे पितामह दादा, मेरठ निवासी पं. श्री कन्हैयालाल जी ब्रह्मचारी साधारण पंडित व्यक्ति थे। किन्तु गायत्री के परमोपासक थे, प्राप्तः ४ बजे से १० बजे तक गायत्री जप में ही संलग्न रहते थें। करीब २० वर्ष पूर्व की घटना है। हम लोग बीकानेर राज्यान्तरगत हनुमान गढ़ के पास एक गाँव में रहते थे। रात का समय था, (करीब २॥ या ३ बजे का) कुएँ पर पानी लेने जा रहे थे । मैं भी साथ था। उसी समय एक प्रेतात्मा ने मुझ पर आक्रमण करना चाहा। वह पहले वृहत शूकर बनकर आया। पश्चात् महिष (भैंसा) बना। यह देखकर ब्रह्मचारी जी ने मुझे अपने सामने कर लिया। तब वह मनुष्य रूप धारण कर हमारे साथ चलने लगा। ब्रह्मचारी जी निर्भय एवं शान्त हो अपने मार्ग पर चल रहे थे। वह अनेक प्रकार के रूप दूर ही दूर से प्रकट करता रहा। मैं भी यह विचित्र तमासा देखकर दंग था।

मैंने स्पष्ट देखा कि वह प्रेतात्मा कभी मुख से कभी शिर से भंयकर अग्निज्वाला फेंकता है। कभी मनुष्य, कभी हिंसक जन्तु बनकर भयोत्पादन करता है। यह भ्रम नहीं था, सत्य घटना थी और करीब १-१॥ घंटे तक, वह अपना अनेक प्रकार का प्रदर्शन करता रहा।

जब मैंने बाबा से पूछा कि वह कौन था, तब उन्होंने कह दिया वह प्रेतात्मा थी, हम लोगों को छेड़ना चाहता था। हमने पूछा कि आप से कुछ न कह सका? तब उन्होंने कहा कि बेटा यह गायत्री मंत्र का प्रभाव है। ऐसे अनेक भी आवें तो हमारा कुछ न बिगाड़ सकेंगे। तब हमने कहा कि वह मंत्र हमें भी दे दो तो उन्होंने कहा कि जब तुम्हारा जनेऊ करायेंगे तब तुम्हें भी देंगें। जनेउ के समय मुझे गायत्री मंत्र मिला, जिसकी मैं श्रद्धापूर्वक उपासना करता रहता हूँ।

भूत बाधा से निवृत्ति

श्री सोहनलाल मेहरोत्रा, अमरावती, का कहना है कि विवाह को दो वर्ष भी पूरे न हो पाये थे कि मेरी स्त्री को भूत बाधा लग गई। कभी वह सोते-सोते एक दम चीखने लगती, कभी ऐसा आवेश हो जाता कि पागलों की तरह चेष्टायें करने लगती, कई बार उसके मुंह से ऐसी बातें निकलती जिससे मालूम होता कि किसी दूसरी आत्मा ने उसके शरीर पर कब्जा किया हुआ है। जब भूत बाधा चढ़ती तब तो वह बल पूर्वक चेष्टाएँ करती पर जब वह आवेश शान्त हो जाता तो उसकी नस-नस में दर्द होता और बीमारों की तरह पड़ी रहती। स्वास्थ्य दिन पर दिन गिरता जाता था। चहरा पीला पड़ता गया। घर भर को यह चिन्ता रहने लगी थी कि यह बाधा शान्त न हुई तो बहू की जान बचना मुश्किल है।

डॉक्टर कहते थे रजोधर्म की खराबी है, उन्होंने कितने ही तरह के इंजेक्शन दिये। वैद्य कहते थे उन्माद है उन्होंने कितने ही पाक और रसायन दिये, पंडितों ने ग्रह दशा के लिए जप और अनुष्ठान किये, ग्रह शान्ति कराई। फकीरों के ताबीज बाँधे और ओझा लोगों ने झाड़ फूँक का जो कुछ टंट घंट बताया वह सब किया और कराया। बालाजी के दर्शन कराने ले गये। गंगा स्नान कराया। पर इनमें से किसी उपचार से कोई लाभ न हुआ। छः महीने में करीब आठ सौ रुपया इन सब बातों में खर्च हो गया। हम लोगों की आर्थिक दशा ऐसी न थी कि इस प्रकार के खर्च अधिक दिन बर्दाश्त कर सकते। दूसरी और इतना करने पर भी कुछ लाभ नहीं हो रहा था। इस दोहरी चिन्ता से घर के सब लोगों का चित्त दुःखी रहने लगा।

एक दिन पिता जी को स्वप्न हुआ। स्वप्न में उन्होंने अपने बाबा को देखा। बाबा ने उनसे कहा, "तुम लोगों के दुःख को देख कर मैं आया हूँ। तुम सवा लाख गायत्री का जप और एक हजार आहुतियों का हवन करो। इतना करने पर फिर कोई भूत बाधा तुम्हारे घर में न रहेगी। बहू को सोंठ के साथ दूध

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पिलाया करो। कोई दवा मत करो। सोंठ और दूध से उसकी तन्दुरुस्ती ठीक हो जायगी।" इतना कह कर बाबा विदा हो गये। तब पिता जी ने स्वप्न का हाल सब लोगों से कहा और वैसा ही उपचार करने का निश्चय कर लिया गया।

मैंने और पिताजी ने मिलकर गायत्री अनुष्ठान पूरा किया। हवन में रोगिणी से भी आहुतियाँ दिलाई गयीं। साधन पूरा होने पर ब्राह्मण भोजन कराया गया। रोगिणी को चिकित्सा के रूप में दोनो समय सोंठ खिलाकर ऊपर से दूध पिलाने का उपचार किया गया। बाधा बड़ी सरलता से दूर हो गई। जप के दिनों एक बार बीच में आवेश आया। उस प्रेतात्मा ने रोकर कहा "मुझसे गलती हुई जो आप लोगों के घर आया। अब चला जाऊँगा। जहाँ गायत्री है वहां हमारा रहना किस प्रकार हो सकता है? " इसके बाद फिर कोई आवेश नहीं आया। हवन पूरा होने के बाद तो स्त्री स्वयं कहने लगी कि अब मेरा शरीर हल्का हो गया अब उसमें कोई बाधा भरी हुई नहीं मालूम पड़ती। थोड़े दिन में उसका बिगड़ा हुआ स्वास्थ भी ठीक हो गया। अब तक तीन बालकों की माता है, तब से लेकर आज तक फिर कभी भूत बाधा का आक्रमण उस पर नहीं हुआ।

हमारी बहन की ननद को भी इसी प्रकार भूत आवेश आता था, हमारे बताने पर उसने भी गायत्री का उपचार किया और वह भी अच्छी हो गई। हमारे यहाँ गायत्री की बड़ी मान्यता है।

प्रेत प्रकोप का शमन

डॉ. बगवान स्वरूप शूल, चांचोड़ा, लिखते हैं कि आज से १९ वर्ष पूर्व की बात है, मेरी द्वितीय धर्मपत्नी ने प्रथम पुत्र प्रसव किया था। छठी तक तो कोई घटना नहीं घटी। छठी का हवन होने के अनन्तर धर्म पत्नी अचानक रोग ग्रस्त हो गयी। ज्वर तथा खांसी का वेग अत्यधिक बढ़ गया। उपचार किये किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ, उस समय घटनाओंवश भाभज आदि का यह विश्वास हो गया था कि प्रेत बाधा है, किन्तु मेरे आर्यसमाजी होने के कारण स्पष्ट रूप से कहने में संकोच करती थीं, निरन्तर उपचार करने से कोई लाभ नहीं हो रहा था मैं स्वयं परेशान था क्रमशः भाभज के विश्वास में मुझे भी कुछ प्रगति होने लगी। मैं अपने व्यायाम शिक्षक के पास गया व उनसे सब हाल कहा। वे इस विषय में कुछ अधिकार रखते थे, उनके प्रयत्न से केवल यह पता चल गया कि मेरी प्रथम पत्नी प्रेत योनि में गई है, व उन्हीं के कारण यह संकट आया है। प्रेतात्मा का हठ था कि वह नवीन पत्नी का प्राण लेकर रहेगी।

इस पत्नी को कष्ट न देने व उनका पीछा छोड़ने के लिए बहुत अनुरोध किया किन्तु कोई फल नहीं निकला। प्रेतात्मा ने तीन दिवस की अवधि नियत कर दी कि "तीसरे दिन अर्थात् जन्माष्टमी के सांयकाल ७ बजे ले जाऊँगी।" अब मेरी चिन्ता का पारावार न रहा। किन्तु "जाको राके साँइयां मार सके न कोये" वाली कहावत चरितार्थ हुई, दैवी सहायता स्वरूप प्रेत विद्या के ज्ञाता पं. रामनारायण जी दूसरे दिन प्रातः काल रुढियाई से अचनाक आ गये, मैंने सारी कष्ट कथा सुनाई। सुनकर उन्होंने रस्सी मंगाई व मुझसे रोगिणी को पकड़ने के लिए कहा। मैंने रोगिणी को पकड़ लिया व पंडित जी जो दूसरे कमरे में थे रस्सी को जमीन पर मारना आरम्भ किया। इधर रोगिणी ने चिल्लाना आरम्भ किया—"मर गई, मर गई, मारडाला मारडाला" आदि।

मैं अत्यन्त विस्मित था कि रस्सी तो दूसरे कमरे में जमीन पर मारी जा रही है और प्रभाव प्रेतात्मा पर हो रहा है इसी प्रकार जन्माष्टमी की दोपहर तक कई विस्मय जनक अनुभव हुए । पंडित जी की साधना के फलस्वरूप प्रेतात्मा को विफल जाना पड़ा। इतना जरूर कह गई कि इसको त्याग कर इसके पिता के यहाँ भेज दो। इससे कोई सम्बन्ध मत रक्खो। जन्माष्टमी सकुशल व्यतीत होने पर पंडित जी को विदा कर दिया। दो एक दिन पश्चात् मेरे स्वसुर आकर अपनी पुत्री को पछार लिवा ले गये।

कई दिन तक कोई कुशल समाचार प्राप्त न होने के कारण मुझे चिन्ता हुई व पछार की यात्रा के लिए रवाना हुआ। पछार पहुँच कर मालूम हुआ कि इतने दिन सकुशल व्यतीत हुए केवल आज ही हालत बिगड़ी है। इसको बाबूजी ने कुछ पढ़कर जल के छींटे देकर सम्भाल लिया। इससे मैंने अनुमान किया कि अभी पूर्ण रूप से पीछा नहीं छोड़ा है अपितु मेरे कार्यों पर भी दृष्टि रखी जा रही है, मैंने बाबू जी से पूर्णतः उपचार कराने के लिए अनुरोध किया तो उन्होंने नवदुर्गाओं में उपचार कराने के लिये आश्वासन दिया व उस समय मुझे भी आने को कहा। एक दिन ठहर कर मैं गुना वापस आ गया।

नियत तिथि पर बाबूजी पं. कृपाराम को लाये और प्रेत बाधा का स्थायी निवारण करने का विधान किया गया । जो दशा हो रही थी, जो दृश्य उपस्थित हो रहे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

थे, जो घटनायें घटित हो रहीं थी, उन्हें देखकर किसी अविश्वासी को भी प्रेतात्मा की करतूतों के सम्बन्ध में सन्देह नहीं हो सकता है। अन्त में विधान सफल हुआ और अन्तिम रूप से प्रेतबाधा से छुटकारा मिल गया।

मैंने पंडित जी से पूछा कि किस साधना के फलस्वरूप आप में यह शक्ति आई है, किन्तु उन्होंने नहीं बताया। परन्तु सभी लोग जानते हैं कि भगवती गायत्री की कृपा से ही उन्हें यह शक्ति प्राप्त हुई थी।

अभिचारी का अन्त

श्री सुखराम तिवारी, अम्बिकापुर, कहते हैं कि हमारे गाँव में अब से तीस वर्ष पूर्व एक नेनुंआ नामक दुष्ट व्यक्ति रहता था जिसकी दुष्टता से अनेक लोगों ने त्रास पाया। चोरी, डकैती में बड़ा निपुण था। जुआ और मद्यपान उसके नित्य कर्म थे। दो बार वह पुलिस द्वारा पकड़ा भी गया, पर साफ छूट गया।

उसका गुरु एक अघोरी तांत्रिक था। जिसने उल्टी गायत्री का चौबीस लक्ष जप, २४ प्रकार की अघोर क्रियाओं के साथ किया था। उसकी आँखें मशाल सी जलती थीं। मरघट में रहता था। वह अघोरी बड़ा चमत्कारी था, तरह-तरह की वस्तुएँ आकाश में से मँगा देता था। गुस्से में आकर ललकार दे तो गाभिन पशुओं का गर्भपात हो जाता था।

उस अघोरी की सेवा में नेनुंआ रहता था। जिससे उसकी खटक जाती थी, उस पर अघोरी द्वारा ऐसी चौकी रखवाता था कि उसका प्राण बचना कठिन था। एक लाला जी के जवान लड़के से उसकी कहा सुनी हो गई। दूसरे दिन उस पर चौकी रखवा दी। वह लड़का दूकान से घर गया कि आँगन में पछार खाकर गिर पड़ा, खून की उल्टी हुई और आधे घण्टे में मर गया। इसी प्रकार दो आदमियों की जान और भी ले चुका था। गाँव भर उससे डरता था उसने सबके ऊपर अपना रौब और आतंक जमा रखा था।

मेरे दाउ इस गांव में खाते-पीते आदमी थे। देन लेन भी करते थे। नेनुंआ ने उनसे डेढ़सौ रुपया कर्ज माँगे। ताऊ जी जानते थे कि इससे कर्ज वसूल होना असम्भव है इसलिए उनने मना कर दिया। निराशा जनक उत्तर पाकर वह आग बबूला हो गया और तरह-तरह की धमकियाँ देने लगा। तीसरे दिन हमारी आठ सेर दूध देने वाली भैंस बीमार पड़ी और डेढ़ दिन के भीतर मर गई। पाँचवें दिन हमारी ताई और उनका गोद का बच्चा दोनों को तीव्र ज्वर चढ़ आया। घर भर में कुहराम मच गया। नेनुंआ का आतंक सब के मन पर जमा हुआ था।

ताऊ जी बड़े सच्चे और निर्भीक थे, वे बड़े सज्जन और नम्र थे पर दुष्टों के आगे न झुकने में बहुत कड़े थे। चार कोस दूर एक वेदपाठी पंडित रहते थे। वे त्रिकाल संध्या, वेद पाठ और नित्य यज्ञ करते थे। गायत्री के अनन्य भक्त थे। ताऊ जी घोड़ी पर बैठे और चल दिये और रातों-रात उन पंडित जी को घर ले आये। पंडित जी ने कहा कि नेनुंआ और उसके अघोरी की शक्ति को निष्फल कर दिया जायगा।

पंडित जी आसन मार कर जप पर बैठे । कुछ ऐसा चमत्कार हुआ कि उसी समय से ताई का व उनके बच्चे का ज्वर घटना आरम्भ हो गया और दोपहर तक वे पूर्णतया अच्छे हो गये। पंडित जी नौ दिन घर रहे। उन्होंने गायत्री का पुरश्चरण किया। वह यज्ञ जिस दिन समाप्त हुआ उसी दिन नेनुंआ को लकवा मार गया उसके हाथ पैर रह गये। अघोरी स्थान को छोड़कर भाग गया। नेनुआ दो वर्ष जीया एक-एक रोटी के लिए तरस-तरस कर बड़ी दुर्गति से मरा। वे पंडित जी कहा करते थे कि गायत्री की उल्टी साधना से जो अभिचार शक्ति प्राप्त होती है वह वेदोक्त पुरश्चरण की शक्ति के सामने ठहर नहीं सकती।

चिकित्सा में सफलता का अद्भुत चमत्कार

वैद्य श्रीराम आयुर्वेदाचार्य, लिखते हैं कि गायत्री ईश्वर की प्रत्यक्ष कृपा है। जिसे वह प्राप्त है उसे किसी वस्तु का अभाव नहीं होता। उसकी सांसारिक कठिनाइयाँ और आध्यात्मिक उलझनें स्वयंमेव हल हो जाती हैं। मेरा स्वयं का जीवन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। हमारे घर आयुर्वेद का धंधा तीन पीढ़ियों से चलता है। पिताजी और दादा जी इस क्षेत्र के ख्याति प्रसिद्ध वैद्य रह चुके हैं। पिता जी मुझे एक कुशल वैद्य बनाना चाहते थे। उनकी आयुर्वेद की उन्नति करने की प्रबल इच्छा थी, परन्तु दैवयोग से उनकी यह इच्छा अधूरी रह गई। उन्हें अपना शरीर छोड़ना पड़ा। मैं उस समय केवल १२ वर्ष का था। माता जी ने सारे घर का भार संभाला। पैसे का अभाव नहीं था, परन्तु औषधालय बंद हो जाने की चिन्ता थी। उसे बंद करना पड़ा।

मुझे आयुर्वेदाचार्य बनाने की इच्छा की पूर्ति में माता जी ने काशी पढ़ने भेज दिया। काशी में रह कर मैंने शिक्षा प्राप्त की और अपने स्थान आकर पुनः औषधालय चलाना शुरू किया।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वर्ष भर तक घर का खाना पड़ा, क्योंकि कोई बीमार नहीं आते थे। जो थोड़े बहुत आते थे वे भी मेरे से रुष्ट होकर दूसरे राजकीय औषधालय पर चले जाते थे, क्योंकि मेरी चिकित्सा का ढंग उन्हें अधिक खर्चीला मालूम पड़ा। मैं भी काशी में रहा था। मेरे रहन-सहन का तरीका शहरी बन गया था। स्वभाव में पूँजीपति बनने की इच्छा ने घर कर लिया था। थोड़े मूल्य की दवा का अधिक मूल्य लेकर थोड़े ही दिन में मालदार बनना चाहता था। घर पर बुलाने की फीस भी अन्य स्थानीय वैद्य से अधिक लेता था। सीधे मुँह बात नहीं करना चाहता था। अपने विद्या के घमंड में था कि मैं अन्य वैद्यों से योग्य हूँ। व्यावहारिक ज्ञान का अभाव होने से अन्य छोटे-छोटे वैद्यों की दुकानें चल पड़ीं और मेरा इतना बड़ा चिकित्सालय सूना पड़ा रहता। मैं दिन-रात अपनी इसी चिन्ता में रहता था। पुरानी प्रतिष्ठा तथा विद्या के घमंड से किसी के घर जाकर बैठना ही अपनी शान के विरुद्ध समझता था। इसलिए सभी गाँव वाले मुझ से दूर से रहने लगे और पिता जी की पूँजी पर ही दिन काटना पड़ रहा था। तीन बच्चे हो गये। खर्च बढ़ता ही गया परन्तु आमदनी नहीं थी। मेरी सारी आशाओं पर पानी फिर रहा था। एक अच्छी फार्मेसी बनाने की कल्पना मिट्टी में मिलती जा रही थी। ऐसे समय में वैशाख का माह था। सुसराल से साले की शादी का निमंत्रण पाकर बच्चों सहित शादी के लिए रवाना हो गया।

जब में जयपुर स्टेशन पर उतर कर बस स्टेण्ड पर पहुँचा तो वहाँ एक सज्जन एक पत्रिका व कुछ फार्म बाँट रहे थे। मेरे तिलक लगा देख कर मेरे पास आये और मुझे एक अंक देकर मुझे गायत्री उपासना करने की प्रार्थना करने लगे। मैंने अंक हाथ में लिया। ऊपर लिखा था गायत्री ज्ञानांक। अन्दर थोड़े पृष्ठ उलट कर उन सज्जन से परिचय तो मालूम हुआ वे एक वैश्य युवक हैं। मुझे बड़ा क्रोध आया कि गायत्री जप वैश्य कर रहा है। उन्होंने बड़ी नम्रता से कहा "श्रीमान्! मैं ही नहीं मेरे घर में मेरी पत्नि तथा बच्चे सब माता की उपासना गायत्री तपोभूमि के बताये अनुसार करते हैं, आप इसे पढ़ना तब पता चल जायेगा।"

मैंने उसे थैले में रख लिया। रास्ते भर इसी पर विचार करता रहा कि जिस गायत्री का पिताजी व दादाजी नित्य घंटों जप करते थे, मुझे भी जिन्होंने यही मंत्र यज्ञोपवीत के समय पर दिया था तथा इसे जपने का आदेश दिया था, उसे मैंने भुला दिया। अब तो मैं शादी के सब महमानों से अलग बैठकर उस अंक को पढ़ने लगा। शुरू से आखिर तक पढ़ने पर मन में दस माला नित्य जप करने का संकल्प कर लिया। घर लौट कर गायत्री तपोभूमि से प्रकशित सारा साहित्य पढ़ा। उसमें मेरी सभी शंकाओं का उत्तरमय प्रमाण के मैंने पाया और अपनी धर्मपत्नि को भी गायत्री अधिकार पुस्तक में लगभग २०० प्रमाण शास्त्रों के दिखाये। इसलिए मैंने किसी रिश्तेदार पंडितों की बात को नहीं माना, क्योंकि स्वयं संस्कृत शास्त्री था।

तीन चार माह तक जप करने पर मेरी पत्नि के मन में यह विचार आया कि मैं दिन भर बेकार बैठी रहती हूँ। बच्चे भी अब समझदार हैं। यह दवा वाले ४०) महावार के नौकर को हटा दें। मैं स्वयं सारा कार्य दवा बनाने का कर लूँगी तथा कुछ बच्चों से करवा लूँगी। यह बात मेरी समझ में आ गई और ४०) माहवार बचने लगे। साथ ही दवा भी बढ़िया बनने लगी और साथ ही पत्नि को दवा सम्बन्धी जानकारी भी बढ़ने लगी। बीमार जो आते थे, उनकी तिमारदारी करने का कार्य भार भी पत्नि उठाने लगी। मन में भी अब सेवा भावना का उदय होने लगा। मेरे मन में बिना बुलाये गरीब बीमारों के घर पर जाकर चिकित्सा करने के विचार होने लगे। एक दो बार में जब काछियों के मकानों पर बीमारों की चिकित्सा के लिए गया तथा उन्हें अच्छी तरह देखकर दवा का उचित मूल्य लेकर चिकित्सा शुरू की। दिन में २ बार सँभालने जाता। मरीज बिगड़े मोतीजरा (टाइफाइड) के थे। जिसका इलाज करने से स्थानीय राजकीय वैद्यों ने मना कर दिया था। दस पन्द्रह दिन में इनकी तबियत ठीक होने लगी। मेरे मन में अब अहंकार का भाव समाप्त होता जा रहा था। मैं निरंतर गायत्री जप करता रहता था। उसके अर्थ पर विचार करता था कि मुझे दूसरों का दुःख नाश करके सुखी बनाने को उत्पन्न किया गया है। इसलिए अपनी चिकित्सा से दूसरों के शारीरिक रोगों से मुक्त करना चाहिए। मैं नित्य जप के साथ गायत्री साहित्य का स्वाध्याय भी करता था। अखंड ज्योति भी पढ़ता था। उसमें जब देखा कि अनेको माता के सपूत अपने घर से दो तीन माह की छुट्टी लेकर ज्ञान प्रचार का प्रसार कर रहे हैं तो मुझे अपने पिछली आदतों से घृणा होने लगी कि ये लोग अपनी हानि करके दूसरों को लाभ पहुँचा रहे हैं और मैं दूसरों की हानि करके अपने को सुखी बनाना चाहता हूँ। मैंने प्रतिज्ञा कर ली कि किसी गरीब के घर आने की फीस नहीं लूँगा और यह संकल्प मैंने अपने पर्चे छपाकर जगह-जगह गाँवों में बाँट दिये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उन-उन मरीजों के ठीक होने की अफवाह से तथा इन पर्चों को पढ़कर अब मेरे पास गरीब रोगी आने लगे। मैं भी गायत्री का जप करता जाता और उनकी चिकित्सा करता रहता था तथा मरीजों को गायत्री सिखाकर उन्हें पड़े-पड़े गायत्री जप करने को कहता था। मरीज जप करते-करते इतने तल्लीन हो जाते कि वे उनकी मानसिक चिन्ता जप करने से मन्त्र का उच्चारण करने से ठीक हो जाती थी। शारीरिक रोग दवा से ठीक हो जाते थे इसलिए अब रोगियों के ठीक होने का क्रम अच्छा बँध गया और रोगियों की संख्या भी बढ़ने लगी। इस यश से धनवान भी चिकित्सा के लिए घर बुलाने लगे। मैं उनके घर पर जाता हूँ और अपनी बँधी हुई फीस के अलावा दवा का उचित मूल्य भी लेता हूँ ।

मेरी धर्म पत्नि दवाओं की पुड़िया बनाने में सहायता करती थी। इस प्रकार से दोनों के संयोग से हमारी आमदनी अच्छी होने लगी, परन्तु गायत्री का जप हम नित्य प्रातः उठकर घर भर अब भी नियमित रूप से करते हैं। इससे मेरे स्वभाव में जो दोष थे वे सब दूर होते जा रहे हैं। मैं मिलने में जो अपमान समझता था अब मिलने में अपनापन महसूस करके आनन्द प्राप्त करता हूँ। मुझमें अब धनवान बनने की इच्छा समाप्त हो गई है और सेवा ही अपना कर्त्तव्य बना लिया है। मेरी इस सेवा बुद्धि से प्रभावित होकर लोग आकर्षित होने लगे । मेरे औषधालय में मरीजों की संख्या अब इतनी आती है कि मैं खानाखाने भर की फुरसत मुश्किल से निकाल पाता हूँ।

गायत्री जप करने का प्रभाव हमारे स्त्री पुरुषों के स्वभाव पर इतना अच्छा पड़ा है कि हमारा जो आलसी श्रमहीन जीवन था वह समाप्त हो गया है और दोनों अपने चिकित्सा के धंधे में श्रम करके खाते हैं। मेरी लोभ की वृत्ति समाप्त हो गई है तथा घमंड तो अब नाम को भी नहीं रहा है। जो भी चिकित्सा के लिए बुलाता है, संकेत पाकर चला जाता हूँ और अपनी चिकित्सा के साथ उन्हें गायत्री ज्ञान का भी शिक्षण करता रहता हूँ। गायत्री मानसिक रोगों के लिए रामबाण औषधि है । यह मैंने सैकड़ों मानसिक रोगियों पर प्रयोग करके देखा है। गायत्री जप करने से ही मेरे स्वभाव में व्यावाहारिक गुणों का प्रादुर्भाव उत्पन्न हुआ है जिससे कि मैं ऐसा सफल चिकित्सक बनकर इतनी प्रतिष्ठा अपने क्षेत्र में प्राप्त कर सका। इसी के अर्थ चिन्तन का प्रभाव है कि मैं पहले चिकित्सा में जो लापरवाही करता था, वह नष्ट हो गई अब सभी रोग सोच-विचार कर निदान करता हूँ तब चिकित्सा शुरू करता हूँ । ●●●

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री से व्याधि-निवारण

हमारे देश में एक पुरानी कहावत है—'शरीरम् व्याधिक मन्दिरम् ।' पर जो लोग इसका अर्थ यह लगाते हैं कि रोगी होना मनुष्य के लिये स्वाभाविक बात है, और शरीर में किसी भी व्याधि का प्रकोप हो जाना मनुष्य के वश से बाहर की बात है, वे वास्तव में बड़ी भूल करते हैं । प्रकृति ने मनुष्य का शरीर स्वास्थ्य सबल और कार्य क्षम रहने के लिये बनाया है। यदि मनुष्य अनुचित और विपरीत आहार-विहार की आदत डालकर उसे रोगी बना डालता है, तो इसमें दोष न प्रकृति का है और न शरीर का । इन्द्रियों के वशीभूत होकर मनुष्य सीधे और सच्चे मार्ग को छोड़कर हानिकारक मार्गों को अपना लेता है और इसका दण्ड उसे शारीरिक तथा मानसिक निर्बलता तथा भाँति-भाँति की बीमारियों के रूप में भोगना पड़ता है । यदि मनुष्य शास्त्रों के आदेशानुसार संयम-पूर्ण जीवन बिताये और स्वास्थ्य-सम्बन्धी शारीरिक तथा मानसिक नियमों का पालन करता रहे तो निस्संदेह वह निरोग रहकर सुखी-जीवन व्यतीत कर सकता है।

अस्वस्थता और रोगों की अधिकता का एक बड़ा कारण यह भी होता है कि इन्द्रियों और मन द्वारा विपरीत मार्ग पर चलने और तरह तरह के प्रलोभनों में फँसकर मनुष्य की प्रवृत्ति तामसी हो जाती है और तामसी प्रवृत्ति मन पर और उसके द्वारा शरीर पर सदैव दूषित प्रभाव डालती है । तामसी विचार वाले मनुष्य का रक्त ही विषाक्त अथवा दूषित हो जाता है और उसके द्वारा शरीर में कोई भी व्याधि उत्पन्न हो सकती है। जैसा हम भली प्रकार जानते हैं, शरीर का वास्तविक राजा मन ही है । जब असद् विचारों और तदनुसार क्रियाओं से मन ही विकारग्रस्त हो गया तो शरीर कैसे बचा रह सकता है ? जो लोग असद् पथ का अवलम्बन करके अपने रहन-सहन, खान-पान को तामसी बना लेते हैं वे अवश्य व्याधियों के फन्दे में फँसकर दुख पाते हैं ।

तो इन व्याधियों से छूटने का उपाय क्या है ? औषधि का प्रयोग तो किया ही जाता है, पर जब तक मनुष्य की मानसिक स्थिति का सुधार न होगा, तब तक रोग का मूल कारण नहीं जा सकता । इसके लिये आवश्यकता है कि हमारे भीतर से तमोगुण को निकाल कर सतोगुण की वृद्धि की जाय और सत्-तत्त्व की वृद्धि करने का गायत्री साधना से बढ़कर कोई अन्य उपाय नहीं है । गायत्री का सर्वप्रथम उद्देश्य ही यह है कि हम परमात्मा से अपनी बुद्धि के शुद्ध और निर्मल होने की अन्तःकरण से प्रार्थना करें । शुद्ध बुद्धि ही सब प्रकार के मनोविकारों की सच्ची औषधि है । वही हमारे भीतर से तमोगुण को निकाल कर सतोगुण की प्रतिष्ठा कर सकती है । जब हमारे हृदय में सत्-तत्त्व की प्रधानता होगी और उसके प्रभाव से शुद्ध रक्त हमारी नाड़ियों में बहेगा तो कौनसा ऐसा रोग है जो उसके सामने टिक सके । आवश्यकता है सच्ची श्रद्धा और आन्तरिक विश्वास की। जो जितनी हार्दिकता से गायत्री-साधना कर सकेगा वह उतनी ही शीघ्रता से व्याधियों परित्राण पा सकेगा । व्याधियों में फँसे हुये अनेकों व्यक्ति गायत्री की कृपा से किस प्रकार पार लगे इसके कुछ उदाहरण भुक्त भोगियों के जबानी ही नीचे दिये जाते हैं :—

श्री नन्द कुमार शर्मा, कोटा से लिखते हैं —

मुझे प्रसन्नता है, कि मेरे जीवन में 'अखण्ड-ज्योति' का पथ-प्रदर्शन मिला । आज पाँच वर्ष से पिताजी की प्रेरणा से प्रतिदिन पाँच माला गायत्री जप तथा उसका हवन करता आ रहा हूँ । उनकी आयु ७० साल है । चैत्र नवरात्रि में मैंने पूज्य गुरुदेव से आदेश प्राप्त कर पिताजी के आत्म-कल्याण के लिये सवा लक्ष का तथा महायज्ञ के लिये २४००० का अनुष्ठान किया था ।

श्रावण मास में पिताजी बीमार पड़े । वृद्ध थे ही ओर बुखार ने झकझोर डाला । चिकित्सा की गयी, पर हालत दिनोंदिन गिरती ही गयी । सभी के विचार से इस वृद्धावस्था में उनका शरीर त्याग ही भला और सुन्दर-जँचता था, पर मेरे हृदय की ममता उनसे बिछुड़ना जरा भी पसन्द नहीं करती । उनके महा-प्रस्थान का दिवस था । उनकी दशा से सभी को यह अवगत ही था । मैं जप कर रहा था । अचानक ही सभी एक साथ रो पड़े । मैंने समझ लिया कि पिताजी इस नश्वर शरीर का त्याग कर रहे हैं । ममता की अधिकता से मैं भी फूट कर रो पड़ा । सामने गायत्री माता की प्रतिमा थी । मैंने दीन और करुण स्वर में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

प्रार्थना की माँ ! और कुछ दिन मेरे पिता को जीने दे। सहसा ही विद्युत् सी चमक उठी और मैं बेसुध सा हो गया । उसी समय तेरी अन्तर चेतना में किसी ने कहा—यदि महायज्ञ के लिये किया गया २४००० के अनुष्ठान को शीघ्रता से पिता को सङ्कल्प कर दे तो ऐसा हो सकता है। मैं उपासना छोड़कर आतुर भाव से दौड़ता हुआ पिताजी के निकट गया । उनका सारा शरीर हाथ पाँव सभी ठण्डे हो चुके थे, नाक भी शीतल और टेढ़ी हो चुकी थी । सभी उन्हें खाट से उतार कर नीचे सुला रहे थे । मैं देखते ही निराश हो गया । फिर भी उसी दशा में मैंने उन्हें बैठाकर २४००० जप का तुलसीदल, गंगाजल लेकर संकल्प किया और वह उनके मुख में डाल दिया। तुरन्त ही उनकी प्राण चेतना लौट आयी और स्वयं ही नीचे से उठ कर खाट पर बैठ गये ।

ठा. महेन्द्रसिंह सरवन लिखते हैं—

मेरी पुत्री चितरंजन कुमारी अहीमा गाँव के राजकुमार से ब्याही है । उसके एक दो साल का पुत्र है। एक दिन अकस्मात ही उस बालक के सारे शरीर में फोड़े निकल आये । वे निकलते तथा कुछ समय बाद पानी के बुलबुले की भांति क्षण में फूट जाते, ऐसी स्थिति प्रायः १५ दिन रही और एक दिन अचानक एक पाँव, खूब सूज गया । सूजन धीरे-धीरे पेट की ओर बढ़ने लगी। विशेष शोध तथा कमजोरी के कारण, ज्वर भी पराकाष्ठा को पहुँच चुका था ।

वर्षा ऋतु थी । पानी खूब पड़ रहा था । गाँव में वैद्य या डाक्टर, का कोई प्रबन्ध न होने से गाँव के कुछ अनुभवी व्यक्तियों का बाताया हुआ उपचार किया गया, किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ । पुत्री की सासू ने तो साफ कह दिया कि यह ''रतवा'' है—असाध्य रोग है। बच्चा किसी भी भाँति बच नहीं सकता । उनके भी दो बच्चे इसी रोग से मर चुके हैं । यानी कहने का अभिप्राय यह था कि उपचार करना वृथा है, अब केवल भगवान के भरोसे रहना ठीक है। पुत्री ने पहले तो मुझे बुलाने को सोच लिया था, किन्तु अपनी सास के शब्दों से, मेरा विचार छोड़, माँ गायत्री की शरण ली । अनेकों प्रकार से प्रार्थना आरम्भ कर दी, साथ ही साथ गायत्री मंत्र का जप करती गई और उस शोथ वाले हिस्से पर हाथ ऊपर से नीचे की ओर फिराती रही । भला, ऐसी आर्त्त-पुकार पर 'माँ-गायत्री' कैसे विद्रवित न होती ? शीघ्र ही आ पहुँची और अपनी वृहद् शक्ति द्वारा केवल दो तीन घन्टे में सारी सूजन उतार दी । बुखार, कमजोर, पाँव का कंपन तथा असह्य दर्द उसी क्षण दूर हो गया।

ठा. खिलावनसिंह, दमोह से लिखते हैं—

आज से तीन वर्ष पहले मेरे पेट में असह्य पीड़ा होती थी, दर्द से सदा ही बेचैन रहता था, जिसके कारण खाना, पीना, सोना सभी से बेवसी सहित वंचित रह जाना पड़ता था । भूख लगने पर कदाचित थोड़ा सा दूध भी पी लिया तो पतले दस्त आने लगते ।

दमोह में जितने भी प्रसिद्धि पाये हुए वैद्य और डाक्टर हैं, सबसे एक-एक करके इलाज कराया, पर जरा भी आराम न पा सका । यहाँ से निराश हो जबलपुर गया और विक्टोरिया चिकित्सालय में इलाज कराना प्रारम्भ किया । एक्सरे के द्वारा परीक्षण कर डाक्टर ने बताया कि तुम्हारे पेट के नल और पित्ताशय की थैली में छाले हैं । आराम होने के लिये आपरेशन कराना पड़ेगा । फिर इस चिकित्सालय को छोड़ मैं बम्बई किंग एडवर्ड हास्पिटल में दाखिल हुआ, पर यहाँ भी अच्छे-अच्छे सभी डाक्टरों ने आपरेशन कराना ही सर्वोत्तम बताया । आपरेशन से मैं बेहद डरता था, अतः वहाँ से निराश होकर सीधे घर चला आया । इलाज से आराम होने का विश्वास जरा भी नहीं रहा था, अतः एक मात्र भगवान ही मेरा सहारा था । भगवद् उपासकों की संगति करना और उनके संग भगवद् कृपा की चर्चा हुआ करती ।

मेरे एक साथी और भक्त ने कहा—केवल बातें बनाने से नहीं, कुछ करने से भगवद् कृपा की प्राप्ति होती है । तुम अपना सब कुछ गायत्री माता को सौंप दो और नियमित उपासना करो । मुझे उनकी सलाह बड़ी प्यारी लगी । तब तक कुछ प्रेम-भक्ति मेरे हृदय में जग चुकी थी । मैं नियमित गायत्री जप करने लग गया। दो चार दिन के उपरांत ही मेरी बेचैनी और दर्द घटने लगे । मुझे स्फूर्ति का बोध हुआ और माता की कृपा से निराशा, आशा बनी और आशा, उत्साह-ओज एवं स्वास्थ्य में परिणत हो गयी ।

मैं अपने अनुभव के बल से यह दावे के साथ सभी सज्जनों से अनुरोध करता हूँ कि आप सर्वतो-भावेन अपने आपको—मातृ चरणों में सौंप दें, निश्चय ही देर-सबेर में आपका मङ्गल और कल्याण होगा ।

एक गायत्री भक्त, खामगांव से लिखते हैं—

हमारे यहाँ के श्री ओंकार पाटिल, मस्तिष्क की विकृति के रोगी थे । उनके मन में विचार एवं भाव सदा ही अस्त-व्यस्त और टूटे-फूटे से रहते । उसमें कोई शृंखला नहीं रहती । लोग उन्हें उन्मत्त और पागल कहते । पैसे की उनके पास कमी नहीं थी, अतः इस रोग को शान्त कराने के लिये विभिन्न चिकित्सकों से भाँति-भाँति के इलाज करवाये, पर कभी किसी से कोई लाभ न हुआ । एक अयाचित प्रेरणा से उन्होंने अपने कल्याण के लिये गायत्री उपासना प्रारम्भ कर दी । उन्हें अद्भुत शान्ति मिली ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विचारों का बिखरना घटने लगा और आज भी माता की कृपा से उन्हें पागल कहने वाले लोग ही, एक विचारशील व्यक्ति मान कर, उनके विचारों की प्रतिष्ठा करते हैं । यह है माता की वात्सल्य भरी अनुकम्पा ।

खामगांव वासी श्री शुकदेव भावजी की छाती के एक भाग में बहुत वेदना होती थी । इलाज के लिये अधिक पैसे खर्च करने में असमर्थ थे । डाक्टर से पूछने पर उन्होंने बताया कि पहले तुम्हें उस भाग का फोटो खिंचवाना होगा, फिर जाँच करने पर इतने-इतने रुपये इलाज में खर्च होंगे । उसने देखा मैं वैसा इलाज कराने योग्य नहीं हूँ । अतः सभी ओर की सभी आशा भरोसा छोड़कर उसने गायत्री माता की शरण लेने का निश्चय किया । जप करने के दूसरे तीसरे दिन ही उसकी वेदना में आश्चर्यपूर्ण कमी आई । फिर तो उसका उत्साह और हौसला बढ़ता ही गया । कुछ ही दिनों में वह सम्पूर्ण वेदनाओं से छुटकारा पा गया और आज माता की कृपा से उन्हीं की याद करते हुये मस्ती से पुरुषार्थ करते हुये वे अपनी जीविका चला रहे हैं ।

श्री महादेव चन्द्रकान्त जी (खामगांव) की पत्नी दमा से आक्रांत थी । दमा के भयंकर वेग को उन्हें अपनी आँखों से देखने के अवसर जीवन में बारम्बार आये । वे कहते हैं 'मर जाना बेहतर है किन्तु प्राण छूटने की सी दशा में घण्टों तड़पते रहना बहुत ही बड़ा दुर्भाग्य है । किसी नरक का कष्ट इससे अधिक क्या हो सकता है ? यह दुस्सह पीड़न अवश्य ही किसी भयंकर पापों का परिणाम ही हो सकता है ।'

पैसे की कमी के कारण वे अपनी पत्नी का इलाज कराने में असमर्थ थे और उनकी पीड़ा से स्वयं इनके अन्तर में 'बिच्छू दंशन' चलते रहते थे। कोई उपाय नहीं देखकर बेवसी से ही इन्होंने गायत्री उपासना का आश्रय लिया । उपासना के थोड़े ही दिन बाद उन्हें कैसे इलाज के लिए पर्याप्त पैसे मिल गये, इसे वे बताना पसन्द नहीं करते । इस इलाज को तथा इलाज के आवरण में दमा रोग की मुक्ति को, वे गायत्री माता का प्रसाद मानते हैं ।

कविराज वासुदेव कृष्ण जोशी, काव्यतीर्थ, चूरू राजस्थान से लिखते हैं, करीब एक साल पहले की बात है—मेरे घर से कुछ ही दूर पर एक काली माता का मन्दिर है । उस मन्दिर के पुजारी जी के युवक पौत्र का विवाह पिछले वर्ष ही हुआ था । विवाह के उपरान्त उस पर ज्वर का जो आक्रमण हुआ, वह सैकड़ों चिकित्साओं और औषधियों से भी नहीं छूटा । चिकित्सकों की असफलताओं से उस युवक के हृदय में निराशा की भावना बढ़ती गयी । अन्ततः उसे औषधि मात्र से अरुचि और अविश्वास हो गया । वह मृत्यु शय्या की ओर दिनोंदिन बढ़ता जा रहा था, फिर उसने औषधि लेना स्वीकार नहीं किया । लगता जैसे वह स्वयं ही मृत्यु की गोद में समा जाना चाहता था। मैं स्वयं चिकित्सक हूँ । उसकी बढ़ती हुई जर्जरता और क्षीर्णता को देखकर मैंने स्वयं बिना मूल्य उसकी चिकित्सा करने का निश्चय किया और पुजारी जी से इसके सम्बन्ध में कहा—पर लड़का औषधि लेने के लिए तैयार नहीं हुआ । तीन बार इसके लिए मैंने प्रयत्न किया पर वह नहीं ही तैयार हुआ । चौथी बार जबकि मृत्यु शय्या पर ही जा पड़ा था और कुछ बोलने की शक्ति भी उसमें न रह गयी थी । मैं मैट्रिक पास, उस विवाहित युवक को यों मरते देख बड़ा ही करुणातुर हो उठा । मैंने गुरुदेव का स्मरण कर चौथी बार सलाह दी—यदि आप तैयार होइये तो बिना दवा के आपका पौत्र आरोग्य प्राप्त कर लेगा । पुजारी जी शीघ्रता से प्रसन्नतापूर्वक इसके लिए तैयार हो गए । मैंने गुरु का स्मरण करते हुए कह दिया कि आप १५ दिन तक गायत्री मन्त्र की प्रतिदिन २५ माला जप कीजिये और जप पूरा होने पर उसकी परिपूर्ति यथा शक्ति हवन द्वारा कर दीजिये । पुजारी जी ने बड़ी श्रद्धा से संकल्प लिया और जप करने लगे । लगभग सात दिन जप करने के बाद लड़के ने स्वयं कहा—मैं औषधि लूँगा । तदुपरान्त एक वैद्य जी ने औषधि दी और वह रोगमुक्त हो गया । यहाँ तक कि उसी महीने में मन्दिर के सामने वाले विद्यालय में उसे नौकरी भी मिल गयी । पुजारी जी मुझे सारी कहानी सुनाते हुये धन्यवाद देने लगे । मैंने कहा—जिस गायत्री माता ने उसे बचाया है, उसकी उपासना आप लोग कभी नहीं भूलें, यही मेरे लिये सच्चा धन्यवाद है ।

नया जीवन मिला

श्रीमती कान्ती देवी त्यागी, धामपुर से लिखती हैं—

मैं एक वर्ष से पित्त, वायु रोग से बड़ी दुःखी थी । हर समय जी घबराता था, न नींद आती थी, न भूख लगती थी । हालत दिन-प्रतिदिन बिगड़ती जा रही थी। अधिक कमजोर हो गई थी । बाँया हाथ बिल्कुल बेकार हो चला था । उसमें जरा भी दर्द होने अथवा उसका लगने से पसीने में नहा जाती थी और जी घबराने लगता था । अन्दर दम सा घुटता था । डाक्टर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

वैद्य तरह-तरह के रोग बताकर डराया करते थे । बहुतेरा इलाज कराया । कभी दो दिन को कुछ आराम मिला, पर फिर वही बात ।

माता की कृपा से एक दिन मेरी ननद बिजनौर से घर आईं । बिजनौर में उन्हें किसी यज्ञ में पाँच-पाँच पैसे वाली आठ पुस्तकें भेंट स्वरूप मिली थीं । उन्होंने वह पुस्तकें मुझे दिखाईं और मुझे गायत्री जप करने को कहा । पुस्तकें पढ़ने को मेरी इच्छा थी, पर मैं पढ़ने में असमर्थ थी । अन्त में मेरी ननद जी ने ही रात को काम से निबटने के बाद मेरे पास बैठ कर उन पुस्तकों को पढ़ कर सुनाना शुरू किया । मुझे सुनते-सुनते नींद आ जाती, यहाँ तक कि मुझे यह भी पता न रहता कि बीबी जी अभी पुस्तक पढ़ रही हैं और लेम्प जल रहा है । जब वह मुझे टोकती तो अचानक नींद आ जाने से मुझे शर्म मालूम पड़ती थी।

दोपहर को मेरा जी चाहता था कि पुस्तकें पढ़ूँ पर उस समय ननद जी काम से थक कर सो जाती थीं, मैं उन्हें जगाना उचित न समझती । आखिर एक दिन साहस करके मैंने पुस्तकें उठा लीं और दैवी प्रेरणावश दो घण्टे में सब पुस्तकें पढ़ लीं । उस दिन मैंने अनुभव किया कि मुझे अब दीखने लगा है ।

शुरू के दिन मैंने बिस्तर पर पड़े-पड़े ही जप किया । दूसरे दिन मुँह हाथ धोकर, कपड़े बदल कर तथा पृथ्वी पर बैठकर दो मालाएँ कीं । तीसरे दिन शिव रात्रि थी । बहुत दिनों से स्नान भी नहीं किया था। उस दिन स्नान करके तीन मालाएँ कीं । सन् १९५४ की होली से ५ मालाएँ जपना प्रारम्भ कर दिया। चैत्र नव रात्रि के आरम्भ से आज तक ११ मालाएँ नित्य चल रहीं हैं, साथ ही २४ मंत्र भी रोज लिखना आरम्भ कर दिया । साथ में एक पड़ोसी डाक्टर से साधारणतया औषधि भी लेती रही। आवश्यकता पड़ने पर अब भी कभी-कभी दवा ले लेती हूँ । अब माता की कृपा से मैं स्वस्थ हूँ ।

जब मैं बीमार थी, उन्हीं दिनों मेरे पति देव हिंदू-मुस्लिम दंगे के अभियोग में फँस गये, यद्यपि वह घर से निकले भी नहीं थे । विरोधियों ने फँसाने की कोई कसर न छोड़ी, परन्तु माता की कृपा से वह निरपराध सिद्ध हुए । इसके अतिरिक्त हाल में ही मेरी कन्या का विवाह एक सुयोग्य वर के साथ सुसम्पन्न हो चुका है। हम सब परिवार के लोग माता की अनुकम्पा से सुखी जीवन व्यतीत करते हुए माता की अपार दया का अनुभव कर रहे हैं ।

श्री कपिलदेव झा, बानूछपरा (बिहार) से लिखते हैं—

आज से ढाई वर्ष पहले हम बेतिया आ रहे थे । रास्ते में एक गाँव में जोरों से महामारी का भयंकर रोग अपना ताण्डव नाच कर रहा था । वहाँ हमारे सम्बन्धी थे । उनके बुलाने पर हम उनके घर गये । वहाँ जाते ही मृत्यु स्वरूपा-विशूचिका ने मुझ पर भी धावा बोल दिया । कितने वमन और दस्त हुए इसका कोई हिसाब नहीं । दो चार घण्टे में मेरी आँखें खन्दक जैसी भयावनी हो गयीं । मैं साक्षात् कंकाल बन गया । मुझे कभी-कभी होश आ जाता । डाक्टर आये । औषधि पिलाई गई, (इञ्जेशन) सुई भी दी गयी, पर कोई परिवर्तन नहीं । सभी मेरे जीवन की आशा खो बैठे । स्वयं मैं भी मरने की बाट जोह रहा था ।

सन्ध्या हो चुकी थी । मेरे जीवन में अन्धकार बढ़ता ही जा रहा था । बेचैनी तीव्र हो रही थी । रात्रि के आठ बजे थे । मेरी सांस क्रमशः सूक्ष्म होती जा रही थी । अब मैं दम तोड़ने वाला ही था कि सहसा मेरे आगे एक सौम्य श्वेत, उज्ज्वल गौर वर्ण दिव्य नारी खड़ी हो गयीं । ठीक सरस्वती के समान ही रूप एवं सारी वेष-भूषा थी । मैंने गायत्री उपासक के नाते यही सोचा, गायत्री बुद्धि को प्रेरणा देती है, अतः सरस्वती ही गायत्री है । उन्हें देखते ही मेरे जलन-मेरी बेचैनी, न जाने एक क्षण में ही कहाँ उड़ गयी । उन्होंने मेरे शरीर को स्पष्टतया छूकर मुझे पुनर्जीवन दिया और मधुमयी स्वर लहरी में किसी वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करती हुई आशीर्वाद दिया । मैं स्वस्थता और सचेतनता का अनुभव करने लगा । पुनः उन्होंने कहा—मेरा यह दर्शन, स्पर्श, आशीष एवं वार्ता किसी से नहीं कहना । पुनः वे कहने लगीं—सारी नारी जाति को मातृभाव से देखना, मन ही मन उसके चरणों में प्रणाम करना—इसे निभाने का प्रयत्न करना । इतना कहते ही वे मेरी दृष्टि से सहसा ही अन्तर्ध्यान हो गयीं। आज गुरुदेव के आदेश में—माता का आदर्श मानकर ही मैं उसे सबके समक्ष प्रकट कर रहा हूँ ।

मेरा तो जीवन समाप्त हो चुका था । आज जिस प्राणरक्षिका माता की अनुकम्पा से मैं मानव शरीर में स्थित हूँ—वह भी उन्हीं के चरणों में सदा सर्वदा के लिये चढ़ाने का प्रयत्न कर रहा हूँ ।

श्री रामसूचित वर्मा, सिकोहना, बाराबंकी से लिखते हैं—

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मैंने बचपन में कुचाल तथा अनुचित आहार-विहार से अपनी जवानी की तेजस्विता को खो दिया । तरुणाई की मस्ती शक्ति मत्ता एवं स्वाभाविक उल्लास मेरे लिये कल्पना की वस्तु ही रह गई ।

प्रमेह ने असमय ही मेरे शरीर को जीर्ण-शीर्ण कर दिया । मैंने इस महारोग से छुटकारा पाने के लिये अनेकों वैद्यों डाक्टरों की शरण ली । सभी ने आश्वासन दिया—विश्वास दिलाया, पर चिकित्सा से रोग घटने के स्थान में बढ़ता ही चला गया । पत्र-पत्रिकाओं के विज्ञापन को देख उन औषधियों को मँगाकर भी प्रयोग किया, पर कभी लाभ के दर्शन नहीं हुए ।

एक दिन हमारे मित्र हरि प्रसाद वर्मा मिले । उन्हें मेरी दशा देख, सुन और जान कर यही करुणा उत्पन्न हुई । उन्होंने प्रेमपूर्वक मुझे समझाकर २४००० गायत्री उपासना करने के लिये प्रोत्साहित किया । मरता क्या न करता ? मैं तो सचमुच जीवन की आशा दिनों-दिन खोता जा रहा था ।

सारे विधि-विधानों के पालन सहित मैं गायत्री अनुष्ठान में लग गया । कुछ ही दिनों में मेरे अन्तर में अद्‌भुत साहस और शक्ति का संचार हुआ । लगा कोई दिव्य शक्ति मुझमें वर्षा की सरिता की तरह बढ़ती ही जा रही है । मेरा रोग धीरे-धीरे नष्ट होने लगा । उपासना में आकर्षण भी बढ़ता गया और आज मैं माता की कृपा से पूर्ण आरोग्य लाभ जवानी का अनुभव करने लगा हूँ । ऐसी कृपा माता के सिवाय और कौन कर सकता है ?

मेरा पुत्र, जो अभी तीन वर्ष ६ महीने का है, बचपन से ही रोगी, पिलपिला, कभी पेट फूलना, कभी बुखार आना, लगा ही रहता था । मैंने उसके स्वास्थ्य की कामना से भी गायत्री उपासना की और माता की कृपा उस शिशु के शरीर में निर्मल-सबल स्वास्थ्य बन कर खेल रही है । हम उसे देख माता के करुणावात्सल्य की याद कर लिया करते हैं ।

श्री के. बी. सुब्बाराव, कटनी मुरबाड़ा से लिखते हैं—मेरा ऑपरेशन ७-९-५५ को अस्पताल में हुआ, और कोई १५ दिन तक ठीक होने का कोई लक्षण नहीं दिखाई पड़ा । इसलिये सोलहवें दिन फिर मुझको उपवास में रखकर क्लोरोफार्म से बेहोश करके घाव को ताजा बनाया गया । जिससे मेरी हालत अत्यन्त ही नाजुक हो गयी तथा मेरे सभी सम्बन्धी चिन्तित हो गये।

इस ऑपरेशन से पूर्व मैं नित्य नियमित रूप से गायत्री जप करता था । ऑपरेशन के बाद कुछ दिन तो मैं माता को भूले रहा किन्तु, शीघ्र ही वेद-माता ने कृपा कर मेरे अन्तर में प्रेरणा की और मैं अस्पताल में ही मानसिक जप करने लगा ।

मैं मानसिक-जप में इतना खोया रहता था कि आने जाने वालों की भी मुझे सुधि नहीं रहती थी । इस जप का प्रभाव यह हुआ कि दो बार मुझे स्वप्न में पूज्य आचार्य जी के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ । और पूर्ण स्वस्थ हो जाने का आशीर्वाद प्राप्त हुआ । साथ ही एक बार स्वप्न में स्वयं वेद-माता ने मुझे दर्शन देकर कृतार्थ किया । साथ ही स्वप्न में मुझे अपना घाव भरता हुआ दिखाई दिया । इस प्रकार वास्तव में मेरा घाव धीरे-धीरे भरने लगा और सबसे बड़ी बात मेरे मन को जो शान्ति मिली उसका मैं शब्दों में वर्णन करने में सर्वथा असमर्थ हूँ । वेद माता की कृपा से और सद्‌गुरु देव के आशीर्वाद से मैं शीघ्र ही रोग मुक्त हो गया ।

श्री शीतला प्रसाद जी आजमगढ़ से लिखते हैं—

मेरी आयु उस समय सोलह वर्ष की थी । मैं हाई स्कूल की उच्च कक्षा में पढ़ता था । अचानक ही मेरे पड़ोस में चेचक की बीमारी फैली । मैं भी उससे आक्रान्त हो गया । परीक्षा का समय आ गया था । दुर्भाग्य की भयङ्करता बड़ी ही प्रबल थी । मैं तीन महीना चेचक तथा उससे उत्पन्न कष्टों को भोगता रहा । अन्ततः चेचक ने मेरी दोनों आँखें अपहरण कर लीं । मैं बहुत रोया चलने फिरने में भी दूसरों का सहारा लेते हुए बड़ी ही पीड़ा होती । एक दिन रात में मैंने अत्यन्त ही हार्दिक विलाप के स्वर में गायत्री माता से प्रार्थना की कि हे माता ! इस बेबसी भरे नरकीय जीवन से तो मुझे उठा ही ले, वही अच्छा ! क्या यही यन्त्रणा देने के लिये तथा उसकी अनुरति लेने के लिये ही तुमने मुझे इतनी शिक्षा लेने का अवसर दिया था । हाय ! माँ ! क्या तुम्हारा वात्सल्य जरा भी द्रवित नहीं होता ? मैं फूट-फूट कर रोने लगा । मुझे लगता जैसे माँ सामने ही खड़ी है और मेरा कण-कण आँसू बनकर माँ के दयालु पाद-पद्मों पर चढ़ता जा रहा है ।

सहसा ही अन्तर में सान्त्वना का अवतरण हुआ और उसी की शीतल छाया में मैं सो गया । प्रातः अरुण-बेला में उठा, तो देखा कि मुझे अरुणोदय का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

आभास झलक रहा है । प्रसन्नता और गायत्री माता के प्रति कृतज्ञता के भाव से मेरा सब कुछ भर उठा । २४ दिन में मैं आँखों से, शरीर से सभी तरह स्वस्थ उल्लसित होकर गायत्री माता के यज्ञ रूपी मुख में आज आहुति दे रहा था ।

लेडी डॉ. श्री दमयन्ती, गोरे गाँव अपना अनुभव वर्णन करती हैं—एक बार डिस्पेंसरी का काम करते हुये ही सिर दर्द से फटने लगा । कर्त्तव्य पूरा कर घर आई । दर्द के साथ जाड़ा भी बढ़ता जा रहा था, पर मैंने अपनी साध्य उपासना पूरी कर ही ली । तपोभूमि के यज्ञ भस्म से थोड़ी सी शान्ति हुई पर पीड़ा बनी ही रही । अन्दर से ध्वनि हुई । ''टायफायड'' ! चौबीस घण्टे में टायफाइड का निर्णय कोई डाक्टर स्वीकार नहीं कर सकता, पर मैंने अपनी बुद्धि से अन्तर के आदेश को अधिक महत्त्व दिया और टायफायड की प्रसिद्ध ऐलियोपैथी गोली खाना आरम्भ किया । दूसरे दिन शाम को तीन दस्त आये—जो सम्पूर्ण टायफायड के लक्षणों को प्रमाणित करते थे । उसके बाद भयङ्कर बुखार का आक्रमण हुआ । मुझे सारे वस्त्र फेंक कर भाग जाने का वेग उठता । श्री अवधूत ने ज्वर शान्ति के लिये संकल्पपूर्वक जप प्रारम्भ किया । २० माला जपते-जपते ज्वर घट कर १०१ हो गया । मेरे ध्यान में सरसों देखने में आया, फिर गुग्गुल एवम् सरसों से हवन करने पर बुखार ९९।। हो गया और सबेरा होते ही बुखार पूर्णतः विदा हो गया । इस प्रकार औषधि के पराजय के बाद भी माता की कृपा की विजय हुई।

श्रीमती सावित्री देवी फिलौर (पंजाब) से लिखती हैं—

सन् १९५६ की २१ अप्रैल को गायत्री तपोभूमि में जो 'विशद् गायत्री महायज्ञ' होने वाला था, उसमें आने का निमन्त्रण मुझे आचार्यजी ने भेजा था, और मेरी उसे देखने की बड़ी अभिलाषा थी । अकस्मात् १७ ता. की रात को एक बड़ी दुर्घटना घटी । लगभग दस बजे मैं न जाने कैसे सोती हुई उठकर खड़ी-खड़ी गिर पड़ी और बड़ी देर तक मृत-तुल्य बनी रही । पर न मालूम कौन सी शक्ति ने मेरी प्राण-रक्षा की । मैं बड़ी कमजोर हो गई थी, तो भी १९ अप्रैल को मथुरा के लिये रवाना हो गई । यह गायत्री माता की महिमा ही थी कि मरते-मरते भी मैंने इस महायज्ञ के दर्शन कर लिये । जब मैं गिरी थी तो चोट लगने से सिर से बहुत सा खून निकल गया था और वह इतना कमजोर हो गया कि बरसात के दिनों में जरा भी हवा लगने से पत्थर की तरह सुन्न हो जाता था । इस घटना के बाद भी यमदूतों ने मेरे ऊपर बार-बार हमले किये पर गायत्री माता बराबर मेरी रक्षा करती रही । कई महीने तक कितने ही डाक्टरों, वैद्यों, हकीमों से मेरी चिकित्सा भी कराई गई, पर उससे प्रायः नुकसान ही हुआ । तब मैंने आचार्य जी को पत्र लिखा कि सात महीने से यमदूतों से मेरी लड़ाई हो रही है और अब गायत्री माता से कह दिया है कि अब मैं कोई दवाई नहीं खाऊँगी चाहे मौत ही आ जाये । आचार्य जी ने मुझे लिखा कि अब तुम ठीक हो जाओगी और उनके अशीर्वाद से अब मेरा स्वास्थ्य पहले से बहुत कुछ सुधर गया है ।

श्री हजारीलाल शर्मा, पांडोला, श्योपुर-मुरैना से लिखते हैं—लगभग डेढ़ साल से मैं मधुमेह से पीड़ित था । शरीर अत्यन्त दुर्बल हो गया था किसी काम में मन नहीं लगता था । हकीम, वैद्य, डाक्टर कोई छोड़ा नहीं । दिन पर दिन स्वास्थ्य गिरते जाने से मुझे अत्यधिक चिंता रहने लगी । सौभाग्य से कुछ माह पूर्व मुझे गायत्री तपोभूमि मथुरा में हो रहे विशद् गायत्री महायज्ञ के सम्बन्ध में पर्चे मिले । साथ ही एक प्रति ''गायत्री ज्ञानांक'' की पढ़ने को मिली । मैंने ध्यान से पढ़ा और उससे प्रभावित होकर मैंने पूज्य आचार्य जी को पत्र में अपनी व्यथा सुनाई और उससे निवृत्ति पाने का उपाय पूछा । उन्होंने दया करके मुझे गायत्री उपासना व गायत्री हवन करने का उपदेश किया । हकीम, वैद्यों से तो मैं परेशान हो चुका था । मैंने आचार्य जी के बताये मार्ग पर पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास से कार्य करना आरम्भ कर दिया । मैं विशद् गायत्री यज्ञ का भागीदार भी बना । माता गायत्री की ऐसी कृपा हुई कि मेरे स्वभाव में बड़ा परिवर्तन हो गया और लगभग अस्सी फीसदी रोग नष्ट हो चुका है । शरीर में बल की वृद्धि हो रही है, काम करने को जी चाहता है, भूख भी खूब लगती है । चित्त सात्त्विकता की ओर बढ रहा है । आशा है शीघ्र ही शेष रोग भी अच्छा हो जावेगा । मुझे दृढ़ विश्वास है कि गायत्री उपासना जीवन की हर दिशा में लाभकारी है ।

श्री लक्ष्मीनारायण, शर्मा, पढ़ाना से लिखते हैं—कुछ दिन पूर्व अचानक मेरे दोनों नितम्बों में दो गाँठ जैसे फोड़े उठते हुए प्रतीत हुए । मैंने प्रारम्भ में तो उस ओर ध्यान नहीं दिया, किन्तु धीरे-धीरे बढ़ कर जब वह प्रस्तर सम और लाल सुर्ख हो गये, साथ ही पीड़ाओं के वेग बढ़ने लगे तो दर्द से व्याकुल हो वैद्यों की शरण में जाना पड़ा । उन्होंने दशाङ्ग लेप दिये, पर कुछ लाभ नहीं हुआ और अन्य अनुभवी लोगों की औषधियों का प्रयोग हुआ, पर पीड़ा के उद्वेग में जरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भी कमी नहीं आई । मेरे भाग्य से उस निराशा भरी बेबसी के काल में श्री गोवर्द्धन शर्मा जी भी पधारे उन्होंने कहा—अरे ! तुम इस साधारण से रोग में घबरा गये । गायत्री माता की कृपा के द्वारा यह एक दिन में ही शान्त हो सकता है । मैने पूछा—मैं तो जप का विधान जानता नहीं । किस भाँति जप करने से शुभ होगा, यह बतावें । उन्होंने बताया—

"माता की एक छवि लेकर उसका पञ्चोपकार विधि से पूजन कर घृत का दीपक जला लो । तत्पश्चात् ध्यान करके संयत चित्त से सिर्फ १०८ बार जप करो । यही पर्याप्त है ।"

मैंने ठीक उसी भाँति उक्त संख्या में जप किया । मेरी पीड़ा दूर हो गयी और तीसरे दिन ही वह गाँठ चिह्नावशेष हीन हो गया । इससे बढ़कर और प्रत्यक्ष कृपा क्या हो सकती है ।

श्री कैलाशचन्द्र शर्मा सैंथल से लिखते हैं—

प्रसव दशा में जब दुर्भाग्य से पीड़ा की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, तो उसकी भयानक दुर्दशाओं को भुक्तभोगी नारियाँ ही जान सकती हैं । यही दशा मेरी पत्नी की भी हो गयी । उसकी निपुण उपचारिका तथा चिकित्सकों तक ने भी उसके जीवित रहने की आशा छोड़ दी । मैं व्याकुल हो उठा । हृदय ने हाहाकार भरे स्वरों में पुकारा—माँ गायत्री ! तुम जैसी प्राण रक्षिका के अभय-शरण में आने पर भी हमारी यह दशाशरणागत वत्सले ! या तो तुम हमारी पत्नी की प्राण रक्षा करो या मेरे भी प्राण ले लो । मैं अपनी पत्नी के करुण चीत्कारों की ओर से मन को समेट कर माता की उपासना में लग गया, फिर कब उसके चीत्कारों में कमी आयी—कैसे किस भांति बिगड़ती हुई दशा, सुधरने की दशा में बढ़ चली, यह मैंने देख भी नहीं पाया । उठने पर आकर देखा तो गहरी नींद ने उसे अपनी नेहित गोदी में ले लिया था तथा हमारी । उपचारिका एवं सभी पजरिन प्रसन्न मुद्रा में अन्य व्यवस्था में लग रहे थे । मैं माता पर शत-शत बार न्यौछावर हो रहा था और मेरे रोम-रोम से धन्यवाद की ध्वनि निकल रही थी ।

श्री प्रतापचन्द्र बोस, इन्द्रनगर से लिखते हैं—

मैं विगत छः वर्षों से अम्लशूल से उत्पीड़ित था । सैकड़ों चिकित्सायें असफल हो गयीं । अनेकों चिकित्सकों की 'धन्वन्तरि' 'पियूषपाणि' ख्यातियों को यह वृत्रासार की भाँति निगल गया । गुरुदेव की कृपा से मैंने गायत्री माता का अंचल पकड़ा और अन्य सारी आशाओं को एकदम दूर फेंक दिया । कुछ ही दिन तक नियमित जप करने के उपरान्त, मेरे स्वास्थ्य में विस्मयकारी अभिवृद्धि प्रारम्भ हुई और आज मैं सम्पूर्ण तथा रोग मुक्त होकर गुरुदेव एवं माता की कृपा से सुखी जीवन व्यतीत कर रहा हूँ । उसी की कृपा से हमारी गिरी हुई आर्थिक दशा भी सुधर गयी । होमियोपैथी-चिकित्सा में मेरी अच्छी ख्याति हो गयी है और एक शिष्ट मानवोचित भोजनाच्छादन का उपभोग करते हुए, वर्ष में पाँच सौ रुपये बच जाते हैं ।

श्री बृज विहारी शर्मा, गोहाड़ से लिखते हैं—

मेरी पुण्यमयी माता श्री यशोदा देवी पच्चीस वर्ष से वातरोग की भयंकरता से पीड़ित थीं । इसके साथ ही वर्षा एवं जाड़े के मौसम में उनके हाथों में छाजन तथा पैरों में सूजन भी हो जाती थी । हम लोग भी उनकी व्यथा से दुःखी रहा करते थे । अनेकों वैद्यों एवं डाक्टरों की दवा खाते-खाते वे ऊब उठी थीं । और हमें भी व्यथा होती थी ।

आज चार वर्ष हुए उन्होंने गायत्री माता का अंचल पकड़ा और वे वातरोगों के साथ अन्य रोगों से भी पूर्ण मुक्त हो गयी हैं । इसके प्रथम वे रोगों से अत्यन्त दुर्बल और जर्जर हो गयी थीं, पर आज ५० वर्ष की उम्र में वे हृष्टपुष्ट एवं स्वस्थ सबल हैं । माता की कृपा का इससे बढ़कर पुण्य और क्या हो सकता है ।

एकबार मेरी पत्नी श्री कमला देवी को डबल निमोनिया हो गया था । डाक्टरों ने ऐसे निमोनिया रोग को बड़ा ही खतरनाक बताया । मैंने डर कर इलाज कराना छोड़ गायत्री उपासना की शरण ली और बिना औषधि के ही वह तीसरे दिन स्वस्थ हो गयी ।

श्री रामा देवी रस्तोगी, बम्बई से लिखती हैं—आज बीस वर्ष से मैं हाथों के रोग से पीड़िता रही हूँ । कितने चिकित्सकों से प्रसिद्ध-प्रसिद्ध स्थानों में जाकर इलाज करवाया पर कदाचित ही कुछ लाभ हुआ । एक बार हाथ की हालत इतनी खराब हो गई कि न तो हाथ ऊपर उठता था और न पीछे जाता था । उससे कोई काम भी नहीं कर सकती थी । कोई वस्तु पकड़ी भी नहीं जा सकती थी । चारों ओर से निराश होकर मैं घर आ गई थी और इसके निवारणार्थ गायत्री उपासना में लग गयी । मेरे पुत्रों ने जिदपूर्वक कुछ इलाज कराना भी जारी रखा पर मैं सारी औषधियों से हार चुकी थी अतः मुझे केवल माता ही का भरोसा था । यह दशा मेरे दाहिने हाथ की ही थी । वह सूख कर बायें हाथ की अपेक्षा डेढ़ इन्च पतला हो गया था। एक महीना उपासना बीतते ही मैं उस हाथ से भोजन और अन्य सभी काम करने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

लगी और आज ये लेख उसी हाथों से लिख कर भेज रही हूँ । यह लेख स्वयं माता का प्रसाद है ।

श्री बंशीलाल लाठी, माले गाँव से लिखते हैं—किसी के निर्मल शरीर में श्वेत-कुष्ठ का कलङ्की रोग, व्यक्ति के शरीर को भले ही कष्ट न दे, पर उसके मन प्राण में तीव्र बिच्छू-दंशन भर देता है । मेरे दुर्भाग्य से दाढ़ी तथा छाती के ऊपर श्वेत कुष्ठ के चकत्ते निकल आये । अनेकों उपचार कराने पर भी कुछ लाभ नहीं हुआ । अंत में इसके घृणित चंगुल से छुटकारा पाने के लिये गायत्री माता की शरण ली । थोड़े ही दिन के विधिपूर्वक जप से दाढ़ी पर दाग साफ छूट गया । छाती के दाग भी अधिकांश मिट चुके हैं । ऐसी आनंददायिनी माता की याद से किसका चित्त प्रफुल्लित न होगा ।

श्री गोवर्धन भट्ट शास्त्री सीयनी मालया (म.प्र.) से लिखते हैं—यहाँ आँवली घाट पर अभी एक गायत्री महायज्ञ हुआ था जिसमें यजमान थे स्कूल इन्सपैक्टर श्री बैजनाथ प्रशाद शर्मा और कर्मकाण्ड मैं स्वयं करा रहा था । यज्ञ प्रारम्भ होने के दूसरे दिन साइकिल पर एक शिक्षक आये और इन्सपैक्टर साहब को सूचना दी कि आपका बच्चा बहुत बीमार है, बचने की आशा नहीं है । इन्सपैक्टर साहब ने कहा जो भी हो मैं पूर्णाहुति किये बिना यहाँ से नहीं हट सकता । लोगों ने बहुत समझाया कि जाकर बच्चे को देखिये, पर वे गायत्री माता में विश्वास रखकर अटल रहे । दूसरे दिन अन्य व्यक्ति आये और उनसे मालूम हुआ कि अब बच्चा बिल्कुल स्वस्थ्य है । उस सूचना से यज्ञ में आनन्द छा गया और अन्त तक कार्यक्रम बड़ी ही श्रद्धा से पूर्ण हुआ ।

कसही बहरा रायपुर, (म. प्र.) से श्रीराम गरीब अग्रवाल लिखते हैं—मेरे पूज्य पिताजी का स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया था । जब डाक्टरी इलाज से कुछ लाभ न हुआ तो मैं उनके स्वास्थ्य के लिये गायत्री जप करने लगा और उनसे भी आग्रह करके जप कराने लगा । इससे उनको काफी लाभ हुआ । फिर एक-एक कारोबार में विशेष घाटा हो जाने से उनको बड़ा धक्का लगा और उन्होंने फिर खाट पकड़ ली । इससे रक्षा पाने को मैंने सवालक्ष का अनुष्ठान आरम्भ किया पर सात-आठ दिन बीतने पर ही मुझे माता की तरफ से ऐसा आभास मिला कि तीन मास बाद तुम्हारे परिवार पर महान् सङ्कट आयेगा । ठीक तीन मास बाद चैत्र सुदी सप्तमी को पिताजी की हालत एकाएक बिगड़ गई और बचने की कोई आशा नहीं रही पर उस समय मेरा जप पूरा हुआ । मैंने कलश का कुछ जल पिताजी पर छिड़का और कुछ पिला दिया । इससे उनकी दशा में आश्चर्यजनक रूप से परिवर्तन हो गया और अब वे स्वस्थ हैं ।

मरणासन्न रोग से मुक्ति

श्री रङ्गलाल मिश्र पछाये गाँव (इटावा) से लिखते हैं—मेरी भाभी रक्तस्राव से मरणासन्न दशा में थी । चारपाई का सहारा देकर बैठाने में भी बेहोश हो जाती थी । हालत इतनी खराब थी कि इटावा से डाक्टर बुलाने का भी समय नहीं रह गया था । अतः गायत्री के लघु अनुष्ठान का सङ्कल्प किया तथा उसी अचेतावस्था में तांगे में रखकर इटावा ले गया । रास्ते में कई बार प्राण निकलते जान पड़े, गायत्री माता की कृपा से इटावा पहुँचकर ४ दिन में निरोग हो गई ।

श्री बालाप्रसाद गुप्ता, मालपानी से गायत्री मन्त्र की शक्ति का अपना अनुभव लिखते हैं—मैं सद्गुरु से गायत्री मन्त्र की दीक्षा लेकर जप किया करता था । एक दिन एक दस वर्ष की श्वेत कुष्ठ रोगिणी कन्या को उसके पिता भँवरलाल जी के यहाँ लिये आये । मैं वहीं था । भँवरलाल जी ने कहा आप गायत्री मन्त्र १०८ बार पढ़ते हुए इसके श्वेत दागों पर हाथ फेर दें—फिर हम लोग गायत्री मन्त्र का प्रभाव देख सकेंगे। उसके पिता को कहा गया—आप इसी भाँति प्रति रविवार लड़की को लिये आया करना, दूसरे रविवार को देख कर मुझे स्वयं ही आश्चर्य हुआ कि पैर तक पेट से फैले श्वेत कुष्ठ के दाग में श्वेतता के बदले लाली की आशा आ रही थी। इस भाँति लगातार कई रविवार आते रहने पर उनके दाग शरीर के स्वाभाविक रङ्ग में बदल गये ।

प्रयागपुर (बहरायच) से श्री मुन्नालाल जी सूचित करते हैं—मुझे काफी समय से पेचिश के दस्त हो रहे थे। धीरे-धीरे स्थिति गम्भीर ही होती गई । सभी अनुभवी वैद्यों एवं डाक्टरों से चिकित्सा कराई परन्तु दस्तों की दशा निरन्तर बढ़ती ही गई । सभी लोग मेरी हालत देखकर चिन्तित थे । ऐसे आपत्ति के समय में मैंने माता का एवं यज्ञ भगवान का स्मरण किया और तत्काल ही थोड़ी सी यज्ञ भस्म का सेवन किया । कुछ समय उपरान्त यकायक मेरे स्वास्थ्य में सुधार होने लगा । लगभग ८-१० दिन में पूर्ण स्वस्थ हो गया । मैं सदैव ही वेदमाता की वात्सल्यता का कृतज्ञ हूँ ।

दिगौड़ा (टीकमगढ़) के बृजबल्लभ संज्ञा लिखते हैं—मेरी माता के एक नेत्र में १२ वर्ष से मोतियाबिन्दु था, इससे मैं काफी परेशान था । इसी मध्य में अचानक ही माताजी के आधासीसी का दर्द प्रारम्भ हुआ और दूसरी आँख भी जाती रही । लगभग सभी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुभवी डाक्टरों ने चिकित्सा की परन्तु लाभ कुछ नहीं हुआ । इसी बीच में माता की कृपा से 'अखण्ड ज्योति' का एक अङ्क प्राप्त हो गया । इसी के अनुसार मैंने क्वार की नवरात्रियों में एक लघु अनुष्ठान किया । इसी समय माताजी की आँखों में अचानक ही ज्योति आ गई । मैं और माताजी सदैव ही वेदमाता गायत्री की कृपा के ऋणी हैं । मेरी तथा माता जी की उपासना भी नियमित रूप से चल रही है ।

श्री चमेली देवी सक्सेना, अमर पाटन (सतना) से माता की अनुकम्पा के सम्बन्ध में सूचित करती हैं— मेरी माता लगभग ३ वर्ष से बिल्कुल अन्धी हो गई । ऐसी विकट परिस्थिति में घर के सभी लोग चिन्तित थे। अनेकों योग्य डाक्टरों द्वारा चिकित्सा कराई गई परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ । मैं माताजी के घर से २० मील दूर रहती हूँ । नित्य माताजी के सभी समाचार प्राप्त होते ही रहते थे । मुझे इस समाचार से बड़ा दु: ख होता था । अन्त में मेरी दृष्टि वेदमाता गायत्री की ओर गई । मैंने उसी दिन से माताजी के कल्याण के लिये, नियमित साधना से अधिक जप प्रारम्भ कर दिया। इसके ठीक ३ माह उपरान्त अचानक ही एक डाक्टर महोदय ग्राम में पहुँचे उन्होंने तुरन्त ही माताजी की आँखों का आपरेशन किया । वेदमाता की कृपा से दो दिन में ही दोनों नेत्र ठीक हो गये । मैं उन डाक्टर महोदय को वेदमाता का ही भेजा हुआ विशेष दूत मानती हूँ । मैं इसी निष्कर्ष पर पहुँची हूँ कि माता सच्ची पुकार पर सभी की सहायता करती हैं।

दतौद (निमाड़) से श्री दादूराम तिवारी लिखते हैं—मेरे ग्राम में पशुओं की भारी बीमारी फैली हुई थी। मेरे घर के समीप ही एक गरीब किसान रहता था उसके भी ४ पशु मर चुके थे । केवल दो शेष रह गये थे, ऐसी विषम परिस्थिति से वह काफी परेशान था । मैंने उसे साहस बँधाया और कहा कि 'तुम माता का स्मरण करो ।' शेष दो पशुओं की दशा भी काफी खराब थी, वे दोनों ही अपने जीवन की अन्तिम श्वासें ले रहे थे । मैंने तुरन्त ही थोड़ा सा जल गायत्री मन्त्र द्वारा अभिमंत्रित करके उनके शरीर पर छींटे मारे, थोड़े समय में दोनों पशु चेतनावस्था में आ गये तथा एक दिन के उपरान्त पूर्ण स्वस्थ हो गये । माता का ऐसा प्रभाव देखकर इस घर के सभी लोग प्रभावित हुए हैं । अब वे सभी लोग नियमित रूप से माता की आराधना करते हैं ।

श्री नन्हकू मिश्र, वीहट, मुंगेर से गायत्री उपासना से हुये लाभ के बारे में लिखते हैं— एक बार रात को लगा । दवाखाने से जरा भी पीड़ा कम न हुई । कुछ देर बाद खून की कै हुई और मैं बेहोश हो गया । फिर विविध उपचार होने लगे । समय बीतता गया और प्रतिदिन दर्द तथा रक्त-वमन की मात्रा बढ़ती ही गयी । मैं जीवन से निराश होकर मन ही मन गायत्री जपने लगा। रात में माता का स्वप्न में दर्शन हुआ । प्रात: गायत्री जप का संकल्प देकर स्वयं भी पड़े-पड़े जप करता रहता । अब मैं दिनों-दिन रोग की घटती एवं सुधार की अवस्था बढ़ती हुई देखने लगा । दो मास में मैं स्वस्थ हो गया । अब कृतज्ञ भाव से यथासाध्य नित्य जप किया करता हूँ।

श्री रामराज पाण्डे, जमशेदपुर (सिंहभूमि) माता की कृपा का वर्णन करते हुए लिखते हैं—मैं धातु रोग से जर्जर हो गया था । सब तरह का इलाज कर हार चुका था । एक हितैषी मित्र ने मुझे गायत्री माता का अंचल पकड़ने की सलाह दी । उपासना विधि गुरुदेव से शिक्षा ग्रहण कर प्रारम्भ की । काफी सुधार हुआ । फिर टायफाइड हुआ । उससे भी रक्षा हुई । अन्तिम कर्म भोग रूप में सारे शरीर में भयंकर दर्द शुरु हुआ । रात-दिन मेरी चीख से आकाश फटता रहता । एक दिन रात में दर्द इतना बढ़ गया कि मैंने समझ लिया कि आज मेरे जीवन की अन्तिम रात्रि है । भोर में थोड़ी देर नींद आयी । स्वप्न में गुरुदेव आश्वासन दे रहे थे—अच्छे हो जाओगे । सूर्योदय होते समय पर नींद खुली । रात्रि की भांति दर्द ने भी शरीर से विदा ले ली।

पांडु रोग से छुटकारा मिला

वैद्य जयप्रकाश जी गौतम इञ्चार्ज डि. बोर्ड डिस्पेंसरी खरखौदा (मेरठ) से लिखते हैं—"मैं बहुत बड़े रोग से ग्रसित था । जब में मथुरा पूर्णाहुति करने गया तब भी यह महान पांडु रोग शरीर में घर किए था। पर बाद में जब मेरी मनोभावना जप करते-करते शुद्ध हो गई तब यह भयंङ्कर रोग स्वयं अच्छा हो गया। अन्यथा इसके पहले ३००-४०० रु. की डाक्टरी दवा तथा अपनी वैद्यक दवाओं के प्रयोग से भी यह अच्छा न हो सका था ।"

गाँव लसूलाडिया अमरा (पो. तराना जिला उज्जैन) से श्री सेवादास वैष्णव लिखते हैं— मेरा भाई रतनदास तथा उसकी धर्मपत्नी यहाँ से १८ कोस पर भड़का गाँव में बीमार हो गये । उनके पास कोई पानी देने वाला भी न था, न वे स्वयं उठ सकते थे । जब मेरे पास यह समाचार आया तो मैंने अपनी उपासना की पूँजी में से दस हजार गायत्री जप का संकल्प

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

करके माता से प्रार्थना की कि मेरे भाई की रक्षा करो। साथ ही अपनी धर्मपत्नी को भड़का गाँव के लिये रवाना कर दिया। जब वह दूसरे दिन वहाँ पहुँची तो मेरे भाई व उसकी स्त्री को बिल्कुल स्वस्थ पाया । माता अपने भक्त की पुकार सब तरह सुनती है ।

श्री इन्द्रचन्द्र भोजक (अमदला बालरा) से लिखते हैं—मेरी बहन बीमार हो गई थी और उसका रोग डाक्टरों की समझ में नहीं आता था । मैंने उसके लिये २४ हजार का पुरश्चरण शुरू किया और उसे भी एक माला रोज जपने को कहा । ९ दिन में वह बिल्कुल स्वस्थ हो गई । इसी प्रकार मेरी स्त्री का आपरेशन हुआ । अस्पताल से घर आने पर उसकी तबियत यकायक ऐसी बिगड़ गई कि जीने की तनिक भी आशा न रही। मैंने गायत्री माता का स्मरण किया और थोड़ी देर बाद उसकी हालत सुधरने लग गई ।

श्री भगवतीप्रसाद वर्मा, केन कामदार ग्राम विजुआ (खीरी) से लिखते हैं—"मेरे पिताजी को श्वाँस का रोग हो गया था, डाक्टर ने ५०० रु. का नुस्खा बतलाया और फिर भी यह कहा कि यह रोग जड़ से कभी ठीक नहीं हो सकता । पिताजी ने न मालूम क्या-क्या दवाएँ इस रोग की खा ली थीं । अब डाक्टरों के सुझाव से निराश होकर उन्होंने दवा करना छोड़ दिया और चिंता व्याप गई । मैंने और मेरी बहन ने गायत्री माता की शरण ली । धन्य माताजी को कि मेरे पिता बिना दवा खाये ही अच्छे हो गये ।

माकडोंन (उज्जैन) से श्री कोमल प्रसाद जी लिखते हैं—१५ फरवरी सन् ५७ को मेरी धर्मपत्नी के कन्या उत्पन्न हुई । अचानक शाम को मेरी धर्मपत्नी की दशा बहुत ही खराब हो गई । ऐसा प्रतीत होने लगा कि वह प्राणहीन ही हो चुकी है । मैं यह सूचना पाकर बहुत ही घबराया । परन्तु मैंने पूजनीय आचार्यजी की आज्ञानुसार साहस एवं धैर्य से काम लिया । पूज्य आचार्य जी की आज्ञा है कि विपत्ति में सदैव ही मानसिक गायत्री जप प्रारम्भ कर दो । मैंने तुरन्त ही निकटवर्ती गायत्री उपासकों को एकत्रित कर गायत्री चालीसा का पाठ प्रारम्भ करा दिया । थोड़े ही समय के उपरान्त धर्मपत्नी के स्वास्थ्य में आशातीत सुधार हुआ और वह पूर्ण स्वस्थ हो गई । माता का यह साक्षात् चमत्कार देखकर सभी लोग आश्चर्य में पड़ गये ।

श्री जगन्नाथ मिश्र बीहट (मुङ्गेर) सूचित करते हैं—सन् १९५३ में मुझे वातव्याधि की पीड़ा का अनुभव हुआ । पहले तो परवाह नहीं की । रोग बढ़ जाने पर लाचार होकर दवा खाना शुरू किया । फायदा नहीं होते देख एक सिविल सर्जन के विचारानुसार एक माह तक सूई और दवा के फेर में रहा, पर विशेष फायदा नहीं रहा । अन्ततः मेरी हालत इतनी दयनीय हो गई कि उठना-बैठना तक बन्द सा हो गया । फिर पटना जाकर बिजली द्वारा चिकित्सा कराई, कुछ लाभ हुआ पर फिर ज्यों की त्यों हालत हो गई । इस बार सब ओर से निराश होकर नौ दिनों में विधिपूर्वक छत्तीस हजार जप पूरा किया । चौथे दिन लाभ होना शुरू हुआ । अनुष्ठान समाप्त होते-होते रोग भी ऐसे समाप्त हो गया मानो कभी हुआ ही न था ।

श्री विश्वनाथ पाण्डेय, दानापुर (पटना) से लिखते हैं—ता. ७ जून को मैं अपने चाचा के यहाँ पहुँचा । दरवाजे के बाहर से ही मुझे रोने, पीटने का शब्द सुनाई पड़ा । जैसे ही मैं अन्दर पहुँचा वे और जोर से विलाप करने लगे । मालूम हुआ कि विजय को इनफ्लुएञ्जा हो गया है और उसकी बोली बन्द हो जाती है । डाक्टर से इलाज कराया, पर लाभ न हुआ। मैंने चाचा से कहा कि किसी कुएँ से एक हाथ से जल खींचकर ले आइये । मैंने तुलसीदल जल में डालकर गायत्री से उसे अभिमंत्रित किया तथा उससे विजय का मुँह धुवा दिया, शेष पिला दिया । माता की कृपा से वह शाम तक ही चङ्गा हो गया।

श्री पद्मसिंह गुप्ता, रीडर टोंक से लिखते हैं—जब मैं कोटा दौरे पर गया हुआ था तब मैंने एक सज्जन के पास गायत्री ज्ञानाङ्क देखा । तभी से मैंने नित्य नियमित रूप से दस मालायें गायत्री जप का नियम बना लिया और उसका पालन हृदय से करने लगा । पिछले दो वर्ष से मैं उदर रोग से पीड़ित था और हजारों रुपये डाक्टरों और वैद्यों में व्यय कर चुका था । यहाँ तक कि उक्त बीमारी के कारण जीवन भार स्वरूप प्रतीत होता था । अभी गायत्री जप प्रारम्भ किये केवल दो ही मास हुये थे कि रोग कुछ कम हो गया । एक रुपये में बारह आना दर्द कम महसूस होने लगा । वास्तव में मेरे लिये तो गायत्री-जप एक रामबाण औषधि ही सिद्ध हुआ । इससे मुझे अब पूर्ण रूप से रोगमुक्त हो जाने का विश्वास हो गया है । मैं गायत्री-माता का कितना आभारी हूँ ।

श्री मन्नूलाल तिवारी, पिछोर झांसी से लिखते हैं—मुझ पर सन् ५५ में अचानक एक लकवा जैसे भयङ्कर रोग का आक्रमण हुआ । मुँह, दाँत सभी बन्द हो गये, शरीर पत्थर की तरह अकड़ गया । सिविल

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सर्जन ने जवाब दे दिया । असह्य पीड़ा से छटपटाता हुआ मैं जीवन की अन्तिम घड़ियाँ गिन रहा था । पल पल पर बेहोशी के दौरे आते थे । इसी बीच गायत्री माता का स्मरण किया, आर्त पुकार मचाई । माता ने ग्राह के मुँह में फँसे हुए गज की तरह मुझे बचा लिया। धीरे-धीरे अच्छा होने लगा और कुछ ही दिनों में पूर्ण स्वस्थ हो गया । तब से अब तक अनन्य श्रद्धा से गायत्री उपासना में लगा हूँ । १९ अनुष्ठान कर चुका हूँ । ५ बार गायत्री तपोभूमि में माता के दर्शन कर आया ।

श्री प्रहलाद जोशी अध्यापक, तिलौड़िया से लिखते हैं—मैं कई मास से शारीरिक पीड़ा से संत्रस्त था । पैर का खून जम गया था, कष्ट के मारे मृत्यु की इच्छा होती थी । एक दिन गायत्री यज्ञ की अन्तः प्रेरणा हुई। दूसरे दिन यज्ञ कराया, तीसरे ही दिन आश्चर्यजनक रूप से पीड़ा घटनी आरम्भ हुई और एक हफ्ते के अन्दर मैं बिल्कुल ठीक हो गया ।

श्री नीलम भटनागर, भुसावल माता की कृपा का वर्णन करती हुई लिखती हैं—मेरे पति का स्वास्थ्य दिनों दिन गिरता जा रहा था । एक दिन मैंने उनसे इसका कारण पूछा । उन्होंने कहा पेशाब से खून जाता है, इसी से दुर्बलता बढ़ती जा रही है। मुझे तो गायत्री माता का पूरा भरोसा था । तुरन्त ही गायत्री मन्त्र से जल अभिमन्त्रित कर उन्हें पिला दिया । उसी के बाद खून जाना बन्द ही हो गया । पीछे रही-सही जलन भी कुछ दिन तक अभिमन्त्रित जल पीते रहने से मिट गयी।

श्री सालिगराम पाण्डेय, मऊरानीपुर, अपने जीवन के प्रत्यक्ष अनुभव लिखते हैं—मैं सत्रह वर्ष से लकवे एवं बारह वर्ष से दमा रोग से कष्ट भोग रहा था । सन्तान के भाग्य से भी वंचित था । एक उपासक बन्धु की राय से सवालक्ष का अनुष्ठान किया—कुछ लाभ पाकर पुनः सवालक्ष का अनुष्ठान किया । आश्चर्य से सभी ने देखा जो दमा अनेक इलाजों से भी दूर नहीं हुआ था वह केवल माता की उपासना से ही नष्ट हो गया । इसके बाद मुझे एक पुत्री रत्न की भी प्राप्ति हुई, जिसका नाम श्रद्धा से गायत्री ही रखा । गायत्री तपोभूमि में होने वाले यज्ञ की भागीदारी के लिये मैं भी जप करता था । तीन महीने जप करने के बाद अनायास ही लकवे ने भी मेरे शरीर से विदाई ले ली । आज मैं युगों का पीड़ित—सुखी जीवन का आनन्द ले रहा हूँ । इससे अधिक और माता की क्या कृपा हो सकती है ।

सिरगिटी (बिलासपुर) के रामनारायण लाल गुप्ता माता के वात्सल्य के विषय में सूचित करते हैं—गतवर्ष से मेरे पेट में सदैव ही पीड़ा होती थी । इस रोग की काफी चिकित्सा कराई पर किसी भी प्रकार रोग निवारण नहीं हुआ । एक दिन अचानक ही अखण्ड ज्योति पत्रिका की एक प्रति मुझे प्राप्त हो गई । इसी की प्रेरणा से मैंने गायत्री उपासना तथा हवन प्रारम्भ किया । इसके कुछ समय उपरान्त मेरे पेट का दर्द बिल्कुल ठीक हो गया । ऐसी वात्सल्यमयी माँ के अनुग्रह का मैं सदैव आभारी रहूँगा ।

सिलवस्सा (सूरत) के श्री इन्द्रवदन शुक्ला लिखते हैं—मैं सन् ५४ में अचानक ही बीमार पड़ गया । मुझे पूज्य आचार्य जी का परिचय पहले ही से प्राप्त था । मैंने शीघ्र ही आचार्य जी के नाम एक पत्र लिखा, पूज्य आचार्य जी ने लिखा कि माता की उपासना करो—रक्षा कवच भेज रहे हैं, इसे धारण कर लें । मैंने ऐसा ही किया । कुछ समय उपरान्त स्वास्थ्य में आशातीत सुधार हुआ । मैंने और भी अधिक निष्ठापूर्वक माता की उपासना की । कुछ ही समय में मैं बिल्कुल स्वस्थ हो गया । इसके पश्चात् मथुरा विशद् गायत्री महायज्ञ में भी जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ । यहाँ से मैं इतना प्रभावित हो गया हूँ कि अब आत्मकल्याण का प्रयत्न करते हुए जनकल्याण के लिये भी सतत् प्रयत्नशील रहकर वेदमाता का अधिक से अधिक प्रचार कर रहा हूँ ।

श्री भगवती प्रसाद तिवारी, बीना से लिखते हैं—गायत्री उपासना के बड़े प्रभावशाली अनुभव मुझे हुए हैं । व्यक्तियों को इस महामन्त्र की उपासना की प्रेरणा मैंने दी है और उनको आश्चर्यजनक लाभ प्राप्त करते देखा है । कई वर्ष पूर्व मुझे लकुवा हुआ था बड़ी भयंकर स्थिति थी वह भी मानसिक जप से बिल्कुल अच्छा हो गया । अब इस वृद्धावस्था में माता ने एक पुत्र दिया है । माता की महानता पर मेरा अटूट विश्वास है ।

श्री देवीसिंह जी, बोहत से लिखते हैं—

सुना था कि क्षय रोग की निश्चित आराम करने वाली कोई दवा ही नहीं है । मेरे दुर्भाग्य से—पूर्व जन्म के पापों के कारण मुझे क्षय रोग हो गया । फेफड़े से काफी खून गिरने लगा था । मेरे जीवन से सभी निराश हो गये थे—मैं भी हताश था । ''मरता क्या न करता।'' मैंने करुण प्रार्थना के भाव में गायत्री उपासना की और आज मैं तपैदिक जैसे रोगराज के कराल कवलों से बचकर माता की कृपा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

शक्ति प्रदर्शन का एक उपादान कर रहा हूँ । मैं विश्वास दिलाता हूँ कि जो भी किसी संकट से उबार चाहते हैं, वे माता की शरण अवश्य ग्रहण करें । उद्धार होकर ही रहेगा ।

श्री श्यामलाल 'दीन' नगला सुम्मेर (जिला अलीगढ़) से लिखते हैं—मेरे गाँव में एक सजातीय भाई पीतम्बर का लड़का मसान रोग से पीड़ित था । वैद्यों और झाड़ फूँक करने वालों ने बहुत उपाय किये पर लाभ न हुआ । जब मुझसे कहा गया तो मैंने गायत्री मंत्र का जल और तपोभूमि के यज्ञ की भस्म दी जिससे बच्चा तुरन्त स्वस्थ हो गया । यह देखकर दर्शक चकित रह गये और गायत्री माता का गुणानुवाद करने लगे ।

इस प्रकार सैकड़ों नहीं वरन सहस्रों व्याधियों के चंगुल में फँसे व्यक्ति माता की कृपा से छुटकारा पाकर स्वस्थ जीवन का सुख भोग रहे हैं । गायत्री उपासना से आत्म शान्ति प्राप्त होती है और उसके फल से शारीरिक विकार सहज ही दूर हो जाते हैं । इस प्रकार जहाँ औषधियों का प्रयोग करके मनुष्य आर्थिक कठिनाइयों में फँस जाते हैं और एक रोग को अच्छा करने के प्रयत्न में प्राय: नये-नये रोगों को उत्पन्न कर लेते हैं, वहाँ गायत्री साधना व्याधि को जड़ मूल से ही दूर करती है । इसका आशय यह नहीं कि औषधि का सेवन ही न किया जाय। स्वभावत: कोई शारीरिक कष्ट होने पर पहले आदमी का ध्यान दवा की तरफ जाता है, पर जब दवा काम नहीं करती तो फिर वह दैवी शक्ति का आश्रय ढूंढने लगता है । इसलिये दवा करते समय भी रोगी और चिकित्सक दोनों को यही ख्याल रखना चाहिये कि "दवा मेरी और दया तेरी ।" बिना दैवी कृपा के दवा भी प्रभाव नहीं दिखला सकती । दैवी सहायता के लिये सर्वश्रेष्ठ उपाय गायत्री-उपासना ही है। गायत्री माता अपने बालकों के कष्ट को देखकर शीघ्र ही दुखित हो जाती हैं और उनका कल्याण साधन करती हैं ।

स्वास्थ्य रक्षक-माँ गायत्री

श्री मोहनलाल वर्मा, लिखते हैं कि किसी ने सत्य कहा है कि मनुष्य स्वयं ही अपना शत्रु होता है और स्वयं ही अपना मित्र । संसार में हितकर और अहितकर दोनों प्रकार के तत्त्व होते हैं। यह हमारी बुद्धि की परीक्षा है कि हम लाभप्रद तत्त्वों को ही ग्रहण करें और अहितकर तत्त्वों से घृणा करते हुए उन्हें त्याग दें।

संसार के हर एक प्राणी की तरह मेरी परीक्षा भी हुई परन्तु मैं उस में असफल रहा। इन्द्रियों के वश में हो कर मैंने अपने स्वास्थ्य को नष्ट कर डाला। जीभ कहती है कि उसे तृप्त करने के लिए स्वादिष्ट मिष्ठान व पकवान खाने चाहिए। दुर्बल मन के मनुष्य उसके आगे सिर झुका देते हैं। पेट बिगुल बजाता है कि और जगह नहीं है परन्तु जीभ नहीं मानती और नाक तक ठोंसने तक बाध्य कर देती है, जिसका परिणाम यह होता है कि वह काम करने से इन्कार कर देता है। पेट के कार्य में अव्यवस्था होने से सारे शरीर पर उसका प्रभाव होता है। मेरे साथ भी बिल्कुल ऐसा ही हुआ। मुझे कब्ज रहने लगा। खाना हजम नहीं होता था। उसके लिए चूरन, चटनी आदि की आवश्यकता पड़ने लगी। दस्तावर दवाएँ लेने से स्वास्थ्य बिगड़ने लगा और कब्ज का रोग ठीक होने के बजाय वह दिन-दिन बढ़ता ही गया। खाने को पचाने के लिए चाय की आदत पड़ गई। बिना चाय दिये शौच नहीं जा सकता था। चाय कब्ज की कोई दवा नहीं है परन्तु गर्मी पहुँचने से दस्त साफ हो जाता है। इसकी प्रतिक्रिया में नसें और ढीली पड़ जाती हैं । कब्ज और बवासीर का चोली और दामन का साथ होता है। अत: वह भी हमारी मित्र हो गई। रक्त आने से कमजोरी आना स्वाभाविक ही था।

प्रकृति का नियम है कि कमजोर को सभी दबाते हैं। सिनेमा देखने के दुष्परिणाम-दूषित विचारों ने भी आ दबोचा। देखे हुए चित्रों का चिंतन करने से, वह निरन्तर मन में जमे रहते थे। फलस्वरूप स्वप्नदोष के भी दर्शन होने लगे। एक करेला दूसरे नीम चढ़ा। पहिले के रोग बर्दाश्त नहीं हो रहे थे अब एक और ने आ घेरा। जीवन में नीरसता छा गई। प्रसन्नता कैसी होती है, यह मैं भूलता जाने लगा। जिधर देखता था, निराशाओं के बादल उमड़ते आ रहे थे । भगवान सभी का रक्षक होता है, यह विश्वास मेरा हटने लगा। निराशा ने मेरे मन को तोड़ दिया । संसार में मुझे अपना कोई नहीं दीखता था । इसलिए मेरी इच्छा हुई कि इस शरीर से पीछा छुड़ाऊँ, सम्भव है इसके बाद कुछ सुख मिले ।

जीभ के चटोरेपन के कारण कितना बुरा परिणाम होता है, यह मैंने अपने जीवन में देख लिया । तभी मुझे स्वास्थ्य रक्षा की आवश्यकता अनुभव हुई । यह अनुभव हो रहा था कि यह सब बुद्धि और विवेक के अभाव के कारण हुआ है परन्तु 'अब क्या होता जब चिड़िया चुग गई खेत" । मुझे अपने बचाव की कोई

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सूरत दिखाई न देती थी क्योंकि शहर का कोई ऐसा वैद्य और डाक्टर न रहा होगा जिस से मैं ने दवा न ली हो । दवा से तो मेरा जी अब ऊब गया था । भगवान का सहारा भी दिखाई नहीं देता था । दु:ख की अग्नि में जल कर मैं अपने भाग्य को कोसा करता था । परन्तु यह कोई दु:ख की दवा थोड़े ही थी । मरता क्या न करता । मैंने गंगा मैया की गोद में शरण लेने का निश्चय कर लिया । यह तो कायरता की निशानी थी परन्तु मेरे लिए और कोई मार्ग ही नहीं दिखाई देता था। यही मार्ग उचित जान कर मैं चल पड़ा उन इठलाती हुई लहरों के आंचल में विश्राम करने के लिए । अपने विकृत मन से सोच रहा था कि वहाँ सुख की अनुभूति मिलेगी ।

संसार की सभी बीती बातों को भूल कर मैं एक नये संसार में जाने की तैयारी कर रहा था । पैर आगे बढ़ते जा रहे थे परन्तु मन में कोई कह रहा था "जिन्दगी जिंदा दिली का नाम है-मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं ।" इससे ढाँढस बंधा परन्तु जब कोई सहारा न देखा तो फिर निराश हो गया और तेजी से चलने लगा । वहाँ पहुँचकर देखा, एक ब्राह्मण कुछ भगवत उपासना कर रहे हैं । चूँकि आत्म-हत्या एक पाप है, और पाप को मनुष्य चोरी से ही करना चाहता है, इसलिए मैं माँ की गोद में जाने से हिचकने लगा । वहीं तट पर बैठ गया । मन में तरह-तरह के विचार आने लगे । मै इस प्रतीक्षा में था कि वह उठे और मैं अपना काम सिद्ध करुँ। भगवान की कुछ और ही इच्छा थी। मेरा उसकी ओर आकर्षण बढ़ने लगा। मैं उसकी ओर टकटकी बाँध कर देखा रहा था । मेरे मन में विचार आने लगा कि यह भी तो मनुष्य है, भगवान की भक्ति में लीन है और मैं हूँ कि संसार से कायरों की तरह भाग रहा हूँ। ऐसे विचार आते थे और लीन हो जाते थे । मन साथ नहीं देता था । एक विचार उत्पन्न हुआ कि इसी को अपना मित्र मान कर अपनी जीवन गाथा सुना दूँ, हो सकता है, यह कोई उपाय बतला सके । वह अपनी पूजा समाप्त करके उठा और मैं उसकी ओर बढ़ने लगा। आश्चर्य से पूछने लगा "कहो मित्र ! क्या बात है ? कुछ परेशान से मालूम होते हो । इतने कमजोर क्यों हो रहे हो ? जीवन से निराश हो गये क्या ? मैंने भला आदमी समझकर अपनी राम कहानी शुरू से आखिर तक कह सुनाई । उसके माथे पर निराशा की एक झलक भी दिखाई नहीं दी । उसने कहा "इन्द्रियों के गुलाम होने का यह दुष्परिणाम है । इनसे मन बड़ा, सूक्ष्म और शक्तिशाली है । मन को काबू में करने वाली बुद्धि उससे भी बलवान है । बुद्धि की अधिष्ठात्री देवी गायत्री है ।.तुम गायत्री माँ की शरण में जाओ । मन और इन्द्रियाँ तुम्हारे काबू में रहेंगी, तुम उनके शासक रहोगे, गुलाम नहीं । परिणामस्वरूप अपनी इच्छानुसार जीवन-यापन करोगे । जीने के लिए खाओगे, खाने के लिए नहीं जिओगे । अपनी हानि-लाभ को भली प्रकार पहचान कर लाभकारी तत्त्व को ग्रहण करोगे और हानिकारक को चाहे जितना स्वादिष्ट क्यों न हो, त्याग दोगे । यही जीवन की सफलता का मार्ग है । इसे अपनाकर तुम सुखी बन सकते हो । अप्राकृतिक जीवन को छोड़ दो, प्रकृति माता की ओर चलो, तुम्हारा स्वास्थ्य सुधर जायेगा । परन्तु इन सब की मूल में है, सात्विक बुद्धि । इसके लिए गायत्री उपासना करो। गायत्री माता सर्व दु:ख निवारणी है ।"

उस ब्राह्मण का प्रत्येक शब्द मेरे अन्त:करण में जम सा गया था । आकाश में मुझे वही शब्द बार-बार सुनाई दे रहे थे । वह मुझे एक नई प्रेरणा दे रहे थे, मुझे एक नया मार्ग बतला रहे थे । नये मार्ग की ओर मनुष्य की स्वाभाविक रुचि होती है । मैंने उसे अपनाना स्वीकार कर लिया । उन्होंने मुझे गायत्री महाविज्ञान पहला भाग पढ़ने को दिया । उसी में वर्णित गायत्री की ब्रह्म संध्या करने के पश्चात् मैं जाप करने लगा । पहले पहल एक माला से शुरू किया । चूँकि यह अपने हित की बात थी, इसलिए इसे बड़े उत्साह से कर रहा था । थोड़े ही दिनों में तीन, फिर पाँच, इस प्रकार से ग्यारह माला करने लगा । विश्वास जम गया था इसलिए लाभ जल्दी दीखने लगा। विचारों में परिवर्तन होने लगा । मन में कुछ दृढ़ता अनुभव होने लगी । भले और बुरे लाभदायक और हानिकारक की पहचान तो पहले भी थी परन्तु उसके अनुसार चलना कठिन था । यही कठिनाई सभी मनुष्यों के साथ होती है । मैं सोचने लगा जो मिठाई और देर से हजम होने वाली वस्तुएँ हैं, उन्हें मैं क्यों खाऊँ ? जीभ के स्वाद के लिए मैं अपना स्वास्थ्य क्यों नष्ट करूँ ? भूख से अधिक नहीं खाना चाहिए । खाने को चबा-चबा कर खाना चाहिए । माँस, शराब, अंडे आदि का सेवन नहीं करना चाहिए । इनके स्थान पर दूध, घी, मक्खन, फल आदि का प्रयोग करना चाहिए। आसन, प्राणायाम, व्यायाम करना चाहिए । प्रात: घूमने का कार्यक्रम भी रखना चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री माता की कृपा से मुझे निरन्तर सद्प्रेरणा मिल रही थी । वैद्य से मैंने चिकित्सा कराना भी आरम्भ कर दिया था । मेरे विचारों में अद्भुत परिवर्तन होने लगा । काम की ओर से प्रवृत्ति हटने लगी । उपन्यासों को पढ़ने को मन नहीं चाहता था । सिनेमा से घृणा हो गई थी । स्त्रियों को माता, बहन की दृष्टि से देखता था । मेरे स्वास्थ्य में आशाजनक सुधार होने लगा । मानसिक दुर्बलता दूर होने लगी । मन में निराशा के स्थान पर आशा की तरंगें लहराने लगीं । जीवन में, आगे बढ़ने के लिए उत्साह उमड़ने लगा । अपने आस-पास सभी कुछ अच्छा दीखने लगा। भगवान की सुन्दर सृष्टि में सभी कुछ सुन्दर है परन्तु हम स्वयं उसे असुन्दर बना लेते हैं, यह मुझे अनुभव होने लगा ।

मैंने सुन रखा था कि योगी लोग शरीर का काया कल्प करते हैं । मैंने स्वयं इस तथ्य की सत्यता को अनुभव कर लिया है । परन्तु यह सब गायत्री माता की कृपा का प्रसाद ही है ।

गायत्री उपासना के अनुभव

सच्ची श्रद्धा से गायत्री उपासना करने वालों को समय-समय पर अनेक प्रकार के बड़े उत्साहवर्धक आध्यात्मिक एवं भौतिक अनुभव होते रहते हैं । उपासक समय-समय पर उनकी सूचना हमारे पास भेजते रहे हैं । उनमें से कुछ इस प्रकार हैं—

नास्तिक से आस्तिक बना

श्री सत्य प्रकाश जी कुलश्रेष्ठ, सिकन्दरपुर, भाण्डेर अपनी जीवन दिशा बदलने का वर्णन करते हैं: कालेज की शिक्षा ने मुझे पूरा नास्तिक बना दिया था । पूजा-उपासना तो दूर—ईश्वर के अस्तित्व तक में मेरा विश्वास नहीं रह गया था ।

एक स्वजन गायत्री उपासक का अनुभव सुनकर मैंने प्रयोग रूप में गायत्री जपना प्रारम्भ किया । एक लघु अनुष्ठान कर डाला । रात को स्वप्न में एक तेजोमयी कुमारिका ने मुझे आदेश दिया—तदुपरान्त मैंने विधिपूर्वक सवालक्ष का अनुष्ठान पूरा किया । इसके बाद तो अनेकों भविष्य में घटने वाली संभावना को मैं स्वप्नादि द्वारा जान लेने लगा । एक बार घर में डकैती होने का स्वप्न देखा । तो चार दिन बाद पिताजी के पत्र में स्वप्न देखी घटना का वर्णन पढ़ने को मिला । ऐसी अनेकों घटनायें मेरे जीवन में घटती ही जा रही हैं ।

विद्या लाभ का अवसर मिला

श्री शिवनन्दन कश्यप, लश्कर से अपनी सफलता के विषय में लिखते हैं । १९५२ में प्राइवेट रूप में बी.ए. की परीक्षा देनी चाही, शासन की ओर से ऐसी परीक्षा देने की आज्ञा नहीं दी जा रही थी, पर समय आने पर अनायास मुझे आज्ञा मिल गयी और परीक्षा भी दे दी । योग्यता या अध्ययन की कमी के कारण मुझे असफल होने का भय हो रहा था । जिस माता (गायत्री माता) की उपासना कर रहा था सदा उनसे प्रार्थना किया करता । एक दिन स्वप्न में आश्वासन मिला—तुम दूसरे दर्जे में पास हो और यही चरितार्थ हुआ ।

निराशा में आशा

श्री ध्रुवराम शर्मा, अठगाँव जराखर (हमीरपुर) अपना गायत्री उपासना के प्रति खिंचने का कारण लिखते हैं—मेरा भाई विश्वनाथ दसवीं श्रेणी में पढ़ रहा था । उसकी योग्यता से जरा भी उत्तीर्ण होने की आशा नहीं थी, इसीलिए उसके पास होने के लिए मैंने गायत्री उपासना प्रारम्भ की और वह अच्छी तरह उत्तीर्ण हो गया । तभी से मेरी आँख खुली और नियमित रूप से मैं गायत्री-उपासना करने लग गया हूँ।

पेशाब का खून बन्द हुआ

श्री नीलम भटनागर, भुसावल माता की कृपा का वर्णन करती हुई लिखती हैं—मेरे पति का स्वास्थ्य दिनों-दिन गिरता ही जा रहा था । एक दिन मैंने उनसे इसका कारण पूछा । उन्होंने कहा—पेशाब से खून जाता है, इसी से दुर्बलता बढ़ती जा रही है । मुझे तो गायत्री माता पर पूरा भरोसा था । तुरन्त ही मैंने गायत्री मंत्र से जल अभिमंत्रित कर उन्हें पिला दिया । उसी के बाद खून जाना बन्द ही हो गया । पीछे रही-सही जलन भी कुछ दिन तक अभिमंत्रित जल पीते रहने से छूट गयी ।

अनेक व्याधियों से छुटकारा

श्री सालिगराम पाण्डेय, मऊरानीपुर अपने जीवन के प्रत्यक्ष अनुभव लिखते हैं— मैं सत्रह वर्ष से लकवे एवं बारह वर्ष से दमा रोग से कष्ट भोग रहा था ।

सन्तान के भाग्य से भी वंचित था । एक उपासक बन्धु की राय से सवालक्ष का अनुष्ठान किया—कुछ लाभ पाकर पुनः सवालक्ष का अनुष्ठान किया । आश्चर्य से सभी ने देखा जो दमा अनेक इलाजों से भी दूर नहीं हुआ था वह केवल माता की उपासना से ही नष्ट हो गया । इसके बाद मुझे एक पुत्री रत्न की भी प्राप्ति हुई, जिसका नाम श्रद्धा से गायत्री ही रखा । गायत्री तपोभूमि में होने वाले यज्ञ की भागीदारी के लिए मैं भी जप करता था । तीन महीने जप करने के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बाद अनायास ही लकवे ने भी मेरे शरीर से विदाई ले ली । आज मैं युगों का पीड़ित सुखी जीवन का आनन्द ले रहा हूँ । इससे अधिक और माता की क्या कृपा हो सकती है ।

दस वर्ष बाद सन्तान

श्रीराम कृष्ण डोंगरे, कटनी (जबलपुर) माता के प्रति अपनी कृतज्ञता का प्रकाश करते हैं:—वर्षों के दाम्पत्य जीवन के बाद भी जब संतान के दर्शन नहीं हुए तो मेरी पत्नी सहित सारा परिवार एवं कुटुम्बीजन निराश थे, पर मेरी आस्था अंचल बनी रही । अन्त में माता की करुणा फूटी और घर में पुत्र रत्न को देख कर सभी प्रसन्नता से उत्फुल्ल हो उठे ।

स्कॉलरशिप मिली

श्री द्विजेन्द्र प्रसाद शर्मा, पाली (पटना) अपनी गायत्री उपासना के लाभों का वर्णन करते हैं:—मैं नित्य टूटे-फूटे रूप से गायत्री जप कर लिया करता था। विद्यालय में स्कॉलरशिप की दरखास्तें पड़ रही थीं, मैं अयोग्य तो था ही, फिर भी दरखास्तें दे दिया करता था । जब वह रुपया आया तो स्वयं मुझे अपना नाम देखकर आश्चर्य हुआ और माता की कृपा की याद से परिप्लुत हो रहा था । अब पढ़ने और गायत्री उपासना में मेरी दिलचस्पी बढ़ गयी थी । इस बार की परीक्षा देने के बाद मेरे सहपाठी मेरी खिल्ली उड़ाते—कहते तुम अपनी श्रेणी में सबसे ऊँचा नम्बर पाओगे । आज परीक्षाफल निकलने वाला था । स्कूल जाते ही मेरे सहपाठी गण हँसी उड़ाने के लिए मेरे चारों ओर जुट गये—उसी समय नम्बर सुनाने का अवसर आया । मेरे सहित सभी को मेरा प्रथम नम्बर से पास होना विस्मित कर रहा था ।

सन्तोषजनक स्थिति प्राप्त

श्रीचन्द्रकान्ता गुप्ता, बैकुण्ठपुर (सरगुजा, अपनी गायत्री उपासना के अनुभव का वर्णन करती हैं—

मेरे अभिभावक मेरे लिये अच्छे वर की तलाश में परेशान थे, पर मैं माता के प्रति विश्वास कर निश्चिन्त थी । उन लोगों की परेशानी मैं देखकर लज्जित और पीड़ित हो जाती । अन्त में मैंने एक लघु अनुष्ठान इसके लिये कर लिया । फिर अनायास जैसे, एक सुशिक्षित एवं सम्पन्न वर मिल गये ।

मेरे गाँव में लड़कियों को मिडिल से आगे पढ़ाने की कोई प्रवृत्ति नहीं दीखती । मैं मिडिल पास कर माता से प्रार्थना करती रही—फलतः मेरी आगे की पढ़ाई के लिये परिवार वालों ने जबलपुर में व्यवस्था कर दी ।

खोया लड़का मिला

श्री हरदयालु जी श्रीवास्तव, गोहाँड (हमीरपुर) माता की दयालुता का वर्णन करते हुए कहते हैं—मेरा ज्येष्ठ पुत्र घर से बैरागी बनकर चुपचाप निकल गया । १५ महीने उसकी खोज करते बीत गये—कहीं पता न चला । सब तरफ से निराश होकर मैंने एक मात्र गायत्री माता का अंचल पकड़ लिया । सोलहवें मास में अचानक ही उसका पूरा पता हमें मिला। पता मिलते ही हम कुछ सज्जनों के साथ वहाँ गये । उसने लौटना स्वीकार कर लिया । गेरुवा वस्त्र छोड़कर गृहस्थ के रूप में हमारे साथ आकर रहने लगा । हमारे प्रयत्न और आशा से अधिक सफलता मिलने का कारण एकमात्र माता की ही कृपा है ।

वातव्याधि से छुटकारा

श्री जगन्नाथ मिश्र बीहट (मुङ्गेर) सूचित करते हैं—१९५३ में मुझे वातव्याधि की पीड़ा का अनुभव हुआ । पहले तो परवाह नहीं की । रोग बढ़ने पर लाचार होकर दवा खाना शुरू किया । फायदा नहीं होते देख एक सिविल सर्जन के विचारानुसार एक माह तक सूई और दवा के फेरे में रहा, पर विशेष फायदा नहीं रहा । अन्ततः मेरी हालत इतनी दयनीय हो गयी कि उठना-बैठना तक बन्द सा हो गया । फिर पटना जाकर बिजली द्वारा चिकित्सा करायी, कुछ लाभ हुआ पर, फिर ज्यों की त्यों हालत हो गयी। इस बार सब ओर से निराश हो कर नौ दिनों में विधिपूर्वक छत्तीस हजार जप पूरा किया । चौथे दिन लाभ होना शुरू हुआ । अनुष्ठान समाप्त होते-होते रोग भी ऐसे समाप्त हो गया मानो कभी हुआ ही न था ।

दुर्घटना से प्राण रक्षा

श्री राजवंश जी, मसौढ़ी-पटना, माता के वात्सल्य का वर्णन करते हैं:—

हमारे अनेकों सन्तान मरे हुए पैदा हुए और कुछ ने दुनियाँ को एक बार देखकर सदा के लिये आँखें बन्द करलीं । व्यथा में सन्तप्त हम सभी माता की प्रार्थना करते रहते थे । इस बार १७ फरवरी, ५६ के मध्याह्न में अस्पताल में मेरी धर्मपत्नी ने माता की कृपा से संरक्षित पुत्र रत्न प्रसव किया । हम लोग उल्लसित हो उठे । अस्पताल से डिस्चार्ज होने पर चाची जी के साथ बच्चे सहित उसकी माँ गाड़ी पर घर जा रही थी कि एक दूसरी गाड़ी जोरों से टकरा गयी । यह गाड़ी उलटकर टूट-फूट गयी । मैंने समझ लिया यह बच्चा भी गया—पर माता ने गाड़ी उलटने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

के समय ही जच्चा बच्चा सहित हमारी चाची को करीब ६ फीट दूर फेंक दिया । हल्की सी चोट लगी और सभी तरह से सुरक्षित ही रहे । गाड़ी से इतनी दूर फेंके जाने एवं सुरक्षा में हम साक्षात् माता की कृपा का दर्शन कर गद्‌गद् हो रहे थे ।

सूनी गोद भर गई

श्री इन्दिरा देवी शुक्ल, भरारी (बिलासपुर) लिखती हैं:—

सुसम्पन्न परिवार में मेरा विवाह हुआ था पर संतान बिना घर सूना-सूना लगता था । दो बार संतान हो-होकर मर गयी । तीसरी बार जब मैं गर्भवती थी, मेरे पतिदेव को एक गायत्री उपासक से भेंट हो गयी । वे हमारे लिये देवदूत ही थे । उनके कहे अनुसार हम दोनों ने गायत्री जप करना प्रारंभ किया । माता का कृपा-रस पीकर पुष्ट चिरञ्जीव पुत्र उत्पन्न हुआ, जो आज उस निश्चिंत संरक्षण में विकास पा रहा है । माता धन्य हैं ।

मारने वाला स्वयं मर गया.

एक गायत्री प्रेमी ग्राम हमीरपुर (जि. शाहजहाँपुर) से लिखते हैं— यहाँ के श्री. बालकरामजी गुप्त वैद्य गायत्री के बड़े भक्त हैं और अनेक वर्षों से उसकी उपासना करते रहते हैं । एक समय वे किसी मरीज की चिकित्सा करने गये तो मालूम हुआ कि मोती नाम का एक स्याना (ओझा) ५० रु. लेकर मरीज को अच्छा करने को कहता है । बालकरामजी ने उसके घर वालों से कहा कि इसे चिकित्सा द्वारा ही आराम हो जायगा, तुम रुपया मत देना । जब इस बात की खबर मोती को लगी तो वह बहुत बिगड़ा और उसने बालकरामजी पर घात का प्रयोग किया । वैद्यजी को स्वप्न में ऐसा मालूम हुआ कि एक काला भयंकर पुरुष उन्हें मारने को आ रहा है । यह देखकर बालकराम चिल्ला उठे । इतने में एक कन्या आ गई और उसने उस भयंकर पुरुष को अपने हाथ के त्रिशूल से मार दिया । दूसरे दिन मोती बालकराम के पास आकर बार-बार क्षमा माँगने लगा कि मैंने आपका बड़ा अपराध किया, आप मुझ पर क्रोध न करें । बालकरामजी ने कह दिया कि हम तो कुछ नहीं करते । पर पन्द्रह दिन बाद ही सर्प के काटने से मोती की मृत्यु हो गई ।

जहर खा लेने पर भी मृत्यु नहीं हुई

वही गायत्री प्रेमी श्री बालकरामजी वैद्य के गायत्री सम्बन्धी अन्य अनुभवों के विषय में लिखते हुये कहते हैं कि वैद्यजी के गुरुदेव की मृत्यु होने पर उनको ऐसा दुख हुआ कि वे भी रात्रि के समय घर से निकल कर सरजू जी के तट पर जा बैठे । वहाँ स्नान करके गायत्री उपासना की और फिर प्राण-त्याग के उद्देश्य से जहर खा लिया । जहर के प्रभाव से वे बेहोश हो गये। उसी दशा में स्वप्न में उनको एक कन्या दिखलाई पड़ी, जो उनसे कह रही थी कि तुम घर जाओ तुम्हारी अभी मृत्यु नहीं है । कुछ देर बाद होश में आने पर वे घर चले आये ।

अबोध बालक की रक्षा

श्री बाबूलाल शर्मा, राघोगढ़ (म. प्र.) से लिखते हैं—श्री. के. एल. सोनी का ३ वर्ष की आयु का पुत्र चि. राजेन्द्र कुमार दो मंजिल की छत से खेलते-खेलते अचानक नीचे गिर गया पर माता की असीम कृपा से बालक को खरोंच तक नहीं आई । यह चमत्कार देखकर लोग भक्तिभाव से माता का स्मरण करने लगे ।

नौकरी पर फिर बहाल कर दिये गये

श्री जगदम्बाप्रसाद जी, छीतेपुर (शाहजहाँपुर) से लिखते हैं—यहाँ के श्री जगदीशप्रसाद जी सक्सेना अपनी पटवारीगीरी की नौकरी से अलग कर दिये गये थे । अपने भाई की प्रेरणा से उन्होंने उसी समय से गायत्री जप शुरू कर दिया । तहसीलदार ने उनसे कह दिया था कि आपका नाम लिस्ट से खारिज हो चुका है । थोड़े ही दिन बाद डिप्टी साहब दौरा पर आये, उन्होंने कहा कि तुम्हारा नाम लिस्ट में है और नौकरी अवश्य मिलनी चाहिये । इस समय वे कुर्रिया में लेखपाल हैं । उन्हें अब माता पर बड़ी श्रद्धा हो गई है।

ज्वर दूर हो गया

श्री. ना. रा. वर्मा, ललितपुर (झाँसी) से लिखते हैं—स्थानीय पोस्टमास्टर श्री शिवप्रसाद गुप्ता की लड़की विमलादेवी को जोर से ज्वर चढ़ आया था और वह उससे बेचैन थी । मुझे समाचार मिलने पर मैंने गायत्री माता से प्रार्थना की और उसी से झाड़ फूँक कर दी । चार ही दिन में खतरनाक ज्वर पूर्ण रूप से जाता रहा और अब वह पूर्ण स्वस्थ है । इसके उपलक्ष्य में माता का प्रसाद वितरण किया गया।

भयंकर राजरोग (टी. बी.) से छुटकारा

श्री लक्ष्मीनारायण द्विवेदी बी. ए. (पूर्व, विज्ञानाध्यापक, बाँदा) क्षय-निवारण आश्रम, गोठिया (नैनीताल) से लिखते हैं—मैं विगत कई वर्षों से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वेदमाता की उपासना करता आ रहा हूँ । कुछ समय पहले मुझ पर यक्ष्मा जैसे भयंकर रोग का आक्रमण हुआ । मैंने चिकित्सा के लिये प्रार्थनापत्र भेजा, जिसके फलस्वरूप मुझे हिमालय के अतुलनीय रम्य प्रदेश में बिना किसी प्रकार के व्यय के स्थान प्राप्त हो गया । सैनीटोरियम में भर्ती होने पर मालूम हुआ कि मेरे दाँये फेंफड़े में तीन कैबिटीज और बाँये में एक बड़ी कैबिटी हो गई है, अर्थात् मेरे दोनों फेंफड़े अत्यधिक खराब हो चुके हैं । मैं बिस्तर पर पड़े-पड़े गायत्री का मानसिक जप बड़ी श्रद्धा से करने लगा । तीन ही महीने में मेरे स्वास्थ्य में बहुत सुधार हो गया और केवल बाँये फेंफड़े में थोड़ी-सी शिकायत शेष रह गई। डाक्टर ने जब एक्स-रे से मेरी परीक्षा की तो इतने शीघ्र आशातीत लाभ होने पर बड़ा आश्चर्य प्रकट किया और मुझे बहुत बधाई दी । बीमारी की हालत में भी मैं गायत्री जप बराबर करता रहता हूँ और मेरा विश्वास है कि पुनः पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जाऊँगा ।

नौकरी प्राप्त हुई

श्री. नरेन्द्र गौड़ बी. ए. कासगंज से लिखते हैं—नौकरी न मिलने के कारण मैं बहुत चिन्तित था । परिचित-अपरिचितों, सभी व्यक्तियों एवं सम्बन्धियों की ओर से सहायता के लिये निराश हो चुका था । असफलताओं के कारण मेरे अन्तर्मन में अनेक भयानक कुविचारों ने अपना जाल फैला दिया था । भाग्य से एक दिन मुझे 'गायत्री-ज्ञान-अङ्क' प्राप्त हुआ। मैंने कुछ पुस्तकें गायत्री तपोभूमि से मँगाकर और गायत्री माता का चित्र पास में सजाकर नियमित रूप से गायत्री जप, पूजन एवं स्वाध्याय आरम्भ कर दिया। इस प्रकार ५ दिन बीत गये, छठे दिन रविवार था, अतः मैंने उपवास रखकर हवन किया । रात को एक व्यक्ति ने मुझे एक पत्र दिया जिसमें लिखा था—'तुम्हारी नौकरी एटा में लग गई है, तुम सोमवार को आ जाओ।'' बात सच निकली और मुझे नौकरी मिल गई। उसी दिन से मैं और मेरी पत्नी नियमित रूप से गायत्री की पूजा करते हैं, क्योंकि वे अपने पुत्र-पुत्रियों की करुण पुकार अवश्य सुनती हैं ।

जमीन वापस मिल गई

श्री. नारायनसिंह, चीखली (जि. बुलडाना, बरार) से लिखते हैं—मेरी जमीन १० वर्ष से एक साहूकार के पास गिरवीं रखी थी और उसके वापस मिलने की उम्मीद नहीं थी । पर अब उसमें से तीन एकड़ बेचकर शेष मुझे वापस मिल गई । यह एक ऐसी बात थी जिसका किसी को भरोसा न था । इसलिये मैं तो यही मानता हूँ कि वह गायत्री माता की कृपा से ही मुझे प्राप्त हुई । मैंने भी उस जमीन की रजिस्ट्री अपने बच्चे के नाम से करा दी, जिससे मैं फिर उस पर कर्जा का बोझा न लाद सकूँ । मुझे आशा है कि अब मुझ पर माता की कृपा सदा बनी रहेगी ।

परीक्षा में सफलता प्राप्त हुई

पं. ग्यारसीलाल मिश्र, बुचारा (जि. जयपुर) लिखते हैं—मैंने पटवारी शिक्षा का फार्म भर दिया था पर किसी कारणवश बीच में पढ़ाई छोड़ दी और मेरे साथी आगे निकल गये । इससे मेरी सफलता की कोई सम्भावना नहीं रही और मैं उदास रहने लगा । उसी समय किसी महाशय ने मुझसे कहा कि आप गायत्री का इष्ट कर लें तो सफल हो सकते हैं । मैंने उसी समय संकल्प कर लिया और समय आने पर परीक्षा में उत्तीर्ण भी हो गया । यह सब माता की कृपा है ।

मन की अभिलाषा पूर्ण हुई

श्री महेशदानजी, नागोर (मारवाड़) से लिखते हैं—मुझे एल. डी. सी. बनने की बड़ी अभिलाषा थी । मैं शिक्षा विभाग के दफ्तर में काम तो एल. डी. सी. का करता था, पर वेतन मास्टरों का ६६) रु. ही पाता था । अचानक कलक्टर के ऑफिस में पाँच एल. डी. सी. की जगह खाली हुई और कुल ३९ उम्मीदवारों में से केवल मैं ही अकेला चुना गया । जिस समय इन्टरव्यू हो रहा था, मैं बराबर गायत्री का मानसिक जप करता रहा । अब मेरा वेतन ६६) रु. से बढ़कर ९५) रु. हो गया है । इसके लिये मैं जीवनभर वेदमाता का अहसान मानता रहूँगा ।

गायत्री माता की कृपा

श्री शिवप्रसाद पाठक, मंत्री गायत्री परिवार शाखा सठई (म. प्र.) से लिखते हैं—गायत्री माता की कृपा से मेरे दो मित्रों की पदोन्नति हो गई और मेरे पिताजी की नौकरी लग गई । मैं भी अपनी परीक्षा में अन्य विद्यार्थियों की अपेक्षा बहुत कम परिश्रम कर सकने पर भी अच्छे नम्बरों से पास हो गया । मेरे आत्मीय मित्र श्री काशीनाथ राय भी गायत्री-उपासना के फलस्वरूप परीक्षा में सफलता प्राप्त कर चुके हैं और गायत्री द्वारा धर्म-प्रचार में संलग्न हैं ।

कत्ल के मुकदमे में बरी

एक गायत्री भक्त, भदरी (शाहजहाँपुर) से लिखते हैं—हमारे गाँव में एक कत्ल हो गया था, जिसमें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गलती से मुझको भी पकड़ लिया गया । जेल में मैं गायत्री का जप करने लगा, जिसके फल से मुकदमा पेश होने पर ज्यादातर गवाहों ने मेरे माफिक ही गवाही दी और मैं साफ छूट गया । मेरा एक मुकदमा और भी चल रहा था, उसमें भी हमको अच्छे ढंग से डिग्री मिल गई । इससे हम गायत्री माता की बड़ी श्रद्धा से उपासना करने लगे हैं।

निराशा के बादल हट गये

श्री रामबहादुर मिश्र 'दिनेश' ग्राम डुबकी, कानपुर से लिखते हैं—मैं बहुत दिनों से नौकरी के लिये परेशान था । जहाँ भी जाता था वहीं निराशा के बादल दिखलाई पड़ते थे । किन्तु जब मैंने गायत्री परिवार का सदस्य बनकर माता की शरण ली उसके एक मास के बाद ही मुझे नौकरी प्राप्त हो गयी, इसके पश्चात् और कई नौकरियों के भी स्वीकृति पत्र आये। इस प्रकार गायत्री माता की दया से मेरा भाग्य पलट गया ।

उधार दिया रुपया वसूल हो गया

श्री. किसमाजी व डाबाजी उचाबह (तल निमाड़) से लिखते हैं—मैंने एक व्यक्ति को रुपया उधार दिया था पर माँगने पर वह इनकार कर गया कि तुम्हारा मेरे ऊपर कुछ नहीं निकलता । इससे मैं बड़ा दुखी हुआ और रात्रि में सोते समय माता से प्रार्थना की कि मेरी सहायता करो । रात्रि में मुझे स्वप्न आया कि तीन ब्राह्मण मुझ से दक्षिणा माँगते हैं, मैंने उनसे कहा कि जप करने वाले दक्षिणा नहीं लेते। दूसरे दिन प्रातःकाल वही व्यक्ति स्वयं आकर सब रुपया दे गया। यह दृश्य देखकर मैं माता की महिमा के सम्मुख नतशिर हो गया ।

सर्प से रक्षा हुई

श्री रामलाल दर्यावजी प्रधान पाठक तलवाड़ा (जिला धार, म.प्र.) लिखते हैं—ता. २० फरवरी को मैं श्री प्रभाशंकरजी पाठक के यहाँ से दत्त-भजन के कार्यक्रम में भाग लेकर रात के १२ बजे स्कूल वापस आ रहा था । मेरे हाथ में लालटेन थी, पर मैं अपनी धुन में तेजी से चला आ रहा था । रास्ते में एक साँप इकट्ठा होकर पड़ा था और मैं उसे लाँघ कर आगे बढ़ गया । बाद में कुछ शंका होने से मुड़कर देखा तो साँप चलता हुआ नजर आया, यह देखकर मैं सन्नाटे में आ गया और बार-बार गायत्री माता को धन्यवाद देने लगा ।

बालक की निमोनिया के प्रकोप से रक्षा

श्री. छगनलाल माँगीलाल शर्मा, ग्राम सिनगुण (निमाड़) से लिखते हैं—इन दिनों मैं ब्रह्मास्त्र सम्बन्धी पुस्तकें व परिपत्र वितरण कर रहा था कि मेरे साढ़े चार मास की आयु के पुत्र को निमोनिया हो गया और क्रमशः उसकी हालत यहाँ तक बिगड़ गई कि प्राण छूटने के लक्षण स्पष्ट जान पड़ने लगे । ये देख मैंने बच्चे को गोदी में लेकर गायत्री जप करना आरम्भ किया और मेरे पास बैठे अन्य तीन उपासक भी माता से विनय करने लगे । यकायक हमको माता की प्रकाशमान मूर्ति का दर्शन हुआ और उसी समय से बालक की दशा सुधर कर वह स्वस्थ हो गया ।

सोलह वर्ष पहला रोग दूर हुआ

(१)श्री महेन्द्रकुमार साहनी, कोटबाड़ा (निमाड़ म. प्र.) से लिखते हैं—"मेरी मामी करीब सोलह वर्ष से पेट की बीमारी से पीड़ित थी । मामाजी उसके जीवन की आशा छोड़ चुके थे । मैंने उन्हें हिम्मत देकर आपरेशन के लिए इन्दौर भिजवाया और स्वयं अनुष्ठान करने लगा । आपरेशन होने पर पेट से १।।-२ सेर का गोला निकला और मामी को नवजीवन मिल गया। (२) मुझे स्वप्न में अत्यन्त सुन्दर दो रमणियाँ दिखाई पड़ा करती हैं । एक कहती है, जो कुछ माँगना चाहो माँग लो और दूसरी कहती है ये चारों वेद रखे हैं, इन्हें ले लो और अभय रहो । कभी स्वप्न में ही संस्कृत के कुछ शब्द स्पष्ट लिखे दृष्टिगोचर होते हैं। मैं उन्हें पढ़ता हूँ और धीरे-धीरे गुनगुनाने लगता हूँ कि आँखें खुल जाती हैं । जप के प्रभाव से आत्मोन्नति के चिह्न निरन्तर जान पड़ते हैं।"

लँगड़ापन ठीक हो गया

श्री शिवराम कौशिक, कोड़ागाँव (बस्तर, म. प्र.) से लिखते हैं "मेरा लँगड़ा पुत्र जो १० वर्ष से चूतड़ घसीटते हुये चलता था, वह जिस दिन से गायत्री-साधना आरम्भ की उसके १५ दिन पश्चात् से खड़ा होकर चलने लगा । अब मुझे दृढ़ विश्वास हो गया है और मैं जन्म भर माता की शरण में रहूँगा ।

बदमाशों के पञ्जे से बच्चे की रक्षा

डॉ. शंकरलाल गुप्ता, कुढार (एटा, उ. प्र.) से लिखते हैं—अभी कुछ महीने की बात है कि बदमाशों ने मेरे भतीजे अशोक कुमार को जिसकी उम्र चार साल की है, उड़ाने की बहुत कोशिश की थी। वह दिन भर उन बदमाशों के दरवाजे पर ही खेलता रहा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और गाँव के बाहर स्कूल तक घूम कर चला आया, पर वे लोग उसे अपने हाथ से पकड़ नहीं सके । उन्होंने एक दूसरे लड़के से कहा कि शङ्करलाल के भतीजे को पकड़कर मेरे यहाँ पहुँचा दो । उस लड़के ने आकर यह बात मुझसे कह दी । मैंने बदमाशों को बुलाकर फटकारा और धमकाया कि हम पुलिस में रिपोर्ट कर देंगे । इस पर वे भाग गये । लड़के के गले में गायत्री रक्षा-कवच बँधा हुआ था, अतः जगत-जननी की कृपा से उसका बाल-बाँका नहीं हुआ । इसी प्रकार इस लड़के और उसकी बहिन के बहुत भयङ्कर चेचक निकली थी । इन दिनों मैं सवा लाख का अनुष्ठान कर रहा था और इसी जप के जल के छींटे दोनों बच्चों को लगा दिये और वही जल पिलाया। बच्चे तीन दिन में बिलकुल निरोग हो गये ।'

काले नाग से जान बची

श्री ब्रजमोहन 'निम्बार्क' आवर (झालावाड़, राजस्थान) से लिखते हैं—''हाल ही की बात है कि मेरी पत्नी शौच के लिए नदी की तरफ गई थी । हमेशा की तरह जैसे ही वह एक झाड़ियों के झुरमुट में जाने लगी कि पास ही एक विशाल सर्प दिखलाई पड़ा । उसकी भयङ्कर आकृति को देखते ही मेरी पत्नी के होश उड़ गये और भय के मारे वह जहाँ की तहाँ खड़ी रह गई । दो-चार मिनट बाद सर्प अपने आप दूसरी ओर चला गया । कई आदमियों ने पत्नी से कहा कि यह तुम्हारी नई जिन्दगी है । मेरा विश्वास है कि उसकी प्राण-रक्षा वेदमाता की कृपा से ही हो सकी ।''

पत्नी को बीमारी से छुटकारा मिला

श्री बृहस्पतिलाल कौशिक, कोड़ागाँव (बस्तर) से लिखते हैं ''मेरी पत्नी एक आकस्मिक रोग से पीड़ित रहा करती थी और इस कारण बड़ी दुखी थी। जब से उसने गायत्री की दस माला प्रतिदिन जपना आरम्भ किया है तब से उसकी बीमारी सर्वथा जाती रही । अब माता की कृपा से मेरे घर में सब प्रकार से आनन्द है ।''

मुकदमे में सहायता मिली

श्री अवध बिहारी, सरैयां बगडौरा (बलिया) से लिखते हैं—कुछ महीने हुये मैं अपने एक मित्र के साथ उनके पक्ष की बातें सही और शुद्ध रूप में समझाने के लिये निकट के ही एक पुलिस थाने में गया था । वहाँ का अधिकरी जो सम्भवतः किसी स्वार्थवश दूसरे पक्ष के अनुकूल था, हमारे साथ अनुचित व्यवहार करने को तत्पर हो गया और उसने हमारे पाँच व्यक्तियों को हिरासत में ले लिया । मैं थाने की कोठरी में बन्द होते ही पालथी मार कर बैठ गया और गायत्री माता का जप करने लगा । बाहर पुलिस कर्मचारी रिपोर्ट लिखने बैठा और चौकीदार से मुकदमे सम्बन्धी नाम पूछने लगा । गायत्री माता के प्रभाव से चौकीदार ने अन्य नामों के साथ एक ऐसे व्यक्ति का नाम भी रिपोर्ट में लिखा दिया जिसे मरे हुये १६-१८ वर्ष बीत चुके थे। यह भेद तब खुला जब पुलिस के सिपाही उस व्यक्ति के नाम का सम्मन लेकर गये और वापस लौटकर सब हाल बतलाया । परिणाम यह हुआ कि हम लोगों की हानि कर सकने के बजाय पुलिस कर्मचारी को ही लेने के देने पड़ गये । इस प्रकार अकल्पित ढङ्ग से सहायता मिलती देखकर हम माता को धन्यवाद देने लगे ।

चोरी गया माल वापस आ गया

श्री बलराम पारधी, आनन्द बिलास, मोहल्ला धन्तोली नागपुर से लिखते हैं—इसी जनवरी की १३ तारीख को रात के समय हमारे कारखाने में कीमती औजारों की चोरी हो गई । दूसरे दिन दोपहर को पता लगने पर हमने पुलिस में रिपोर्ट की और दो जगह तलाशी भी ली गई पर माल का कुछ पता नहीं लगा । मंगलमय प्रभु की लीला अपरम्पार है । आज ता. १९ जनवरी को हमने गायत्री-परिवार के हवन में भाग लिया और जैसे ही वहाँ से घर वापस आये कि बच्चों ने बतलाया कि घर के पीछे एक कपड़े में लपेटे औजार दिखलाई पड़ रहे हैं । पिछले ६-७ दिन में हमने चारों ओर घूमकर खूब तलाश किया था, पर तब कहीं कुछ दिखाई नहीं दिया । माता की इस कृपा के लिए हमने २४ हजार का अनुष्ठान करने का निश्चय किया है ।

निराशा में आशा

श्री जानकीप्रसाद गंगबार, अमृतासास (पीलीभीत) से लिखते हैं—मैंने ग्राम-सेवक का फार्म भरा था और उस सम्बन्ध में 'इन्टरव्यू' के लिये बुलाया गया । मुझे अपना सफल होना नितान्त असम्भव लगता था तो भी माता का भरोसा करके जितनी देर वहाँ रहा गायत्री का मानसिक जप करता रहा । माता की असीम कृपा से मेरा नाम उत्तीर्ण उम्मीदवारों की सूची में आ गया ।

सूखा रोग से बच्चे की रक्षा

श्री शङ्करसिंह कुशवाह, गाँव बाढ़ (मुरैना ग्वालियर) लिखते हैं—मेरे पुत्र मातादीन को सूखा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रोग हो गया था । उसका बहुत सा इलाज कराया पर कोई लाभ न हुआ । एक दिन पं. शम्भूदयाल जी ने मुझसे कहा कि इसका संध्या करने के जल से गायत्री मन्त्र पढ़ कर मार्जन करो । मैंने ऐसा ही किया और अब एक महीना के प्रयोग से उसका रोग दूर होकर स्वास्थ्य बहुत सुधर गया है और वह इधर-उधर दौड़ता फिरता है।

चोर भाग गये

श्री महातम तिवारी, ग्राम पकड़ी (बलिया) से लिखते हैं—मेरे यहाँ चोरों का एक बड़ा समूह आधी रात के समय आया । वह कुछ हानि करने ही वाला था कि अपने एक आदमी के चिल्लाने की आवाज आई । मैंने लाठी उठाकर उनको ललकारा जिस पर वे सब भाग गये । वे मुझसे जबर्दस्त थे और मैं किसी हालत में उन सबका मुकाबला नहीं कर सकता था, पर गायत्री माता के प्रभाव से हमारी रक्षा हो गई ।

तीन महान संकटों से रक्षा हुई

श्री नायव लाल शुक्ल, ग्राम करनपुर (जिला खोरी) से लिखते हैं—पिछली गर्मियों के मौसम में मैं लखनऊ में था । वहाँ पण्डितों ने मुझे बतलाया कि तुम्हारे कई ग्रह कोपित हैं, आश्विन भर में जो न हो जाय थोड़ा है । इस पर मैं एक माला के बजाय तीन माला जप करने लगा । कुछ ही समय बाद खबर आई कि बड़ी बहू संघातिक बीमारी के कारण अस्पताल में भेजी गई है और तीसरा पुत्र ३०-४० हाथ ऊँचे पेड़ से गिर गया है । मैं भाग कर घर आया । मालूम हुआ कि बहू की दशा सुधर गई है और बच्चे को भी तीन जगह साधारण चोट लगी है । मैं कुछ दिन घर ठहर कर वापस जाने वाला था कि मेरी स्त्री को मस्तिष्क में काले सर्प ने काट खाया प्रभु की दया से उपचार होने पर वह भी बच गई । लखनऊ के ज्योतिषी पं. प्रताप नारायन ने जो मुझसे अपरिचित थे, मुझे बतलाया कि तुम्हारे गायत्री जप के प्रभाव से ही इन तीनों की जीवन रक्षा हो गई । तब से मेरी श्रद्धा माता में बहुत बढ़ गई है ।

प्रेत का भय दूर हुआ

श्री सिद्धेश्वर लाल, ग्राम हाथीवाड़ी (उड़ीसा) से लिखते हैं—मुझे कुछ समय के लिए सपरिवार एक ऐसे मकान में रहना पड़ा जो प्रेत से आक्रान्त जान पड़ता था । कुछ प्रत्यक्ष तो दिखलाई नहीं दिया पर लड़कों को भय लगना, चौंकना आदि घटनायें वहाँ अधिक होती थीं । पर गायत्री जप करने पर नई घटनाओं में बहुत कमी हो गई । वास्तव में माता की शक्ति के आगे सभी नतमस्तक हो जाते हैं ।

नौकरी में तरक्की हुई

श्री चीनाराम पोत्दार, बिलासपुर (म. प्र.) से लिखते हैं—हमारे एक सक्रिय सदस्य श्री आनन्द मोहन वर्मा अत्यन्त निष्ठापूर्वक अपनी साधना करते हैं। इसके परिणामस्वरूप शीघ्र ही इनकी नौकरी में तरक्की हो गई और सहकारी कर्मचारी भी विशेष सम्मान करने लगे । माता की कृपा से इनकी बतलाई बातें प्रायः ठीक ही निकल जाती हैं, इससे दफ्तर के कर्मचारी इनको 'बाबाजी' कहने लग गये हैं ।

गायत्री माता की कृपा से परीक्षोत्तीर्ण हुआ

ईश्वर शरण पाण्डेय, ग्राम बालपुर (बिलासपुर) से लिखते हैं—इसी वर्ष मैंने नागपुर विश्वविद्यालय की एम. ए. परीक्षा (संस्कृत प्रथम भाग) प्राइवेट देने का विचार किया था । प्रार्थना पत्र मैंने यथा समय भेज दिया, पर अनेक बार स्मृति-पत्र भेजने पर भी विश्वविद्यालय की स्वीकृति बहुत देर से मिली । दूसरी बात यह भी थी कि मेरा स्वास्थ्य जुलाई से ही ऐसा बिगड़ा कि पढ़ाई में मन ही नहीं लगता था, और पूरी पुस्तकें भी मेरे पास न थीं । परीक्षा से १० दिन पहले नागपुर जा पहुँचा इस आशा से कि विश्वविद्यालय के पुस्तकालय से उन पुस्तकों को प्राप्त कर देख जाऊँगा जो मेरे पास नहीं थीं । यह आशा पूर्ण हुई और मैंने यथासमय परीक्षा दी । आश्चर्य है कि जिन प्रश्न-पत्रों की पुस्तकें मेरे पास थीं वे तो कुछ बिगड़ गये और जिनकी पुस्तकें नहीं थीं वे बहुत अच्छे बन गये । इस प्रकार अनेक बाधाओं के होते हुये भी गायत्री माता की कृपा से मैं परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया ।

शहद की मक्खियों से रक्षा हुई

श्री सरदार मल गौतम (कोयला कोटा) से लिखते हैं कि गतवर्ष दिवाली के अवसर कई स्थानीय गायत्री उपासक देवझरी के स्थान पर ऊपर की तरफ वेदी बनाकर हवन कर रहे थे । कुछ देर पश्चात् शहद की मक्खियाँ काफी तादाद में वहाँ आ गईं। वहाँ कुछ व्यक्ति ॥ान भी कर रहे थे, उन सबको मक्खियों ने काफी परेशान किया । उनके काटने से उन व्यक्तियों के शरीर खूब सूज गये । उसी स्थान पर हम सब हवन कर रहे थे पर मक्खियों ने किसी को नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

काटा। वैसे सैकड़ों मक्खियाँ हमारे सिरों पर उड़ रही थीं और बालों पर बैठ जाती थीं । माता की ऐसी ही विलक्षण शक्ति है।

इच्छानुसार तबादला हो गया

श्री बालमुकुन्द तिवारी (जबलपुर) से लिखते हैं कि रेलवे के प्रशिक्षण के उपरान्त मेरी नियुक्ति हैदराबाद (दक्षिण) में हो गई । वहाँ भाषा की भिन्नता के कारण मैं किसी से बातचीत न कर सकता था, इससे फुर्सत के समय में बराबर गायत्री उपासना ही करता रहता और कभी-कभी माता से अपने स्थानान्तरण की प्रार्थना भी कर बैठता था । माता ने आदेश दिया कि दो मास में हो जायगा । भरोसा न होते हुये भी मैंने अर्जी भेज दी,और वास्तव में डेढ़ मास बाद ही मेरा तबादला जबलपुर क्षेत्र में हो गया।

मेरी परिस्थिति सुधर गई

श्री वीरेन्द्र प्रसाद नायक (पो. रोसड़ाघाट, दरभंगा) लिखते हैं कि जब से मैं गायत्री जप करने लगा हूँ मेरी परिस्थिति बराबर सुधरती जाती है । पहले बहुत प्रयत्न करने पर भी नौकरी नहीं मिलती थी, जप शुरु करने के थोड़े समय बाद ही मेरा काम लग गया इसी प्रकार पहले बराबर अस्वस्थ रहा करता था, पर अब तन्दुरुस्ती भी बहुत कुछ सुधर गई है । ध्यान में भी मुझे शिवजी, विष्णु, गायत्री माता, सूर्य भगवान आदि किसी न किसी देवता के दर्शन सदैव प्राप्त हुआ करते हैं ।

बाइसिकल पर से बचा

श्री परमात्मा प्रसाद शुक्ल, बसौदी (जिला बस्ती) से लिखते हैं—ता. १४-७-५७ को मैं खलीलाब से बाइसिकल पर आ रहा था और रास्तें में मस्त होकर गायत्री चालीसा गा रहा था । ज्यों ही मैं अपने घर पहुँच कर बाइसिकल से उतरा कि अगला पहिया निकल कर दूर चला गया । मेरी रक्षा केवल माता की दया से ही हुई, अन्यथा जिस तेजी से मैं बाइसिकल चला रहा था उसमें अगर पहिया निकल जाता तो मेरी हड्डियाँ भी चूर-चूर हो जातीं ।

खेत का रुपया प्राप्त हुआ

श्री. स्नेहराम शर्मा (रायपुर) से लिखते हैं कि हमारी खानदानी खेती की जमीन कुछ रिश्तेदारों ने दवा ली थी और झगड़ा करने को तैयार थे । निराश होकर हमने गायत्री माता की शरण ली । तब फिर पिताजी वहाँ गये तो रिश्तेदारों ने खेत का दाम एक हजार रु. दे दिया । मेरी माता जी को हृदय का रोग हो गया था और उनका जी सदैव घबराया करता था। गायत्री चालीसा का अनुष्ठान करने से बीमारी दूर हो गई।

१८ साल बाद पुत्र का जन्म हुआ

श्री धुन्दीसिंह शर्मा (बड़ेसरा, अलीगढ़) से लिखते हैं कि हमारे यहाँ के श्री हुण्डीलाल टेलर मास्टर 'अखण्ड-ज्योति' का गायत्री अङ्क पढ़ने से गायत्री उपासना में संलग्न हुये थे । १९५५ चैत्र की नवरात्रियों में आप तपोभूमि मथुरा भी गये थे और वहाँ आचार्य जी से अपनी मनोकामना कह सुनाई । उन्होंने साधना में लगे रहने को कहा । माता की कृपा से इसी १४ अगस्त को इनके घर में १८ वर्ष के बाद पुत्र का जन्म हुआ, जिससे सबको बड़ा आश्चर्य और प्रसन्नता हुई।

कैंसर का भयंकर रोग मिट गया

श्री कन्छोदीलाल यादव (सागर) से लिखते हैं कि मेरी माता के गले में कैंसर हो गया था । तकलीफ के कारण वे छटपटाती थीं । सिविल सर्जन और अन्य डाक्टर रोग को असाध्य बतला चुके थे । लोगों ने दूसरे बड़े शहर में जाकर इलाज कराने की सलाह दी। पर मैंने कहीं न जाकर गायत्री माता की शरण ली और इसके लिए सवालक्ष का पुरश्चरण किया । माता की कृपा से वह भयंकर रोग शीघ्र ही अच्छा हो गया।

बीमारियों का कुचक्र टूटा

श्री. शुभकार नाथ कपूर, खैराबाद का कथन है कि जब मनुष्य का बाहुबल, पराक्रम और पुरुषार्थ थक जाता है तब वह हार कर परमात्मा को पुकारता है, ग्राह से पकड़ा हुआ गज जब सब प्रकार हार गया तो उसने सच्चे हृदय से प्रभु को पुकारा उसकी पुकार व्यर्थ नहीं गई । प्रभु को उसकी रक्षा करने के लिए नङ्गे पाँवों ही दौड़ते बना । सच्ची पुकार का प्रभाव अवश्य होता है ।

कुछ समय पहले की बात है हमारे परिवार पर आपत्तियों का एक बहुत बड़ा आक्रमण हुआ था । एक साथ कई संकट सामने आये । बहन भयंकर रूप से बीमार पड़ी, उसके प्राणों के लाले थे । तार आया था कि 'दशा अत्यन्त चिन्ताजनक है । पेट का आपरेशन होने वाला है" बहिन के बिछोह की कल्पना मात्र से आँखों से आँसू की धारा बह चली ।

उन्हीं दिनों भाभीजी भी अस्पताल में पड़ी थीं । घर के अन्य लोग भी छोटी-मोटी बीमारियों के शिकार थे । स्वयं मेरी भी तबीयत खराब हो रही थी । इन उलझनों से किस प्रकार पार हुआ जाय, इसका कोई मार्ग नहीं सूझ पड़ रहा था ।

दस दिन की छुट्टी प्राप्त हुई, मैं उसमें गायत्री माता का अनुष्ठान करने बैठ गया । बीमारी के इतने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

बड़े आक्रमण का मुकाबला करने का साहस न था । माता के अंचल में संकट से बचने का प्रयत्न करने लगा ।

साधना साधारण सी थी पर उसका फल असाधारण हुआ। बहन के यहाँ से तार आया कि "पेट ठीक हो गया । आपरेशन की आवश्यकता नहीं रही ।" इस समाचार से भारी सन्तोष हुआ । इतने में ही खबर आई कि भाभीजी भी ठीक हैं और अस्पताल से छुट्टी होने वाली है । देखते-देखते घर के अन्य लोगों का भी स्वास्थ्य सुधर गया । इन दस दिनों में स्वयं मेरा स्वास्थ्य बहुत सुधर गया । जो चंद दिन पहले बीमारियों और चिन्ताओं का केन्द्र बना हुआ था वहाँ की परिस्थिति बिल्कुल बदल गई । सब लोग संतोष की सांस लेने लगे ।

उन्हीं दिनों मेरी परीक्षा आ गई । तैयारी बहुत कम हो पाई थी इससे चित्त में बड़ी चिन्ता रहती थी । परन्तु जब प्रश्न-पत्र हल करने बैठा तो ऐसा लगता था मानो कोई उनके उत्तर बताता जा रहा और मैं लिखता जा रहा हूँ । मेरे आनन्द और उत्साह की सीमा न रही ।

अब मैं गायत्री का नैष्ठिक उपासक हूँ । ऐसा अन्तरात्मा में आभास होता है कि इसके अंचल को पकड़कर भावी जीवन की सभी कठिनाइयों को पार कर लेना मेरे लिए सुगम होगा ।

दुर्भाग्य की समाप्ति

श्री. यमुना प्रसाद जी पालीवाल, वैद्य शास्त्री, खात से लिखते हैं कि दो वर्ष पहले मैं नासूर की भयंकर बीमारी से ग्रसित हो गया था । चलना-फिरना तक सम्भव न रहा । घर के लोगों को भार रूप तो पहले ही से था इस बीमारी से वे और भी परेशान हुए और मुझे साफ उत्तर दे दिया कि तुम अपने को आप सँभालो ।

मैं अपने लिए कहीं शरण खोजने निकला, पर दुर्दैव कब पीछा छोड़ने वाला था । एक गाँव से पुजारी का काम मिलने के लिए बुलावा आया था पर वहाँ भी सफलता न मिली । एक जगह औषधालय में जगह प्राप्त करने की कोशिश की वहाँ से भी निराशा ही मिली ।

ऐसे कुसमय में जब मैं बीमारी, गरीबी और लाचारी से बुरी तरह परेशान था ता. ८-८-५१ की अखण्ड ज्योति द्वारा प्रकाशित एक छोटी गायत्री सम्बन्धी पुस्तिका मिली । उसे पढ़ने से मुझे आशा की किरण दिखाई देने लगी । दूसरे दिन से ही विशेष मनोयोगपूर्वक गायत्री उपासना करने लगा ।

इस साधना के द्वारा थोड़े ही समय में मेरी परिस्थिति में एक प्रकार से पूर्ण परिवर्तन हो गया है । जिस नासूर रोग से पीछा छुड़ाना असम्भव समझता था, उसे परास्त करने में मुझे विजय मिली । जिस तंग दस्ती के कारण एक-एक पैसा कठिन था वह दूर हुई और अपना निजी औषधालय चलाकर धन और धर्म उपार्जित करता रहा हूँ । जहाँ घर वालों तक ने अपने पास रखने से इन्कार कर दिया था वहाँ एक अपरिचित सज्जन दुबे जी और उनकी धर्मपत्नी की मेरे ऊपर इतनी आत्मीयता है कि घर से बहुत दूर निकल जाने पर भी यह परदेस मुझे घर सरीखा लगता है ।

मैं सोचता हूँ जब मेरे जैसे साधारण श्रद्धालु को माता की शरणागति का थोड़ा सा प्रयत्न करने पर इतना लाभ हो सकता है,तो जो लोग पूर्ण निष्ठा से माता का अञ्चल पकड़ते हैं उन्हें निश्चय ही मुझसे अनेक गुना लाभ होता होगा ।

प्रारब्ध भोगों का सरल भुगतान

श्री रामचंद्र प्रसाद गुप्त दानापुर कैण्ट से लिखते हैं कि मेरा आरम्भिक जीवन बड़ा असंयत और अव्यवस्थित रहा है । उन भूलों के कारण शरीर खोखला हो गया, स्वास्थ्य से हाथ धोना पड़ा आये दिन की बीमारियों के पञ्जे में फँसा और फिर सन् ४५ में बुरी तरह चारपाई पर पड़ गया ।

डाक्टरों ने इसे भी प्लुरिसी बताया, इस रोग में ४ ।। वर्ष तक जो-जो तकलीफ सही हैं, चिर स्मरण रहेगा । लगभग तीन वर्ष तक खाट से उठने की आज्ञा न मिली, खाना भी लेटे लेटे खाता था । इस बीमारी में पिताजी ने भी बहुत तकलीफ सही है । डॉ. घोसल ने तीन महीने तक सिर से लेकर कमर तक बाँह छोड़कर पलस्तर लगवा दिया था जिससे मैंने बहुत कष्ट सहा । कई बार ऐसा मालूम पड़ा था कि अब प्राण नहीं रह सकता क्योंकि कष्ट चरम सीमा तक पहुँच चुका था। उस समय जीवन की सभी घटनाएँ बायस्कोप की तरह आँखों के सामने नाचती थीं, छोटी-छोटी गलती जिसे एकदम भूल चुका था, नेत्रों के सामने साकार रूप होकर नाच रहीं थीं । अपने अपराधों का स्मरण कर छाती भर आई, आँखों में आँसू निकल आये, उस समय सिर धुनता था, कि हाय मैं इस जगत में आकर कुछ न कर सका, उलटे पाप के बोझ सिर पर लिये जा रहा हूँ । उस समय मैं रो-

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रोकर ईश्वर से कहता था, प्रभु अधिक नही तो एक या दो वर्ष का समय दे दो अपने पापों का प्रायश्चित कर लूँगा, अब ऐसी भूलें नहीं करूँगा, आदि ।

उस समय आत्मा से यही आवाज आती थी कि ''घबराओ नहीं, तुम्हारी अभी मृत्यु नहीं होगी, एक ठोकर दिया गया, जिससे आगे चलकर सँभल सको । अगर इससे नहीं चेतोगे तो आगे बड़ी दुर्दशा होगी ।'' इसके बाद वह दृश्य हट गया और मै धीरे-धीरे आरोग्यता लाभ करने लगा । अब मैं बखूबी समझ गया हूँ, कि मरने के समय आँसू क्यों निकलते हैं ?

मैं अभी पूर्ण निरोग भी नहीं हुआ था, कि दवाओं में उलट फेर होने से फिर रोग बढ़ने लगा । बरसात का मौसम था, नीचे आँगन में मैं पाखाना के लिये जाता था । ठण्डी हवा बरसात का समय मुझे सर्दी खाँसी हो गई । यह सर्दी आज तक अच्छी नहीं हुई है। दवाओं में सुधार होने से फिर लाभ होने लगा, परन्तु पूर्ण निरोग नहीं हुआ । रोग कभी घट जाता, कभी बढ़ जाता, सभी लोग परेशान थे । इसी समय काशी के एक तान्त्रिक पण्डित जी दानापुर में आये ।

उन्हें दिखलाया गया, उन्होंने अच्छा कर देने का ३०) में ठेका लिया, उनके कहे मुताबिक पूजा का इन्तजाम हो गया । उन्होंने ११ दिन तक पाठ स्तुति किया, बारहवें दिन हवन किया। जिससे मुझे सर्दी खाँसी और कमजोरी छोड़कर और कोई कष्ट नहीं रहा । पण्डितजी से सर्दी खाँसी का भी करार था, उसे अच्छा न होने पर ५) रु. रोक लिया गया । पटना के प्रसिद्ध डा. टी. एन. बनर्जी ने मेरा लगभग तीन वर्ष इलाज किया था, तथा उन्हीं की दवा चल रही थी । उनसे जो लाभ हुआ उसे ११ दिन में पण्डितजी ने कैसे कर दिया ? यह प्रश्न मेरे मस्तिष्क में चक्कर लगाने लगा ।

मैंने तान्त्रिक जी से बहुत पूछा पर वे दो चार बातों के अतिरिक्त अधिक नहीं बताये । उससे मेरी जिज्ञासा शान्त नहीं हुई, बल्कि उनके छिपाव करने पर दुःख हुआ । मेरा स्वभाव है, कि जिस बात के पीछे पड़ जाता हूँ, कुछ न कुछ ईश्वर की कृपा से जानकारी हासिल कर ही लेता हूँ । मैंने तन्त्र विद्या की चन्द बातें मालूम कर ही लीं, और तान्त्रिक साधना का विचार करने लगा । लेकिन ईश्वर को कुछ और मन्जूर था । इसी अवसर पर मेरे मित्र विश्वनाथ प्रसाद जी के बड़े भाई दुर्गाप्रसाद जी ने ''अखण्ड ज्योति'' पत्रिका मंगाया था, मैं मन बहलाने के लिए मंगाकर पढ़ने लगा । गायत्री महिमा पढ़कर मन प्रसन्न हुआ, और कई छोटी-छोटी पुस्तक मंगवाकर पढ़ीं, पढ कर खाट पर बैठे-बैठे ही मानसिक साधना को आरम्भ कर दिया । उस समय मकान मालिक ने मकान से निकालने के लिये कैन्टोनमैन्ट से मुकदमा चलवा दिया था, मैंने परीक्षा का यही अवसर अच्छा समझा, विधि विधान से करना उस समय मुश्किल था, जैसे जैसे १ माला जपने लगा, और मुकदमा जिता देने की प्रार्थना करने लगा । कैन्टोनमैंट बोर्ड के कई मेम्बर मकान मालिक के दोस्त थे । सरकारी मुकदमा मेरे ऊपर चल रहा था । कोई नहीं कह सकता था, कि आसानी से यह मामला सुलझेगा, लेकिन आश्चर्य ! कैन्टोनमैंट के आफीसर ने समझौता कर लिया । जिसकी कोई आशा नहीं थी । २०) में समझौता हो गया ।

इससे गायत्री के प्रति मेरी श्रद्धा और विश्वास बहुत बढ़ गया । इस मामले में कई व्यक्ति मकान मालिक से मिलकर तङ्ग कर रहे थे, उन्हें भी लज्जित होना पड़ा । इस तरह दो-तीन कामनाएँ माता ने पूरी कीं, जिससे श्रद्धा भी बढ़ती गई । रुचि बढने पर और भी कई पुस्तकें मँगाकर पढीं, ५ मई सन् ५० से जप आरम्भ किया था । कुछ दिन बाद खाट से नीचे जमीन पर आसन लगाकर जप करने लगा । वात बिगड़ने से पेट में गड़बड़ी रहती थी । जब उपासना में बैठता तो पेट गुड़गुड़ाता और अधोवायु निकलने लगता, इतना ही नहीं घण्टा भर अगर एक आसन से बैठे-बैठे जप करता तो दो चार बूँद धात निकल जाता था । उपासना के समय यह तमाशा देख कर कभी-कभी हतोत्साहित हो जाता था । साधन चालू रखे तो यह लीला, न करे तो मन नहीं मानता था । जैसे-तैसे चालू रक्खा छोड़ा नहीं, माँ की दयालुता पर भरोसा था । मैंने ठान लिया था, कि चाहे जो कुछ हो, इसे छोड़ नहीं सकते । यह विकट परिस्थिति बहुत कम लोगों के आगे आयी होगी । मेरे पास कातर वाणी, दृढ़ श्रद्धा और विश्वास के सिवा और क्या था ? मैं इन्हीं को अपनाकर आगे बढ़ रहा था । इससे क्या लाभ हुआ ? इस विषय में मैं यही कहूँगा, कि माता की दया और गुरुदेव के अनुग्रह से वर्षों का मन्जिल कुछ ही दिनों में तय किया । अज्ञान अन्धकार हटता जाता है, आत्मा के ऊपर जमा हुआ मल, कुसंस्कार आदि नष्ट होता जाता है ।

सन् १९५१ में हाथ में ''कोल्ड अबसेस्'' हो गया प्लुरिसी रोग से मेरा दाहिना हाथ ऊपर नहीं उठता था। डॉ. ने बताया कि पुट्ठे की हड्डी जम गया है,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

वहीं से रीम आकर जमने से ''काल्ड अबसेस्'' हो गया है, आपरेशन कराना होगा । मै बड़े फेर में पड़ा। डॉ. जी. पी. गुप्ता ने कहा जहाँ से रीम चला है, अगर वहाँ आपरेशन किया जावेगा तो हाथ हिलाने-डुलाने लायक भी नहीं रहेगा । निदान पटना के प्रसिद्ध डॉ. केप्टन, एन. पाल के यहाँ जाकर दिखलाया गया ।

उन्होंने थोड़ा सा आपरेशन करके रबर की नली लगा दी, जिससे रीम रुकने नहीं पाता था साथ ही पेन्सलीन और स्ट्रेप्टोमाईसीन भी चालू कर दिया । २० दिन से भी अधिक समय बीत गया लेकिन रीम बन्द नहीं हुआ । तब डॉ. पाल ने कहा तीन या अधिक ७ दिन तक और देखेंगे, रीम रुक गया तो ठीक, नहीं तो जहाँ से रीम चलता है, वहाँ तक आपरेशन करना होगा ।

डॉ. पाल चीर-फाड़ के नामी डाक्टर हैं, पटना में वे जख्म आदि के पुराने अनुभवी हैं । उनकी बात सुनकर मुझे बड़ा दुःख हुआ, क्योंकि डॉ. जी. पी. गुप्ता ने पहले ही कह दिया था कि वहाँ पर आपरेशन करने से हाथ बेकाम हो जायगा । क्योंकि हड्डी में दाग होने से छिलना पड़ता, इससे हड्डी और नसें बेकार हो जाती । मेरी दाहिनी भुजा बेकार हो जायेगी इसकी कल्पना से ही दुःख होने लगा, मैने सोचा जब हाथ बेकार हो जायगा तो हम जीकर ही क्या करेंगे । जान दे देना ही अच्छा है । उस समय जख्म के कारण लेटे-लेटे ही एक दो माला जप करता था । उस दिन जप में भी मन नहीं लगा, भावी अनिष्ट की आशंका से दिल में उथल-पुथल मचा हुआ था ।

मैंने कातर होकर अश्रुपूर्ण नेत्र से माँ से अपनी दर्द भरी कहानी कही, मुझे ऐसा लगा मानो माँ सामने खड़ी है, और वह कह रही है, 'घबराओ नहीं । तुम शीघ्र ही अच्छे हो जाओगे ।' लेकिन इस बात पर पूर्ण विश्वास नहीं हुआ, क्यों कि उन दिनों बरसात का महीना था, पुरवइया हवा जोरों से चल रही थी । दूसरे उस दृश्य को मैंने कल्पना ही समझा लेकिन दिल कहता था, वह दिव्य वाणी है,असत्य न होगी।

उसी दिन से रीम सूखने लगा, तीन चार दिन में बहुत कम हो गया । अब आपरेशन का डर भी कम हो गया, एक दिन डॉ. पाल ने किताब निकाल कर दिखाया और कहा, देखिए मैंने आपके आपरेशन की रूपरेखा तैयार कर ली थी, लेकिन आपका भाग्य । वास्तव में इस जख्म को इस तरह सूखते देख, जिसकी आशा नहीं थी, डॉ. पाल भी आश्चर्यचकित थे ।

इसी बीच में एक और संकट से माता ने रक्षा की। हम कुछ ही दिन में अच्छा हो कर घर चले आये । इस घटना को ३ वर्ष के लगभग हो रहा है । मैं बड़ा अनुष्ठान आज तक नहीं कर सका हूँ । थोड़ी बहुत दैनिक साधना टूटे-फूटे नियम से कर रहा हूँ । माता की दया और गुरुदेव की कृपा से जन्म-जन्मातर के पड़े कुसंस्कार धीरे-धीरे हटते जा रहे हैं ।

अगर माता की दया और गुरुदेव का अनुग्रह होगा तो आत्म दर्शन कर सकूँगा, ऐसी आशा और विश्वास से साधना में लगा हूँ ।

मन भड़क-भड़क कर पुराने ढंग पर चलता है, परन्तु उसका अब वश नहीं चलता, पछता-पछता कर फिर अपनी जगह पर लौट आता है । गायत्री तू धन्य है, तेरी महिमा अपार है, वाणी में सामर्थ्य नहीं है जो तेरा गुण गा सके । मेरे जैसे पापी को जब सत्मार्ग पर ला सकती है, और कठिन प्रारब्ध भोगों को सरल कर सकती है, तो जो धर्मात्मा पुण्यात्मा है, उनकी तो बात ही दूसरी है ।

गायत्री की शरण से नवजीवन दान

श्री. रामेश्वर शर्मा अध्यापक धरमपुरी से लिखते हैं कि मेरा इकलौता पुत्र दो बार बहुत अधिक बीमार हुआ, उस समय मैं घर से बाहर एक मील दूर था लेकिन वेदमाता की शरण में रहने से उसे किसी प्रकार का कोई संकट नहीं आया ।

जिस समय मेरा बच्चा पहली बार बीमार हुआ उस समय इसे सूखा रोग हो गया था और इसके बचने की कोई आशा नहीं रही तथा मैं बच्चों की चिकित्सा से बिल्कुल अनभिज्ञ था कि इनकी चिकित्सा किस प्रकार की जाती है ।

इस चिंता से दुःखी होकर एक दिन मैं अपने परिचित साथी के पास खलघाट आया और उनसे सारा हाल कहा । उन्होंने मुझे सब प्रकार से धैर्य बंधाया और कहा कि प्रत्येक कार्य को गायत्री माता के आश्रय में छोड़कर आगे बढ़ना चाहिए । सफलता अवश्य मिलती है । मैंने उनके कहे पर विश्वास किया और गायत्री जप के साथ दवाई देना शुरु किया बच्चे का सूखा रोग मिट गया और एक माह बच्चा पूर्ण तन्दुरुस्त हो गया । तब से मेरा आत्म-विश्वास दृढ़ हो गया और मैं माता की उपासना और अधिक लगन से करने लगा।

दूसरी बार बच्चा बीमार पड़ा । इस बार उसे ब्रेंको निमोनिया और डिप्थीरिया हो गया । आशा निराशा में परिणत हो गई, क्या किया जाय कुछ समझ में नहीं आता था, मैं शान्त होकर बैठ गया और माता से प्रार्थना करने लगा, तथा मेरे साथी महोदय ने विशेष रूप से किये गये गायत्री यज्ञ की भस्म बच्चे को लगाई

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिससे उसे शान्ति मिली और आशा बँधी । दो-चार दिन की साधारण चिकित्सा के बाद उसे आराम हुआ । कुछ भी हो गायत्री मन्त्र में संजीवनी शक्ति विद्यमान है, इसका प्रत्यक्ष अनुभव मैंने किया है ।

आज से मैंने अपना जीवन वेदमाता की सेवा और प्रचार में लगाया है । मैं बहुत अधिक समय यथा तन मन, धन से माता की उपासना करता हूँ । इसके फलस्वरूप मुझे आरोग्यता, ज्ञान, प्रतिष्ठा, और उन्नति की दशा का अनुभव हो रहा है । भविष्य में मैं क्या बन जाऊँ यह कह नहीं सकता । इतनी सरल और कष्ट रहित साधना जो नहीं करें उनके समान अभागा इस दुनिया में और कौन है । मेरे अनुभव तथा मेरा दृढ़ विश्वास इस बात का द्योतक है कि वेदमाता गायत्री की शरण में रहने वाला कभी भी दुखी नहीं रहता है।

महाशक्ति की समीपता

डॉ. जे. निगम, कानपुर, से लिखते हैं कि बहुत समय से मैं गायत्री उपासना में लगा हुआ हूँ । मेरी साधना जिस गति से बढ़ती है उसी अनुपात से मुझे माता की कृपा के अनेकों अनुभव भी होते हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि कोई शक्ति मेरे चारों ओर भरी हुई है और वह मुझे निरन्तर प्रेरणा एवं पथ-प्रदर्शन प्रदान करती है। अनेकों व्यक्ति मुझसे अनेकों अज्ञात बातें पूछने आते हैं । उन्हें ऐसा विश्वास है कि मुझे कोई विशेष सिद्धि प्राप्त है। कारण कि बताई हुई प्राय: सभी बातें सही निकलती हैं और जिसे जो कार्य बता देते हैं वह उनके लिए सफलता प्रदान करने वाला ही बन जाता है ।

कोई विशेष साधना सिद्धि मैं नहीं जानता । गायत्री ही मेरा इष्ट है । इसी की जो कुछ साधना बन पड़ती है करता रहता हूँ । इससे मुझे ऐसा प्रतीत होता रहता है कि कोई महान् शक्ति हर घड़ी साथ-साथ फिरती है और उसकी सहायता समय-समय पर आसानी से प्राप्त की जा सकती है ।

बहुधा अनेक व्यक्तियों को छोटी-मोटी सहायताएँ इस महाशक्ति द्वारा पहुँचाता रहता हूँ । अपने घर-परिवार के अभी हाल के ही अनुभव पाठकों के सामने प्रस्तुत करता हूँ । उन्हीं से अन्य ऐसी घटनाओं का अनुमान लगाया जा सकता है ।

१—चन्द महीना हुआ जब कि मेरी स्त्री के बच्चा हुआ था । वह जब मैके से मरे यहाँ आई और उसी दार्मियान मैं नव दुर्गाका अनुष्ठान करके सुबह हवन कर रहा था । उसको भी अवन के पास बैठने को कहा तो वह कहने पर चारपाई से उठकर मेरे हवन में न आकर कहा—जाड़ा है हम लेटे हैं । उसी वक्त मेरे जुबान से निकल गया जाओ पड़ी रहो । उसी दिन से सख्त बीमार हो गई । हर प्रकार का इलाज किया गया मगर लाभ न हुआ । तब मैंने गायत्री जी का हवन करके उसको हवन के पास बैठाकर के पूजा की तो उसी दिन से वह अच्छी होने लगी और बिना दवा के ही अच्छी हो गई ।

२—मेरा बच्च उम्र पाँच साल सख्त चेचक निकला और ऐसा विकट रूप धारण किया कि बच्चे के बचने की आशा छूट गई बच्चे के जान र रह गई थी । मरने की सी हालत-रात के वक्त हो गई । सबने जवाब दे दिया । मैंने उसी वक्त देवी जी की प्रार्थना करना शुरु किया । रात भर बच्चे को गोद में लिए प्रार्थना करता रहा । २ बजे रात को ऐसा मालूम हुआ कि जान जा रही है । उसी वक्त मैंने अपनी स्त्री को बच्चे को लेने को कहा, मगर मेरी स्त्री डर के मारे मेरे पास न आकर सीधे घर के मन्दिर में जाकर खड़ी रही और मैं माता को याद करने के साथ रोता भी जाता था । बस मात की ऐसी दया हुई कि एक ही घण्टा के बाद से उसकी हालत ठीक होती नजर आने लगी, तब मैंने अपनी स्त्री को मन्दिर से बुलाने गया तो उसने पूछा क्या हाल है ? मैंने उत्तर दिया कि माता की कृपा है, ठीक है, चलकर देखो, तब बच्चे के पास आई, उसी वक्त से बच्चा ठीक होने लगा और अब बिल्कुल ठीक है ।

अनेक कठिनाइयों का निवारण

श्री. लालजी पाठक, लामटा से लिखते हैं कि मेरा जन्म एक भार्गव ब्राह्मण ग्रामीण के गृह में हुआ । मेरे पिता उस ग्रम के मालगुजार थे । पर बहुत ज्यादा ऋणग्रस्त दशा में थे, उनकी स्थिति शोचनीय थी, इस कारण मुझे वाल्यावस्था का सुख प्राप्त न हुआ । उन्होंने मेरी शादी सम्वत् ९१६४ में एक गरीब ब्राह्मण की लड़की के साथ कर दी, उस साल मैं हिन्दी की तीसरी कक्षा में पढ़ता था, चौथी कक्षा पास कर एक साल पाँचवी पढ़ा, पर फेल पास कुछ नहीं । सं. १९७० में पिताजी ने मुझे अंग्रेजी पढ़ने भेजा और तीन माह बाद आप स्वर्गवासी हो गये । इस वास्ते मेरा पढ़ना बन्द हो गया और इस छोटी अवस्था में गृहस्थी का भार मेरे सिर पड़ा । इसके अलावा कर्जदारों का और बड़ा भारी भार था कुछ भी न जानते हुए उन्हीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जगदाधार की प्रेरणा से जैसी जैसी वे बुद्धि देते रहे चलता रहा । शारीर से भी कमजोर होता चला, सं. १९८६ मे मेरी पत्नी स्वर्गवासिनी हो गई और अपने पीछे तीन कन्याएँ छोड़ गई । एक तो ७-८ माह की थी ।

इस स्त्री से दो पुत्र भी उत्पन्न हुए पर वे मृत हो गये। इन विपत्तियों में मेरा चित्त बहुत ही विक्षुब्ध रहने लगा।

सं. १९८७ में नवरात्रि मे अकस्मात मुझे ऐसी दैवी प्रेरणा मिली कि मैने सवालक्ष वेदमाता का जप किया पर विधि वगैरह कुछ भी मालूम नहीं थी । इन्हीं माता ने अपना प्रभाव मुझे बताया कि अनायास मेरी दूसरी शादी हो गई जो किसी भी कदर नहीं हो सकती थी । इसी साल से मेरे हृदय पट पर माता के प्रति श्रद्धा के अंकुर जमने लगे । सं. १९८८ में एक जबरदस्त झूठा दीवानी लेन-देन का मुकदमा सेन्ट्रल बैंक ने मेरे ऊपर डाला कि उस फिकर में मैंने और अच्छी लगन से गायत्री की आराधना करना शुरू किया । सं. १९८९ या ९० में एक महात्माजी ने इस बैंक वाले मुकदमे की प्रार्थना करने पर गायत्री जप का आदेश किया और इस समय से मैं तीन हजार जप करने लगा । मुकदमे में जीत पाने की कामना से बीमारी की दशा में भी बिस्तर पर बैठे-बैठे ही जप करता रहा । सं. १९९३ में यह मुकदमा नागपुर से जीत गया । वेदमाता की कृपा हुई ।

धीरे-धीरे ऋण भार भी चुक गया, पुत्र कामना से जो आराधना की गई थी उसकी पूर्ति कार्तिक सं. १९९९ में हुई । होनहार पुत्र को पाकर हम सब को बड़ी प्रसन्नता हुई ।

हमारे पिता ऋणग्रस्त होने के कारण साधारण कच्चे देहाती बनावट के मकानों में रहते थे और मकान जरूरत से ज्यादा टूटे-फूटे छोड़कर स्वर्गवासी हो गये थे । मैं भी ऋण भार के कारण उन्हीं में गुजर करता रहा पर सं. १९९१-९२ से कुछ माता की कृपा हो जाने के कारण हर बातों में हर कामों की वृद्धि होने लगी । मकान बनाने की इच्छा हुई और सं. १९९४ मैं पक्का मकान सादा बनाना चाहा पर आनायास मुझे कुछ मालूम ही नहीं पड़ा और करीब ३ हजार रुपया के खर्चे से इतना बड़ा दुहरा (दो मञ्जिल) मकान बना कि इस वक्त यदि बनाया जाय तो २५ हजार रुपया की लागत से बनेगा जो मेरी हैसियत से बाहर बन गया है ।

मुझे सं. १९९१ में बीमारी जो हुई थी वह इतनी जबरदस्त थी कि सभी ने मेरा अन्त समझ लिया था । पर उस परम पिता की कृपा से बच गया और भी छुटपुट कई दुश्मनों ने अकारण के झगड़े तैयार किये पर उस गायत्री माता की कृपा से सभी को मुँह की खानी पड़ी । सत्य की विजय होती है ऐसा मैंने अजमा कर देखा । अब सरकार ने मालगुजारी ले ली है । सिर्फ काश्तकारी बची है मेरी मालगुजारी के वक्त एक काश्तकार १६ एकड़ जमीन का सिर्फ ७५) रु. में बेदखल हो गया, और मैंने जमीन पर कब्जा ले लिया। इसके बाद उस जमीन के खरीदार खड़े हो गये । एक हजार रुपया में १६ एकड़ जमीन माँगने लगे । उस परम पिता ने मुझे प्रेरणा दी कि मैंने अपनी खुशी से उस जमीन में से ५ एकड़ जमीन रखकर बाकी ११ एकड़ जमीन उस काश्तकार को वापस कर उसके लड़के के नाम पट्टा लिखकर दे दिया । रुपया का लालच न किया, निदान कुछ दिन बाद वही ५ एकड़ जमीन मेरे पास से १२००) रुपये में बिक गई । इस प्रकार गायत्री माता की उपासना के फलस्वरूप मेरी अनेकों कठिनाई हल होती गई हैं और सुविधाएँ बढ़ी हैं । शेष जीवन की कठिनाइयों को भी वे इसी प्रकार पार कर देंगी ऐसी आशा है ।

बच्चों की सुख शान्ति

श्री नर्मदा बाई शर्मा खलघाट म. भा., अपनी अनुभूतियों का वर्णन करते हुए लिखती हैं कि मेरे पति देव लगातार बहुत दिनों से उपासना करते थे, उनके नियमित कार्य को देखकर मेरे मन में भी प्रबल इच्छा हुई कि मैं भी लगातार उपासना करूँ । लेकिन कोई सुविधा न होने के कारण तथा छोटे-छोटे बच्चों का लालन-पालन और उनकी पूर्ण जिम्मेदारी मुझ पर होने से, मुझे समय नहीं मिलता था, न पति देव का भी मुझ पर ऐसा प्रभाव था कि वे मुझसे कह सकें कि तुम भी माता की उपासना करो । ग्रहकार्य की पूर्णतया जिम्मेदारी मुझ पर ही होने से उचित समय नहीं मिलता था । इससे मैं भय खाती थी, इस विषय पर मैंने एक दिन पति देव से पूछा क्या मैं उपासना नहीं कर सकती ? पतिदेव ने कहा-क्यों नहीं ? तुम पर तो माता की विशेष कृपा बहुत ही शीघ्र होती है । फिर मैंने कहा कि हमें संध्या के दोनों समय तो गृहकार्य अधिक रहता है फिर कैसे करूँ तथा कब करूँ तब उन्होंने कहा गृहस्थी पतिवृता स्त्री को पति की सेवा के बाद, या गृहकार्य से पूर्ण निवृत हो जाने के बाद

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही उपासना करनी चाहिए । तब से मैंने अपना नियम बना लिया है, मैं प्रातःकाल जप करने के बाद भोजन करती हूँ और सायंकाल जप करने के बाद सोती हूँ । इस प्रकार मेरा उपासना क्रम लगातार चल रहा है ।

एक समय मेरा छोटा बच्चा दो साल का था और वह बहुत अधिक बीमार पड़ा उसके बचने की आशा नहीं दीखी । जब मैंने उसके दीर्घ जीवन की भीख माँगी और वह मुझे मिली । जब बच्चा स्वस्थ हुआ तब उसने थोड़े दिनों तक कई प्रकार के विचित्र चमत्कार बताए । जप से बच्चा आज तक बीमार नहीं पड़ा और उसकी हालत, स्वास्थ्य, सुन्दरता, सदगुण और स्वभाव इतना अच्छा है कि मानों कोई होनहार बालक दिखता है ।

मेरे कहने से मेरी जिन-जिन बहनों ने यह उपासना आरम्भ की है उनका भी गृहस्थ जीवन और वर्तमान परिस्थिति बहुत अच्छी है ।

यह कहना किसी भी प्रकार उचित नहीं कि स्त्रियाँ गायत्री का जप न करें । स्त्रियों को पशु की तुलना में गिनने वाले संकीर्ण हृदय लोगों को यह सोचना चाहिए कि गायत्री माता भी तो नारी है । यदि नारी नीच और घृणित है, उसे वेद का, यज्ञ का, पूजा उपासना का कुछ भी अधिकार नहीं तो फिर गायत्री माता भी तो नारी हैं । उन बेचारी का भी पुरुषों से पूजा उपासना करने को क्या अधिकार हो सकता है ।

मैं विशेषकर उन बहनों से निवेदन करती हूँ जिन्हें अपनी सास, पति अथवा अन्य जनों से त्रास होता हो—जिनका जीवन गरीबी से व्यतीत हो रहा हो तथा जिन्हें कोई गुप्त या प्रकट रोग हो या कोई आवश्यकता हो या अशान्ति हो—वे अन्य किसी का आश्रय छोड़कर अपना ध्यान वेदमाता गायत्री के चरणों में लगावें और उनसे प्रार्थना करें उन्हें शीघ्र ही सब दुःखों से छुटकारा मिलेगा—वे समय की कोई चिन्ता न करें। माता को पुकारने का सदा ही समय है । जब उन्हें क्लेश हो—या अशान्ति हो, तथा आश्रय की आवश्यकता हो उस समय जिस परिस्थिति में ही एक दम माता का जप आरम्भ करो । उन्हें तत्काल फल मिलेगा तथा साधारण तथा नित्यकर्म में इतना नियम अवश्य रखें कि प्रातः किसी भी समय जप करने के बाद भोजन करें । अथवा सायंकाल जप करने के बाद सोवें तो माता उनकी प्रार्थना शीघ्र सुनकर उन्हें शीघ्र अच्छा फल देंवेगी । जो जैसी कामना से जप करेंगी । उन्हें वैसा ही फल मिलेगा । मैं निवेदन करती हूँ कि मेरी सुखी अथवा दुखी बहनें इस उत्तम कार्य को कुछ दिन परीक्षण के तौर पर ही अनुभव करें कि वेदमाता कितनी जल्दी कृपा करती हैं माता का प्यार पुत्रों की अपेक्षा पुत्रियों पर विशेष रहता है, ऐसा जानकर माता की शरण में जावें ।

माँ की कृपा के अनुभव

श्री. छत्रपाल जोशी, सीकर से लिखते हैं कि उपवीत संस्कार होते ही मेरी भगवती गायत्री के प्रति स्वाभाविक श्रद्धा हो गई, अध्ययन की अवस्था थी, इसलिए विशेष न कुछ कर ही सकता था—न विशेष जानकारी ही थी, उस समय मैं बनारस राजस्थान संस्कृत कालेज का स्नातक था, उस समय प्रातः ४ बजे उठकर शौचादि से निवृत्त होकर गंगाजी जाता और स्नान सन्ध्या करके केवल १० मालाएँ जपता फिर आकर अपने पठन पाठनादि कार्यों में लग जाता, उस समय घर की परिस्थिति उतनी अच्छी न होने के कारण आर्थिक कमी का अनुभव हुआ करता था । जब विशेष कमी का अनुभव हुआ तो मन ही मन में माँ से प्रार्थना होने लगी, और दो ही दिन बीते कि एक आदमी बक्सर से चला हुआ आया । आकर हमारे अध्यक्ष जी से बोला शतचण्डी के लिये दो पण्डितों की आवश्यकता है मेरे ऊपर कोई विशेष स्नेह अध्यक्ष का नहीं था फिर भी मुझे तथा एक मेरे अन्य मित्रों को भेजा गया और हम लोगों से समागत महानुभाव को सन्तोष भी पूर्ण रूप से हो गया ।

हम लोगों ने वहाँ जाकर अन्य पण्डितों के साथ १० रोज पाठ किया और समाप्ति के रोज १०) रोज के हिसाब से १००) और अन्य वस्तु सभी प्राप्त कीं जिससे परीक्षा आदि का व्यय सुचारु रूप से निकल गया, उस समय बनारस जैसे नगर में पण्डितों की कोई कमी नहीं थी किन्तु भगवती ने हमें कुछ आर्थिक सहायता देनी थी । विशेष क्या तब से आज तक आर्थिक कष्ट का अनुभव नहीं किया । इस छात्रावस्था में और भी कई ऐसे अनुभव हुए जिनका प्रकाशन करना गुरुदेव ने मना कर दिया ।

फिर अध्ययन समाप्त करके काम करना शुरू कर दिया और उपासना का काम उसी ढांचे पर चलता रहा । साथ ही मैं यह भी कभी अनुभव करता रहा कि बिना सद्गुरु के उपासना उतनी लाभदायक नहीं होती। तान्त्रिक शिक्षा-दीक्षा की मुझे विशेष इच्छा थी ज्यों-ज्यों समय बीता लगन भी बढ़ी । अभी जो कृष्ण पक्ष में ग्रीष्मावकाश होने के कारण हरिद्वार ऋषिकेश का विचार करके मैं तथा माताजी एक घनिष्ठ मित्र के साथ इस आशा में चल पड़ा कि सम्भव है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हिमालय में किन्हीं गायत्री के अनुभवी महात्मा के दर्शन हों और उनकी सहायता से कुछ सहारा मिले ।

ऋषिकेश पहुँच कर अनेक लोगों से पूछा कि यहाँ कोई गायत्री उपासक सन्त भी हैं क्या ? किन्तु सन्तोषजनक उत्तर न पाकर चित्त में बड़ी निराशा होने लगी कितने ही दिन ऐसे ही बीत गये । एक दिन बाबा काली कमली वाले के क्षेत्र में किसी अनुभवी सज्जन से भेंट हुई और अपनी बातों के क्रम में ही उन्होंने बताया कि यहाँ गायत्री स्वरूप नाम के एक अच्छे गायत्री उपासक महात्मा हैं ।

मैंने कोई विशेष ध्यान नहीं दिया और दूसरे रोज नीलकण्ठ भ्रमण का विचार किया जो स्थान गीता भवन से ७ मील की चढ़ाई पर है । दो साथी उत्तर प्रदेश के थे एक मैं था । तीनों मित्र प्रातः ५ बजे रवाना होकर ८।। बजे पहुँचे, वहीं जाकर स्नान किया, भोजन की व्यवस्था करके, एक अतिथि को भिक्षा देकर भोजन किया और कुछ देर आराम करके इधर-उधर घूम रहे थे । इतने में एक महात्मा जिसके साथ दो गृहस्थ आते हुए दिखाई दिये, समीप आने पर प्रणाम किया । उन महात्मा जी ने मेरी तरफ एक दफा दृष्टि डाल कर देखा और कहा, स्वर्गाश्रम में हमारी कुटिया में आना । मैंने उसी समय विचार कर लिया कि माँ की कोई विशेष कृपा हुई है । मैंने जब एक आदमी से पूछा तो मालूम हुआ महात्मा गायत्री स्वरूप जी आप ही हैं दूसरे रोज उनकी शरण में गया। संतप्त हृदय को शान्त किया । जो मेरी इच्छाएँ थीं सब पूर्ण हो गईं, शंकाओं का निपटारा हो गया । मेरी तान्त्रिक साधना की इच्छा थी, वह भी पूर्ण हो गई। अधिक क्या लिखूँ, वहाँ मैंने सर्वस्व पाया ।

कुष्ठ निवारिणी माता

श्रीमती पं. चन्दा देवी मिश्रा, बरेली से लिखती हैं कि विवाह होने के पश्चात् मैं ससुराल आई । दो बच्चे होने के पश्चात् एक सम्बन्धी के यहाँ जाने पर रास्ते में किसी बाधा ने धर दबाया । मैं यहाँ से बीमार होकर बरेली आई । मैंने अधिक उपचार इलाज अपनी सामर्थ्य से ज्यादा कराया पर हर कहीं से कोरा उत्तर मिला और निराशा बढ़ती गई । यहाँ तक कि कई बार गर्भपात हुआ । हमारे पतिदेव चिन्ता में अधिक दुर्बल परेशान रहते । उन्होंने काफी रुपया हमारे इलाज में लगाया । परन्तु कहीं से भी लाभ नहीं हुआ ।

हमारे मकान में किरायेदार पं. यशोदा नन्द मुनीम रहते हैं । उन्होंने गायत्री की महिमा हमें बताई और विश्वास दिलाकर कहा कि गायत्री उपासना आकर्षित करने से आपका कष्ट मिट जायगा ।

मुनीम जी की प्रेरणा से हमने गायत्री उपासना की तो अब करीब एक साल के लगभग होने आया धीरे-धीरे रोग अपने आप स्वयं घटता गया । अब समय पाकर गत चैत्र की नवरात्रि में चैत्र सुदी २ को रात्रि के २ बजे शान्तिपूर्वक सन्तान का जन्म हुआ है। हम सब लोगों की गायत्री माता पर अटूट विश्वास हो गया है ।

माता को कोटि-कोटि धन्यवाद है जिनकी कृपा से हमारा दुख दूर हुआ है । सचमुच यह ठीक ही कहा है कि जो माता की शरण लेता है उसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पदार्थ मिलते हैं ।

तन्दुरुस्ती, प्रतिष्ठा और आजीविका की पुनः प्राप्ति

श्री शिव भगवान जी सोमानी, कालियाचक से लिखते हैं कि विराट नगर (नेपाल) से सं. २००७ में, अपने पुत्र की शादी के लिए सीकर आया और फिर वहीं रहने लगा । दैव संयोग से मैं सट्टे की लाइन में पड़ गया और आखिर नतीजा खराब निकला। सट्टे में काफी नुकसान हुआ । यहाँ तक कि मेरी धर्मपत्नी के तथा लड़की के भी सब जेवर उसी में चले गये ।

चिन्ता और परेशानी का स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ा । शरीर कमजोर हुआ । आखिर राजयक्ष्मा (टी. बी.) तथा भगन्दर के दो प्राणघातक रोगों ने मुझे ग्रसित कर लिया ।

मेरे साले शिवरतनजी मारुभाले गाँव (नासिक) में एक प्रसिद्ध साड़ियों के व्यापारी हैं । उन्हें जब मेरी बीमारी का पता लगा तो दौड़े हुए आये । कहाँ कराया जाय इस पर विचार हुआ । बीमारी बढ़ गई थी इसलिए निश्चय हुआ कि सीकर से भाले गाँव जाया जाय और वहाँ से शिवरतनजी के साथ बम्बई जाकर इलाज कराया जाय । मेरी स्थिति इतनी गिर गई थी कि चारपाई पर से उठना-बैठना मुश्किल हो रहा था । सभी को मेरे जीवन से निराशा होती जा रही थी।

माले गाँव से हम लोग बम्बई पहुँचे और वहाँ पहुँचकर अनेक सुप्रसिद्ध डाक्टरों से बीमारी का निदान कराया। टी. बी. विशेषज्ञ डाक्टर बिलमोरिया ने एक्सरे, सीना, पेशाब, खून, पखाना आदि की परीक्षा की और रिपोर्ट लिखकर दी कि बीमारी तीसरी स्टेज पर पहुँच चुकी है। १५ दिन में ही बीमार की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हालत काबू से बाहर हो जायगी। डाक्टर ने यह भी कहा कि फेफड़ा गल गया है इसलिए कई पसलियाँ काट कर निकालनी पड़ेंगी।

उस रिपोर्ट का हमारे साले साहब पर बहुत गम्भीर आघात लगा । वे बहुत दुखी थे। उनकी मुखाकृति देखकर स्थिति की गम्भीरता समझने में मुझे भी देर न लगी। आखिर सब बात मालूम हुई । पसलियाँ कट जाने जैसे बड़े आपरेशन को बर्दाश्त करने लायक न तो मेरा स्वास्थ्य था और न साहस।

शिवरतनजी गायत्री के अनन्य उपासक हैं। उन्हें माता की शक्ति पर बहुत भारी विश्वास है। उन्होंने गायत्री महाविज्ञान ग्रन्थ के अनेक स्थल मुझे सुनाये और गायत्री उपासना करने के लिये मुझसे आग्रह किया। प्राण रक्षा के लिए मनुष्य सब कुछ करने को तैयार हो जाता है। फिर गायत्री उपासना तो एक बहुत ही उत्तम और सरल काम है । उसके लिए मैं प्रसन्नता पूर्वक तैयार हो गया। मालेगाँव लौट कर एक साधारण इलाज चालू करा दिया और पूरी तत्परता के साथ मैं गायत्री उपासना में लग गया।

चारपाई पर पड़े-पड़े पूरे समय मन ही मन गायत्री माता का जप और ध्यान करता रहता। बीज सम्पुट 'ऐं' का प्रत्येक मन्त्र के पश्चात सम्पुट लगाकर जप करता था। इसी क्रम को चलते हुए ७५ दिन हो गये। एक दिन दोपहर के भोजन के बाद में अर्धनिद्रा में लेटा हुआ था, देखा कि एक सुन्दर देवी सिरहाने बैठी है और मेरे बाँये हाथ को पकड़ कर हस्त रेखा देख रही है। मैंने पूछा—पुरुष का तो दाहिना हाथ देखा जाता है। आप मेरा बाँया हाथ क्यों देखती हैं। उत्तर मिला कि रोगी का बाँया हाथ ही देखा जाता है। मैंने फिर पूछा—हाथ में आपने क्या देखा ? उत्तर मिला कि—तुम्हारा कल्याण हो, अब बीमारी अच्छी हो गई है।

आँख खुली— चारों ओर मैने ध्यानपूर्वक देखा तो वहाँ कोई स्त्री नहीं थीं। मैने जान लिया कि यह गायत्री माता ही थीं और मुझे अभयदान देने आईं थीं। प्रसन्नता से मेरा चित्त प्रफुल्लित हो रहा था।

दिन पर दिन हालत सुधरती गई और मैं थोड़े ही समय में इन टी. बी. तथा भगन्दर की प्राणघातक बीमारियों को परास्त करके पूर्ण स्वस्थ हो गया। स्वस्थ होने के बाद कुछ दिन इधर-उधर टक्करें खाने के बाद व्यापार भी ठीक प्रकार जम गया। अब हमारे फर्म में १० आदमी मुनीम गुमास्ते काम करते हैं।

मेरी धर्मपत्नी को गायत्री माता पर अनन्य श्रद्धा है। उसकी विशेष साधनाएँ, तपश्चर्याएँ, नवरात्रि साधनाएँ चलती रहती हैं। नित्य भी काफी समय तक वह गायत्री उपासना करती है।

मैं भी माता को भूला नहीं हूँ। कुछ न कुछ समय उनके चरणों में लगाकर चित्त को शान्ति प्राप्त करता रहता हूँ। मैंने अपनी गई तन्दुरुस्ती, प्रतिष्ठा, आजीविका सभी कुछ माता की कृपा से प्राप्त की हैं जो कुछ प्राप्त करना शेष है आशा है वह भी प्राप्त हो जावेगा।

गायत्री माता की शान्तिदायक गोद

श्री जगदीश दत्त जी श्रोत्रिय, बिजनौर, से लिखते हैं कि बहुत दिन की पुरानी बात है मेरे हाथ अकस्मात् सुन्न हो गये। सुई चुभोने पर भी दर्द न होता था, हाथों की क्रियाशक्ति कुंठित हो चली । मैं बहुत घबराया। डाक्टर और वैद्यों ने रोग की भावी भयङ्करता को बढ़ा-चढ़ा कर चिन्तित किया तो मैं घबरा गया। एक विज्ञ महानुभाव ने मुझे २४ लक्ष गायत्री जप का अनुष्ठान करने की सलाह दी। मैं श्रद्धा और तन्मयता के साथ उसे पूर्ण करने में लग गया। माता की कृपा से वह रोग कुछ ही दिनों में बिल्कुल अच्छा हो गया।

कहते हैं कि गायत्री उपासकों की सन्तान सुखी रहती है और फलती-फूलती है। इस बात को भी मैंने अपने व्यक्तिगत अनुभव से सही पाया है। अनेक झंझटों में फँसे रहने तथा आर्थिक तङ्गी रहने पर भी दो पुत्र, पुत्र वधु, कन्या सभी एम. ए. पास किये हैं। बड़ा लड़का जप पूर्ण होने से पहले ही २००) का नौकर हो गया। दूसरे की वकालत शनैः-शनैः उन्नत हो रही है। कन्या एम. ए. के बाद पी. एच. डी. की तैयारी में लगी हुई है।

काफी दिन हो गये मेरे विरुद्ध एक मुकदमा चल रहा था। जज ने मेरे वकील को यह सूचना दे दी थी कि फैसला मेरे विरुद्ध निश्चित किया गया है। मैं इस सूचना से बड़ा चिंतित हुआ और अपने एक मात्र अस्त्र-उपासना में जुट गया। ३—४ दिन बाद फैसले की तारीख थी। अदालत में पहुँचने पर देखा कि जज का विचार बिल्कुल बदल गया है और उसने पूर्व सूचना के बिल्कुल प्रतिकूल मेरे पक्ष में ही फैसला दिया।

मेरी कन्या जिसने एम. ए. कर लिया है उसके लिए वर ढूंढ़ने की बड़ी चिन्ता रहती थी। लगातार तीन वर्ष से यही एक कार्य था किन्तु जहाँ जाता वहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

असफलता मिलती। निराश होकर एक गायत्री अनुष्ठान करने की ठानी। उसका परिणाम आशातीत हुआ। आशातीत योग्य वर मिला। जो डबल एम. ए. और पी. एच. डी. है। शिक्षा के लिए जर्मन जाने की तैयारी कर रहा था । इस अर्थ लोलुप युग में मुझसे दहेज के लिए एक पैसे की माँग नहीं की गई और शादी बड़े आनन्दमय वातावरण में सम्पन्न हो गई।

अनुष्ठान की पूर्ति पर यज्ञ करने के लिए जैसे कि अर्थाभाव के कारण चिन्ता हो रही थी, तारीख २६—४—५४ को अचानक कल्पनातीत स्थान से ठीक आनुमानिक व्यय को पूर्ण करने वाली रकम का बीमा आ गया जो माता की कृपा के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। ऋण लेने की तैयारी थी, माता ने लज्जा रख ली, मैं गद्‌गद हो गया।

एक बार मैं घोर घने जंगल में फँस गया । सिंह सूअर आदि से जङ्गल पूर्ण था। वर्षा हो रही थी, रात अँधेरी थी, मैं अकेला था। उस भयंकर वातावरण में दिल धड़क रहा था, प्राण रक्षा के लाले पड़ रहे थे। गायत्री माता को पुकारने के अतिरिक्त और कोई उपाय दिखाई न पड़ता था। भय संत्रस्त स्थिति में मन ही मन माता को पुकारता हुआ आगे बढ़ रहा था कि आश्चर्य की तरह एक ताँगा उधर आ पहुँचा और मुझे बिना किराये बिठा कर मेरे स्थान पर पहुँचा आया। उस स्थान पर उस समय तांगे का पहुँचना और ऐसे घने जङ्गल में से पार निकालना एक प्रत्यक्ष दैवी कृपा ही थी।

मेरे गायत्री उपासना के अनुभवों में से कुछ यह हैं। माता का अञ्चल पकड़ने वाले को क्या नहीं मिल सकता ? सब कुछ मिल सकता है।

गायत्री द्वारा रोग निवारण

डॉ. जगदीश निगम, कानपुर, से लिखते हैं कि मैं डॉक्टर हूँ। डाक्टरी मेरा व्यवसाय है। दो वर्ष से मैं गायत्री की उपासना करता हूँ। रोग निवारण के लिए जितनी उपयोगी दवाएँ सिद्ध नहीं होतीं उससे अधिक गायत्री के उपचार सिद्ध होते हैं। कितने ही कष्ट-साध्य रोगियों पर मैं गायत्री मन्त्र का उपयोग करके आश्चर्यजनक लाभ देख चुका हूँ। उनमें से कुछ का संक्षिप्त विवरण नीचे प्रस्तुत कर रहा हूँ।

१—एक १६ वर्ष की लड़की जिसको फिट (दौरे) आने लगे थे और एक दिन वह फिट में पड़ी थी हर तरह से लोग होश में लाने की कोशिश कर रहे थे मगर होश में न आ सकी । मैं जब पहुँचा और पानी पढ़कर उसके मुँह पर छींटा मारते ही उसने आँख खोल दीं और ठीक हो गई लोग देखते रह गये ।

२—एक बच्चा को नजर लग गई थी, वह किसी तरह से चुप नहीं होता था। खूब जोर-जोर से रो रहा था और उछलता था । मैंने उसके ऊपर तीन बार फूँक कर डाल दिया जिससे बच्चा फौरन ठीक हो गया।

३—एक स्त्री जिसको कि उसकी सौत लगी थी जिससे उसके खून महावारी बहुत दिनों तक जारी रहता था । खाना नहीं खाती थी, हमेशा लेटी रहती थी। इलाज काफी हुआ और बहुत से झाड़ने वाले भी आये, मगर कुछ न हुआ । जब मेरे पास इलाज के लिये आई तब मैं भी दवा देता रहा जिससे कुछ ठीक नतीजा न मिला। एक दिन मेरी तबीयत में माता का ध्यान आया और इच्छा प्रकट हुई तो मैंने एक गिलास पानी मँगाया और उसमें ६ बार मन्त्र पढ़कर फूँक दिया और दिन भर उसको पीने को दिया जिससे वह बिल्कुल ठीक हो गई और किसी प्रकार का रोग उसको अब तक नहीं हुआ है।

४—एक १८ साल का लड़का बेहोश पड़ा था, बोल बन्द था, उसका इलाज हुआ और झाड़ फूँक भी हुई मगर कुछ लाभ न हुआ । तब मेरे पास इलाज को आया, मैने भी दवाइयाँ दीं, मगर कोई लाभ न हुआ, तब मैने उसको ७ बार गायत्री मन्त्र की फूँक दी । दो दिन के बाद वह ठीक हो गया और फिर दवा होती रही और वह ठीक हो गया।

मेरा ध्यान हर समय अनुष्ठान करने में ही रहता है । अभी तो मैं ११ माला सुबह और ३ माला शाम को जपता हूँ और पूजा मैं नहीं जानता हूँ । आगे आप मुझको समझाइयेगा । मैं चाहता हूँ कि आप मुझको गायत्री माता की चन्द फोटो यानी ६ फोटो और गायत्री किताब की सब फोटो अलग-अलग बड़ी साइज की भेजने की कृपा करें ताकि मैं जिसकी पूजा करूँ उसकी फोटो मेरे सामने रहे। किताब नहीं रखी जा सकती है, कुछ कार्य के अनुष्ठान हवन बतायें ताकि लोगों के यहाँ पर जाकर कर सकूँ और उनको तत्काल लाभ हो जैसा कि यहाँ पर एक सज्जन हवन करते हैं और वह हवन में जरा सी आग रख कर जप कर रहे हैं जिससे हवन थोड़ी देर में जलने लगता है और लोगों को विश्वास हो जाता है । वह श्री हनुमान जी के उपासक मालूम होते हैं। उनकी बीबी बुखार में बहुत दिनों से बीमार है । मैंने उनसे हवन के लिए कहा था मगर उन्हें विश्वास नहीं है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मुझको अकर्षन और फलौन का तरीका बताइयेगा—ताकि मैं अभ्यास करता रहूँ । मेरे पास अनुभव बहुत है मगर मैं आपको क्या-क्या लिखूँ । खैर चन्द अनुभव मैं आपको लिख रहा हूँ।

(१) एक १६ वर्ष की लड़की कुमारी को रोजाना ६—७ बजे शाम को फिट आ जाते थे, उसका इलाज किया गया मगर कुछ लाभ नजर न आया । उसकी दांती बैठ जाती थी, हाथ पाँव में ऐंठन होती थी । एक सज्जन ने कहा कि इसके ऊपर वदम देव है, नहीं जा सकते हैं । मैं हवन ही करके हटा सकता हूँ और कोई नहीं हटा सकता । मैंने कहा आज फिर नहीं आवेंगे । जाकर उसका हाथ पकड़ कर ७ बार गायत्री मंत्र पढ़कर फूंक दिया और कहा कि आज तुम सपना देखोगी, सुबह बताना फिट नहीं आया और रात में उसने सपने में देखा कि दो बाबा आये और कहा कि मैं नहीं आ सकती हूँ तो फिर उन्होंने लड़की के पीछे साँप छोड़ दिया । लड़की भागी-भागी फिरती रही, फिर नींद खुल गई। उसकी माँ ने देखा कि एक कन्या लाल चुन्दरी पहने ऊपर से आ रही है और लड़की के पास आकर गायब हो गयी । उसी दिन से ठीक है और कोई रोग भी नहीं है।

(२) मेरे बच्चे को कई दिन से तेज बुखार था और खसरा भी निकल आया । मेरी इच्छा किसी दिन भी उससे बोलने को न हुई, दवा दे जाती थी, यकायक एक दिन सुबह को जब मैं जाप करके उठी और पानी बच्चे के ऊपर छोड़ा और प्रेम से एक बार मंत्र से फूँक डाला जिससे फौरन माता ने रक्षा की और बच्चा उसी समय से खेलने लगा।

(३) एक अखबार देने वाले का लड़का जिसकी उम्र ४ साल की थी खसरा में सख्त बीमार हो गया था। यहाँ तक कि बचने की कोई उम्मीद न थी उस बच्चे का पिता उसके जीवन से निराश हो गया था । मुझको इलाज के लिये बुलाने आया और अभी तक वह देवी जी की पूजा ही करता रहा था । मैंने देखा और भगवती से प्रार्थना की बच्चा उसी से ठीक होता गया और आज कल आनन्द से खेल रहा है

(४) एक ४ साल का बच्चा तेज बुखार में पड़ा था, चौंकता था, आँख बन्द किये था, दवा डाक्टर के यहाँ से आई थी और आजकल छोटी माता का प्रयोग भी है। मुझको बुलाया गया कि इसको नजर लगी है। मैने ७ बार गायत्री मन्त्र पढ़कर फूंक दिया और चला आया मगर शाम को उसके पिता भी बच्चे को लाये और बताया कि बच्चा अब बिल्कुल ठीक है । गुरुजी दवा तो बिल्कुल देने की जरुरत भी नहीं पड़ी, भगवती की कृपा से बिलकुल ठीक है।

गायत्री की महिमा

श्री बद्री प्रसाद बहूलाल मालवीय इटारसी से लिखते हैं कि मेरे दो बच्चे थे । एक बच्चा व एक बच्ची । दोनों ३-४ साल के हो गये । नौकरी रेलवे में करता हूँ । समय प्रसन्नता से कट रहा था । परन्तु माताजी की इच्छा बलवान थी । पूर्व जन्म का कोई कारण आने के कारण दोनों बच्चे न रहे । इस कारण मैं बहुत दु:खी रहता था । इसी बीच में मेरे एक काकाजी हैं, उनका उस समय एक मुकदमा चल रहा था । उसका विचार भी मेरे दिमाग में चक्कर लगाता था। इन दोनों कारणों से मैंने सोच लिया था कि एक दिन जीवन का अन्त ही कर दूँ तो ठीक है । इसी विचार के कारण मैं दिनोंदिन दुबला होता जा रहा था। खाना भी नहीं खाया जाता था । सोचता था क्या करूँ । रेल में कट जाऊँ या कहीं जाकर मर जाऊँ ।

इसी बीच में वेदमाता जी की असीम कृपा से मेरा मान्यवर भगवती दीन जी से मुकाबला हो गया । उन्होने मुझसे हाल पूछा कि तुम कमजोर क्यों दीखते हो । मैंने उन्हें अपनी सब रामकहानी सुना दी मुझे पंडित जी पहले से भी पहचानते थे । परन्तु जब प्रभु को कष्ट मिटाना होता है तभी उपाय मिलता है । पंडित जी ने मुझे काफी हिम्मत दी तथा माताजी का पूजन, जाप करने की विधि बतलाई कि यदि तुम माताजी की शरण में पड़ जाओगे तो बहुत जल्दी शान्ति मिलेगी । पंडित जी की बातों पर मुझे पूर्ण विश्वास हो गया तथा उनके कहे अनुसार माताजी का पूजन, जाप व चालीसा का पाठ करने लगा तथा मेरे काकाजी को भी जिन पर मुकदमा चल रहा था माता की सेवा में लगा दिया । इतवार को माताजी का उपवास करना भी शुरू किया ।

जब मैं काकाजी के साथ पेशी पर अदालत में जाता था तब माताजी के मन्त्रों का जाप अदालत के अन्दर किया करता था तथा काकाजी भी माताजी के जाप में अदालत में मग्न रहा करते थे । माता की कृपा से कुछ माह बाद माताजी की सेवा के कारण मेरे काकाजी पर जो मुकदमा चल रहा था उसमें पूर्ण रीति से हमारी जीत हो गई । इस कारण एक चिन्ता मेरे मन की माताजी की कृपा से दूर हुई ।

दूसरी बात—अब मेरे यहाँ जो दूसरी एक कन्या हुई थी वह भी बीमार ही रहा करती थी । बहुत इलाज किया, ठीक नहीं रहती थी । परन्तु जब से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

माताजी की सेवा में लगे हैं लड़की पूर्ण रूप से ठीक रहती है । कोई तरह की बीमारी उसे नहीं है तथा मेरी अन्तरात्मा पूर्ण रूप से शान्त रहती है ।

गायत्री की अलौकिक शक्ति

डॉ. लक्ष्मी नारायण टंडन 'प्रेमी' एम. ए. लखनऊ से लिखते हैं कि मेरे पूज्य पिताजी स्वर्गीय लाला सरजू प्रसाद जी टण्डन अत्यन्त भक्त तथा संयमी प्राणी थे । वह गायत्री तथा हनुमान जी के परम भक्त थे। चौबीस घंटे वह चलते-फिरते बैठते-उठते यहाँ तक कि बात चीत करते और काम करते भी गायत्री तथा सुन्दर काण्ड का मानसिक जप किया ही करते थे । घर की स्त्रियों का कहना था कि उन्हें हनुमान जी सिद्ध थे ।

सन् १९२१ की बात है । उस समय मैं लगभग ११ वर्ष का था तथा पांचवी कक्षा का छात्र था । मुझे टाइफाइड हो गया । एक महीने बाद मियादी बुखार ने छोड़ा तो कोई असावधानी हो गई होगी । मेरी तबियत फिर पलट गई । लगभग तीन महीने ज्वर से पीड़ित रहना पड़ा । एक बार तो खाट से नीचे भी उतार लिया गया था । एक दिन एक विचित्र घटना घटी । वह मेरी आप बीती घटना आज भी मुझे ज्यों की त्यों याद है । दूसरे खण्ड में बैठक में मेरी खाट पड़ी थी । एक बार सम्भवत: पूज्य पिताजी के अभाव से मुझे सामने की दीवार पर, दोपहर के समय कदें आदम हनुमान जी की मूर्ति के साक्षात् दर्शन हुए । पिताजी तथा बहिन पास ही बैठी थी । यकायक मैंने पिताजी से कहा 'चाचा मुझे हनुमान जी के दर्शन हो रहे हैं ।' सब ने पूछा कहाँ ? मैंने उन्हें उसी दिशा में संकेत कर दिया । किन्तु किसी को सिवा दीवार के और कुछ भी दिखाई न दे—वहाँ कुछ हो भी । मैं कहूँ सामने तो हैं बिल्कुल, यह देखो । यह देखो वह हाथ उठाकर आर्शीवाद देते हुए मुझसे कह रहे हैं, अब तुम ठीक हो जाओगे इस दिन से । आश्चर्य है क्या आपको नहीं सुनाई दे रहा है । पिताजी ने मुझसे उनसे कुछ पूछने को कहा । महावीर जी ने उत्तर दिया तुम फलाँ दिन फलाँ चीज खाना आरम्भ करना। ' उसी समय घर की कई अन्य स्त्रियाँ वहाँ आ गईं और मुझसे प्रश्न पुछवाने लगीं । मैंने प्रश्न पूछे और कहा, 'हनुमान जी कोई उत्तर नहीं दे रहे हैं । यह तो अब मूर्ति गायब हो गई । अब दीवार पर वह नहीं हैं। पिताजी ने देवता के कहे मुताबिक ही किया और मैं स्वस्थ हो गया ।

आज का जगत इस घटना को क्या समझेगा और वास्तव में यह घटना कैसे हुई और क्या थी यह अब तक मैं भी नहीं समझ पाया । पर अपने कानों, नेत्रों और चेतना पर तो मैं अविश्वास नहीं कर सकता । हो सकता है पिताजी ने जो आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त कर ली है, उस शक्ति का स्वरूप ही मेरे नेत्रों के सामने खड़ा हो गया हो । हो सकता है यह हैलाकुलेशन हो! यह मैस्मरेजम का खेल नहीं था, एक हनुमान तथा गायत्री भक्त की शक्ति तथा साधना का ज्वलंत जीवित उदाहरण था यह भी हो सकता है ।

मन्त्र की अलौकिक शक्ति का एक और उदाहरण देकर में लेख को समाप्त करता हूँ । सम्भवत् सन् १९२४ की बात है । मैं तब आठवीं कक्षा का छात्र था। एक दिन छुट्टी की घण्टी में मेरे हाथ की उँगली में किसी जहरीले जीव ने काट लिया । किसने काटा यह तो मैंने नहीं देखा । पर मेरी उँगली धीरे-धीरे काली पड़ने लगी । स्कूल से छुट्टी लेकर मैं घर भागा। तब मेरे घर में काशी के एक संस्कृत के परम विद्वान पं. पुरुषोत्तम जी व्यास नागर जो एक प्रसिद्ध कर्म काण्डी ब्राह्मण थे, रहते थे । जब मैं घर पर आया तब वह पैखाने में थे । जिस समय तक वह बाहर नहीं निकले मैं दर्द के मारे तड़पता रहा और मेरा हाथ पंजा काला पड़ गया । हाथ पैर धोकर एक सफेद साफ कपड़ा लेकर सम्भवत: गायत्री मन्त्र पढ़कर उन्होंने कपड़े से हाथ को झाड़ा और एक क्षण में दर्द बिल्कुल गायब हो गया और सफेद कपड़ा काला पड़ गया । यह मेरे ऊपर बीती हुई घटना है जो मंन्त्र की अलौकिक शक्ति को प्रकट करती है ।

● ● ●

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री द्वारा संकट निवारण

गायत्री बड़ी चमत्कारी साधना है । इसके द्वारा मनुष्य को साधारण लौकिक और पारलौकिक लाभ तो प्राप्त होते ही हैं, और अनेक मनोकामनाओं की पूर्ति भी होती है; पर अनेक समय इसके प्रभाव से मनुष्य की इस प्रकार रक्षा हो जाती है कि उसे दैवी चमत्कार के सिवाय और कुछ नहीं कहा जा सकता। कारण यही है कि इस साधना के कारण साधक में कुछ दैवीय तत्वों का भी विकास हो जाता है जो ऐसी आकस्मिक आवश्यकता अथवा सङ्कट के समय अदृश्य रूप से उसके सहायक बनते हैं । प्रायः यह भी देखा गया है कि जो व्यक्ति साधना करके अपने मन और अन्तर को शुद्ध तथा निर्मल बना लेते हैं और इर्ष्या-द्वेष के भावों को त्याग कर दूसरों के प्रति कल्याण की भावना रखते हैं, उनकी रक्षा दैवीय शक्तियाँ स्वयं भी करती हैं । इस पुस्तक में अनेक गायत्री उपासकों के जो अनुभव दिये गये हैं उनसे यह भली प्रकार प्रमाणित होता है कि जिन लोगों ने गायत्री माता के आदेशानुसार आत्मशुद्धि और जगत के मङ्गल की भावना को अपना लिया है, उनकी रक्षा बड़ी-बड़ी आपत्तियों से भी सहज में हो जाती है।

श्री. मदनगणेश रामदेव पूना से लिखते हैं—मेरे गाँव से तीन कोश की दूरी पर सुन्दरा देवी का स्थान है। यह हमारे प्रान्त का सुप्रसिद्ध स्थान है । मैं इसे गायत्री माता का ही रूप मानता हूँ । एक दिन मैंने दर्शन करने का निश्चय किया । वर्षा ऋतु थी । जिस दिन प्रातः जाने का विचार निश्चित था उस रात में ही काफी वर्षा हुई थी, अतः हमारे साथ जाने वालों में से सभी ने, पहाड़ की चढ़ाई और फिसलन के भय से अपना निश्चय बदल लिया । मैंने उस दिन दर्शन करने का अविचल सङ्कल्प कर लिया था अतः मैं प्रातः ही जाने की सारी तैयारी करके माता के चरणों में प्रणाम कर गायत्री जपते हुए चल पड़ा । गाँव के अनेकों व्यक्तियों ने वर्षा के समय जल की धारा में बह जाने तथा पहाड़ से फिसल गिरने का भय, जो कि वास्तविक ही था, मुझे दिखाया पर मैंने अपने मातृ दर्शन का निश्चय बदलना अनुचित समझा और प्रस्थान कर ही दिया । सभी खिसक गये पर मेरे साले (पत्नी के भाई) ने बड़े ही साहस और प्रेम से मेरा साथ दिया। तीन मील चलने के उपरान्त शेष तीन मील पहाड़ की ही चढ़ाई चढ़नी पड़ती है । पहाड़ पर चढ़ने के पूर्व एक सरिता की धारा को पार करना पड़ता है, यह धारा कभी सूखती नहीं । इस नदी में वर्षा के जल से सहसा ही वेग से बाढ़ आती है और पार होने वालों को बहा ले जाती है । हम दोनों ने भोजनादि सामान, वस्त्र एवं पूजा स्वाध्याय की वस्तु सिर पर रखी और नदी में उतर पड़े। नदी का लगभग अधिकांश भाग पार चुके कि सहसा ही भयङ्कर वेग से नदी में बाढ़ आयी । हम दोनों माता का स्मरण करते हुए किसी भाँति किनारे पर आ गये । उलट कर देखा तो चार पुरुष उस भयङ्कर प्रवाह में बहते हुए जा रहे थे, जिन्हें अपना प्राण देकर भी बचाने का उपाय नहीं था ।

माता की कृपा से इस मृत्युधारा से हम दोनों ऊपर निकल आये । अब आगे दो पहाड़ों के मध्य से होकर जाने का पथ था । हम लोगों ने आगे चलने के लिये सोचा और पहाड़ के ऊपर दृष्टि दौड़ाई । देखा तुरन्त ही घनघोर बादलों से घिरकर पहाड़, रात से भी अधिक श्याम बन गया और मूसलाधार वर्षा होकर फिर आकाश स्वच्छ हो गया । कुछ ही देर फिर बादलों के दल, वही घनघोर कालिमा, और पुनः प्रकाश का आगमन । यह क्रम वहाँ निरन्तर चल रहा था । देख कर एक बार चित्त काँप उठा पर माता की सहायता की याद आते ही फिर साहस से भर उठा और आगे की ओर चल दिए । वर्षा के कारण भयङ्कर आवाज के साथ पहाड़ के शिखरों से अनेकों धारा बहती चली जाती हैं । हमने ऐसी भयावह स्थिति देखने की तो कोई बात ही नहीं, कल्पना भी अपने जीवन में नहीं की थी । माता की कृपा की आशा से ही आगे बढ़ते जा रहे थे। कुछ दूर जाने के बाद देखा कि आगे मन्दिर तक जाने के लिये अत्यधिक वर्षा के कारण कोई भी रास्ता नहीं रह गया था। फिर पीछे की ओर देखा तो अब लौटने का भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उपाय नहीं था । तब हम दोनों ने भी निश्चय किया कि यदि हमें मरना ही बदा है तो माता के दर्शनों के लिए चलते हुए ही हम प्रसन्न हृदय से मौत का भी आलिङ्गन कर लेंगे पर दर्शन किये बिना हरगिज नहीं लौटेंगे । गायत्री जप करते हुए हम रास्ते से ५० गज ऊपर चढ़ते हुए ही चलने लगे । कभी-कभी ऊपर का जल सीधे हमारे सिर पर गिरता था, उस समय हृदय में माँ की याद लिये साहसपूर्वक पत्थर पकड़ते हुए हम पार कर जाते थे । माता की कृपा से उस समय हमारे हृदयों में इतना उत्साह उमड़ा पड़ता था कि इससे चौगुने सङ्कट का भी हम लोग सामना करने में जरा भी नहीं घबराते—वरन् और भी हमारा साहस एवं उत्साह बढ़ जाता ।

अब एक मील की दूरी रह गयी थी । बारिश भी क्रमशः हल्की होती जा रही थी । कुछ दूर बढने पर देखा कि एक भयंकर पहाड़ी सर्प दौड़ता हुआ हमारी ओर ही आ रहा था । हम लोग कहाँ भागते, खड़े रहे, वह दौड़ता आया हमें कुछ भी बिना क्षति पहुँचाये नजदीक से ही निकल गया । अब हम मन्दिर में पहुँच चुके थे । मन्दिर के पुजारी जी ने हम लोगों के इस समय पहुँचने की बात असम्भव मान कर अत्यन्त आश्चर्य किया और हम लोगों को तब आश्चर्य हुआ जबकि हमने मन्दिर पहुँच कर देखा कि सिवाय ऊपरी वस्त्र के, उसमें उसमें बँधी पूजा सामग्री, भोजन सामान (आटा आदि) तथा पुस्तकें, सम्पूर्ण सूखी ही थीं । वर्षा बन्द हो जाने पर हम निर्विघ्न रुपेण घर वापस लौटे ।

श्री बैजनाथ प्रसाद सौनकिया, दिगौड़ा से लिखते हैं—पूज्य आचार्य जी ने मुझे चैत्र नवरात्रि में गायत्री तपोभूमि मथुरा आने का अनुग्रह प्रसाद दिया था, पर मैं प्रारब्धवश उत्पन्न परिस्थिति को लांघकर वहाँ नहीं जा सका । फिर भी गायत्री माता की अज्ञात प्रेरणा से हम चौदह उपासकों ने मिलकर दिगौड़ा के जगदम्बा मन्दिर में २४००० (चौबीस हजार) मन्त्र जपने का संकल्प ले लिया और निष्ठा सहित जप करने लगे। प्रतिदिन उस मन्दिर में बैठकर अपना-अपना जप पूरा कर तभी घर जाते ।

३१ मार्च (१९५५) को जप करने के उपरान्त मैं घर आया तो दोपहर हो गया था। धूप तीखी हो रही थी । मैंने शीघ्रता के विचार से उस दिन केवल चावल पका लेने का ही निश्चय किया, रसोईघर में बैठ चूल्हा जलाया और चावल सिद्ध होने के बाद मैंने सोचा कि केवल भात कैसे खाया जायगा, अतः अन्दर से थोड़ा गुड़ ले आना चाहिए । मेरे बगल में ही लालटेन रखा हुआ था । मैंने लैम्प जलाया और उसे लेकर गुड़ लेने चला । उस समय मुझे इसकी जरा भी सुध नहीं थी कि यह दोपहर है और इस समय लैम्प जलाने में आश्चर्य तो यह कि उस घर में जाते और आते समय मैंने अब तक कभी रात में भी प्रकाश का सहारा नहीं लिया और आज दिन को लैम्प जला कर, गुड़ लेने जा रहा था । जब गुड़ वाले घर के देहली पर गया तो देखा कि उसके प्रवेश द्वार पर एक सर्प बैठा है, जैसे किसी की प्रतीक्षा कर रहा हो । मैंने जैसे ही सर्प को घर के दरवाजे पर बैठा हुआ देखा कि मुझे अचानक ही दिन को लैम्प जलाना, और गायत्री माता की कृपा का एक साथ ही ज्ञान हुआ और सर्प को देखकर भागने के स्थान पर मैं वहाँ ठठाकर हँस पड़ा और उल्लास में भर कर ताली पीटने लगा । सर्प महाराज पता नहीं किधर भाग गये।

उस दिन स्थानीय सभी उपासकों ने मिलकर एक सभा का आयोजन किया और उस सभा में गायत्री माता का गुणगान किया गया ।

मैं यह सदैव सोचा करता हूँ कि यदि गायत्री माता की कृपा से मैंने दोपहर में लैम्प जलाने की मूर्खता न की होती, तो आज मैं अकाल मृत्यु ग्रस्त होकर किसी अन्य ही लोक का भोग कर रहा होता ।

श्री शिव शङ्कर शर्मा, कामठी से लिखते हैं—माता की कृपा की अनेक घटनाएँ मेरे जीवन में अवश्य घटीं पर सबसे आश्चर्यकारी चमत्कारी यही घटना है जिसमें मेरे प्राण बचा लिए गए । सर्प दंशन से बच जाना, वृक्ष गिरते समय उससे बच निकलना और इंजन से कटते-कटते बच जाना—ये भी मेरे जीवन में आश्चर्य—घटना ही हैं पर मुझे सब से अधिक आश्चर्य और माता की साक्षात करुणा दीख पड़ती
है ।

उस दिन बंगले से लौटा आ रहा था, सहसा ही पथ में जोरों का तूफान आया । घोर अन्धकार छा गया। मैं साइकिल लेकर आगे बढ़ता ही गया । रास्ते में पल्टनों की छावनी पड़ती थी, मैं सन्तरी की ओर बढ़ता जा रहा था । उसने कई बार आवाजें भी दीं पर मैं सुन न सका । कुछ निकट जाने पर देखा सन्तरी मेरी ओर बन्दूक सीधा किये खड़ा है । मैं देखते ही

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हठात् रुका और कहा मैं तो यहीं का ठेकेदार हूँ। सन्तरी ने कहा कि अब तो हमने भी तुम्हें पहचान लिया है, पर जिस समय उस तूफान में कई बार आवाज देने पर भी तुम नहीं रुके, उस समय मैंने सरकारी अनुशासन के अनुसार दो बार तुम्हारे ऊपर बन्दूक चलाई, आश्चर्य कि दोनों बार घोड़ा दबाने पर भी बन्दूक न छूटी । सौभाग्य ने तुम्हारा प्राण बचा लिया । माता की याद करते ही मेरा हृदय गद्‌गद् हो उठा और वहाँ से अश्रपुष्प मातृ चरणों पर चढ़ाता हुआ घर आया ।

श्री दत्तात्रेय पुरुषोत्तम हरदास ए. एम. आई.टी. इटारसी से लिखते हैं—उपनयन संस्कार के थोड़े ही दिन बाद मैंने उपासना को व्यर्थ की भावुकता तथा अनर्थक पुरुषार्थ समझकर त्याग दिया । कुछ दिन उपरान्त मैंने "प्राचीन भारत में शिक्षा की प्रणाली" एक अँग्रेजी पुस्तक पढ़ी और उसने मुझे गायत्री उपासना में प्रवृत्त कर दिया । फिर पू. आचार्य रामशर्मा लिखित गायत्री विज्ञानादि ग्रन्थ पढ़कर तो मैं इसका अनुरक्त बन गया ।

मैं सरकारी कर्मचारी हूँ । मेरे कुछ ईर्ष्यालु साथियों ने मुझे स्थान च्युत या स्थानान्तरित करने के लिए षड्यन्त्र रचा । हमारे उच्चाधिकारियों के पास मेरी झूठ-मूठ की बनी बनाई अनेकों शिकायतें लिख भेजीं। उसी समय मेरी परिवारिक स्थिति भी सङ्कटपूर्ण हो गई। बारिश के दिन थे । बच्चे सभी मोतीझिरा से आक्रांत थे । मुझे जरा भी चैन नहीं था । चिन्ता से जर्जर हो रहा था । एक दिन अत्यन्त पीड़ित होकर माता से विनय किया—"माँ ! मुझे इन सङ्कटों से उबार ले ।" उसी रात स्वप्न में एक दिव्य स्त्री के रूप में माता का दर्शन हुआ और मुझसे कहा—"तुम्हारा स्थानान्तरण रुक जाएगा, चिंता छोड़ दो ।"

आश्विन नवरात्रि का अवसर आया । मैं अनुष्ठान में संलग्न हो गया । उसी बीच सहसा उच्च अधिकारी का आदेश पत्र मिला जिसमें मेरा स्थानान्तरण लिखा था, मैं हतप्रभ हो गया । सोचने लगा—क्या वह स्वप्न मेरी कल्पना था ?

पुनः उसी रात में दिव्य तेजोमयी माता ने स्वप्न में आश्वासन दिया "घबराओ नहीं, बदली तुम्हारी नहीं, तेरे विद्वेषियों की ही होगी ।"

एक सप्ताह के बाद ही मेरे सारे ईर्ष्यालु मित्र, वहाँ से स्थानान्तरित कर दिये गये और मैं आज भी उसी स्थान पर काम करता हुआ दिनानुदिन प्रकाश और आनन्द का बढ़ता हुआ स्वरूप अपने में पा रहा हूँ ।

श्री गोमतीबाई दुबे, दमोह से लिखती हैं—एक बार मैं रसोई बना रही थी । मेरे अनजाने में साड़ी में आग लग गई । आधी साड़ी जलने के बाद मुझे पता लगा पर मेरे अङ्ग के किसी भाग में जरा भी आँच न आई ।

दूसरी बार मैं बाहर गृहकार्य में संलग्न थी । खाट पर छोटी बच्ची सो रही थी । रजाई का एक कोना नीचे लटक रहा था । सहसा घर की बड़ी बच्ची ने एक धधकते हुए अङ्गारे से भरे तसले को ले जाकर खाट के नीचे रख दिया और चली आई । रजाई का वह भाग तसले से सटा हुआ था, पर अग्नि के स्पर्श से जरा सा ही अलग था । यह गायत्री माता की ही कृपा थी जो वह अबोध शिशु जलने से बच सकी ।

हमारे पड़ोस के एक दम्पति निःसन्तान थे । अनेक उपाय किये जा चुके थे, पर कोई परिणाम नहीं हुआ । एक दिन वह नारी मर्माहत-हृदय लिये मेरे पास आई और अपनी सारी व्यथा कह सुनाई । मैंने माता का स्मरण कर गायत्री से अभिमन्त्रित कर उसे जल पिला दिया और उसे भी जप करने के लिए निवेदन किया । आज वह सन्तानवती बन गई है । इस घटना से मैं स्वयं ही आनंदविभोर हूँ । अन्तर देश में जो कुछ देख और पा रही हूँ—वह लिख नहीं सकती केवल भाव दृष्टि देख-देख मुग्ध हो रही हूँ ।

श्री मदनलाल जोशी, गंगधार से लिखते हैं—अखण्ड ज्योति ने मुझे, बिना किसी आवश्यकता के—खींचकर गायत्री उपासना में प्रवृत्त कर दिया और शायद यह अकारण ही दया करने वाली माता की अपार करुणा थी, जिसके कारण मैं भविष्य में आने वाले अटल संकट से निस्तार पा सका ।

दुर्भाग्यपूर्ण प्रारब्ध के कारण मेरे दुश्मनों ने पुलिस को पक्ष में कर लिया और मेरे ऊपर ऐसे अभियोग लगाये, कि जिसकी सफलता होने में मेरा सर्वनाश उपस्थित था । एक सप्ताह के अन्दर मुकदमों की जटिलता इतनी बढ़ गई कि मैं दुश्चिन्ता के कारण सो नहीं सकता था । रुपयों तथा उच्च पद स्थित साथियों की सहायता लेने का विचार मन में उत्पन्न हुआ, पर उसी समय अन्तर में एक आवाज आई—"अपना हित चाहते हो तो सारे भरोसों को छोड़कर गायत्री उपासना करो ।" उसी दिन मैंने विधिपूर्वक उपासना प्रारम्भ कर दी । इस सप्ताह में मुझे चिंता से नींद नहीं आती थी, पर उपासना करने की रात्रि में इतनी निश्चिन्तता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का बोध हुआ कि मैं सूर्योदय तक बेखबर पड़ा रहा । कलक्टर साहब से मिलने की प्रेरणा हुई । जाकर मिला ।

माता के अनुग्रह से, उन विद्वेषियों को पाँच-पाँच सौ रुपये का मुचलका देना पड़ा । हथकड़ियाँ पहननी पड़ी । इतने पर भी उन लोगों के अन्तर की द्वेषाग्नि शान्त नहीं हुई थी, उन लोगों ने पाँच-सात गुण्डों को रुपये का प्रलोभन देकर अप्रकट रूप में मुझे सताने की योजना बनाई । मेरा अनुष्ठान चल ही रहा था कुछ दिन बाद मुकदमे में मेरी शानदार विजय हुई, उसी समय मुझे बदल कर गंगधार आ जाना पड़ा । मन में आया, इस परदेस में शायद गुण्डों को मेरे ऊपर आघात करने का अनुकूल अवसर न मिल जाय ? पर माता की कृपा ! एक गुण्डे की माताजी बीमार पड़ गईं, उसके रुपये उसी में खर्च होने लगे । दो गुण्डों को मारपीट केस में सजा हो गई और शेष यों ही ठण्डे हो गये ।

आप सोच सकते हैं कि यदि मैंने गायत्री उपासना का आश्रय न लिया होता तो आज में जेल में पड़ कर सड़ता रहता और जीविका के भी लाले पड़ जाते । माता की असीम कृपा से सारी उलझनों से बाहर निकल कर आज हम निर्द्वन्द भाव से अपना काम करते हुए जीवन यापन कर रहे हैं ।

श्री ए. पी. श्रीवास्तव, गार्ड, सी. रेलवे, दमोह स्टेशन से लिखते हैं—मैं एक मालगाड़ी का गार्ड था। दमोह जंक्शन से कटनी जंक्शन तक मेरे ऊपर संरक्षण का उत्तरदायित्व था । एक बार लगभग साढ़े सात बजे रात में सलैया स्टेशन पर एक डिब्बे से चोरों ने चोरी कर ली । मैंने उसी समय, ये बातें सभी को जता दीं, तार भी कर दिया । फिर भी छः महीने के उपरान्त हमारे विभाग वालों ने मुझे 'गार्ड' पद से च्युत कर 'नम्बर टेकर' बनाने का प्रयत्न किया । पुलिस विभाग वालों ने झूठा लांछन लगाने का षडयन्त्र किया, पर उन सभी की सारी चेष्टायें व्यर्थ हो गयीं । मैंने अपने भाई शारदा कान्त के कहने तथा वीना ड्राइवर भगवती दीन जी जो एक अनुभवी गायत्री उपासक हैं, के निर्देशानुसार, स्वयं गायत्री उपासना प्रारम्भ कर दी । थोड़े दिनों के उपरान्त मैंने अपील की और माता की कृपा से ये सङ्कट विनष्ट हो गये और जिन लोगों ने द्वेषवश, बिना अपराध के मुझे गड्ढे में धकेलने का प्रयत्न किया था, वे स्वयं ही दण्डित होकर अपना फल भुगत रहे हैं । अब तो माता की कृपा से मेरे ऊपर आये सङ्कट अनायास ही टल जाया करते हैं ।

श्री श्रीराम, कोलसा, आजमगढ़ से लिखते हैं—यद्यपि हमने बहुतों से सुना था कि गायत्री बड़ा शक्तिशाली मन्त्र है, पर उसे जीवन में प्रत्यक्ष देखने का अवसर नहीं आया था । पर आगामी वर्षों से एक गायत्री उपासक श्री मन्नूलाल जी के साथ रहकर जो कुछ देखा और अनुभव कर सका, वह इसलिए छापने की इच्छा हुई कि यह पढ़कर यदि एक भी व्यक्ति गायत्री माता का आश्रय ग्रहण कर अपना कल्याण कर ले तो मैं अपने को कृतार्थ समझूँगा ।

दानापुर के श्री रामदास धोबी की पत्नी को प्रेत लगता था। एक बार मेरे सामने एक व्याकुल आदमी मन्नूलाल जी को बुलाने आया । मैंने उस बुलाने वाले से उसकी छटपटी का कारण पूछा—उसने बताया कि वर्षों से रामदास की पत्नी को प्रेत लग रहा है । जब वह आता है तो इसके हाथ पैर ऐंठ से जाते हैं, आँखें उलट जाती हैं तथा शरीर मुर्दे समान स्थिर और ठण्डा हो जाता है । उत्सुकता वश मैं भी मन्नूलाल जी के साथ गया । इन्होंने जाकर गायत्री माता का ध्यान किया और उपरान्त प्रार्थना की कि हे माता ! इस गरीब दुखियारी के कष्ट हर ले । मैं पन्द्रह दिन तक इसके लिए १० माला गायत्री महामन्त्र का जप और अन्त में उसका हवन करूँगा । उनकी प्रार्थना मात्र से वह औरत तुरन्त ही अपनी स्वाभाविक दशा को प्राप्त हो गई और फिर उसे प्रेतावेश नहीं आया ।

श्री शिव प्रसाद शुक्ल समदा, घुमनी से लिखते हैं—मैं प्रथम साधारण रूप से गायत्री उपासना कर लिया करता था । मैं प्रतिष्ठापूर्ण स्थिति प्राप्त कर अपना सुखद जीवन व्यतीत कर रहा था । सहसा ही एक व्यक्ति ने वह स्थान अधिकृत करने के लिये, मुझे उस स्थान से च्युत करने के लिये भयंकर षडयंत्र किया। मैंने विचार किया-देखा, उसका षडयंत्र सफल होकर मुझे प्रतिष्ठा और जीविका दोनों से वञ्चित कर देगा । ऐसा अनुभव करते ही मैं व्याकुल हो उठा पर अपनी यह अन्तः व्यथा किससे कहता ? चिन्ता से प्राण-मन आछन्न हो रहे थे । नींद का कहीं पता नहीं था । ठीक मध्य निशा थी । सभी सो चुके थे । सोचा, इस महान् संकट का निवारण, सिवाय गायत्री माता को छोड़कर और कौन करने वाला है ? इतना सोचते ही मेरी आँखों से धारा बह निकली । घण्टों तक उस निस्तब्ध निशा में माँ के आगे रोता रहा । हिचकियाँ बँध गयीं । रोते हुए कब नींद आ गयी—कुछ याद न रहा । तुरन्त देखता हूँ, मेरी माता जो स्वर्गीया हो चुकी हैं, मेरे सामने खड़ी होकर कह रही हैं—'बेटा!

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चिन्ता क्यों कर रहे हो ? दु:ख छोड़ो और यह माला लो । सवालक्ष गायत्री जपने से तेरे संकट स्वत: ही निवृत्त हो जायेंगे ।'

तुरन्त ही आँखें खुलीं । देखा—कहीं कोई नहीं था। ब्रह्म मुहूर्त्त उपस्थित था । मैंने समझ लिया कि माता के रूप में स्वयं गायत्री माता ही थीं । और मैं उठकर आदेश पालन की तैयारी में लग गया ।

सवालक्ष का दो अनुष्ठान किया । एक बार पुनीति सरयू नदी के तट पर बैठकर भगवान राम की जन्म भूमि अयोध्या में और दूसरी बार ऋषि-मुनि सेवित, पुण्य सलिला भागीरथी के पावन पुलिन पर स्थिर होकर ऋषिकेश में और मेरी प्रतिष्ठा एवं अन्य स्थितियाँ पूर्व के रूप में रहते हुए ही उज्ज्वल और गहरी हो गयी हैं। षडयन्त्रकारी महोदय अपना दिवस—''नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं ।'' का अनुभव लेते हुए काट रहे हैं ।

श्री अम्बाराम पन्ढरीसा, भावसार से लिखते हैं—शुक्रवार ता. ८-४-५५ के दोपहर की घटना है । ''श्री गायत्री आश्रम खण्डवा'' का साइनबोर्ड फ्रेम निर्माण कर्त्ता की दुकान से लाने जा रहा था । दुकान समीप थी । मैं गायत्री स्मरण में आनन्द मग्न होता जा रहा था । वहाँ एक मदोन्मत्त साँड़ जो बिना अपराध के ही सामने वालों को अपनी झोंक में, सींग से उठा कर फेंक देने का अभ्यासी था, मेरे पीछे जोरों से दौड़ता हुआ आया और मेरी पीठ में सींग लगाया । किन्तु न जाने माँ गायत्री ने उसके अन्तर में कौनसी प्रेरणा दी कि मेरे शरीर का स्पर्श करते ही वह पीछे हट गया और मुझे छोड़, मेरी बगल से आगे आकर एक साइकिल वाले को जोरों से ठोकर दे दी । उस बेचारे को चोट तो लगी किन्तु कोई विशेष खतरा नहीं हुआ ।

यह घटना क्षण मात्र में ही हो गई । मैं सोचता हूँ, यदि उस समय मैं गायत्री का स्मरण नहीं कर रहा होता, तो वह उन्मत्त साँड़, मेरा कचूमर निकाल देता और मैं किसी अन्य ही लोक का वासी हो गया होता।

आज माता के प्रति मेरा हृदय कृतज्ञता से भरा हुआ है । सोचता हूँ मैं अब इस जीवन को गायत्री माता की सेवा में समर्पित कर सकूँ तो मेरे और शायद सभी के लिये बड़ा ही कल्याणकारी सिद्ध हो ।

श्री शिवशंकर शर्मा, शिवपुरी से लिखते हैं—लगभग दो वर्ष हुये, मुझे अखण्ड ज्योति पढ़ने को मिली । उससे प्रभावित होकर मैं अखण्ड ज्योति का ग्राहक बना । आचार्य जी से अपने जीवन को सफल बनाने का मार्ग पूछा । उन्होंने श्रद्धापूर्वक गायत्री उपासना करने का आदेश दिया । मैंने तदनुसार माता की उपासना आरम्भ कर दी । माता की कृपा से मेरे स्वभाव एवं विचारों में सात्त्विकता का संचार हुआ और मन में अत्यधिक शान्ति उत्पन्न हुई । छबड़ा निवासी श्री मेरुलाल जी की पत्नी गंगाबाई को भूत बाधा सताया करती थी। उसने मुझसे कहा । मैंने आचार्य जी का नाम ले गायत्री से उसे झाड़ा लगाया और मन्त्र से अभिमन्त्रित जल पिलाया । इस प्रकार गायत्री माता की महान अनुकम्पा से उसको भूत बाधा से छुटकारा मिल गया । एक दिन अचानक श्री कल्याण प्रसाद की धर्मपत्नी फूल कुंवारी को भूत का सामाना करना पड़ा जिससे वह बेहोश हो गई । मैं पहुँचा और उसको गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित जल पिलाया एवं उसी से झाड़ा लगाया । कुछ मिनटों के बाद पूर्ण स्वस्थ हो गई । माता की उपासना का ऐसा फल होता है ।

श्री जगदीश स्वामी कटनी से लिखते हैं—लगभग दो वर्ष हुए मुझे ''अखण्ड ज्योति'' पत्रिका पढ़ने को मिली । मैं इस पत्रिका से ऐसा प्रभावित हुआ कि इसका ग्राहक बन गया । मैंने परम पूज्य आचार्य जी द्वारा बताए हुये नियमानुसार गायत्री उपासना प्रारम्भ कर दी । प्रारम्भ में मन नहीं लगता था, अब उन्हीं की कृपा से स्थिरता बढ़ रही है । दैवयोग से आपस में कुछ कलह हो जाने से मुझे दो मुकदमों में फँसना पड़ा । कुछ महीनों के बाद मुकदमा समाप्त हुये और फैसले में असफलता मेरे भाग में आई । मैं दु:खी रहने लगा । मैंने गुरुदेव को पत्र लिखा और संकट निवृत्ति के लिये प्रार्थना की । उन्होंने अधिक श्रद्धा एवं विश्वास के साथ गायत्री साधना में लग जाने को कहा। मैंने तदनुसार संकल्प सहित उपासना बढ़ा दी । माता की कृपा से मुझे साहस बढ़ा । प्रेरणावश मुकदमों की अपील कर दी । कुछ माह बाद तारीख पड़ी । मुकदमा नये सिरे से चलाये गये । सच्चाई प्रगट हो गई और अन्त में मुझे सफलता प्राप्त हुई ।

श्री नन्द किशोर तिवारी, धवोली (सागर) से लिखते हैं—तपोभूमि के महायज्ञ की पूर्णाहुति करके घर लौटा जा रहा था। मेरे गुरुवर गायत्री के परम उपासक श्री परमानन्द मिश्र जो साथ ही थे बीना स्टेशन पर उतरकर प्लेटफार्म पर बैठकर सन्ध्या करने लगे, मैं उसी जगह खड़ा रहा । उसी समय एक ठेला पर चार बारूद की पेटी ट्रेन से उतार कर कुली लिये आ रहा था । सहसा एक पेटी फूट गई और स्टेशन में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

७.६ गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार

आग लग गई । गुरुदेव के निकट ही छः व्यक्ति अत्यधिक जल गये जिनमें तीन अस्पताल में जाकर मर गये । मेरा सारा वस्त्र और शिखा तक जल गये—शरीर में दो जगह थोड़े-थोड़े जलने के निशान बन गये, पर मेरे गुरुदेव को जरा सी आँच भी न आयी जबकि उनके निकट के अन्य लोग काफी जल गये । मैं खड़ा होकर माता की संरक्षण लीला आँखें फाड़कर देख रहा था ।

श्री भगवान सिंह (एक्कलवारा) मनावर, (धार), अपना अनुभव लिखते हैं—मैंने अब तक करीब साढ़े पन्द्रह लाख गायत्री मन्त्र जप किया है । इससे मैं दानव से मानव, दरिद्रता तथा डाइजेक्शन की बीमारी मुक्त हुआ हूँ । ३० अक्टूबर, १९५६ को मैं अपने मकान की ऊपरी छत पर बैठकर भोजन कर रहा था, अचानक मकान के नीचे का खम्भ टूट जाने से सारा मकान गिर गया । मैं भी उसके साथ ही ऊपर से नीचे गिरा । दीवारें गिरीं, चाँदनी के पतरे गिरे, पाट-खपड़े आदि सब ही मेरे ऊपर गिरे, पर न तो मुझे कुछ चोट आई और न कुछ लगा ही । गाँव के लोग दौड़े आये और मुझे सुरक्षित देखकर सभी गायत्री माता का जय-जयकार करने लगे ।

श्री शिव शंकर मिश्रा, कामठी, नागपुर से लिखते हैं-कुछ समय पहले की बात है कि मेरे मामा सख्त बीमार हो गये और कई महीने रुग्णावस्था में रहकर स्वर्गवासी हुए । मृत्यु होने के करीब २० दिन पहले डाक्टर ने उनको नागपुर ले जाकर परीक्षा कराने की राय दी । इसके लिए अस्पताल की बीमार ले जाने वाली मोटर का प्रबन्ध एक दिन पहले ही कर लिया गया। मामा ने मुझे बुलाकर कहा कि तुम्हें मेरे साथ चलना है सो देर न लगाना, मोटर सुबह ठीक सात बजे आ जायगी । मैं चलने को कहकर घर आकर सो गया । मुझे स्वप्न में यह मालूम हुआ कि कल मोटर दुर्घटना होगी । परन्तु उस पर ज्यादा ध्यान न देकर मैंने यह समझा कि कहीं से दुर्घटना का समाचार सुनने में आयेगा । मैं सुबह यथासंभव जल्दी उठा और नियम के अनुसार गायत्री जप का हवन करने लगा । इतने में मोटर नागपुर से आ गई । दो बार मामा का लड़का बुलाने आया कि मामा और ड्राइवर जल्दी कर रहे हैं। घर के लोग भी नाराज हो रहे थे कि इस समय पूजा लेकर बैठ गये, जाते नहीं । पर मैंने निश्चय किया कि नित्य नियम पूरा करके जाऊँगा । इस कारण मैं कुछ देर में पहुँचा और मामा को लिटाकर नागपुर आया और वहाँ उनकी जाँच कराई। लौटते समय अस्पताल से कुछ दूरी पर फल लेने को उतरा । फिर जब मैं बैठने लगा कि मोटर चल दी और मैं धड़ाम से जमीन पर गिरा । वह ऐसी जगह थी कि जहाँ बड़ी तेज चढ़ाई थी । अगर मोटर जरा भी पीछे को सरकती तो मेरी हड्डियाँ चूर-चूर कर देती और अगर आगे निकल जाती तो ऊपर से आते हुए सैकड़ों रिक्शों और ताँगों, मोटर आदि से दबकर मैं चटनी बन जाता । गिरने से मुझे चोट तो काफी लगी, पर लोगों ने उठाकर मोटर में लिटा दिया, घर पहुँच कर भी मुझसे स्वयं नहीं चला गया और लोगों ने ही घर में भीतर पहुँचाया । पन्द्रह बीस दिन बाद मैं कुछ चलने फिरने लायक हुआ । गायत्री माता ने मुझसे पहले ही दुर्घटना की सूचना देकर सावधान किया और मेरे असावधानी करने पर भी मेरी प्राण-रक्षा की । यह उनकी अपार कृपा का प्रमाण है।

श्री भागीरथ जी हरदिया, कसरावद अपने अनुभव की घटना लिखते हैं—मेरे यहाँ भाई एवं बहन की शादी थी । मैं अपने दो साथियों के संग पानी की कोठी भरने के लिए कुएँ पर जा रहा था । साथ में मेरी बुआ का आठ वर्ष का लड़का भी था । एक पत्थर पर गाड़ी के चढ़ जाने के कारण वह आठ सात मन भारी कोठी उस बालक पर गिर पड़ी और बालक गिरकर चक्के के नीचे आ गया । उसके पेट पर से चक्का निकल गया। लड़के को वमन होने लगा और छटपटा कर कराहने लगा । मैं व्याकुल होकर माता की प्रार्थना कर रहा था । तुरंत बालक को डाक्टर के यहाँ लेकर गया। डाक्टर ने भली-भाँति जाँचकर कहा—लड़का अब पूरा स्वस्थ है । कैसे पूरा स्वस्थ रह सका ! मैं विवाह अवसर पर इस महाविघ्न से बचा लेने के लिये माता को धन्यवाद दे रहा था ।

अतर्रा (बाँदा) से श्री रामसिंह जी लिखते हैं—मैं मोटर ठेला से इलाहाबाद होता हुआ कानपुर से अतर्रा आ रहा था । दुर्भाग्य से अतर्रा से २८ मील पर हमारा मोटर ठेला उलट गया। ठेले में १७० मन वजन भरा था । मोटर उलटने से ड्राइवर तो ५ मिनट के अन्दर मर गया । दूसरे आदमी का पैर टूट गया। मुझे गायत्री माता ने बचाया । सिर में मामूली चोट आई । एक ही जगह बैठे हुये लोगों में से मेरा इस प्रकार बच जाना माता का अनुग्रह ही है ।

श्री गंगाप्रसाद सिंह जी बरिया घाट (मिर्जापुर) से लिखते हैं—ता. ९ सितम्बर ५४ को दिन के साढ़े तीन बजे वर्षा हो रही थी, घर में सब भाई-भतीजे चारपाई पर बैठे थे । अचानक घर पर आकाश से भयंकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गड़गड़ाहट के साथ बिजली गिरी । औरतें जोर-जोर से रोने लगीं । मेरे मुँह से गायत्री माता की पुकार निकली। बिजली गिरने से छप्पर की खपरैल टूट गई घर में धुआँ भर गया, बारूद की सी तेज गंध आ रही थी, दीवार व नीचे की जमीन जहाँ लड़के बैठे थे बुरी तरह फट गई, मकान से सटा हुआ नीम का पेड़ जल गया । इतना सब होते हुए भी घर के किसी व्यक्ति को कोई क्षति न पहुँची । जहाँ सब लोग बैठे थे, ठीक उनके नीचे की जमीन का बिजली के भयंकर प्रहार से फटना और किसी का बाल भी बांका न होना, सभी दर्शकों के लिए एक आश्चर्य की बात थी । तब से हम लोगों को गायत्री माता पर अनेक गुनी श्रद्धा बढ़ गई है ।

श्री देवीशंकर शुक्ल, श्यौपुर कलाँ लिखते हैं—अखण्ड ज्योति से सम्पर्क जोड़ने के बाद मैं गायत्री उपासना करने लगा था । मैं प्रतिदिन साइकिल पर एक पुल पार करते हुए पढ़ाने जाया करता था । वर्षा का मौसम था । पुल के बगल में जो मुड्डियाँ लगी हुई थीं, वह बरसात में टूट-फूट गयी थीं । पुल के नीचे पत्थरों के ढेर थे । एक दिन वेतन लेकर वापस आ रहा था। अचानक पुल पर से साइकिल फिसली और अगला चक्का किनारे पर जाकर नीचे लटक गया । प्राण संकट के अवसर पर मैंने गायत्री माता का स्मरण किया और स्मरण करते ही मेरा एक पैर एक मुड्डी पर स्थिर हो गया और इसी क्षण एक हाथ से मैंने साइकिल का पिछला चक्का पकड़ लिया । इस भाँति साइकिल सहित मेरी रक्षा माता की कृपा से हो गयी, नहीं तो दोनों के चकनाचूर होने में पल मात्र की देरी थी ।

श्री पूरनमल जी गौतम, कोटा से लिखते हैं—मैं मोटर ड्राइवर हूँ । गत मास सांगोद जाते समय धानाहोड़ा गाँव के पास एक दुर्घटना हुई । तीन औरतें आपस में ठठोली करती हुई सड़क पर चली जा रही थीं । जैसे ही मोटर बराबर आई कि एक औरत ने दूसरी को धक्का मारा जो मोटर के पहिये के बिल्कुल आगे आ गई । मैंने बहुत बचाया मगर उस के मडगार्ड की ठोकर लग गई और वह पहिये के नीचे आ गई । मैंने सोचा एक पहिये के नीचे कुचली तो भी यदि पीछे के पहिये से बच जावे तो शायद इसकी जान बच जाय। माता का नाम लेकर गाड़ी तेजी से घुमाई । लारी बबूल के पेड़ से टकराई । मैं बुरी तरह घबरा रहा था कि औरत भी मरी और गाड़ी भी टूटी । जब नीचे उतरा तो देखा कि वह औरत मोटर के नीचे से खुद ही निकल कर बाहर आ रही है । औरत के हाथ-पैरों के जिन जेवरों पर होकर पहिया गुजरा था वे तो टूट गये पर उसको जरा भी चोट न आई । लारी में ठसाठस भरी हुई सवारियों में से भी किसी का बाल बाँका न हुआ । माता की कृपा को जितना धन्यवाद किया जाय कम है ।

दिगौड़ा (टीकमगढ़) से श्री गोविन्द दास भार्गव सूचित करते हैं—श्री ब्रह्मचारी जी की प्रेरणा से ललितपुर जिला झांसी में एक विशाल यज्ञ का अयोजन किया गया । यज्ञ की पूर्णाहुति बड़े उत्साहपूर्वक हुई । पूर्णाहुति के उपरान्त सभी नर-नारी अपने-अपने घर वापस जाने लगे । इसी बीच में अचानक एक कुत्ता हवन कुण्ड में आ गिरा । यह दुर्घटना देखकर सभी लोग परेशान थे । परन्तु एक पंडित जी साहसपूर्वक हवन कुण्ड में सीढ़ी लगाकर घुस गए, तत्काल उन्होंने उस कुत्ते को बाहर निकाला। कुत्ता एवं पंडित जी पूर्ण सुरक्षित थे, यह दृश्य देखकर सभी लोग वेदमाता की दया का अनुभव करके प्रसन्नचित्त थे । वह कुत्ता आज कल ब्रह्मचारी जी के साथ ही रहता है । माता का ऐसा प्रत्यक्ष अनुभव देखकर सारा जन-समूह प्रभावित हुआ ।

सुश्री प्रेमलता गुप्ता, मसूरी से माता के वात्सल्य का वर्णन करती हुई लिखती हैं—गायत्री उपासक श्री वानप्रस्थी जी मेरे सम्बन्धी हैं । एक बार उनके यहाँ आने पर उनके पास का गायत्री साहित्य मैंने खूब अध्ययन किया । गायत्री के प्रत्यक्ष चमत्कार पढ़कर गायत्री उपासना की इच्छा प्रबल हो उठी । तभी से उपासना करने लग गयी ।

हमारे निवास-स्थान से जङ्गल लगा हुआ ही है । मैं जब जप करने बैठती तो एक पड़ोसी का कुत्ता भी आकर बैठ जाता और जप समाप्त होने पर चला जाता । एक दिन छत पर बैठ ब्रह्म मुहूर्त्त में मैं जप कर रही थी । वह कुत्ता भी आकर बैठ गया । जंगल होने से जंगली जानवरों का भय सदा हमें लगा ही रहता है । उस दिन सहसा एक बघेरा आया और कुत्ते पर ताक लगा ही रहा था कि उसके मालिक ने उसे पुकारा और वह तुरन्त भागा चला गया । उस बघेरे की दृष्टि बच्चे और मेरे ऊपर थी । मेरे तो प्राण सूख गये । मैंने माँ से प्रार्थना की—माँ तेरे सिवाय अब इस क्षण में रक्षा का कोई उपाय नहीं । ठीक दूसरे ही क्षण बघेरे ने हम लोगों पर एक बार दृष्टि डाली-कूद कर झाड़ी में छिप गया । माता के चरणों में मैं न्यौछावर हूँ ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

७.८ गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार

श्री सुधाराम महाजन बिलासपुर से लिखते हैं— गत मास कार्यवश रायपुर से कबर्धा जाने को 'बस' में सवार हुआ । शायद भावी दुर्घटना की पूर्व सूचना मुझे अव्यक्त रूप से हो रही थी, इससे रायपुर के "वेटिंग रूम" में ही मैंने चालीसा के पाँच पाठ कर डाले । मोटर में भी मानसिक जप चल रहा था । लगभग १४ मील निकल जाने पर अचानक मोटर का अगला चक्का टूटकर अलग जा गिरा । हमारी गाड़ी बगल के खड्डे की ओर बढ़ चली और सभी यात्रियों की आँखों के आगे अँधेरा छा गया । ड्राइवर ने कुशलता से ब्रेक लगाये और किसी भी यात्री को तनिक भी धक्का न लगते हुए गाड़ी सड़क के किनारे ऐसे रुक गई मानों किसी ने टेक लगाकर खड़ी कर दी हो । ईश्वर का नाम लेते हुए सभी यात्री उतर पड़े । लोग कह रहे थे कि गाड़ी में कोई नेक आदमी जरूर है, जिसके कारण सब बाल-बाल बच गये ।

श्री ज. मा. गवली, थाना (बम्बई) माता की कृपा का वर्णन करते हैं—नौकरी से घर वापस आ रहा था। स्टेशन पहुँचकर चलती ट्रेन पकड़ने की कोशिश की । हैण्डल पकड़कर पांवदान पर खड़ा ही हुआ था कि मेरे हाथ से हैण्डल छूट गया और मैं गाड़ी के नीचे लुढ़क गया । पर पता नहीं कैसे मेरे गिरते ही गाड़ी सहसा रुक गई और मैं थोड़ी सी चोट मात्र खाकर बाल-बाल बच गया । लोग मेरे भाग्य की सराहना कर रहे थे और मैं प्राण रक्षिका अपनी इष्ट देवी गायत्री माता की याद में आँसू बहा रहा था ।

श्री रामकिसन वडाले, मालेगाँव (नासिक) लिखते हैं—गणेश उत्सव की तैयारी में मैं सीन बनाने में लगा हुआ था । एक बिजली का तार वहाँ नीचे लगा हुआ था । अचानक मेरे हाथ का पंजा उस तार पर जा पड़ा और चिपक गया । बिजली का करेंट मेरे सारे शरीर में फैल गया और मेरे प्राणों को खींचने लगा । मेरे बड़े भाई और मित्र गण भी वहीं थे, पर कुछ नहीं कर सके । मेरा प्राण जाने ही वाला था— मैंने माता को व्याकुलता से याद किया । बोलने की सामर्थ्य थी ही नहीं । याद करते ही जिस होल्डर में से यह वायर आया हुआ था, वह होल्डर टूट कर नीचे गिर पड़ा और मेरे प्राण बच गये । ठीक उसी क्षण में होल्डर का गिर पड़ना माता की साक्षात् कृपा नहीं तो और क्या है ?

डेरापुर (कानपुर) से श्री सतीशचन्द्र लिखते हैं— इसी नवरात्रि में जबकि मेरा २४००० का अनुष्ठान चल रहा था, एक दिन मैं खेत में ट्रेक्टर चलाने गया और भूल से नेकर आदि न पहन कर धोती ही पहने रहा । न मालूम कैसे धोती का एक अंश साइलैंसर पर पहुँच गया और उसमें भयंकर आग लग गई । मुझे गर्मी जान पड़ी पर मैं उस तरफ ध्यान न देकर खेत जोतता रहा । पर जब एक दम लौ उठी तो मैं घबराकर चलते हुए ट्रैक्टर से कूदकर अलग खड़ा हो गया । उसी समय आग अपने आप बुझ गई । पर ट्रैक्टर चलता जा रहा था । मैं दौड़ा पर एक झाँखर से टकराकर गिर पड़ा, जिससे बहुत से काँटे मेरे बदन में लग गये । पर इस ओर ध्यान न देकर मैं उठा और दौड़ कर उसका स्विच बन्द किया । कितनी भीषण दुर्घटना हो जाती यदि मैं ट्रैक्टर को रोक न पाता । दस हजार रुपये का ट्रैक्टर और मैं वहीं पर समाप्त हो जाते । माता ने हमें सब तरह से बचा लिया । मेरे शरीर पर पाँच-सात छालों के अतिरिक्त कोई हानि नहीं हुई ।

श्री फूलवती शर्मा देहरादून से लिखती हैं—मेरे मन में अनायास ही गायत्री उपासना के प्रति प्रेम उत्पन्न हुआ था और नित्य प्रेम से माता की आराधना किया करती थी । एक बार मेरे पतिदेव एक ऊँचे पहाड़ पर गये थे, चढ़ने का रास्ता संकीर्ण और खतरों से भरा था। सँभल-सँभल कर पग रखना पड़ता था, पर पता नहीं क्या होनहार था । सारी सावधीनता के बरतते हुये भी आखिर इनके पैर फिसल ही गए । मीलों की ऊँचाई थी । शरीर के चकनाचूर हो जाने के सिवाय और कोई बात नहीं हो सकती थी, पर माता को अपनी बेटी का सौभाग्य सिन्दूर जो बचाना था । थोड़ी दूर तक गिरने पर वे बीच में ही अटक गए, जैसे किसी ने उन्हें अपनी गोद में ले लिया हो । केवल हाथ में थोड़ी चोट आयी, सुरक्षित होकर आकर मुझ से मिले । उस माता के चरणों में हजार-हजार न्यौछावर हूँ ।

श्री बसन्ती लाल श्रीवास्तव, भितरवा (म. प्र.) से लिखते हैं— एक बार में अपने गाँव की एक पहाड़ी नदी मैं तैर रहा था । अकस्मात् गहरे पानी में चला गया और पानी के तेज बहाव में बहने लगा । यह देखकर मेरे साथ के अन्य युवक डरकर गाँव को भाग गये । इतने में ऊपर से पानी भी बरसने लगा । मैं १५ मिनट तक बहते-बहते एक ऐसे स्थान पर पहुँचा जहाँ नदी का पानी १७५ फीट ऊपर से नीचे की तरफ बड़े वेग से गिरता था । यह देखकर मेरे भीतर शून्यता छा गई और मेरी जुबान बन्द हो गई । मेरे मन में एकाएक यह भाव आया कि गायत्री माता मेरे प्राण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ले। मैं इतना ही संकल्प कर पाया कि ठीक उसी जगह जा पहुँचा जहाँ से नदी नीचे गिरती थी । आधी मिनट में ही मेरी यह संसार यात्रा समाप्त होने वाली थी, पर अचानक मैं एक बड़े पत्थर से जाकर रुका जो पानी में एक हाथ डूबा हुआ था । वहाँ मैं बड़े आराम से बैठ गया । मैं नही कह सकता था कि मुझे किस प्रकार यह भान हुआ कि यहाँ चट्टान है और इससे मैं बच जा जाऊँगा । उस दिन से गायत्री माता का जप ही मेरे जीवन का प्रधान कार्य बना हुआ है ।

श्री. शेरसिंह जी प्रधानाध्यापक बेसिक स्कूल, कानाखजड़ी (अजमेर) से लिखते हैं—ता. १६-५-५५ को मैं अजमेर रोड पर दो मोटरों के बीच साइकिल समेत दब गया था, पर गायत्री माता की कृपा से मेरी प्राण रक्षा हो गई । वह घटना मुझे और मेरे अफसरों को अब भी याद है । इसी प्रकार ता. ९-१२-५६ को एक शेर ने दो अन्य आदमियों को चीर डाला । मैं भी बन्दूक लेकर वहाँ गया, शेर को घायल कर दिया, पर वह जख्मी होकर भी मेरे ऊपर टूट पड़ा । शेर के दोनों अगले पंजे मेरे कन्धों पर थे और मुँह गले पर । मैं जख्मी तो हो गया और मेरा गर्म कोट शेर के पंजे से फट गया, पर गायत्री माता ने मेरी प्राण रक्षा की । मेरे पीछे दो आदमी खड़े थे वे भी भाग गये। उस समय का दृश्य सचमुच ही एक चमत्कार था ।

श्री राम कुमार शर्मा, कनवास (कोटा) माता की रक्षा शक्ति के बारे में लिखते हैं:—दीपावली के दूसरे दिन राजस्थान में बैल पूजा का उत्सव खूब धूमधाम से मनाया जाता है । इस उल्लास में पटाखे, बन्दूक और गाड़ी में बाँधकर छोटी तोपें भी छोड़ी जाती हैं । मैं उस उत्सव में शमिल होने जा रहा था । एक जगह गाड़ी में बँधी तोप में १०-१२ मुट्ठी बारूद भरकर उसमें बत्ती जलाई जा चुकी थी । बत्ती जलाने वाले आग लगाकर वहाँ से दूर हट गये थे । मैं तोप के करीब तीन हाथ फासले पर अनजाने चला गया था—मुझे देखते ही मेरे परिचित हटने की ध्वनि में चिल्ला उठे मगर तब तक तोप छूट गई और मुझे जोर का धक्का लगा । सिर घूम गया । दिल धड़-धड़ करने लगा । मैं बैठ गया पर माता की याद करना नहीं भूला। सभी मेरी रक्षा हो जाने पर आश्चर्यचकित थे । मुझे उस धक्के के सिवाय और कोई भी चोट नहीं पहुँची थी ।

श्री राजवंशजी, मसौढ़ी (पटना), माता के वात्सल्य का वर्णन करते हैं—हमारे अनेकों संतान मरे हुए पैदा हुए और कुछ ने दुनियाँ को एक बार देखकर सदा के लिये आँखें बन्द कर लीं । व्यथा से सन्तप्त हम सभी माता की प्रार्थना करते रहते थे । इस बार १७ फरवरी ५६ के मध्याह्न में अस्पताल में मेरी धर्मपत्नी ने माता की कृपा से संरिक्षत पुत्ररत्न प्रसव किया । हम लोग उल्लसित हो उठे । अस्पताल से डिस्चार्ज होने पर चाचीजी के साथ बच्चे सहित उसकी माँ गाड़ी पर घर जा रही थी कि एक दूसरी गाड़ी जोरों से टकरा गयी । यह गाड़ी उलट कर टूट-फूट गयी । मैंने समझ लिया यह बच्चा भी गया—पर माता ने गाड़ी उलटने के समय ही जच्चा-बच्चा सहित हमारी चाची को करीब ६ फीट दूर फेंक दिया । हल्की सी चोट लगी और सभी तरह से सुरक्षित ही रहे । गाड़ी से इतनी दूर फेंके जाने एवं सुरक्षा में हम साक्षात् माता की कृपा का दर्शन कर गद्‌गद हो रहे थे ।

श्री कपिलदेव पाण्डेय, मिर्जापुर लिखते हैं—मेरे पड़ोस के श्री सदानन्द जी सपत्नीक गायत्री उपासना करते हैं । एक दिन रात में उनके घर में चोर घुसा । उनके वस्त्रादि उठा ले गया । खड़खड़ सुनकर उनकी पत्नी की भी नींद टूट गयी और उन्होंने पति को जगाया। आवाज सुनकर चोर भी शीघ्रता से भाग गया। उन लोगों ने देखा—वस्त्र गायब थे । पुनः वे लोग सो गये। उनकी पत्नी को स्वप्न हुआ कि तुम्हारा वस्त्र चोर नहीं ले जा सका है । तुरन्त लैम्प जलाकर खोजने से घर के पीछे सभी वस्त्र मिल गये ।

श्री गोकुलचन्द शर्मा, मोडक (कोटा) सपरिवार प्राण रक्षा की कृपा के बारे में लिखते हैं—कृष्णाष्टमी की दूसरी रात में हम लोग पति, पत्नी एवं बच्चों सहित एक कत्तलपोश तिवारी के नीचे सो रहे थे । अचानक दरवाजे का पत्थर टूट जाने से वह पत्थर और उसके ऊपर का कत्तल सभी एक साथ ही नीचे गिर पड़े, जिस पलंग और खाट पर हम लोग सोये थे वह चूर-चूर हो गये । हमारे ऊपर भी कत्तलों के ढेर थे, पर हम लोग बाल-बाल सुरक्षित थे । सभी लोग गायत्री माता की आश्चर्य भरी रक्षा की सराहना कर रहे थे । हम लोग बाहर निकल कर कृतज्ञता के आँसुओं से भर रहे थे ।

श्री वेणीप्रसाद जी ट्रालीमैन, चिचौड़ा (बैतूल) गायत्री मन्त्र की शक्ति के बारे में लिखते हैं—मैं एक दिन निमोटी गाँव जा रहा था । रास्ते में वर्धा नदी के किनारे साँप के डसने से एक गाय छटपटा रही थी । बहुत लोग अनेक उपचार कर रहे थे, पर कोई लाभ नजर नहीं आता था । मैं गायत्री जपता तो था,पर उसका प्रयोग कभी नहीं किया था । उस समय अन्तर से प्रेरणा पाकर मैंने थोड़ा सा जल मँगाकर गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित कर गाय को पिला दिया शेष उसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

शरीर पर छिड़क दिया । जल छिड़कते ही गाय एक-दम उठकर खड़ी हो गयी । फिर अभिमंत्रित जल पिलाने पर वह चरने लग गयी । इस मन्त्र शक्ति को देख मेरे सहित सभी लोग चकित हो रहे थे ।

श्री कृष्णाराम हरिभाऊ धोन्डे, वापी (गुजरात) से लिखते हैं—हम लोग वापी से ३० मील दूर घने जंगल में एक आवश्यक काम के लिए बैलगाड़ी में जा रहे थे। रात अंधेरी थी, जंगल बहुत घना था । इस सुनसान में डाकुओं ने हमें घेरा और गाड़ी रोक ली, हमारे पास कुछ धन भी था । बहुत घबराहट हुई । अन्त में माता का नाम लेकर गाड़ी के बैलों को जोर से भगाया, उन कमजोर बैलों में न जाने कहाँ से इतनी ताकत आई कि इशारा देते ही घुड़दौड़ करने लगे । डाकू बराबर दो मील तक पीछा करते रहे पर पकड़ न सके । अन्त में पुलिस स्टेशन आ गया, वहाँ आकर हम लोगों ने शरण ली और जान बचाई । माता जिसकी रक्षा करती है उसे कौन मार सकता है ?

श्री दुर्गालालजी रिटायर्ड मजिस्ट्रेट बूँदी से लिखते हैं—गायत्री उपासना से मेरी अनेकों उलझनें दूर हुई हैं। पेन्शन मिलने में बड़ी कटिनाइयाँ थीं । वे हल हुईं। ज्येष्ठ पुत्र की आजीविका सम्बन्धी समस्या सुलझी । कन्या के प्रसव काल में जो प्राणघातक संकट उपस्थित था वह टला । पौत्री की अत्यंत भयंकर ज्वर एवं मूर्छा से जीवन रक्षा हुई । इस प्रकार मैंने अपने जीवन में गायत्री मंत्र के प्रयोग द्वारा अनेक चमत्कारी लाभ होते देखे हैं ।

श्री विश्वनाथ पाण्डेय, दानापुर (पटना) से लिखते हैं—मैं एक बार अपनी छोटी बहन के यहाँ आरा गया था । वहाँ उस पर प्रेत का आक्रमण हुआ करता था । उस दिन भी हुआ । उसकी सास ने कहा—बेटा! सुना है तुम गायत्री जपते हो, सो जरा बहन को जाकर देखो । मैंने गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित जल के छींटे मारे । वह झूमने लगी । कुछ देर बाद अपने होश में आ गई । शाम को फिर आक्रमण हुआ । तब मैंने अपने बड़े भाई को, जो निष्ठावान गायत्री उपासक हैं, बुला लाने के लिये एक आदमी को दानापुर भेजा। वे खबर मिलते ही यज्ञ भस्म लिये यथाशीघ्र आये । उनके आने पर वह आक्रमण दशा में थीं। उन्होंने भस्म लगाकार अभिमंत्रित अच्छतों के छींटे मारे । अच्छत लगते ही वह मूर्छित हो गयी । फिर होश में आ गयी । उनके श्वसुर ने डाक्टरों से हिस्टीरिया रोग कहकर बहुत इलाज कराये थे पर कभी आराम नहीं हुआ । भाईजी के द्वारा आक्रमण दूर होने पर फिर कभी भूत लौटकर नहीं आया । अब वह पूरी स्वस्थ है ।

श्री ब्रजगोपाल शर्मा, सवाँसा अपने जीवन में सुख-शान्ति पाने के विषय में लिखते हैं—मैं चारों ओर से शत्रुओं से घिरा था। सभी मेरी बुराई करने की ताक में रहते । मुझे जरा भी चैन नहीं था । प्रशंसा सुनकर ही मैं भी गायत्री तपोभूमि गया था । वहाँ से अनुष्ठान करके लौटने के बाद ही मेरे सारे दुश्मन ठण्डे हो गये। मैं उसी प्राइमरी स्कूल के साधारण अध्यापक से अनायास प्रधानाध्यापक बना दिया गया । आज हम सभी तरह से सुखी हैं और दुश्मन के बदले दोस्तों से घिरे रहते हैं । ऐसी माता के चरणों पर हम सदा न्यौछावर हैं ।

श्री नर्मदाशंकर ब्रह्मचारी राजकोट से लिखते हैं—"कुछ समय पहले मैं 'सीतालानु कालापड़' नामक काठियावाड़ के एक गाँव में गया था । वहाँ मेरे दो मित्र बल्लभदास और जमनादास नाम के रहते हैं । उन दोनों की स्त्रियों पर अमरोली के किसी पापी ब्राह्मण का आवेश होता था, जिससे घर भर को बड़ा कष्ट था । इसके लिए सैकड़ों उपाय कराये पर कोई फल न निकला । जमनादास की माता ने मुझे भी सब हाल सुनाया और विलाप करने लगी । मैंने उनको विश्वास दिलाया कि वेद माता गायत्री के प्रयोग से सब प्रकार की बाधा दूर हो सकती है । तब मैंने उनको पंचाक्षर मन्त्र का १०८ जप नित्य करने को बताया और अपने मन में संकल्प किया मैं इसके निमित्त सवालक्ष जप का अनुष्ठान करूँगा और इस अवसर पर नमक, मिर्च, तेल आदि त्याग कर केवल सात्विक भोजन करूँगा । यह सब कहकर मैं तो दूसरे दिन की गाड़ी से राजकोट वापस आ गया । वहाँ जब उन स्त्रियों को भूत बाधा हुई तो जमनादास ने गायत्री मन्त्र पढ़कर पानी पिला दिया । वह भूत कहने लगा "मैं जाता हूँ"—"मैं जाता हूँ ।" तब से वे सब कुशल से रहने लगे ।

कचनरा मण्डी (पो. नवाबगंज, बरेली) से श्री विद्याराम गंगबार लिखते हैं—मैं ता. १५-७-५७ को फावड़ा लेकर अपने खेत पर बाँध बाँधने गया । एक बाँध बाँध कर दूसरी तरफ जा रहा था कि एक साँप ने पैर में डस लिया । मैंने उसे फावड़े के नीचे दबा दिया और ४ खेत की दूरी पर लाठी लेने गया । वहाँ से लौटा तो साँप को वहीं पाया और लाठी से मार दिया । इसके बाद गायत्री मन्त्र से वहाँ चीरा दिया और मन्त्र पढ़कर बन्द लगा दिया । उस समय मुझे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ठीक होश नहीं था, पर शाम तक माता की दया से मैं बिल्कुल चङ्गा हो गया ।

दानापुर कैन्ट (पटना) के श्री त्रियुगी नारायण केसरी लिखते हैं—मेरे यहाँ एक जमींदार के लड़के को सदैव ही कभी-कभी एक प्रेत आकर परेशान करता था । कभी-कभी तो ऐसा प्रतीत होता था कि उसका जीवन भी खतरे में है । ऐसी दशा देखकर मुझे बड़ी दया आई । एक दिन अचानक ही यह घटना मेरे ही समक्ष हो गई । मैंने तत्काल ही गायत्री मन्त्र अभिमन्त्रित कर जल का छींटा मारा एवं थोड़ा सा जल पिला भी दिया । अब वह प्रेत बाधा सदा के लिये दूर हो गई है ।

शाहदरा (देहली) से श्री राधेश्याम गुप्ता लिखते हैं—अभी दो मास पहले मैं हनुमानजी के दर्शन करके वापस आ रहा था कि ट्रक से मेरी साइकिल की टक्कर हो गई । ट्रक का पहिया मेरे पैर पर से उतर गया । साईकिल टूट गई पर मुझको कतई चोट नहीं आई । यह गायत्री उपासना का प्रत्यक्ष प्रमाण है । इसी प्रकार मेरे दस वर्ष से सन्तान नहीं होती थी, अब माता की उपासना और प्रार्थना करने से पुत्र उत्पन्न हुआ । गायत्री जप द्वारा मैंने कितने ही लोगों के बुरे व्यसन छुड़ा दिये ।

श्री हरगोविन्द त्रिपाठी बीसापुर (सुल्तानपुर) से लिखते हैं—मैं लगातार ३ वर्ष से माता की उपासना कर रहा हूँ । बैसाख सुदी पञ्चमी सं. २०१४ को माताजी का दिन था । हवन के बाद रात्रि में चालीसा का पाठ व रामचरित मानस पर प्रवचन हुआ । घर के सभी व्यक्ति हवन-स्थल में ही थे कि घर में चोरों ने सेंध लगाना शुरू किया । हवन से आकर हम सब लोग सो गये और उधर चोरों ने सेंध पूरी करके भीतर घुसने की तैयारी की । उसी समय मेरी माताजी की नींद टूट गई और चोर भाग गये । यह सब गायत्री माता के प्रभाव से ही हो सका यह हम सबका विश्वास है ।

श्री रतन सिंह गोहेल मिठापुर (सौराष्ट्र) से लिखते हैं—गत वर्ष मेरे एक मित्र की मृत्यु मोटर दुर्घटना से हो गई थी । मुझे अनुभव हुआ कि उनकी आत्मा अशान्त है और गायत्री उपासना का पुण्य फल चाहती है । मैंने उस आत्मा की शान्ति और सद्गति के लिये जप आरम्भ किया । बहुत दिन बाद फिर उस आत्मा का प्रत्यक्ष हुआ तो उसने बताया कि उस गायत्री जप से उसे पूर्ण शान्ति मिली है । उसकी एक कामना-वासना जो और शेष थी उसे पूर्ण करने का प्रयत्न कर रहा हूँ । गायत्री माता जीवित और मृत सभी को शांति देती हैं ।

श्री ब्रजबल्लभ जी दिगौड़ा से लिखते हैं—इस बार जब हमारे गाँव की फसल तैयार हो चुकी थी ऐसे काले बादल उठे कि हम सब का हृदय काँप उठा । क्योंकि ऐसे समय ओला पड़ने की पूरी आशंका रहती है । उस समय हम सब सत्संग में बैठे थे । हमने वहीं माता से प्रार्थना की कि 'रक्षा करो' । माता ने प्रार्थना सुन ली और थोड़ा सा पानी और जरा से ओले गिरकर आकाश खुल गया । माता कृपा न करती तो सैकड़ों किसानों का सर्वनाश हो जाता ।

श्री हरदयालु जी श्रीवास्तव, गोहाँड (हमीरपुर) माता की दयालुता का वर्णन करते हुए कहते हैं—मेरा ज्येष्ठ पुत्र घर से बैरागी बनकर चुपचाप निकल गया । १५ महीने उसकी खोज करते बीत गए—कहीं पता न चला । सब तरफ से निराश होकर मैंने एक मात्र गायत्री माता का अञ्चल पकड़ लिया । सोलहवें मास में अचानक ही उसक पूरा पता हमें मिला । पता मिलते ही हम कुछ सज्जनों के साथ वहाँ गये । उसने लौटना स्वीकार कर लिया । गेरुवा वस्त्र छोड़कर गृहस्थ के रूप में हमारे साथ आकर रहने लगा । हमारे प्रयत्न और आशा से अधिक सफलता मिलने का कारण एक मात्र माता की ही कृपा है ।

श्री जगदीश प्रसाद भट्ट अध्यापक (पाला, मैहर बुन्देलखण्ड) लिखते हैं कि मई १९५७ में मुझे रक्त-पित्त रोग का बड़े जोरों से दौरा हुआ । रक्त स्राव अधिक मात्रा में होने से मैं एकदम निर्बल हो गया । मेरी दशा देखकर घर के सब लोग घबराने लगे । पर मैंने उनको धीरज बँधाया और गायत्री उपासना करने को कहा । इस पर सब बच्चे और स्त्री गायत्री जप करने लगे । माता की कृपा से एक सप्ताह के भीतर ही मेरा रोग पूर्णतया शांत होकर इस संकट से छुटकारा मिला ।

पं. नत्थूलाल जी निगोही (शाहजहाँपुर) से लिखते हैं—ता. ९ सितम्बर को ग्राम महमदपुर (जि. पीलीभीत) के पण्डित सुखलाल को एक भयानक सर्प ने टाँग में काट लिया । लोगों ने केवल गायत्री मंत्र पढ़कर बन्द लगा दिये और इसी से झाड़ फूँक भी की। सुखलाल पहले तो बेहोश हो गया, पर तीसरे दिन गायत्री के प्रभाव से ही बिल्कुल स्वस्थ हो गया । जो चाहे महमदपुर के किसी भी व्यक्ति से इस घटना की सच्चाई की जाँच कर सकते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

७.१२ गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार

श्री जगत राम पस्तोर टीकमगढ़ (म. प्र.) से लिखते हैं—मेरी पाठशाला के समीप एक ट्रक ड्राइवर गिट्टी डालते थे, उनसे परिचय हो गया । एक दिन वे टीकमगढ़ वापस जा रहे थे कि मुझसे रास्ते में भेंट हो गई । ट्रक को ठहराकर वे कहने लगे कि—''चलो टीकमगढ़ चलते हो ।'' मैं आन्तरिक इच्छा न होते हुए ट्रक में बैठ गया । ट्रक के पिछले भाग में १६ बेलदार थे और मेरी बगल में सामने की सीट पर ट्रक मालिक के एक रिश्तेदार थे । ड्राइवर नशे में था और उसने कई बार ट्रक को गलत चलाने के बाद अन्त में एक बिजली के खम्भे से टकरा ही दिया । जिस समय ट्रक टकराया मैंने माता से रक्षा की प्रार्थना की और आश्चर्य है कि ट्रक में सवार १९ व्यक्तियों में मैं ही ऐसा था जिसके जरा भी चोट नहीं आई ।

हाँसलपुर गाँव से भूतपूर्व जेल बार्डर श्री पंचमसिंह जी लिखते हैं—डोल-ग्यारस के अवसर पर रात के समय ग्रामवासी 'रुक्मिणी हरण' नाटक कर रहे थे । वहाँ कुएँ के चबूतरे पर बैठकर ७-८ वर्ष की एक कन्या खेल रही थी । वह अचानक कुएँ में गिर गई । आठ-दस मिनट बाद जब उसे ऊपर निकाला गया तो बेहोश थी । यह देखकर मैने कहा—'हे वेदमाता यह कन्या होश में आ जाय तो तेरी १०० माला फेरूँगा।'' थोड़ी ही देर में उसे होश आ गया और सब लोग वेदमाता की जय-जयकार करने लगे ।

चाँपा (बिलासपुर) से वैद्य पुनीराम जी लिखते हैं— एक सज्जन, जो जाति के सुनार हैं, प्रेत बाधा के कारण बड़ा दुःख पा रहे थे । भूत सब चीजों को अस्त-व्यस्त कर देता था, जिससे अनेक बार पति-पत्नी में लड़ाई भी हो जाती थी । उन्होंने किसी से गायत्री मंत्र का चमत्कारिक गुण सुनकर स्वयं ही जैसे बना तैसे ही गायत्री उपासना आरम्भ कर दी और एक दिन रात में सात बजे हजार आहुति का हवन करने भी बैठ गये । जिस समय रात के १२ बजे तो सफेद साड़ी पहने एक काली सी स्त्री खिड़की के पास प्रगट हुई और बोली—''मैं जाती हूँ, मुझे स्थान बतलाओ, अब मैं यहाँ एक पल भर नहीं ठहर सकती।'' पर वे हवन करते ही रहे और नतीजा यह हुआ कि घण्टे भर बाद वह प्रेत-छाया अदृश्य हो गई। तब से उस घर में शांति है ।

श्री कन्छोदी लाला यादव (सागर) से लिखते हैं—मेरी माता के गले में कैंसर हो गया । तकलीफ के कारण वे छटपटाती थीं । सिविल सर्जन और अन्य डाक्टर रोग को असाध्य बतला चुके थे । लोगों ने दूसरे बड़े शहर में जाकर इलाज कराने की सलाह दी। पर मैंने कहीं न जाकर गायत्री माता की शरण ली और इसके लिए सवालक्ष का पुरश्चरण किया । माता की कृपा से यह भयंकर रोग शीघ्र ही अच्छा हो गया है ।

श्री रामअवतार शर्मा, हस्वा से लिखते हैं—मेरे एक सम्बन्धी पर मुकदमा चल रहा था । विरोधी पक्ष के सबूत बहुत ही प्रबल हो रहे थे । सभी का विश्वास था कि अब यह फाँसी से किसी भाँति बच नहीं सकता । स्वयं मेरा भी यही विश्वास था । नजदीक के सम्बन्धी होने के कारण मुझे भी उनके प्रति बड़ी ममता थी । हमने इस सम्मुख प्राप्त मृत्यु से बचने के लिये एक मात्र गायत्री माता की शरण लेना सर्वोपयुक्त समझा और उसी की उपासना में जुट गये । सभी को आश्चर्य है कि अपने पक्ष के प्रमाण कमजोर होते हुए भी कैसे माता ने उसे बचा लिया ।

श्री मदनलाल जी, पोस्टमैक अटरू (कोटा) माता के प्रेम का वर्णन करते हैं—मेरी जमीन का कुछ हिस्सा दूसरे व्यक्ति के यहाँ रहन था । मैं छः वर्ष से प्रयत्न करता आ रहा था कि वह जमीन छोड़ दे और अपने रहन की रकम ले ले, पर वह किसी भाँति राजी नहीं हुआ । माता की प्रेरणा से मैंने उसके ऊपर मुकदमा चलाया । दो ही पेशी बाद उस व्यक्ति ने मुझसे समझौता कर लिया और जमीन के साथ रहन की रकम भी छोड़ दी । इसमें भय द्वेष नहीं था , स्नेह भरे चित्त से ही उसने इस बर्ताव को पूरा किया ।

और भी हजारों व्यक्ति ऐसे मौजूद हैं जो गायत्री की शक्ति का ऐसा ही अनुभव कर चुके हैं । इनमें अविश्वास की कोई बात नहीं है । भगवान सदैव अपने भक्तों की रक्षा करते हैं और निष्पाप व्यक्तियों को दैवी सहायता मिला करती है । गायत्री-साधना द्वारा मनुष्य के पापों और विकारों का नाश बहुत शीघ्रता से होता है और वह दैवी शक्तियों का कृपा पात्र बन जाता है ।

संकट और कष्टों के निवारण में गायत्री शक्ति का प्रयोग

आपत्तियों और संकटों के समय लोग भौतिक उपायों से निवारण का उपाय तो करते हैं पर उन उपायों की सामर्थ्य अतिस्वल्प एवं अस्थायी है । इसलिये निश्चयपूर्वक यह नहीं कहा जा सकता कि इन उपायों से वे संकट टल ही जायेंगे । अस्वस्थता के

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिये औषधियों का, शत्रु प्रतिरोध के लिए अस्त्र-शस्त्रों का, दरिद्र निवारण के लिये व्यवसाय का, उल्झनों को सुलझाने के लिये विद्या-बुद्धि का और प्रयत्न पुरुषार्थ का हर कोई आश्रय लेता है । किन्तु इन उपायों का परिणाम अमोघ नहीं । भौतिक पदार्थ और उपाय सभी स्वल्प सामर्थ्यवान् एवं अनिश्चित है । इसलिये उनके परिणाम के बारे में भी कोई निश्चय नहीं कि अभीष्ट प्रतिफल मिल ही जायगा एवं प्रस्तुत संकट टल ही जायगा ।

आत्म बल की शक्ति अमोघ है । उसकी क्षमता भैतिक माध्यमों की तुलना में असंख्य गुनी बढ़ी-चढ़ी है । इसलिये जब कोई ऐसा संकअ सामने आ खड़ा हो, जिसका निवारण सामान्य उपायों से सम्भव न दीखता हो, तब आत्म-शक्ति का सहारा लिया जाता है । देखा गया है कि यह प्रयोग असफल नहीं होता ।

आत्म-बल उत्पन्न करने और बढ़ाने के उपायों में गायत्री उपासना सर्वोपरि है । अन्यान्य उपासनाओं की तुलना में यह प्रयोग निस्सन्देह अति सामर्थ्यवान् है । आपत्तियों के निवारण में लोक व्यवहार में प्रचलित उपाय करते हुए, यदि आत्म-शक्ति को उत्पन्न एवं प्रयुक्त किया जा सके तो उसक अश्चर्यचकित करने वाले परिणाम होते देखे गये हैं ।

इतिहास, पुराणों में ऐसे कथानक भरे पड़े हैं, जिनमें बताया गया है कि देव शक्तियों ने संकट एवं निराशा की घड़ियों में आत्म-शक्ति की मूर्तिमान् देवी—गायत्री—का आश्रय लिया और उसकी सहायता से आपत्तियों के निवारण में सफल हुए । दैवी, आसुरी शक्तियों के युद्ध संघर्ष का क्रम चिरकाल से चला आ रहा है । असुर अपने प्रबल पुरुषार्थ के आधार पर पहले दौर में विजयी होते रहे हैं देवताओं की एकांकी धार्मिक रुचि से सम्बन्धित रही है, वे बल, पुरुषार्थ एवं संगठन से उदासीन रहते हैं, इस भूल का दण्ड उन्हें अनेक बार भुगतना पड़ा है । देव-दानव युद्ध के प्रथम दौर में दानवों को विजय देवताओं की एकांकी प्रगति के कारण उपलब्ध होती रही है । पराजित देवों को अन्ततः आत्म-शक्ति का सहारा लेना पड़ा है और तब वे नई सामर्थ्य से सुसज्जित होकर संघर्ष क्षेत्र में उतरे और विजयी होते रहे हैं ।

देवाधिराज इन्द्र को पराजित स्थिति से उबरकर विजयी बनाने में समय-समय पर आदि-शक्ति भगवती गायत्री का योगदान रहा है । ऋषियों, महापुरुषों एवं सामान्य मनुष्यों ने इस शक्ति के आधार पर कैसे पराजित स्थिति से छुटकारा पाकर विजयी बनने में सफलता पाई है, इसके कुछ प्रसंग नीचे देखिये—

मातः प्रसीद सुमुखी भव दीनसत्वां स्त्रायस्व नो जननि दैत्य पराजितान्यै । त्वं देवि नः शरणदा भुवने प्रमाणा शक्तासि दुःख शमनेऽखिल वीर्ययुक्ते । ध्यायन्ति येऽपि सुखिनो नितरां भवन्ति । दुःखान्विता विगत शोकभयास्तथान्ये मोक्षार्थिनो विगतमानविमुक्त सङ्गाः संसार वारिधजलं प्रतरन्ति संतः । त्वं देवि विश्व जननि प्रथित प्रभावा संरक्षणार्थ समुदिताऽऽर्त्ति हर प्रतापा ।

इन्द्रादि देवगण सावित्री देवी का स्तवन करते हुए कहते हैं—हे माता ! आप प्रसन्न होइये और सुमुखी अर्थात् प्रसन्न मुख वाली होकर कृपा कीजिये । हे जननि ! हम हीन सत्त्व वालों की आप रक्षा कीजिये, जिन हम लोगों को दुष्ट दैत्य गण अहर्निश पराजित करने की चेष्टा किया करते हैं । हे देवि ! आप लोक में शरण में आये हुओं की सुरक्षा करने वाली प्रसिद्ध हैं और आप समस्त प्रकार के दुःखों के शमन करने में पूर्ण समर्थ हैं । आप परिपूर्ण पराक्रम से युक्त हैं । जो भी कोई आपका ध्यान किया करते हैं, वे अत्यन्त सुखी हो जाते हैं । जो भी कोई दुःखों से युक्त होते हैं, वे आपकी कृपा से शोक और भय से छुटकारा पा जाया करते हैं । जो मोक्ष की इच्छा रखने वाले हैं, वे मान और संग से रहित होकर सन्त पुरुष आपके प्रसाद से इस संसार रूपी समुद्र के जल को पार कर जाते हैं । हे देवि ! आप इस सम्पूर्णविश्व की माता हैं । आपका यह प्रभाव सर्वत्र प्रसिद्धि है कि आप दुःखियों के संरक्ष करने के लिये ही प्रकट हुई हैं और आपका प्रताप समस्त दुःखों को मिटा देने वाला है ।

त्वत्तः सर्वमिदं विश्वं स्थावरं जङ्गमं तथा । अन्ये निमित्त मात्रा स्ते कर्तारस्तव निर्मिताः ।

अर्थ—हे देवि ! यह सम्पूर्ण चराचर विश्व आपसे ही समुत्पन्न हुआ है । अन्य ब्रह्मादि जो इसके कर्त्ता हैं, वे तो केवल इसके निमित्त ही हैं, क्योंकि उनको भी आपने ही बनाया है ।

सहत्तुं मेतदखिलं किल काल रूपा कोवेत्ति तेऽम्ब चरि त्व तेनु मन्द बुद्धिः । ब्रह्मा हरश्च हरिश्च रथो हरिश्च इन्द्रो यमोऽग्या वरुणोऽग्नि समीरणौच । सातुं क्षमान् मुन योऽपि महानुभावा यस्याः प्रभावमतुलं निगमानगमाश्च । धन्यास्त एवं तव भक्तिपरा महान्तः संसारदुःख रहिता सुख सिन्धु माताः ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

७.१४ गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार

हे देवि ! इस सम्पूर्ण विश्व का जब आप संहार करना चाहती हैं तो आप ही का स्वरूप काल रूप वाला बन जाया करता है । हे अम्ब ! मन्द-बुद्धि वाला कौन आपके चरित्र को समझ सकता है, जबकि ब्रह्मा, हर, हरिदश्च रथ , हरि, इन्द्र, यम, वरुण, अग्नि, वायु ये सब भी आपके इस परम अद्भुत चरित्र के जानने में समर्थ नहीं होते हैं । महानुभाव मुनिगण और निगम और सागम भी जिस आपके अतुल प्रभाव को नहीं समझते हैं । वे पुरुष परम धन्य हैं, जो आपकी भक्ति में परायण हैं और महान् हैं । आपके भक्तगण इस संसार के दुःख से रहित होकर सदा सुख के सागर में मग्न रहा करते हैं । आपकी भक्ति का ऐसा अद्भुत प्रभाव है ।

देवोद्याने पराशक्तेः प्रासादमकरोद्भकरिः ।
पद्मरागमयी मूर्ति स्थापयामास वासवः ।।
त्रिकालं महतीं पूजां चक्रुः सर्वेऽपि निर्जराः ।
तदा प्रभृति देवानां श्री देवी कुल दैवतम् ।।
विष्णु च त्रिभुवन श्रेष्ठ पूजया मास वासवः ।
ततो हते महावीर्ये वृत्रे देव भयङ्करे ।।

अर्थ—इसके अनन्तर इन्द्र ने देवोद्यान में पराशक्ति देवी का एक परम सुन्दर प्रासाद का निर्माण कराया था और उसमें एक पदराग मणि की प्रतिभा को निर्मित करा कर संस्थापित किया था । वहाँ पर उस देवी की सतस्त देवगण तीनों काल में महती अर्चना किया करते थे । उसी समय से देवताओं की श्री देवी कुल देवता मानी जाने लगी थी । उस महान् भयङ्कर शत्रु देवगण को त्रास देने वाले अत्यन्त पराक्रमी वृत्रासुर के वध हो जाने पर इन्द्र ने त्रिभुवन में श्रेष्ठ भगवान् विष्णु का भी पूजन किया था ।

पूर्व मदोद्धता दैत्या देवैर्युद्धंतु चकिरे ।
शतवर्ष महाराज महाविस्मय कारकम् ।।
पराशक्ति कृपानेशात् देवै दैत्या जितायुधि ।
ततः प्रहर्षिता देवाः स्वपराक्रम वर्णनम् ।।
चक्रुः परस्परं मोहात्साभि माताः समन्ततः ।
परोशक्ति प्रभावं ते स्वत्वा मोहभाग ताः ।।
तेषा मनुग्रहं कर्तु तदैव जगदम्बिका ।
प्रादुरासीत् कृपा पूर्णा यज्ञ रूपेण भूमिय ।
कोटि सूर्य प्रतीकाशं चन्द्र कोदि सुशीतलम् ।
विद्युत्कोटि समानाभ हस्त पादादि वर्जितम् ।।
अदृष्ट पूर्व तद दृष्ट्वा तेजः परम सुन्दरम् ।
सविस्मया स्तदा प्रोचः किमिदं किमिदं विति ।।

प्राचीन काल में मद से उद्धत दैत्यों ने देवताओं के साथ युद्ध किया था । वह महाघोर सौ वर्ष तक महान् विस्मय उत्पन्न करने वाला युद्ध हुआ था । उस समय पराशक्ति की कृपा के आवेश से ही देवगण ने युद्ध में दैत्यों को पराजित किया था । विजय होने पर देवगण अत्यन्त प्रसन्न हुए और परस्पर में अपने बल-पराक्रम की प्रशंसा का वर्णन करने लगे । पराशक्ति के प्रभाव का ज्ञान प्राप्त न कर मोह से अभिमानपूर्वक सभी ओर अपने बल की शेखी मारने बघारते थे। उन देवताओं पर कृपा करने के लिये जगत् जननी ने उसी समय में अपना प्रादुर्भाव किया था । भगवती कृपा से परिपूर्ण स्वरूप वाली थीं । हे राजन् ! उसने एक यक्ष के रूप में देवों को दर्शन दिया था । उस समय करोड़ों सूर्यों के तुल्य उसका तेज था, किन्तु करोड़ों चन्द्रों के सदृश वह तेज शीतल भी था । करोड़ों विद्युत् के समान देदीप्यमान् वह तेज हस्त पाद आदि से रहित था । ऐसे दिव्यातिदिव्य तेज को देवों ने पहले कभी भी नहीं देखा था, जो कि बहुत ही अधिक सुन्दर भी था । तब तो देवता आश्चर्य से भर गये और कहने लगे कि वह क्या वस्तु है ?

इत्यं निश्चित्य तत्रैव गर्वं हित्वा सुरेश्वरः ।
चरित्र मीदृश यस्थ तमेव शरणंगतः ।।
तस्मिन्मेव क्षणे जाता व्योम वाणी नभस्तले ।
मायाबीजं सहस्त्राक्ष जप तेन सुखी भव ।।
ततो जजाप परमं माया बीजं परात्परम् ।
तदेवाविरभूत्तेज स्तस्मिन्नेव स्थले पुनः ।।
प्रेमाश्रु पूर्ण नयनो रोमाञ्चित तनुस्ततः ।
दण्डवत्प्रणनामाथ पादयोजगदीशि तुः ।।
तुष्टाव विविधैः स्तोत्रैर्भक्ति सम्मत कन्धरः ।
उवाच परम प्रीतः किमिहं यक्षमित्यणि ।।
प्रादुर्भूतं च कस्मात्तद्द सर्व सुशोभने ।
इति तस्य वचः श्रुत्वा प्रोवाच करुणार्णवा ।
मत्प्रसाद्भवभिस्तु जयोलब्धोऽस्ति सर्वथा ।
अनुग्रहं ततः कर्त्तुयुष्मद्देहानुज्ञमम् ।।
निःसृतं सहसा तेजो मदीयं यक्षमित्यपि ।

अर्थ—सुरेश्वर ने मन में विचार किया कि मुझे अब इसकी ही शरण में जाना चाहिये, अन्य कोई भी चारा नहीं है । ऐसा निश्चय करके वहाँ पर ही अपने गर्व का परित्याग करके सुरेश्वर इन्द्र ने जिसका ऐसा

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अद्भुत चरित्र है, उसी की शरणागति प्राप्त हो गया था। उसी क्षण आकाश में, आकाशवाणी उत्पन्न हुई थी— "हे इन्द्र ! तुम माया बीज का जाप करो । इसी से तुमको सुख प्राप्त होगा । इसके अनन्तर इन्द्र ने परात्पर जो माया बीज है, उसका जप किया था । अचानक ही उसी स्थल में वही तेज पुनः आविर्भूत हुआ था । उस परम दिव्यातिदिव्य तेज को देखकर इन्द्र के नेत्रों से प्रेमाश्रुओं का पात होने लगा और उसकी सम्पूर्ण देह पुलकित हो गई थी । उस जगदीश्वरी के चरणों में इन्द्र ने दण्डवत्प्रणाम किया था । भक्तिभाव से अपनी कन्धरा को नत करके अनेक स्तोतों के द्वारा उसका स्तवन किया था । इन्द्र ने प्रार्थना की कि हे सुशोभने ! कृपा कर यह बताइये यह यक्ष स्वरूप क्या है, जोकि प्रादुर्भूत हुआ है और इसका क्या कारण है ? इन्द्र के इस वचन का श्रवण का अतिशय करुणा से पूर्ण भगवती ने कहा—"तुम्हारा जो दैत्यों से युद्ध हो रहा था, उसमे विजय मेरी ही कृपा से तुमको प्राप्त हुई है । मैं तुम्हारे ऊपर अनुग्रह करते हुए, तुम्हारे देह से ही यह मेरा तेज सहसा यक्ष स्वरूप वाला निकला है ।

अतः परं सर्वभावै र्हित्वा गर्वतु देहजम् ।
मामेव शरणं यात सच्चिदानन्द रूपिणीम् ।।
इत्युक्त्वा च महादेवी मूल प्रकृति रीश्वरी ।
अन्तर्धानं गता सद्यो भक्तया देवै रभिष्टुता ।।
ततः सर्वे स्वगर्वतु विहाय पदपङ्कजम् ।
सम्यगाराधग्रामासु भंगवतयाः परात्परम् ।।
त्रिसन्ध्यं सर्वदा सर्वे गायत्री जप तत्पराः ।
यज्ञ भागादिभिः सर्वे देवीं नित्यं सिषेविरे ।।

अर्थ— भगवती ने इन्द्र से कहा—"इसलिये सर्वभावों से देह में उत्पन्न होने वाले अभिमान का त्याग करके परम सच्चिदानन्द स्वरूप वाली मेरी ही शरण ग्रहण करो अर्थात् केवल मेरी उपासना करो ।" इतना कहकर मूल प्रकृति ईश्वरी महादेवी अन्तर्ध्यान हो गईं । देवगण के द्वारा भक्तिभाव से उसकी स्तुति की थी । इसके अनन्तर समस्त देवों ने अपने गर्व का त्याग करके परस्पर भगवती के चरण कमल की आराधना की थी । सब लोग सर्वदा तीनों कालों में गायत्री के जप करने में तत्पर हो गये थे । सभी यज्ञ के भागों आदि के द्वारा नित्य देवी की सेवासाधना करने लगे थे ।

इस संसार में अगणित भौतिक और आध्यात्मिक कष्ट संकट एवं विघ्न हैं । जिनके कारण सत्यात्य स्तर का विघ्न रहित जीवन-यापन कठिन हो जाता है । प्रयत्न करते हुए भी सफलता हाथ नहीं लगती । ऐसी दशा में हमें हताश न होकर भगवती आदि-शक्ति अध्यात्म सामर्थ्य गायत्री माता का सहारा लेना चाहिये ।

गायत्री-उपासना के अनुभव

नौकरी प्राप्त हुई

श्री श्यामसुन्दर त्रिपाठी चिलौला (उन्नाव) से लिखते हैं कि मैं बहुत दिनों से नौकरी के लिए परेशान था । जहाँ भी जाता था निराशा ही दृष्टिगोचर होती । मैं सब तरफ से निराश ही हो चला था, तब चिलौला के गायत्री शाखा प्रबन्धक श्री रामपालसिंह जी की प्रेरणा से मैंने गायत्री माता का आँचल पकड़ा । एक महीना भी नहीं हुआ था कि ३० सितम्बर सन् ५० को मैं एक ऐसे कॉम्पटींशन में बैठ गया जिसमें सफलता की आशा नाम-मात्र की ही थी । पर जो आदमी लिये गये उनमें अपना नाम देखकर मैं आश्चर्य-चकित रह गया ।

मोटर दुर्घटना से प्राण-रक्षा

श्री सुधाराम महाजन बिलासपुर से लिखते हैं कि गत मास कार्यवश रायपुर से कबर्धा जाने को 'बस' में सवार हुआ । शायद भावी दुर्घटना की पूर्व सूचना मुझे अव्यक्त रूप से हो रही थी, इससे रामपुर के "वेटिंग रूम" में ही मैंने चालीसा के पाँच पाठ कर डाले । मोटर में भी मानसिक जप चल रहा था । लगभग १४ मील निकल जाने पर अचानक मोटर का अगला चक्का टूटकर अलग जा गिरा, हमारी गाड़ी बगल में खड्डे की ओर बढ़ चली और सभी यात्रियों की आँखों के आगे अँधेरा छा गया । ड्राइवर ने कुशलता से ब्रेक लगाये और किसी भी यात्री को तनिक भी धक्का न लगते हुए गाड़ी सड़क के किनारे ऐसे रुक गई मानो किसी ने टेक लगाकर खड़ी कर दी हो । ईश्वर का नाम लेते हुए सभी यात्री उतर पड़े । लोग कह रहे थे कि गाड़ी में कोई नेक आदमी जरूर है, जिसके कारण सब बाल-बाल बच गये ।

यज्ञ में अज्ञात व्यक्ति से सहायता मिली

मोरवी (सौराष्ट्र) से एक गायत्री उपासक लिखते है कि श्रावण मास में गायत्री जी की आरती के समय यज्ञ करने वाले श्री करुणाशङ्कर भाई के मस्तक पर प्रकाश की किरणें दिखलाई पड़ने लगीं, जिससे सभी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपस्थित जनों को आश्चर्य हुआ । दूसरे दिन प्रातः काल के समय एक बारह वर्ष का लड़का ५०) का चैक मोरवी बैंक के ऊपर करुणाशङ्कर भाई के नाम का दे गया । पर देने वाले का कोई नाम न था । इस ५०) से नवरात्रि में यज्ञ कर दिया गया । उस समय भी उनके मस्तक पर प्रकाश की किरणें दिखलाई पड़ीं । यह सब माता की कृपा का चमत्कार ही है ।

काल-सर्प से प्राण बचे

कुँवर शिवसिंहजी चौहान मौजा खेड़ा (चितावल्या) से लिखते हैं ता. २-११-५७ के दिन में स्नान करने को कुएँ पर गया । जैसे ही बाल्टी खींच कर बाहर निकाली कि उसके चारों तरफ एक सर्प लिपटा देखा । शोर मच जाने से वह भाग गया । पर रात को आठ-नौ बजे के दरम्यान जब मैं गायत्री का जप करके रामायण की कथा आरंभ करना चाहता था कि अचानक दिया बुझ गया और एक बहुत बड़ा सर्प फुसकारता हुआ सामने से आता दिखाई पड़ा । मैंने डण्डा उठाकर मारा और दो चार डण्डा लगने से वह मर गया । रात को स्वप्न में मैंने एक पंद्रह-सोलह वर्ष की कन्या फूलों का गजरा पहने देखी जो मुझसे कह रही थी कि "वह तेरा काल था, परन्तु मेरी आराधना करने वाले को कौन सता सकता है । तुम आनंद से भजन करते रहो ।"

चुनाव में सफलता मिली

श्री रामनाथ शर्मा, जयपुर से लिखते हैं—"गायत्री परिवार के एक सदस्य के नाते मैं विगत् कई वर्ष से वेदमाता की आराधना करता आ रहा हूँ, पर इस बार मुझे माता की कृपा का जो अनुभव प्राप्त हुआ वह अनोखा ही है । मैं अपने नगर की नगर पालिका के चुनाव में कांग्रेस के टिकट पर एक वार्ड से खड़ा हो गया । मेरे मुकाबले में नगर के एक प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित महानुभाव थे । मेरी ओर से प्रचार तो किया गया, पर उनके सामने मेरा प्रचार नगण्य ही था । चुनाव के एक दिन पूर्व रात्रि के ३ बजे जब कि लगातार प्रचार कार्य से थक कर व निराश की भावना लेकर मैं हार-जीत के झूले में झूल रहा था, तो लेटे ही लेटे वेदमाता का स्मरण करने लगा। अकस्मात् मुझे गम्भीर दैवी वाणी सुनाई पड़ी कि "तुम जीत गये।" प्रातःकाल जनता के मतदान का कार्य शुरू होकर यथा-समय समाप्त हुआ । वोटों की गणना होने पर मैं बहुमत से विजयी हुआ । माता की इस कृपा को कैसे भुलाया जा सकता है ।

भयंकर बीमारी से प्राण रक्षा

श्रीमती आर. आर. मिश्रा, सतना (मध्य प्रदेश) से सूचित करती हैं कि —"गत दस वर्ष से पूज्य गुरुवर आचार्यजी के संरक्षण में हम लोग निष्काम गायत्री साधना में संलग्न रहकर सुखी जीवन व्यतीत कर रहे हैं । पर प्रारब्धवश पिछले वर्ष मुझे मृत-गर्भ की विपत्ति का सामना करना पड़ा । नागपुर और सतना के श्रेष्ठ डाक्टर और डाक्टरनी उसका ठीक निदान न कर पाये और मेरी जान पूरे ९ मास तक संकट में रही। तो भी हम माता पर पूर्ण विश्वास रख कर साधना में लगे रहे । इसके प्रभाव से गर्भ का मृत बालक बिना ऑपरेशन के बाहर निकल आया और मेरा दूसरा जन्म हुआ । ऐसी माता और गुरुजी को हम जन्म-जन्मानतर तक न भूलेंगे ।"

गये हुये रुपये प्राप्त हो गये

श्री लक्ष्मीनारायण जाट, ग्राम आवसर (चूरु, राजस्थान) से लिखते हैं—"मैं अपनी दुकान का सामान सुजानगढ़ से लाया करता हूँ । माल उधार लाते हैं, कुछ समय बाद रुपया चुका देते हैं । इस बार जब मैं माल लाया, तो पीछे से सेठ ने मुनीम को अलग कर दिया । मुनीम को हमारे माल उधार लाने का हाल मालूम था । वह एक दिन हमारे यहाँ आया और कहा कि सेठ ने रुपये मँगाये हैं । उस समय मेरे भाई व पिताजी खेतों में थे । मैंने बिना किसी से पूछे १००) उसको दे दिये । मैंने मुनीम से न तो सेठ का रुक्का माँगा न कोई बात पूछी। तीन दिन बाद किसी आदमी ने सारा हाल बतलाया । तब हम सब बहुत घबराये और मैं मन ही मन गायत्री माता की आराधना करने लगा । जब सब बात सेठजी से कही गई तो उन्होंने उस रुपये को अपने हिसाब में मान लिया । यह बस माता की ही दया है । मेरे घर में सब गायत्री-मन्त्र का जप करते हैं ।"

मनोकामनायें पूर्ण हुईं

श्री श्यामसुन्दरलाल गोयल, बिजनौर (उ.प्र.) से लिखते हैं—"गत मई मास में मैंने आपसे अपनी तीन कठिनाइयों के सम्बन्ध में निवेदन किया था । आपकी कृपा से गायत्री माता ने उन सब में कार्य सिद्ध कर दिया । सर्वप्रथम तो मेरे पुत्र अनिलकुमार गोयल के मैट्रिक परीक्षा के दो पर्चे बिगड़ गये थे। पर वह गायत्री माता की उपासना से सेकण्ड डिवीजन में पास हो गया । दूसरी बात मेरे छोटे भाई रामेश्वरप्रसाद

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गुप्ता के डिपार्टमेण्टल इम्तिहान के सम्बन्ध में थी । वह भी उत्तीर्ण हो गया और वेतन वृद्धि भी हो गई । तीसरी बात मेरे एक मित्र ब्रजपतिनारायण की पुत्री के विवाह के सम्बन्ध में थी । यह कार्य भी बहुत अच्छी तरह हो गया और रुपये की व्यवस्था बिना किसी कठिनाई के सहज में हो गई । वास्तव में गायत्री माता की साधना कभी व्यर्थ नहीं जाती ।''

बच्चे के प्राण बच गये

श्री गौरीशंकर ओमर, ग्राम मौदहा (हमीरपुर) से लिखते हैं—ता. ३० दिसम्बर ५७ को मेरा चार मास का शिशु भयानक सर्दी लग जाने से डबल निमोनिया से ग्रसित हो गया । ता. ३१ की शाम को बच्चे की तबियत इतनी खराब हो गई कि मेरी माता व पत्नी निराश होकर अन्तिम अन्नदान कराने लगीं । मैं भी विचलित हो उठा । डाक्टर का इलाज चल रहा था । माता गायत्री की प्रेरणा हुई, हृदय ने कहा कि इस समय माता का ही अञ्चल पकड़ना चाहिये । अतः अपने सहयोगी पं. रामेश्वरप्रसादजी शुक्ल व श्री केशवप्रसाद जी ओमर को बुलाया और बच्चे के कष्ट निवारणार्थ गायत्री चालीसा के पाठ व जप करने को कहा । वे दोनों फौरन स्नान करके पाठ व जप करने को बैठ गये । यह कार्यक्रम संध्या के ६ बजे से रात के साढ़े ग्यारह बजे तक चला । मैं स्वयं मन के अस्थिर रहने से जप न कर सका केवल मूक प्रार्थना और अश्रुपात करता रहा । माता ने हमारी पुकार सुन ली और बच्चा थोड़ी ही देर बाद स्वस्थ हो गया और अब सकुशल है ।''

आश्चर्यजनक परिवर्तन

श्री शिवप्रसाद पाठक, सटई (छतरपुर, मध्य प्रदेश) से लिखते हैं '' मैं आस्तिक परिवार का होते हुए भी ऐसी बुरी विचारधाराओं में फँस गया था कि आस्तिकता को त्यागकर नास्तिकता के प्रवाह में बहा चला जा रहा था । परन्तु पूर्व जन्म के पुण्य से श्री छेदीलालजी शर्मा वैद्य का सत्सङ्ग प्राप्त हुआ और उन्होंने मुझे सदुपदेश देकर गायत्री का जप करने की प्रेरणा दी । फिर मैं ''अखण्ड ज्योति'' का ग्राहक बना तथा वहाँ से प्रकाशित पुस्तकें पढ़ने लगा, जिससे मेरी काया पलट हो गई और मैं पूरी तरह से धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति बन गया। इस कार्य में मेरे गुरुदेव श्री रामेश्वरप्रसाद रावत ने भी हर प्रकार से सहायता तथा प्रोत्साहन दिया । मैं वास्तव में अपने इस परिवर्तन को आश्चर्यजनक और वेदमाता का प्रसाद समझता हूँ ।''

प्राण-दण्ड से बच गया

श्री भगवती दीन तिवारी बीना (म. प्र.) से लिखते हैं—''पिछले नवम्बर मास में मैं छुट्टी लेकर घर गया था । इससे कुछ पहले मेरे साले का पत्र आया था कि आपके तिवारी को कत्ल के मामले में फाँसी का हुक्म हुआ है, इसका कोई उपाय बतलावें । मैंने मातेश्वरी का ध्यान करके जवाब भेजा था कि उसे प्राणदान मिल जायगा, पर सजा अवश्य होगी क्योंकि उसके ऊपर ईश्वरी कोप है । अब गाँव में पहुँचने पर मालूम हुआ कि वास्तव में उस व्यक्ति की फाँसी की सजा बदलकर जन्म कैद की कर दी गई । फिर उसके घर वालों ने मुझे घेरा कि ऐसा उपाय करो कि इस सजा से भी बरी हो जाय । मैंने कहा कि यह सब हो सकता है, पर इसके लिए आप नियम से गायत्री-जप और अनुष्ठान करो । इस घटना से गाँव के लोगों में गायत्री माता के प्रति बड़ी श्रद्धा हो गई है।''

धर्म—प्रचार में सफलता

श्री जगतराम पस्तोर, अध्यापक गनेशगञ्ज (टीकमगढ़, म. प्र.) से लिखते हैं—''जगत् जननी गायत्री की प्रेरणा एवं परम पूज्य आचार्यजी के आदेशों से मेरे हृदय में सदैव यह भावना उठा करती थी कि अपने जिले के प्रत्येक गाँव में गायत्री माता व यज्ञ पिता का सन्देश पहुँचाना हमारा कर्त्तव्य है । इसकी पूर्ति के लिए मैं कई महीनों से प्रयत्नशील था, पर अपनी कमजोरी को समझकर यह इच्छा करता था कि एक साथी और मिल जाय तो उद्देश्य भली-भाँति पूरा हो सके । मैंने अपने विचार को 'परिवार' के कई सदस्यों के सम्मुख रखा पर सभी ने असमर्थता प्रकट कर दी । माता की कृपा से कुछ समय पूर्व झाँसी से श्री गिरजा सहायजी खरे यहाँ पधारे । मैंने उनसे अपनी अभिलाषा प्रकट की और वे तुरन्त साथ देने को तैयार हो गये । फिर भी मुझे यह आशा नहीं थी कि अल्प समय में इतना कार्य हो सकेगा क्योंकि अगर मैं कभी साहस करके एक दिन दस मील साइकिल चला भी लेता था, तो दूसरे दिन दो-चार मील भी चलना कठिन हो जाता था । पर इस अवसर पर ८ दिन तक ३०-३० मील नित्य चलने पर भी शरीर में ऐसी स्फूर्ति रहती थी कि और भी काफी चल सकते थे । साइकिल पर यात्रा करने में मार्ग की जो कठिनाइयाँ आया करती थीं वे कोई भी न जान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पड़ीं और हर जगह आवश्यक सुविधा मिलती गई । एक स्थान पर तो हम घनघोर जङ्गल को पार करके निकले ही थे कि नाले के पार तीन रास्ता दिखाई पड़े, जो विभिन्न स्थानों को जाते थे। हम लोग बीच के रास्ते पर चलने लगे, जो वास्तव में गलत था। उसी समय पीछे से एक जीर्ण-शीर्ण बुड्ढे व्यक्ति ने पुकार कर कहा—"आपको बड़ा गाँव जाना है तो दूसरे रास्ते से जाइये ।" हम बड़े आश्चर्य में पड़ गये कि इसे कैसे मालूम हो गया कि हमको बड़ा गाँव जाना है । मैंने खरे जी से कहा कि यह साक्षात् माता द्वारा भेजी सहायता है ।

माता की कृपा के अनुभव

पं. रामशंकर त्रिवेदी, टिकरा से लिखते हैं कि भारत के स्वाधीनता संग्राम में मुझे कई बार जेल जाने का अवसर मिला। जेल मेरे लिए तपोभूमि बनी और मैंने वहीं से गायत्री की विशेष साधना प्रारम्भ की । साधना प्रारम्भ करने से पूर्व की स्थिति और वर्तमान स्थिति की तुलना करने पर यह साफ दिखाई देता है कि मेरे जीवन में इस उपासना ने अन्तर एवं परिवर्तन उपस्थित कर दिया है ।

इस बीच में अनेक बार मुझे ऐसे अनुभव हुये हैं जिनसे यह प्रतीति हो गई कि माता की विशेष कृपा अपने को प्राप्त है और उनके सन्देश समय-समय पर प्राप्त होते हैं ।

एक बार की घटना है कि मकान की छत ऊपर से गिरी और गिरने से एक दो सेकण्ड पूर्व ही किसी ने वहाँ से घसीटकर मुझे बाहर कर दिया था । अन्तिम पैर बाहर रखते ही छत ऊपर से गिरी और मैं बाल-बाल बच गया । मुझे इस प्रकार मृत्यु के मुख में से बचा लेने वाली माता गायत्री ही थी ।

इसी प्रकार एक बार में अकबरपुर ग्राम में गया। वहाँ पं. छेदालाल दीक्षित के पुत्र का यज्ञोपवीत था। समारोह में बहुत व्यक्ति जमा थे । अचानक वर्षा होने लगी और सारे रङ्ग में भङ्ग हो गया। न भोजन करने की ठीक व्यवस्था बन पा रही थी और न प्रीति-भोज का अवसर बन रहा था। उस दिन मेरा मौन था । मैंने लिखकर उन्हें दिया कि दो ब्राह्मण गायत्री जप के लिए बैठा दिये जाय तो सम्भव है विघ्न का निवारण हो । उन्होंने तुरन्त वैसी व्यवस्था कर दी । सब लोगों को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि थोड़ी ही देर में वर्षा बन्द गई और सब कार्य आनन्द पूर्वक पूरे हो गये।

मेरे एक मित्र पं. प्रकाश नारायण शुक्ल एक अच्छे गायत्री उपासक हैं । वे लकड़ी ला रहे थे कि उनके ९ विपक्षियों ने हमला कर दिया । शुक्ल जी दो आदमी थे और विरोधी ९ । संकट आने पर माता का नाम लेकर वे मुकाबला करने खड़े हो गये और दो ने नौ को पीट कर भगा दिया । जबकि यह दो बिल्कुल निहत्थे थे और वे ९ पहले से ही पूरी साज-सज्जा के साथ तैयार होकर आये थे ।

इस प्रकार की कई घटनाऐं मेरे जीवन में घटित हुई हैं और दूसरों को भी मैंने माता की कृपा से अनेक सफलताएँ प्राप्त करते देखा है ।

प्रचण्ड प्रेत का दमन

श्री. बंशीलाल शर्मा टेलीग्राफ वर्कशाप, जबलपुर से लिखते हैं कि मेरे पिताजी बड़े धर्मनिष्ठ थे। वे तीनों सन्ध्या करते थे। मैं सिर्फ १४ वर्ष का था तभी वे परलोक चले गये सो मुझे पूरा पता नहीं कि वे कितना गायत्री जप करते थे । उनके आशीर्वाद से व ईश्वर कृपा से मेरी भी इस ओर टूटी-फूटी रुचि हो गई । और मैं भी गायत्री माता का उपासक हूँ ।

पिताजी के जीवन की एक घटना इस प्रकार है—एक रोज हमारी एक भैंस थी वह घर न आई । रात के दो बजे तक पता नहीं मेरे पिताजी उसकी खोज में घूम रहे थे । उसी समय एक जंगल में भैंसाकार जिंद उनके सामने आया । वे समझे कि यही वह भैंस है, पर वह तो कुछ और ही था । उन पर झपटा । वे साथ में डंडा रखे थे सो मारने लगे। ज्यों ही डंडा पड़े और वह जिंद दूर भागे । वे उससे बड़े परेशान हो गये परन्तु घबराये नहीं, कारण कि महामन्त्र पर उन्हें पूर्ण विश्वास था। रात भर भैंसे से युद्ध होता रहा। वे इस युद्ध में थककर चूर-चूर हो गए और उससे दुष्ट दानव से अपनी प्राण रक्षा का उपाय न देखकर भय से काँपने लगे । उसी समय उन्हें एक युक्ति सूझी वह यह कि वे कहीं आसन लगाकर गायत्री मन्त्र जपने लगे । ज्योंही मन्त्रजप प्रारम्भ किया उनकी परेशानी हट गई व थोड़ी देर में वहाँ जिंद आदि दृष्टिगोचर नहीं हुआ । फिर भगवती की कृपा से घर लौटे व नित्यकर्मों में लग गये। इस प्रकार कठिन समय वे महामन्त्र के प्रभाव से पार कर लेते थे ।

मेरे पिताजी की ईश्वर ने जीवनी अच्छी बिताई । जगदम्बे की शरण में मैं भी पड़ा हूँ व जो बन पड़े कर लेता हूँ । विश्वास है कि माता अपने इस अधन सेवक की नौका भी पार लगायेंगी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

माता द्वारा प्राण भिक्षा का दान

श्री. वीरेन्द्र स्वरूप भटनागर, बरेली से लिखते हैं कि मेरे जीवन में अभी हाल में एक ऐसी घटना घटी है जिसका स्मरण करने मात्र से मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं ।

मार्च सन् ५१ में मेरी दाहिनी हँसली के ऊपर एक फोड़ा उठा । बरेली डिस्ट्रिक्ट अस्पताल में मुझे भरती किया गया । अनेक इंजेक्शनों तथा दवाओं के बावजूद फोड़ा बढ़ता गया । दो महीने में मेरी हालत बहुत ही नाजुक हो गई । ता. १४ मई ५१ को फोड़ा फूटा । काफी मवाद निकला । साथ ही हंसली की हड्डी भी टूट गई । इस समय मेरी हालत मृत जैसी हो गई थी । देह पर सब ओर मुर्दनी छा गई थी ।

माता पिता का धैर्य टूट गया । वे बिलख-बिलख कर रोने लगे । रिश्तेदारों को तार द्वारा खबर दी गई वे भी मुझे अन्तिम रूप से देखने आ गये । सिविल सर्जन स्पष्ट कह चुके थे कि मर्ज उनके काबू से बाहर है। यदि जिन्दगी बच भी जाय तो हँसली की हड्डी टूट जाने के कारण दाहिना हाथ बिल्कुल बेकार हो जायगा । मृतक या कम से कम अपाहिज होने की कल्पना रोगी को तथा उसके अभिभावकों को कितनी कष्टकारक होती है इसकी कल्पना कोई भुक्तभोगी ही कर सकता है ।

इस विपत्ति के घोर अन्धकार में पिताजी को गायत्री माता का सहारा सूझा । वे दिन-रात गायत्री का जप और ध्यान करते और उसी से मेरे प्राणों की भिक्षा माँगते, इसी बीच उन्हें मुझे लखनऊ ले जाने का उपाय सूझा । यद्यपि ऐसी स्थिति में रोगी के लिए इतनी लम्बी यात्रा खतरे से खाली न थी पर वे अपनी अन्तःप्रेरणा के अनुसार मुझे लखनऊ ले पहुँचे और मेडिकल कालेज के अस्पताल में भर्ती कर दिया । डाक्टर इलाज करते थे और माता-पिता गोमती नदी के पुण्य तट पर गायत्री के सवालक्ष अनुष्ठान में संलग्न रहते ।

माता ने उनकी आर्तपुकार को सुना और मेरा आपरेशन सफल हुआ । हँसली की हड्डी निकाल दी गई है । फिर भी मेरा दाहिना हाथ अपाहिज नहीं हुआ और वह पहले समान ही ठीक काम कर रहा है । इसे माता की असीम कृपा के अतिरिक्त और क्या कहा जाय ?

पिताजी आर्य समाजी विचार के हैं । उनका अब गायत्री पर इतना अटूट विश्वास हो गया है कि अपना अधिकांश खाली समय वे गायत्री उपासना में ही लगाते हैं । मैं भी अपनी जीवनदात्री महाशक्ति को कैसे भूल सकता हूँ । मैं भी यथासम्भव गायत्री उपासना में भूल नहीं करता और विश्वास करता हूँ उसके लिए किसी भी कठिनाई को दूर कर सकना कठिन नहीं है ।

अनजान से सुजान

प्राणाचार्य वैद्य मनीराम शर्मा श्रीगङ्गानगर से लिखते हैं कि आज अखण्ड ज्योति के पाठकों के सम्मुख अपने जीवन की एक नितान्त सत्य घटना,इच्छा न होते हुए भी आचार्य जी के आग्रह के कारण उपस्थित कर रहा हूँ ।

मैं अपने अतीत जीवन की धुँधली सी छाया में अपने गुरुदेव के वे वाक्य आज भी सुन रहा हूँ— "बेटा ! गायत्री में अचिन्त्य शक्तियाँ हैं जो तर्क गमय नहीं, इसके सिद्ध होने पर सब सिद्धियाँ संभव हैं।"

विक्रमी संवत् १९८३ में मैं चुहड़ीवाला धन्ना जि. फीरोजपुर (पंजाब) में अध्यापन कार्य करता था । सनातन धर्म सभा के तत्वावधान में हमारा स्कूल बड़ी अच्छी तरह चल रहा था । इसी बीच में एक प्रतिद्वन्दी संस्था पैदा हुई और उसने भी अपना एक अलग स्कूल खोल दिया । नये उत्साह में नया प्रवाह अधिक होता है लोग उसकी ओर अधिक आकर्षित हुए ।

उन दिनों पंजाब मे कचहरी की भाषा उर्दू थी । अतः उर्दू का उधर बहुत प्रचार था । प्रतिद्वन्द्वी स्कूल ने उर्दू की पढ़ाई का अच्छा प्रबन्ध कर दिया । जनता को उर्दू की आवश्यकता थी । अधिकांश विद्यार्थी उसी ओर खिसक गये ।

हमारा धार्मिक स्कूल था। इसलिए उसमें हिन्दी ही पढ़ाई जाती थी । मैं उर्दू जानता था । आर्थिक स्थिति भी अच्छी न थी जिससे उर्दू का मास्टर रखा जाता । निदान ऐसा प्रतीत होने लगा कि हमारा स्कूल बन्द हो जायगा । इस समय पर विचार किया गया पर कोई हल न निकल सका ।

स्मरण रहे इससे पूर्व में गुरुदेव के आदेशानुसार गायत्री का एक अनुष्ठान कर चुका था । जिसका पूर्ण वर्णन न आवश्यक है, न उचित । एक रात्रि को मैं किंकर्तव्यविमूढ़ होकर अपनी दयनीय दशा पर आँसू

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

बहाये माँ के चरणों पर वे ही अश्रु बिन्दु चढ़ाकर सो गया ।

प्रातः काल ४ बजे का समय था । स्वप्न में मुझे एक ज्योतिर्मय स्वरूप नजर आया । उसने चमकते हुए एक पत्र उर्दू के कुछ अक्षर लिखकर दिखाये स्वप्न में ही मैंने कहा मैं नहीं जानता यह सब क्या है। इस पर वे अक्षर बदले और ऊपर हिन्दी और नीचे उर्दू के अक्षर हो गये । मेरे नेत्र खुले । जाग्रत में भी वे अक्षर मुझे दीख रहे थे । मैंने शीघ्र ही उन्हें एक पत्र पर लिख डाला जो आज भी मेरी डायरी में अंकित हैं ।

मैंने स्कूल में जाकर एक उर्दू का ''कायदा'' मँगाया और सारा पढ़ डाला । उसी दिन पहली और दूसरी पुस्तक भी पढ़ डाली और तीन दिन के बाद हमने यह घोषणा कर दी कि आठवीं कक्षा तक हमारे स्कूल में पढ़ाई की जायेगी । वैसा ही हुआ भी। दूसरे स्कूल की अपेक्षा हम अधिक अच्छी तरह उर्दू पढ़ाने लगे और हमारा स्कूल पूर्ववत् अच्छी स्थिति में चलने लगा ।

इस घटना को हमारे साथी बिल्कुल न समझ सके कि उर्दू से बिल्कुल अनभिज्ञ व्यक्ति अचानक कैसे अध्यापक बन गया । इसकी सत्यता में यदि किसी को संदेह हो तो आज भी चुहडीवाला जाकर इस बात की सच्चाई की जाँच कर सकते हैं । हमारे स्कूल के विद्यार्थी दूसरे स्कूल के मुकाबले में सदा ही अच्छे नम्बरों से पास होते थे । भले ही किसी को यह साधारण सी बात प्रतीत हो पर मेरे लिए यह महान् आश्चर्य की घटना है । इसी प्रकार की अन्य कई घटना मेरे जीवन में हुई हैं ।

गायत्री उपासना से प्रेतबाधा की निवृत्ति

श्री भोगालाल मोहनलाल जानी, मोटा चेखला से लिखते हैं कि गत वर्ष मैंने सवालक्ष गायत्री का अनुष्ठान किया था । वक्त सन्ध्या, स्नान, जप सब तीनों काल होती थी । पन्द्रह दिन के बाद रात को मैं सो रहा था। अर्ध जाग्रत नींद में था। उस वक्त १२-१ बजे मेरे कमरे में से एक अति भयानक श्याम आकृति का अर्धअङ्ग दिखाई पड़ा, जिसका हाथ लम्बा होने लगा, मेरी ओर आने लगा, लम्बा हुआ, हाथ ने मेरा गला जोर से दबाया, मुझे बड़ी परेशानी हुई, मैं घबराने लगा, उस काली आकृति के हाथ को जोर से पकड़ कर वेदमाता का मन्त्र शुरू कर दिया, आश्चर्य की बात यह हुई कि जप शुरू करते ही श्याम मनुष्य आकृति अदृश्य हो गई । जिसके बाद ऐसी कोई विघ्न की घटना बनी नहीं है । हमारे घर में जो प्रेत बाधा बहुत दिनों से घुसी हुई थी वही प्रेत इस अनुष्ठान से क्रुद्ध होकर हमें डराना चाहता था पर गायत्री उपासना की शक्ति के आगे उसका कछ बस न चल सका । रात्री को सफेद प्रकाश, सफेद वस्त्र में पुरुष और पदार्थ स्वप्न में दिखाई देते थे । ४० दिन में अनुष्ठान समाप्त हो गया । आखिरी दिन अन्तिम रात्रि को चार बजे १२-१४ वर्ष की बालिका का स्वप्न में दर्शन हुआ । वह बालिका हमें शक्कर का प्रसाद देकर चली गई। प्रसाद हाथ में लिया और आँख खुल गई । ऐसी घटना अनुष्ठान काल में हुई थी। दूसरे दिन ब्रह्मभोज करवाया, पुरश्चरण समाप्त हो गया ।

साधना से एक बड़ा लाभ यह हुआ कि मेरी औरत जो १० साल से प्रेतबाधा से पीड़ित थी प्रतिदिन जोर-जोर से रोती थी। एक-एक घण्टा तक रोती रहती, गाँव के सारे लोग जमा हो जाते थे। हाथ-पैर भी खिंचा जाता था । जोर भी बहुत करती थी। मैंने विद्वान ब्राह्मणों से उसका उपाय पूछा लेकिन वे न बता सके । इधर-उधर से ताबीज धागा लाकर बाँधता पर उनसे कोई लाभ न होता । हम तीनों को बड़ी परेशानी रहती थी । मैंने गायत्री अनुष्ठान शुरू किया तो उस दरमियान ही पीड़ा बन्द हो गई ।

मेरा गाँव सावरकांठा जिले में धड़ी नामक है । तालुका प्रांतिज है । मैं गुजराती स्कूल में अध्यापक की नौकरी करता हूँ । मेरी उम्र ३१ साल की है । कुटुम्ब में पिताजी गुजर गये हैं, माता वृद्ध हैं । हम तीन भाई हैं और तीन बहनें । घर पर खेती का धन्धा चलता है । मैं जाति से मोदचातुर्वेदिय ब्राह्मण हूँ । मैंने गुजराती, प्राथमिक शांलांत् परीक्षा उत्तीर्ण की है। हिन्दी की भी तीन किताब पढ़ी हैं ।

गायत्री साधना से हमारी आध्यात्मिक उन्नति बढ़ती है । साधना बढ़ाने की भी तमन्ना होती है । हमें कार्य में सफलता भी मिलती है । भय, शोक, क्रोध, लोभ, मोह वगैरह दुर्गुण कम होते हैं । पुण्य पुरुषों की प्राप्ति होती है । सन्त, संन्यासी, ब्रह्मचारियों का मिलन कभी होता है । मैं जिधर जाता हूँ वहाँ के लोग बड़े प्रेम से आदर करते हैं । हमारी पाठशाला में कैसा कोई भी इन्सपेक्टर आता है लेकिन मेरी क्लास में आते ही शान्त हो जाता है और मेरे कार्य की प्रशंसा करता है । जन समाज पर अद्भुत प्रभाव पड़ता है । आज भी वेद माता का स्मरण करता हूँ ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साधना से लाभ की अपेक्षा रखता नहीं हूँ । इस साल में चन्द्रायण की साधना करने की इच्छा है, फिर माता की इच्छा ।

मैं एक बार भजन में गया था। भजन शुरू होने लगे। थोड़ी देर बाद एक बनिये की लड़की को अङ्ग में प्रेत आ गया और उठकर दौड़ने लगी । वह जाते ही रास्ते के बीच में गिर पड़ी। उसे कुछ ज्ञान न रहा । भजन में आने वाले लोग जमा हो गये। बेचारी लड़की हैरान हो रही थी। कोई उपाय मालूम न पड़ा । थोड़ी देर सोचकर मैने शुद्ध जलपात्र मँगवाया, गायत्री मन्त्र से मन्त्रित किया और उसकी आँखों में छिड़कने लगा थोड़ी ही देर में प्रेत चला गया । लड़की शुद्धि में आ गई और घर पर चली गई । एक वक्त अभिमन्त्रित जल पिलाने से भी ऐसा ही आराम हुआ था । इस प्रसङ्ग से मेरी श्रद्धा और बढ़ी ।

गायत्री साहित्य में मैने पहली बार गायत्री के प्रत्यक्ष चमत्कार किताब पढ़ी इसके पीछे सब साहित्य मथुरा से मँगवाया । अखण्ड ज्योति का सदस्य भी बना हूँ ।

मृत्यु के मुख में से वापसी

श्री रामसहाय जी तिवारी, झाँसी से लिखते हैं कि मैं रेल चलाने की नौकरी करता हूँ । कुछ वर्ष पहले माघ मास में मैं एक दिन गाड़ी लेकर इटारसी गया हुआ था । इसी दिन धर्मपत्नी ने भूल से एक बड़ी गलती कर डाली । पत्थर के कोयलों की जलती हुई सिगड़ी घर के अन्दर रख कर किबाड़ बन्द करके वह सो गई । उस दिन ठण्ड अधिक थी । धर्मपत्नी ने सोचा रात को एक बजे मैं घर आऊँगा तो अँगीठी के पास बैठ कर गरम कर लूँगा और गरम भोजन करुँगा । पर उन्हें यह मालूम न था कि पत्थर के कोयले की गैस क्या हानि करती है । रात को १ बजे जब मैं घर लौटा तो देखा कि पत्नी तथा बच्चा मृततुल्य अवस्था में पड़े हुए हैं । डाक्टर का इलाज आरम्भ कराया गया पर उनकी स्थिति देखकर किसी को विश्वास न होता था कि यह बच सकेंगे । इलाज हो रहा था और मैं समीप बैठा हुआ गायत्री माता को पुकार रहा था । गायत्री माता तक ही मेरी दौड़ थी, उन्हीं के चरणों में मन अटका हुआ था । वे जिस पर कृपा करें उसकी सभी विपत्तियों को टाल सकती हैं ।

६० घण्टे बाद उनको होश हुआ । दोनों मृत्यु के मुख में से वापस लौट आए । तब से हम दोनों ''पति-पत्नी'' विशेष श्रद्धापूर्वक गायत्री उपासना करने लगे । माता ने हमें एक और पुत्र दिया उसका नाम सूर्य नारायण रखा गया । उसमें कुछ विशेषताएँ ऐसी ही हैं जिससे यह नाम रखना पड़ा ।

गायत्री की नियमित उपासना करने से पूर्व मुझमें कई दुर्व्यसन थे । तम्बाकू सुपाड़ी इतनी खाता था कि एक मिनट भी उनके बिना नहीं रह सकता था । इञ्जन में रहने वाले को वैसे ही सारे समय भारी गरमी का सामना करना पड़ता है । इस पर भी तम्बाकू खाने की इतनी भरमार । इसका प्रभाव स्वास्थ्य पर बुरा ही पड़ रहा था पर आदत से मजबूरी थी । पैसा भी बहुत खर्च होता था और स्वास्थ्य भी बिगड़ता था । मैं चाहता था कि इसे छोड़ दूँ पर छूटती न थी । आदत ने इतना मजबूर कर रखा था कि छोड़ने के सभी विचार निष्फल हो जाते थे । पर गायत्री उपासना आरम्भ करने पर मेरे भीतर से कुछ ऐसा आत्मबल बढ़ा कि साहसपूर्वक तम्बाकू छोड़ने का संकल्प किया और जो बात असम्भव दीखती थी वह सम्भव हो गई । तम्बाकू दुष्टिनी से मेरा पीछा छूटा और स्वास्थ्य तथा पैसे की भयंकर बर्बादी से बचत हो गई।

यों मेरी कुछ विशेष साधना नहीं है पर इस छोटी सी साधना का ही एक चमत्कार सुनिये । हमारी जन्म-भूमि घीसामिसर का पुरवा नामक गाँव में है जो सुल्तानपुर जिले में है । छुट्टी पर एक बार घर गया हुआ था । दरवाजे पर बैठा रामायण पढ़ रहा था कि पडौस की धोबिन के रोने-धोने का कोलाहल मचा । मैं रामायण बन्द करके वहाँ गया तो देखा कि उसका बच्चा मर रहा है । बच्चे को हाथ से जाते देखकर माता का रोना स्वाभाविक ही है । मैं जानता था कि मृत्यु से किसी को बचाना कठिन है फिर भी प्रयत्न करने में क्या हानि ? मैंने गायत्री मन्त्र से जल अभिमन्त्रित किया और बच्चे को पिलाया तथा उस पर छिड़का । माता की कृपा हुई और बालक की स्थिति तत्काल सुधरने लगी । एक दो दिन में ही बच्चा स्वस्थ हो गया । यह घटना चारों ओर फैली, लोग मुझे कोई बड़ा मन्त्र शक्ति सम्पन्न सिद्ध पुरुष मानने लगे और अपनी-अपनी कठिनाई लेकर मेरे पास आने लगे । मैं इस झंझट से घबराया और छुट्टी अधूरी ही छोड़कर घर से वापस लौट आया ।

तब से मैं और भी अधिक श्रद्धा भक्ति के साथ माता का भजन करता हूँ । मेरी आत्मिक तथा सांसारिक उन्नति हो रही है ।

दुष्टात्माओं का आक्रमण निष्फल

श्री. दिलेराम पटेल, लोइसी का कहना है कि दुर्भाग्य का कुछ ऐसा कुचक्र है कि मेरे पाँच बालक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अब तक मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं । बालक जन्मते हैं, हँस-खेल कर मोह ममता बढ़ाते हैं और कुछ ही दिन में वियोग की पीड़ा देकर चले जाते हैं । अपने कलेजे के टुकड़ों को कराल काल की क्रूर दाढ़ों में पिसते देखकर माता के हृदय पर कितना बड़ा आघात बैठता है, इसे भुक्तभोगी ही जानते हैं ।

बालक के बिना माता की गोद और पिता का आँगन सूना रहता है । हम लोग भी इस सूने मन से दुःखी थे । इस दुखदायी दुर्भाग्य के कारण की तलाश की गई । मालूम हुआ कि कोई दुष्ट आत्मा पीछे लगी हुई है ।और वह अपनी पैशाचिक शक्ति से इन बालकों का भक्षण कर जाती है ।

काफी समय तक अनेक प्रकार के उपचार किये जाते रहे पर कोई सफल न हो सका । सभी प्रयत्न चले गये । एक दिन एक सत्पुरुष ने गायत्री की महिमा समझाते हुए बताया कि गायत्री से बड़ा रक्षक और दूसरा नहीं । वेदमाता जिसकी रक्षा करती हैं उसका कोई बाल बाँका नहीं कर सकता ।

पूर्ण श्रद्धा और भक्ति भावना के साथ मैं माता की उपासना करने लगा । भगवान ने एक बालक और दिया जिसे पाकर प्रसन्नता की सीमा न रही । साथ ही यह भय भी था कि इस बालक का भी कोई अनिष्ट न हो जाय । भय और आशंका से दिल धड़कता रहता, पर गायत्री माता का ध्यान करके कुछ साहस बँधता ।

एक दिन रात्रि के समय मेरी पत्नी कुछ अर्ध तंद्रित अवस्था में बच्चे के साथ सो रही थी । उसे अनुभव हुआ किसी भयंकर राक्षस ने आकर बच्चे के अंग-अंग तलवार से काट डाले हैं । ठीक उसी समय मैं भी पास की चारपाई पर पड़ा यह स्वप्न देख रहा था कि एक बड़ी फौज घर में घुस आई है और मेरे गले को तलवार से काट रही है । मैं भय से थर-थर काँपने लगा, मुँह से जोर से ॐ भू र्भुवः स्वः निकलने लगा । उधर पत्नी की भी घिग्घी बंध गई, वह बच्चे से बेतहाशा लिपट गयी और भर्राई आवाज में चिल्लाने लगी—"मेरा बच्चा टुकड़े-टुकड़े हो गया ।"

हड़बड़ा कर हम दोनों उठ बैठे । अधखुली आँखों से दिखाई दिया कि एक परम सुन्दरी कन्या हाथ में फर्सा लिए आकाश में हमारी रक्षा के लिए आई हुई है। उसके दर्शन करते ही हमारी हल्की गई, आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी और कातर होकर जोर-जोर से माता को पुकारा ।

कुछ ऐसी ही भयंकर स्थिति बनी रहीं । जब धीरज बँधा तो बच्चे को टटोल कर देखा । वह चैन से था । पत्नी तो मुझसे भी बहुत पीछे तक अधीर रही, उसका कंठ सूख गया था । मुख से स्पष्ट शब्द भी न कहे जाते थे । हम दोनों बार-बार बच्चे को उलट-पलट कर देखते थे, यद्यपि वह ठीक था पर फिर भी मन न मानता था और यही भय लगता था कि कोई अनिष्ट न हो गया हो । उस रात नींद नहीं आई। हम दोनों पति-पत्नी बच्चे के लिए जागते रहे ।

पीछे मालूम हुआ कि उस रात्रि एक दुष्ट आत्मा ने प्राणघातक आक्रमण किया था और यदि माता ने रक्षा न की होती तो इस वर्तमान बालक को खिलाने के सौभाग्य से भी हमें वंचित होना पड़ता । जगजननी सबसे बड़ी रक्षक है, दुष्टों के सारे प्रयत्नों को वे निष्फल कर सकती हैं उनकी शरण में अपना सब परिवार सुरक्षित रहेगा ऐसा विश्वास दृढ़ होता जाता है और गायत्री उपासना में दिन-दिन चित्त अधिक बढ़ता जाता है।

जान-माल की भयंकर क्षति से बचे

श्री जसवन्त सिंह, राजावल, पीपल से लिखते हैं कि कुछ समय पहले से हम कई मित्र गायत्री उपासना में लगे हुए हैं । हम लोगों की जैसी कुछ टूटी-फूटी साधना है उसके हिसाब से देखा जाय तो हम लोगों को माता का सहारा भी सन्तोषप्रद मिल रहा है । गत वर्ष गर्मियों में तो हम लोग एक भारी दुर्घटना तथा जान-माल की भयंकर क्षति से बाल-बाल बच गये । रक्षा में गायत्री माता की कृपा ही प्रधान कारण थी ।

गत गर्मी की छुट्टियों में मैं व शम्भुसिंहजी हमारे बहुकुटुम्ब सहित सीताबाड़ी के मेले में गये । एक तो मुझे दो बैल बेचने थे दूसरे सब सीताबाड़ी पवित्र स्थान को देखना व स्नान करना चाहते थे । रास्ते मे रेलावन ग्राम की पार्वती नदी की तरफ में हमारी अगली गाड़ी जिसमें औरत समाज बैठा हुआ था । बैल के गर्दन नीची कर देने के कारण गैल में ही रुक गई । दौड़ बहुत ही भयावह व संकरी थी । पीछे वाली गाड़ी भी चलती दौड़ में दौड़ी । उस वक्त तक गाड़ी दौड़ चुकने पर हम पिछली गाड़ी वालों की आवाज द्वारा मालूम हुआ कि दौड़ में गाड़ी रुकी हुई है । पर अब क्या हो सकता था । मैं दोनों गाड़ियों के बीच में बन्दूक लेकर चल रहा था । पर अब मैं भी क्या कर सकता था । इस प्रकार गाड़ीवान के जोर से बैलों की रास खींचने के कारण एक बैल पीछे मूठ पर गाड़ी का धक्का जोर से लगने के कारण अगली गाड़ी के आने से पहले ही गड़ार में गिर पड़ा व उठ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गया व फिर गिर पड़ा व वह बैल अपने सींग के बल ऐसा पड़ा कि सारी गाड़ी भी उसी पर आ गई । आस पास की भीड़ में हाहाकार मच गया। जो गाड़ियाँ वहाँ पर रुकी हुई आराम कर रहे थे उनमें हमारा औरत समाज भी रोने लग गया क्योंकि दोनों गाड़ियों में ८ बच्चे ५ साल तक की उम्र के थे । अत: मेरे भी होश गुम हो गये । मैंने एकदम अपने आपको सँम्हाल कर के अपना कन्धा गाड़ी के पहियें से लगा दिया । कुँ. शम्भूसिंह जी अपने हाथ में एक ४ वर्षीय बालक को लेकर जल्दी से कूद पड़े । मेरे मामा श्री मदन सिंह जी बहाली वगैरा ने उस बैल को खींचकर निकाला। उस नये बैल का एक सींग पूर्णतया टूटा हुआ था यह देखकर हमें और भी अधिक दु:ख हुआ क्योंकि उसे १ महीने पहले ही हमारे बड़े मामा ने २००) में मोल लिया था। सींग को वापस मिला कर भगवती का नाम लेकर बाँध दिया । आज तक ऐसे सींग तो केवल स्प्रिट डालते रहने से ही अच्छा हो गया वह बैल आराम से हमारे मामा के कास्त में काम कर रहा है ।

दूसरी घटना वापस आते समय रात के वक्त रास्ते में चोरों से मुठभेड़ हुई । उस समय भी भगवती का स्मरण करने से साक्षात् बचाव हुआ । न मालूम क्यों वह खाँस कर ही रह गया और उसने कोई छेड़छाड़ नही की । इसे भी माता का ही प्रसाद समझता हूँ । फिर वापस उसी नदी रेलाव ग्राम में आने पर कुएँ पर पानी पीते हुए रवाना होकर वहाँ पर १०००) की दोनाली नं. १२ बन्दूक भूलकर १ मील चले आने जाने के पश्चात् बन्दूक की भूल आने की याद आई । उसी गर्मी के समय में दिन के २ बजे मैबहाली मामा का लड़का विजेन्द्र सिंह भागते हुए गये । मुझे निराशा व आशा के विचारों ने खूब खिलाया भुलाया पर निश्चित स्थान पर पहुंचने पर माता की कृपा का प्रसाद तैयार मिला । उस बन्दूक की एक भले पुरुष ने सब ग्राम के मौजिज आदमियों को इकट्ठा करके उठाया था क्यों कि उसे यह मालुम था कि फला ग्राम के वासियों की यह चीज है पर हम उसे नहीं जानते थे । इस प्रकार से १०००रु॰का नुकसान भगवती की कृपा से बचा व साथ में सरकार के नियमों से बचे अन्यथा दुनाली बन्दूक खो जाने पर सरकार खींचतान करती । इसके उपलक्ष में ग्राम आते ही ब्रह्मभोज मेरे बड़े मामा ने किया व हवन भी करवाया । इसके बाद अर्धांगिनी का इलाज कम पैसा में ही दवाइयाँ व इन्जेक्शन के द्वारा हुआ । डाक्टरों व कम्पाउन्डरों को अधिक पैसा नही देना पड़ा । इस प्रकार छोटी-मोटी घटनायें तो कितनी ही हैं । जिसमें माता की सहायता अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त हुई । १० भैसें, बाबा साहब की ८, व २ मेरी ५ दिन बाद मिली ।

उन्नति की ओर प्रगति

श्री. ओउम् प्रकाश त्यागी, सीकरी बुजुर्ग लिखते हैं कि गत् वर्ष मैंने नित्य मालाओं का नियम कर रखा था। गायत्री लेखन के कारण समय भी कम मिलता था परन्तु लेखन के कारण मानसिक अवस्था माता के चरणों में ही रहती थी । रात को सोते व सुबह उठते समय चारपाई पर कुछ ध्यान अवश्य करता था । जो अब भी चलता है । वहीं दो मालाएँ अब भी चलती हैं । सोते व उठते समय का ध्यान भी चलता है । दिन में भी ज्यादा समय माता का स्मरण बना रहता है । इस वर्ष मैंने आश्विन के नवरात्रों का अनुष्ठान भी किया है ।

समय पाकर मैने चालीस दिन का सवा लाख एक एक अनुष्ठान भी कर लिया है । इस अनुष्ठान से मेरा बड़ा हित हुआ है । सबसे पहला स्वास्थ्य लाभ दूसरा हमारा पति-पत्नी का पारिवारिक कलह प्राय: समाप्त ही समझना चाहिए । यह कलह मेरे जीवन में सबसे बड़ी परेशानी थी जिसके कारण किसी भी काम में चित्त न लगता था । इस समय माता की बड़ी कृपा है । अनुष्ठान के बीच में ही ऐसे कारण बनने लगे थे जिससे पैसे की कमी से फिक्र न होती थी ।

आत्मिक शान्ति यदि मुझ ही को होती तो कोई आश्चर्य की बात न थी। मेरी पत्नी तथा बच्चे व मेरे चौथे भाई के परिवार में भी बहुत शांति है। हम दोनों भाई एक ही हवेली में रहते हैं । ऐसा ज्ञात होता है माता पूर्ण रूप से प्रसन्न हैं। जिस कमरे में पूजा करता हूँ, किसी समय भी जब उसमें घुसता हूँ तो ऐसा मालूम होता है कि मेरे अन्दर कोई शक्ति विराजमान है घुसते ही अन्त:करण खुशी से गद्‌गद होने लगता है।

मैं पहले से भी गायत्री का जाप किया करता था जिसके कारण कई अच्छी नौकरी पर भी पहुँचा कई बार मुझे बड़े संकटों से बचाया। उस समय मैं यह न समझ पाया कि वह सब माता का प्रसाद है। अब मुझे उस सबका स्मरण होता है तो दिल गद्‌गद हो उठता है। एक बार तो मैं दिल्ली में ट्राम के नीचे आ गया था साइकिल पर सवार था । क्षण भर में सब कुछ हो गया यह भी पता न चाल कि किधर से उसके नीचे पहुँचा । निकलने पर साईकिल एक तरफ ठीक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

हालत में पड़ी, मिली मेरे भी खास चोट न आई। साइकिल उठाकर दफ्तर चला गया।

अब मेरा यह प्रण है कि सामर्थ्य के अनुसार माता की सदा सेवा करता रहूँगा। गायत्री प्रचार को बढ़ाने में सहायक बनूंगा। हम छः प्राणी हैं मैं मेरी स्त्री, दो लड़के व दो लड़की, सब ही माता के दास हैं। माता को याद करते रहते हैं। मेरे कई सम्बन्धी व मित्र मेरे विचार के बनते जा रहे हैं।

अनेक आपदाएँ टलीं

श्री ज्वाला प्रसाद शर्मा, मेवानगला, से लिखते हैं कि गत वर्ष मैं होली से पहले अपनी बहन लिवाने देवा नामक ग्राम जिला मैनपुरी में गया तो वहाँ से मुझे नहीं आने दिया। मेरा तो नियम ही था पूर्णिमा को हवन करने का सो मैने हवन विधि सहित किया दूसरे दिन जब होली का गाना बजाना वहाँ के मुखिया के घर से शुरू हुआ तो मुखिया अपने ४-५ वर्ष के बच्चे को गोदी में लिये था और बच्चा सो गया। सो मुखिया उस बच्चे को चारपाई पर सुलाने गये और बच्चे को ज्योंही सुलाया वैसे ही मुखिया के हाथ में बिच्छू ने काट लिया और काटते ही उन्होंने एक दम जैसे बच्चे को छोड़ा वैसे ही बच्चा भी काट लिया। वहाँ बिच्छू बहुत चढ़ता है और थाली से उतरता है। अब वहाँ होली बन्द हो गयी और सभी लोग घबड़ा गये और थाली बजने लगी । जस होने लगे बच्चे के काटे में मुखिया तो अपना दुःख भूल गये और उनका विष उतर गया। परन्तु बच्चे का विष थाली से भी नहीं उतरा और झाग डाल गया तो स्त्रियाँ रोने लगीं और सारा गाँव हाहाकार करने लगा।

इतने ही में किसी ने मेरा पता दिया कि ज्वाला प्रसाद इलाज करते हैं । अब मेरे पास एक आदमी बहुत घबराया हुआ आया और मुझे सारा हाल बताया। अब मेरे पास कोई औषधि तो थी ही नहीं फिर भी में गुरुदेव तथा भगवती गायत्री का नाम लेकर यज्ञ की भस्म लेकर वहाँ गया तो देखा कि सभी लोगों की बड़ी असहनीय दशा थी और उस बच्चे के शरीर पर अनेकों दवाएँ लगी हुई थीं। मैंने सारी दवाओं को साफ कराया और गायत्री मन्त्र पढ़कर उसके शरीर पर भस्म की मालिश की और मालिश करते ही दो मिनट के अन्दर उसकी दांती खुली । दांती खुलते ही मैंने कुछ भस्म उसको गङ्गाजल के साथ पिलाई । पीते ही बच्चा कुछ रोया और फिर शान्त हो गया । फिर मैंने कहा सब लोग यहाँ से चले जाओ, बच्चे को सोने दो । फिर बच्चा सो गया और सुबह को ठीक उठा।

एक घटना अभी हाल में हुई हमारे सगे भाई ननसार नाथै जिला बदायूँ में रहते हैं तो खबर सुध लेने वहाँ गया था तो देखा कि हमारी भाभी को भूतोन्माद हो गया जो रात्रि में चाहे जहाँ चल देती अँट संट बाते करतीं कुछ खाती न पीती और सब घर वालों से झगड़ीं । एक दिन मैं सन्ध्या कर रहा था इतने में उनकी हालत बहुत खराब हो गई तो उनका भतीजा भागा हुआ आया और बोला कि सन्ध्या फिर करना पहले घर आओ । माताजी को बहुत गड़बड़ी है । मैं माला जप रहा था और पूरी करके वहाँ पहुँचा तो जैसे ही नवज देखने को हाथ बढ़ाया वैसे ही बहुत जोरों से उठने लगीं और बोली मुझसे कि तू यहाँ भी आ गया तेरे घर तो मेरी दाल गली नहीं फिर मैंने कहा कि तू कहाँ से आया है मैं तुझे यहाँ भी नहीं रहने दूंगा। मैंने कहा इसको डाटो और गङ्गाजल मँगाया । फिर मैंने गङ्गाजल अभिमंन्त्रित करके दिया । कुछ ही देर में शान्ति मिली और मैने विचार किया कि यदि न गया तो इसके हाथ से गायत्री यज्ञ कराऊँगा परन्तु उनको उसी दिन से आराम हो गया।

इसी प्रकार हमारे भतीजे की शादी होकर आई तो उसकी बहू के पेट में इतना विकट दर्द हुआ कि बेचारी दर्द से सारे घर में लोटी लोटी फिरे और उसको अनेक दवाइयाँ दीं कुछ फायदा न हुआ । तब मैंने अभिमन्त्रित करके जल और गङ्गाजल मिलाकर पिलाया । पीते ही वह आराम से सो गई और इसी प्रकार की अनेक घटनाएँ और भी मुझे हुईं और होती रहती हैं विस्तार से नहीं लिख रहा हूँ और सत्सङ्ग वगैरह के तो अवसर मिलते ही रहते हैं।

गायत्री उपासना के अनन्त लाभ

पं. रामचन्द्र व्यास, बागली लिखते हैं कि इस समय मेरी आयु ५४ वर्ष की है । मैं यह नहीं कहता कि मेरा कोई दोष न था । सारे दूसरे लोग मेरे दुश्मन बन गये । दोष मेरा भी न था परन्तु जिन लोगों ने दुश्मनी की उनके साथ मेरी कोई दुश्मनी नहीं थी । में उनका मैंने कोई अहित नहीं किया अकारण मेरे शत्रु बने।

भगवती की असीम कृपा व दया से बड़े बड़े रईस, जागीरदार मेरे विरुद्ध होते हुए मेरा कुछ भी नुकसान न करे सके ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मैंने किसी कालेज या बड़ी पाठशाला में विद्या अध्ययन नहीं किया । आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण मेरे पूज्य पिताजी ने ही हिन्दी का कुछ बोध करा दिया था ।

मैं प्रारम्भ से आज तक गायत्री उपासना करता आया हूँ । इसके प्रभाव से मुझे अच्छी नौकरियाँ मिलीं । वकील के पद से कोर्टों में मुख्तारी द्वारा प्रेक्टिस की, जागीरों में उच्च पदों पर काम किया । मामूली लिखा पढ़ा होने पर मजिस्ट्रेटी के पद पर भी पाँच वर्ष तक कार्य किया ।

कई बड़े-बड़े संकट आये । दुर्व्यसनों का भी शिकार हुआ, भगवती के जप व अनुष्ठान से अब संकट दूर हुये । शत्रुता का अन्त हुआ । अर्थात् दुर्व्यसनों का अन्त हुआ ।

मेरी आर्थिक स्थिति अत्यन्त कमजोर होने की दशा में मित्रों ने, नातेदारों ने, घनिष्ठ निकटवर्ती काकी, मामाओं ने कोई साथ किसी प्रकार का नहीं दिया । जिन मित्रों के लिए मैंने अपने सम्पूर्ण जीवन भर साथ दिया उसने भी समय आने पर मेरे साथ दुर्व्यवहार किया । और मेरे हर जीवन के कार्य में उसने रुकावट की । परन्तु भगवती की दया से मुझे सफलता ही मिली ।

आज मेरे चार लड़के अच्छी शिक्षा पा चुके । मेट्रिक, बी. ए., बी. ए. एल. एल. बी. साहित्य रत्न, विशारद हैं । परीक्षाओं में अच्छे डिविजन में उत्तीर्ण हुए और चारों इस सयम अच्छी सर्विस में हैं । बड़ा पुत्र मदनलाल व्यास शहर इन्दौर टेलीग्राफ में सिनगनेसर है । उससे छोटा शिवलाल व्यास रसलपूरा (महू) हाईस्कूल में अध्यापक है और इस वर्ष एल. एल. बी. के फाइनल इम्तिहान में शिक्षा पा रहा है । तीसरा वेणीमाधव हाईस्कूल सनवास में अध्यापक है । बी. ए. है । चौथा रघुनन्दन व्यास एफ. ए. है । भोपाल में टेलीफोन एक्सचैंज आफिस में टेलीफोन आपरेटर है । पाँचवां लड़का शिवाली राव हाईस्कूल इन्दौर में शिक्षा पा रहा है इस वर्ष मेट्रिक में है ।

माता-पिता के देहावसान के पश्चात् कुटुम्बियों ने अधिक सताया, मित्रों ने साथ नहीं दिया । परन्तु माता गायत्री ने साथ दिया । लड़कों की शिक्षा लड़कों के विवाह, माता-पिता के उत्तर कर्म जाति भोज आदि सभी कार्य हुए । जिनमें हिसाब जोड़ा जाय तो कई हजार रुपया होता है । यह सब कैसे हो गया भगवती ही जाने।

लड़कों के सम्बन्ध सगाई के करने-कराने में कुटुम्बियों का कोई हाथ नहीं । घर की स्थिति अत्यन्त नाजुक दरिद्रता ने कुछ समय के लिये अच्छा मुकाम किया । इस दरिद्री अवस्था में नातेदारों की, घनिष्ट मित्रों की भगवती ने पहचान कराई । यह भी भगवती का प्रसाद ही था ।

पं. शिवदत्तजी शुक्ल उज्जैन गुदड़ी बाजार के लेख भगवती उपासना के सम्बन्ध में कल्पवृक्ष मासिक पत्र उज्जैन में आते थे। उनको देख-देखकर मुझे अत्यन्त लाभ हुआ । मैं स्वयं पण्डित शिवदत्त जी के पास गया । उनके उपदेश से सवा-सवा लक्ष के अनुष्ठान किये । पंडजी ने कहा कि नित्य ब्रह्म मुहूर्त में १००० जप व उसका दशांश भुवन ६ वर्ष तीन मास तक करो तो तुम्हारा गायत्री पुरश्चरण हो जायगा । मैंने पं. शिवदत्तजी के उपदेश को ग्रहण किया और भगवती की कृपा से सवा छः वर्ष तक १००० जप व दशांश हवन का कार्य चलता रहा । इसी २४००००० लक्ष जप हवन का प्रताप है कि आज सफलता के दर्शन करता हूँ ।

प्राण घातक संकटों से मुक्ति

डॉ. एस. सी. गोस्वामी, मथुरा से लिखते हैं कि ५ वर्ष पूर्व जब मेरी आयु केवल २० वर्ष की थी विधाता ने ऐसे क्रूर प्रहार आरम्भ किये कि मैं तिलमिला उठा । शब्दों के द्वारा उन स्थितियों को समझाना असम्भव ही है। कोई भुक्तभोगी ही समझ सकता है । पितृ वियोग होने के बाद भी देवता समान श्रेष्ठ भ्राता ने पिता का अभाव न मालूम होने दिया । लेकिन नियति को यह सौभाग्य देखकर भी शायद ईर्ष्या हुई होगी । उसने सर्व गुण सम्पन्न भाई को भी पिता की मृत्यु के कुछ समय पश्चात् ही छीन लिया ।

मुसीबतें आती हैं तो चारों ओर से आती हैं । गृहस्थी का भार मेरे कमजोर कन्धों पर आ पड़ा । पिताजी इस जिले के नामी होम्योपैथिक डाक्टरों में थे । उनका स्मृति चिह्न उनका दवाखाना कैसे चले ? बड़ी विकट समस्याएँ सामने थीं । यद्यपि पिताजी की उचित व्यवस्था द्वारा रोटियों का घाटा नहीं था परन्तु दुनियाँ में और भी बहुत समस्याएँ ऐसी हैं जिनको हल करना बड़ा मुश्किल हो जाता है ।

कुछ दिन बाद नाना प्रकार की दुश्चिन्ताओं के परिणामस्वरूप में भयंकर रोग द्वारा ग्रसित हो गया । रोग का नाम था "टी. बी. ग्लांडस" यानी कण्ठमाला एक-एक करके नौ गाँठ बड़ी भयङ्कर रूप से फूट निकलीं साथ-साथ ज्वर भी रहने लगा । डाक्टरों से पूछने पर बताया गया कि यह सबसे भयंकर किस्म की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

''कण्ठमाला'' है । इस रोग में बहुत कम रोगी बचते हैं।

बड़ी विचित्र स्थिति थी । माँ दिन-रात रो-रोकर जान दिये देती थी। उसका रोना भी उचित था । दो लड़कों में से बड़े लड़के मोटर दुर्घटना से मर चुके एक मैं बचा हूँ उसे यह राजरोग लग गया । तरह-तरह के राय मशविरे चिकित्सा सम्बन्धी दिये गये लेकिन अन्त तक यह निश्चय न हुआ कि कौन सी चिकित्सा कराई जाय ।

एक दिन चित्त बड़ा दुःखी हो गया । मैं अपने कमरे में लेटा दुःखी होकर रोने लगा, और मन ही मन पिता जी की याद करके दुःखी होने लगा । न जाने कब आँख लग गई । स्वप्न में पिताजी ने दर्शन दिए । वे मुझे आशीर्वाद देकर बोले बहादुरी से अपनी परिस्थितियों का मुकाबला करो भगवान कल्याण करेंगे । कुछ और भी बातें बताई जिन्हें कारणवश मैं कहने में असमर्थ हूँ । निन्द्रा खुल गई । घर में सबको मैंने स्वप्न की बात बताई तो सब लोगों ने मेरी बात पर विश्वास न किया ।

हालत बजाय सुधरने के दिनोंदिन खराब होने लगी अन्त में उनका इलाज बन्द कर दिया । दो एक डाक्टरों की दवा कुछ दिन और की गई पर मर्ज बढ़ता ही गया । किसी ने सलाह दी मृत्युंजय मन्त्र तथा गायत्री का जप करो । बात मन में जम गई ।

एक मन होकर गायत्री साधना प्रारम्भ कर दी, दो वर्ष की कठिन साधना के बाद मेरा रोग दूर हो गया । मैं स्वस्थ हूँ परन्तु एक मानसिक रोग शेष रह गया । अन्त में उस रोग का इलाज बहुत कुछ आचार्य जी पूज्यनीय श्रीयुत श्रीराम शर्मा जी अखण्ड ज्योति के सम्पादक एवं गायत्री तपोभूमि के अधिष्ठाता ने किया । इनके श्री चरणों की कृपा से मुझे गायत्री माता की महिमा का अनुभव हुआ । तब मैंने माँ के श्री चरणों में आश्रय ले लिया है एवं भगवती की अनुकम्पा से बड़े-बड़े कठिन टी. वी. सरीखे रोगियों को अच्छा करने में सफलता प्राप्त कर चुका हूँ एवं अब धीरे-धीरे यह विश्वास होने लगा है कि माँ के आशीष से मैं अवश्य अपने पिता का नाम और यश फिर से स्थापित करने में सफल हो सकूँगा ।

बाघ को भी परास्त करने वाला अस्त्र

श्री मुनिलाल चौधरी, मोतिहारी से लिखते हैं कि मेरे एक मित्र हैं । नाम रघुनाथ शुक्ल ग्राम बसबरिया पोस्ट मोतिहारी जिला चम्पारन । बसमैत ब्राह्मण हैं । गत वर्ष शत्रुओं ने इन पर लूट और कत्ल करने का मुकदमा लगा दिया । गिरफ्तार होने पर जमानत भी न होती थी इसलिए वे अपने बचाव के लिए नेपाल की सीमा में चले गए और अपने छुटकारे के लिए गायत्री उपासना करने लगे ।

एक दिन वे पहाड़ के रास्ते सायंकाल को सात बजे एक जगह जा रहे थे । रास्ते में क्या देखते हैं कि उनसे १५-२० गज की दूरी पर बीच रास्ते में एक बड़ा विशालकाय बाघ बैठा हुआ है । मनुष्य को इतना पास देखकर बाघ उठकर खड़ा हो गया और उन्हीं की ओर क्रोध भरे नेत्रों से गुर्राने लगा । शुक्लजी को ऐसा लगता था कि क्षण भर में वह हमला करने वाला है । हाथ खाली थे, कोई हथियार भी पास में नहीं था जिससे आत्म-रक्षा करते । विवश होकर वे मृत्यु की घड़ी गिनने लगे । ऐसे समय पर उन्हें एक उपाय सूझा कि मन ही मन तीव्र भावना के साथ गायत्री माता को पुकारने लगे, गायत्री मन्त्र का जप करने लगे । वे सोचते थे कि यदि प्राण न बच सके तो भी गायत्री मन्त्र का जप करते हुए मरने से आत्मा की सद्गति ही होगी ।

शुक्लजी का यह हथियार अचूक निकला । उसने दुनाली बन्दूक का काम किया । गुर्राता हुआ बाघ पानी पानी हो गया । उसने उठी हुई गर्दन नीचे झुकाई और कुत्ते की तरह दुम हिलाता हुआ चुपचाप चला गया और दूर जाकर उधर से पीठ फेर कर खड़ा हो गया । शुक्लजी उसी बगल से सकुशल निकल गये ।

इस घटना के बाद अनन्य गायत्री भक्त बन गये हैं। इनकी आपदाएँ एक-एक करके सभी शान्त होती चली जा रही हैं । गायत्री की शक्ति की तुलना का और कोई अचूक हथियार इस संसार में नहीं है । इसी से उसे ''ब्रह्मास्त्र'' कहा जाता है ।

संकट में सहायता करने वाली गायत्री माता

श्री शम्भु प्रसाद मिश्र, हृदयनगर से लिखते हैं—

(१) मध्य प्रदेश में मालगुजारी उन्मूलन के पश्चात् मेरा मुख्य धन्धा केवल कृषिकर्म शेष रह गया । सन् १९५० ई. में यहाँ मालगुजारी प्रथा का अन्त हुआ। तभी से मैं अर्थ संकट से घिरा रहता था क्योंकि पूर्वजों की बनाई सम्पूर्ण जमीदारी को राज्य विधेयक द्वारा छीन लिया गया । गत मई ५३ से मैंने अत्यधिक अर्थ संकट अनुभव किया । गृहस्थी बड़ी, खर्चे अधिक और आमद न्यून यहाँ तक कि आवश्यकता पर उधार कर्ज में भी द्रव्य मिलना कठिन था । मैं दिन-रात अपने खर्चे की पूर्ति के लिये चिन्ता में लीन रहता । तब ऐसे कठिन समय में मैंने अपनी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इष्ट माता के द्रव्य की सहायता की माँग की । जिस दिन मैंने इष्ट माता गायत्री से द्रव्य सहायता की प्रार्थना की उसके दूसरे दिन मुझे सूचना प्राप्त हुई कि "मध्य प्रदेश सरकार" के उप प्रधान सचिव माननीय श्री नरेशचन्द्रसिंह जी २० मई ५३ ई. को हृदयनगर में आवेंगे।

मेरे पास एक बड़ा जङ्गल था । उसमें बहुत से सागौन आदि के वृक्ष थे । पर सरकारी प्रतिबन्ध के कारण उन्हें बेचने या काटने का अधिकर न था । पैसे की तङ्गी दूर होने का एक ही उपाय सूझ रहा था कि यदि इस जङ्गल को काटने की स्वीकृति मिल जावे तो कठिनाई दूर हो । पर मेरे लिए वह प्रतिबन्ध क्योंकर हटेगा, यह एक निराशा की बात थी । मैंने गायत्री उपासना पर पूरा बल लगा दिया और नियत तारीख पर अपनी अर्जी लेकर उप प्रधान सचिव के समक्ष उपस्थित हुआ । इसे माता की कृपा कहना चाहिए कि जङ्गल काट लेने की स्वीकृति मुझे मिल गई । फलस्वरूप ५०० सागौन के दो दो फुट से अधिक मोटे वृक्ष मैंने उसी दिन बेच दिये । उनका रुपया आने से उलझी हुई सभी आर्थिक कठिनाइयों का समाधान हो गया ।

(२) लगभग दो साल से मेरा स्वास्थ्य बिगड़ा हुआ था । शरीर निर्बल कफ, खाँसी, श्वांस की अत्यधिक तकलीफ, साथ ही गुदा रोग की शिकायत, आयुर्वेदिक उपचार और डाक्टरी परीक्षा आदि सब उपाय शरीर रक्षा के लिये हो रहे थे परन्तु शारीरिक निर्बलता बढ़ती ही गई, यक्ष्मा और श्वांस जैसे भयङ्कर रोगों का दौरा । सब घर वाले सम्बन्धी जन समझते थे यद्यपि बीच-बीच में दवाओं के प्रभाव से व भगवत कृपा से स्वास्थ्य लाभ के लक्षण दीखते थे परन्तु हम सब लोगों को मेरे स्वास्थ्य के प्रति महान चिन्ता थी । पण्डितों ज्योतिषियों ने महामृत्युंजय मन्त्र विशेष संख्या में आरोग्यता लाभ के लिये जप कराने की व्यवस्था दिये और महामृत्युंजय मन्त्र जप आरम्भ कराने के लिये भी मैं प्रबन्ध कर रहा था परन्तु उसी समय श्रावण २०१० वि. यानी एक माह के भीतर ही मैं कफ खांसी से विशेष कष्ट के कारण पुनः बुरी तरह रोगग्रस्त हो गया । घर के लोग मेरे पलङ्ग के पास छोटी टोकनी में राख रख देते थे । प्रातः टोकनी कफ से भरी मिलती । रात भर पूरी नींद लेना कठिन था, यों चिकित्सा चालू थी । दवा मैं ले रहा था पर प्रारब्ध भोग को मिटाने की शक्ति तो केवल परमात्मा में ही है। मैंने गायत्री उपासना के अवलम्बन को सँभाला क्योंकि मुसीबत के समय प्राण रक्षा करने वाली एक मात्र शक्ति वही है । मेरा रोग धीरे-धीरे घटना आरम्भ हुआ और कुछ ही दिनों में स्थिति सुधर गई । अब टोकनी रखने की जरूरत नहीं । रात भर पूरी नींद आती है । यों चमत्कारपूर्ण भयङ्कर रोग से छुटकारे का मूल कारण वही वेदमाता गायत्री की रहस्मय कृपा है व प्रत्यक्ष दैवी कला है । जो श्री गायत्री माता अपने भक्त पुत्रों को सदा प्रदान करती हैं, जो पुत्र अपनी इष्ट माता गायत्री की शरण में पूर्ण विश्वास के साथ रहते हैं उनके सभी कार्य सफल होते हैं । उन्हें चारों पदार्थ अवश्य ही प्राप्त होते हैं ।

गायत्री साधना निष्फल नहीं होती

पं. वैजनाथ जी तिवारी, जबलपुर से लिखते हैं कि मेरी उम्र इस वक्त ४६ वर्ष की है, मैं केवल छठवीं तक अंग्रेजी पढ़ सका हूँ, मेरे पिताजी जमींदार थे । जब मैं कुछ समझने योग्य हुआ तब जमींदारी जाती रही । बड़े भाई का देवलोक हो गया और थोड़ा सा कर्ज अदा करने के लिए मकान का एक हिस्सा बेचना पड़ा । भविष्य बहुत भयानक दीखने लगा, यहाँ तक कि परिवार का खर्च सँभालना कठिन हो गया । सन् १९४० में मुझे अपनी सुसराल मौजा उत्तरी फर्रुक्खाबाद लोहन; जिला, कानपुर जाने का मौका पड़ा । वहाँ मुझे मेरे एक रिश्तेदार मौजा, बरूआ, पास चौबेपुर जिला कानपुर लिवा ले गये । मौजा बरूआ में भी गङ्गा जी तट, श्रीमान परिव्राजकाचार्य श्री १०८ स्वामी ज्ञानाश्रम जी महाराज के मैंने दर्शन किये और उनसे मैंने गुरु दीक्षा देने की प्रार्थना की । श्री स्वामी जी ने मुझे गुरु दीक्षा इस इकरार पर देना मन्जूर की कि मैं स्वयं पहले सवा लाख गायत्री जप करूँ और संख्या पूर्ण होने पर अपनी रिपोर्ट उनके पास भेजूँ । मेरे सामने हर तरह की कठिनाइयाँ थीं । इन सब मुसीबतों से बचने के ख्याल से मैंने श्री स्वामी जी की आज्ञा का पालन किया और उनसे गुरु दीक्षा मन्त्र उपदेश ग्रहण किया । श्री गुरुजी ने मुझे यह उपदेश दिया कि प्रतिदिन प्रातः व सायं काल श्री गायत्री तथा गुरुमन्त्रजप निश्चित संख्या में करता रहूँ । उनकी आज्ञानुसार आज १२ वर्ष से मैं नित्य जप करता आ रहा हूँ ।

सन् १९४४ में मुझे अपनी भतीजी की शादी करनी पड़ी । उस समय मेरी आर्थिक दशा बडी कमजोर थी और मुझे किसी भी नजदीकी और अन्य रिश्तेदारों से भरोसा नहीं था कि वे मेरे खर्च में मदद देंगे । मेरी भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

हार्दिक इच्छा थी कि मुझे ऐसा मौका न आवे कि इस कार्य के लिए कर्ज लेना पड़े या किसी रिश्तेदार से रकम की मदद लेनी पड़े । श्री गायत्री माता तथा इष्ट देव का स्मरण कर और उन्हीं की आज्ञा समझ मैंने कार्य शुरू किया और कार्य निर्विघ्न बड़े सुन्दर रूप से समाप्त हुआ जिसका मुझे खुद आश्चर्य है । इस कार्य को सुन्दर रूप से समाप्त होता देख मेरे शुभचिन्तक पड़ोसी तथा रिश्तेदार मुझे बहुत लायक, (अहमियतदार) व सपूत समझने लगे और तब से मुझसे ''कर्ज माँगने की आशा'' रखने लगे । समय फिर बदला और यह सब वास्तव में श्री गायत्री माता तथा इष्टदेव की दया और आशीर्वाद का फल है । शुरू में जो मेरी योग्यता के अनुसार मुझे मजदूरी मिलती थी आज उसी काम में मुझे मेरी जरूरत के मुताबिक अच्छी मजदूरी मिल जाती है और अब वस्त्र, अन्न संकट से पूर्ण मुक्त हूँ ।

गत वर्ष कुँवार में 'सन् १९५१' मेरे दाहिने पैर में घुटना के ऊपर और कमर के नीचे मरण सङ्कट दर्द हो गया । अनेक उपचार किये पर आराम नहीं मिला । एक रात्रि को जब दर्द से इतना व्याकुल हो गया कि लेटने बैठने से असमर्थ हो गया तब करीब ४ बजे सुबह मैंने उसी अवस्था में श्री गायत्री माता को इस रूप में स्मरण कर ध्यान किया कि 'माता ये दण्ड मुझे किस खोटे कर्म के मिल रहे हैं । आपका स्मरण तो मैं कुछ काल से नित्य कर रहा हूँ । कैसे समझूँ कि आप दयालु हैं । दर्द से तो प्राण निकल रहे हैं ।' मेरी कराहना सुन मेरी माता स्वयं मेरे पास आई और वे मेरी बुआ की लड़की, 'मेरी बहन जी' को बुलाकर ले आई जो अपने साथ एक शीशी में कुछ १०-२० बूँद दवा लेकर आई । उन्होंने वह दवा लगाकर थोड़ी देर अपना हाथ फेरा बस पाँच मिनट में मेरा दर्द जाता रहा पर क्षणिक दर्द रह गया । मैंने बहिन जी से दवा का नाम पूछा तो उन्होंने बताया कि वह दवा ''दिल आराम तेल है'' जो दिल आराम फारमेसी मौलवीगञ्ज लखनऊ से प्राप्त हो सकता है । दर्द में जब ऐसा तत्काल आराम मिला तो मैंने पाव भर तेल वी. पी. से १३) रु. ८ आना का मँगाया और उसे इस्तेमाल किया पर पहले दिन जो क्षणिक दर्द रह गया था वह दर्द उस दवा से नहीं गया । तब मेरा और भी पक्का विश्वास हुआ कि मरण संकट दर्द में तत्काल आराम मिलना, श्री गायत्री माता से प्रार्थना करने का ही फल था । यह सब चमत्कार देख मेरी अटूट श्रद्धा बढ़ गई है ।

अब मैंने जीवन में यह निश्चय कर लिया है कि अपने स्वल्प साधना के साथ ही साथ अधिक से अधिक मैं श्री गायत्री जप का प्रचार करूँ । इसी उद्देश्य को लेकर मैंने अपने मित्रों के सहयोग से श्री गायत्री प्रचार मण्डल की शहर में स्थापना सन् १९५१ में की और हर पन्द्रवें दिन रविवार को श्री गायत्री प्रचार हेतु बैठक करता आ रहा हूँ । इस तरह श्री गायत्री प्रचार का कार्य ग्वारीघाट में श्री नर्मदा नदी तट पर भी इसी साल से चालू कराया है । मेरा विश्वास है कि श्री गायत्री जप नित्य बिना नागा, समय पर, श्रद्धा और सत्कारपूर्वक, दीर्घकाल तक ''संसारी धन्धों में रहने पर भी'' जप करते रहने से महान भय से रक्षा होती है और जीवन सफल हो जाता है और साधक अन्न वस्त्र संकट से पूर्ण मुक्त रहता है ।

उपासना के कुछ प्रत्यक्ष परिणाम

श्री. पं. हरिशंकर पाण्डेय शास्त्री, इटारसी से लिखते हैं कि गायत्री उपासना की शिक्षा मुझे ११ वर्ष की आयु में उस समय मिली जब मेरा यज्ञोपवीत हुआ था । जिस दिन से यह महामन्त्र मुझे मिला उस दिन से लेकर आज पर्यन्त मैं पूर्ण श्रद्धा और लग्न के साथ नियमित रूप से इस साधना को करता हुआ चला आ रहा हूँ ।

गायत्री के अनेक लाभ बताये जाते हैं उनमें से कुछ को मैंने अपने जीवन में प्रत्यक्ष देख लिया है । पहला लाभ जिसका मैंने भली-भांति अनुभव किया है यह है कि जिससे साधक की बुद्धि निर्मल एवं कुशाग्र बनती है । मैं पढ़ने में सदैव तेज रहा, स्मरण शक्ति और धारणा-शक्ति सदैव तेज रही, २५ वर्ष की आयु में मेरी शादी हुई इससे पूर्व ही आयुर्वेद की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर चुका था ।

घर की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी, मैं एक अच्छा दवाखाना खोलना चाहता था । घर के लोगों से चर्चा की तो उन्होंने दवाखाना खोलने लायक पैसा जुटाने में असमर्थता प्रकट की । दूसरी कठिनाई यह थी कि इटारसी जैसे नगर में जहाँ बीसों डाक्टर, वैद्य और अस्पताल मौजूद वहाँ नये एवं छोटे दवाखाने का चलाना कठिन दिखाई पड़ता था । सब लोग मुझे नौकरी देने की सलाह दे रहे थे । इच्छित व्यवसाय करने का मार्ग रुका हुआ दिखाई पड़ता था । निराशा और चिन्ता से मेरा मन भारी हो रहा था ।

एक दिन अस्थिर चित्त से जब मैं पूजा में बैठा हुआ माता से अपनी मनो व्यथा कह रहा था तो

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अचानक ऐसी अन्तः प्रेरणा हुई कि ''मैं अपना कार्य आरम्भ करूँ मुझे दैवी सहायता मिलेगी ।'' मुझे उत्साह प्राप्त हुआ और एक छोटा सा किराये का मकान लेकर औषधालय आरम्भ कर दिया । कार्य में आशाजनक सफलता मिली, जिस रोगी पर हाथ डाला वह अच्छा ही हुआ । अनेकों असाध्य और कष्ट साध्य रोगी अच्छे करने का श्रेय अपने को प्राप्त हुआ । साथ ही धन और यश की भी वृद्धि हुई । इन थोड़े से ही दिनों में दस हजार से अधिक रुपया लगा कर अपना निजी मकान बनाया है । बगीचा, औषधालय मरीजों के वार्ड आदि बनाने के लिये ३० एकड़ जमीन खरीदी है जिस पर शीघ्र ही एक विशाल भवन बनने की तैयारी हो रही है । हजारों रोगियों की सेवा इस छोटे दवाखाने से आज भी हो रही है फिर नयी व्यवस्था के अनुसार तो और भी विशाल पैमाने पर सेवा कार्य होना संभव है ।

यह सब गायत्री उपासना का ही चमत्कार है । अन्यथा कुछ ही समय पहले जब औषधालय खोलने लायक पूँजी, सहायता एवं सुविधा की कोई व्यवस्था न थी कौन यह आशा करता था कि साधनों के अभाव में भी इस प्रकार की उन्नति सम्भव है ।

आत्मिक दृष्टि से गायत्री उपासना द्वारा जो लाभ हुआ है उनका उल्लेख न करना ही शिष्टाचार की दृष्टि से उचित है, माता मेरी अन्तःभूमि को जिस प्रकार निर्मल करती जा रही हैं उस प्रगति को देखते हुए यह आशा करना भी अनुचित नहीं कि अपना मनुष्य जन्म निष्फल जायगा ।

कठिन प्रारब्ध से सहज छुटकारा

श्री. मगन लाल गान्धी, नवसारी का कहना है कि कठिन प्रारब्ध भोगों का कुचक्र ऐसा है जिसे भोगे बिना मनुष्य को छुटकारा नहीं मिलता । दशरथ जी भगवान राम के पिता थे, उनकी मृत्यु पुत्र शोक में अर्त विलख-विलख कर हुई । इस प्रकार की मृत्यु संसार में सब से अधिक कष्टदायक होती है । रामचन्द्र जी भगवान होते हुए भी अपने पिताजी को ऐसी करुणाजनक मृत्यु से न बचा सके । इसी प्रकार पाण्डवों का वृत्तान्त है । द्रोपदी का अपमान, अभिमन्यु का वध, अज्ञात वनवास, दास्वृत्ति, नाना प्रकार के त्रास और अन्त में बर्फ में गल कर सरने की पीड़ा इतने दुख पाण्डवों को निरन्तर सहने पड़े, बेचारे जीवन भर परेशान रहे । भगवान कृष्ण उनके परम सखा, सहायक एवं सम्बन्धी थे फिर भी वे उनके प्रारब्ध भोगों को मिटाने में सफल न हो सके ।

कई बार सत्पुरुषों को भी पूर्व संचित प्रारब्ध भोगों के कारण दुख उठाने पड़ते हैं । राजा विक्रमादित्य, हरिश्चन्द्र,अम्बरीष, नल आदि को जो कष्ट उठाने पड़े वे किसी से छिपे नहीं हैं । अहिल्या, द्रोपदी, शैव्या, आदि देवियों को जो कष्ट सहने पड़े उसमें उनके तात्कालिक कर्म कारण नहीं थे । उनके तत्कालीन जीवन तो परम पवित्र थे, उसमें कोई कारण त्रास मिलने का न था, फिर भी उन्हें किन्हीं भोगों को भोगने के लिए विवश होना पड़ा । ऐसी घटनाएँ इस संसार में अनेकों घटित होती रहती हैं ।

मुझे भी एक ऐसी ही घटना का सामना गत वर्ष— २ अप्रैल सन् ५२ को करना पड़ा । मेरी दुकान में अचानक आग लग गई और देखते-देखते हजारों रुपयों का सामान जल कर भस्म हो गया । अग्निकाण्ड की भयंकरता को देखते हुए पड़ोसी दुकानदारों का प्राण सूख रहा था, उनकी दुकान में आग फैल जाती तो अनेकों का भयंकर अनिष्ट होता । आग बुझाने के प्रयत्नों के साथ-साथ हम लोग मन ही मन भगवान को पुकार रहे थे कि अब इस अनिष्ट को आगे बढ़ने से रोकिये । मेरी श्रद्धा गायत्री माता पर है । माता का ध्यान करने और उनसे अपनी आर्त पुकार करने के अतिरिक्त और कोई मार्ग न सूझ पड़ता था । दुकान जल जाने के बाद फिर क्या होगा, मेरा कैसे गुजारा होगा, यह चिंता सभी दर्शकों एवं हितैषियों के चित्त को दुखी बना रही थी । किसी प्रकार आग काबू में आई और उद्विग्नता कम हुई ।

दुकान की आग बुझ गई पर चिन्ता और निराशा की आग जल उठी । हरि का हरनाम सहायक होता है । गायत्री माता से बेड़ा पार करने की पुकार करने लगा । और करता भी क्या ?

सच्ची प्रार्थना निष्फल नहीं जाती । मेरी भी निष्फल नहीं गई । कुछ समय पूर्व अनायास और अनिष्ठापूर्वक दुकान का बीमा करा लिया था । वह इस आडे समय में काम आया । जितनी हानि हुई थी उसके अधिकांश की पूर्ति हो गई । एक ओर से मेरा भोग भुगत गया दूसरी ओर विगत कई वर्षों की लगातार गायत्री उपासना के फलस्वरूप उस हानि की पूर्ति भी हो गई ।

काल पुरुष अपना काम करता है । प्रारब्ध भोग छूटत नहीं, पर माता की कृपा भी अपना काम करती है। डाक्टर का तेज चाकू आपरेशन करता है पर दयामयी नर्स शीतल मरहम लगाने को तैयार रहती है । माता का अंचल पकड़कर हम अपने कठिन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कर्मों के भवसागर को आसानी और सुविधापूर्वक पार कर सकते हैं ।

भयंकर काले सर्प का विष निवारण

पं. बालाराम शर्मा, भोपाल का कथन है कि गायत्री उपासना से धीरे-धीरे मनुष्य के सब संकट दूर होते हैं पर कई बार ऐसा भी होता है कि तत्काल भारी संकट से निवृत्ति हो जाती है । यों तो भगवान् भक्तों का कल्याण सदैव ही करते हैं पर आपत्ति पड़ने पर वे ग्राह के मुख से गज को छुड़ाने के लिए, दुशासन से द्रोपदी की लाज बचाने के लिए जिस प्रकार दौड़े आये थे उसी प्रकार गायत्री माता भी आपत्ति के समय रक्षा करती हैं, इसके अनेक उदाहरण हमने देखे हैं । उनमें से एक उदाहरण नीचे लिख रहे हैं ।

इसी वर्ष कार्तिक कृष्णा ९ की बात है । प्रातः काल मैं उपासना पर बैठा हुआ था, जप पूरा भी न हो पाया था कि दरवाजे पर बड़ी घबराहट भरी आर्त पुकार सुनाई पड़ी । पुकारने वाला व्यक्ति मेरे पास दौड़ता हुआ सीधा आया और बोला—भैया अनर्थ हो गया, मेरी इकलौती लड़की को काले विषधर साँप ने काट लिया, उसको किसी प्रकार बचाओ, तुम्हारा पूजा पाठ मेरे फिर किस काम आयगा । चलो, तुरन्त उठो और उसके प्राण बचाओ ।

मैंने हाथ के इशारे से कुछ ठहरने को कहा और आधी माला को पूरा करे उठ बैठा । बात चिन्ताजनक थी, इधर के विषधर साँप बड़े भयंकर होते हैं । उनके काटने पर कोई विरला ही बच पाता है । बालिका बड़ी मृदुल थी । उसकी इस प्रकार मृत्यु होने की कल्पना से मेरा भी जी टूटने लगा । जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाता हुआ मैं उसके साथ चल दिया ।

जाकर देखा तो लड़की बिल्कुल बेहोश थी, नेत्र लाल हो रहे थे, मुख से विषैला फेन निकल रहा था । ऐसे मृत्यु के मुख में जाते हुए प्राणी को निकालने के लिये क्या उपचार हो सकता था, इस छोटी बस्ती में किसी अच्छे उपचार की तत्काल व्यवस्था होने की भी सुविधा नहीं । फिर अपने बूते की जो बात हो उसे तो करनी ही चाहिये । मेरे ऊपर उपचार का भार डाला गया था । 'निर्बल के बल राम' होते हैं, मेरे पास गायत्री के अतिरिक्त और कोई दवा दारू नहीं । उसी का प्रयोग बालिका पर आरम्भ कर दिया ।

गायत्री मन्त्र से बालिका को मैंने झाड़ना आरम्भ किया । श्री. पुरुषोत्तम राय सारकेट मेरी सहायता कर रहे थे । प्रयोग आरम्भ हुआ साथ ही उसका चमत्कारी लाभ भी दृष्टिगोचर होने लगा । बालिका की बेहोशी दूर होने लगी, मुँह से निकलने वाला झाग बन्द हुआ और आँखें खुलने लगीं । हमारा उत्साह बढ़ा । गायत्री से मन्त्रित करके कालीमिर्च उसे खिलाई और अभिमन्त्रित गङ्गाजल पिलाया । बच्ची के प्राण बच गये । एक दो दिन में ही वह चलने फिरने लगी ।

माता की कृपा से क्या नहीं हो सकता ? मौत के मुँह में प्रवेश हुए प्राणी पुनः लौट सकते हैं । विषधर सर्प के दाँतों का हलाहल भी पानी जैसा हानि रहित बन सकता है ।

बालक की जीवन रक्षा

श्री. प्रहलाद सिंह धर्मप्रेमी, गुड़गाँव से लिखते हैं कि मैं कई वर्ष से तत्परतापूर्वक गायत्री की उपासना कर रहा हूँ । हमारे घर में गायत्री माता के प्रति सभी को श्रद्धा है। गायत्री सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ने के बाद यह विश्वास बहुत गहरा हो गया है कि मनुष्य के लौकिक और पारलौकिक कल्याण के लिए उस महामन्त्र का साधन करना बहुत आवश्यक है ।

सुनते हैं कि ऐसे अनेकों महात्मा हुए हैं जिन्होंने गायत्री का तप करके बड़ी-बड़ी ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त की हैं। उनमें से अनेकों में भूत भविष्य का ज्ञान तथा दूसरों को लाभ पहुँचाने की, यहाँ तक कि प्राण बचाने की भी शक्ति थी । बहुत से लोग इन बातों पर सहसा विश्वास नहीं करते क्योंकि उन्हें इसके लिए प्रत्यक्ष उदाहरण दीख नहीं पड़ते । पर मैंने अपने घर में ही ऐसा उदारहण देखा है जिसके कारण यह विश्वास दृढ़ होता जा रहा है कि माता को आत्मसमर्पण करने वाले साधक निःसन्देह सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं और सर्व समर्थ बन सकते हैं ।

कुछ महीने पहले की ही बात है । मेरी धर्मपत्नी कुएँ से पानी भर कर लाई । घर में ही कुआ है । रोज ही पानी भरती थी पर कभी कोई खराब बात न होती थी। उस दिन वह आई और पानी भरती मुझ से बोली—"कोई इस कुएँ में गिरेगा, उसका बचना मुश्किल है ।"

उसके यह शब्द बड़े अटपटे थे । कुएँ में गिरने का और मुश्किल से बचने का कोई प्रसंग उस समय न था । मैंने उसकी बात को बेतुकी और मूर्खतापूर्ण समझकर अनसुना कर दिया । कुआँ बने मुद्दतें हो गईं । उसमें कभी कोई नहीं गिरा तो अभी आज ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कोई उसमें कैसे गिरेगा? और गिर भी पड़ेगा तो मुश्किल से बचेगा, इस बात की कोई संगति न थी । स्त्रियां अक्सर ऊटपटांग बातें सोचा करती हैं । अपनी इस सहज मान्यता के कारण मैंने उसकी बात पर कुछ भी ध्यान न दिया और अनसुनी करके अपने काम से चल दिया ।

इस बात को कोई पाँच मिनट ही हुए होंगे कि पीछे की ऊपर वाली छत में से मेरे छोटे भाई का ढाई वर्ष का लड़का कुएँ में आ पड़ा बच्चे के गिरने की आवाज सुनते ही सब लोग हड़बड़ा गये छत पर से कुएँ में गिरना, ढाई वर्ष का बालक गहरा पानी, कुएँ का पक्का भीतरी भाग इन सब बातों को एक साथ सोचने पर आँखों के समाने भयंकर अनिष्ट का घोर अन्धकार सामने आ खड़ा हुआ ।

क्षण भर में निकालने का प्रबन्ध किया गया, रस्सी के सहारे एक व्यक्ति कुएँ में उतरा, घर भर में कुहराम मचा हुआ था । सब की आँखें उस कुएँ में उतरने वाले व्यक्ति पर लगी हुई थीं । मैं गायत्री माता से करुणामयी प्रार्थना कर रहा था कि माता आज सहयाता करो, किसी प्रकार बालक के प्राण बचाओ । रोने-धोने वाले घर के सब लोग भी गायत्री माता का ध्यान कर रहे थे । कुए में घुसने वाला व्यक्ति नीचे पहुँचा उसने आवाज दी कि बालक बिल्कुल अच्छा है । अभी ऊपर आता है । बच्चे को ऊपर निकाल लिया गया । देखा तो सबके आश्चर्य का ठिकाना न रहा उसको कहीं खरोंच भी न आई थी । प्रसन्नता और सन्तोष से सबके चेहरे खिल गये ।

इस घटना को कोई दूसरी दृष्टि से देखना चाहे तो देख सकता है पर मेरी दृष्टि से इसमें माता की कृपा का चमत्कार छिपा हुआ है । स्त्री को किसी के कुएँ में गिरने की पूर्व सूचना अकारण नहीं है । वह कहती थी कि मुझे बिल्कुल ऐसा लग रहा था मानो कोई अब तब इस कुएँ में गिरने ही वाला है। संभवत: उसकी आत्मिक पवित्रता के कारण उसे भविष्य की घटना का पूर्वाभास हो रहा था । इसके ऊँचे से गहरे जल में ढ़ाई वर्ष के बच्चे का गिरना और उसका अछूता हँसना, खेलना निकलना, हम लोगों के ऊपर दैवी अनुग्रह का विशेष चिह्न ही है । हम लोगों की साधना बहुत स्वल्प है, उसका फल यदि हो सकता है तो नैष्ठिक उपासक और पूर्ण रूपेण माता को आत्म समर्पण करने वाले साधक यदि बहुत कुछ पाते हैं, ऋद्धि सिद्धियों के स्वामी बनते हैं तो उसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए ।

सुविधाजनक स्थान और अवसर

श्री. रघुनाथ राव, दिल्ली से लिखते हैं कि मालिक चाहते हैं कि नौकर उनके काम का ठीक प्रकार अन्जाम दें । तनुख्वाह देने के साथ-साथ उनकी चाहना उचित ही है । नौकर भी कुछ ईमानदार होते हैं कुछ बेईमान। बेईमान नौकर अच्छी परिस्थितियों में भी काम से जी चुराते हैं, या उनमें बिगाड़ पैदा करते हैं । इसके विपरीत ईमानदार कर्मचारी को बुरी परिस्थिति में रहना पड़े तो भी वह जहाँ तक हो सकता है मालिक के बताये हुए काम तथा उत्तरदायित्व को पूरा करता है । मैं अपनी अन्तरात्मा के सामने ईमानदार व्यक्ति हूँ और सदैव यही सोचता रहता हूँ कि मालिक के काम को सच्चे मन से पूरा करूँ ।

अपनी इस कर्तव्यनिष्ठा के कारण मुझे अपने साथियों की अपेक्षा कहीं अधिक श्रम तथा समय लगाना पड़ता है, इसके अतिरिक्त उस "अपनी आमदनी" से भी वञ्चित रहता हूँ जिसके ऊपर सभी लोग गुलछर्रे उड़ाया करते हैं । कर्तव्यनिष्ठ एक कसौटी है जिस पर रोज ही अपने को घिसना पड़ता है, ईमानदारी एक अग्नि परीक्षा है जिसमें ईमानदार को रोज ही तपना पड़ता है । यह दोनों ही परिणाम भुगतने को मैं बहुत समय से आदी हो गया हूँ । मेरी बेबसी और परेशानी पर कुछ सहृदय लोग तो सहानुभूति दिखाते हैं पर साधारणत: मुझ जैसे लोग मूर्ख कहलाते और उपेक्षा की दृष्टि से देखे जाते हैं ।

अनुकूल वातावरण न होने और अनेक असुविधाएँ रहने पर अच्छा नौकर भी अपनी योग्यता का ठीक प्रकार परिचय नहीं दे पाता । पूरी शक्ति भर काम करते देखकर अफसर लोग प्रसन्न भले ही होते हों पर मेरा अन्त:करण प्रसन्न न था, मैं चाहता था कि अमुक असुविधाएँ दूर हो जावें तो मैं और भी अधिक सेवा करने में समर्थ हो सकूँ । गायत्री माता का जप करते हुए मेरे अन्त:करण में रहने वाली यह कामना भी माता को प्रकट हो ही जाती ।

जिस विभाग में, मैं पड़ा-हुआ था, उसमें से बाहर जाने की बदली होने की सम्भावना न थी, मैं उससे बदली चाहता था, पर चाहने से ही क्या हो सकता है, कई बार के छोटे मोटे प्रयत्न निष्फल भी हो चुके थे । मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक होती है, गायत्री माता को अपने मन की व्यथा सुनाकर सन्तोष कर लेता ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अचानक ऐसा लगा मानों मेरी व्यथा का निवारण होने वाला हो । ता. १७-२-५२ को गायत्री कवच मैंने धारण किया। दूसरे ही दिन दोपहर को १२ बजे चिट्ठी आई कि एक अच्छे स्थान पर बदली के लिए हम लोगों के "शार्ट हैण्ड की" परीक्षा एक घण्टे बाद ५ बजे होगी । १ घण्टे में तो कोई तैयारी भी न हो सकती थी पर इच्छा अवश्य थी कि यह स्थान मुझे मिल जावे तो उत्तम है । माता का ध्यान और स्मरण इस क्षण मन ही मन बड़े जोरों से होने लगा ।

परीक्षा हुई । परिणाम निकला तो मालूम हुआ कि मैं पहले ग्रुप में सर्वप्रथम रहा और रेलवे मिनिस्ट्री के दफ्तर में पहुँच गया । कुछ समझ में नहीं आया कि यह सत्परिणाम मुझे किस सुकर्म का मिल रहा है । सब साथी भी हैरान हैं कि इसके पास क्या जादू है जो चार महीने के अन्दर दो परिवर्तन प्राप्त कर चुका । जिस पद पर अभी नियुक्ति हुई है उसका ग्रेड ३३०) तक है ।

आगे जो होना होगा, माता की शरण लेकर मैं बड़ा सन्तुष्ट हूँ । आत्मिक उन्नति के लिए मैं जैसा वातावरण और अवसर चाहता था उसी दिशा में प्रगति हो रही है । अपनी एक ही इच्छा है— "ईमानदारी और पूरी तत्परता का आदर्श उपस्थित करना ।" माता मेरी कठिनाइयाँ सुलझाकर उसी स्थान पर ले पहुँचेगी जहाँ इसके लिए उपयुक्त अवसर होगा ऐसा मुझे विश्वास है । इस मार्ग पर चलने वाला प्रत्येक व्यक्ति ऐसी ही आशा रख सकता है ।

अनेक समस्याओं का समाधान

श्री. पृथ्वीराज तिवारी, गोहाटी से लिखते हैं कि यों तो मैंने विक्रमी सम्वत् २००६ की गोपाष्टमी से गायत्री माता की पूजास्वरूप सन्ध्या वन्दन आदि आरम्भ कर दी थी । सन्ध्या काल मालाएँ अपनी श्रद्धा भक्ति के साथ दिन में २ बार प्रातः सायं करता था । पीछे त्रिकाल सन्ध्या भी करने लग गया । परन्तु इन साधनाओं के करते हुए मुझको अपनी साधना तथा उपासना पर इतना भरोसा नहीं था । मेरे अन्तःकरण में शंकाएँ बनी ही रहती थीं कि मैं जो कुछ कर रहा हूँ वह सही है या त्रुटिपूर्ण । साधना काल के अनुभवों का अर्थ भी नहीं समझ पाता था । बड़ी दुविधा में पड़ा हुआ था । मैं बहुत दिनों से योग्य महात्मा, प्रथप्रदर्शक की तलाश में था ।

शंकराचार्य आदि महात्माओं के उपदेश पत्रों में गुरु के लिये बहुत ही जोर दिया गया है । उनके पत्रों से मुझ को ऐसा अनुभव हुआ कि बिना पोश गुरु के पथ प्रदर्शन के मेरी साधना का श्रम व्यर्थ ही जायेगा । ऐसी बातों से मेरा चित्त बड़ा ही उदास तथा चिन्ताशील रहा करता था। अनुभवी महात्मा और ऋषि केवल वेदमाता को ही अपना आधार मानने वाला गुरु कैसे प्राप्त हो ? बड़ी चिन्ता का विषय बन गया ।

विक्रमी सम्वत् २००९ की रामनौमी की रात्रि को २-२।। बजे स्वप्नावस्था में एक ऐसी प्रेरणा हुई । उस प्रेरणा के आधार पर गायत्री सम्बन्धी अमूल्य साहित्य तथा सद्गुरु की प्राप्ति सहज हो गई ।

जब से गुरुदेव की शरण प्राप्त हुई है, मुझको गायत्री उपासना में बहुत ही सन्तोषजनक प्रगति करने का आनन्द प्राप्त हो रहा है । दिन पर दिन स्वभाव और प्रकृति में भी सन्तोषजनक परिवर्तन हो रहा है । आत्मबल की आशाजनक वृद्धि हुई है । हृदय में बड़ा ही सन्तोष हो रहा है । कुछ यौगिक षट् चक्रों का भी अप्रत्यक्ष रूप में अनुभव होने लगा है । कुछ ही दिनों में वेदमाता के प्रति इतनी श्रद्धा और सन्तोषजनक प्रगति का होना भगवती की कृपा का प्रत्यक्ष प्रमाण मालूम देता है।

पिछले दिनों में मुझको बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा । इन कठिनाइयों से बचने के लिये मेरे सामने किसी भी प्रकार के साधन नहीं थे । चारों तरफ निराशा के बादल छाए हुए थे । मैं एकान्त में बैठकर बहुत ही दीन शब्दों में माता से अपने संकट को दूर करने की प्रार्थना किया करता था। मुझको ऐसा स्वप्न में भी विश्वास नहीं था कि माता हमारे कष्ट को दूर करने के लिए शीघ्र ही कोई मार्ग निकाल देगी । अन्त में माता ने हमारे हृदय की बात को जानकर सच्ची पुकार को समझ कर एक बड़ी भारी उलझन भरी समस्या को हल कर दिया । अब हम अपनी सांसारिक उन्नति भी करने में सफल होंगे ऐसी आशा हो गई है ।

उपासना काल में बहुत से अनुभव हुए हैं । इन अनुभवों का जिक्र गुरु आज्ञा के बिना करना निषेध है । अतः इस विषय में विशेष बातें नहीं लिखी जा सकतीं ।

बहुत से सांसारिक लाभों के अतिरिक्त एक पुत्र रत्न भी हुआ है जिसके लिए पण्डितों के कथनानुसार ऐसे बालक का होना भगवती की कृपा का विशेष रूप से होना ही है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री द्वारा प्रेतबाधा का निवारण

'सावरि तन्त्र संग्रह' ग्रन्थ के लेखक श्री. गोविन्द दास विनीत ने गायत्री द्वारा प्रेतबाधा निवारण का एक व्यक्तिगत अनुभव छपाया है । उसे अविकल रूप से अधृत करके पाठकों के लाभार्थ उपस्थित करते हैं । श्री. गोविन्द दास जी लिखते हैं—

''मेरी मौसेरी बहिन नत्थीखेडा से तालवेहट (झांसी) आयी । मेरे बहनोई श्री जुगलकिशोर जी वहाँ से पोस्टमैन थे । घर आते-आते न जाने क्या हो गया ? वह अंट संट बकने लगी, और कभी-कभी अपना सिर भी पीटने लगी । लगातार ६ महीने तक सारा कुटुम्ब परेशान रहा पर दर्द बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की । श्री देशपति जी एक नामी झाड़ा देने वाले थे । वह भी बुलाये गये । यहाँ मेरी बहन उसी दशा में बोली—''तुम लोग ठीक नहीं कर रहे हो, अभी मैं सिर्फ इसी के प्राण लेने की कोशिश कर रहा हूँ, मगर अब सारे कुटुम्ब का नाश कर दूँगा ।'' मेरे पिताजी ने पूछा-''कुटुम्ब ने क्या बिगाड़ा है।'' बहिन के मुँह से निकला-''तुमने पूरा के ठाकुर देशपति को बुलाया है । वह मुझे कष्ट देगा और मैं तुम सब को ।'' यद्यपि न तब तक देशपति आये थे, और न उनकी कोई चर्चा ही वहाँ चल रही थी । फिर भी माना जा सकता है कि मेरी बहन को किसी तरह खबर पड़ गई हो जो हो, ठाकुर साहब आये, एक-एक को देखकर हँसा, बहिन के मुँह से निकला, ''तुम चले जाओ तो अच्छा हो ।'' ठाकुर साहब-''हम तुम्हें अपने साथ लेकर जायेंगे ।'' बहिन-मुझे मालूम है कि तुम मुझे वश में कर सकती हो, परन्तु भाई बन्दी में यह व्यवहार अच्छा नहीं ।'' ''ठाकुर साहब-जब तुम्हें भाई बन्दी का इतना ख्याल है तो तुम्हीं मेरा कहना मानकर चले जाओ । बेचारे ब्राह्मणों को क्यों ६ महीने से दुःख दे रहे हो ।''

''बहिन-तुम बेजा दबाव न डालो । हम इसे छोड़ नहीं सकते । इसने हमारा हद से ज्यादा नुकसान किया है। हमारा स्थान भी जानबूझ कर मिटा दिया है ।''

यह ठीक चीज थी कि बहिन जिस मकान में रहती थी, उसमें एक छोटी सी चबूतरी थी और उसे उसने खोद डाला था। ''ठाकुर साहब-जो हुआ सो हुआ अब तुम्हें मेरा कहना मानकर इसे छोड़ देना चाहिए ।''बहन-मैं यह मान नहीं सकता ।''

''ठाकुर साहब-तो मुझे यत्न करना पड़ेगा ।'' ठाकुर साहब के कुछ करने कराने से पहले मेरी बहन बिल्कुल ठीक हो गयी । उसने अपने पति और स्वसुर आदि को देखकर घूँघट डाल लिया । सब समझे भूत डर कर भाग गया ।

परन्तु दस मिनट के भीतर बहिन की वही हालत हो गयी। वह हँसने लगी और बोली-''रोगी का इलाज पीछे करना, पहले घर जाकर लड़के की हाल देख आओ ।''

बात कुछ समझ में न आयी और ठाकुर साहब उसे टाल कर अपने यन्त्र मन्त्र का सामान बतलाने में लग गये।

कुछ देर बाद भोजन करने बैठे, कि उसी वक्त 'पूरा' से आकर एक आदमी ने खबर दी कि उनका लड़का कुएँ में गिरकर मर गया है । शोकातुर होते हुए ठाकुर साहब अपने गाँव को चल दिये । उसके दो महीने पीछे तक मेरी बहिन को इतना कष्ट रहा कि उसका अस्थि पञ्जर मात्र रह गया । ठाकुर साहब फिर आ पहुँचे और बोले-''तूने मेरा जवान लड़का तो खा ही लिया है, पर अब मैं तुझे भी न छोड़ूँगा ।''

कहना न होगा कि उन्होंने उसी दिन बहिन को ठीक कर दिया, और वह एक ढ़ँकने दार घड़े में कुछ सामान रखकर विदा हो गये । अपने गाँव के पास पहुँच कर उन्होंने घड़े को एक चबूतरे पर रखा और पेशाब करने बैठ गये । इसी बीच में न जाने क्या हुआ ? घड़ा फूट गया और ठाकुर साहब का दूसरा लड़का अपने दरवाजे पर खेलते-खेलते ही चक्कर खाकर मर गया । बहिन की हालत फिर वैसी ही हो गयी ।

अब तो सभी तांत्रिकों का साहस टूट गया और एक विनय करने के सिवा दूसरा चारा शेष न रहा । एक दिन बहिन ने आप ही कहा-सवा लक्ष गायत्री पाठ कराओ, और मुझे गयाजी भेज दो, तो मैं इसे छोड़ सकता हूँ । वही योजना की गयी । कुछ दिन पीछे बहिन बिल्कुल अच्छी हो गयी ।

पिताजी की प्राण रक्षा

श्री. अम्बादास पंडरी शा. सौरच बुरहानपुर से लिखते हैं कि इस वर्ष चालीस दिन से सवालक्ष के अनुष्ठान के पश्चात् मेरे पिताजी बवासीर व्याधि से पीड़ित थे ।

नांदुरे से भाई का पत्र आया, ''पिताजी के बवासीर (मुल व्याधि) ने उग्र स्वरूप धारण किया है । वे बेचैन हैं। खाने-पीने में अरुचि तो है ही साथ ही साथ खाने-पीने की भी शक्ति नहीं, चल फिर नहीं सकते, निश्चल पड़े हैं । अतीव दुःख अनुभव कर रहे हैं । शहर के प्रसिद्ध डॉ. कुलकर्णी को बुलाया गया-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किन्तु उन्होंने कहा कि "यह केस मेरी शक्ति के बाहर है, अत: इनका अकोला के प्रसिद्ध सिविल सर्जन के पास जाकर बवासीर का आपरेशन कराओ अन्यथा रोग दुरुस्त नहीं हो सकेगा ।" अत: आप यह पत्र तार के समान समझ कर निकल आओ ।

यह दु:खद पत्र पढ़कर बड़े भाई, भावी, तथा मेरे प्राण में प्राण नहीं रहे सबके होश उड़ गये । बड़े भाई तत्काल ५ दिन की छुट्टी लेकर रविवार को नांदुरा रवाना हो गये । मेरा पूर्ण चित्त पिता जी के जीवन की ओर लगा हुआ था ।

रविवार को तथा सोमवार को माता गायत्री से इस विषय में वार्तालाप किया व सोमवार शाम को शेली पर जल एवं तुलसी पत्र लेकर संकल्प रूप से अनुष्ठान का पुण्य फल पिताजी को गायत्री मन्त्र युक्त अर्पण किया व साथ ही साथ यह भावना की कि—"मेरी अनुष्ठान की पुण्य शक्ति गायत्री मन्त्र के आधार पर वायुमण्डल को पार कर शीघ्रातिशीघ्र पिताजी की ओर जा रही है और पिताजी को उस महान व्याधि से मुक्त कर रही है । अत: पिताजी स्वस्थ हो गये हैं, खाने पीने लगे, चलने फिरने भी लगे हैं । एवं घर में सब की मुद्रा प्रसन्न हैं ।

साथ ही साथ मेरा अन्त:करण भी सचमुच प्रसन्न हो रहा था । लगातार गायत्री माता से पिताजी के स्वस्थ होने तथा जीवन प्राप्त करने की प्रार्थना करता रहा ।

गुरुवार को जब भाई बुरहानपुर लौट आये तो उन्होंने शुभ सन्देश सुनाते हुए कहा कि "रविवार की रात्रि से सोमवार की शाम तक पिताजी की हालत बहुत शोचनीय थी । जल के अभाव से उनका गला घर्र घर्र बज रहा था । हाथ-पैर निश्चित थे । अस्थि पंजन थे, उनके बचने का कोई भरोसा नहीं था, उन्हें चारपाई (खाट) से नीचे उतारा गया । घर में सब शोक कर शोर मचाने लगे ।

लेकिन शाम को क्या हुआ कि उनकी हालत में विद्युन्मय फर्क मालूम हुआ, हाथ-पैर हिलने लगे, जल एवं दूध पिया, गले का घर्र-घर्र बजना बन्द हुआ, दूसरे दिन खाने-पीने लगे । बवासीर से मुक्त हो गये और आज गुरुवार को खेतों में भी काम करने चले गये ।

यह सब माता की कृपा एवं मेरे गुरुदेव के चरणों में स्थित अपनी श्रद्धा और विश्वास का ही फल है ।

महात्मा गायत्री स्वरूप जी

श्री. राम दयाल शर्मा पारासर, तिलहर से लिखते हैं कि हिमालय की पर्वतीय तपोभूमि में प्रवेश करते ही मन को स्वाभाविक शान्ति प्राप्त होती है । इस वर्ष मैं कुछ समय के लिये हरिद्वार ऋषिकेश गया । चित्त में बड़ी शान्ति प्राप्त हुई । मेरी इस यात्रा में आचार्य जी एक आदेश भी जुड़ा हुआ था, वह यह कि "मैं पूर्णाहुति यज्ञ की सफलता के लिए उत्तराखण्ड के सन्त महात्माओं से आशीर्वाद माँगूँ ।"

उपर्युक्त उद्देश्य के लिए तथा तपस्वी महात्माओं के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त करने की अपनी आन्तरिक्त उत्कण्ठाओं को तृप्त करने के लिए मैं अनेक सत्पुरुषों से मिला । अनेकों का दर्शन और सत्संग प्राप्त करके बड़ी प्रसन्नता तथा शान्ति प्राप्त हुई। इन्हीं महात्माओं में एक असाधारण निष्ठावान् महात्मा भी ऋषिकेष में मिले । मैं उनसे बहुत प्रभावित हुआ । पाठकों में से भी कभी कोई हरिद्वार पधारे तो मिल सकें इसके लिए उनका कुछ परिचय नीचे लिख रहा हूँ—

यह महात्मा आजकल-परमार्थ निकेतन ऋषिकेष में रहते हैं । नाम हैं उनका "गायत्री स्वरूप" । जैसा इनका नाम है वस्तुत: वे हैं भी वैसे ही । यह विगत छ: वर्षों से मौन धारण किये हुए गायत्री साधना में संलग्न हैं । इनकी आत्मा का तेज इतना प्रखर है कि न बोलते हुए भी उनकी शिक्षा तथा प्रेरणा सामने उपस्थित व्यक्ति को भली प्रकार प्राप्त होती है ।

निकट रहकर इनके व्यक्तित्व की महानता देखते ही बनती है । सादगी, प्रेम, उदारता, सेवा इनके तन्मात्रान गुण हैं । त्याग, तप और संयम इनके रोम-रोम में समाये हुए हैं । छ: साल का मौन साधारण काम नहीं है । इनका आहार-विहार तथा दिनचर्या ऐसी है जिसे देखकर प्राचीन काल के ऋषियों की याद सहज ही आ जाती है ।

यह महात्मा जोधपुर प्रांत के गायत्री नामक कस्बे के मूल निवासी हैं । कुछ समय पूर्व बीकानेर में जसूसर गेट के सामने रहते थे । उच्च ब्राह्मण कुल में आपका जन्म हुआ है । जन्म से ही इनकी गायत्री निष्ठा थी । माता की कृपा के अनेकों चमत्कार इन्होंने देखे, जिससे प्रभावित होकर उनने जीवन का अन्तिम भाग गायत्री माता के चरणों में अर्पित करने का निश्चय किया । उनकी इच्छा पूर्ण होकर रही । घर का कारोबार अपने पुत्रों को सौंप कर अब वे तपस्या के लिये चले गये हैं ।

उनके जीवन में गायत्री उपासना के फलस्वरूप कितनी ही आश्चर्यजनक घटनाएँ घटित हुई हैं । एक बार सम्वत् ७० में वे अपनी माता के साथ पुष्कर से जयपुर जा रहे थे । रास्ते में अचानक भारी वर्षा हुई और पहाड़ों का पानी एकत्रित होकर तालाब में जाने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लगा । जिस रास्ते वे चल रहे थे उसमें इतना पानी आ गया कि माताजी समेत वे डूबने लगे । ऐसे समय में गायत्री स्मरण के अतिरिक्त और कोई उपाय उनसे न बन पड़ा वे कहते हैं कि हमें ऐसा अनुभव हुआ मानों किसी ने पकड़ कर उठा लिया हो और पार लगा दिया हो । डूबने और मरने से बचने को वे माता की महान कृपा मानते हैं ।

दूसरी घटना यह हुई कि वे एक बरात में गए हुए थे तो एक दो फुट मोटा भारी पत्थर ऊपर से गिरा । पहले से किसी को इसकी सम्भावना न थी । पत्थर उस स्थान पर गिरा जहाँ वे बैठे थे । आधा-सेकण्ड पूर्व ही किसी अज्ञात शक्ति ने उनका हाथ पकड़ कर बलपूर्वक खींचा और वे जैसे ही वहाँ से हटे वैसे ही क्षण भर में वह बड़ी शिला गिरी और स्थान पर रखी हुई अन्य वस्तुएँ चकनाचूर हो गईं ।

महात्मा गायत्री स्वरूप ने देखा कि माता उनके जीवन की बार-बार ऐसी कृपा करती है तो उनका भी यह कर्तव्य है कि अपने जीवन को उनकी गोदी में समर्पण करके मानव जन्म को सफल बनावें । अपनी इसी मान्यता को कार्य रूप में परिणत करते हुए यह महाभाग आज ऋषियों जैसी तपस्या में संलग्न हैं।

अभीष्ट स्थान पर नियुक्ति

श्री. रामचन्द्र तिवारी गरोठ का कहना है कि सम्मानपूर्ण आजीविका और अभीष्ट स्थान पर निवास यह दोनों ही बातें मनुष्य के जीवन में बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं । फिर जिनका कार्यक्रम नौकरी हो उनके लिये तो इनका और भी अधिक महत्त्व है ।

मैं कुछ समय से गायत्री उपासना तथा मन्त्र लेखन की साधना में संलग्न हूँ । यों मेरी साधना निष्काम रही है, पर देखता हूँ कि उसके सांसारिक परिणाम भी बहुत कल्याणकारी हो रहे हैं ।

दूसरे कई साथी अच्छी और स्थायी नौकरी पाने के लिए काफी दौड़ धूप करते रहे हैं । उन्होंने कृपा पूर्वक मुझे भी कई बार प्रेरणा दी कि मैं भी अधिक प्रयत्न करूं। यथासम्भव मैंने वह सब किया भी है, अपना प्रथम आधार गायत्री माता की शारणागति ही रही है । सच्चे मन से मैंने माता का आश्रय लिया है और माता की सच्ची कृपा का परिचय भी पाया है । जबकि अन्य उद्योगी साथी अपने लिये उपयुक्त स्थान न पा सके तब मैं नायब तहसीलदार की स्थायी जगह पर नियुक्त हूँ और स्थान भी मनोवाञ्छित मिल गया था । अपनी इस नियुक्ति में मुझे माता की स्पष्ट कृपा परिलक्षित होती है । जैसे माता अपने बालक को गोद में लेकर उसकी सब प्रकार रक्षा करती है वैसे ही गायत्री माता के अंचल में आश्रय पाने वाला व्यक्ति भी अपनी उन्नति एवं सुरक्षा के लिए निश्चित हो जाता है ।

कोई-कोई व्यक्ति अच्छे कवच अपने पास रखते हैं और उनके बिगड़े काम बनते हैं । मैंने गायत्री मन्त्र लेखन की कापियों में कवच की शक्ति पाई । उन्हें सर्वथा साथ रखने का परिणाम बहुत ही लाभदायक रहा । मेरे मित्रों ने भी मन्त्र लेखन यज्ञ में भाग लिया है और अपनी भावनाओं अनुसार समुचित लाभ प्राप्त किया है । एक पटवारी सज्जन ने अपना दीवानी मुकदमा इसी महामन्त्र की शक्ति से इच्छानुसार जीता ।

अपनी तथा दूसरे की गायत्री उपासना के परिणामों को देखते हुए यह कहना पड़ता है कि गायत्री माता समुचित कल्पवृक्ष का काम करती है । अपने पुत्रों की रक्षा एवं उन्नति के लिए वह बड़ी सहायता देती है । शत्रु चाहे आन्तरिक हो, चाहे बाहरी उनसे रक्षा सहज ही हो जाती है । भयभीतों को माता की शरण में अभयदान मिलता है । सकाम साधना की अपेक्षा निष्काम भावना अधिक श्रेष्ठ है ।

श्री गायत्री सिद्धि

पं. शम्भुप्रसाद मिश्र भू. पू. चेयरमैन डि.बो. मंडला से लिखते हैं कि—

ॐ गायत्रीं त्रिऽक्षरांवालाम् साक्ष सूत्र कमंडलम् ।

रक्त वस्त्रां चतुरवक्त्रां हंसवाहने संस्थिताम् ।।
ब्रह्माणीं ब्रह्मदैवत्याम् ब्रह्मलोक निवासिनीम् ।
श्रावाह्यामहं देवी सायांतीम् सूर्य मंडलात् ।।
आगच्छ वरदे देवी त्रिऽक्षरे ब्रह्मवादिनी ।
गायत्री छंद सांमातर्ब्रह्मयोने नमोस्तुते ।।

प्रातः सायं-संध्या पूजन में श्री गायत्री जी का उपर्युक्त ध्यान करना मेरा नित्य-कर्म है । यद्यपि त्रिकाल संज्ञा में गायत्री, सावित्री, सरस्वती ये तीन ध्यान गायत्री के प्रत्येक पृथक हैं पर मेरे हृदय में यही एक उपर्युक्त ध्यान दोनों काल की संध्या में बसा हुआ है । इसके सिवाय सन् १९३० ई. में कृष्णा मन्दिर (मंडला जेल) के अन्दर मैंने भाषा में श्री गायत्री ध्यान व स्तोत्र लिखा था । यह ध्यान व स्तोत्र भी नित्य सूर्योदय से पूर्व अपने बिस्तर में ही विनीत करता है । भाषा स्तोत्र का शाँति में विनीत ने सवा लक्ष गायत्री जप ब्राह्म मुहूर्त में कृष्णा मन्दिर में किया था जिसका प्रत्यक्ष असर तो यह था कि विधर्मी बड़े-बड़े अफसर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

भी विनीत के प्रति बड़े नम्र आदरणीय भाव रखते, रसोइया ब्राह्मण दिया, पानी के लिये अहीर दिया मकर संक्रांति आदि पर्वों को नर्मदा स्नान जेलर के साथ जाकर करने की आज्ञा थी भाषा स्तोत्र करने से ३ माह के अन्दर गाँधी हरमिट समझौते के नाम पर विनीत बिला शर्त रिहा कर दिया गया । श्री गायत्री दृष्ट के कई चमत्कार भी विनीत का अनुभव हुए वह होते हैं । यथा स्वप्न में दी उपरोक्त ध्यान स्वरूप श्री गायत्री जी लाल वस्त्राधारण किये हुए तेजोमय दिव्य रूप में दर्शन जब कभी देती हैं तब बड़े हानि-लाभ व जीवन-मरण की बातों का जो भविष्य में आने वाली हैं उनका दिग्दर्शन यानी रक्षा का मार्ग बतलाती हैं । स्वप्न में ऐसे दर्शन श्री गायत्री जी के कई बार हुए हैं, यह बिलकुल सत्य बात कह रहा हूँ ।

एक बड़ी असाध्य बीमारी से मेरी रक्षा गायत्री इष्ट द्वारा कुछ वर्ष पूर्व हुई है । पिछले मैं मृत्यु शैया पर था मैं जीवन की आशा छोड़ रहा था कि गायत्री इष्ट से मेरी प्राण रक्षा हुई । अभी हाल की बात है मेरे पुत्र चि. रामेश्वरप्रसाद मिश्र संधिपात से सख्त बीमार हो गया, डाक्टर, वैद्य सभी को बीमारी चिन्ताजनक थी घर के लो भी रोने-पीटने के सिवाय असहनीय कष्ट में रात दिन दु:खी थे, मैंने अपना प्रसिद्ध गायत्री इष्ट का आध रोग लिया और नित्य पूजन के बाद गायत्री मंत्र से लड़के को झाड़ना शुरू किया, लड़का चि. रामेश्वरप्रसाद कुल १७ दिन को लाङ्घन के बाद शनैः शनैः रोग मुक्त हो गया । संसारी व्यवहार में भी श्री गायत्री इष्ट द्वारा महान सफलता व शक्ति प्राप्त होने का अनुभव हुआ है । सन् १९३३ में जब मैं मंड डिस्ट्रक्ट बोर्ड के चेयरमैनी के लिये खड़ा हुआ तो मेरे खिलाफ एक बड़े जमींदार जो जिला के राव कहे जाते हैं खड़े हुए । उनकी पैरोकारी में बड़े-बड़े प्रभावशाली व्यक्ति वकील आदि भी थे, उन राव साहब के मुकाबले न पैसा में और न कार्यकर्त्ता में, मैं कोई चीज नहीं था पर श्री गायत्री जी कृपा से विपक्षी के सभी अस्त्र बेकाम हो गये और मैं बिना विरोध चेयरमैन डिस्ट्रक्ट बोर्ड चुन लिया गया । इसी सिलसिले में कुछ दिनों बाद विपक्षी दलों की साजिश से एक भारी रकम मुझ पर सर चार्ज हुई । प्रान्तीय सरकार की आज्ञा से सरचार्ज में मेरी गैरमनकूला जायदाद की कुर्की की कार्रवाई शुरू हो गइ, विपक्षी दल के यहाँ महान खुशी व मेरे यहां महान दुख मनाये जाने लगे, ऐसे सङ्कट के समय मेरा एक मात्र आधार गायत्री माता ही थीं । मैंने उन्हीं के भरोसे इस आपत्ति व मामले का सामना किया । आखिर को प्रांतीय सरकार ने अपनी कुल कार्रवाई को रद्द कर दिया ।

गायत्री की अद्भुत शक्ति

श्री मन्त्र योगी नाम से एक साधक लिखते हैं कि "गायत्री का सवालक्ष अनुष्ठान विधि के साथ ठीक प्रकार यदि जप किया जाय तो उससे ऐसे चमत्कारी फल प्राप्त होते हैं जिन्हें देखकर अचम्भे से दंग रह जाना पड़ता है । कई प्रकार की ऐसी आपत्तियाँ जिनसे छुटकारा मिलना कठिन दिखाई देता है, गायत्री माता की कृपा से निवारण होते देखा गया है । वर्दवान के एक सम्पन्न महानुभाव सन् ३८ में एक बड़े पेचीदा अभियोग में फँसे हुए थे, ऐसा अनुमान था कि भारी राजदंड भुगते बिना छुटकारा न मिलेगा । उन्होंने हमारे बताये अनुसार गायत्री का अनुष्ठान किया, तदुपरान्त मुकदमे का फैसला हुआ । यह फैसला ऐसा संतोषजनक था कि वे महानुभाव स्वयं आश्चर्यान्वित हुए और उस दिन से गायत्री पर असाधारण श्रद्धा करने लगे ।

नाडियाद (गुजरात) के एक सज्जन के घर में कई वर्षों से बीमारी का प्रकोप था, तीन मृत्युएँ एक साल के अन्दर हो चुकी थीं, आये दिन कोई न कोई चारपाई पर गिरा रहता था । उन्होंने गायत्री की शरण ली दस हजार गायत्री प्रतिदिन के हिसाब से उन्होंने जप किये, तब से यह चौथा वर्ष चल रहा है उनके घर में कोई भी बीमार नहीं पड़ा । बारी साल (बंगाल) के एक प्रसिद्ध व्यापारी के घर में कई उनकी विधवा लड़की तथा पतोहू को भूतोन्माद था, भूतप्रेतों का बड़ा उपद्रव उनके घर में मचा रहता था, अनेक प्रकार के उपचारों में काफी परिश्रम किया जा चुका था किन्तु कोई उचित हल न निकलता था, हमने उन्हें गायत्री की उपासना करने की सलाह दी। परिणाम बहुत अच्छा निकला । भूत बाधा के सारे उत्पात उनके घर से चले गये ।

एक रानी साहिबा का भतीजा कुछ अर्धविक्षिप्त सा हो चला था, बार बार घर छोड़ कर चला जाता था, महीनों अज्ञातबास में निकालकर घर वापस आता था, सारा परिवार उसकी इस दशा के कारण चिन्ताग्रस्त रहता था, हमारी सलाह के अनुसार रानी साहिब ने चालीस दिन का अनुष्ठान स्वयं किया जिसका फल बहुत ही अच्छा निकला, उनके भतीजे की मानसिक दशा सुधरने लगी और थोड़े ही दिनों में वह पुनः प्रबुद्ध होकर अपना साधारण और स्वाभाविक जीवन व्यतीत करने लगा । टिहरी का एक विद्यार्थी मेट्रिक की परीक्षा में दो बार फेल हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चुका था । स्मरण शक्ति उसकी बहुत ही कमजोर थी । उसे एक हजार गायत्री प्रतिदिन जपने के लिए विधान बताया गया उसने निष्ठापूर्वक जप किया और उस वर्ष प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ । अहमदाबाद के एक म्युनिसपल कर्मचारी को अपने विभाग के मुहल्ले के तथा विरादरी के कई शत्रुओं का एक साथ सामना करना पड़ रहा था, इन शत्रुओं द्वारा उसे कई बार बड़ी-बड़ी चोटें पहुँचाई जा चुकी थीं और आगे और हानि करने का षडयन्त्र चल रहा था, जब उसने गायत्री का आश्रय लिया तो शत्रुओं को मुँह की खानी पड़ी, उन्हें नुकसान पहुँचाने की बजाय खुद नुकसान उठाना पड़ा ।

उदयपुर के एक मुकदमे जो निस्संतान रहने के कारण सदा बहुत चिन्तित रहते थे, गायत्री के प्रसाद से ४९ वर्ष की आयु में पुत्र प्राप्ति की मनोकामना पूर्ण करने में सफल हुए । लरकाना (सिन्ध) का एक छोटा दुकानदार गायत्री की कृपा से इन चार-पाँच वर्षों में ही अच्छी सम्पत्ति का स्वामी बन गया है, व्यापार में उसे काफी लाभ हुआ । गुरुदासपुर (पंजाब) के एक खत्री महानुभाव आठ महीने से जीर्ण ज्वर से पीड़ित थे डाक्टर और वैद्यों ने उन्हें तपेदिक बताया था, उन्होंने चारपाई पर पड़े-पड़े गायत्री का मानसिक जप आरम्भ किया और उस दुस्साध्य बीमारी से छुटकारा पा लिया ।

मण्डला (सी.पी.) डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के भूतपूर्व चेयरमैन पं. शंभूप्रसादजी मिश्र गायत्री के चमत्कारों पर मुग्ध हैं । उन्हें अनेक बार गायत्री की महिमा के बड़े महत्त्वपूर्ण अनुभव हुए हैं । उनके अनुभवों को पाठक अगले किसी अङ्क में लेख रूप में पढ़ेंगे । गढ़वाल के महात्मा गोविन्दानन्दजी भयंकर विषधर सर्पों के काटे हुए रोगियों को अच्छा करने में प्रसिद्ध हैं उन्होंने हमें बताया था कि गायत्री मन्त्र द्वारा ही वे सर्प विष की चिकित्सा करते हैं । बिच्छू का विष भी गायत्री मन्त्र द्वारा उतर जाता है । पागल कुत्ते और सियारों का विष गायत्री द्वारा मंत्रित पानी पिलाकर समस्तीपुर के रईस शोभनशाहु जी उतार देते हैं । आधाशीशी, मस्तिक शूल, कमलवाव और जहरीले फोड़ों को अच्छा करने वाले वाँकुरा के विजयदत्तजी का कथन है कि गायत्री से बढ़कर सर्वशक्तिमान मंत्र और दूसरा कोई नहीं है । मैं इसी की सहायता से अनेक पीड़ितों को स्वास्थ्य लाभ कराने में समर्थ होता हूँ । बालकों की पसली चलना, मूर्च्छा, तन्द्रा, भय, आवेश, स्त्रियों की मृगी आदि में भी गायत्री द्वारा आशातीत लाभ होते देखा गया है । यदि किसी आपत्ति के आने की आशंका हो तो पहले से ही गायत्री की शरण लेनी चाहिए । देखा गया है कि ऐसा करने से अधिकांश विपत्तियाँ टल जाती हैं । इसी प्रकार दुस्साध्य और कठिन कार्यों को पूरा करने के लिये भी गायत्री माता की सहायता बड़ी महत्त्वपूर्ण सिद्ध होती है । बहुत करके बिगड़े काम बन जाते है और पर्वत जैसी कठिनाई राई जैसी सरल हो जाती है ।

ऊपर की पंक्तियों में जो कुछ लिखा गया है वह कही सुनी बातें नहीं हैं वरन् प्रत्यक्ष अनुभव हैं । अनेकों बार बिगड़ी को बनाने में गायत्री की अद्भुत शक्ति की परीक्षा कर लेने के पश्चात ही पाठकों के सामने अपने अनुभवों का कुछ अंश प्रकाशित करने में हम समर्थ हो रहे हैं । इस संबंध में एक बात ध्यान रखने की है वह यह कि किराये की पूजा से गायत्री का प्रसन्न होना कठिन है । पंडित पुरोहित को दक्षिणा देकर उससे पूजा पाठ करा लेना यह किराये की उपासना है । इससे जो लाभ मिलता है वह स्वयं की हुई साधना की तुलना में बहुत ही तुच्छ है । अपने काम के लिए आप ही साधना करनी चाहिए । अदृष्ट शक्तियाँ हृदयगत भावों को परखती हैं और उस भाव शृंखला के अनुरूप ही फल देती हैं । अपने कार्य के लिये जितनी तीव्र इच्छा, निष्ठा, एकाग्रता और आराधना स्वयं की जा सकती है उतनी किराये के व्यक्ति द्वारा कदापि नहीं हो सकती, इसलिए इतना अच्छा फल भी दूसरों द्वारा की हुई पूजा से हरगिज नहीं मिल सकता । अपने कार्य के लिए आप ही साधना करनी चाहिए, जिनके मन में तीव्र इच्छा है वे ही सफलता प्राप्त कर सकते हैं ।

ऐसा समझना बड़ी भारी भूल होगी कि मन्त्र तन्त्र मिथ्या है, इनमें कुछ शक्ति नहीं है । सर ओलिवर लाज, मेडम ब्लेटेस्की, सर कोनन डायल, डाक्टर ब्रूस, मि. लेडवीटर प्रभृति उच्चकोटि के मनोविज्ञान शास्त्र के पण्डितों ने यह प्रमाणित किया है कि मन्त्रों की उपासना और साधना से जो चमत्कारी फल प्राप्त होते हैं वे मन-शास्त्र की वैज्ञानिक विधि के आधार पर ही होते हैं । निष्ठा, विश्वास, एकाग्रता और तीव्र इच्छा इन चारों का एक स्थान पर केन्द्रीकरण करने से एक वैसा ही अदृश्य तेज उत्पन्न होता है जैसा कि आतिशी शीशे के द्वारा सूर्य की किरणें एक स्थान पर केन्द्रित कर देने से अग्नि उत्पन्न हो जाती है । गायत्री की शब्द रचना-अक्षर शाष्त्र के अनुसार बड़ी अद्भुत है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

वेद की वह माता है, आदि काल से लेकर अब तक करोड़ों-करोड़ों उच्च आत्माओं ने इस मन्त्र का असीमित और अनन्य श्रद्धा के साथ जप किया है ऐसे ही अनेक कारणों से एक तो गायत्री मन्त्र स्वयं ही बहुत शक्तिपूर्ण सत्ता बन गया है, दूसरे जब उसे उच्च मनोभावों के साथ सविधि सिद्ध किया जाता है तो एक ऐसी तेजस्वी ब्रह्म शक्ति पैदा होती है जो असफलताओं का निवारण और सफलताओं का वरदान देने में पूर्ण तथा समर्थ होती है । गायत्री द्वारा प्राप्त हुए फल किसी अन्य सत्ता द्वारा दिया हुआ पुरस्कार नहीं है वरन् अपनी निजी शक्ति द्वारा एक प्रकार की अध्यात्म मल्ल विद्या का पुरुषार्थ है । पुरुषार्थी व्यक्तियों को लक्ष्मी मिलती है और साधकों को सिद्धि प्राप्त होती है, वह बिल्कुल साधारण और स्वाभाविक बात है, इसमें आश्चर्य और अविश्वास की कोई बात नहीं है ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री द्वारा सम्पूर्ण दुःखों का निवारण

मनुष्य ईश्वर का उत्तराधिकारी एवं राजकुमार है। आत्मा परमात्मा का ही अंश है । अपने पिता के सम्पूर्ण गुण एवं वैभव बीज रूप से उसमें मौजूद हैं । जलते हुए अंगार में जो शक्ति है वही छोटी चिनगारी में भी मौजूद है । इतना होते हुए भी हम देखते हैं कि मनुष्य बड़ी निम्न कोटि का जीवन बिता रहा है। दिव्य होते हुए भी दैवी सम्पदाओं से वंचित हो रहा है।

परमात्मा सत् है, परन्तु उसके पुत्र हम असत् में निमग्न हो रहे हैं । परमात्मा चित् है, हम अन्धकार में डूबे हुए हैं। परमात्मा आनन्द स्वरूप है, हम दुःखों से संत्रस्त हो रहे हैं । ऐसी उल्टी परिस्थिति उत्पन्न हो जाने का कारण क्या है ? यह विचारणीय प्रश्न है।

जबकि ईश्वर का अविनाशी राजकुमार अपने पिता के इस सुरम्य उपवन संसार में विनोद क्रीड़ा करने के लिए आया हुआ है तो उसकी जीवन यात्रा आनन्दमयी न रहकर दुःख-दारिद्र से भरी हुई क्यों बन गयी है ? यह एक विचारणीय पहेली है ।

अग्नि स्वभावतः उष्ण और प्रकाशवान होती है, परन्तु जब जलता हुआ अंगार बुझने लगता है तो उसका ऊपरी भाग राख से ढक जाता है। तब उस राख से ढके हुए अंगार में वे दोनों ही गुण दृष्टिगोचर नहीं होते जो अग्नि में स्वभावतः होते हैं । बुझा हुआ, राख से ढका हुआ अंगार न तो गर्म होता है और न प्रकाशवान् वह काली कलूटी कुरूप भस्म का ढेर मात्र बना हुआ पड़ा रहता है । जलते हुए अंगार की इस दुर्दशा में ले पहुँचाने का कारण वह भस्म है, जिसने उसे चारों ओर से घेर लिया है । यदि यह राख की परत ऊपर से हटा दी जाय तो भीतरी भाग में फिर वैसी ही अग्नि मिल सकती है जो अपने उष्णता और प्रकाश के गुण से सुसम्पन्न हो ।

परमात्मा सच्चिदानन्द है । वह आनन्द से ओत-प्रोत है । उसका गुण आत्मा भी आनन्दमय ही होना चाहिए । जीवन की विनोद क्रीड़ा करते हुए इस नन्दन वन में उसे आनन्द ही आनन्द अनुभव होना चाहिए । इस वास्तविकता को छिपा कर जो उसके बिल्कुल उल्टी दुःख-दरिद्र और क्लेश-कलह की स्थिति उत्पन्न कर देती है वह कुबुद्धि रूप राख है । जैसे अंगार को राख ढककर उसको अपनी स्वाभाविक स्थिति से वंचित कर देती है, वैसे ही आत्मा की परम सात्विक, परम आनन्दमयी स्थिति को यह कुबुद्धि ढक लेती है और मनुष्य निकृष्ट कोटि का दीनहीन जीवन व्यतीत करने लगता है ।

'कुबुद्धि' को ही माया, असुरता, अन्धता, मिश्र, अविद्या आदि नामों से पुकारते हैं । यह आवरण मनुष्य की मनोभूमि पर जितना मोटा चढ़ा होता है, वह उतना ही दुःखी पाया जाता है । शरीर पर मैल की जितनी मोटी तह जम रही होगी, उतनी ही खुजली मचेगी और दुर्गन्ध उड़ेगी । यह तह जितनी ही कम होगी, उतनी ही खुजली और दुर्गन्ध कम होगी । शरीर में दूषित, विजातीय विष एकत्रित न हो तो किसी प्रकार का कोई रोग न होगा । पर यह विकृतियाँ जितनी अधिक जमा होती जायेंगी शरीर उतना ही रोगग्रस्त होता जायेगा । 'कुबुद्धि' एक प्रकार से शरीर पर जमी हुई मैल की तह वह रक्त से भरी हुई विषैली विकृति है, जिसके कारण खुजली, दुर्गन्ध, बीमारी तथा अनेक प्रकार की अन्य असुविधाओं के समान जीवन में नाना प्रकार की पीड़ा, चिन्ता, बेचैनी और परेशानी उत्पन्न होती रहती हैं ।

लोग नाना प्रकार के कष्टों से दुःखी हैं । कोई बीमारी से कराह रहा है, कोई गरीबी से दुःखी है, किसी का दाम्पत्य जीवन कष्टमय है, किसी को सन्तान की चिन्ता है, व्यापार में घाटा, उन्नति में अड़चन, असफलता की आशंका, मुकद्दमा शत्रु के आक्रमण का भय, अन्याय का उत्पीड़न, मित्रों का विश्वासघात, दहेज की चिन्ता, प्रियजनों का बिछोह आदि का दुःख आये दिनों दुःखी बनाये रहता है । व्यक्तिगत जीवन की भाँति धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में भी अशान्ति कम नहीं है । यदि कोई व्यक्ति अपने आपको बहुत सम्भाल कर रखे, तो भी व्यापक बुराइयों एवं कुव्यवस्थाओं के कारण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उसकी शान्ति नष्ट हो जाती है और जीवन का आनन्दमय उद्देश्य प्राप्त करने में बाधा पड़ती है ।

दु:ख चाहे व्यक्तिगत हो या सामूहिक उसका कारण एक ही है और वह है कुबुद्धि । संसार में इतने प्रचुर परिमाण में सुख साधन भरे पड़े हैं कि इन खिलौनों से खेलते-खेलते सारा जीवन, हँसी-खुशी में बीत सकता है । मनुष्य को ऐसा अमूल्य शरीर, मस्तिष्क एवं इन्द्रिय समूह मिला हुआ है कि इनके द्वारा साधारण वस्तुओं एवं परिस्थितियों में भी इतना आनन्द लिया जा सकता है कि स्वर्ग भी उसकी तुलना में तुच्छ सिद्ध हो । इतना सब होते हुए भी लोग बेतरह दुखी हैं, जिन्दगी में कोई रस नहीं मौत के दिन पूरे करने के लिए समय को एक बोझ की तरह काटा जा रहा है । मन में चिन्ता, बेवसी, दीनता, और बेचैनी की अग्नि दिन भर जलती रहती है, जिसके कारण पुराणों में वर्णित नारकीय यातनाओं जैसी व्यथाएँ सहनी पड़ती हैं ।

यह संसार चित्र-सा सुन्दर है, इसमें कुरूपता का एक कण भी नहीं । यह विश्व विनोदमयी क्रीड़ा का प्रांगण है, इसमें चिन्ता और भय के लिए कोई स्थान नहीं । यह जीवन आनन्द का निर्बाध निर्झर है, इसमें दु:खी रहने का कोई कारण नहीं । स्वर्गादपि गरीयसी-इस जननी जन्मभूमि में वे सभी तत्व मौजूद हैं जो मानस की कली को खिलाते हैं । इस सुर दुर्लभ नर तन की रचना ऐसे सुन्दर ढंग से हुई है कि साधारण वस्तुओं को वह अपने स्पर्श मात्र से ही सरस बना लेता है । परमात्मा का राजकुमार आत्मा इस संसार में क्रीड़ा किल्लोल करने आता है । उसे शरीर रूपी रथ, इन्द्रियों रूपी सेवक, मस्तिष्क रूपी मंत्री देकर परमात्मा ने यहाँ इसलिए भेजा है कि इस नन्दन वन जैसे संसार की शोभा को देखे, उसमें सर्वत्र बिखरी हुई सरलता का स्पर्श और आस्वादन करे । प्रभु के इस महान् उद्देश्य में बाधा उपस्थित करने वाली, स्वर्ग को नरक बना देने वाली कोई वस्तु है तो वह केवल कुबुद्धि ही है ।

स्वस्थता हमारी स्वाभाविक स्थिति है । बीमारी अस्वाभाविक एवं अपनी भूल से पैदा हुई है । पशु-पक्षी जो प्रकृति का स्वाभाविक अनुसरण करते हैं, बीमार नहीं पड़ते, वे सदा स्वास्थ्य का सुख भोगते हैं पर मनुष्य नाना प्रकार के मिथ्या आहार-विहार द्वारा बीमारी को न्यौत बुलाता है। यदि वह भी अपना आहार-विहार प्रकृति के अनुकूल रखे तो कभी बीमार न पड़े । इसी प्रकार सद्बुद्धि स्वाभाविक है । यह ईश्वर प्रदत्त है, दैवी है, जन्मजात है, जीवन संगिनी है । संसार में भेजते समय प्रभु हमें सद्बुद्धि रूपी कामधेनु भी देते हैं ताकि वह हमारे सम्पूर्ण सुख-साधन जुटाती रहे, परन्तु हम भूलवश, भ्रमवश, अज्ञानवश, माया ग्रस्त होकर सद्बुद्धि को त्याग कर कुबुद्धि को अपना लेते हैं और मिथ्याचरण से बीमारी न्योंत बुलाई जाती है । वैसे ही मानसिक अव्यवस्था के कारण कुबुद्धि को आमंत्रित किया जाता है । यह पिशाचिनी जहाँ आई नहीं कि जीवन का सारा क्रम उलटा नहीं, दोनों एक साथ रह नहीं सकतीं। जहाँ कुबुद्धि होगी, वहाँ तो अशान्ति, चिंता, तृष्णा, नीचता, कायरता आदि की कष्टकारक स्थितियों का ही निवास होगा ।

गायत्री सद्बुद्धि ही है । इस महामंत्र में सद्बुद्धि के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई है। इसके २४ अक्षरों में २४ अमूल्य शिक्षा संदेश भरे हुए हैं, वे सद्बुद्धि के मूर्तिमान प्रतीक हैं । उन शिक्षाओं में वे सभी आधार मौजूद हैं जिन्हें हृदयंगम करने वाले का सम्पूर्ण दृष्टिकोण शुद्ध हो जाता है और उस भ्रम जन्य अविद्या का नाश हो जाता है, जो आये दिन कोई न कोई कष्ट उत्पन्न करती है । गायत्री महामंत्र की रचना ऐसे वैज्ञानिक आधार पर हुई है कि उसकी साधना से अपने भीतर छिपे हुए अनेकों गुप्त शक्ति केन्द्र खुल जाते हैं और अन्तस्तल में सात्विकता की निर्झरिणी बहने लगती है । विश्वव्यापी अपनी प्रबल चुम्बक शक्ति से खींच कर अन्त: प्रदेश में जमा कर देने की अद्भुत शक्ति गायत्री में मौजूद है । इन सब कारणों से कुबुद्धि का शमन करने में गायत्री अचूक रामबाण मंत्र की तरह प्रभावशाली सिद्ध होती है । इस शमन के साथ-साथ अनेकों दु:खों का समाप्त हो जाना भी पूर्णतया निश्चित है । गायत्री देवी प्रकाश की वह अखण्ड ज्योति है, जिसके कारण कुबुद्धि का अज्ञानान्धकार दूर होता है और अपनी वही स्वाभाविक स्थिति प्राप्त हो जाती है, जिसको लेकर आत्मा इस पुण्यमयी धरती माता की परम शान्ति दायक गोदी में किल्लोल करने आया है ।

रंगीन काँच का चश्मा पहन लेने पर आँखों से सब चीजें उसी रंग की दिखती हैं जिस रंग का कि वह काँच होता है । कुबुद्धि का चश्मा लगा लेने से सीधी साधारण-सी परिस्थितियाँ और घटनाएँ भी दु:खदायी दिखाई देने लगती हैं । जिस मनुष्य को भौंरी रोग हो जाते हैं सिर घूमता है, मस्तिष्क में चक्कर आते हैं उसे दिखायी देता है कि सारी पृथ्वी, मकान, वृक्ष आदि घूम रहे हैं । डरपोक आदमी को झाड़ी में भूत दिखायी देने लगता है । जिसके भीतर दोष है उसे बाहर के सुधार से कुछ लाभ नहीं हो सकता, उसका

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रोग मिटेगा तभी जब बाहरी अनुभूतियों का निवारण होगा । पीला चश्मा पहनने वाले के सामने चाहे कितनी ही चीजें बदल कर रखी जायें पर पीलेपन के अतिरिक्त और कुछ दिखायी न देगा । बुखार से मुँह कड़ुआ हो रहा है तो उसे स्वादिष्ट पदार्थ भी कड़ुए लगेंगे । कुबुद्धि ने जिसके दृष्टिकोण को, विचार प्रवाह को दूषित बना दिया है, वह चाहे स्वर्ग में रखा जाय चाहे कुबेर-सा धनपति या इन्द्र-सा सत्ता सम्पन्न बना दिया जाय तो भी दु:खों से छूट न सकेगा ।

गायत्री महामंत्र का प्रधान कार्य कुबुद्धि का निवारण है । जो व्यक्ति कुबुद्धि से बचने और अग्रसर होने का व्रत लेता है वही गायत्री का उपासक है । इस उपासना का फल तत्काल मिलता है जो अपने अन्त:करण में सद्बुद्धि को जितना स्थान देता है उसे उतनी ही मात्रा में तत्काल आनन्दमयी स्थिति का लाभ प्राप्त होता है ।

गायत्री से सद्बुद्धि और सुमति

गायत्री सद्बुद्धि का मंत्र है । इस महामंत्र में कुछ ऐसी विलक्षण शक्ति है कि उपासना करने वाले के मस्तिष्क और हृदय पर बहुत जल्दी आश्चर्यजनक प्रभाव परिलक्षित होता है । मनुष्य के मन: क्षेत्र में समाये हुए काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, चिन्ता, भय, शोक, ईर्ष्या, द्वेष, पाप, कुविचार आदि चाहे कितनी ही गहरी जड़ जमाये बैठे हों, मन में तुरन्त ही हलचल आरम्भ होती है और उनका उखड़ना, घटना तथा मिटना प्रत्यक्ष दिखाई पड़ने लगता है ।

संसार में समस्त दु:खों की जननी कुबुद्धि ही तो है । जितने भी दु:खी मनुष्य इस विश्व में दीख पड़ते हैं, उनके दु:खों का एकमात्र कारण उनके आज के अथवा भूतकाल के कुविचार ही हैं । परमात्मा का युवराज मनुष्य दु:ख के निमित्त नहीं, अपने पिता के इस पुण्य उपवन-संसार में आनन्द की क्रीड़ा करने के लिये आता है । इस 'स्वर्गादपि गरीयसी' धरती माता पर वस्तुत: दु:ख का अस्तित्व नहीं है । कष्टों का कारण तो केवल 'कुबुद्धि' है । यही दुष्ट हमें आनन्द से वंचित करके नाना प्रकार के क्लेशों, भयों एवं शोक-सन्तापों में फँसा देती है । जब तक यह कुबुद्धि मन में रहती है, तब तक कितनी ही सुख-सामिग्री प्राप्त होने पर भी चैन नहीं मिलता । कोई न कोई क्लेश सामने खड़ा ही रहता है । एक चिन्ता दूर नहीं हो पाती कि दूसरी सामने आ खड़ी होती है । इस विषम स्थिति से छुटकारा पाने के लिए कुबुद्धि को हटाकर सद्बुद्धि की स्थापना आवश्यक होती है । इसके बिना शान्ति मिलना किसी भी प्रकार सम्भव नहीं । सद्बुद्धि की अजस्र धारा गायत्री माता का पयपान करने से प्राप्त होती है । इसे पाकर मनुष्य आधिदैहिक, आधिदैविक, आधिभौतिक त्रितापों से छुटकारा पाकर सच्ची शान्ति का अधिकारी बनता है।

पहले ही यह विस्तारपूर्वक बताया जा चुका है कि गायत्री के चार चरणों से किस प्रकार चार प्रकार की कुबुद्धियाँ दूर होती हैं । (१) "ॐ भू भुर्व: स्व: " इस प्रथम पाद को हृदयंगम कर लेने से मनुष्य को घट-घट में कण-कण में समाये हुए परमात्मा की झाँकी होती है, फलस्वरूप वह दुष्कर्म करने का साहस उसी प्रकार नहीं कर पाता जिस प्रकार कोतवाल को सामने खड़ा देख कर चोर को चोरी करने की हिम्मत नहीं पड़ती । सब में परमात्मा का अस्तित्व देखने वाले को स्वभावत: सबके साथ आत्मीयता, उदारता, प्रेम, ईमानदारी, सेवा, सद्व्यवहार एवं मधुरता का व्यवहार करने की भावनाएँ उमड़ती हैं । सर्वत्र ईश्वर का दर्शन करते हुए बुरे कर्मों से बचना और सबके साथ स्नेहपूर्वक सद्व्यवहार करना यह नीति ऐसी है जिससे मनुष्य दुष्कर्मों से दण्डस्वरूप प्राप्त होने वाले राजदण्ड, सामाजिक दण्ड एवं ईश्वरीय दण्डों से बचा रहता है और अपने सद्व्यवहार के कारण प्रत्युत्तर में संसार की ओर से भी सद्भाव, सहयोग, एवं स्नेह पाकर सुख, शान्तिमय जीवन व्यतीत करता है ।

(२) गायत्री का दूसरा चरण "तत्सवितुर्वरेण्यं" साधक में विवेक, दूरदर्शिता, तत्त्व, दृष्टि, दिव्य-ज्ञान, एवं सूक्ष्मावलोकन की क्षमता उत्पन्न करता है । इस तत्त्व को प्राप्त कर लेने पर सत्-असत् का ज्ञान होता है और तुरन्त के हानि-लाभ पर विचार न करके दूरवर्ती परिणामों पर सूक्ष्म दृष्टि से देखना आरम्भ कर देता है। फलस्वरूप क्षुद्र प्रलोभनों को ठुकरा कर वह चिरस्थायी सत्कार्यों को अपनाने का मार्ग ग्रहण करता है । क्षणिक इन्द्रिय सुख तात्कालिक लाभ, वासना, मोह, लोभ आदि के अज्ञान में फँस कर लोग पथ-भ्रष्ट होते हैं । गायत्री माता का दूसरा चरण साधक को पथ-भ्रष्ट नहीं होने देता और वह विवेक पूर्ण दूरदर्शिता के साथ सन्मार्ग पर चलता हुआ चिरस्थायी सुखों का अधिकारी बनता है ।

(३) गायत्री का तीसरा चरण "भर्गोदेवस्य धीमहि" मनुष्य को दैवी सम्पत्तियाँ प्रदान करता है । गीता के १६ वें अध्याय में जिन २६ सद्गुणों को दैवी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संम्पत्तियाँ गिनाया गया है वस्तुतः मनुष्य का मूल्य, मान, महत्त्व, ऐश्वर्य उन्हीं से बढ़ता है । रूप, यौवन, धन, सम्पत्ति आदि तो क्षणिक हैं । आज हैं तो कल इनका पता भी नहीं लगता । आज का अमीर कल दर-दर का भिखारी हो सकता है, पर सद्गुणों की दैवी सम्पत्तियाँ ऐसी हैं कि यह ऐश्वर्य दिन-दिन बढ़ता ही चलता है और महानता के उच्चशिखर पर पहुँचकर पूर्णता के परम लक्ष को प्राप्त कर लोता है। सच्चरित्रता, परश्रिम प्रियता, उत्साह, साहस, प्रसन्नता, मधुरता, नम्रता, शिष्टाचार, नियमितता, संयम; मितव्ययिता, अनुशासन, जिम्मेदारी, बफादारी, जिज्ञासा, धैर्य, स्थिर मति आदि अनेकों सद्गुण उसमें बढ़ते हैं, फलस्वरूप उसका व्यक्तित्व दिन-दिन ऊँचा उठता जाता है और उसे सर्वत्र मान, सहयोग एवं सद्भाव हीं प्राप्त होता है । ऐसे मनुष्य ही सच्चे अमीर कहे जाते हैं ।

(४) गायत्री का चौथा चरण "धियोयोनः प्रचोदयात्." आत्म-निरीक्षण, आत्म-शुद्धि, आत्म उन्नति एवं आत्म-साक्षात्कार करने की शक्ति उत्पन्न कर देता है । जैसे ही मनुष्य के अन्तःकरण में गायत्री माता के चौथे चरण का पर्दापण होता है वैसे ही वह अपनी कठिनाइयों का दोष दूसरों को देना छोड़कर आत्म-निरीक्षण आरम्भ कर देता है । अपने अन्दर जो त्रुटियाँ हैं उन्हें ढूँढता है' उनके लिए शोक एवं प्रायश्चित्त करता है उन्हें हटाता है, आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाता है और संतुलित मस्तिष्क एवं शान्त चित्त से प्रत्येक बात के मूलकारण पर विचार करता हुआ ऐसी गति-विधि ग्रहण करता है, जो अपने और दूसरों के कष्ट बढ़ाने में नहीं, उत्कर्ष में सहायक हो । उसका चित्त हर घड़ी प्रसन्न रहता है । उसके समीप रहने वाले भी प्रसन्नता का अनुभव करते हैं । कोई आपत्ति प्रारब्धवश सामने आती है तो उसे भोग से निवृत्ति का सुअवसर समझ कर धैर्य-पूर्वक सहन कर लेता है । आत्मा में अवस्थिति दिन-दिन बढ़ते चलने से वह आत्म-साक्षात्मकार करता है और प्रभु की कृपा का सच्चा अधिकारी उन्हीं में लीन हो जाता है ।

इस प्रकार मनुष्य के अन्तःकरण में जैसे-जैसे गायत्री माता की किरणें आती हैं, चरण पड़ते हैं, वैसे-वैसे उसे अपने अन्दर दिव्य प्रकाश, दिव्य बल, दिव्य शान्ति एवं दिव्य उत्कर्ष अनुभव होता है । उसका जीवन निकृष्ट कोटि में न रहकर उच्च आध्यात्मिक भूमिका में विकसित होता जाता है । उसका जीवन-क्रम बाहर से चाहे साधारण ग्रहस्थ, साधारण व्यापारी, कर्मचारी जैसा ही दिखाई पड़ता हो पर भीतर से उसकी स्थिति उच्चकोटि के सन्तों एवं सत्पुरुषों जैसी हो जाती है ।

संसार में जितने दुःख हैं, कुबुद्धि के कारण हैं । लड़ाई-झगड़ा, आलस्य, दरिद्रता, व्यसन, व्यभिचार, आवारागर्दी, कुसंग, कटुभाषण, चोरी, स्वार्थपरता, ज्वारी, छल, निष्ठुरता, अन्याय, अत्याचार, असंयम आदि के पीछे मनुष्य की कुबुद्धि ही काम करती है । इन्हीं कारणों से रोग, शोक, अभाव, चिन्ता, कलह आदि का प्रादुर्भाव होता है और इन्हीं से नाना प्रकार की पीड़ाएँ, व्यथाएँ, यातनाएँ सहनी पड़ती हैं । कर्म का फल निश्चित है । बुरे कर्म का फल बुरा ही होता है । कुबुद्धि से ही बुरे विचार बनते हैं, इसलिए दुर्बुद्धि को पापों की जननी कहा गया है । पूर्व जन्मों के प्रारब्ध गत पाप भी पूर्व जन्मों की कुबुद्धि के परिणाम हैं । इसलिये यही मानना पड़ता है कि जो भी दुःख हमें उपलब्ध हैं या जो भी कठिनाई हमारे सामने हैं उसमें वर्तमान काल की या भूतकाल की कुबुद्धि ही मूल कारण है । गायत्री मंत्र का प्रधान कार्य इस कुबुद्धि को हटाना है । उपासना के फलस्वरूप मस्तिष्क में सद्विचार और हृदय में सद्भाव उत्पन्न हो जाते हैं, जिसके कारण मनुष्य का जीवन-क्रम ही बदल जाता है । सद्भावना की वृद्धि के साथ—साथ उसे अनायास ही अनेक प्रकार के सुख-सौभाग्य उपलब्ध होते हैं, साथ ही उसके समीप रहने वाले, पड़ोसी एवं सम्बन्धी भी उसकी समीपता से सुख तथा सन्तोष लाभ प्राप्त करते हैं, ऐसे व्यक्ति वहाँ भी रहते हैं वहाँ सुखद वातावरण उत्पन्न करते हैं ।

हमारे देखने में ऐसी अनेकों घटनाएँ आई हैं जिनमें कुविचारों के कारण उपस्थित रहने वाली अशान्ति का गायत्री उपासना से सहज समाधान हुआ है ।

अम्बाला में एक माहेश्वरी परिवार का लड़का कुसंग में पड़कर ऐसी बुरी आदतों का शिकार हो रहा था जिससे उनके प्रतिष्ठित परिवार पर कलङ्क लगता था । लड़के के पिता ने दुःखी होकर गायत्री माता की शरण ली । फलस्वरूप लड़के के विचार बदले, वह सुधरा और परिवार का वातावरण शान्तिमय हो गया ।

शेखूपुरा (पंजाब) के एक १४ वर्षीय वैश्य बालक के माता-पिता एक ही साल के भीतर स्वर्गवासी हो गये । संरक्षण और नियन्त्रण के अभाव में लड़का कुसङ्ग में पड़ गया और बुरी आदतों में पाँच वर्ष के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भीतर ही सारी नकदी, जायदाद स्वाहा हो गई । इसके बाद वह चोरी, जेबकटी आदि बुरे उपायों से कठिनाई के साथ अपना खर्च चलाने लगा । अपनी पिछली और वर्तमान दशा की तुलना करके वह सदा दुःखी रहता । ऐसी परिस्थिति में उसे किसी ने गायत्री मन्त्र जपने की सलाह दी । इस कार्य का अवलम्बन करने से थोड़े ही दिन में इसका मानसिक कायाकल्प हो गया और अब सत्पुरुषों की भाँति जीवन यापन कर रहा है।

टोंक के एक श्रीवास्तव जमींदार अपने परिवार में १९ व्यक्ति छोड़कर स्वर्गवासी हो गये । यह सबके सब ऐसे थे जो स्वयं कुछ न कमाते थे, जमींदारी की आमदनी पर ही निर्भर थे । पिता जी जमीदारी के अलावा जो कमाते थे बच्चों के लिए वह आमदनी बन्द हो गई । उधर उनका खर्च बढ़ गया । आपस में लड़ाई-झगड़े रहने लगे, मुकद्माबाजी तथा फौजदारी तक होने लगी । बड़ा लड़का इस स्थिति को देख कर मन ही मन रोया करता । निराशा के वातावरण में उसे किसी ने गायत्री जपने की सलाह दी । कुछ ही समय में घर भर की बुद्धि में परिवर्तन होने लगा । जो कमाने लायक थे वे नौकरी या व्यापार में लग गये । झगड़े शान्त हुए ; डगमगाता हुआ घर बिगड़ने से बच गया ।

नासिक में एक मराठा परिवार का बारह वर्षीय बालक कुछ ऐसा बिगड़ा कि घर से रुपया जेवर आदि लेकर भाग जाता और कई हफ्ते दूर-दूर तक रेल यात्रा करता । घर वालों को उसके सम्बन्ध में बड़ा दुःख रहता । कई बार उसे ढूँढ़-ढूँढ़ कर लाये । ढूँढ़ने में बहुत समय और धन बर्बाद होता । इस चिंता से ग्रस्त दशा में उन्होंने गायत्री उपासना आरम्भ की । एक पुरश्चरण भी कराया । वह लड़का जो अनेक प्रकार समझाने बुझाने, दण्ड देने, प्रलोभन दिखाने आदि से भी नहीं मान रहा था, अपने आप बदला, सम्भाला और पढ़ने में चित्त लगाने लगा । इस समय वह कालेज के अन्तिम वर्ष में है और अच्छे नम्बरो से सदा उत्तीर्ण होता है ।

जैसलमेर के एक मारवाड़ी सज्जन की वेश्यागमन में प्रवृत्ति हो गई । जो कुछ कमाते सब इसी में खर्च कर देते । स्त्री के जेवर तक भी बेच दिये । जब वह समझाती-बुझाती तो उसी बेचारी को मार खानी पड़ती। तीन छोटे बालकों समेत वह महिला बहुदुःखी रहती । एक सहेली से उसने गायत्री की प्रशंसा सुनी, वह उपासना करने लगी । पति के विचार बदलने में इसका बड़ा अच्छा प्रभाव हुआ । वे मारवाड़ी सज्जन रास्ते पर आ गये उनकी आर्थिक एवं पारिवारिक स्थिति ठीक हो गई ।

दूसरों की बुद्धि सुधारने में भी गायत्री से लाभ होते हैं, स्वयं अपना सुधार तो उससे होता ही है । प्राचीन काल में ऐसे अनेक उदाहरण मौजूद हैं, जिनमें घोर पापियों के भी उद्धार भगवान् की शरण में आने से हुए हैं । आत्मोद्धार के जितने भी साधन हैं उनमें गायत्री किसी भी तरह कम नहीं है । इतिहास पुराणों में वर्णन है कि सदन कसाई, हत्यारा अजामिल, डाकू वाल्मीकि आदि पातकियों को भी सद्गति मिली । आम्रपाली वेश्या परम साध्वी तपस्विनी बनी । वेश्यागामी सूरदास परम भक्त हुए । इस प्रकार के परिवर्तन अब भी होते हैं । जिनके जीवन का अधिकांश भाग बुराइयों में बीता है उन्होंने जब गायत्री की शरण ली तो उनका अनतःकरण बिल्कुल ही बदल गया । पिछली भूलों के लिए उन्होंने सच्चे हृदय से पश्चाताप किया और आगे से दिन-दिन शुद्ध और सतोगुणी बनते गये ।

पापों के प्रायश्चित्त के जितने उपाय हैं उनमें गायत्री उपासना सबसे सरल और सबसे श्रेष्ठ है । कहा भी है—

ब्रह्म हत्यादि पापानि गुरुपि च लघुनि च ।
नाशयन्त्यचिरेणैव गायत्री जपते द्विजः ।।

गायत्री जपने वाले के सभी पाप चाहे बड़े हों या छोटे हों शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं ।

गायत्री जप कृद्-भक्त्या सर्व पापै प्रमुच्यते ।

—पाराशर

भक्ति पूर्वक जपने वाला समस्त पापों से छूट जाता है ।

सर्व पापानि नश्यन्ति गायत्री जपतो नरः ।

—व्यास

गायत्री जपने वाले मनुष्य के सब पाप नष्ट हो जाते हैं ।

गायत्री जपतो यस्तु कल्पमुत्थापयो द्विजः ।
स लिम्पति न पापेभ्यो पद्म पत्र मिवाभ्भसा ।

—अत्रि

जो द्विज प्रातःकाल गायत्री का जप करता है, वह जल में कमल-पत्र की भाँति पाप-ग्रस्त नहीं होता ।

इस प्रकार के असंख्यों प्रमाण शास्त्रों में मौजूद हैं। अगणित उदाहरण मौजूद हैं और अनेक व्यक्ति आज भी ऐसे मौजूद हैं जिनके जीवन में गायत्री-उपासना से आश्चर्यजनक आध्यात्मिक कायाकल्प हुए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं । किसी समय के घोर पापी मनुष्य आज ऋषियों जैसी घोर तपस्या करते हुए परम सतोगुणी जीवन यापन कर रहे हैं । कहा जाता है कि लोहे को सोना बना देने का गुण पारस मणि में होता है । पारस किसी ने देखा नहीं है—पर गायत्री की पारस मणि प्रत्यक्ष है । यह काले कलुषित हृदयों को भी स्वर्ण-सा शुद्ध परम पवित्र और निष्पाप बना सकती है । इसकी परीक्षा कोई भी मनुष्य अपने ऊपर करके खातिर कर सकता है ।

मस्तिष्क को बल देने एवं बुद्धि को तीव्र करने की असाधारण सामर्थ्य गायत्री में भरी हुई है । कई व्यक्ति जो आरम्भ में बड़ी मन्द बुद्धि और मतिहीन थे उनकी बुद्धि में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुए हैं । जिनकी बुद्धि आरम्भ से ही तीव्र है उनका मस्तिष्क तो इस महामन्त्र के प्रकाश से कमल पुष्प की तरह खिल पड़ता है । बड़ौदा के एक वकील रामचन्द काली शङ्कर पाठक जीवन के आरम्भिक भाग में १०) मासिक की छोटी मजूरी करते थे । गायत्री की उपासना से उनकी बुद्धि प्रखर हुई और अपने बलबूते पर वकालत पास करके सुख सम्पन्न बने ।

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती के गुरु प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती गङ्गा में खड़े होकर गायत्री का जप करते थे । जन्म से अन्धे होते हुए भी उन्होंने संस्कृत एवं वेद का असाधारण ज्ञान प्राप्त किया । इसका कारण उनका गायत्री तप ही था ।

मान्धाता ओंकारेश्वर मन्दिर के पीछे गुफा में एक महात्मा गायत्री तप करते थे । मृत्यु के समय उनके परिवार के व्यक्ति उपस्थित थे । परिवार के एक बालक ने उनसे प्रार्थना की कि मेरी बुद्धि मन्द है मुझे विद्या नहीं आती, मुझे भी आशीर्वाद देकर यह दोष दूर करदें, महात्मा जी ने कमण्डल में से जल लेकर गायत्री मन्त्र के साथ बालक की जीभ पर डाला और आशीर्वाद दिया कि पूर्ण विद्वान हो जायेगा । आगे चल कर यह बालक सचमुच असाधारण प्रतिभाशाली विद्वान हुआ । इन्दौर में ओंकार जोशी के नाम से इनने प्रसिद्धि पाई । इन्दौर नरेश भी इनकी सिद्धि से बहुत प्रभावित थे ।

कितने ही ऐसे बालक जो परीक्षा की समुचित तैयारी नहीं कर सके थे तथा जिनकी बुद्धि भी मन्द थी गायत्री उपासना द्वारा परीक्षा में अच्छे नम्बरों में उत्तीर्ण हुए हैं । पागल, अर्द्धविक्षिप्त, मृगी रोग ग्रस्त, अनिद्रा के रोगी, भूतोन्माद से पीड़ित व्यक्तियों का मस्तिष्क गायत्री उपासना के प्रभाव से निरोग होते देख गया है ।

गर्भावस्था में बालक पर गायत्री के संस्कार डाले जायें तो उसका मस्तिष्क बहुत ही विलक्षण प्रतिभावान् होता है । माण्डूक्य उपनिषद् पर कारिका रचने वाले महा पण्डित श्री गौडपाद को जन्म देने से पूर्व उनके पिता ने उपवास पूर्वक सात दिन तक गायत्री जप किया था ।

जिनकी स्मरण शक्ति शिथित है, बुद्धि मन्द है, मस्तिष्क जल्दी थक जाता है, उन्हें गायत्री उपासना करके थोड़े ही समय में इस महाशक्ति के चमत्कार देखने को मिलते हैं । कीमती दवाएँ जो कार्य नहीं कर सकतीं वह इससे पूरा होता है । ब्राह्मी तेल लगाने और बादाम पाक सेवन से मस्तिष्क को उतना बल नहीं मिल सकता जितना इस उपासना से मिलता है । सिर में दर्द, चक्कर आना, निद्रा में कमी, आये दिन नाना प्रकार के शिरोरोगों की शिकायतें जिन्हें बनी रहती हैं उन्हें गायत्री उपासना का अवलम्बन लेना चाहिये । इससे मस्तिष्क के सभी कलपुर्जे बलवान, सजीव, चैतन्य और निरोग बनते हैं । बुद्धि की अधिष्ठात्री देवी जिनके मनःक्षेत्र में प्रवेश करेंगी उसका मानसिक विकास होना स्वाभाविक है । मस्तिष्क के अन्तर्गत जो नाना प्रकार की शक्तियाँ सन्निहित हैं उनका धीरे-धीरे विकाश होता है और मनुष्य बुद्धिमान्, विवेकशील एवं प्रतिभावान् बनता चलता है ।

जिनके घर में कुबुद्धि का साम्राज्य छाया रहता है, आपस में द्वेष, असहयोग, मनमुटाव, कलह, दुराव एवं दुर्भाव रहता है । आये दिन झगड़े रहते हैं । आपाधापी और स्वार्थपरता में प्रवृत्ति रहती है । गृह-व्यवस्था को ठीक रखने, समय का सदुपयोग करने, योग्यताएँ बढ़ाने, अनुशासन मानने, कुसंग से बचने, श्रमपूर्वक आजीविका कमाने, मन लगाकर विद्याध्ययन करने में प्रवृत्ति न होना आदि दुर्गुण कुबुद्धि के प्रतीक हैं । जहाँ यह बुराइयाँ भरी रहती हैं, वे परिवार कभी भी उन्नति नहीं कर सकते, अपनी प्रतिष्ठा को कायम नहीं रख सकते, इसके विपरीत उनका पतन आरम्भ हो जाता है। बिखरी हुई बुहारी की सीकों की तरह छिन्न-भिन्न होने पर वर्तमान स्थिति भी स्थिर नहीं रहती । दरिद्रता, हानि, घाटा, शत्रुओं का प्रकोप, मानसिक अशान्ति की अभिवृद्धि आदि बातें दिन-दिन बढ़ती हैं और वे घर कुछ ही समय में अपना सब कुछ खो बैठते हैं । कुबुद्धि ऐसी अग्नि है कि वह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जहाँ भी रहती है वहीं की वस्तुओं को जलाने और नष्ट करने का कार्य निरन्तर करती रहती है ।

जहाँ उपरोक्त प्रकार की स्थिति हो वहाँ गायत्री उपासना का आरम्भ होना एक अमोघ अस्त्र है । अँगीठी जलाकर रख देने से जिस प्रकार कमरे की सारी हवा गरम हो जाती है और उसमें बैठे हुए सभी मनुष्य सर्दी से छूट जाते हैं, इसी प्रकार घर के थोड़े से व्यक्ति भी यदि सच्चे मन से माता की शरण लेते हैं तो उन्हें स्वयं तो शान्ति मिलती ही है, साथ ही उनकी साधना का सूक्ष्म प्रभाव घर भर पर पड़ता है और चिन्ताजनक मनोविकारों का शमन होने तथा सुमति, एकता, प्रेम, अनुशासन तथा सद्भाव की परिवार में बढ़ोत्तरी होती हुई स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है । साधना निर्बल हो तो प्रगति धीरे-धीरे होती है पर होती अवश्य है ।

परिवार ही नहीं, पड़ोसियों, सम्बन्धियों तथा सहकर्मियों तक पर इसका प्रभाव पड़ता है । सुगन्धित इत्र कपड़ों से लगा हो तो जो कोई भी अपने समीप आवेगा उसे ही सुगन्धि मिलेगी । गायत्री तपस्या की दिव्य सुगन्ध साधक की आत्मा में से सदैव उड़ती रहती है । वह जहाँ भी जाता है, जहाँ भी बैठता है वहीं वह सद्बुद्धि की शक्ति तरंगें छोड़ता है और वहाँ की अशान्ति मिट कर शान्ति स्थापित होती है ।

(१) अपनी मनोभूमि में छाये हुए अज्ञान का निवारण होकर परम श्रेयष्कर आत्मिक उन्नति का होना, (२) अनेक दोषों, पापों और बुरी आदतों से छुटकारा मिलना, (३) मानसिक उलझनों का नष्ट होना, (४) पिछले पापों का प्रायश्चित होकर कर्मबन्धन मिटना, (५) बुद्धि की तीव्रता मनोबल का विकास, (६) सद्भावना और सुमति का बढ़ना आदि गायत्री के बौद्धिक लाभ हैं । मनुष्य जीवन में इनका महत्त्व कम नहीं है । इन वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए यदि उपासना में मनुष्य को कुछ समय लगाना पड़ता है तो वह लगाया जाना ही उचित है ।

यों गायत्री की ब्रह्म-शक्ति के अनेक लाभ हैं । उनमें आध्यात्मिक लाभ मुख्य एवं सांसारिक गौण हैं । किन्तु सद्बुद्धि का प्राप्त होना तो सुनिश्चित है । क्योंकि गायत्री प्रधान तथा सद्बुद्धि का मन्त्र है । इसे जो लोग श्रद्धापूर्वक अपनाते हैं उनकी अनेकों बुरी आदतें अपने आप दूर होने लगती हैं । कई व्यक्ति सोचते हैं कि जब तक हमारी आत्मा पूर्ण पवित्र न हों, तब तक जाप करना व्यर्थ होगा । हमारा कहना है वह अग्नि क्या, जो कूड़े को जला न दे । वह गंगा क्या, जो मलों को शुद्ध न करदे । गायत्री उपासना मनुष्य की सभी बुराइयों को दिन-दिन घटाती है और उसी धीरे धीरे शुद्ध बुद्धि, पवित्र आत्मा बनाती चलती है । कुकर्मी, चोर, व्यभिचारी, अभक्ष, भोगी, व्यसनी और पापी व्यक्ति भी जब गायत्री उपासना आरम्भ करते हैं तो उनकी अन्तर्रात्मा स्वयं इतनी बलवती होने लगती है कि शरीर और मन में बुराइयों का ठहरना ही सम्भव नहीं रहता ।

आप गायत्री उपासना करते हैं तो उसे बढ़ाइए, नहीं उसी क्रम में करते रहिए । उसका परिणाम शुभ ही होगा । शास्त्रोक विधि-विधानपूर्वक की हुई गायत्री उपासना कभी भी निष्फल नहीं जाती । उससे मानसिक शान्ति का निश्चित रूप से सत् परिणाम प्राप्त होते हैं ।

संसार में जितनी भी सुख-सम्पत्तियाँ हैं, उस सर्व-शक्ति मान सत्ता के हाथ में है । वही उसकी स्वामिनी है । जब उस परब्रह्म से मनुष्य अपना सम्बन्ध स्थापित कर लेता है और उसकी कृपा का अधिकारी बन जाता है तो उसे अपने इष्टदेव के अधिकार की कोई भी वस्तु प्राप्त करना कठिन नहीं रहता । जो राजा का कृपापात्र है उसे उस राज्य की कोई भी वस्तु मिल सकती है । जिन असुविधाओं को राजा दूर कर सकता है उनसे भी वह राज-कृपापात्र, छुटकारा पा सकता है। इसी प्रकार उस परब्रह्म की कृपा को जो लोग प्राप्त कर लेते हैं उनके लिये इस विश्व का प्रत्येक पदार्थ, प्रत्येक सुख, करतल गत हो जाता है । उनके लिए कोई अभाव एवं त्रास शेष नहीं रहता ।

गायत्री महामंत्र ईश्वरीय कृपापात्र बनने का सर्वोत्तम साधन है । इस मंत्र में बताई हुई शिक्षाओं को अपने जीवन में डाल देने वाले गायत्री के २४ अक्षरों में बताते हुए सिद्धान्तों, आदर्शों, दृष्टिकोणों एवं कर्त्तव्यों को हृदयंगम करने वाला मनुष्य प्रभु को अत्यन्त प्रिय होता है । जो भक्ति का परिचय दे वही भक्त है । भक्ति का एक मात्र लक्षण ईश्वर की आज्ञाओं को पालन करना, उसके बताये हुए मार्ग पर चलना है । जो लोग हरघड़ी ईश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन करते हैं, जिनके विचार ईश्वरीय विचारधारा से विपरीत दिशा में चलते रहते हैं, जो अपने धर्म कर्त्तव्यों की उपेक्षा करते रहते हैं, ऐसे लोग केवल पूजा-पाठ से ईश्वर के भक्त नहीं बन सकते और न प्रभु का अनुग्रह प्राप्त कर सकते हैं, जिन्हें अनेकों उलझनों, कठिनाइयों, भयों, अभावों तथा अनिष्टों से छुटकारा पाना है वे गायत्री माता के बताये मार्ग पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चलें, अपने विचारों को धर्मानुकूल एवं सात्विक बनावें। सच्चे गायत्री उपासकों की मनोकामनाएँ अवश्य पूर्ण ही होती हैं ।

विद्या बुद्धि की अधिष्ठात्री गायत्री

जयदेव वर्मा लिखते हैं कि त्रिधा गायत्री का एक रूप सरस्वती है । वह विद्या बुद्धि की अधिष्ठात्री देवी है। उसका सम्बल लेकर ज्ञानसाधना में प्रवृत्त होने वाले कई छात्र मेरे सम्पर्क में आये हैं जो इससे पूर्व तो नितान्त मन्द बुद्धि थे, परन्तु निष्ठापूर्वक गायत्री उपासना में लगने के बाद उनकी बौद्धिक प्रखरता बढ़ती ही गयी । यों भी कहा जा सकता है कि अभ्यास और लगन से किसी दिशा में अटूट निष्ठा के साथ संरत हुआ जाय तो अपेक्षित परिणाम आते ही हैं । परन्तु कई बार ऐसा भी होता है कि अभीष्ट दिशा में रुचि ही नहीं होती । जानते हैं कि हमारे लिए श्रेयस्कर यही दिशा है, इसी ओर चलने पर हमारा कल्याण होगा पर उस विभ्रम-माया को क्या कहें जो हमें उस ओर बढ़ने ही नहीं देती ।

उस ओर रुचि उत्पन्न होना भी लक्ष प्राप्ति की दिशा में बढ़ने के लिए आवश्यक है । यह तो हुई पुरुषार्थ और परिश्रम शीलता की बात । साधना उपासना से जैसे अभीष्ट दिशा में प्रवृत्त होने के लिए सहायता मिलती है, पर अपने २० वर्षों के प्राध्यापकीय जीवन में मुझे ऐसी कितनी ही घटनाएँ देखने में आयी हैं जब मैंने नितान्त मन्द बुद्धि छात्रों को कुछ ही समय में अद्‌भुत प्रतिभाशाली बनते देखा है और जिन छात्रों में ऐसा परिवर्तन आया है उन्हें मैंने इससे पूर्व गायत्री उपासना की प्रेरणा दी थी ।

यह भी कहा जा सकता है कि ऐसे परिवर्तन मात्र संयोग रहे हों, परन्तु अपने व्यक्तिगत जीवन में परिवर्तन के सम्बन्ध में ही मेरे साथ ऐसी दो घटनायें घटी जिनके कारण मेरा यह अटूट विश्वास हो गया कि गायत्री माता कभी भी निराश नहीं करतीं । श्रद्धापूर्वक उसका आंचल पकड़ लिया जाय और अपने प्रयास जारी रखे जायें तो अभीष्ट परिणाम मिलते ही हैं । सन् ७१ की ही घटना है । मेरी लड़की सावित्री ने बी. ए. की परीक्षा के लिए तैयारी की । वह प्राथमिक स्कूल में अध्यापिका है और हायर सैकेंडरी के बाद प्राईवेट रूप से ही पढ़ती रही है । फार्म भर दिया था, फीस भरी जा चुकी थी और सावित्री परीक्षा की तैयारी करने में जुटी हुई थी । रात-दिन एक कर वह अपना काम भी सम्हालती तथा पढ़ती भी । परीक्षा के दिन नजदीक आते जा रहे थे । फरवरी का महीना था कि उसे टाइफायड हो गया । परीक्षा में डेढ़ दो महीने थे । हम सब लोगों को चिन्ता होने लगी ।

हमें तो सावित्री के स्वास्थ्य की ही चिन्ता थी पर सावित्री को अपने स्वास्थ्य से भी ज्यादा परीक्षा की चिन्ता थी । तीव्र ज्वर में पड़े-पड़े भी वह परीक्षा की बात सोचती रहती । रोग और चिन्ता का दुहरा दबाव उसके शरीर पर अपना प्रभाव दिखाने लगा था । मैंने उसे सलाह दी कि मन ही मन गायत्री का जप और ध्यान करो । माँ की कृपा से बड़े-बड़े कठिन काम सरल हो जाते हैं । सावित्री जितनी कुशाग्र बुद्धि, परिश्रमी और सद्‌गुण सम्पन्न है, उतनी ही वह धार्मिक एवं श्रद्धालु भी है । मेरी सलाह को उसने माना और बिस्तर पर पड़े-पड़े ही उसने मानसिक जप आरम्भ कर दिया । परिणाम बड़ा आशाजनक हुआ । बीमारी अपने मियाद से पहले ही सुलझ गयी । फिर भी कमजोरी बहुत अधिक थी । इसलिए हम लोग उसके परीक्षा देने के पक्ष में न थे, पर वह न मानी । उसे अपने भीतर से ऐसा उत्साह उमड़ रहा था कि वह सबसे विश्वासपूर्वक कह रही थी—"न तो मेरे स्वास्थ्य पर इससे कोई बुरा प्रभाव पड़ेगा और न मैं अनुत्तीर्ण ही होऊँगी । उसने ऐसी दशा में परीक्षा दी और अच्छे नम्बरों से पास हुई ।"

ऐसी घटना मेरे पुत्र के सम्बन्ध की भी है । वह बी. ए. तक पढ़ने के बाद आगे बढ़ने का आग्रह कर रहा था । परिवार की स्थिति ऐसी नहीं थी कि हम उसकी अगली पढ़ाई का खर्चा उठा सकें, परन्तु उसका आग्रह प्रबल था तो मैंने उसे सुझाया-गायत्री का एक पुरश्चरण कर ले । शायद माँ कोई रास्ता निकाल दे । उसने पुरश्चरण किया और जिस दिन पुरश्चरण समाप्त हुआ उस दिन शाम को आ कर उसने बताया कि मुझे एक प्रेस में रात को प्रूफ पढ़ने का काम मिल गया है । हमें प्रसन्नता हुई । इस पार्टटाइम काम से जो कुछ मिलता वह उसकी फीस के लिए पर्याप्त था और कहना नहीं होगा कि उसने एम. ए. की परीक्षा दी और उत्तीर्ण हुआ ।

पहेली का प्रथम पुरस्कार जीता

श्री रामेश्वर जी, उरई से लिखते हैं कि मेरे एक मित्र के कथनानुसार हम दोनों माधौगढ़ गये । वहाँ पर पं. छोटे लाल से वार्त्तालाप हुआ । उन्हों बतलाया कि प्रति दिन ११ माला जपकर १०० दिन गायत्री का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक लक्ष जप करो, तुम्हारी मनोकामना सिद्ध होगी । लौटकर हमने प्रतिदिन २००० के हिसाब से जप करना प्रारम्भ किया, किन्तु हमारा जप २—२ से अधिक न चल सका, क्योंकि हम लोगों के सिर में दर्द होने लगा। यह सब अगस्त १९५३ के अन्तिम सप्ताह में हुआ ।

सितम्बर में मेरे मन में अरुणवर्ग पहेली की पूर्ति भेजने की स्फुरणा हुई तथा मैंने तीन वर्ग भेजे । माता की कृपा से प्रथम प्रयास में ही पहेली का प्रथम पुरस्कार मिला ।

एक सच्ची घटना

श्री मन्नूलाल तिवारी, पिछोर झाँसी लिखते हैं कि मैं पिछोर झाँसी (मध्य भारत) का निवासी हूँ । जाति ब्राह्मण है । शिक्षा हिन्दी मिडिल व हिन्दी विशारद है आजकल ग्रामीण पाठशाला में अध्यापक हूँ । मुझे माता गायत्री का जो अनुभव हुआ है उसे अपने भाइयों के समक्ष प्रकट कर रहा हूँ—गत जुलाई सन् ५३ में ४ तारीख को मैं दस्तों की बीमारी में ग्रस्त हुआ और मुझे बहुत ही खूनी दस्त प्रारम्भ हुए यहाँ तक कि १००-१५० तक हो गये । बहुत कमजोर हो गया था । भूख व नींद जाती रही । कई दवाइयाँ की, किन्तु सफलता नहीं मिली । हताश होकर मैं अपना अधिकांश समय गायत्री उपासना में लगाने लगा ।

एक दिन ४.३० बजे के समय कुछ नींद सी आई तो मैं सोच रहा था कि सभी उपचार हो चुके, किन्तु तबीयत ठीक नहीं होती अब तो हे ! माता मृत्यु हो जाना उचित है तो मैं स्वप्न में क्या देखता हूँ कि पश्चिम दिशा की ओर से वेदमाता शेर पर आरूढ़ हुई पूर्व की ओर को आ रही हैं । मैं उन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देख कर कहता हूँ कि कोई यह संन्यासनी है । माता मेरे सिर पर हाथ रख कर कहती है कि मैं संन्यासिनी नही हूँ वेदमाता हूँ । मैं रोकर माताजी से प्रार्थना करता हूँ कि मेरी क्या ऐसी दशा रहेगी । मैं तो मरा जा रहा हूँ । तो माता ने वरदान दिया कि अब ऐसी दशा न रहेगी इतने में शेर ने मेरा बायाँ हाथ पकड़कर खूब जोर से चूसा और हरा, नीला-सा जहर निकालकर कहा कि मैंने तेरे हाथ से जहर चूस लिया जाओ अच्छे हो जाओ ।

इस स्वप्न ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया । माता का सन्देश सफल होने लगा । बीमारी घटी और कुछ ही दिनों में खूनी दस्त बिलकुल बन्द हो गये । मैं बहुत शीघ्र अच्छा हो गया जो कि छः माह में ठीक नहीं हो सकता था । आज भी वह दृश्य मेरे सामने आँखों में समाया हुआ है ।

दूसरे मेरा एक जगह से स्थानान्तर नहीं होता था जो माता की कृपा से हो गया । इसके बाद इच्छित स्थान की प्राप्ति हुई और वहाँ एक बाई महाराज जो उच्च कोटि की तपस्वनी सती साध्वी हैं उनका दर्शन तथा सत्संङ्ग का अच्छा जीवन में अवसर प्राप्त हुआ है। इससे कई और भी अनुभव हैं जो महत्त्वपूर्ण हैं । मैं दावे के साथ कहता हूँ कि जो कार्य किसी और मन्त्रों से पूर्ण हो सकता है, वह गायत्री से भी शीघ्र हो सकता है ।

गायत्री एक अमोघ अस्त्र

श्री रामचन्द्र प्रसाद दानापुर, केण्ट का कहना है कि गायत्री की महिमा अपार है, वेद शास्त्रों ने जगह-जगह वेदमाता की स्तुति की है । ऋषियों ने ऋषीतत्त्व, देवताओं ने देवतत्व गायत्री से ही प्राप्त किये हैं । कामनाओं की सिद्धि के लिये पहले ऋषि महर्षि भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रयोग करते थे । हजारों प्रकार के विधान हमारे पूर्वजों को मालुम थे । यज्ञ वेदी से द्रोपदी को प्रकट करना उन दिनों साधारण बात थी, हम लोग आलस्यवश उन अमूल्य विधानों प्रयोगों को भूल गये हैं । शुक्राचार्य ने यज्ञ द्वारा ऐसी शक्ति राजा बलि को प्राप्त करादी कि उनके आगे इन्द्र भी नहीं ठहर सके । जब तक आर्य जाति माता की आराधना करती रही, धन, जन-शक्ति से भरी रही । आज वेदमाता को भूलकर हम लोग पददलित हो रहे हैं । घर-घर में असन्तोष, अभाव और अशक्ति की आग सुलग रही है।

पूर्व काल में औरों की तो बात ही क्या, स्वयं भगवान् राम और कृष्ण भी गायत्री आराधना करते थे। उस समय गायत्री का त्याग बहुत बड़ा समझा जाता था। फलतः उस समय देश कैसा उन्नत था । अन्न, धन, दूध, घी आदि की कमी न थी । जब से हम लोगों ने माता की अवहेलना की, दीन, हीन कङ्गाल होते गये । अगर अब भी हम लोग पूर्वजों के बताये मार्ग पर चलें, तो फिर गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकते हैं, अकाल, महामारी सङ्कट आदि से मुक्ति पा सकते हैं । भगवान् कृष्ण ने महाभारत के अश्वमेघ पर्व में गायत्री की बड़ी महिमा गाई है, यथा—

"जो प्रतिदिन सुबह शाम को विधिवत सन्ध्योपासना करते हैं, वे वेदमयी नौका का सहारा लेकर इस संसार समुद्र से स्वयं तर जाते हैं और दूसरों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को भी तार देते हैं । जो ब्राह्मण सबको पवित्र करने वाली वेदमाता गायत्री देवी का जप करता है, वह समुद्र पर्यन्त पृथ्वी का दान लेने पर भी प्रतिग्रह के दोष से दुःखी नहीं होता तथा सूर्य आदि ग्रहों में से जो उसके लिए अशुभ स्थान में रहकर अनिष्ट होते हैं, वे भी गायत्री जप के प्रभाव से शान्त, शुभ और कल्याणकारी हो जाते हैं । जहाँ कहीं क्रूर कर्म करने वाले भयंकर पिशाच रहते हैं, वहाँ जाने पर भी वे उस ब्राह्मण का अनिष्ट नहीं कर सकते । वैदिक व्रतों का आचरण करने वाले पुरुष पृथ्वी पर दूसरों को पवित्र करने वाले होते हैं । प्रजापति मनु का कहना है, शील, स्वाध्याय, दान, शौच, कोमलता और सरलता ये सद्गुण ब्राह्मण के लिये वेद से भी बढ़कर हैं । जो ब्राह्मण भूर्भुवः स्वः इन व्याहृतियों के साथ गायत्री का जप करता है, वेद के स्वाध्याय में संलग्न रहता और अपनी ही स्त्री से प्रेम करता है, वही जितेन्द्रिय, वही विद्वान और वही इस भू-मण्डल का देवता है । जो प्रतिदिन सन्ध्योपासना करते हैं, वे निःसन्देह ब्रह्मलोक को प्राप्त होते हैं । केवल गायत्री मात्र जानने वाला ब्राह्मण भी यदि नियम से रहता हो तो वह श्रेष्ठ है, किन्तु जो चारों वेदों का विद्वान होने पर भी सबका अन्न खाता, सब कुछ बेचता और नियमों का पालन नहीं करता, वह उत्तम नहीं माना जाता ।

पूर्व काल में देवता और ऋषियों ने ब्रह्माजी के सामने गायत्री मन्त्र और चारों वेदों को तराजू पर रख कर तौला था । उस समय गायत्री का पलड़ा ही चारों वेदों से भारी साबित हुआ । जैसे भंवर खिले हुए फूलों से उनके सार भूत मधु को ग्रहण करते हैं, उसी प्रकार सम्पूर्ण वेदों से उनकी सार भूत गायत्री को ग्रहण किया गया है । इसलिए गायत्री सम्पूर्ण वेदों का प्राण कहलाती है । गायत्री के बिना सभी वेद निर्जीव हैं । नियम और सदाचार से भ्रष्ट ब्राह्मण चारों वेदों का विद्वान हो तो भी वह निन्दा का ही पात्र है, किन्तु शील और सदाचार से युक्त ब्राह्मण यदि केवल गायत्री जप करता हो तो भी वह श्रेष्ठ माना जाता है । प्रतिदिन १००० गायत्री मन्त्र का जप करना उत्तम है, सौ मन्त्र का जप करना कनिष्क माना गया है । कुन्तीनन्दन गायत्री सब पापों को नष्ट करने वाली है, इसलिये तुम सदा उसका जप करते रहो ।

महाभारत आश्वमेधिक पर्व से उद्धृत । गायत्री मन्त्र में ईश्वर से सद्बुद्धि के लिए प्रार्थना की गई है सद्बुद्धि के बिना धन, वैभव, शक्ति आदि सभी निष्फल हैं । जिन्हें सद्बुद्धि प्राप्त है, उन्हें किसी बात की कमी नहीं रहती । रोग, शोक, दुःख, दारिद्र आदि उसे परेशान नहीं कर सकते । गायत्री वह सतोगुणी शक्ति है, जो साधकों को बलात् पशुतत्व से ऊपर उठाकर देवतत्व की ओर ले जाती है । इन्हीं सब बातों को विचार कर और लाभों को देखकर ऋषि महर्षि ने गायत्री उपासना पर बहुत जोर दिया है, और त्यागने वाले की निन्दा की है । ऋषियों का अनुभव और विश्वास है, कि अगर केवल गायत्री को भी द्विज अपनाये रहेंगे तो धन, जन और आत्मबल से परिपूर्ण रहेंगे । उन्हें कुछ भी अप्राप्त न रहेगा ।

हमारे कई मित्र उपासना में संलग्न हैं, उनके कुछ अनुभव पाठकों के लाभार्थ लिख रहे हैं—राम सेवक सिंह वैद्य छितगाँवा निवासी की लड़की आठ मास पूर्व आग से बुरी तरह जल गई थी । शरीर जल जाने से पीड़ा से बेचैन थी । खबर पाकर राम सेवक सिंह अपनी लड़की को देखने गये । उस समय लड़की बेहोश थी । घर वालों ने कहा कि सावधानी न की जाती तो वह जल मरती फिर भी हालत चिन्ताजनक है । रामसेवक सिंह ने जाकर देखा कि लड़की के कई अंग जल गये हैं और वह बेहोश है । यह देखकर वह बहुत दुःखी हुए और माता का स्मरण ध्यान करते हुए अभिमन्त्रित हस्त से स्पर्श किया । आठ दस मिनट में लड़की ने आँखें खोल दीं और कहा बाबूजी अब जलन पीड़ा बहुत कम हो गई है और शीतलता अनुभव कर रही हूँ । मरणासन्न लड़की में यह चमत्कारी परिवर्तन देखकर लड़की के पिता को प्रसन्नता हुई । माता की दयालुता देखकर उनका हृदय भर आया उन्होंने कहा "बेटी तुम जल्दी ही अच्छी हो जाओगी, चिन्ता न करो" । वह लड़की शीघ्र अच्छी हो गयी ।

अभी ४-५ मास की बात है, राम सेवक सिंह जी की स्त्री ने पुत्र प्रसव किया बाद में बच्चा और उसकी स्त्री बीमार हो गई । बच्चे की हालत बिगड़ती गई । दो तीन मास के शिशु की चिकित्सा कराई गई थी, एक दिन बच्चे की नाड़ी आदि बन्द हो गई और मृत्यु का लक्षण प्रकट होने लगा । दवा-दारू से निराश हुए रामसेवक सिंह ने माता की शरण ली । बच्चे को गोद में लेकर अपने पूजा स्थान पर चले आये और माता का ध्यान करके कहा "यह आपकी दी हुई धरोहर है, आपकी इच्छा हो तो रहने दीजिए या बुला दीजिये" । यह बात कह ही रहे थे कि बच्चा जो कि बदहालत में था, एकाएक हँस पड़ा । उसे हँसते देख सभी आश्चर्यचकित हुए, औरतें मृत्यु का लक्षण समझ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रोने लगीं, लेकिन रामसेवक सिंह ने कहा कि, "माता ने मेरी पुकार सुनली है, अब बच्चा नहीं मरेगा" । बाद में धीरे धीरे बच्चा अच्छा हो गया और अभी तक अच्छा है ।

मनराम साँव मेरे मित्र हैं, उनका घर भरौली गाँव में (जो जिला आजमगढ़ में पड़ता है) है, उनके मौसेरे भाई चन्द्रका प्रसाद को दो साल हुए न जाने क्या हुआ वे अर्द्धविक्षिप्त हो गये साथ ही खाँसी और पेशाब की बीमारी भी उन्हें हो गई थी । दवा दारू भी किया गया, ओझा स्याने को दिखाया भी गया, लेकिन अच्छा न हो सका, कोई बीमारी बताता कोई भूत प्रेत का प्रकोप बताता, उनके अभिभावक १ साल से अधिक इससे परेशान रहे, बहुत खर्च भी किया, लेकिन हालत वैसी ही रही । मनराम साँव सम्वत् २००९ में नवरात्रि करने दानापुर से अपने घर आजमगढ़ आये । परिवार के लोगों ने चन्द्रिका प्रसाद की हालत मनराम से कही, मनराम ने अपने मौसेरे भाई को नवरात्रि में अभिमन्त्रित जल पिलाते थे, और मनराम के समीप ही वे भी जप थोड़ा बहुत करते थे । पूर्णाहुति के बाद चन्द्रिका प्रसाद रोग मुक्त हो गये । खाँसी आदि भी ठीक हो गई ।

भाई मनराम ने गायत्री मन्त्र द्वारा बहुत से रोगियों को अच्छा किया है, विस्तार भय से नहीं लिखते । दानापुर निवासी पं. त्रिवेणी पाण्डेय के सुयोग्य पुत्र पं. भोलानाथ पाण्डेय मेरे मित्र हैं, डेढ़ साल से गायत्री उपासना में संलग्न हैं, सवा लाख के दो अनुष्ठान भी कर चुके हैं ।

सम्वत् २०१० आषाढ़ महीना में भोलानाथ जी की बहिन की शादी थी । समय पर बारात आयी, भोज का इन्तजाम घर में जगह कम होने से बाहर किया गया था । पञ्च लोग जब पंक्ति में भोजन करने बैठे तो वृष्टि होने लगी । अब तो पं. भोलानाथ जी और उनके पिता भारी फेर में पड़े, पण्डित भोलानाथ जी अपने पिता और भाई को देखरेख करते रहने को कहकर स्वयं पूजा स्थान पर चले गये और १-१½ घण्टा वृष्टि रुक जाये ऐसी प्रार्थना भगवती से करके, गायत्री मन्त्र जपने लगे । लगभग १ माला जप किया होगा कि वर्षा रुक गई । बरात में आए हुए लोग यह देखकर दङ्ग रह गये और सभी पं. भोलानाथ जी की प्रशंसा करने लगे । सभी ने प्रसन्न चित्त से भोजन किये पान-सुपारी लेकर जब विदा हुए तो कुछ देर बाद पुनः वृष्टि होने लगी और बहुत देर तक होती रही । पण्डित भोलानाथ जी को इस घटना से माता के प्रति श्रद्धा विश्वास पहले की अपेक्षा बढ़ा गया ।

पं. भोलानाथ जी पाण्डेय के मामा पं. रामधनी पाण्डेय सम्वत् २००११ चैत्र शुक्ल पक्ष में मुजफ्फरपुर के गाँव में अपने यजमान के यहाँ रात को ठहरे हुए थे, उस यजमान से गाँव में ही किसी से दुश्मनी चल रही थी । पं. धनीराम जी रात को सोये हुए थे, उनका यजमान जो कि जमींदार था पास ही वह भी सोया हुआ था । अर्धरात्रि के लगभग कुछ आदमी हथियारों से लैस होकर वहाँ पहुँचे और रामधनी के यजमान को सोता देखकर बगल में भाला मारा, भाला लगते ही वह चिल्ला उठा, रामधनी पाण्डेय भी आवाज सुनकर जाग गये । डाकू भेष में आये हुए लोगों ने इन्हें जागते देख कर अपने साथियों से पूछा यह बगल में कौन सोता हुआ है, साथी ने कहा यह परदेशी पण्डित जी हैं, दूसरे डाकू ने कहा इसने हम लोगों को देख लिया है इसे मारो, डाकुओं ने पण्डितजी को मारने के लिये भाला उठाया मारने को उद्यत देख कर पं. धनीराम जी की बुद्धि ठिकाने न रही वह गायत्री उपासना करते थे, जोर जोर से माता-माता चिल्लाने लगे । इसे सुनकर डाकू ने कहा, माता-माता चिल्ला रहा है मारो साले को, इतना सुनते ही दूसरे साथी ने जोर से भाले का वार किया । लेकिन धन्य है गायत्री देवी, जोर से चलाया हुआ भाला ओंठ पर जरा-सा चिन्ह देते हुए निष्फल गया । पं. रामधनी बाल-बाल बच गये ।

परीक्षा में सफलता

श्री श्यामबिहारी लाल मिश्र फैजनगर लिखते हैं कि मेरे दादा गायत्री माता की उपासना करते हैं और कुशल उपासक हैं और अपना अधिक समय गायत्री की सेवा में व्यतीत करते हैं । मैंने प्राथमिक शिक्षा निज ग्राम में ही प्राप्त की तथा माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए मिडिल स्कूल मदनापुर शाहजहाँपुर मण्डलान्तर्गत गया और वहाँ से मिडिल कक्षा उत्तीर्ण की, तत्पश्चात् दादा तथा चाचा ने इंगलिश भाषा से मेरा अधिक प्रेम न देखकर तथा देव भाषा संस्कृत की ओर मेरी अभिरुचि देखकर मुझे एक पाठशाला में संस्कृत पढ़ने के लिए प्रवेश कराया । मैं परिश्रम से लग गया शिक्षा अध्ययन करने, किन्तु दुर्भाग्यवशात् में परीक्षा से दो मास पूर्व रुग्ण हो गया । स्वस्थ होने पर ध्यान हुआ कि परीक्षा के केवल १० दिन ही शेष हैं । मैंने अपने दादा जी से कहा कि मैं परीक्षा में सफल नहीं हो सकता अतएव मैं परीक्षा में सम्मिलित नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होऊँगा । दादाजी मुझसे कहने लगे कि बेटा तू गायत्री माता की साधना कर और उनसे विनय कर कि हे माता ! अपने पुत्र को सफलता दे । मैंने दादा के कथन को मान कर माता के चरणार्विन्दों में मन लगा परीक्षा में सम्मिलित हुआ । माता की कृपा दृष्टि हुई और परीक्षा परिणाम घोषित होने पर मैं अपने देय परीक्षा संस्कृत प्रथमा में द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ तब से निरन्तर मेरा मन माता के श्री चरणों में लगा रहता है तथा मेरा जीवन सुखमय व्यतीत हो रहा है । मैं इस समय अपने जिले से शिक्षक पदारूढ़ होकर अध्ययन कार्य करता हूँ । यह माता की ही अनुकम्पा है, कि मेरी जटिल से जटिल समस्याएँ शीघ्र ही हल हो जाती हैं ।

स्वभाव में परिवर्तन

श्री सेवाराम कौशल खलघाट म. भा. का कहना है कि आज से पूर्व मुझे जितना निर्दयी, कठोर, कहा जाय, उतना ही कम होगा । मेरा स्वभाव बहुत गर्म तथा साम्प्रदायिक विचारधारा होने से मैं 'सेनापति' कहलाता था—जहाँ तहाँ लोग मुझे सेनापति के नाम से पुकारने लगे । घर से लेकर बाहर तक सगे सम्बन्धी सभी मुझे क्रोधी तथा गर्म स्वभाव का जानकर मुझसे भय खाते थे और मुझे किसी प्रकार का सहयोग नहीं देते थे तथा मैं भी अपने गर्म स्वभाव के कारण उन्हें कुछ नहीं समझता था, यदि वास्तव में देखा जाय तो, मेरे सगे सम्बन्धी, भाई बन्धु सभी अच्छे विचारधारा के होकर प्रतिष्ठित पुरुष हैं, लेकिन मैं क्रोध रिपु के अधिकार में होने से उनका बैरी बना हुआ था ।

जब आज से मुझे गायत्री माता ने अपनी गोद में लिया मैं रो-रोकर माँ-माँ पुकारता रहा, पागल सा फिरता फिरा, इधर-उधर मारा-मारा फिरने लगा । सबके पास जाकर, दया की भीख माँगने लगा—पहले तो वह मुझसे भय खाने लगे, परन्तु ऐसा परिवर्तन देख उन्हें आश्चर्य हुआ और सोचने लगे कि यह कहीं पागल तो नहीं हो गये'—वेदमाता से सच्चे हृदय से की गई प्रार्थना कभी निष्फल नहीं जाती । जब सद्बुद्धि का प्रकाश मेरी आत्मा में आ गया तो वहाँ अज्ञान अन्धकार कैसे रह सकता है तथा मेरी सच्ची पुकार को कौन नहीं सुन सकता था । सबको मुझ पर भरोसा हुआ तथा इस प्रकार बदली हुई परिस्थिति को देख कर, सबको आश्चर्य हुआ—तथा मेरा सारा परिवार गायत्री उपासक हो गया और अब मुझे सहयोग प्राप्त होने लगा ।

जब मैं गायत्री तपोभूमि की पुण्य प्रतिष्ठा के समय मथुरा गया और पूज्य गुरुदेव आचार्य जी के दर्शन किये, मानो मेरा हृदय उस वेदमाता के सुपुत्र, आपका याज्ञवल्क्य तपस्वी महापुरुष के दर्शन से जगमगा गया, और मैंने अपना पुनीत जीवन समझा बस यहीं मेरा लक्ष्य-उद्देश्य एवं प्रधान कर्त्तव्य था और यहीं से मेरा कालाकल्प आरम्भ होता है ।

मेरे गुण, कर्म, स्वभाव में भारी परिवर्तन हुआ—मैं कठोर से नम्र हो गया, कुटिल से दयालु हो गया काम और क्रोध पर पूरी तरह विजय पा लिया है।

कहने का तात्पर्य यह है कि मेरे, मन, वचन और कर्म में सात्विकता आ गई और उसी के अनुसार अपना जीवन बनाने लगा । मेरे व्यवहार और कर्म को देखकर मेरी धर्मपत्नी ने भी इस उत्तम मार्ग को अपनाया और वह भी लाभान्वित हुई । उसका विशेष विस्तृत वर्णन वह स्वयं अलग से करेंगी ।

मैंने एक पुरश्चरण किया । उस समय मुझे दिव्य ज्योति के दर्शन हुए थे । इस पुरश्चरण के पूर्व मेरे घर कभी भी ब्राह्मणों का पदार्पण नहीं हुआ था और न कभी कोई शुभ कार्य ही हुए थे । इस वेदमाता की असीम कृपा से अच्छे-अच्छे विद्वान पण्डित, गुणी, साधु महात्मा मेरी झोंपड़ी पर आते हैं तथा मैं उनका स्वागत करके अपने को बड़ा भाग्यशाली अनुभव करता हूँ ।

मैंने अपना व्यापार भी हविषान्न (चावल) बेचने का रखा है । इसमें मेरी जीविका चलती है और हम आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं । हमारा अधिकांश समय माता की सेवा, उपासना और प्रचार में ही बीतता है । मैं मेरे सहयोगी बन्धु तथा मेरे अनुभव के पाठकों से निवेदन करता हूँ कि वे वेदमाता की उपासना करें—क्योंकि पुत्र को सच्चा सुख माता की गोद में ही मिलता है ।

उपासना अनुभव का सार—वेदमाता की उपासना मनुष्य को कुमार्ग से सुमार्ग पर लाने में जादू का-सा असर करती हैं, एक बार अनुभव करके देखें ।

गायत्री उपासना कुछ अनुभव

श्री व्यङ्कटेश दयाराम शर्मा, खलघाट म. भा. लिखते हैं कि मेरे लिये दुनिया में जितने सहयोगी, प्रेमी, कुटुम्बी, सेवाभावी, मित्र और अधिकारी-जो कुछ कहा जाय, सब मेरे गुण, धर्म और स्वभाव से विपरीत थे, और आज तक हैं । मैं उस समय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विचारता था कि भगवान ने मुझे ऐसा अभागा क्यों पैदा किया जो संसार में मेरा कोई नहीं, और न मैं, किसी को अपना कह सकूं ऐसा भी कोई नहीं है ।

लेकिन उस परिस्थिति में भी चुप रहा, और जैसे-तैसे अपना समय व्यतीत करता रहा—मैं सोचता कुछ था होता कुछ था, भगवान की इच्छा बड़ी प्रबल होती है । जिसका कोई सहायक नहीं उसे भगवान का सहारा होता है । यही पूर्वानुभव जो महापुरुषों ने निधारित किया है, उसी के आधार पर मुझे भी भगवती वेदमाता गायत्री का मार्ग खुला । कल मैं आशा करता था आज मेरी आशा करते हैं, पिछली परिस्थिति को मैं धन्यवाद देता हूँ, कि अच्छा हुआ जो मुझे किसी ने सहारा नहीं दिया, अन्यथा आज मुझे उनका ऋणी रहना पड़ता तथा यह उच्च कोटि की साधना प्राप्त होती या नहीं ।

गायत्री जप के लाभ :

१— गुरुदेव के प्रति अपार श्रद्धा तथा उनके द्वारा मार्ग प्रदर्शन ।
२— दैवी आत्मबल प्राप्त-दूरदर्शिता और सहयोग की प्राप्ति ।
३— पत्नी के कठिन रोग से छुटकारा ।
४— मृत पुत्र को जीवन दान और उसके विचित्र चमत्कार ।
५— नौकरी में विरुद्ध जनता के प्रति सफलताएँ ।
६— आर्थिक स्थिति का उचित सुधार ।
७— नाव दुर्घटना में नवजीवन मिला ।
८— गृहों की वक्र दृष्टि में मानसिक शान्ति बनी रहना।
९— असम्भव कार्य भी सम्भव होते देखे गये ।

उपरोक्त बातों के अतिरिक्त और छोटे-मोटे कई व्यक्तिगत अनुभव हुए, परन्तु इन बताये हुए संकेतों के पीछे महत्त्वपूर्ण इतिहास एवं रहस्य हैं जिनका विस्तृत वर्णन फिर कभी किया जायेगा ।

इस उपासना के प्रति मेरी अपार श्रद्धा है—और मेरे जीवन में और प्रतिदिन के कार्यक्रम में इसका विशेष स्थान है—इसके फलस्वरूप मैं अपनी साधारण परिस्थिति को बड़े ही सुन्दर ढङ्ग से सञ्चालन कर रहा हूँ ।

आत्मबल बढ़ जाने से कई नए-नए विषयों का ज्ञान प्राप्त हो गया है ।

हमारे यहाँ प्रतिदिन अग्निहोत्र होता है, इससे हमारा आनन्द और बढ़ जाता है ।

गायत्री माता की शरण में आने पर मुझे कई सिद्धपुरुषों की भी कृपा प्राप्त हुई । उनमें से एक दो का परिचय इस प्रकार है :

बालीपुर के महात्मा गजानन्द जी का जन्म नार्मदीय कुल में एक साधारण ब्राह्मण के घर में हुआ था, ये साधारण पिता की सन्तान होने से इनकी शिक्षा दीक्षा तो विशेष नहीं हुई, लेकिन अकस्मात् अनुभवी योग्य सद्गुरु की प्राप्ति हो जाने से इनके मन में भगवती की उपासना का अंकुर जम गया और उनके दर्शाये मार्ग से सब कुछ छोड़ कर, तपश्चर्या करने लग गये ।

इनका प्रतिदिन का कार्यक्रम है कि प्रातः ३ बजे रात्रि से जल में खड़े होकर गायत्री का जप किया करते हैं और तीन बजे दिन तक हवन, पाठ आदि से निवृत्त होते हैं । अन्न आहार कई दिनों से नहीं किया है फलाहार पर रहते हैं । इस तपश्चर्या के प्रभाव से आज ये इच्छाचारी महात्मा हो गये हैं । क्षण भर में जहाँ जाना चाहें चले जाते हैं और वापस भी आ जाते हैं । इनकी मढ़ी १ एकड़ के क्षेत्र में बनी है जहाँ ये १५ वर्ष से तपश्चर्या कर रहे हैं । इसके हवन कुण्ड में ८-१० साल से अग्नि नहीं बुझी है नवरात्रियों में प्रतिवर्ष सवा लक्ष गायत्री मन्त्र से आहुतियाँ दी जाती हैं।

हजारों दर्शक आते हैं, उनकी भोजन व्यवस्था आदि मढ़ी पर ही होती है । महाराज अपनी मढ़ी छोड़कर कहाँ नहीं जाते हैं और सब व्यवस्था हो जाती है ।

सन्त हरीहर जी नागझिरी-जाति के गुजराती ब्राह्मण हैं । गृह कलह और मानसिक अशान्ति से विवश होकर इन्होंने गृह त्याग दिया और सच्ची शान्ति की खोज में फिरने लगे । कई देवी-देवताओं की सतत् उपासना करते रहे, लेकिन जिस प्रकार से अपना जीवन बनाना चाहते थे वैसा ही बना सके । अन्त में श्रवण करते-करते जमदमि आश्रम परशुराम कुण्ड आये और वहाँ इनका एक महात्मा से परिचय हुआ और उनको इन्होंने अपनी व्यथा सुनाई, तब महात्माजी ने कहा यदि तुम्हें शान्ति शीघ्र प्राप्त करना है तो गायत्री का जप करो । इनके ध्यान में वह बात जम गई, कि ब्राह्मण को बिना गायत्री के किसी भी प्रकार की सफलता नहीं मिल सकती है । ऐसा निश्चय करके ये औंकारेश्वर क्षेत्र में आये, वहाँ उन्होंने गायत्री की तपश्चर्या की । उसके आश्चर्यजनक अनुभव प्राप्त हुए और इन्हें सच्ची शान्ति प्राप्त हुई । आज कल ये मौन हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री शक्ति और मेरे अनुभव

पं. मनोहर लाल मण्डाहर बी. ए., नागपुर लिखते हैं कि मैं २० साल से भी ज्यादा गायत्री माता का सेवक हूँ और इस ३६ साल के छोटे जीवन में माता की अपार कृपा से जीवन सुखी और आनन्द से व्यतीत हो रहा है । गायत्री साधना से क्या-क्या लाभ होते हैं इनका मैं निजी अनुभव कर चुका हूँ—मेरे बगैर माँगे माता ने मुझे सब सुख, साधन, विद्या, यथ शक्ति, धन, सुशील स्त्री, दो पुत्र, दो लड़कियाँ, अच्छा परिवार दिया है और अब तक हर काम में माता सहायता करती है ।

मेरे पितामह और स्वयं पिताजी गायत्री माता के परम भक्त थे । पिताजी ने गायत्री माता की कृपा से अपने जीवन में व्यापार में लाखों कमाये और लाखों गंवाये—किसी स्कूल या कॉलेज में न पढ़ कर भी सब विद्याएँ जानना—सब कुछ देकर सेवा करना, सारी आयु दयानतदारी और मिलनसारी को न छोड़ना और पूर्ण आयु ६७ साल भोग कर सुखी-सुखी गायत्री जाप करते हुए सदा के लिये माता की शरण में जाना—यह सब माता गायत्री का वरदान ही कहा जा सकता है । मैं इसी सुखी परिवार में जन्मा, बड़ा हुआ और पिता के व्यापार में हानि-लाभ से मुझे भी कई अनुभव हुए.

इसलिये धन को मैंने कोई जीवन में ऊँचा स्थान नहीं दिया । छोटेपन में उन्हीं की प्रेरणा से गायत्री की ओर झुका । आगे चल कर शनै-शनैः कई महात्माओं और महापुरुषों की कृपा से उन्नति के पथ की ओर बढ़ता रहा हूँ ।

मुझे गायत्री साधना से कई अनुभव हुए हैं जिनको आपकी जानकारी के लिए यहाँ लिखता हूँ । इससे आपका उत्साह बढ़ेगा ऐसी मेरी आशा है । जो कुछ लिख रहा हूँ अक्षर अक्षर सत्य है—आप इस साधना को जीवन में करके स्वयं अनुभव कर सकते हैं । मेरे अपने जीवन में तथा मेरे निकटवर्ती अनेक व्यक्तियों के जीवन में जो गायत्री उपासना द्वारा अनेकों लाभ हुए हैं उन सबका विस्तृत वर्णन करके पाठकों का अमूल्य समय लेना नहीं चाहता । उन घटनाओं के आधार पर जो निष्कर्ष निकलते हैं वे नीचे दिये जाते हैं । यह निम्नलिखित तथ्य पूर्ण सत्य हैं । प्राचीन काल के ऋषियों से लेकर आज के सामान्य गायत्री उपासकों तक को यह अनुभव समान रूप से होते रहते हैं ।

(१) गायत्री के सच्चे उपासक की कभी भी अकाल मृत्यु नहीं हो सकती—यहाँ तक कि उसके अपने परिवार--अपने बाल बच्चे तक अकाल मृत्यु से नहीं मर सकते । कोई शक्ति हर समय साधक की रक्षा करती है । गायत्री प्राणों की रक्षा करती है यह कथन अपने अनुभव के आधार पर सत्य है । हम सब स्वयं पाकिस्तान में गोलियों से बचे—माता ने अपने आप हमें बचाने के साधन पैदा किये और इज्जत के साथ वहाँ से पूर्वी पंजाब में आये ।

(२) सुखी परिवार और गृहस्थ जीवन—मेरे गृहस्थ जीवन को १६ साल हो जावेंगे और नियम पूर्वक रहने से सब तरह से गृहस्थ जीवन सुखी है—दो लड़के, दो लड़कियाँ सुशील और धर्म परायण धर्मपत्नी से जीवन स्वर्ग बना हुआ है ।

(३) गायत्री का उपासक और उसका परिवार सदा बीमारियों और रोग कष्टों से बचते हैं । गायत्री के उपासक को दिल की बीमारी वगैराह नहीं हो सकती। क्षय रोग दूर भाग जाते हैं ।

(४) गरीबी और दरिद्रता दूर भाग जाती है । बिगड़े हुए काम बन जाते हैं और सुख समृद्धि के साधन मिलते हैं । चरित्र बल से सब कुछ मिल जाता है ।

(५) अच्छे मित्रों का मिलना ।

(६) गायत्री माता के सहारे के सिवाय किसी तरफ सहायता की याचना न करना । अपने पर विश्वास ।

(७) विद्या, संगीत और कला का शौक । घर में अच्छी-अच्छी पुस्तकें पत्रिकाएँ मँगवाना और स्वयं आप पढ़ना व परिवार को पढ़ाना ।

(८) शारीरिक ज्ञान—नेचरक्योर—आयुर्वेदिक और होमियोपैथिक से सरल चिकित्सा करना ।

(९) नशे की चीजों से घृणा करना—शराब, सिगरेट वगैराह और दूसरे व्यसनों, जुआ वगैराह से घृणा ।

(१०) नित्य स्वास्थ्य का ख्याल—प्रातः व्यायाम स्वयं करना और दूसरों को करने के लिये उत्साह देना। योग के आसन, यथाशक्ति सरल प्राणायाम करना जिससे शरीर का निरोग होना । स्वास्थ्य सम्बन्धी पुस्तकें स्वयं खरीद कर पढ़ना और दूसरों को अनुभव देना ।

(११) निष्काम सेवा, सादा जीवन और सच्चा व्यवहार ।

(१२) गायत्री उपासना के बारे में आर्य समाज और सनातन धर्म वालों में कोई झगड़ा नहीं, इसलिए संकुचित हृदय का न बनना और विशाल हृदय से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

खण्डन मण्डन को छोड़ते हुए सबको मिलाने और एक मंत्र पर लाने की कोशिश करना ।

(१३) धन तो जो मिलना है मिलेगा ही—इसलिए रात दिन की चिंता छोड़ कर आगे पग बढ़ाना—जो जरूरत से अधिक है उसे शुभ कामों यज्ञ आदि कार्यों में लगा देना । मैंने धन को आज तक ज्यादा दर्जा नहीं दिया । इसलिये कर्ज की चिन्ताओं से बचा हुआ हूँ ।

(१४) शत्रुओं का न होना ।

(१५) स्त्रियों को भी गायत्री साधना का पूर्ण अधिकार है—मैं छोटी छोटी लड़कियों और बालकों को इस ओर लाने की बहुत कोशिश करता हूँ ।

(१६) गायत्री माता ने मेरी प्रार्थना पर पिछले दिनों मेरे एक मित्र के पहले छोटे तीन चार दिन के बच्चे को जीवन दान दिया और मेरी लाज रखी, क्योंकि उनका नमक खाने से मेरा भी फर्ज था कि उनके सुख के लिए प्रार्थना करता ।

(१७) स्वयं अपनी छोटी लड़की जो मुँह में कुछ डालकर प्राण देने को थी—गायत्री माता की कृपा से मेरे स्वयं घर पर अक्समात् होने और दूसरी बार मुँह में हाथ डाल कर गले में अटकी हुई चीज को निकाल सका । गायत्री माता ने उसे प्राण जीवन दिया ।

(१८) मेरा अनुभव है कि जिसने भी मुझे तंग किया या द्वेष किया उसे माता ने जरूर मेरे कहने के बगैर सजा दी है । गायत्री के साधक के हित के लिये माता शत्रुओं का दमन करती है ।

गायत्री साधना कभी किसी की निष्फल नहीं जाती और फिर सरल है और विघ्न भी वैसे नहीं आते ।

पारिवारिक वातावरण में सुधार

श्री सच्चिदानन्द जी मिश्र, आरा का कहना है कि मनुष्य के जीवन में अनेक प्रकार की बाधाएँ और असुविधाएँ आती हैं, थोड़े से लोग तो ऐसे होते हैं जो उनकी परवाह नहीं करते और स्थिर चित्त से अपने रास्ते चलते रहते हैं, पर अधिकांश व्यक्ति ऐसे होते हैं जो छोटी-मोटी और कभी-कभी की बाधाएँ ही बर्दाश्त कर पाते हैं, आये दिन के कष्टों से उनका चित्त व्याकुल हो जाता है ।

अपनी स्थिति उन अधिकांश व्यक्तियों जैसी ही है। अन्य कठिनाइयों की उपेक्षा आये दिन का पारिवारिक कलह मुझे बहुत त्रास दायक लगता है । गरीबी में रहना और सूखी रोटी खाना सम्पन्न किन्तु पारवारिक कलह युक्त जीवन की अपेक्षा बुरा नहीं है । ऐसी मेरी मान्यता है ।

मेरा एक छोटा भाई है महेशानन्द । उससे मेरी धर्म पत्नी की पटती न थी, आये दिन दांता किट-किट होती रहती, दफ्तर से काम करके जब घर आता और कलह मचा देखता तो चित्त घबराता और इच्छा होती कि ऐसे गृहस्थ से विरक्त होना अच्छा । घर के झगड़ों को सुलझाने की कोशिश भी बहुत की पर जब कुछ सफलता न मिली तो निराश हो भगवान् में चित्त लगाने लगा । ईश्वर भक्ति के लिए गायत्री का जप मुझे उत्तम मार्ग लगा उसे और अधिक तत्परतापूर्वक बढ़ाने लगा।

छोटा भाई महेशानन्द, पिताजी की मृत्यु के बाद बहुत रोगी हो गया था, रोग से निवृत्त होने पर उसकी भी प्रवृत्ति गायत्री उपासना में बढ़ी । मैंने उसे गायत्री उपासना की सलाह दी और उसने मनोयोग पूर्वक नित्य नियमित जप आरम्भ कर दिया । उसका स्वास्थ्य बहुधा खराब रहता था, आये दिन कोई न कोई बीमारी उसे घेरे रहती थी, पर जब से उसने गायत्री की पूजा आरम्भ की है तब से उसका स्वास्थ बहुत सुधरा है । बहुत दामों की दवाएँ जितना लाभ नहीं पहुँचा सकती थीं, उससे अधिक निरोगता उसे पूजा द्वारा प्राप्त हुई है ।

दूसरी ओर मेरी स्त्री के स्वभाव में आश्चर्यजनक परिवर्तन हो रहा है । वह दिन-दिन मधुर भाषिणी, सहनशील और विवेकवान् होती जा रही है, फलस्वरूप अब वह गृह कलह नहीं होता जिसके कारण मेरा चित्त दुःखी रहता था और गृहस्थ त्याग कर विरक्त बनने की बात सोचा करता था ।

भाई की अस्वस्थता का निवारण पत्नी का स्वभाव परिवर्तन यह छोटी घटनाएँ हो सकती हैं, पर मेरी दृष्टि में यह दोनों ही अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं, इनके अभाव में मेरा चित्त सदैव दुःखी रहता था, पर अब बहुत कुछ शान्ति का अनुभव करता हूँ ।

निराशा में आशा का प्रकाश

श्री सीताराम गुप्ता, हजारी बाग से लिखते हैं कि मैट्रिक में मैं दो वर्षों से फेल हो रहा था । बार-बार फेल होने से मन भी अच्छी तरह न लगता था । दिल उदास रहता था । किसी काम में मन नहीं लगता था। घर से और बाहर से मुझ पर निन्दा की बौछार होती थी । पिताजी की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं थी कि मैं बार-बार फेल होऊँ और वह मुझे पढ़ाते जायें। दूसरी बात यह थी कि समय की बर्बादी होती थी । एक ही कोर्स को बार-बार पढ़ने में मन नहीं लगता था । घर के लोग मुझको ताने देते थे । मुझे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

ऐसा लगता था मानो इस अपमान के जीवन से मृत्यु कहीं अच्छी है । कभी-कभी मुझे ऐसा मालूम होता था कि मैं आत्महत्या कर लूँ, लेकिन मैंने अपने को सम्हाला और सोचा कि शास्त्र में कहा गया है कि 'आत्महत्या करना महापाप है' मैं शहर से दूर एकान्त में जाकर एक घंटा प्रतिदिन रोता था । मैं प्रतिदिन सोचता था कौन मेरे दु:ख का अन्त कर सकता है ? क्या कोई भी ऐसी देवी या देवता नहीं है जो मेरे हो ? क्या कोई भी ऐसी देवी या देवता नहीं है जो मेरे दु:ख को दूर कर सकता है ? इसी उधेड़ बुन में मैं दिन-रात लगा रहता था । चारों तरफ मुझे अन्धकार ही अन्धकार मालूम होता था । प्रकाश की मुझे कहीं झलक ही नहीं दिखाई पड़ती थी । अन्त में मैं एक दिन बृजमोहन प्रसाद गुप्ता की दुकान पर गया, उन्होंने मुझे "गायत्री के अनुभव" और अखण्ड ज्योति की पुस्तक दिखलाई। उन्होंने मुझे विश्वास दिलाया कि 'गायत्री साधना से तुम अवश्य परीक्षोत्तीर्ण होंगे । प्रथम तो मुझे विश्वास नहीं हुआ, परन्तु उनके बहुत आग्रह करने पर मैंने दूसरे दिन से गायत्री साधना आरम्भ कर दी । हालांकि हमारी साधना में बहुत कुछ त्रुटियाँ रह गई थीं और मैंने अच्छी तरह गायत्री साधना को विधि विधान से नहीं अपनाया था । सिर्फ मैं एक माला प्रात:काल जप लिया करता था ।

धीरे-धीरे परीक्षा के दिन समीप आये । तीसरे वर्ष मैंने भाग्य अजमाने के लिए परीक्षा का फार्म भर दिया। सिर्फ कुछ आशा की तो माता पर । दो वर्ष फेल होने की बदनामी, समय और धन का बर्बाद जाना, साथियों से पीछे रहने की लज्जा यह बातें मेरे मन में रह-रह कर निराशा की और दु:ख उत्पन्न करती थीं । जैसे-जैसे परीक्षा के दिन निकट आते जाते थे, दिल घबराता था । ईश्वर से प्रार्थना करता था कि उन दिनों बीमार पड़ जाऊँ । कभी-कभी ऐसा लगता कि जूते को पानी में भिगोकर और उसी भीगे हुए जूते को पहन कर घूमा करूँ जिससे सर्दी और ज्वर आ जाये जिससे कि मैं बदनाम होने से बच जाऊँ। परीक्षा समाप्त हुई । आशा और निराशा के बीच मेरा मन डोल रहा था । मुझे विश्वास नहीं था कि मैं पास करूँगा, क्योंकि इंगलिश का पर्चा खराब हुआ था।

कोई पूछता कि कैसी कि यों ही ? तो मैं उत्तर देता सप्लीमेण्ट्री में फिर अपने भाग्य को अजमाऊँगा ।

परीक्षा फल निकला । मेरा नाम उत्तीर्ण छात्रों में आया । उमंग और उत्साह का ठिकाना न रहा । खुशी से मैं नाच उठा । तभी से मैं गायत्री माता के अंचल को पकड़े हूँ । उसी दिन से गायत्री माता के प्रति मेरी असीम श्रद्धा और भक्ति उत्पन्न हुई और मैं आशा करता हूँ कि माता की कृपा से भविष्य में इस भव सागर रूपी समुद्र से हमारी जीवन नैया पार लगेगी।

इसके पश्चात् कुछ दिनों के लिए मुझे नौकरी करने की इच्छा हुई । क्योंकि घर की आर्थिक स्थिति खराब थी । इम्पलाइमेंट एक्सचेंज ऑफिस की सूचना मेरे घर पर नहीं आई । और मैं ऑफिस गया । अन्त में मैं लाचार और निराश होकर लौट रहा था । मन ही मन गायत्री माता का ध्यान लगा रहा था और गायत्री मन्त्र भी जप रहा था कि इतने में एक मनुष्य आया और मुझे नौकरी मिलने की सूचना पत्र दे गया। यह गायत्री माता का प्रताप था कि मुझे नौकरी मिल गई ।

मैट्रिक पास करने के बाद मुझे कॉलेज में भर्ती होने की इच्छा प्रकट हुई । मगर पिताजी आगे पढ़ाने को तैयार न थे । गायत्री माता की कृपा से मुझे ४२ रुपये ८ आना (बयालीस रुपया पचास पैसा) किसी के द्वारा प्राप्त हुआ और मैं कॉलेज में नाम लिखा आया । आश्चर्य की बात यह है कि पहले पिताजी कॉलेज की फीस देने में भी अस्वीकार किए थे पर अब वे न जाने क्यों कॉलेज की फीस देने को तैयार हैं ।

यह सब गायत्री माता की ही कृपा है । इसलिए पाठकों से मेरा नम्र निवेदन है कि वे गायत्री साधना अपनावें जिससे वे दैविक, भौतिक और शारीरिक दु:ख से बचें और पारलौकिक जीवन को उन्नत बना सकें ।

सच्ची शिक्षा का महान् आयोजन

श्री श्याम मनोहर दुबे, बसाई का कहना है कि मेरे जीवन का अधिकांश समय अध्ययन कार्य में ही बीता है । 'शिक्षा' को मैं मनुष्य जीवन की सर्वोपरि आवश्यकता समझता हूँ । इसलिए उसे श्रेष्ठतम लोक-सेवा समझकर मैं पूर्ण तत्परता और उच्च श्रद्धा के साथ अध्यापन कार्य में प्रवृत्त रहता हूँ । मेरी आजीविका का एक मात्र साधन अध्यापकी ही रही है, परन्तु कभी भी मैंने उसे व्यवसाय नहीं माना । यदि भूखा रह करके मुझे यह कार्य करना पड़े तो दूसरे व्यवसाय में करोड़ पति होने का अवसर ठुकराते हुए भी अपने इस परम प्रिय कार्य में भूखा मरने की श्रद्धा मुझमें मौजूद है ।

शिक्षा एक विज्ञान है, जिसका उद्देश्य मनुष्य के मस्तिष्क को ऐसा निर्माण करना है जिससे वह अपने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मन में मनुष्यता के उपर्युक्त सद्गुण, सद्भाव, सद्विचार और सत्कर्मों का आदी बन सके । शिक्षित उसे ही कहना चाहिए जो दूसरों के लिए आनन्दवर्धक एवं उपयोगी हो । जिस शिक्षा से मनुष्य के गुण, भाव, विचार और कार्य अनीति युक्त बनते हों, जिससे मनुष्य स्वार्थी, दुर्गुणी एवं दूसरों की परेशानी बढ़ाने वाला बनता हो वह शिक्षा, शिक्षा नहीं । ऐसी मेरी मान्यता आरम्भ से ही रही है ।

अध्यापक क्षेत्र में मैंने जीवन भर प्रयोग किये हैं । एक समय मेरा विचार था कि प्राथमिक शिक्षा के समय ही बालकों पर अच्छे संस्कार डाले जा सकते हैं, इसलिए ग्रेजुएट होते हुए भी मैंने प्राइमरी पाठशाला चलाई । कुछ दिन के अनुभव से देखा कि इस आयु के छोटे बालकों पर स्कूल में नहीं घर पर ही, उसके सहचरों, एवं अभिभावकों के चरित्र का अनुकरण करने का ही प्रभाव पड़ता है । स्कूल के मास्टर द्वारा वे अक्षर ज्ञान सीखते हैं, पर उसके उपदेशों का कोई बहुत प्रभाव ग्रहण नहीं करते । यह देखकर मैंने वह नौकरी छोड़ दी ।

हाईस्कूल में नौकरी की । वहाँ देखा कि अंग्रेजी स्कूलों का वातावरण, एवं शिक्षा पद्धति का क्रम ऐसा है कि वहाँ कोई अध्यापक मशीन के पुर्जे की तरह अपनी ड्यूटी भुगता देने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकता । यहाँ मन नहीं लगा तो अन्यत्र काम करने की सोची । एक कॉलेज में प्रोफेसरी मिल गई । वहाँ भी मनोरथ पूरा न हुआ । लड़के बराबरी का दावा करते थे, अहंकार और उच्छृंखलता की उस क्षेत्र में ऐसी बाढ़ थी कि वहाँ मुझे लू-लू बनाया जाने लगा वहाँ से भी अपना बिस्तरा समेटा ।

अब की बार संस्कृत पाठशाला ले बैठा । साथ साथ प्रौढ़ पाठशाला भी लगाई । दोनों के विद्यार्थी अपना एक विशिष्ट उद्देश्य लेकर आते थे । संस्कृत का कोर्स इतना कठिन था कि विद्यार्थी को अधिकांश समय व्याकरण घोटते रहने तथा परीक्षा में उत्तीर्ण होने की रट में लगे रहते थे । प्रौढ़ लोगों को अपने कार्यों से बहुत थोड़े वक्त के लिए समय मिलता, वह समय उन्हें साक्षर बनाने के लिए शिक्षा में ही व्यतीत हो जाता । इस प्रकार मैंने अनेक बार स्तीफे दिये और अनेक नई जगहें तलाश कीं । अनेक बार अपने संकलत्व में भी विद्यालय चलाये, परन्तु किसी में भी मनोनुकूल सुविधा न मिली, परीक्षा उत्तीर्ण करने में ही विद्यार्थी तथा उसके अभिभावकों की रुचि होती है । परीक्षा में उत्तीर्ण होने में जो बातें काम दें वही उनकी दृष्टि में पढ़ाई है, बाकी बातों को वे अनावश्यक ही नहीं समय को बर्बाद करने वाली भी मानते हैं । ऐसी शिक्षा पद्धति के साथ मेरे आदर्शों की पटरी नहीं बैठ सकी । जिन बातों को मैं शिक्षा कहता हूँ उनका इस वातावरण के लिए न कोई स्थान है न आदर । ऐसी दशा में मेरा वर्षों का प्रयास आरण्य रोदन के समान व्यर्थ ही गया । अब तक के मेरे प्रयोग प्रायः निष्फल रहे ।

इन कारणों से खिन्न होकर मैंने आचार्य जी से पूछा कि मैं शिक्षक बनना चाहता था, शिक्षा में मेरी असाधारण श्रद्धा है । परन्तु क्या करूँ वर्तमान परिस्थितियों में वैसी शिक्षा के लिये न तो कहीं अवसर दिखाई देता है और न उत्साह । ऐसी दशा में मुझे क्या करना चाहिये । उन्होंने मुझे मथुरा बुलाया और एक ऐसी शिक्षा पद्धति समझाई जो सचमुच ही असाधारण थी । उन्होंने गायत्री गीता और गायत्री स्मृति के मन्त्रों को पाठ्यक्रम बनाकर गायत्री विद्यालय चलाने की योजना बताई । मेरे आनन्द का ठिकाना न रहा । नौकरी से मैंने स्तीफा दे दिया और स्वतंत्र रूप से एक गायत्री विद्यालय चलाने लगा । इस बात को एक वर्ष से अधिक होने को आया । गायत्री के २४ अक्षर, १ प्रणब, १ व्याहृतियाँ इस प्रकार २६ दिन का कोर्स होता है ४ दिन चार रविवारों को छुट्टी रहती है । इस प्रकार एक महीने में एक कक्षा पूरी हो जाती है । शिक्षा काल में विद्यार्थी को ब्रह्मचर्य सात्विक आहार, तपस्वी दिनचर्या, नित्य जप, नित्य हवन, आदि का कार्यक्रम रहता है । हमारा यह विद्यालय भ्रमणशील रहता है । एक-एक महीने में एक गाँव में रहकर अब तक बारह स्थानों पर यह विद्यालय चल चुका है। बीस से लेकर चालीस तक स्त्री पुरुष इन शिक्षा सूत्रों में सम्मिलित हुए और उन्होंने जीवन के प्रत्येक पहलू पर आवश्यक ज्ञान प्राप्त किया । विचार विनिमय और शंका समाधान का पर्याप्त अवसर रहने से गायत्री के अक्षरों में सन्निहित शिक्षा को भली प्रकार हृदयंगम कराया जा सका ।

जिन लोगों ने यह शिक्षा प्राप्त की है उनमें से अधिकांश के जीवन में भारी परिवर्तन हुए हैं । उनकी गाली देने की, नशेबाजी की, समय का अपव्यय करने की, गन्दे रहने की आदतें छूटी हैं । दहेज, मृतभोज, बाल-विवाह, आदि तीन रीतियों में कमी हुई है । कटुभाषण, द्वेष, कलह मनोमांलिन्य, फूट, पार्टीबन्दी, मुकदमेबाजी, आदि की अग्नि बुझी है और लोगों ने व्यायाम करना, पुस्तकें पढ़ना, आरम्भ कर दिया है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

फालतू समय में छोटे गृह उद्योगों द्वारा पैसे कमाने लगे हैं । गायत्री जप, सन्ध्या, वन्दन, रामायण पाठ, उपवास हवन आदि धार्मिक कृत्यों का एक नया सिलसिला उन लोगों में चल पड़ा है । जो स्त्री पुरुष एक महीने की छोटी-सी अवधि में इस शिक्षा में सम्मिलित हो रहे हैं, उन्होंने अपने-अपने घरों का वातावरण ही बदल दिया है । उनके बदले हुये विचार और स्वभाव ने उन घरों में एक नई ही चेतना पैदा करदी है ।

इस प्रकार मैं देखता हूँ कि शिक्षा के सम्बन्ध में जो स्वप्न जीवन भर मैं देखता रहा वे अब पूरे होने जा रहे हैं । साधारण व्याख्यानों से, छुटपुट वार्त्तालाप का वह प्रभाव नहीं पड़ता जो गायत्री के माध्यम से, एक नियमित और निश्चित पाठयक्रम द्वारा अध्ययन एवं मनन करने से होता है । कोई भी कार्य एक मुख्य उद्देश्य लेकर किया जाता है और उस उद्देश्य के अनुसार ही परिणाम होता है, जो लोग परीक्षा उत्तीर्ण होने का प्रमाण पत्र लेने के उद्देश्य से पढ़ते हैं उन्हें उसी लक्ष की पूर्ति में अपनी पढ़ाई की सफलता दिखती है, परन्तु जिन्होंने जीवन निर्माण के लिए, आत्म-शान्ति के लिए, गायत्री माता का सन्देश सुना है, वे अपनी शिक्षा की सार्थकता इसी में देखते हैं कि वे प्रतिष्ठा, शांति, सम्पन्नता और उन्नति का जीवन उपलब्ध करें । उनका यह संकल्प पूर्णरूप से सफल न भी हो तो भी पूर्ण स्थिति में भारी परिवर्तन हो जाना निश्चित है । इसके अनेकों प्रत्यक्ष उदाहरण इस एक वर्ष की अवधि में मैंने देखे हैं ।

जब मैं मथुरा गया था तब आचार्य जी ने अपनी योजनाएँ बताई थीं कि वे किस प्रकार देश में चलते फिरते गायत्री विद्यालय स्थापित करके धर्म और नीति को भारतीय जीवन में ओत-प्रोत करेंगे । मेरा जो तुच्छ अनुभव है उसे देखकर यह अनुभव होता है कि ऐसे ही हजारों शिक्षक जब देश भर में फैल जायेंगे तो नवीन समाज की रचना, नवीन युग का निर्माण कठिन न रहेगा । मैं देववादी नहीं समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण में ही मेरी रुचि है । मुझे लगता है कि इन दोनों ही महान् आवश्यकता की पूर्ति में आचार्य जी का गायत्री आन्दोलन बहुत भारी योग देगा । इसी दृष्टि से मैं गायत्री संस्था में सम्मिलित हुआ हूँ । इस योजना के द्वारा मुझे अपने समाज में और राष्ट्र का भारी कल्याण होना दिखाई पड़ रहा है ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री-साधना से श्री समृद्धि और सफलता

गायत्री त्रिगुणात्मक है । उसकी उपासना से जहाँ सतोगुण बढ़ता है, वहाँ कल्याणकारक एवं उपयोगी रजोगुण की भी अभिवृद्धि होती है।

रजोगुणी आत्मबल बढ़ने से मनुष्य की वे गुप्त शक्तियाँ जागृत होती हैं जो सांसारिक जीवन के संघर्ष में अनुकूल प्रतिक्रिया उत्पन्न करती हैं। उत्साह, साहस, स्फूर्ति, निरालस्यता, आशा, दूरदर्शिता, तीव्र बुद्धि, अवसर की पहचान, वाणी में माधुर्य, व्यक्तित्व में आकर्षण, स्वभाव में मिलनसारी जैसी अनेक छोटी बड़ी विशेषताएँ उत्पन्न तथा विकसित होती हैं, जिनके कारण वह 'श्री' तत्त्व का उपासक भीतर ही भीतर एक नये ढाँचे में ढलता रहता है, उनमें ऐसे परिवर्तन होते जाते हैं जिनके कारण साधारण व्यक्ति भी धनी एवं समृद्ध हो सकता है।

गायत्री-उपासकों में ऐसी त्रुटियाँ जो मनुष्य को दुःख एवं दरिद्र बनाती हैं, नष्ट होकर वे विशेषताएँ उत्पन्न होती हैं जिनके कारण मनुष्य क्रमशः समृद्धि, सम्पन्नता और उन्नति की ओर अग्रसर होता जाता है। गायत्री अपने साधकों की झोली में सोने की अशर्फियाँ नहीं उँडेलती, यह ठीक है, पर यह भी ठीक है कि साधक में उन विशेषताओं को उत्पन्न करती है जिनके कारण वह अभावग्रस्त और दीन-हीन नहीं रहता।

प्रयाग जिले के छितौना ग्राम निवासी पं. देवनारायण जी देवभाषा के असाधारण विद्वान और गायत्री के अनन्य उपासक हैं। तीस वर्ष की आयु तक अध्ययन करने के उपरान्त उन्होंने ग्रहस्थाश्रम में प्रवेश किया। स्त्री बड़ी सुशील एवं पतिभक्त मिली। विवाह से बहुत काल बीत जाने पर भी जब कोई सन्तान न हुई तो स्त्री अपने को बन्ध्यत्व से कलंकि समझ कर दुःखी रहने लगी। पंडितजी ने उसकी इच्छा जानकर सवालक्ष जप का अनुष्ठान किया। कुछ ही दिन में उनके एक प्रतिभावान् मेधावी पुत्र उत्पन्न हुआ जो आजकल देव भाषा की सर्वोच्च उपाधि प्राप्त करने की तैयारी कर रहा है।

प्रयाग के पास जमुनीपुर ग्राम में रामनिधि शास्त्री नामक एक विद्वान ब्राह्मण रहते थे। वे अत्यन्त निर्धन थे। पर गायत्री साधना में उनकी बड़ी तत्परता थी । एक बार नौ दिन उपवास करके उन्होंने नवान्ह पुरश्चरण किया। पुरश्चरण के अन्तिम दिन अर्धरात्रि को भगवती गायत्री ने बड़े दिव्य स्वरूप से उन्हें दर्शन दिया और कहा—तुम्हारे इस घर में अमुक स्थान पर स्वर्ण मुद्राओं से भरा घड़ा रखा है उसे निकाल कर अपनी दरिद्रता दूर करो। पंडित जी ने घड़ा निकाला और वे निर्धन से धनपति हो गये।

बड़ौदा के वकील रामचन्द्र कालीशङ्कर पाठक आरम्भ में १०) मासिक की एक छोटी नौकरी करते थे। उस समय उन्होंने एक गायत्री-पुरश्चरण किया तब से उनकी रुचि विद्याध्ययन में लगी और धीरे-धीरे प्रसिद्ध कानूनदां हो गये। तब उनकी मासिक आमदनी करीब ५००) मासिक तक थी।

माण्डूक्य उपनिषद् पर कारिका रचने वाले विद्वान श्री. गौड़पद का जन्म उनके पिता के उपवास पूर्वक सात दिन तक गायत्री जप करने के फलस्वरूप हुआ था।

प्रसिद्ध साहित्यकार पं. द्वारिकाप्रसाद चतुर्वेदी पहले इलाहाबाद में सिविल सर्जन के हैडक्लर्क थे। उन्होंने वारेन हैस्टिंग्ज का जीवन चरित्र लिखा जो राजद्रोहात्मक समझा गया और उन्हें नौकरी से हाथ धोने पड़े । बड़ा कुटुम्ब और जीविका का साधन न रहा । इस दुहरी विपत्ति से दुःखी होकर उन्होंने गायत्री-उपासना की। इस तपस्या के फलस्वरूप उन्हें पुस्तक लिखने का स्वतन्त्र कार्य मिल गया। तब से उन्होंने पर्याप्त साहित्य-सेवा की और धन सम्पन्न बने। उन्होंने प्रतिवर्ष गायत्री अनुष्ठान करने का अपना नियम बनाया और नित्य जप करते थे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

९.२ गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार

स्वर्गीय पं. बालकृष्ण जी भट्ट हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार थे। वे नित्य गायत्री के पाँच सौ मन्त्र जपते थे और कहा करते थे कि "गायत्री जप करने वाले को कभी कोई कमी नहीं रहती।" भट्ट जी सदा विद्या, धन, जन से भरे पूरे रहे।

प्रयाग विश्वविद्यालय के प्रोफेसर क्षेत्रेशचन्द चट्टोपाध्याय का भानजा उनके यहाँ रह कर पढ़ता था। इण्टर परीक्षा के दौरान में लॉजिक के पर्चों के दिन वह बहुत दु:खी थे, क्योंकि उस विषय में वह बालक बहुत कच्चा था। प्रोफेसर साहब ने उसे प्रोत्साहन देकर परीक्षा देने भेजा और स्वयं छुट्टी लेकर आसन जमाकर गायत्री जपने लगे। जब तक बालक लौटा, तब तक बराबर जप करते रहे। बालक ने बताया उसका वह पर्चा बहुत ही अच्छा हुआ और लिखते समय उसे लगता था, मानों उनकी कलम पकड़ कर कोई लिखता चलता है। वह बहुत अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण हुआ।

प्राचीन काल में दशरथ जी को गायत्री द्वारा पुत्रेष्ठि यज्ञ करने पर और राजा दलीप को गुरु वशिष्ठ के आश्रम में गायत्री उपासना करते हुए गौ दुग्ध का कल्प करने पर सुसन्तति प्राप्त हुई थी। राजा अश्वपति ने गायत्री यज्ञ करके सन्तान पायी थी। कुन्ती ने बिना पुरुष के संयोग के गायत्री मन्त्र द्वारा सूर्य शक्ति को आकर्षित करके कर्ण को उत्पन्न किया था।

दिल्ली में नई सड़क पर श्री बुद्धूराम भट्ट नामक एक दुकानदार है। उनको ४५ वर्ष की आयु तक कोई सन्तान न हुई थी। गायत्री की उपासना से उस ढलती उम्र में उन्हें पुत्र प्राप्त हुआ, जो बड़ा ही सुन्दर तथा होनहार दिखाई पड़ता है।

गुरुकुल वृन्दावन के एक कार्यकर्त्ता सुदामा मिश्र के यहाँ १४ वर्ष से कोई बालक नहीं जन्मा था। गायत्री पुरश्चर करने से उनके यहाँ एक पुत्र उत्पन्न हुआ और वंश चलने तथा घर के किवाड़ खुले रहने की उनकी चिंता दूर हो गई।

इस प्रकार के अगणित उदाहरण उपलब्ध हो सकते हैं, जिनमें गायत्री-उपासना द्वारा राजसिक वैभव से साधक लाभान्वित हुए हैं।

गायत्री द्वारा भौतिक सफलताएँ

गायत्री त्रिगुणात्मक है। उसकी उपासना से जहाँ सत्-तत्व की वृद्धि होकर आत्मशक्ति का विकास होता है, वहाँ कल्याणकारी और हितकारी रजोगुण की भी अभिवृद्धि होती है। इसके फल से मनुष्य में रजोगुणी आत्मबल बढ़ता है और ऐसी गुप्त शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं जो सांसारिक जीवन-संघर्ष में अनुकूल प्रतिक्रिया उत्पन्न करती हैं। उत्साह, साहस, स्फूर्ति, निरालस्यता, आशा, दूरदर्शिता, तीव्र बुद्धि, अवसर की पहिचान, वाणी में माधुर्य, व्यक्तित्व में आकर्षण, स्वभाव में मिलनसारी आदि अनेक लाभदायक विशेषताएँ विकसित होने लगती हैं। इनके द्वारा वह गायत्री माता के 'श्री तत्व' का उपासक भीतर ही भीतर एक नये साँचे में ढलता है और उसमें ऐसे परिवर्तन हो जाते हैं कि वह साधारण स्थिति से उन्नति करके धनी और वैभवशाली बन सकता है।

गायत्री-साधना से ऐसी त्रुटियाँ, जो मनुष्य को दु:खी बनाती हैं और पतनकारी होती हैं, नष्ट होकर , वे विशेषतायँ उत्पन्न होती हैं, जिनके कारण मनुष्य क्रमश: समृद्धि, सम्पन्नता और उन्नति की ओर अग्रसर होता जाता है। गायत्री अपने सभी साधकों की झोली में सोने की अशर्फियाँ नहीं उँडेलती, यह ठीक है, पर इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि गायत्री की उपासना द्वारा साधक में ऐसी शक्ति का प्रादुर्भाव होता है, जिसके प्रभाव से वह अभावग्रस्त या दीन-हीन नहीं रह सकता। इस पुस्तक में आगे चलकर जो उदाहरण दिये गये हैं, पाठक देखेंगे कि वे उनके जैसे ही साधारण कोटि के और सांसारिक साधनों से रहित व्यक्तियों के थे। पर जब उन्होंने सौभाग्य वश किसी की सम्मति से अथवा परिस्थितियों से विवश होकर गायत्री माता की शरण ग्रहण की तो उनकी याचना निष्फल नहीं हुई और जिसकी जैसी श्रद्धा या लगन थी उसके अनुसार लाभ उसने अवश्य उठाया।

* श्री हरिदत्त शर्मा संवासा, बूँदी से लिखते हैं—"मैं जाति का ब्राह्मण हूँ। यज्ञोपवीत के समय मुझे गायत्री मन्त्र की दीक्षा दी गई थी, पर दुर्भाग्य से मैं गायत्री विद्या के रहस्य को नहीं जानता था। अत: मंत्र जाप एवं गायत्री उपासना में कोई रुचि नहीं थी। भगवत कृपा से बसंत पंचमी सें २०११ से गायत्री तपोभूमि में "विपद् गायत्री महायज्ञ" प्रारम्भ हुआ। गायत्री महायज्ञ के सम्बन्धित पर्चे व "गायत्री ज्ञानाङ्क" की एक प्रति मुझे एक मित्र द्वारा प्राप्त हुई। उसे मैंने आद्योपान्त पढ़ा और अपने को धन्य माना। गायत्री महिमा से प्रभावित हो मैंने महायज्ञ का भागीदार बनने का निश्चय किया। मैं अपना कुछ नियमित समय गायत्री-उपासना में लगाने लगा। मेरे प्रयत्न से कई व्यक्ति इस पथ पर चलने लगे। आर्थिक दृष्टि से मेरी अवस्था दुर्बल है। पिछले कुछ दिनों से मेरे ऊपर कुछ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कर्ज चला आ रहा है। बौहरे ने मुझसे अधिक कहा-सुनी करके कम से कम सौ रुपया एक निश्चित तारीख पर देने का वायदा करा लिया। यद्यपि मुझे कोई ऐसा रास्ता नहीं सूझ रहा था कि कहीं से रुपया पा सकूँ और उस बौहरे को समय पर देकर झूँठा न बनूँ। परन्तु सहसा उसके कहने पर हाँ कर दिया था। मुझे समय पर देने का वचन पूरा करना था। हृदय उद्विग्न था। एक दिन शेष रह गया है। कोई सूरत नहीं! माता के सामने हृदय खोलकर प्रार्थना की। सम्मान जाने का समय निकट आ गया। बौहरा आकर सूचना दे गया कि कल आपकी निश्चित तारीख है, समय चूकने पर सम्मान का ख्याल न रखा जायेगा।

बौहरा चला गया। मैं सब कुछ भूल कर माता के चरणों में पड़ गया। एक घण्टा उपरान्त एक महाशय अचानक ही आकर १००) दे गये। मेरी लाज बच गई। माता की असीम अनुकम्पा का अनुभव किया और जाकर रुपया दे आया। माता की कृपा से एक दिन पहले ही सम्मान की रक्षा हो गई। मेरा समय सानन्द व्यतीत हो रहा है। गायत्री उपासना में श्रद्धा एवं विश्वास रखने पर अवश्य लाभ होता है। पाठकगण, अवश्य इस रहस्य को जानकर लाभ उठावेंगे, ऐसी मेरी आनन्दमयी माता से प्रार्थना है। उस दयामयी माता के चरणों में कोटिशः प्रणाम !''

* श्री बिहारीलालजी दुबे, बैकुण्ठपुर से लिखते हैं—''गायत्री माता की कृपा पाने का प्रथम और अनिवार्य साधन या द्वार है—गुरु कृपा। यही मेरा अनुभव है। गुरुदेव ने ही मुझे माता का अञ्चल पकड़ने के लिये प्रेरित किया और माता की कृपा ने प्रायमरी विद्यालय के अध्यापक पद से मुझे सात महीने में ही मिडिल स्कूल के अध्यापक पद पर पहुँचा दिया। मैंने इसके लिये अपनी ओर से विशेष रूप से कोई चेष्टा नहीं की।

मैं टहलने जा रहा था। रास्ते में एक वकील साहब मिले। मैंने शिष्टता के विचार से उन्हें प्रणाम किया। उन्होंने नमस्कार का उत्तर देने के बाद पूछा—आज कल क्या करते हो? मैंने कहा—''मैं प्रायमरी स्कूल का शिक्षक हूँ। उन्होंने बताया कि विलासपुर के नॉर्मल स्कूल में एक शिक्षक का स्थान खाली है, तुम दरखास्त दो तो मैं तुम्हें वह स्थान दिला दूँ। उनकी बात स्वीकार कर मैंने उस पद के लिये दरख्वास्त दे दी और बिना किसी चेष्टा के १५ दिन उपरान्त ही वह पद मुझे मिल गया। मुझे कभी स्वप्न में भी यह कल्पना नहीं आयी थी कि मैं केवल सात महीने ही प्रायमरी विद्यालय में शिक्षण करके मिडिल स्कूल का शिक्षक हो जाऊँगा। गायत्री माता की कृपा से प्रसाद रूप में ही मुझे यह प्राप्त हुआ।

बी. ए. की परीक्षा देने के पथ में भी कई एक विघ्न-बाधाएँ थीं, जो माता की कृपा से ही सुविधापूर्वक हटती गयीं और काम पूरा होता गया। दरख्वास्त करने वालों में सबसे जूनियर मैं ही था, अतः विद्यालय के प्रधान से मुझे परीक्षा के लिये अनुमति मिलने की कोई उम्मीद नहीं थी, पर माता की कृपा जो मुझ जूनियर को ही सर्वप्रथम सम्मति प्राप्त हुई।

अँग्रेजी तो मेरी बेहद कमजोर थी, अतः परीक्षा देने का न तो साहस ही होता था और न हृदय में उत्साह ही था। गुरुदेव का प्रोत्साहन पाकर अन्तिम दिनों में थोड़े से चुने हुए प्रश्नों का उत्तर जहाँ-तहाँ पढ़ गया था और आश्चर्य यही कि मैंने जो पढ़ा, वही प्रश्न आया और मैंने उसे यथा सम्भव लिख भी डाला, पर इतने पर भी पास होने की मैं आशा नहीं कर पा रहा था।

माता और गुरु की कृपा से मैं बी. ए. भी पास हो गया और आज उस पद से भी उन्नति प्राप्त कर हाई-स्कूल का शिक्षक बन गया हूँ । क्या माता की अहेतुकी कृपा का इससे भी अधिक कुछ उदाहरण मिल सकता है?

उनकी कृपा से पत्नी भी मनोनुकूल मिली, पर उसे एक ऐसा रोग था जिससे वंशावरोध का भय था। इसी रोग के निवारण में हमारे एक शिक्षक बन्धु को १२००) (बारह सौ) रुपये खर्च करने पड़े थे। माता की कृपा से २५) रु. में ही वह रोग नष्ट हो गया और यथा समय सन्तान की भी प्राप्ति हुई।''

* श्री महावीर प्रसाद शर्मा, पिड़ावा, झालावाड़ से लिखते हैं—''मैं मैट्रिक में प्रथम तथा इण्टर में द्वितीय श्रेणी में पास हुआ, पर गायत्री मंत्र का शुद्ध उच्चारण करने में असमर्थ रहा। विद्यालय के वातावरण में रहकर मैं नास्तिक बन रहा था, शायद इसी पाप से मेरी ऐसी दशा थी। इण्टर के आगे पढ़ने की आर्थिक स्थिति नहीं थी, अतः विवशतापूर्वक पढ़ना छोड़ दिया। चार-पाँच महीने तक बेकार बनकर झटकता-सा रहा। माता की कृपा से ही इस बीच मुझे ऐसे साथी मिले, जो गायत्री-उपासक थे। उनके सत्संग के प्रभाव से न जाने कब मेरा नास्तिकपना दूर हो गया और मैं भी गायत्री माता की उपासना करने लगा। झालावाड़ में अध्यापक पद के लिए ''इन्टरव्यू''

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हुआ। मैं भी गया। कुछ दिन के उपरान्त उसका परिणाम निकला । सभी मिडिल पास वालों को अध्यापक पद की नियुक्ति के पत्र आ गये और मुझ इन्टर पास वाले का कहीं पता नहीं। इसी बीच क्वार की नवरात्रि का अवसर आया और मैने अनुष्ठान व्रत लिया। भक्तिपूर्वक लघु-अनुष्ठान पूर्ण किया। इसके कुछ ही दिन बाद मेरा मनचाहा मैट्रिक ग्रेड तथा पिड़ावा मिडिल स्कूल का अध्यापक होने का नियुक्ति पत्र आ गया।

मेरे प्रारब्ध के संकट काल अभी शेष नहीं हुए थे। सहसा ही मुझे ऐसे पत्र अधिकारियों की ओर से मिले, जिनमें मेरी नौकरी समाप्त होने की सूचना थी। ग्रीष्मावकाश सामने था। मैं निराशा सहित घर आया और अवकाशोपरान्त धड़कते दिल से पुनः विद्यालय आकर पढ़ाना प्रारम्भ किया। सिवाय गायत्री माता के और किसी से प्रार्थना नहीं की और आश्चर्य कि स्वभावतः ही सरकार ने मेरी नौकरी भी सुस्थिर कर दी और ग्रीष्मावकाश का वेतन भी भेज दिया। ऐसी ममता सिवाय माता के और कौन दे सकती है?''

* श्री गोवर्द्धनसिंह जी, राँची से लिखते हैं—''हमारी पत्नी को तीन महीने के अन्तर्गत ही सन्तति की उत्पत्ति होने वाली थी। हमारे समाज में विशेष कर नारी-समाज में ऐसी गर्भ विज्ञाता होती हैं, जो दो-तीन मास की गर्भवती नारी को देखकर निश्चित भविष्य को बता देती हैं कि इस नारी को बालक या बालिका होने वाली है। मुझे पुत्र-प्राप्ति की बड़ी अभिलाषा थी, किन्तु भाग्य-चक्र ने पुत्री को ही गर्भाशय में रख छोड़ा था। यह जानकर मुझे उत्साह नहीं था। यद्यपि मैं गायत्री उपासक था, पर घर के कार्य सम्बन्धी उलझनों के कारण थोड़ा-सा जप करना भी मुश्किल जान पड़ता। खूँटी में सामूहिक यज्ञ की आयोजना हुई, उसमें सभी की प्रार्थना से श्रीकृष्ण जन्मभूमि मथुरा से आचार्य श्रीराम शर्मा भी पधारे थे। मेरे घर के निकट होने के कारण मैं उसमें भाग ले रहा था। यज्ञ के उपरान्त मैंने अपनी लालसा उनके सामने प्रगट की। उन्होंने कहा—तुम्हें लड़की तो अवश्य ही होने वाली है, पर यदि तुम सवा लाख गायत्री महामन्त्र का जप-अनुष्ठान करो तो तुम्हें पुत्र की प्राप्ति हो जावेगी, क्योंकि कभी-कभी गायत्री माता असम्भव को भी सम्भव बना सकती है।

मैंने कहा-''अब तो तीन महीने ही शेष रह गये। भला, अब वह कैसे बदल सकता है?'' उत्तर मिला-''माता को कार्य करने के लिए पर्याप्त समय है।''

मैं चुपचाप आदेशानुसार साधना में लग गया। आश्चर्य यह कि प्रथम जो थोड़ा-सा जप करने में मेरा मन ऊबा और थका-सा जाता था, वह इस बार इतने अधिक जप करने पर भी थकित नहीं हुआ। हमारे यहाँ की अनुभवी नारियों ने एक स्वर से कह दिया-''इसे तो लड़की ही होने वाली है, हम भी देखना चाहती हैं कि कैसे गायत्री माता इसे लड़का बना देती हैं?''

ता. ७ जुलाई, ५५ को दो बजे रात में सभी को आश्चर्य में डालते हुए गायत्री माता की कृपा से गुरुदेव की भविष्य नव-निर्माण की वाणी से सुन्दर पुत्र हुआ। प्रातः ही उसे देखने की अभिलाषा वालों की भीड़ लग गई। मुझे तो पूर्ण विश्वास हो गया, कि गायत्री माता अपने उपासकों के लिए सब कुछ करने को तैयार रहती है।

* श्री युगेशनन्दन सहाय, पटना से लिखते हैं-''गायत्री माता की कृपा उपासकों को कब, किस रूप में प्राप्त होती है, यह पहले से कदापि पता नहीं लगता। मेरे मित्र अशोक कुमार ने मेरे कथन पर ही गायत्री-उपासना प्रारम्भ की थी। महायज्ञ का संरक्षण-जप स्वीकार किया था। इस समय वे पटना के बी. एन. ट्रेनिंग स्कूल में पढ़ते थे। उसी में रंजनादेवी भी पढ़ रही थी। वह सुन्दरी और सुसंस्कृता थी। दोनों में प्रेम का बीज अंकुरित हुआ और परस्पर विवाह करने का निश्चय किया, पर अशोक कुमार के पिता बिना तिलक-दहेज लिये शादी करना पसन्द नहीं करते थे। रंजना की पारिवारिक स्थिति साधारण थी। यहाँ से रुपया और सम्पत्ति मिलने की सम्भावना नहीं देख उन्होंने एक धनी परिवार की लड़की से अशोक कुमार के विवाह की बातें तय करलीं और लड़के को धमकाया कि यदि तुमने मेरी बात नहीं मानोगे तो पढ़ने का खर्च तो बन्द कर ही दूँगा, साथ ही हमारी सम्पत्ति से भी तुम हाथ धो बैठोगे।

चिन्ता ने अशोक कुमार को बिछौने पर सुला दिया। ऐसे संकट पर माता की पुकार करना स्वाभाविक होता है। माता ने पुकार सुन ली। अशोक कुमार का हृदय उत्साह से भर उठा, उसने उद्घोषित किया— मैं सब कुछ खोकर भी रंजना से विवाह करूँगा। रंजना के माता-पिता तो चाहते ही थे। छात्र बराती बने और आनन्द-उल्लास के बीच रंजना-अशोक कुमार की जीवनधारा मिलकर एक सरिता की भाँति उल्लासित-सी चल पड़ी। सास-श्वसुर ने अपनी अनिश्चित पतोहु का मुख देखा और उनका

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आवेश-उनकी कठोरता पिघलकर वात्सल्य की निर्झरिणी बन गई। कौशल्या माता के समान-सास ने पतोहू को अञ्चल के नीचे छिपा लिया और आँखों में प्यार छलछलाने लगे।

प्रारम्भ में गायत्री उपासना करने में मेरा मन जरा भी नहीं लगता था, पर गुरुदेव के आदेशानुसार करते ही रहने से आज ऐसा हो गया है, कि यदि मुझे केवल वही काम रहे, तो मैं करता ही रहूँ, कभी न थकूँ। पता नहीं इसमें किधर से अद्भुद रस उत्पन्न होता है। गायत्री-उपासना के पहले पढ़ने में मेरा मन भार-सा बोध करता था, पर अब उसमें भी रुचि बढ़ गई है और कुछ भौतिक एवं आध्यात्मिक लाभ, जो मुझे हुए हैं, उन्हें मैं उल्लेख करना नहीं चाहता।''

* उपाध्याय नाथूलाल बापूलाल औदीच्य सागवाड़ा से लिखते हैं—''माता की अशेष करुणा से मैं पन्द्रह वर्ष की उमर से ही तीन माला प्रतिदिन गायत्री महामन्त्र का जप करने लगा था। कुछ दिनों के उपरान्त मैं 'अखण्ड ज्योति' का ग्राहक बना और गायत्री महाविज्ञान तीनों भाग पढ़कर अपना आध्यात्मिक गुरु भी एक प्रगट-गुप्त महापुरुष को चुन लिया। जप की संख्या बढ़ाकर १००० एक हजार कर दी।

माता की अपार दया से मैं जहाँ भी जिस काम से जाता हूँ, वह किसी भाँति पूरा ही हो जाता है। कभी लगता है, यह काम होना तो मुश्किल है, पर ज्योंही उस काम में लगता हूँ कि वह काम अपनी कठिनाई त्याग कर सरल होने लगता है।

मेरी पत्नी का स्वास्थ्य बहुत दिनों से खराब था। कभी रोगों से छुट्टी नहीं मिलती थी। एक न एक रोग सदा उसे घेरे ही रहते। सारी चिकित्सायें उसके रोग को दूर करने में असफल सिद्ध हुईं । आध्यात्मिक गुरु वरण करने के बाद उपासना करते हुए उसके सारे रोग क्रमशः कैसे दूर हो गये, यह पता भी नहीं चला।

मेरा अपना मकान नहीं था। माता की कृपा से एक व्यक्ति ने अपना दो हजार रुपये का मकान मुझे ५००) में ही दे दिया। उस समय मेरे पास एक भी रुपया नहीं था। एक व्यक्ति ने माँगते ही कर्ज दे दिया और मैंने मकान खरीद लिया। कुछ दिनों में वे कर्ज के रुपये भी चुक गये।

हम लोग अपने परिवार में चार व्यक्ति हैं—पत्नी, एक पुत्र, एक पुत्री और स्वयं मैं । हमारी जीविका का कोई ठोस आधार नहीं, फिर भी, हम सभी, सदा सुखपूर्वक पूरा भोजन पाते रहते हैं। हमारे जीवन के इन सुखद स्थितियों का एक मात्र कारण माता का ही वात्सल्य है, क्योंकि हम अपने जीवन में, केवल अपने पुरुषार्थ से चलने वालों—अनकों को भूखों मरते—विभिन्न दुःख और अभाव भोगते हुए प्रतिदिन देखते ही रहते हैं।''

* श्री जगदेवप्रसाद तिवारी, पूरवटोला से लिखते हैं—''रोगों को भोगते-भोगते मैं जीवन से निराश हो चुका था। सारे इलाज व्यर्थ गये। मैं दिन गिना करता था कि कब इस संसार से कूच करूँगा? न जाने कैसे मैं माता की शरण में आ पड़ा। ज्यों-ज्यों जप करता था, त्यों-त्यों बिना औषधि के ही शरीर में सुधार होने लगा। मुझमें जीने की आशा पुनः झलक उठी। उपासना में उत्साह और रुचि बढ़ गई। मन भी लगने लगा। आश्चर्य! ये वर्षों के रोग, जो दवाइयों से जरा भी टस से मस नहीं हो रहे थे-दिवसों में उठ गये।

आज मेरे मन-मन्दिर में मातृ कृपा के अनेकों रत्न सुरक्षित भरे पड़े। हमें उन्हें निकालने की इच्छा नहीं हो रही है, फिर भी जन-हित के लिए एक-दो घटनाएँ लिख देना चाहता हूँ।

माता का अञ्चल पकड़ने के बाद मैं अपने जीवन की प्रत्येक दिशा में उन्नति और वृद्धि ही होते पा रहा हूँ।

एक बार मेरी इच्छा एक दुकान खोलने की हुई। मेरे पास बक्से में गिने-गिनाये थोड़े ही रुपये थे। उससे दुकान का कार्यारम्भ नहीं हो सकता था। सबेरे जब बक्स खोला तो आश्चर्य! इतने अधिक रूपये किसने हमारे ताला लगे बक्स में डाल दिये? आप सोच सकते हैं कि माता की कृपा का यह स्थूल प्रत्यक्ष कर कोई उपासक कितना उल्लास और उत्साह से भर उठेगा? रुपये इतने मिल गये, जिससे दुकान आसानी से चल गई और अपना निर्वाह-क्रम सुविधापूर्वक चलने लगा।

भगवान् करे, सभी उपासना करके माता की महत्ती कृपा के भागीदार बन सकें।''

* श्रीलक्ष्मीनारायण साईंवाल, इन्दौर से लिखते हैं—''जुलाई सन् १९५३ तक मैंने कभी भी गायत्री माता की उपासना नहीं की। मुझे श्री सुरेन्द्र नाथ तिवारी सदैव ही माता की उपासना करने के हेतु बारम्बार कहा करते थे। परन्तु उस समय मैं उनकी इन पूजा-पाठ की बातों पर विशेष ध्यान नहीं देता था। अन्ततः जब मैं चारों ओर से घोर विपत्तियों में फँस गया, उस समय मुझे माता की उपासना का ध्यान आया कि कम से कम नियमित रूप से एक माला व

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री चालीसा का पाठ करते ही रहना चाहिए। अत: सितम्बर, १९५३ से आजीवन उपासना करने का दृढ़ संकल्प ले लिया।

लगभग १२ साल से मेरे कुटुम्ब में कलह हो रहा था। दोनों ओर से इतना मनमुटाव हो गया था कि एक-दूसरे की ओर देखना भी अच्छा नहीं समझते थे। इतनी कट्टर द्वेष भावना हम दोनों पक्ष में हो गई थी कि एक-दूसरे को जान से मार डालने तक का इरादा हो गया था। दोनों पक्षों का काफी पैसा भी नष्ट हो गया। जब से हमने माता की शरण ग्रहण की, तब से हमारे स्वभावों में बड़ा परिवर्तन हो गया है। हमारे द्वेष भाव के विचार नष्ट हो गये हैं। आपस में मिलने जुलने भी लगे हैं और पहले की भाँति परस्पर मिलजुल कर रह रहे हैं।

माता की कृपा से मैं विद्याध्ययन में भी दिन-प्रति-दिन सफलता प्राप्त कर रहा हूँ और उन्हीं की कृपा-दृष्टि से मैंने इस वर्ष दो परीक्षाएँ भी उत्तीर्ण कर ली हैं जिनमें कि मैं लगभग ५ वर्ष से प्रविष्ट होते हुए भी सफलता प्राप्त नहीं कर सका। मेरी नौकरी में ६ वर्ष से कोई तरक्की नहीं हुई थी, वह अब माता की कृपा से हो गई। इस प्रकार आज तक मेरी कई बाधाओं का निवारण माता ने किया है और करती भी जा रही है तथा दिन-प्रतिदिन विश्वास दृढ़ होने से एक माला से बढ़ा कर आठ माला प्रतिदिन जप करता हूँ।''

* श्री मूलजी उद्धवजी वेदान्त, कोटडी से लिखते हैं—''मेरी पुत्री चन्द्रलता की सास बड़ी कठोर प्रकृति की थी। एक बार उसने चन्द्रलता को बेतरह मारा। यह सुनकर मुझे बड़ी वेदना हुई। चैत्र नवरात्रि का अवसर था। मैंने उसके इस संकट-निवृत्ति की भावना से गायत्री का अनुष्ठान प्रारम्भ कर दिया। अनुष्ठान समाप्ति के कुछ ही दिन बाद चन्द्रलता ने अपने हाथ से लिख अपने जीवन में अप्रत्याशित शान्ति आने का प्रसन्न-संवाद दिया और कुछ दिन उपरान्त उन लोगों ने प्रसन्नतापूर्वक उसे यहाँ पहुँचा दिया। उसका स्वस्थ प्रसन्न मुख देख कर मैं भी पुलक से भर उठा। उसने बताया—भगवान की कृपा से मेरी सास का स्वभाव ही बदल गया। अब वह मारने के स्थान पर मुझे प्यार करती है। मैंने मन ही मन गायत्री माता को धन्यवाद दिया। कृतज्ञता से अन्तर भर रहा था।

इस प्रसाद से मेरा उत्साह और विश्वास बढ़ा। मुझे पुत्र-प्राप्ति की तीव्र इच्छा थी। सारा उपाय करके हार गया था। अत: मैंने पुत्र-प्राप्ति के लिये भी गायत्री-अनुष्ठान करने का निश्चय किया। आश्विन नवरात्रि आते ही विधिपूर्वक गायत्री अनुष्ठान सम्पन्न किया। ब्रह्मचर्य, सात्विक-मौन धारण सहित भोजन, आसन, संयम-नियम, सदाचार सभी को शक्ति भर निवाहा। माता का दयालु हृदय द्रवित हो गया और आषाढ़ मास के प्रथम पक्ष में ही मुझे पुत्र रत्न की प्राप्ति हो गई। ऐसी करुणामयी माता की कहिये कौन अभागा उपासना नहीं करेगा ?''

* पं. रामप्रसाद मिश्र बैदौलिया (बस्ती) अपना अनुभव लिखते हैं—''पिताजी के पास १ हजार बीघा जमीन थी, काफी सम्पन्न थे, पर समय के कुचक्र से यह सब कुछ चला गया। घर भी फूट गया। झोंपड़ी में रहने लगे। पेट को भोजन तक नसीब न होता। आखिर १६) मासिक की नौकरी की। वह भी बीमारी के कारण छूट गई। फिर सरयू तट पर गन्ना के खेत की रखवाली के लिए दिन-रात वहाँ रहना पड़ा, जहाँ से तीन-तीन मील कोई गाँव न था तथा पास ही शमशान घाट था। रात को अकेले रहने से बहुत डर लगता, कपड़ों के अभाव में लकड़ी जलाकर रात काटनी पड़ी। विपत्ति जो करावे सो कम है।

एक रात को उस सुनसान जंगल में एक गेरुए वस्त्रधारी बाबा आ निकले। रात को उसी झोंपड़ी पर ठहर गये। उनके पास एक पाव कोदों का चावल था, जो मिट्टी की हाँड़ी में पकाया गया, वही हम दोनों ने खाया। सबेरे चलते समय उन्होंने मुझे गायत्री मंत्र सिखाया और कहा बेटा यह मंत्र सब सुख सम्पत्ति का दाता है। तू इसका जाप कर, तेरे सब कष्ट मिटेंगे। मैंने उनकी आज्ञा शिरोधार्य की। उसी रोज से दिन फिर गये। खेती में लाभ हुआ, बैल खरीदे, गिरवीं रखी हुई जमीन छूटी, कर्ज चुकाया, मेरा विवाह हुआ, अच्छी नौकरी लगी। सब प्रकार की सुख-शान्ति से घर भर गया। जहाँ रहता हूँ गायत्री का प्रचार करता हूँ।''

* श्री कृष्णकुमार जोशी, बाण गाँव माता की साक्षात् कृपा का वर्णन करते हैं—''अखण्ड ज्योति' के अध्ययन से मुझमें गायत्री-उपासना करने में काफी बल मिला। उस समय महायज्ञ की पूर्णाहुति का निमन्त्रण मिल गया था, पर मेरे चार सन्तान पत्नी आदि का उदरपोषण ही कठिन था। मेरी बड़ी लालसा थी, मैं अपने बच्चों को दूध दे सकूँ और पूर्णाहुति में जरूर सम्मिलित होऊँ। अचानक एक सज्जन सेठ ने मुझे बुलाया, कहा—मेरी उमर बीत चली। यह गाय मैंने ब्राह्मणों के दान देने के लिये पाल-पोष रखी है। आप इसे दक्षिणा सहित ग्रहण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करें। माता की करुणा देख मेरी आँखों में आँसू भर आये। बच्चों को दूध के लिये गाय तो मिली, पर रुपये में कमी थी। इसीलिए मैंने तपोभूमि जाने के लिये गाय बेच डाली, सोचा इसी में से कुछ रुपये दूध के लिये दे दूँगा। दूसरे ही दिन एक श्रद्धालु सेठानी ने मुझे बुलाकर उससे बड़ी और सुपुष्ट गाय दान दी। माता की ममता की याद कर मेरा हृदय भर उठा। खूब प्रेम और हुलास से पूर्णाहुति मथुरा में सम्मिलित हुआ और माता को सहस्र-सहस्र धन्यवाद दिया।''

* श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा, श्रोत्रिय-बोहत कोटा से लिखते हैं—''मैं तीन वर्ष से अत्यन्त दुःखी था, चिन्ता एवं महान् आपत्ति में ग्रस्त था। हमारे यहाँ भिक्षावृत्ति के अतिरिक्त अन्य जीविका उपार्जन का माध्यम नहीं है। यहाँ के ब्राह्मण भिक्षावृत्ति से ही जीवन-निर्वाह करते हैं। मुझे यह वृत्ति अशोभनीय मालूम पड़ी, अतः शिक्षा विभाग की ओर अग्रसर हुआ। मैंने कई जगह आवेदन-पत्र भेजे,पर कहीं से सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिला। राजकीय नौकरी के लिये २५ वर्ष अन्तिम आयु है, जबकि मेरी अवस्था २४ वर्ष ८ माह हो चुकी थी। घर के सब लोग नाराज रहते थे। कोई-कोई लोग तो अपमानजनक शब्द कहकर धिक्कार देते थे। इस बीच दो-तीन बार आत्म-हत्या तक करने का विचार मन में आया, पर माता की कृपा से धैर्य धारण करके डटा रहा और आपत्ति सहन करता रहा।

पूज्य आचार्यजी के आदेशानुसार मैं श्रद्धापूर्वक माता की उपासना में लगा रहा। आचार्यजी ने गायत्री-उपासना चालू रखने व दूसरों को भी इस ओर अग्रसर करने को कहा था, क्योंकि ब्राह्मण जीवन का यही सर्वश्रेष्ठ उपयोग है। मैं विशद् गायत्री महायज्ञ का भी भागीदार बना। गायत्री माता की दया से मुझे नौकरी प्राप्त हुई। माता की कृपा से मैं घोर अन्धकार में से निकल कर प्रकाश में आ सका हूँ। माता की महान् अनुकम्पा एवं आचार्यजी के आशीर्वाद से मेरा जीवन सुख-शान्ति मय बनेगा।''

* बहराइच से श्री ललताप्रसाद जी पेन्शनर र. कानूनगो लिखते हैं—''मुझे तो यह संसार ही वेद-माता का चमत्कार जान पड़ता है और पग-पग पर उसके अनुभव दिखलाई पड़ते हैं, मुझे मोतियाबिन्दु हो गया था, समझा कि अब नौकरी से हटना पड़ेगा और इससे बहुत घबड़ाया। पर माता की कृपा से ऑपरेशन द्वारा दोनों आँखें ठीक हो गईं। इससे आठ साल तक काम करके पेन्शन मिली। अब ११ वर्ष से पेंशन ले रहा हूँ। मेरी भतीजी के विवाह में बड़ी अड़चनें पडीं। हमने वरिच्छा तिलक दे दिया पर ब्याह की तिथि पर उन्होंने इन्कार कर दिया। अब तो हम लोगों के होश ठिकाने पर न रहे। तब गायत्री माता की शरण ली, जिससे दूसरी जगह सुगमता से ब्याह हो गया और पहले से घर-वर सब अच्छा मिला। मेरी पोती मनोरमा देवी इन्ट्रेंस क्लास में इंगलिश में बहुत कमजोर थी, पर गायत्री जप करते-करते वह एफ. ए., बी. ए., एम. ए. (प्रीवि) कर चुकी है और अब एम. ए. (फायनल) की तैयारी कर रही है। मेरे एक रिश्तेदार बा. ज्योतिस्वरूपजी पर जाल करने का सरकारी मुकद्दमा चलाया गया। जब तक मुकद्दमा चलता रहा, वे नित्यप्रति १० माला गायत्री मंत्र को जपते रहे, अवकाश न मिलने पर दूसरों से जप कराया। माता की दया से साफ छूट गये और पूरी तनख्वाह मिली।''

श्री चन्द्रलेखा श्रीवास्तव, यादवपुर बखरी (चम्पारण) अपने अनुभव का वर्णन करती हैं—''मैंने बचपन में ही मातृ विहीना होकर गायत्री माता को ही अपनी माता बना लिया। जब मैं सयानी हुई तो पिताजी को शादी की चिन्ता हुई, भला माता मेरे लिए पिताजी को क्यों कठिनाई में डालना पसन्द करे निकट में ही एक सुयोग्य लड़के का पता लगा और दहेज की राक्षसी प्रथा के बावजूद भी बिना दहेज और झंझट के मेरा पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न हो गया। पतिदेव के परिवार में सभी गायत्री उपासक ही मिले। वहाँ पतिदेव के आदेशानुसार 'अखण्ड ज्योति' पढ़कर मैंने पूज्य आचार्यजी से विधिवत् दीक्षा ली और निर्देशित विधि से उपासना करने लगी। इससे आर्थिक दशा एवं मेरे कमजोर स्वास्थ्य की पुष्टि का प्रारम्भ हुआ। पूज्य आचार्य जी के आशीर्वाद प्राप्त कर मैं हिस्टीरिया रोग से मुक्त हो गई और मेरे पूज्य पतिदेव उन्हीं की कृपा से आज समाज शिक्षा के आयोजक पद पर आसीन हो २००) (दो सौ रुपये) मासिक अर्जन कर रहे हैं। गुरु और माता की कृपा से हमारे जीवन में शान्ति और सुख का स्वाभाविक निवास है।''

* श्री विरसुखलाल, सिकन्दराबाद से लिखते हैं—''हमारे परिवार में केवल पिताजी के कारण ही हमारी जीविका चलती थी। सारा कारोबार देखने और संचालित करने वाला, उनके सिवाय और कोई नहीं था। हमारे दुर्भाग्य से उन्हें पथरी का रोग हो गया। रात-दिन दर्द से बेचैन रहते थे। हमारा सारा कारोबार बन्द हो गया। पहले की अर्जित सम्पत्ति उनके इलाज और हमारे भोजन एवं अन्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आवश्यकताओं में खर्च किये जा रहे थे। हम लोग उनके जीवन से निराश होकर अपनी भावी जीविका के नष्ट होने की चिंता से भीतर ही भीतर भय से घुलते जा रहे थे।

निराशा ने हमें गायत्री माता की ओर उन्मुख किया। जो जप कर सकते थे सभी ने माता की करुण पुकार सहित जप करना आरम्भ किया। चार महीने बीतते-बीतते पिताजी पूर्ण स्वस्थ हो गये। सभी ने मुग्ध होकर, कृतज्ञ हृदय से माता को धन्यवाद दिया, जिन्होंने पिताजी की प्राण रक्षा के सङ्ग हमारी जीविका के साधन भी संजीवित कर दिये।

* श्री गणेश जी, इन्द्रनगर, सिंहभूमि से लिखते हैं—"मैं सारे उपाय करके हार गया था। पिताजी के बचने की कोई आशा न थी। जब मनुष्य को चारों ओर से सहारा नहीं मिलता तो स्वभावतया ही उनकी दृष्टि ईश्वर की ओर उठ जाती है। मैं प्रथम से ही गायत्री उपासक था। पिताजी के प्राण-रक्षा की भावना के लिए मैंने जप संख्या में वृद्धि की और रक्षा के लिए प्रार्थना किया करता। दूसरे दिन ही पिताजी के अन्तर में शान्ति का बोध हुआ और तीसरे-चौथे दिन उनकी दशा में स्पष्ट सुधार पाया। माता की कृपा का साक्षात् कराने के लिये, अभी भी हमारे पिता स्वस्थ जीवन यापन कर रहे हैं।

आर्थिक दुश्चिंता सदा मुझे घेरे ही रहती। कितनी भी कोशिश करता, न तो बाहर की हालत सुधरती और न मेरा सन्ताप ही दूर होता। सोचा—अब माता से ही प्रार्थना करूँ। यह सफलता मेरी शक्ति से बाहर है। उस दिन जप कर रहा था, सहसा ही अन्तर में मुझे स्पष्ट सुनाई पड़ा-"अधीर मत होओ, बाहर में कोई तुम्हारी सहायता नहीं करेगा। मैं ही तुम्हें निभाये ले चलूँगी।" यह सुनते ही मुझमें आत्म-शक्ति और धैर्य का संचार हुआ। आज भी मेरी बाहरी जीविका का साधन पूर्ववत् है, पर उस दिन के उपरान्त कोई ऐसा अभाव रहा ही नहीं, जिसकी पूर्ति नहीं हुई। कल्याणमयी माता की जय हो !"

* श्री सीताराम काशीनाथ राठी, वोरीबली (बम्बई) से लिखते हैं—"सन् ५४ दिसम्बर में मुझे लकवा मार गया, इलाज की हद कर दी गई पर लाभ कुछ न हुआ। एक मित्र के परामर्श से मैंने मानसिक गायत्री उपासना आरम्भ की। प्राकृतिक चिकित्सा का सहारा लिया, धीरे-धीरे स्वास्थ्य सुधरने लगा। बम्बई प्लास्टिक लि. मैं नौकरी करता था, वह भी अस्वस्थता के कारण छुट चुकी थी। स्वास्थ्य सुधरा तो पैसे की तंगी की विपत्ति सामने आई। छूटी नौकरी को पुनः प्राप्त करने की कोशिश की तो मना की, दो टूक जवाब मिल गया। सब ओर से निराश होकर सवा लक्ष गायत्री अनुष्ठान पर बैठा। अनुष्ठान पूरा होने में दो दिन की देर थी कि कम्पनी का घर बैठे बुलावा आया और फिर काम पर लग गया। गुजर होने लगी। पहले मेरी स्त्री और बालक बार-बार बीमार पड़ते थे, अब नहीं पड़ते। माता की दया से अब आनन्द ही आनन्द है।"

* श्री शिवशंकर मिश्र, कामठी, माता की छिपी-सी कृपा का वर्णन करते हैं—"मेरी लड़की की सगाई स्थिर हो गयी थी, पर उसके खर्च का उपाय नहीं हो रहा था। कर्ज माँगने पर कर्ज भी नहीं मिल सका। मैं व्याकुल भाव से माता की प्रार्थना करता रहता। अब आठ ही दिन विवाह के शेष थे। मेरी व्याकुल प्रार्थना भी बढ़ रही थी। अन्तःप्रेरणा से पुनः महाजन से कर्ज माँगने गया। इस बार उसने बिना हिचक के ७०० रु. का सामान तथा ३००) रु. नगद दे दिया, फिर भी कमी रही। माता से प्रार्थना चलती रही। जब दो दिन शेष रहे तो अनायास ही १८००) रु. का भी प्रबन्ध हो गया। मैंने माता को धन्यवाद देते हुए विवाह सम्पन्न किया।"

* श्री भोलाराम जी, बुलढाणा से लिखते हैं—"भेरुन्दा (मारवाड़) निवासी श्री मंगलदास जी को जीविका का कोई साधन नहीं था। आतुर व्यथा से वे दस पन्द्रह-रुपये में भी नौकरी करने को उतावले थे, पर अनेकों प्रयत्नों के बाद भी उन्हें कोई काम नहीं मिल सका। जीविका की तलाश में भटकते हुए एक बार से बुलढाणा आये। वे मेरे सम्बन्धी थे। मैंने उनकी परेशानी देख, जीविका प्राप्ति के लिए, गायत्री उपासना करने की सलाह दी। डूबते को तिनके का सहारा भी बहुत होता है। उन्होंने तुरन्त ही मेरी बात मानकर यहीं (बुलढाणा) में नौ दिन में २४०० गायत्री मन्त्र लिखने का संकल्प किया और उसमें निष्ठापूर्वक जुट गये। लिखना समाप्त कर २४० आहूतियों का हवन किया। इसके उपरान्त अनायास बुलढाणा में ही १००) (एक सौ रुपये) मासिक, एक औषधि बेचने वाली दुकान में मुनीम का स्थान मिल गया। उन्होंने माता को सहस्रशः प्रणाम कर धन्यवाद दिया और आज भी नौकरी करते हुए माता के परम भक्त बने हुए हैं।"

"श्री कृष्णचन्द गौतम इन्स्पैक्टर सहकारी विभाग रायसिंह नगर से लिखते हैं लगभग दो वर्ष बीत गये,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मुझे ''अखण्ड ज्योति'' पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । अत्यधिक प्रभावित होकर मैं इसका ग्राहक बन गया । मैं कई भौतिक संकटों से ग्रस्थ था । अत: मैंने अपनी दु:खद कथा पूज्य आचार्य जी के समक्ष रखी और उन समस्याओं के समाधान का उपाय पूछा । उन्होंने कृपा करके गायत्री साधना का उपदेश दिया । उसी समय से मैं अपनी धर्मपत्नी सहित गायत्री उपासना में लग गया।

हमारे कुटुम्ब में मैं ही इकलौता पुत्र हूँ । मेरे शादी हुए लगभग ७-८ वर्ष हो गये, किन्तु कोई सन्तान न होने से घर वाले दु:खी थे । मैंने इसके लिये भी चरणों से प्रार्थना की थी । ज्योतिषियों से पूछताछ की । सबने एक स्वर से कहा कि सन्तानोत्पत्ति का कोई योग नहीं है । पूज्य आचार्य जी के आदेशानुसार मेरी धर्मपत्नी ने भी मेरे साथ-साथ ही आराधना शुरू की थी और वह अब माँ भगवती की कृपा से गर्भवती है । माता की कृपा से सब ठीक ही होगा । साथ ही साथ मुझे अच्छी नौकरी मिल जाने से आर्थिक समस्या भी सुलझ गई है । हमारे परिवार के सभी व्यक्ति सुख-शांति का जीवन व्यतीत कर रहे हैं ।''

श्री महावीर प्रसाद मास्टर, बेगमपुर अपने सुखी होने का कारण बतलाते हैं—''वैश्य का भी गायत्री जपने का अधिकार है'' यह जानने के बाद मैं पुरोहित और ब्राह्मणों के लाख मना करने पर भी गायत्री उपासना करता ही रहा । कुछ ही दिनों में मेरी गिरी माली हालत सुधर गयी, मेरा यश भी क्रमश: फैलता गया । भीतर में ओम् ध्वनि सुनायी पड़ती है । उसका केन्द्र खोजने के ख्याल में, मैं जप सहित अपने को भूल जाता हूँ । एक बार मेरे पेट में भयंकर दर्द हुआ। किसी दवा से आराम नहीं मालूम हुआ । अन्तत: गायत्री मन्त्र जपते-जपते ही धीरे-धीरे सारा दर्द गायब हो गया ।

एक बार मेरे दो कुण्ठित बुद्धि के शिष्य परीक्षा पास करने के लिए गायत्री मन्त्र लेखन उपासना करने लगे । एक योग्य तेजस्वी छात्र ने यह देख गायत्री उपासना का बड़ा मजाक उड़ाया । आश्चर्य मुझे भी हुआ कि परीक्षा में ये दोनों छात्र उत्तीर्ण और तेजस्वी छात्र ही फेल हो गया ।''

* श्री पातीराम त्रिपाठी 'विशारद' उदईपुर से लिखते हैं—मैंने दो वर्ष तक बड़ी तन्मयता से अध्ययन किया और 'विशारद' की परीक्षा दी पर उत्तीर्ण नहीं हो सका । उसके उपरान्त मैं प्रतिदिन गायत्री जप करते हुए पढ़ा और इस बार बिना शान्ति बोध किये द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हो गया ।

उपासना करने से स्वत: सत्य बोलने की प्रवृत्ति और अभ्यास बढ़ता जा रहा है । भविष्य की उन्नति के लिए नवीन विचार स्वत: ही उत्पन्न होते रहते हैं और उससे निरन्तर लाभ हो रहा है ।

मेरे गाँव के छेदालाल ब्रह्मभट्टजी को केवल लड़कियाँ ही उत्पन्न होती थीं, अत: वे पुत्र प्राप्ति के लिए बड़े ही व्याकुल और चिन्तित रहते थे । उन्हें अनुक्रम १२ लड़कियाँ हो चुकी थीं तेरहवाँ गर्भकाल था । वे मुझसे मिले । मैंने उन्हें पुत्र प्राप्ति के उद्देश्य से गायत्री माता की उपासना करने की सलाह दी । ५) रुपये की हवन सामग्री मँगाकर गायत्री मन्त्र से आहुति दी गई । ब्रह्म भोज भी हुआ ।

गायत्री माता की कृपा से तेरहवीं सन्तान पुत्र हुआ, जो स्वस्थ और सुन्दर है । माता सभी का सद्-अभीष्ट पूरा करे, ऐसी मेरी प्रार्थना है ।''

* श्रीमती राजरानी मंडाहार दिल्ली से लिखती हैं—''मेरी गायत्री उपासना, पतिदेव की गायत्री उपासना के आश्रित या अभिन्न है ऐसी मेरी श्रद्धा है ।

श्री बसन्त पंचमी से लेकर अब तक हवन करते रहने से जो एक-दो चमत्कार मेरे देखने में आये हैं, उन्हें ही मैं अंकित कर रही हूँ ।

मेरे पतिदेव को डेढ़ वर्ष तक नौकरी करने के उपरान्त गत दिसम्बर को अचानक ही नौकरी से जवाब मिल गया। हमारी एक मात्र यही जीविका रहने के कारण हम लोग व्याकुल और हताश हो गये। अब क्या होगा ? ये बच्चे क्या खायेंगे ? पर यज्ञ भगवान् और गायत्री माता की कृपा से उसके दूसरे दिन उन्हें अनायास नौकरी मिल गई । जीविका तो चली, पर अभाव की अनुभूति होती ही रहती । माता की क्या इच्छा थी, कौन जाने ? उपासना और यज्ञ लगातार चल ही रहे थे । २४ अप्रैल को मेरे पतिदेव के एक मित्र ने खबर दी कि उनके यहाँ एक जगह खाली है । उन्होंने उससे स्तीफा देकर वह नौकरी ग्रहण की । अब हमारी जीविका भली-भाँति चलती है और बच्चे भी शिक्षा पा रहे हैं ।

* श्री सत्यनारायण शर्मा इन्दौर से लिखते हैं कि—''मैं ऊँची परीक्षा उत्तीर्ण होते हुए भी बहुत कम वेतन पर एक फैक्टरी में विवशतापूर्वक काम कर रहा था । वेतन बहुत कम होने से चित्त दु:खी रहता था । कुछ मास पूर्व आचार्यजी इन्दौर पधारे थे, तब मैंने उनसे अपनी कष्ट कथा कही । उन्होंने गायत्री उपासना का निर्देश किया । उनके बताये हुए मार्ग पर चलते हुए मुझे कुछ ही महीने हुए हैं कि सेन्ट्रल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

गवर्नमेन्ट की एक अच्छी तरक्की की संभावना वाली सुविधाजनक नौकरी मिल गई, वेतन भी सन्तोषजनक है । पहले एक मास का वेतन गायत्री माता के लिए अर्पण कर रहा हूँ, क्योंकि माता की दी हुई सुविधा से प्रथम उनका सत्कार करना किसी सच्चे पुत्र का कर्त्तव्य है ।''

* श्री नाथूराम खरे, धगवाँ से लिखते हैं—मेरा पुत्र विजयनारायण लेखपाल (पटवारी) के पद पर कार्य कर रहा था । किसी कारण उनके अफसर नाराज हो गये और वह पदच्युत कर दिया गया । मैंने यह सारा संकट मथुरा आचार्य जी को लिखकर भेजा । उन्होंने विशेष रूप से गायत्री उपासना करने को कहा । मैं तथा विजय दोनों ही माता की श्रद्धापूर्वक उपासना में लग गये । नौकरी की बहाली के लिए अपील कर दी गई । माता की ऐसी कृपा हुई कि विजयपाल बिना किसी चार्ज के अपने पद पर बहाल कर दिया गया । हमारा समस्त परिवार माता की शरण में रहते हुए आन्दमय जीवन व्यतीत कर रहा है । हम सबके स्वभाव एवं व्यवहार में भी सात्विकता बढ़ रही है । बुरे विचारों से घृणा होने लगी है । माता की उपासना का ऐसा ही फल है ।''

* कविराज पं. कन्हैया लाल जी वैद्य इन्दौर से लिखते हैं—''मेरी लड़की कृष्णकुमारी को गायत्री उपासना में बड़ी श्रद्धा है । उसने करीब २७ हजार मंत्र लिखकर तपोभूमि में भेजे हैं । गत वर्ष पूर्णाहुति में भी हमारा परिवार तपोभूमि में गया था । बेटी कृष्णा को अच्छे घर-वर की प्राप्ति के लिए हमें बड़ी चिन्ता रहती थी, सो नाम मात्र के दहेज से ही सब कुछ प्राप्त हो गया । लड़की बहुत ही आनन्द के घर में गई है और लड़का सब प्रकार सुयोग्य मिला है, ऐसा सुयोग्य घर वर भारी दहेज देने पर भी मिलना कठिन था, पर वह सब माता की कृपा से अनायास ही प्राप्त हो गया ।''

* श्री आत्माराम साखरे जासलपुर से लिखते हैं—''पुत्री के लिए वर ढूँढ़ते-ढूँढ़ते कई वर्ष हो गये थे। लड़की के अधिक बड़ी हो जाने से घर के सब लोग चिन्तित रहते थे । रोज शादी जल्दी करने का प्रश्न ही घर में चर्चा का विषय रहता, पर उपयुक्त लड़का मिलता न था । जहाँ मिलते वहाँ बड़े दहेज की माँग होती । अधिक चिन्ता में हम लोगों ने चिन्ताहरणी गायत्री माता की शरण ली । पुत्री वसुन्धरा ने भी अनुष्ठान किये। हम लोगों ने भी किये । परिणाम बहुत ही मधुर निकला । एक बहुत ही सुसंस्कृत वर प्राप्त हुआ । लड़का भालेगाँव में खद्दर भण्डार का मैनेजर है। बिना आर्थिक परेशानी के बहुत ही सीधे साधे ढंग से शादी हो गई । लड़की को अब और भी अधिक पढ़ने तथा राष्ट्र की रचनात्मक सेवा करने का अवसर मिलेगा ।''

* श्री जाधोराम जी बेतूल से लिखते हैं—''मैं ए. ई. एन. ऑफिस में टेम्प्रेरी काम करता था । स्थायी जगह प्राप्त करने के लिए बहुत दिनों से प्रयत्नशील था । अनेकों प्रयत्न कर चुका था, पर कोई सफलता नहीं मिलती थी । भविष्य अन्धकारमय दिखता था । अपनी कोई ऊँची शिफारिस भी न थी, इससे मन सदा उदास रहता था और वर्तमान टेम्प्रेरी नौकरी भी छिन जाने की आशंका बनी रहती थी । डूबते को तिनके का सहारा—गायत्री मन्त्र हाथ लगा । छोटे साहब के कहने से मैं खूब मन लगाकर गायत्री उपासना करने लगा । आश्चर्य तो देखिए कि मैं जिन जगहों के लिए कोशिश कर रहा था, उससे कहीं बड़ी और लगभग दूनी तनख्वाह की जगह के लिए ऑर्डर आ गया । अब मैं स्थायी और सन्तोषजनक तनख्वाह की जगह पाकर सन्तुष्ट हूँ ।''

* श्री मोहनलाल पाण्डेय खैराबाद से लिखते हैं—''जब से माता का आँचल पकड़ा है, उन्नति की ओर बढ़ रहा हूँ । डाकखाने में चपरासी की पोस्ट पर काम करते हुए-पोस्ट ऑफिस की क्लर्कशिप के लिए परीक्षा दी, अच्छी सफलता प्राप्त हुई । बारों के लिए क्लर्क पद पर नियुक्ति पत्र भी प्राप्त हो गया । घर में सुख-शांति बढ़ी है, इस वर्ष पुत्र भी हुआ है ।''

* श्री भैयालाल रघुवंशी अध्यापक बी. टी. कॉलेज भोपाल से लिखते हैं—''मैं गायत्री उपासना करते अवश्य ही धीरे-धीरे अनेकों दुर्गुणों एवं दुर्व्यसनों से मुक्त हो गया, पर बीस वर्षों से बीड़ी-तम्बाकू पीने की बुरी लत को नहीं छोड़ सका । हार मानकर मैंने अपने गुरुदेव से इसके लिए प्रार्थना की । उनका उत्तर आते ही अन्दर से पवित्र शक्ति उमड़-उमड़कर मेरे इस बुरी लत के उठे हुए वेग को रोक देती है । मुझे आश्चर्य होता है कि पत्र में क्या जादू था, जो आज माता ने मेरे अन्दर रोक सकने की शक्ति ऊँड़ेल दी है । मुझे लगता है—माता का प्रत्यक्ष स्वरूप ही गुरुदेव हैं, यही हमारी श्रद्धा है ।''

* श्री गणपत गंगाराम चीचड़ा से लिखते हैं—''लम्बी अवधि बीत गई थी । जवानी ढल गई थी। पहले तो बहुत दिन तक सन्तान ही नहीं हुई । जब हुई तो केवल लड़कियाँ । हमारे घर में निराशा

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का साम्राज्य रहता । सोचते कोई लड़का न हुआ तो वंश ही डूब जायेगा । कई बार घर में दूसरी शादी करने की चर्चा होती, कई बार कुछ विचार होता । ऐसी निराशा की घड़ियों में हमें एक सज्जन ने गायत्री मन्त्र का सहारा लेने के लिये कहा । मैं और मेरी धर्मपत्नी गायत्री जप करने लगे । माता की कृपा से एक सुन्दर पुत्र उत्पन्न हुआ है, घर-घर में प्रसन्नता छाई रहती है । यह चमत्कार देख कर अनेक गायत्री उपासक बने हैं ।''

* श्री सुन्दरलाल नाग, विरमुडी (रायपुर) से लिखते हैं—''मैं बहुत समय से गृह-जंजाल में बड़ा शोकातुर था। गृहिणी बड़ी कर्कशा कटुवादिनी लड़ाकू थी । जब से मैंने गायत्री उपासना आरम्भ की है, घर में बड़ी शान्ति रहने लगी है । आर्थिक समस्या भी हल हुई है। अभी-अभी डेढ़ हजार रुपये में ५ एकड़ जमीन खरीदी है । नित्य १०माला जपने के अतिरिक्त दोनों नवरात्रियों में अनुष्ठान भी करता हूँ ।''

* श्री महावीर प्रसाद शर्मा नान्ता (कोटा) से लिखते हैं—''एक बार मेरे वाला (नारू) फोड़ा हुआ और पीलिया रोग के चंगुल में फँस गया । इन विपत्तियों को मैंने गायत्री माता की शरण लेकर पार किया । धर्मपत्नी से मनोमालिन्य का जो क्लेश रहता था वह भी शान्त हुआ । माता की कृपा से एक सुन्दर पुत्र उत्पन्न हुआ है । आर्थिक स्थिति भी सुधरी है ।''

* श्री रामसिंहजी बिछियांवा (इलाहाबाद) से लिखते हैं—''मेरे एक मित्र के आचरण कुसंग के कारण बहुत बिगड़ गये थे । वेश्या गमन, नशेबाजी, जुआ आदि से उसने घर का सब पैसा फूँक दिया, स्त्री के जेवर तक बेच दिये । उसके पिता तथा घर के सब लोग बहुत दुःखी थे । चूँकि बचपन से ही उससे मेरी मित्रता थी, इसलिये उसके सुधार का संकल्प लेकर मैंने गायत्री उपासना की । उसका बड़ा अच्छा परिणाम हुआ, थोड़े ही दिन में उसके सब दुर्गुण दूर हो गये । घर के सब लोग सन्तुष्ट हैं । अब वह मित्र भी गायत्री उपासक बन गया है ।''

* पला कसेर (बुलन्दशहर) से श्री यादराम शर्मा लिखते हैं—''यहाँ की गायत्री शाखा के मंत्री श्री श्यामबिहारी शर्मा के विवाह का प्रयत्न कई वर्ष से चल रहा था, परन्तु कोई न कोई विघ्न उपस्थित हो जाता था । इस बार ज्येष्ठ के अन्त में यहाँ गायत्री यज्ञ सम्पन्न हुआ और केवल ८ दिन बाद मंत्रीजी की शादी बहुत अच्छे ढंग से हो गई । मेरा यह अनुभव है कि यह गायत्री माता का ही प्रभाव है कि इतनी शीघ्र साधना फल प्रदान किया ।''

* श्री गोविन्ददास भार्गव, दिगौड़ा (टीकमगढ़) से लिखते हैं—''जब से मैंने गायत्री माता की शरण ली है, तब से मेरी कितनी ही मनोकामनाएँ पूरी होती जाती हैं । मैंने दिल में सोचा कि पुत्र की शादी इस वर्ष में हो जानी चाहिए सो माता की कृपा से निर्विघ्न पूरी हो गई ।''

* रामगंज मंडी (कोटा) से श्रीमती कृष्णादेवी सूचित करती हैं—''मेरे पतिदेव को केवल ७०) प्रति माह मिलते थे, इतने कम वेतन से घर का खर्च भी भली-भाँति नहीं चल पाता था । अचानक मुझे एक गायत्री उपासक ने वेदमाता की उपासना के लिए प्रोत्साहित किया । मैंने उनकी सद्प्रेरणा से चैत्र की नवरात्रियों में ही सर्वप्रथम एक लघु अनुष्ठान किया । इसी मध्य में माता की विशेष कृपा से मेरे पतिदेव का वेतन १५०) हो गया । माता के इस चमत्कार को कोटि-कोटि नमस्कार है !''

* पलायथा (कोटा) से श्री गोपाललालजी लिखते हैं—''श्रद्धेय आचार्यजी की प्रेरणा से ४ फरवरी से ६ फरवरी तक एक सामूहिक आयोजन किया गया था । इसके कुछ समय उपरान्त ही भारी ओलों की वृष्टि ने ग्राम के चारों ओर हाहाकार मचा दिया, परन्तु माता के अनुग्रह से इस ग्राम में कुछ भी हानि नहीं हुई । ग्राम के सभी नर-नारियों की उस समय से माता पर अटूट श्रद्धा है । ये सभी लोग वात्सल्यमयी माता की करुणा के आभारी हैं ।

* श्री गोविन्दप्रसाद शर्मा चाँचौड़ी (म. भा.) अपनी कृपा उपलब्धि का वर्णन करते हैं—''सन्तान के अभाव में सब सुख होते हुए हमारा घर शमशान सा था । सन्तान होती भी तो अकाल मृत्यु की गोद में चली जाती । इस बार हम लोगों ने धर्म पत्नी सहित खूब प्रेम से माता की उपासना प्रारम्भ की । कुछ दिनों में सपने में माता ने दर्शन दिया, बाद में पत्नी के गर्भवती होने की जानकारी मिली । हमारी उपासना निरन्तर चलती रही । एक दिन सपने में माता ने कहा—''तुम बड़े चिन्तित थे-लो यह फूल ।'' इतना कहकर कमल का फूल मेरे हाथ में देकर माता तिरोहित हो गईं । उसके पाँचवें दिन कमल-सा प्रफुल्लित पुत्र उत्पन्न हुआ, जो माता की छाया में संरक्षित घर को प्रकाशित कर रहा है ।''

* श्री केदारनाथ तिवारी, तरौंदा, इटारसी से लिखते हैं—''मैं श्रद्धापूर्वक गायत्री जप तथा एक बार गायत्री

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चालीसा का पाठ कर रहा हूँ—विशेष कर तब से, जब से तीन लड़की होने के बाद सन्तान होना बन्द सा हो गया । एक बार मेरी लड़की दुलारी बाई ने भी तपोभूमि आकर गुरुदेव से भाई देने की प्रार्थना की । इसके बाद ही माता की कृपा से ६२ वर्ष की उम्र में कार्तिक बदी द्वादसी को मेरे घर में प्रातः ही पुत्र के जन्म से आनन्द का प्रकाश छा गया । मुझे तो गुरुदेव की याद करने से माता की छवि देखने को मिलती है और माता की याद से गुरुदेव । क्या रहस्य है यह तो माता ही जाने ।''

* श्री भालचन्द्र नारायण कवटेकर बड़ौदा (गुजरात) से लिखते हैं—''मेरी लड़की चि. कमल सन् १९५४ में मैट्रिक पास हुई थी और उसके लिये सुयोग्य वर ढूँढ़ने को मैं बड़ा चिंतित रहता था । मैं किसी अमीर व्यक्ति से विवाह करना नहीं चाहता था, पर वह गायत्री माता की उपासना करने वाला हो तो बहुत ठीक है । इसी समय मेरा तबादला भी धोलका को हो गया और मैं अपने कुटुम्ब को छोड़कर वहाँ रहने लगा, जिससे लड़की के विवाह की समस्या और भी कठिन हो गई, पर मैं लगातार गायत्री जप और माता जी की उपासना करता रहा, जिसके फल से अनायास ही बड़ा सुयोग्य वर मिल गया और मेरा तबादला भी पुनः बड़ौदा को हो गया । इस प्रकार माता की कृपा से मेरी दोनों मनोकामनायें पूरी हो गईं ।''

* श्री इन्दिरादेवी शुक्ल, भरारी (बिलासपुर) से लिखती हैं—''सुसम्पन्न परिवार में मेरा विवाह हुआ था, पर सन्तान बिना घर सूना लगता था । दो बार सन्तान हो-होकर मर गई । तीसरी बार जब मैं गर्भवती थी, मेरे पतिदेव की एक गायत्री उपासक से भेंट हो गई । वे हमारे लिये देवदूत ही थे । उनके कहे अनुसार हम दोनों ने गायत्री जप करना प्रारम्भ किया । माता की कृपा रस पीकर पुष्ट चिरञ्जीव पुत्र उत्पन्न हुआ, जो आज उस निश्चिन्त संरक्षण में विकास पा रहा है । माता धन्य हैं !

* श्री रामकृष्ण डोंगरे, कटनी (जबलपुर) माता के प्रति अपनी कृतज्ञता का प्रकाश डालते हैं—''वर्षों के दाम्पत्य जीवन के बाद भी जब सन्तान के दर्शन नहीं हुए तो मेरी पत्नी सहित सारा परिवार एवं कुटुम्बीजन निराश थे, पर मेरी आस्था अचल बनी रही । अन्त में माता की करुणा फूटी और घर में पुत्र रत्न को देखकर सभी प्रसन्नता से उत्फुल्ल हो उठे ।''

* श्री चन्द्रकान्ता गुप्ता, बैकुण्ठपुर (सरगुजा) अपनी गायत्री उपासना के अनुभव का वर्णन करती हैं—''मेरे अभिभावक मेरे लिये अच्छे वर की तलाश में परेशान थे, पर मैं माता के प्रति विश्वास पर निश्चिन्त थी । उन लोगों की परेशानी मैं देखकर लज्जित और पीड़ित हो जाती । अन्त में मैंने एक लघु अनुष्ठान इसके लिये कर लिया । फिर अनायास जैसे, एक सुशिक्षित एवं सम्पन्न वर मिल गया ।''

मेरे गाँव में लड़कियों को मिडिल से आगे पढ़ाने की कोई प्रवृत्ति नहीं दीखती । मैं मिडिल पास कर माता से प्रार्थना करती रही—फलतः मेरी आगे की पढ़ाई के लिये परिवार वालों ने जबलपुर में व्यवस्था कर दी ।''

* उरई (यू.पी.) से सु. शिवकान्ती देवी मिश्र लिखती हैं—''मेरे बहनोई श्री माधवप्रसाद मिश्र बिना सूचना दिये कहीं चले गये थे जिससे परिवार के सब लोग अत्यन्त दुःखी थे । इस दुःख की निवृत्ति के लिये हमने गायत्री जप किया और आचार्य जी से निवेदन किया । उन्होंने उनका चित्र मँगाकर गायत्री माता की कृपा प्राप्त कराई जिससे ७ जून को माधवप्रसाद जी घर वापस आ गये । इस कृपा के लिये मैं पूज्य गुरुदेव को श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ ।''

* श्री सीताराम श्रीवास्तव पछायागाँव (इटावा) से लिखते हैं—''मुझे सर्वप्रथम अक्टूबर १९५५ को 'अखण्ड ज्योति' पढ़ने को मिली । उसके बाद जब मेरे परिवार में कलह हुई तो मैं लेटे ही लेटे मन में मन्त्र जपने लगा, फलस्वरूप दो दिन में शांति हो गई । इसी प्रकार मुझे बीड़ी पीने का दुर्व्यसन था जिसे छोड़ देने पर शरीर पर बुरा असर पड़ता था । मैंने गायत्री माता से इसके लिये प्रार्थना की । उसके बाद मैंने यह आदत त्याग दी और कोई शारीरिक कष्ट नहीं हुआ।''

* श्री भुवनेश्वर प्रसाद पोद्दार, मोहद्दीन नगर (भागलपुर) से लिखते हैं—''मैं तो एकलव्य की तरह आपको गुरु मानकर नित्य पूजा करता हूँ । मेरी अवस्था ४४ वर्ष की हो चुकी थी, इसलिए सन्तान उत्पन्न होने की आशा जाती रही थी । पर माता की कृपा से अनहोनी बात हो गई और ता. १२ मई को मेरे यहाँ पुत्र उत्पन्न हुआ । अब यह बच्चा चिरञ्जीव और निरोग रहे, साथ ही माता के चरणों का अनन्य भक्त हो, ऐसा आशीर्वाद आप दें ।''

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* श्री सरस्वती प्रसाद, कानपुर से लिखते हैं—"मेरे पुत्र चि. बजरंग सहाय जी के सन्तान हो-होकर मर जाती थी । उसे बचाने के लिये उसने चिकित्सकों और देवी-देवताओं की पर्याप्त पूजा-अर्चना की, पर कोई फल न हुआ । अन्ततः एक गायत्री उपासक की सलाह से उसने सन्तान को जीवित रखने की भावना लेकर विधि सहित गायत्री उपासना प्रारम्भ की । उसके उपरान्त एक पुत्र का जन्म हुआ । माता की कृपा से वह लड़का बच गया । उसकी उम्र आज चार वर्ष छः महीने की है । उस लड़के के बाद उन्हें एक कन्या की भी प्राप्ति हुई, जिसकी उम्र अभी एक वर्ष आठ महीने की है । मुझे तो लगता है माता की कृपा से दुनियाँ में पायी जाने वाली सारी वस्तुयें पायी जा सकती हैं । कोई भी श्रद्धा-पवित्रता सहित अपने जीवन में प्रयोग कर देख सकते हैं ।"

* श्री पञ्चमसिंह जी, मानगर माता की छिपी सहायता की चर्चा करते हैं—"दुर्भाग्य से मैं दो बार नौकरी से वंचित होकर बिना जीविका के परिवार सहित भूखों मरने लगा । एक गायत्री उपासक के कहने पर 'अखण्ड ज्योति' पढ़कर गायत्री उपासना में लग गया । 'गायत्री महाविज्ञान' पढ़कर विधिपूर्वक अनुष्ठान किया । फलतः बिना किसी प्रयत्न के मेरी पत्नी को नौकरी मिल गई और उसका वेतन थोड़े ही दिनों में दुगुना बढ़ गया । फिर मुझे भी रोजगार करने की सुविधा मिल गयी और आज मैं माता को धन्यवाद देता हुआ दिन-दिन उन्नति की ओर जा रहा हूँ ।

* श्री चतुर्भुज संज्ञा, दिगौड़ा (टीकमगढ़) से लिखते हैं—"मैंने अपने जीवन को तम्बाकू, गाँजा, भाँग आदि नशीली वस्तुओं में बहुत बर्बाद किया था, पर जब से गायत्री माता का आश्रय लिया है, तब से सब बुरी आदतें स्वयंमेव छूट गईं । एक दिन मेरे बच्चे को गाय ने सींगों पर उठाकर फेंक दिया । मैंने गायत्री की आराधना की जिससे वह होश में आकर उसी समय स्वस्थ हो गया ।"

[गायत्री उपासकों के इन थोड़े से उदाहरणों से यह समझा जा सकता है कि भौतिक लाभों की दृष्टि से भी गायत्री साधना सफलता का अटूट भंडार है । जिन लोगों ने ये सफलताएँ प्राप्त की हैं, वे कोई साधू या महात्मा नहीं थे, वरन् सांसारिक झंझटों में फँसे हुये और भले-बुरे सब भागों से अपना निर्वाह करने वाले प्राणी थे । अगर उनकी साधना से प्रसन्न होकर गायत्री माता ने उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण कीं तो कोई कारण नहीं है, अन्य व्यक्ति भी ऐसा ही लाभ उठा सकते हैं ।]

●●●

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री-साधना के चमत्कार

'गायत्री-साधना' आत्मिक उन्नति का अपूर्व साधन है । कैसा भी व्यक्ति किसी भी लाभ के विचार से गायत्री का आश्रय ग्रहण करे, सबसे पहले उसे आत्मा में एक नवीन परिवर्तन अवश्य जान पड़ता है । उसे अनुभव होने लगता है कि आत्मा के विकार निकलकर सतोगुणी तत्त्वों की वृद्धि हो रही है । इसके फलस्वरूप अनेक दुर्गुण, बुरे विचार, खराब स्वभाव और ईर्ष्या, द्वेष आदि के भाव घटने लगते हैं और उनके स्थान पर संयम, पवित्रता, उत्साह, श्रमशीलता , ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, उदारता, प्रेम, सन्तोष, सेवाभाव आदि सद्गुणों का विकास होने लगता है । इस परिवर्तन का स्वाभाविक परिणाम यह होता है कि अन्य लोग भी उसके प्रति प्रशंसा, कृतज्ञता और सम्मान के भाव रखने लगते हैं और उसे चारों तरफ से सहानुभूति और सहायता प्राप्त होने लगती है । इसके सिवाय ये सद्गुण स्वयं साधना करने वाले का भी आत्मिक कायाकल्प कर देते हैं और उसमें एक ऐसा आत्म-सन्तोष का भाव उत्पन्न होने लगता है कि दुःख और कष्ट देने वाले विचार स्वयं बदल जाते हैं और उसे ऐसी मानसिक शांति मिल जाती है, जिससे वह विपरीत परिस्थितियों का सामना करने में कहीं अधिक समर्थ हो जाता है, उनके कुप्रभाव से मुक्त रहता है ।

बहुत समय से गायत्री-साधना का प्रचार करते हुए हमें यही अनुभव हुआ है कि जो लोग दृढ़तापूर्वक इस मार्ग पर चलते रहे हैं, उनको अवश्य लाभ पहुँचा है । वे स्वयं भी उन लाभों को गायत्री माता की कृपा ही समझते हैं । उनका कहना है कि साधक को सदैव माता के प्रति कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए । सुख और दुःख तो मनुष्य को प्रारब्ध के अनुसार मिलते हैं, पर जो लोग श्रद्धा और भक्तिपूर्वक गायत्री उपासना में लगे रहते हैं, उनकी कठिनाइयों में कहीं न कहीं से ऐसी सहायता मिल जाती है जिससे उनका बुरा प्रभाव बहुत कुछ घट जाता है और रक्षा का मार्ग निकल आता है । इस प्रकार के लाभ उठाने वालों ने दूसरे लोगों के उपकारार्थ जो स्वानुभव प्रकाशित कराये हैं उन्हीं में से कुछ अगले पृष्ठों में दिये जा रहे हैं । हमारा विश्वास है कि उनके अनुभवों से पाठकों के हृदय में भी गायत्री माता की श्रद्धा का उदय होगा और वे उसकी कृपादृष्टि प्राप्त करके सुख और शान्ति के मार्ग पर अग्रसर हो सकेंगे ।

मुझे प्रेरणा कैसे हुई ?

श्री लाल मिश्र, एम. ए., बी. टी. डुँडलोद लिखते हैं—मुझे सर्वप्रथम १९४९ में अपने गाँव बिसाऊ में स्वामी गोपालदासजी द्वारा गायत्री महिमा सम्बन्धी एक पुस्तक पढ़ने का सौभाग्य मिला । उसे पढ़ने के बाद ही प्रतिदिन एक माला गायत्री जपने का निश्चय कर लिया ।

वहीं के सेठ चेतरामजी खेमका मेरे मित्र थे । उन्होंने गायत्री-उपासना के अपने अनुभव मुझे सुनाये। वह वृत्तान्त श्रवण कर मेरी आस्था, गायत्री-उपासना के प्रति और भी दृढ़ हो गई । वह वृत्तान्त इस प्रकार है—

श्री चेतरामजी प्रतिदिन नियम निष्ठा के साथ ११ माला गायत्री मंत्र का जप किया करते थे । एक बार उनकी पत्नी बीमार पड़ी। चिकित्सा के लिए जितना भी जो कुछ किया जा सकता था, उन्होंने दिल खोलकर अविश्रांत गति में सब कुछ किया, पर क्रमशः बीमारी की दशा बिगड़ती ही गयी । एक दिन उनकी आसन्न मृत्यु हो गयी । उसे खाट से उतारकर नीचे सुला दिया गया । श्री चेतरामजी उपासना कर रहे थे— करते जा रहे थे, सहसा उन्हें सुश्वेत वर्ण दिव्य नारी के दर्शन हुए । उन्होंने रक्षा का संकेत और आश्वासन भाव प्रकट किया और तिरोहित हो गईं । श्री चेतरामजी उठे और सभी के विरोध करने पर प्रेयसी को नीचे से उठाकर पुनः शय्या पर सुला दिया ।

दूसरे दिन सभी ने आश्चर्य के साथ देखा कि वह सम्पूर्ण सचेतन अवस्था में मन्दस्मित ध्वनि में बातें कर रही हैं । रात भर में ही वह उतने दिन की निर्बलता और शिथिलता कैसे नव-चेतना की उर्मियाँ ले रही थीं । माता की करुणा की प्रसाद स्वरूपा उनकी प्राणमयी प्रेयसी, आज भी अपने जीवन द्वारा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सहस्रों अश्रद्धालुओं के विष भरे हृदय में, विश्वास-सुधा का परिपुनीत अभिसिञ्चन कर रही है।

उनकी उपासना और प्रेम, वर्षा की सरिता की भाँति बढ़ती हुई जा रही है—अनुष्ठान पर अनुष्ठान और पुरश्चरण पर पुरश्चरण किये जा रहे हैं। जरा भी शांति नहीं वरन् उत्साह की शुभ तरंगें ऊपर ही उठती जा रही हैं।

एक बार उनके पिताजी के ऊपर कानूनी जाल बिछाया गया। देखते-देखते लाखों के कारोबार चौपट हो गये। व्यापार के सारे साधन-स्थानादि भी छिन गये। कल का राजा, आज रङ्क बनकर दुनिया में प्रारब्ध भोग के नमूना बनकर जीने लगेगा।

चेतरामजी की उपासना बिना धैर्य खोये, गङ्गा की धारा के समान निरन्तर आगे ही आगे बहती जा रही थी। फिर उनके पिछले दिन कैसे लौट आये, यह किसी को पता नहीं चला और आज भी वे पूर्ववत् बाह्य ऐश्वर्य से सम्पन्न होकर माता की अञ्चल-छाया में विश्राम कर रहे हैं—उस विश्राम में माता की सेवा में कर्म और प्रेम की सुमधुरता लहरा रही है।

उस समय जयपुर में कोई कॉलेज नहीं था। सबको बनारस जाना पड़ता था, पर स्टेट के उम्मीदवारों के आगे किसी अन्य की बारी कभी आती ही नहीं थी। सन् १९३९ ई. में मैंने भी उम्मीदवारी का पर्चा साहस के साथ दाखिल कर दिया था और चेतरामजी के निर्देशानुसार सवा लक्ष गायत्री-अनुष्ठान का व्रत ले लिया था।

अनुष्ठान पूरा होने के प्रथम ही मेरा ट्रेनिङ्ग का नम्बर आ गया और मैं १९४० में उत्तीर्ण हो गया।

सन् १९४८ में डूँडलोद आया तो यहाँ भी डॉक्टर रावल जी एवं मास्टर कन्हैयालालजी की गायत्री-निष्ठा देखने का सौभाग्य मिला।

गायत्री-उपासना के बल से डॉक्टर साहब अपने आस-पास के सभी चिकित्सकों में अग्रगण्य और सफलता के लिए सुप्रसिद्ध हो रहे हैं। उनकी मुख-मुद्रा स्वभावतया ही स्थिर, गम्भीर, सौम्य एवं मृदुल है। सभी सन्तति भी सुन्दर एवं सदाचारी हैं। पूरी और सुखी गृहस्थी है। डॉक्टर साहब इन सारी स्थितियों को गायत्री की ही दया और सद्प्रेरणा का परिणाम मानते हैं।

डॉक्टर साहब के भाई रसिकलालजी रावल, अभी तक कई गायत्री-पुरश्चरण कर चुके हैं। एक बार ये कई महीने तक बीमार पड़े रहे, पर फिर भी अपनी दैनिक नियमित उपासना का परित्याग नहीं किया। उन्होंने बताया कि इस बीमारी में मुझे अपने बचने की आशा नहीं थी। गायत्री माता की कृपा से ही यह जीवन उपभोग कर रहा हूँ। उनकी सदा सुप्रसन्न-हास्यमयी-मुद्रा, बरबस हृदय को आकर्षित कर लेती है।

पं. कन्हैयालालजी का स्वभाव, प्रथम बहुत क्रोधी, उग्र, प्रतिहिंसामय एवं तिकड़मबाजी से भरा था। गायत्री-उपासना के प्रभाव से आज वे शांत, उदार एवं विश्व-प्रेम की भावना से भरते जा रहे हैं।

इन सारी सत् संगतियों के प्रभाव से मैं भी एक गायत्री-उपासक बन गया हूँ। शायद ही कोई ऐसा वर्ष हो, जिसमें मैंने सवा लक्ष जप न किया हो और इस उपासना के प्रभाव से अज्ञाततः ही मेरा मन ऐसा निर्मित कर दिया गया कि, "यथा लाभ सन्तोष"। जिस स्वभाव और व्यवहार बनाने के लिए अनेकों को चिर दिनों तक साधना करनी पड़ती है, मेरा स्वभाव ही बन गया है। श्रद्धा और भक्ति को नित्यप्रति बढ़ते हुए अनुभव करता हूँ। कष्ट सहन करने में रस मिलता है। अहङ्कार क्रमशः घटता जा रहा है। अपने द्वारा होने वाले सभी सत्कर्मों को माता की कृपा-शक्ति से अनुप्रेरित मानता हूँ।

भयानक सङ्कटों से प्राण-रक्षा

श्री प्रसादीलाल शर्मा, "दिनेश" करहल, लिखते हैं कि मैं एक नितांत गरीब ब्राह्मण का बालक हूँ। मेरे बचपन के दिन बड़े ही कष्ट से, कभी-कभी कई दिन तक भूखे और कभी अधपेट खाकर बीते हैं। पहले भी मैं अनियमित रूप से गायत्री जप किया करता था, किन्तु जब से किसी पवित्र प्रेरणा द्वारा मैं संयम-नियम सहित गायत्री-उपासना करने लगा, तब से हमारे सङ्कट क्रमशः हटते ही गये और आज १५०₹. डेढ़ सौ रुपये मासिक हमारी आय है। पत्नी, सन्तान, भाई आदि सारा परिवार सुखी और स्वस्थ है। सभी शांति और प्रेम से जीवन अतिवाहित कर रहे हैं।

मैंने "गायत्री महाविज्ञान" में पढ़ा था:-

"भगवान् की अनेक शक्तियों में 'गायत्री' भी एक दिव्य शक्ति है, जिसकी उपासना करने से अनेक कठिन से कठिन सङ्कट भी टल जाते हैं और अभीष्ट मनोरथों की प्राप्ति होती है।" आज अपने अनुभव के बल से मैं उपर्युक्त वाक्यों की सत्यता की घोषणा करता हूँ कि वे अविकल-सम्पूर्ण सत्य हैं। मैं अभी तक अनेक गायत्री अनुष्ठान कर चुका हूँ। अन्तर और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

१०.३ गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार

बाहर के अनेक अनुभव जीवन में रत्न की भाँति संरक्षित हैं। उनमें से दो-एक अनुभव, उपासकों के विश्वास को स्थिर करने की भावना से लिख रहा हूँ।

विक्रम संवत् २०११ के चैत्र नवरात्रि में, मैं सवा लक्ष का अनुष्ठान करके उठा ही था कि स्वप्न में माता ने मुझे आदेश दिया कि पुनः सवा लक्ष का अनुष्ठान गङ्गा के पुनीत तटों पर जाकर करो। माता का आदेश पालन करने के लिए मैं चुपचाप श्रावण मास में, घर में किसी से बिना कुछ कहे ही हरिद्वार चला आया। यहाँ ब्रह्मकुण्ड पर कुछ समय ठहर कर अनुष्ठान प्रारम्भ कर दिया। कुछ दिन जप करने के उपरान्त मेरी इच्छा गङ्गा-पुलिन पर ही जप करते हुए आगे बढ़ने की हुई और बद्रीनारायण एवं केदारनाथ के दर्शन का लक्ष्य बनाकर चल पड़ा। अपना नियमित जप प्रतिदिन गङ्गा किनारे ही पूरा करता था। वर्षा ऋतु थी, अतः वारिश के कारण कभी-कभी गिरिखण्ड टूट कर लुढ़कते-लुढ़कते नीचे आ गिरते थे, जिनके नीचे पिचकर अनेकों तीर्थ यात्री स्वर्ग-प्रस्थान कर जाते थे। मैंने ऐसे होते हुए कई बार अपनी आँखों देखा, फिर भी माता के भरोसे साहस पूर्वक आगे बढ़ता ही रहा। देवप्रयाग में मुझे बलदेवप्रसाद तथा उनकी भगिनी का साथ मिल गया, जिससे मेरे संयम-नियम एवं जप में बड़ी सहायता मिली। केदारनाथ जाते हुए कुण्डचट्टी का एक पर्वत-खण्ड टूटकर गिर पड़ा। दोनों ओर के यात्री खड़े होकर वह भयंकर दृश्य देख रहे थे। खण्ड गिरने के बाद लघु प्रस्तर खण्ड लुढ़क-लुढ़क कर बराबर गिरते जा रहे थे। रास्ता बन्द हो गया । सभी यात्री खड़े थे। मैं माता के भरोसे गायत्री जप करते हुए पत्थरों के नीचे-टूटे हुए पहाड़ के बगल से चल दिया। सभी यात्री मुझे मना कर रहे। पर मुझे तो माता पर विश्वास था-सुरक्षित उस पार पहुँच गया। वहाँ सामान रखकर पुनः बलदेवजी तथा उनकी बहिन को लेने गया और उन्हें साथ लेकर आगे बढ़ा। वे दोनों भयभीत से मेरे पीछे आ रहे थे। सहसा ही एक बहुत बड़ा पत्थर ठीक मेरे शिर पर गिरा। दोनों ओर के यात्री यह देखकर एक बार ही हा-हाकार कर उठे। मैं गायत्री-जप करता हुआ निश्चिन्तता से ही चलता रहा। ठीक जिस समय प्रस्तर खण्ड मेरे शिर पर गिर मुझे चूर-चूर कर देते, उस क्षण मैं एक थोड़े से झुके प्रस्तर खण्ड के नीचे आ गया। बड़ा पत्थर का टुकड़ा, उसी से आ टकराया और उछलकर गङ्गा की धारा में जा पड़ा। सारे यात्री हर्षित-विस्मित स्वर में नारायण नारायण पुकार रहे थे।

इस भाँति सुरक्षा सहित तीनों व्यक्ति केदारनाथ के दर्शन कर वापस लौटे। गणेश चट्टी पर ठहरा हुआ था। प्रातःकाल का समय था। काफी वर्षा हुई। सर्वत्र पानी ही पानी नजर आता था। वर्षा बंद होते ही हम तीनों उसी पानी में छप-छप करते हुए चले। कुछ दूर आने पर एक नाला ऊपर से गिरता हुआ मिला। हम लोग उसकी ओर बिना ध्यान दिये ही पूर्ववत् गति से आगे बढ़ते गये। सुभद्रा (बलदेवजी की बहन) इस समय आगे थी। नाले की धारा में पैर रखते ही वह गहरी जल धारा में गिर गयी एवं बहती हुई गङ्गा की तीव्र प्रचण्ड धारा की ओर जाने लगी। मैं यह सोच ही रहा था कि उसका जीवन समाप्त हो चुका कि मैं भी एक प्रस्तर-खण्ड से टकराकर उसी नाले में जा गिरा। मेरा एक हाथ उसकी साड़ी पर जा पड़ा, जिसे मैंने जोर से पकड़ लिया। जल में अचानक धंसते ही जिस भाँति सुभद्रा माँ! माँ! कहकर चिल्लाई थी, मैं भी उसी भाँति सहसा माँ! माँ! कहकर पुकार उठा। सहसा ही लगा कि किसी ने हम दोनों को उठाकर, नाले के उस पार, गहरे जल से, छिछले जल में डाल दिया। सुभद्रा का भाई बलदेवजी तथा अन्य यात्री प्रसन्न और स्तम्भित थे। हम दोनों उठे और अगली चट्टी पर आकर ठहरे। उनके भाई एवं अन्य यात्री उस दिन नाले के इस पार आने का साहस नहीं कर सके। फिर दूसरे दिन हम सभी एक साथ मिले।

दूसरी चैत्र नवरात्रि में सरकारी कामों में लगे होने के कारण अनुष्ठान नहीं कर पाया-सोचा, पूर्णाहुति के दिन मैं भी गायत्री तपोभूमि जाकर पूर्णाहुति कर आऊँगा। नवरात्रि का छठा दिवस था। उस दिन हम सभी कार्य के सिलसिले में एक धर्मशाला में ठहरे हुए थे। ब्रह्मी मुहुर्त्त की पवित्रता फैल रही थी। उसी समय अचानक ही मेरी नींद टूट गई। आँखें खोलकर देखा तो सामने एक परम स्वच्छ रूपवती कन्या खड़ी है। मेरे नेत्र खोलते ही वह कन्या अति माधुर्य्य भरी वाणी से कहने लगी—"पहले पुष्कर जाकर मेरे दर्शन कर आओ, तब गायत्री तपोभूमि जाना।" मैं कुछ पूछना ही चाहता था कि कन्या लुप्त हो गई। यह जागृत सपने की याद आज भी मेरे अन्तर में हलचल मचा जाती है। मैंने उसी दिन अपने घर में पुष्कर जाने के लिये तार दिया। मेरी पत्नी तथा तीन मेरे अन्य साथी अपनी-अपनी पत्नी और बच्चों सहित वहीं मोटर पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आ गये। सभी के सङ्ग प्रसन्नता से पुष्कर की यात्रा की।

रास्ते में मेरे एक अबोध नाती के चेचक हो गयी और एक ही दो दिन में उसने भयंकर रूप धारण कर लिया । यहाँ तक कि हम लोग उसके जीवन से निराश हो गये । माता की कृपा से एक धर्मशाला में हमें ठहरने का स्थान मिल गया । वहाँ घर से भी अधिक सुविधा का स्थान था । हम उस बच्चे को उसी दशा में छोड़कर माता के भरोसे वहाँ से पुष्कर क्षेत्र के लिए चल दिये । परिवार के कुछ लोगों को बच्चे के साथ छोड़ आये । नवरात्रि के दिन ही वहाँ जाकर स्नान, दर्शन, जप, हवन किया । रात में स्वप्न में मुझे कहा गया—बच्चा स्वस्थ हो गया, तुम निश्चिन्त रहो । पुष्कर राज से लौटने पर मैंने धर्मशाला में आकर आश्चर्य से देखा—कल का मरणासन्न शिशु आज किलकारियाँ भर रहा है ।

गायत्री के प्रत्यक्ष अनुभव

श्री प्रेमशंकर जैतली लिखते हैं कि बात आज से लगभग पाँच वर्ष पूर्व की है । जुलाई का मास था । हमारे कुटुम्ब के डॉक्टर टी. सिन्हा महोदय और मेरे भाई साहब प्रयाग से आये, आगरा मेरे यहाँ रुके । वह मथुरा जा रहे थे । बातों-बातों में मथुरा जाने का उनका मन्तव्य पता चला कि कोई महात्मा हैं, उनसे मिलने जा रहे हैं । उन्होंने मुझसे कहा प्रेमजी, आप भी चलें । "मैं चलूँ" मैंने सोचा, हूँ; यह लोग भी किस मत के आदमी हैं—अच्छा चलो मथुरा की सैर ही कर लेंगे । कुछ मेरी धर्म परायण माताजी ने भी अनुरोध किया । मन से या बे-मन से चल ही दिये ।

हम लोग मथुरा पहुँचे और सायं लगभग छः बजे "अखण्ड-ज्योति" के कार्यालय में पहुँचे । आचार्यजी से भेंट हुई । डॉक्टर साहब ने आचार्यजी की प्रशंसा की । खैर, मेरे बोलने की बारी आई । कुतर्कवादी बोलता भी क्या, मैंने कहा "आप तो गायत्री महामन्त्र की बड़ी प्रशंसा कर रहे हैं। मुझे तो पर उल्टा अनुभव है" आदि-आदि अनेकों प्रकार से इस महामन्त्र की बुराई ही करता गया ।

उत्तर में आचार्यजी चुप थे । फिर कुछ देर रुककर बोले, इस समय सन्ध्या हो गई है । इस समय इस विषय पर कुछ न कहूँगा । आप कल प्रातः ९ बजे आने का कष्ट करें ।

हम लोग लौट आये ।

अगले दिन स्नान आदि से निपट ९ बजे ठीक हम "अखण्ड ज्योति" कार्यालय पर आये । आचार्यजी हमें तैयार ही मिले । वहाँ से हमें वह अपने पूजा के कमरे में ले गये । एक छोटा-सा कमरा एक ओर गायत्रीजी का बड़ा चित्र रखा था, अखण्ड दीपक उसके सामने जल रहा था । दूसरी ओर एक गद्दा, उस पर साफ चादर थी । सब मिलकर एक सौम्य और सात्विक वातावरण उत्पन्न कर रहे थे ।

सबसे पहले प्राचार्यजी ने मुझसे कहना प्रारम्भ किया, बोले—"आपका यह कहना है कि गायत्री जप से आपको नुकसान हुआ सर्वथा गलत है ।" और.....

वह कुछ आगे कहते पर मैंने विषय बदलते कहा कि "गायत्री मन्त्र से क्या भौतिक पदार्थ भी मिल सकते हैं ।"

उत्तर था 'हाँ' !

"क्या पैसा भी मिल सकता है जाप से ?"

"पैसा तो गायत्री माता के लिए एक अत्यन्त सामान्य सी बात है ।" आचार्यजी ने उत्तर दिया ।

"अच्छा जी, तो फिर ठीक है आप कृपा कर ऐसा ही उपाय बतादें जिससे धन की प्राप्ति हो" मैंने कहा ।

आचार्यजी ने एक साधारण-सा विधान बताते हुए कहा—दो माला नित्य आप एक वर्ष तक जपें । दो माला में कितना समय लगेगा ?

मैंने उत्तर दिया, "लगभग आधा घण्टा ।"

"आपको क्या वेतन मिलता है ?"

मैंने अपना वेतन बता दिया ।

आचार्यजी बोले, "अच्छा तो आप एक वर्ष तक आधा घण्टा रोज जप करें । यदि आपको कोई लाभ न हो तो एक वर्ष बाद आधे घण्टे रोज के हिसाब से जो पारिश्रमिक बने, मुझसे ले जाइयेगा ।"

मैं, यों तो समझिये एक पढ़ा-लिखा सभ्य आदमी ठहरा। यह अन्तिम वाक्य कुछ चुभ गये । साधना की सरलता और आडम्बरहीनता भी घर कर गई । निश्चय कर लिया चलो करेंगे ही । घर आकर आचार्यजी की विधि से और उन्हीं द्वारा मुफ्त दी हुई चन्दन की माला पर जाप करना प्रारम्भ कर दिया । दो-एक महीने बाद से ही स्पष्ट प्रभाव दिख पड़ने लगा । मैं उसी क्रम से जाप भी आगे बढ़ाने लगा । मालाएँ दो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

से चार और चार से छः आदि क्रम से आगे बढ़ने लगीं । वर्षों की बुराइयाँ निकलने लगीं । असत्य में पर्याप्त कमी होने लगी और धीरे-धीरे आज मेरे जीवन में एक नवीनता है । कठिन से कठिन परिस्थिति भी सामने झुकती ही जाती है । आर्थिक परेशानी का तो प्रायः नाम भी नहीं है । मैं कह सकता हूँ कि मैं अपने ढंग से सुखी हूँ ।

यहाँ तक तो आपने मेरी कहानी सुनने का कष्ट किया । अब आइये मैं आपका कुछ ऐसे लोगों से परिचय करा दूँ जिन्होंने महामन्त्र की साधना बहुत कुछ मेरी देखा-देखी या मेरे अनुरोध से प्रारम्भ की । ऐसे व्यक्ति भी बहुधा मेरी ही भाँति पहिले भौतिक कष्टों को दूर करने के लालच से ही इस ओर आगे बढ़े । प्रायः उनकी कामना-पूर्ति हो गई और स्वतः उनकी साधना धीरे-धीरे निष्काम रूपिणी होती जा रही है । प्रारम्भ में आध्यात्मिक यात्रा की ओर अग्रसर होने या बढ़ते रहने का मार्ग सम्बल कामना ही थी । अतः तिथि क्रम का ध्यान न रखते हुए मैं कामना को ही प्रधानता देकर निम्नलिखित उपशीर्षकों में उनसे आपकी भेंट कराऊँगा ।

बिछुड़े हुए की वापसी एवं मिलन

(१) मेरी धर्म-पत्नी जी की एक सहेली श्रीमती रुक्मणी देवी के पति रुष्ट होकर कहीं चले गये । ढाई वर्ष से उनका पता न था । मैं कुछ हस्त-रेखा सम्बन्धी ज्ञान रखता हूँ । अतः जब उनसे भेंट हुई तो उन्होंने उनके लौटने के विषय में पूछा । मैं उन दिनों 'गायत्री के प्रत्यक्ष चमत्कार' पुस्तक पढ़ रहा था । उसी के एक लेख के आधार पर उनसे कहा यदि आप २९ दिन तक ११ माला नित्य अमुक विधि से जाप करेंगी तो आपके पति अवश्य लौट आयेंगे । ऐसी आर्त दशा में उन्होंने माता की आराधना विधिपूर्वक शुरू की और २७वें दिन उनके पति जी उन्हें उनके घर आकर मिले ।

(२) हमारे एक परम मित्र श्री मदनगोपाल जी बैजल के एक निकट सम्बन्धी का पुत्र घर से भाग गया था । उन्हें भी जाप करने को ऊपर वाली विधि से कहा गया । जाप मित्र जी की सुपुत्री ने ही बड़ी श्रद्धा और कष्ट सहते हुए किया । जाप के दो-तीन दिन बाद ही लड़के के गन्तव्य स्थान का पता चल गया और २३-२४वें दिन तलाश कर वापिस लाया जा सका।

आर्थिक कठिनाइयों से छुटकारा

(३) इसमें यों तो सर्वप्रथम मेरा ही नाम आना चाहिए । पर मैं तो अपने विषय में पहिले ही लिख चुका हूँ । मेरे भाई पं. दयाशंकर जैतली, (वानवाली गली, लखनऊ) पर कुछ कारणों से बड़ी आर्थिक अड़चनें आ गई थीं । कुम्भ के मेले में मेरी उनसे इस विषय पर बातचीत हुई । मैंने उन्हें चन्दन की माला पर विधिपूर्वक २ माला नित्य जप करने की प्रार्थना की। उन्होंने जप करना शुरू किया । आर्थिक परेशानियाँ स्वतः घटने लगीं और एक साथ ही उन्हें एक जगह से कुछ धन की प्राप्ति हुई ।

(४) श्री कैलाशनाथ जी, माईथान, आगरा का भी काम-धन्धा सब बन्द था । बड़ी कठिन परिस्थिति में वे विचारे आये । मेरे पास वह एक नौकरी के लिए सिफारिश के लिए आये थे । मैंने उनसे कहा—भाई मेरी बात मानकर जाप शुरू करो, तुम्हारा काम चलेगा । उन्होंने एक माला नित्य जाप करना प्रारम्भ कर दिया । वह नौकरी तो नहीं, पर अनायास ही तीन दिन के अन्दर ही उन्हें एक दूसरी नौकरी मिल गई और कार्य-व्यवस्था भी ठीक हो गई ।

(५) एक दूसरे मित्र श्री हरीमोहन जी अग्रवाल ने शिक्षा कुछ क्रिश्चियन संस्थाओं में पाई है । वह अपनी देशी पूजा प्रणाली को व्यर्थ का ढकोसला कहते थे । मेरे पास हस्त-रेखा दिखाने आये । उनका निकट भविष्य अन्धकारमय देखते हुए उन्हें मैंने सतर्क रहने को कहा । पर उन्हें तो विश्वास न था । दो एक महीने बाद ही जब सामने भीषण परिस्थितियाँ आ गईं तो बोले, अच्छा भाई कोई उपाय है । उन्हें भी गायत्री मन्त्र जपने को कहा । परिस्थिति की दारुणता स्वतः कम होती चली गई । आर्थिक कठिनाइयाँ भी एक अलौकिक ढंग से कम होते देख उन्हें जाप की महत्ता एवं देशी पूजा-विधि एवं देवताओं में भी विश्वास हो गया ।

बहिन का सुखपूर्ण विवाह

(६) पं. दयाशंकर जी शर्मा, माईथान, आगरा मेरे एक सम्बन्धी हैं । उनकी आर्थिक परिस्थिति अत्यन्त ही सामान्य-सी है । इस पर भी उनके एक छोटी बहिन युवा रही जिसकी शादी करने की उन्हें अत्यन्त चिन्ता थी । उनके पिताजी मस्तिष्क से रोगग्रस्त हैं । विवाह के लिए लड़का तो कुछ लोगों की सहायता से मिल गया पर उस ओर के खर्चे से विचारों की विशेष परेशानी थी । सूखकर काँटा से हो गये थे । उनसे भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री माता का पल्ला पकड़ने को कहा और उनका सब कार्य ऐसे ढंग, नियम, व्यवस्था और सजधज के साथ हुआ कि सामान्य हैसियत वाले न कर पाते । माता वास्तव में माता ही है ।

कठिन रोगों से छुटकारा

(७) मेरी धर्म पत्नी की एक सहेली को प्रसव में बड़ा भयंकर कष्ट होता था । जब से उन्होंने जाप प्रारम्भ कर दिया है, तब से ऐसे कष्ट से उन्हें मुक्ति मिल गई है । ऐसी और भी बहिनें हैं जिन्हें गायत्री अभिमन्त्रित जल पिलाने से प्रसव पीड़ा में भारी कमी हुई है ।

(८) एक अन्य सम्बन्धी श्री मुन्नूलालजी जैतली, प्रयाग निवासी, की लड़की श्रीमती प्रेमोजी के एक बच्चे की हालत अत्यन्त खराब हो गई थी । गला फूल गया था । डाक्टर अपना प्रयत्न कर रहे थे, पर सब व्यर्थ । निदान प्रयागवासी पण्डित समुदाय की प्रचलित विचारधारा के प्रतिकूल बच्चे की माता और नाना ने गायत्री माता को पुकारा । रात्रि हो चुकी थी, पर जाप और गायत्री चालीसा का पाठ चलता रहा। सबेरा होते-होते तबियत ठहर गई और साधारण-सी से बिलकुल ठीक हो गया ।

भूत व्याधा से मुक्ति

(९) मेरी एक विधवा भाभी हैं । प्रयाग में दूसरे भाई पं. ताराशंकर जी जैतली के यहाँ आजकल रहती हैं । उनके ऊपर पिछले कुछ वर्षों पूर्व एक प्रेत आत्मा आने लगी । पहले तो हिस्टीरिया समझ उसकी ही विविध चिकित्सा कराई गई, पर कोई लाभ न हुआ । बाद में उसकी बात पता चली और अनेक भूत-विद्या विशारदों से झड़वाया, पर लाभ न हुआ । निदान उन्हें ही गायत्री जप प्रारम्भ करने को कहा गया । जाप के प्रभाव से धीरे-धीरे उन्हें इस व्याधा से पूर्ण छुटकारा मिल गया ।

विविध प्रयोजनों की सिद्धि

(१०) एक अन्य मित्र कई बार उच्च पी. सी. एस. एवं आई. ए. एस. की परीक्षाओं में बैठ चुके थे । एक बार तो उत्तीर्ण हो गये पर इन्टरव्यू में रह गये । निदान गायत्री माता का आश्रय लेने पर आज वह एक उच्च पदाधिकारी हैं ।

(११) पूज्य भाई ताराशंकर जी पर भी इन दिनों कुछ काली घटाएँ आई हैं, पर गायत्री जाप के प्रभाव से एवं आचार्य जी की कृपा से उनका काम आगे बढ़ रहा है और आशा है पूर्ण विजय होगी ।

(१२) श्री काशीनाथ जी भी नित्य जाप करते हैं । एक बार रोकड़ खाते में भूल से कागज पर गलत तिथि डालने के कारण उन पर कठिन दोष लग रहा था । माता से प्रार्थना करने पर वह कागज पुनः हाथ आ गया और इस प्रकार कलंक लगने से बचा ।

निष्काम साधना एक उच्च कक्षा है । जो व्यक्ति परमार्जित दृष्टिकोण के एवं विश्वासी हैं, जिन्हें माता के सर्वशक्तिमान होने पर विश्वास ही नहीं वरन् जो जगत् की क्षणभंगुरता को भी उसके सही रूप में जानते हैं, जो ईश्वर के नाम पर सांसारिक कष्टों को साहस से ही नहीं अपितु निर्लिप्त भाव से सह लेते हैं, वह श्रद्धा के पात्र निष्काम साधना से ही दैवी आत्मानुभूति अनुभव कर वास्तविक सुख के अधिकारी हैं । ऐसे लोगों को तो सकाम साधना एक परिहास मात्र लग सकती है, पर मेरी सबसे करबद्ध प्रार्थना है कि जिस कौतूहल से वह अपने छोटे से शिशु को 'अ'-'ब' सीखते देख उल्लसित होते हैं और उसकी छोटी-सी जानकारी को भी पीठ थपथपा कर बड़ा बताते हुए उच्चकोटि की कक्षाओं एम. ए. आदि तक पहुँचा देते हैं, वैसे ही इन छोटी कक्षा वाले सकाम प्रवृत्ति के प्रारम्भिक विद्यार्थियों को आध्यात्म विद्या, गायत्री महामन्त्र की ओर रुचि उत्पन्न करने में सहायक हो ।

गायत्री द्वारा आश्चर्यकारी लाभ

श्री विश्वनाथ पाण्डेय, दानापुर, लिखते हैं कि एक बार मैं उद्यान में बैठकर गायत्री जप कर रहा था । सूर्यदेव अपनी किरणें समेट कर विदाई का उपक्रम कर रहे थे । अचानक करुण कराहों से भरी हृदय-बोधक वाणी मुझे सुनाई पड़ी । उसी समय मेरा जप भी समाप्त हो रहा था । मैं दौड़ गया और जाकर देखा एक घायल लाश के समान निस्पन्द पड़ा था । उसमें उठ सकने की जरा भी सामर्थ्य नहीं रह गई थी । मैंने गायत्री-मन्त्र से जल को अभिमन्त्रित करके आँखों में छींटे मारे तथा मन्त्र पढ़ते हुए उसके शरीर पर हाथ फेरने लगा । सहसा ही वे पूर्ण स्वस्थ की भाँति अपने आप उठकर बैठ गये और मुझे आग्रह और सम्मान के साथ अपने घर ले गये । वहाँ बहुत-सी वार्ताएँ हुईं। उसने पूछा—मैंने तो समझ लिया था कि मैं अब मर ही चुका, फिर किस उपाय से आपने मुझे बचा लिया ? मैंने उत्तर दिया—मैं तो सिवाय गायत्री मन्त्र के और कुछ नहीं जानता । फिर उसने पूछा आपने गायत्री उपासना कैसे और क्यों प्रारम्भ की ? उसकी सच्ची जिज्ञासा देखकर मैंने अपने जीवन के पृष्ठ खोलकर उसके सामने रख दिये—

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

मैंने संसार के आकर्षणों के कारण अनेकों बुरे अभ्यासों को अपना स्वभाव बना लिया था । मेरे समझने और समझाने पर भी ये कुटेवें मेरा पीछा नहीं छोड़ती थीं, मैं परेशान था ।

हमारे ज्येष्ठ भ्राता श्री भोलानाथ जी गायत्री उपासक हैं, उन्होंने गायत्री उपासना के बल से, जिन्नों को हमारे घरों से सदा के लिए हटा दिया । ये जिन्न (प्रेत) सदा हमारे घरों में नाना प्रकार की भली-बुरी वस्तुएँ वर्षाया करते थे । इनके गायत्री अनुष्ठान करते ही वे सारे उपद्रव सदा के लिए बन्द हो गये । गायत्री मन्त्र का ऐसा प्रत्यक्ष प्रभाव देखकर मेरा भी मन इस ओर खिंचा और मैंने अपनी कुटेवों को दूर करने की भावना से भ्राताजी की देख-रेख में २४००० के दो अनुष्ठान किए । मैं विस्मय से भर उठा कि जिन कुभावनाओं को हटाने में मैं वर्षों से परेशान था, मेरे सारे पुरुषार्थ जिन्हें दूर करने में सदा असफलता की निराशा भरे घूँट पीते रहे, उन्हें इन दो ही लघु अनुष्ठानों ने कैसे मुझसे सदा के लिए निकालकर बाहर कर दिया ? इस अनुभव के आधार पर तो लगता है कि मैं दावापूर्वक कह दूँ कि इतनी शीघ्रता से अन्तर को निर्मल बनाने वाला, संसार भर में कोई मन्त्र नहीं है । कोई भी श्रद्धा निष्ठापूर्वक इस मन्त्र को अजमाइश कर ले ।

हमारे पड़ोस की एक स्त्री को सदा ही प्रेत सताया करता था । एक दिन हमारे भ्राताजी को उस पर दया आ गई । उन्होंने एक दिन प्रेत लगने की हालत में गायत्री अभिमन्त्रित जल के छींटे उसके शरीर में मारे। वह मूर्च्छित हो गई । कुछ देर उपरान्त उठी । भाईजी ने गायत्री अभिमन्त्रित जल उसे पिला दिया, तब से वह सदा के लिए प्रेतों से मुक्त हो गयी ।

एक बार हमारे आरा निवासी सम्बन्धी रामगोपालजी के छोटे भाई के विवाह की बरात जाने के लिए तैयार हो रही थी । उसी समय उनके पाँच वर्ष के पुत्र श्री अमरकुमार की दशा अचानक ही इतनी खराब हो गई कि सभी उसके जीवन से निराश हो गए। रामगोपालजी भी गायत्री उपासना के प्रेमी थे और हमारे भ्राताजी भी संयोग से वहीं उपस्थित थे । यह दशा देख ये दोनों गायत्री माता की आराधना में लग गए । थोड़ी ही देर में जप किया था, कि बालक पूर्ण स्वस्थ होकर उठ खड़ा हुआ और उल्लास से बारात वालों ने अपनी मंगल यात्रा आरम्भ की ।

आगरा के श्री रामकरणजी निमन्त्रण पाकर किसी के यहाँ भोजन करने गये । भोजन करने के उपरान्त घर आते ही उनका मस्तिष्क विकृत हो गया । वे पागल होकर यत्र-तत्र फिरने लगे । एक दिन उसने स्वयं अपनी जाँघों को ईंटों से मार-मारकर हाथी चर्म सदृश बना लिया । उनका मनुष्य जीवन निरर्थक हो गया । एक दिन कुछ लोगों के परामर्श से उन्हें पकड़कर रामगोपालजी, हमारे सम्बन्धी (गायत्री उपासक) के पास ले आए । उन्होंने उसकी कल्याण भावना से चावल को गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित कर उनके शरीर पर छींटे मारे, जिससे वह मूर्च्छित के समान गिर पड़ा । कुछ देर बाद फिर वे उठे और पीने के लिए जल माँगा । उन्हें फिर गायत्री अभिमन्त्रित जल पिलाया गया । इसके उपरान्त वे पूर्णतः स्वस्थ हो गये ।

माता ने प्राण-रक्षा की

श्री कृष्णलाल 'आनन्द' एम. ए. दिल्ली लिखते हैं कि पाकिस्तान बनने के दिनों हिन्दू-मुस्लिम दंगों की क्रिया का नंगा नृत्य हो रहा था । ११ अगस्त १९४७ ईसवी को मैं करांची में था और मेरा आतंकित परिवार लाहौर छावनी में अस्त-व्यस्त था । पाकिस्तान बनने की घोषणा हो चुकी थी। सीमा पर गुण्डों की दुष्टता, क्रूरता तथा निर्दयता की वीभत्स और गर्हित क्रियाओं का कोई पारावार न था ।

गायत्री माता को हृदय और मन में धारण कर करांची से चल पड़ा । भीतर काँप रहा था । लाहौर छावनी स्टेशन आया । वहाँ गाड़ी तीन घण्टे तक रुकी रही । पूछने पर ज्ञात हुआ कि आगे लाहौर स्टेशन पर पहुँचने के पूर्व ही गुण्डे, हिन्दुओं को चुन-चुनकर गाड़ी से निकालकर मनमानी अनाचार और अत्याचार करते हैं । छुरे और गोलियों से शरीर को छलनी बना देते हैं । इन समाचारों को जानकर मेरे प्राण भयाकुल हो उठे, पर क्या परिवार को उस प्रलयंकर आतंकों के बीच ही छोड़ दूँ ? फिर माता को तीव्रता से धारण किया और अपनी सारी शक्ति और वेग से गायत्री जपते हुए चल पड़ा । मुझे यह भी खबर मिल चुकी थी, कि जिस छावनी में मेरे परिवार ने आश्रय लिया था, उसे लीगी-गुण्डों ने जला दिया । अन्तर में वेदना और दर्द से त्राहि-त्राहि मच रही थी और मैं जा रहा था । कुछ दूर ही गाड़ी आयी थी कि ईंट-पत्थरों की वर्षा से उसका स्वागत करना प्रारम्भ हो गया । ज्यों-ज्यों गाड़ी आगे बढ़ती, हमारे सामने मृत्यु और नृशंस हत्या की भयंकरता सम्मुख आती अधिक स्पष्ट दिखती जाती थी। झुण्ड के झुण्ड खड़ी भीड़ पैशाचिक नारे लगा रही थी, पर माता की कृपा से सिंगनल की

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अवहेलना करती हुई गाड़ी ने स्टेशन पर जाकर ही विश्राम लिया।

स्टेशन पर सभी की आँखें भय-कातर हो चारों ओर निहार रही थीं । हम लोग उतरे । सभी डर से मृतक-शांति धारण किए हुए थे । विश्राम-गृह पठानों से भरा था । मैं अपना सामान चौकीदार के हवाले करके स्टेशन से बाहर, शरणार्थी-कैम्प पहुँचा । वहाँ हिन्दू सेवा समिति वाले यथाशक्ति शरणार्थियों को सुरक्षित स्थान में पहुँचाने का प्रयत्न कर रहे थे, पर राक्षसी शक्ति की उद्दण्डता इतनी बढ़ रही थी कि वे लोग भी सुरक्षा की निश्चिन्तता देने में असमर्थ थे ।

ज्यों-ज्यों प्रातः हुआ। शौच-स्नान से निवटकर माता की उपासना की। अर्चना में पुष्प के बदले आँखों ने मोती-बूँदों की वर्षा की। इसके उपरांत "मीयामीर छावनी" जहाँ हमारा परिवार विवश और निसहाय पड़ा था, जाने की सोचने लगा। स्टेशन से बाहर गया। वहाँ सहसा ही एक मुसलमान ताँगे वाले ने आकर कहा—मैं तुम्हें उस छावनी में पहुँचा सकता हूँ। उस समय वहाँ तक पहुँचाने का ताँगे का भाड़ा २०) (बीस रुपये) साधारण-सी बात थी। मैंने पूछ लिया—कितने रुपये लोगे? उसने बड़े प्रेम से कहा—ढाई रुपये। मैंने माता का स्मरण किया और सामान लेकर ताँगे पर चढ़ गया। कुछ ही दूर आगे देखा गुण्डों का एक दल छुरा, तलवार और लाठी लिए खड़ा है। उसे देखते ही मैंने समझ लिया, माता को इन्हीं दुष्टों के हाथों मुझे मरवाना था। मृत्यु को प्रत्यक्ष सामने देखकर में स्तब्ध हो रहा । ज्यों-ज्यों ताँगा गुण्डों के निकट पहुँचाने जा रहा था, त्यों-त्यों मृत्यु की विभीषिका मेरे सामने स्पष्ट से स्पष्टतर होती जा रही थी, पर आश्चर्य! महाआश्चर्य! निकट पहुँचते ही उन गुण्डों ने बिना कुछ पूछे-जाँचे ही ताँगे का रास्ता छोड़ दिया। कैसा चमत्कार! अब तो सारे भयों को विसार कर मेरा अन्तर-हृदय, माता की करुणा के मद से प्रमत्त और प्रफुल्लत हो रहा था। पथ में उसी भाँति दो-तीन और भी गुण्डों के दल मिले, पर सभी ने ताँगा देखते ही रास्ता खाली कर दिया और मैं सुरक्षा और प्रसन्नता सहित अपने आतङ्कित निःसाहय परिवार से जा मिला।

माता ने मुझे मृत्यु के द्वार से बाहर निकाल लिया है। उनकी करुणा की यह सुरभि दिग्दिन्त में व्याप्त हो उठे, इसलिए मैंने उन्हीं की 'करुणा-गाथा' अपने हाथों लिख डाली है।

सिंह के चंगुल से बचा

श्री गोविन्दप्रसाद शर्मा, शिवपुरी, लिखते हैं कि मैंने एक बार सवा लक्ष तथा दूसरी बार चौबीस हजार के गायत्री-अनुष्ठान किये हैं। इससे मुझे जो लाभ और अनुभव हुए हैं, उन्हें मैं ठीक उसी प्रकार प्रकट करना नहीं चाहता, जिस प्रकार लोभी व्यक्ति अपना धन छिपाता है।

शिवपुरी के अनेक गायत्री-उपासकों के जो लाभ हमारी जानकारी में आये हैं, उन्हें लोक हित के लिए प्रकट कर रहा हूँ।

पं. रामदास शर्मा, (शिवपुरी) अपने नव-दाम्पत्य-जीवन में पारस्परिक कलह और विग्रह से अत्यन्त ही व्यथित और दुःखी रहते थे। किसी सद्प्रेरणा से उन्होंने इसकी शान्ति के लिए गायत्री-उपासना प्रारम्भ कर दी। कुछ ही दिनों में दोनों के हृदय में रुका हुआ प्रणय-स्रोत फूट पड़ा और दो सरिताओं के सङ्गम की भाँति वे एक धारा बन कर बहने लगे। क्रोध और कलह के स्थान में सद्भावना, प्रेम और सेवा की वृत्ति संस्थापित हो गई। वे सीता-राम के दाम्पत्य को आदर्श बनाकर चल रहे हैं।

एक दिन वे सरकारी काम से एक गाँव जा रहे थे। रास्ते में अचानक ही एक झाड़ी से शेर निकल कर, उनके सामने खड़ा हो गया। उन्होंने समझ लिया-अब तो प्राण की रक्षा करना मेरी शक्ति से बाहर की बात है। ऐसा सोच वे उसी स्थान पर खड़े होकर गायत्री-जप, ग्राह-ग्रसित गज की भावना में, करने लगे। शेर भी कुछ देर तक सामने गुर्राता रहा—फिर सहसा ही उसने छलाँगें मारीं और दूर की झाड़ियों की आड़ में चला गया।

ऐसे सङ्कट के अवसर पर सिवाय माता के और कौन अपने पुत्र के प्राण बचा सकती है?

श्री माधोप्रसादजी (शिवपुरी) संग्रहणी रोग से संक्रमित थे। अनेकों चिकित्सकों से अनेकों प्रकार की चिकित्सा कराई, पर रोग-मुक्त नहीं हो सके। चिकित्सकों ने यह कह दिया यह असाध्य संग्रहणी है। यह इसके प्राण के सङ्ग ही जायेगी। यह सुनते ही उनकी स्नेहलुप्तापत्नी—श्री लाड़ोदेवी की आँखें वर्षा की धारा-सी बह चलीं, पर मुख से आह तक भी नहीं निकली। पता नहीं किस प्रेरणा से वह मन ही मन गायत्री माता की शरण गयीं और उपासना में तल्लीन हो गयीं। सभी ने आश्चर्य से देखा कि—मृत्यु-घोषणा के दूसरे ही दिन उनके दस्तों की संख्या में काफी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कमी हो गयी। उस दिन से दशा सुधरती ही चली गई। उसके चिकित्सक आज भी पूछते रहते हैं कि किस औषधि से तुम्हारी असाध्य संग्रहणी आराम हो गयी? यह सुनकर पत्नी की आँखों में, माता के प्रति कृतज्ञता के आँसू उमड़ पड़ते हैं और टप-टप कर पृथ्वी के सूखे रजकणों को गीली करने लगते हैं।

श्री भँवरसिंह की पत्नी गुलाबबाई (शिवपुरी) का अपने परिवार के अन्य लोगों से सदैव झगड़ा होता ही रहता था, इससे वह अपने जीवन से ही घबड़ा उठी। उन्होंने अपने आर्त्तहृदय से गायत्री माता की प्रार्थना और जप करना शुरू किया, कुछ ही दिनों में वातावरण ऐसा बदल गया कि अब सभी को सबसे मिलकर ही रहने में रस आने लगा था। झगड़ा और कलह में अब किसी को रुचि ही नहीं रह गई ।

श्री देवीसिंहजी की पत्नी श्री सावित्रीबाई (शिवपुरी) भूत-बाधा से कई वर्षों से कष्ट भोगती आ रही थी। एक दिन संयोग से इस सम्बन्ध में उसने बातें कीं। मैंने उसे विधिवत् गायत्री-उपासना करने को कहा। उस त्रस्त भयभीत नारी ने उपासना प्रारम्भ कर दी और आज वह भूत-बाधा से सदा के लिए मुक्त हो गयी है।

नास्तिक से आस्तिक बन गया

श्री सदाशिवकृष्ण बोंडखे, खामगाँव, से लिखते हैं कि मैंने अपने इतने दिन के जीवन में, कभी देवी-देवताओं तथा भगवान् का अस्तित्व स्वीकार नहीं किया। मेरे पेट में रोगों ने अपना स्थायी निवास बना लिया था। उन्होंने अपने बाहुबल से अनेकों चिकित्सकों की औषधि-सेना का विनाश कर, अपना घर आबाद कर रखा था। मैं इन संघर्षों से ऊब गया था। चुपचाप रोग देव का कटु-तीव्र दंशन सह लिया करता। मेरी पत्नी ने बड़े ही स्नेह-स्निग्ध स्वर में कहा—भगवदाराधन करो, तभी तुम्हारे रोग दूर होंगे, मैंन उसे हँसी में उड़ा दिया। साथियों ने समझाया, तो उनका उपहास किया ।

एक बार हमारे यहाँ के सेक्रेट्री महोदय श्री गायत्री तपोभूमि मथुरा से होकर आये और यहाँ आकर गायत्री-मन्त्र की बड़ी-बड़ी महिमा हमें बतायी। मैंने उसका तीव्र प्रतिवाद किया। इस पर उन्होंने कहा—कि तुम इसका प्रयोग करके परीक्षण कर सकते हो। इस वाणी में उनकी सारी श्रद्धा-शक्ति केन्द्रित थी। मैंने भी इस बार. जाँच के तौर पर ही सही, उसे स्वीकर किया और नित्य-नियमित जप करने लगा। मैं स्वयं विस्मत था कि कैसे और क्यों स्वयं ही मेरे पेट के रोग एवं आर्थिक तथा अन्य समस्याएँ स्वतः ही सुलझने लगी थीं, जिन्हें मैं अपनी सारी बुद्धि एवं अन्य शक्ति लगाकर भी सुलभ न कर पाया था?

आज मैं सभी का उपहास सहकर भी कट्टर आस्तिक हूँ और दुनिया के सभी नास्तिकों को चुनौती देता हूँ कि आप सभी गायत्री-महामन्त्र का परीक्षण करें।

रोग किले को छोड़कर भाग गया है। आज वहाँ गायत्री माता की कृपा रूपी स्वास्थ्य देव विराजमान हैं।

श्री गणपत विठोवा, खामगाँव, से लिखते हैं कि उनके के परिवार के एक न एक व्यक्ति सदा किसी न किसी रोग से ग्रसित ही रहते थे। कितने रुपये खर्च किये गये, पर इस क्रम में अन्तर नहीं आया। यहाँ तक कि आर्थिक दशा भी अब खर्च करने योग्य नहीं रही। इन्होंने भी उसी महामन्त्र की प्रेरणा से गायत्री उपासना प्रारम्भ की और कुछ ही दिनों में पारिवारिक रोगों के साथ आर्थिक कष्टों से भी छुटकारा पा गये।

जीवन के सभी क्षेत्रों में लाभ

पं. राधेश्याम शर्मा, टिमरनी, से लिखते हैं कि माता की कृपा की कोई सीमा नहीं है, केवल हमें उसके अनुकूल होने की आवश्यकता है। मैं और मेरी धर्मपत्नी दोनों ही गायत्री उपासना करते आ रहे हैं, पर मेरी अपेक्षा पत्नी की निष्ठा और भक्ति विशेष है। 'अखण्ड ज्योति प्रेस' की दिव्य पुस्तकें ही मेरी पथ-प्रदर्शिका हैं। हम अपने जीवन में पग-पग पर अनुभव करते हैं कि माता हमारी सहायता करने के लिए सदा खड़ी रहती हैं । मेरी जीविका का आधार नौकरी है, फिर भी कभी अर्थ के अभाव का अनुभव होते ही माता उसे किसी भाँति पूरा कर देती हैं। मेरी नौकरी में जब बदली के अवसर आते तो माता ने सदा मेरे इच्छित स्थानों में ही मुझे नियुक्त करवाया और अनचाहे-चाहे, मेरे ऊपर के सभी पदाधिकारीगण मुझसे सदा प्रसन्न ही रहते हैं। ऐसी कृपाओं के हमारे जीवन में सदैव दर्शन होते ही रहते हैं।

एक बार किसी भयङ्कर ग्रह दोष के कारण मैं बीमार बड़ा। उपचार करते हुए भी रोग बढ़ते ही गये और एक दिन मैं बेहोश हो गया। शरीर शीतल हो गया, नाड़ियाँ शिथिल पड़ गयीं । सभी घबड़ा उठे और सिसकियाँ भरने लगे, पर मेरी धर्मपत्नी की श्रद्धा अविचल थी। उसके मुख पर घबड़ाहट की छाया भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

न पड़ी, यद्यपि एक महीने से मेरी सेवा करते हुए उसे भली प्रकार भोजन और शयन का भी पूरा अवसर नहीं मिल पाया था। पाँच घण्टे तक मैं बेहोश रहा और वह उपासना में तल्लीन रही। उसके आते ही मैं ठीक उसी भाँति होश में आ गया, जैसे कोई नींद पूरी होने पर उठ बैठा है। फिर तो एक सप्ताह में ही मैं पूरा चंगा हो गया।

इसी प्रकार मेरी बड़ी बच्ची मोतीझरे की बीमारी में अपना होश-हवास खो बैठी । उसने (मेरी पत्नी) ने माता से प्रार्थना की और बच्ची होश में आ गयी और दो चार दिन में रोग-मुक्त भी हो गयी । हम तो सब काम करते हुए माता के भरोसे निश्चिन्त रहते हैं । हमें विश्वास है कि माता कभी बुरा न होने देगी ।

निराश माता-पिता को सान्त्वना

डॉ. जी. के. शर्मा, करेंजा, लिखते हैं कि—मेरे जीवन में सबसे प्रथम, अखण्ड ज्योति रूपी गुरुदेव ने आकर्षित कर मुझे गायत्री उपासना में प्रवृत्त कर दिया पर इसे सींचकर पुष्ट करने में जिस प्रत्यक्ष चमत्कार का हाथ है, आज मैं उसे ही वर्णन करना चाहता हूँ ।

उपासना को स्वीकार करने के कुछ ही दिन बाद मुझे दक्षिण भारत का भ्रमण करने का अवसर प्राप्त हुआ और इस पुण्य यात्रा में श्री गायत्री स्वरूपजी महाराज के दर्शन का सौभाग्य मुझे गायत्री माता ने प्रदान किया । मैंने पाया कि अपनी उत्कृष्ट कल्पना के सहारे जिस ऋषित्व को अन्तर्गत में सुचित्रित कर रखा था, वह जैसे साक्षात्कार हो गया हो । मैंने श्रद्धावनत हो अपने को उन पावन पद-पद्मों में डाल दिया ।

उस दिन एक गुजराती समाज में विवाहोत्सव था। उसका पुत्र, जो कई दिनों से बीमार था, उसकी हालत उस दिन बेहद खराब हो गयी । अनेकों डॉक्टर आये। सभी ने कहा कि इसके बचने की कोई आशा नहीं है। परिवार में हाहाकार मच गया । रुदन-ध्वनि से आकाश भी प्रकम्पित हो गया ।

उनके किसी हित-चिन्तक ने श्री गायत्रीस्वरूपजी महाराज को बुला लिया । उनके आते ही बालक के माता-पिता दोनों हाहाकार करते हुए चरणों में आ गिरे और लौटने लगे । उनके करुण विलाप से महात्माजी के परम दयालु हृदय की वाणी फुट पड़ी, सहसा ही उनके मुख से निकला—तुम्हारे पुत्र का बालबाँका न होगा । सहसा ही आश्वासन का वातावरण छा गया । सभी के रुदन, एक-बारगी ही रुक गये । उन्होंने पवित्र जल मँगाकर गायत्री से अभिमन्त्रित कर बालक को पिला दिया । घण्टों से बेहोश बालक नींद टूटने की भाँति उठ बैठा । चिकित्सकगण विस्मित और निस्तब्ध से देखते रहे ।

उसके उपरान्त विवाहोत्सव किसी भाँति पूरा कर लिया गया । बालक का ज्वर छूटा नहीं था । फिर एक दिन वेग से आया और बालक मुमुर्ष-अवस्था में पहुँच गया । आज तो आशा ही नहीं रह गई थी । आज भी महात्माजी को बुलाया गया । मैं भी साथ था। महात्माजी भी उसकी मरणासन्न दशा से कुछ चिंतित दीख पड़े । सहसा ही बोले—आज या तो हम दोनों ही इस विश्व में रहेंगे या बालक और हम दोनों कूँच कर जायेंगे । ऐसा कहकर पुनः उन्होंने गायत्री अभिमन्त्रित-जल बालक को पिलाया और गायत्री यज्ञ का भस्म, जो अपने साथ लिये आये थे, रोगी के सारे शरीर पर लगान प्रारम्भ कर दिया । अब बालक पूर्ण होश में था और हम लोग विस्मित नेत्रों से यह आश्चर्य-लीला देख रहे थे । फिर उन्होंने और जल मँगवाया तथा उसे भी गायत्री से अभिमन्त्रित करके बोले—इसे प्रति दिन पिलाते रहना, मैं अभी कार्यवशात् बम्बई जा रहा हूँ ।

गायत्री के प्रति अनजाने ही मेरी श्रद्धा गहरी होती जा रही थी ।

बम्बई से कुछ दिनों के उपरान्त स्वामी जी लौटे । बालक स्वस्थ था । उसने चरणों में साष्टांग प्रणाम किया और कहा गुरुदेव ! आज मुझसे आप गुरु-दक्षिणा लीजिये । उन्होंने कहा गुरु दक्षिणा ? क्या सचमुच ही तुम देने को तैयार हो ?

बालक ने स्वीकृति जतायी, इस पर स्वामी जी बोले—मैं तुम्हें गुरुमन्त्र देता हूँ, तुम विधिपूर्वक जीवन भर इसकी नियमित उपासना करते रहना । यही मेरी गुरु दक्षिणा है ।

इस घटना से प्रभावित होकर मैं मुग्ध होकर दंड की भाँति उनके चरणों में गिर पड़ा । वे मेरे सिर पर अपना कल्याणवरद्-हस्त फेर रहे थे ।

गायत्री माता के आश्रय में

प्रेमचन्द्र अग्रवाल, महोवा, से लिखते हैं कि "गायत्री मन्त्र का थोड़ा-सा जप करते ही बहुतों के मन में यह भ्रम या झूठी आशा हो जाती है कि अब हमारे किये हुए पूर्व के पाप सदा के लिये नष्ट हो गये और पुण्य कर्म संरक्षित हो गये, पर ऐसा होने से तो कर्म का सारा विधान ही नष्ट हो जाये, फिर पाप करने वालों के लिये कोई दण्ड-विधान या किसी भय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

की कोई बात ही न रह जायेगी।'' ये शब्द मेरे जीवन के घात-प्रतिघातों से ध्वनित होकर साक्षात् सत्य पर आधारित हैं।

हमारे दु:खद प्रारब्ध ने हमारे दो पुत्रों को स्वल्प आयु में ही हमसे छीन लिया। हमारी सारी चिकित्सा के प्रयत्न व्यर्थ हो गये। इस दुस्सह घटना से हम सब भी अवश्य ही व्यथित हुए पर बच्चे की माता तो इस सन्ताप से गल सी गयी। उसे नींद नहीं आती। कुछ दिनों में पागलपन के लक्षण प्रगट होने लगे। उसी समय हमारे सौभाग्य से एक ब्रह्मचारी जी पधारे। उन्होंने हमें प्रतिदिन गायत्री उपासना के साथ हवन करने की प्रेरणा दी। हम लोगों ने बड़ी आशा से माता का आश्रय लिया। पागलपन भी शांत हुआ और एक सन्तान की प्राप्ति हुई।

जब हमारी दृष्टि अतीत की ओर दौड़ जाती है, तो स्पष्ट भासित हो जाता है, कि हमारे पूर्व दुष्कर्मों से बने प्रारब्ध के कारण हमारी पत्नी या तो पागल हो जाती या हृदय रोग से मर ही जाती, क्योंकि भौतिक जगत् के सारी औषधि एवं चिकित्सक अपनी पराजय स्वीकार कर चुके थे। इसी से हम बलपूर्वक कह सकते हैं कि गायत्री उपासना से दुष्ट से दुष्ट प्रारब्ध को भी थोड़ा बहुत बदल जाना ही पड़ता है। आज हमें धैर्य और सहनशीलता की जो शक्ति मिली है, वह हमारे अभ्यास या परिस्थिति की देन नहीं, वरन् स्पष्टतया गायत्री माता की कृपा ही है। आप आश्चर्य करेंगे कि हम सभी अपने को सुखी अवस्था में अनुभव करते हैं।

एक बार मुझे अपने सम्बन्धी से अनिवार्य आवश्यकता के कारण ५००) रुपये लेने थे। इसके लिये तीन बार झाँसी जा-जाकर लौट आता था। चौथी बार अपने प्रयत्न और पुरुषार्थ का सारा भरोसा छोड़ कर केवल माता का सहारा लेकर गया। माँ के नाम पर बिना निवेदन और खुशामद के सीधे-सादे शब्द में अपनी माँग उपस्थित कर दी। एक मुनीम महोदय आनाकानी करने लगे, पर दूसरे ने कहा-व्यर्थ की बहाने बाजी से क्या, इन्हें रुपये दे देना ही ठीक है।

मुझे रुपये मिल गये और मैं माता को धन्यवाद देता हुआ घर आकर काम को सम्पन्न एवं सफल बना सका।

गायत्री-उपासना के कुछ अनुभव

श्री दिव्य ज्योति ए. जोशी, मालद, लिखते हैं कि मेरी आर्थिक दशा बड़ी खराब थी। कोई उपाय नजर नहीं आता था। लाचार होकर मैंने गायत्री माता से प्रार्थना की और अचानक एक दिन ऐसा हुआ कि एक सज्जन व्यक्ति आग्रह पूर्वक मुझे बुलाकर ले गये और मेरी रुचि अनुकूल अपने काम पर नियुक्त कर दिया। वेतन भी इतना मिलता है, कि मैं परिवार सहित भली-भाँति निर्वाह कर कुछ बचा भी लेता हूँ। ऐसी दयामयी माता की जय हो।

श्री कनुभाई त्रिभुवनदास एक वर्ष से बेकार बैठे समय गँवा रहे थे। गायत्री-उपासना से उन्हें भी एक अच्छी और स्थायी नौकरी मिल गयी।

श्री हीरालाल लोहाण ने गायत्री-उपासना के द्वारा ही नौकरी प्राप्त कर अपनी जीविका का भार सम्भाल पाया है।

श्री रसिकलालजी का लड़का बड़ा दुराचारी था। उसके पिता ने उसकी प्रवृत्ति बदलने की कामना से गायत्री-साधना आरम्भ की। फलत: कुछ दिनों के उपरान्त लड़के ने स्वत: ही आकर पिता से माफी माँगी और अब पिता के साथ मिलकर सदाचार सहित अपनी जीविका का उपार्जन करता है।

श्री सविता बहन के आधे अङ्ग में लकवा (अर्द्धाङ्ग-वात) हो गया था। चिकित्सा से लाभ नहीं होते देख, उसने गायत्री उपासना प्रारम्भ कर दी, कुछ दिन उपासना के उपरान्त अब उस अङ्ग से काम करने लग गई हैं। धीरे-धीरे वह अङ्ग अपनी पूर्व दशा में आता जा रहा है।

मेरे पड़ोस के एक व्यक्ति की पत्नी उससे असन्तुष्ट होकर अपने मायके में ही रहती थी। ये कई बार, आदर-आग्रह सहित, उसे लिवाने गये, पर वह नहीं आई। मेरे परामर्श से उसने खुशामद छोड़कर गायत्री माता की उपासना प्रारम्भ कर दी और एक दिन गायत्री माता की सद्प्रेरणा से वह स्वत: ही नैहर छोड़ कर चली आई और यहाँ आकर सुस्थिर हो गई। अब उनका दाम्पत्य जीवन बड़ा ही मधुर और आनन्दमय हो गया है। दोनों परस्पर एक-दूसरे को सुखी बनाने के लिए आतुर रहते हैं। माता की कृपा के सिवाय इस कलह पूर्ण दाम्पत्य-जीवन को सुधार कर रसमय बनाने की शक्ति किसमें है?

गायत्री-साधकों के ये अनुभव निस्सन्देह श्रद्धाशून्य हृदयों में भी एक बार भक्ति-भाव उत्पन्न करने वाले

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं। जैसा इनमें से एक लेखक ने कहा है—"अगर मनुष्य किसी सङ्कट में पड़कर, कोई कामना लेकर भी गायत्री माता की उपासना करता है, तो इसमें मनुष्यों में श्रद्धा और विश्वास के भावों का विकास होता है और एक समय आता है कि वे स्वयं निष्काम साधना के महत्त्व को समझ जाते हैं। इसलिए हमारा सबसे यही अनुरोध है कि किसी भी भाव से अथवा परिस्थिति के कारण उनको गायत्री जैसी सर्व सुलभ और लोक परलोक में कल्याण करने वाली साधना का आश्रय अवश्य लेना चाहिए।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री मन्त्र की अनुभूतियाँ

इमैन्युएल काण्ट जर्मनी के प्रसिद्ध दार्शनिकों में से हुए हैं। उन्होंने दर्शन सम्बन्धी बहुत पुस्तकें लिखी हैं। एक पुस्तक के उपसंहार में वह लिखते हैं कि मुझे दो बातों से भय लगता है। पहली यह कि रात्रि के समय जब मैं नक्षत्र आकाश की ओर देखता हूँ तो मेरे मन में विचार उत्पन्न होते हैं कि इन लाखों और करोड़ों सितारों की रचना करने वाली शक्ति कितनी महान् होगी? इस विशालतम सृष्टि की रचना की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जब एक ओर उस सर्व शक्तिमान की असीम शक्तियों के बारे में सोचता हूँ और दूसरी ओर अपनी क्षुद्र और सीमित शक्तियों पर नजर डालता हूँ तो मुझे भय लगता है कि वह सृष्टि की रचना करने वाला कितना महान है और मैं कितना छोटा हूँ।

दूसरी बात जिससे भय लगता है, यह है कि जब मैं कोई अनुचित कार्य करता हूँ तो मेरे अन्दर से एक आवाज आती है कि यह कार्य तुम्हें नहीं करना चाहिए, यह अनुचित है। वह आवाज इतनी शक्तिशाली होती है कि मुझ पर अपना हुक्म चलाती है। जब मैं इस सम्बन्ध में गम्भीरतापूर्वक विचार करता हूँ तो प्रतीत होता है कि यह मेरे अंतर से आने वाली आवाज मुझसे किसी महानशक्ति के द्वारा प्रसारित होती है।

काण्ट लिखते हैं कि इन दोनों बातों से उन्हें भय लगता है और उनका अनुमान है कि सृष्टि की रचना करने वाली महान शक्ति और मेरे अन्तर से प्रेरणा देने वाली शक्ति दोनों एक हैं। परन्तु इनका कोई वैज्ञानिक तथ्य प्राप्त नहीं होता और बुद्धि से इसका समाधान भी नहीं होता, इसलिए मैं इसको मानने के लिये तैयार नहीं हूँ। वह मान भी कैसे सकते हैं? बुद्धि तो तर्क-वितर्क करती है। अनुभव से ही विश्वास की नींव पक्की होती है।

भारतीय ऋषियों का आधार अनुभव था, अनुमान नहीं। जिस बात को इमैन्युएल काण्ट ने अनुमान मात्र कहकर छोड़ दिया, उसकी अनुभुति लाखों वर्ष पहिले भारतीय ऋषियों ने यहाँ कर ली थी। यह अनुभूति स्थल लाखों और करोड़ों आत्माओं का तारक गायत्री मन्त्र है। गायत्री मन्त्र के अर्थ पर विचार करने पर यह बात स्वयमेव सिद्ध हो जाती है। भूः, भुवः, स्वः —पृथ्वी, अन्तरिक्ष और ध्रुवलोक, तीनों लोकों की रचना करने वाले ॐरूपी परमात्मा हैं। उनकी वरणीय ज्योति का हम ध्यान करते हैं। क्यों करते हैं? उनसे हमारा क्या सम्बन्ध है? इसलिए कि वह "धियो योनः प्रचोदयात्" हमारी बुद्धि को प्रेरणा देने वाले हैं। इसका अर्थ यह है कि जो सृष्टि की रचना करने वाले हैं वही हमारी बुद्धि के प्रेरक हैं। इन दोनों शक्तियों में कोई अन्तर नहीं है।

जिस बात को काण्ट अनुमान के साथ कहते हैं, उसे गायत्री मन्त्र के ऋषि निश्चय के साथ कहते हैं कि ऐसा ही है, क्योंकि यह उनकी साक्षात् अनुभूतियों का परिणाम है।

गायत्री मन्त्र के अर्थ पर कुछ और गम्भीरता पूर्वक विचार करें तो प्रतीत होता है कि इससे तीन बातों का ज्ञान होता है। १—"सवितुर्वरेण्यं भर्ग" वह तेजस्वी वरण करने योग्य और पापनाशक शक्ति अर्थात् परमात्म तत्व। २—"धियो योनः" जीव का बुद्धि तत्व, ३—"प्रचोदयात्" परमात्म और बुद्धि बल को मिलाने वाला प्रेरक सम्बन्ध। एक अखिल ब्रह्माण्ड का केन्द्र है, दूसरा जीवन का केन्द्र। तीसरा उनको मिलाने वाला प्रचोदयात्मक तत्व।

गायत्री मन्त्र वह दिव्य शक्ति है जो मनुष्य की क्षुद्रताओं को नष्ट करती है, मलिनताओं को धोती है, उसके आसुरी तत्वों को समाप्त कर दैवी तत्वों का विकास करती है। क्षुद्र प्राणी की अनुभूति है कि छोटे से छोटे अनुचित कार्य करते हुए उसके अपने अन्दर से एक आवाज आती है कि यह कार्य अविवेक पूर्ण है। इससे उसको या समाज को हानि होगी। यह उसे करना न चाहिए। लोभ के वशीभूत होकर मनुष्य घृणित से घृणित कार्य करने पर उतारू हो जाता है परन्तु एक बार यह आवाज अवश्य आती है। गायत्री मन्त्र का साधक उसे स्पष्ट और शक्तिशाली रूप में अनुभव करता है। साधना और तप के अभाव से वह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उस आवाज के अनुसार भले ही आचरण न कर सके परन्तु यह निश्चित है कि वह अपनी कमी को अनुभव करता है। यह सफलता की पहिली सीढ़ि है। प्राय: देखा जाता है कि लोग अपनी कमियों और कमजोरियों को अनुभव ही नहीं करते, उनके मानस क्षेत्र में अंधकार का पर्दा पड़ा रहता है। उनके दोष उन्हें दोष ही दिखाई नहीं देते, दोषों की निवृत्ति कैसे हो? गायत्री का साधक ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता है, त्यों-त्यों उसे अपने दोष स्पष्ट दिखाई देने लगते हैं। उसकी आत्मा उसे निरंतर नोचती रहती है। एक दिन वह भी आ जाता है कि वह उसे छोड़ने पर उतारू हो जाता है। जिस बात को साधारण व्यक्ति एक कठिन समस्या मानते हैं, गायत्री के साधक के लिए वह एक सहज बात होती है क्योंकि गायत्री मन्त्र मनुष्य के स्थूल तत्व को कम करके सूक्ष्मतत्व को विकसित करता जाता है। सूक्ष्म तत्व का विकास होने पर शक्ति की वृद्धि होती है। शक्ति वृद्धि होने पर दोषों और दुर्गुणों के विरुद्ध संघर्ष करने और उन पर विजय पाने की शक्ति प्राप्त होती है। ज्यों-ज्यों यह सामर्थ्य बढ़ती जाती है त्यों-त्यों मनुष्य अणु से महान बनता जाता है। यही गायत्री मन्त्र की साधना का उद्देश्य और यही उसकी अनुभूति है।

गायत्री मन्त्र की साधना से अंत:करण में एक दिव्य-ज्योति की उत्पत्ति होती है जो हृदयगत अंधकार को नष्ट करती है, जिस प्रकार से साबुन से कपड़े उजले हो जाते हैं, झाड़ू से कमरे को साफ किया जाता है, उसी प्रकार से गायत्री मन्त्र रूपी दिव्य साबुन मन रूपी कपड़ों को साफ करता है। यह ऐसा चमत्कारी दिव्य झाड़ू है कि मन रूपी कमरे में जो दुर्गुण, दोष, आसक्ति, राग-द्वेष सभी कूड़ा पड़ा हुआ है, उसको धीरे-धीरे निकाल देता है। यह कूड़ा-करकट-निकलने के बाद ही मन भगवान् के बैठने योग्य पवित्र आसन बनता है। गायत्री मन्त्र की साधना भगवान् को बुलाने का एक प्रकार का निमन्त्रण-पत्र है क्योंकि इससे बुद्धि शुद्ध व पवित्र होती है और ऐसे साधक को परमात्मा का साक्षात्कार होता है।

माता को आत्म-समर्पण

एक महात्मा श्री ''गायत्री पुत्र'' जी बरहज, से लिखते हैं कि माता-पिता की मृत्यु के बाद लम्बे समय तक सरकारी नौकरी करता रहा। पाठ-पूजा में मेरा मन आरम्भ से ही बहुत था। अक्टूबर सन् ३१ को तीर्थ-यात्रा के लिए घर से निकला। अनेक तीर्थों की यात्रा करते हुए जगन्नाथ जी पहुँचा। सुना था कि जगदीशजी के सामने जो प्रार्थना सच्चे हृदय से की जाये उसे वे पूरी करते हैं । मैंने जगदीशजी से प्रार्थना की कि आप मुझे गायत्री वाला संज्ञा ज्ञान दे दीजिए' मुझे तत्काल ऐसा अनुभव हुआ मानो मेरी प्रार्थना सुन ली गई हो और 'एवमस्तु' का वरदान दिया गया हो।

तीर्थयात्रा से वापिस लौट रहा था तो रास्ते भर अन्तरात्मा में बैठी हुई कोई शक्ति यह कह रही थी कि दो काम एक साथ नहीं हो सकते या तो ईश्वर को ही प्राप्त किया जाये या संसार की ही गुलामी की जाये, मैंने निश्चय किया कि मुझे प्रभु को प्राप्त करना है। निश्चय के फलस्वरूप त्याग-पत्र, दे दिया नौकरी छोड़ दी।

मेरी साधना में राम नाम का जप और गीता का पाठ दो ही प्रधान थे। गीता में मैंने देखा कि गायत्री मन्त्र स्वयं भगवान का स्वरूप है। अन्य सन्त महात्माओं से भी यही सुना था और मेरी अन्तरात्मा ने भी यही कहा। तब से मैंने गायत्री माता की शरण पकड़ी और उन्हें ही अपना आत्म-समर्पण कर दिया।

त्रिकाल सन्ध्या, जप और काले तिल तथा घी का हवन यह मेरा नित्यकर्म रहा, अधिकांश समय उसी कार्यक्रम में लग जाता, एक ही लगन और एक ही रट दिन रात रहती । इस प्रकार दो वर्ष बीत गये । २१ फरवरी, सन् ३३ की रात को करीब दस बजे जबकि मैं सोया हुआ था—हवन कुण्ड के पास एक दिव्य तेज युक्त देवी का दर्शन हुआ। मैं चौंक पड़ा और पूछा-'आप कौन हैं?' उन्होंने मन्द मुस्कान के साथ उत्तर दिया-'गायत्री'। मैं रोमांचित हो गया। प्रेम विह्वल होकर माता के चरणों पर गिर पड़ा। उस स्वर्गीय सुख का वर्णन करते नहीं बनता, मैं कृतकृत्य हो गया।

माता ने अन्तर्ध्यान होते हुए कहा—तुम मेरे धर्म पुत्र हो। मेरा मन्त्र ब्रह्म रूप है। इसका उपयोग आत्म-कल्याण के लिए ही होना चाहिये जो लोग इससे सांसारिक कामनाएँ प्राप्त करते हैं, वे अधोगामी होते हैं। तुम ब्रह्म शक्ति के लिए ही हमारा उपयोग करना। ''मैंने उनके चरणों में सिर झुका दिया। मेरी स्त्री को भी मेरा अनुगमन करने का आदेश देकर अदृश्य हो गई।''

दूसरे दिन से हम दोनों ने घर छोड़ दिया। माता ने मुझे धर्म पुत्र कहा था। मैंने अपना पुराना नाम पांडे सुखमङ्गल लाल छोड़ कर 'गायत्री पुत्र' रख लिया। मेरी धर्म पत्नी ने उसी दिन से सब सांसारिक क़ामनाएँ त्याग दीं और निशदिन मेरा अनुगमन करने लगी। कुछ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समय कतिपय स्थानों पर परिभ्रमण करने के बाद हम दोनों बरहज आये। यह स्थान मनोनुकूल दिखाई पड़ा। सरयूतीर पर श्मशान भूमि में पहले कपड़ा तनाकर हम लोग रहे फिर एक छप्पर डाल लिया। २७ अप्रैल, सन् ३५ से हम लोग यहीं हैं। रीति -नीति यह है कि— मांगने का सवाल नहीं, लेने से इन्कार नहीं, किसी के बुलाने का सवाल नहीं, किसी के आने की मुमानिया नहीं, किसी की खुशी नाखुशी की परवा नहीं, पाँच बीघे के घेरे से बाहर जाता नहीं, बरहज कस्बा बहुत बड़ा है, उसके बिलकुल निकट रहता हूँ, पर आज तक उसे आँखों से नहीं देखा। अपनी कोई निश्चित आमदनी नहीं है, पर धर्मार्थ कार्यों के लिए यहाँ सदैव कुछ न कुछ होता ही रहता है। हर पूर्णिमा को इस कुटी पर चने बँटते हैं जिसे लेने के लिए भारी भीड़ जमा होते देखकर सभी को हर्ष और आश्चर्य होता है। नित्य का जप और नियमित रूप से दोनों समय हवन यह अपना निश्चित कार्यक्रम है। यहाँ आने वाले व्यक्ति गायत्री उपासना की सलाह प्राप्त करके जाते हैं जिससे बहुधा उनका कल्याण ही होता है। सांसारिक नौकरी छूट गई अब हम दोनों माता की नौकरी में लगे हुए हैं। रोटी-कपड़ा लेकर परम सन्तोष पूर्वक जीवन-यापन करते हैं।

साधकों को चेतावनी

महात्मा अद्वैतानन्द जी महाराज, का कथन है कि गायत्री उपासना की महिमा जितनी कही जाये उतनी ही कम है। माता की कृपा से कोई भी सज्ञ साधक वंचित नहीं रहता, उसे उसके परिश्रम की अपेक्षा कई गुना लाभ निश्चित रूप से मिल जाता है। परन्तु बुद्धिमानी इसमें नहीं है कि छोटे-छोटे सांसारिक प्रयोजनों में साधना की महान आध्यात्मिक शक्ति को खर्च किया जाये। तप से बड़ा कोई धन नहीं है। तप के बदले में ही सुख मिलता है। संसार में जितने सुखी, और सुसम्पन्न व्यक्ति दिखाई पड़ते हैं वे भूतकाल में तपस्वी रहे हैं जब उनका तप समाप्त हो जायेगा तो उन्हें तुच्छ प्राणी की तरह जीवन व्यतीत करना पड़ेगा, तब उनके पास कोई सम्पत्ति शेष न रह जायेगी।

तप और पुण्य की संम्पत्ति जमा करते जाना ही वास्तविक बुद्धिमानी है। इस सम्पत्ति के भण्डार से सांसारिक और आत्मिक सभी महानताएँ प्राप्त हो सकती हैं। यहाँ तक कि ईश्वर तक को खरीदा जा सकता है। तपस्वी या साधक के लिए एक बहुत बड़ा खतरा यह है कि जैसे ही उसे कुछ आत्मबल प्राप्त होता है वैसे ही वह उत्साह से भर जाता है और उसका प्रदर्शन करके यश, प्रतिष्ठा, पूजा या प्राप्ति में उसे खर्च करने लगता है, फलस्वरूप वह पूँजी अति शीघ्र समाप्त हो जाती है और वह रीता का रीता रह जाता है।

गायत्री उपासकों में आत्मबल अति शीघ्र बढ़ता है, उन्हें छोटी-छोटी अनेक सिद्धियों का अनुभव थोड़े ही दिनों में होने लगता है। उस समय उन्हें बहुत ही सावधान रहना चाहिए। किसी का भाग्य बदलने में, ईश्वर के विधान को पलट कर अपनी इच्छा प्रधान सिद्ध करने में अपनी शक्ति नष्ट नहीं करनी चाहिए। पूर्व जन्मों के किये हुए कर्मों से जो प्रारब्ध बनता है उसके भले-बुरे भोग सभी को भोगने पड़ते हैं। कर्म-भोग से हरिश्चन्द्र, मोरध्वज, कर्ण, नल, अम्बरीष, दशरथ, पाण्डव, सुवाया, जैसे महात्मा भी न बच सके। भगवान के परम कृपा-पात्र होते हुए भी इन लोगों को अपने भाग्य का भोगा पूरा करना पड़ा। भक्त यदि अपनी तपस्या की बाजी लगादे तो भगवान को अपना कार्य करने से रोक सकता है। इसीलिए भगवान से भक्त को बड़ा बताया गया है। परन्तु यह ध्यान रखना चाहिए कि ऐसा दुस्साहस करने से भक्त की तपस्या बहुत शीघ्र समाप्त हो जाती है और वह अपनी संचित आध्यात्मिक पूँजी से हाथ धो बैठता है।

इसलिए अपने या किसी दूसरे के सांसारिक प्रयोजन पूरे करने के लिए कभी आत्मबल को, तपोधन को, नष्ट नहीं करना चाहिए। गायत्री साधक किसी को शाप-वरदान न दें। जो व्यक्ति गायत्री माता की कृपा से लाभ उठाना चाहता है उसे स्वयं उपासना-आराधना करके गायत्री महाशक्ति की सहायता प्राप्त करनी चाहिये। दूसरों के तप से स्वयं लाभ उठाना एक गलत तरीका है। जिसे चालाक आदमी, भोले-भाले साधकों को खुशामद या दीनता दिखाकर प्रयुक्त करते हैं। साधकों को किसी प्रपंच में फँसकर अपनी शक्ति बरबाद नहीं करनी चाहिए वरन् उसे आत्म-कल्याण के लिए सुरक्षित करना चाहिए।

यदि गायत्री उपासक को लोक सेवा करनी है, दूसरों पर दया आती है, उनकी पीड़ा दूर करने की इच्छा है, तो अपनी सारी बुद्धिमानी खर्च करके उस मनुष्य को माता का उपासक बना देना चाहिए ताकि वह स्वयं अनन्त आध्यात्मिक और सांसारिक लाभों को प्राप्त कर सके। इस उपचार से साधक का पुण्य परमार्थ बढ़ता है और उस मनुष्य का भी कल्याण होता है। जो लोग स्वयं उपासना का कष्ट नहीं उठाना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चाहते और किसी तपस्वी के तप का आरक्षित लाभ अपना प्रारब्ध बदलने में खर्च कराना चाहते हैं, खुदगर्ज लोगों से गायत्री साधकों को सावधान रहना चाहिए। अनेक साधक संसार में आये दिन घटित होती रहने वाली दु:ख-सुख की घटनाओं में अपनी टांग अड़ा कर किसी का प्रारब्ध बदलने के झंझट में लग जाते हैं। यह मूर्खता का मार्ग किसी भी दूरदर्शी गायत्री उपासक को नहीं अपनाना चाहिए।

सच्चे धन की याचना

भरत राम बानप्रस्थी, चौरसिया,का कहना है कि गायत्री का सर्वविदित लाभ यह है कि उससे जन्म-जन्मान्तरों के कुसंस्कार मिटते हैं और कुपात्रता दूर होती है। सुसंस्कार और सत्पात्र होना जीवन का सबसे बड़ा लाभ है, जिसे यह लाभ प्राप्त है, उसे किसी बात का अभाव नहीं रहता।

जो लोग जीवन की छोटी-मोटी असुविधाओं को निवारण करने के लिए सकाम उपासना करते हैं वे इस प्रचण्ड ब्राह्मी शक्ति की महिमा को नहीं जानते। चक्रवर्ती राजा से कोई यह मांगे कि मुझे एक रोटी दिला दीजिए तो उस याचक को मूर्ख ही कहेंगे। रोटी तो थोड़े से परिश्रम से कमाई जा सकती है या अन्य तरीकों से भी उसे प्राप्त किया जा सकता है। राजा से मांगनी हो तो ऐसे मूल्यवान वस्तु मांगनी चाहिए जो अपने प्रयत्न से या साधारण साधनों से प्राप्त न हो सकती हो। सांसारिक वस्तुएँ मनुष्य स्वयं उपार्जित कर सकता है, दूसरों से ले सकता है या उनके अभाव में भी काम चला सकता है; परन्तु एक ऐसी वस्तु है जो कठिनाई से प्राप्त होती है—वह वस्तु है सुसंकार, सत्पात्रता और सात्विक दृष्टि, यही गायत्री माता से मांगने योग्य है। जिसने यह प्राप्त किया उसके लिए सर्वत्र आनन्द ही आनन्द है।

मैंने साधना मार्ग में विनम्र पदार्पण किया है उत्तराखण्ड के तपस्वी महात्माओं की कृपा का किंचित प्रसाद प्राप्त करने में भी समर्थ हुआ हूँ। ऐसा प्रत्यक्ष अनुभव करने का सौभाग्य मुझे दिया गया है। एक अत्यंत महान प्रचण्ड ज्योति अपने हाथ पर मेरे शरीर को रखकर धीरे-धीरे उसमें प्रवेश करती हुई विलुप्त हो गयी। इसी प्रकार हृदय चक्र में सूर्य शक्ति का साक्षात्कार हुआ है। इन अनुभवों के साथ जो अलौकिक आनन्द प्राप्त होता है उसका रस कोई भुक्त भोगी ही जानते हैं। माता जिस पर वस्तुत: प्रसन्न होती है उसे माया के झंझटों से छुड़ा कर त्याग और वैराग्य की ओर ले चलती है तथा सत्पात्रता एवं सुसंस्कार प्रदान करती है। परन्तु जिनसे वे पीछा छुड़ाना चाहती है उसे माया का खिलौना देकर बहला-फुसला देती है। वह अज्ञानी उस खिलौने से लिपटा रहता है और माता की गोदी में चढ़कर उसका अमृत तुल्य पयपान करने से वंचित रह जाता है।

मैं माता के चरणों में आत्मार्पण करके जो शान्ति पाता हूँ वह सारी पृथ्वी का धन-ऐश्वर्य मिलने पर भी सम्भव नहीं है। माता से यही प्रार्थना रहती है कि कहीं तू सांसारिक खिलौनों में मुझे न बहका देना, मुझे कोई वस्तु नहीं चाहिये केवल तेरी कृपा—विशुद्ध कृपा—चाहिये, जिससे आत्मा का सच्चा स्वार्थ साधन हो सके।

गायत्री साधना में वाक्य सिद्धि

गोविन्दराम हिंगवासिया, हटा, से लिखते हैं कि मैं सरकारी अंग्रेजी मिडिल स्कूल हटा (जिला सागर, मध्य प्रदेश) में एक साधारण कर्मचारी हूँ। मुझे मेरे प्रिय मित्र गङ्गा प्रसाद जी स्वर्णकार वैद्य के चिरंजीव भगवान दास जी वैद्य गायत्री मन्त्र लेखन के लिये प्रेरणा दिया करते थे, उनके उत्साहित करने से मैंने निश्चय किया कि क्वार की नवदुर्गा में उपवास के साथ यह गायत्री मन्त्र लेखन कार्य प्रारम्भ करूँगा। इसी निश्चय के अनुसार सम्वत् २००९ में मैंने जलाहार पर उपवास व गायत्री जप के साथ गायत्री लेखन का भी एक नियम बना लिया। मैं १०८ गायत्री मन्त्र प्रति दिन लिखने लगा।

उन दिनों मेरी पाठशाला में एक शिक्षक थे घनश्याम प्रसाद जी मिश्र, बी. ए.। वे मण्डला से स्थानांतरित होकर हटा आये हुए थे तथा वे पुन: मण्डला जाना चाहते थे। उन्होंने एक प्रार्थना-पत्र इस आशय का उच्च अधिकारी के पास भेजा था। उसे भेजे एक मास हो गया था।

मेरे उपवास के चौथे दिन, जब मैं शाला में अपने स्थान पर बैठकर गायत्री लेखन का कार्य कर रहा था, वे मेरे पास आये और उन्होंने मुझसे प्रश्न किया कि "पण्डित जी क्या मेरा स्थानांतर होगा? यदि होगा तो कब तक?"

मैं बड़े अमंजस में पड़ गया। मैंने उनसे पांच मिनट के बाद उत्तर देने के लिए कहा। इस समय के भीतर मैंने हृदय में महारानी गायत्री का स्मरण कर पण्डित जी सम्बन्ध में क्या होने वाला है, इसका उत्तर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जानना चाहता हूँ। आत्मा पवित्र होने पर ऐसे उत्तरों का मिलना कुछ कठिन भी नहीं होता। भीतर से आत्मा ने उत्तर दिया—"हां, स्थानांतर शीघ्र होगा, तरक्की होगी व इच्छित स्थान प्राप्त होगा और इसका आज्ञा पत्र गुरुवार तक आ जायेगा।"

मैंने उपयुक्त बात उनको कह दीं। यह सुनकर वे बड़े प्रसन्न हुए। परन्तु मेरे मने में विचार आया कि तुम यह क्या कर गये? न तुम सिद्ध हो, न ज्योतिषी। पर आत्मा ने पुनः आदेश दिया कि तुम चिन्ता मत करो तुमने जो कहा वैसा ही होगा।

सात दिन निकल गये गुरुवार का दिन भी आ गया किन्तु उनका आ ऑर्डर नहीं आया। वे बोले पण्डिजी गुरुवार तो निकल गया। यह सुन मैं कुछ लज्जित सा हुआ। सोचा अपनी आत्मिक पवित्रता में कमी रही है। इसी से आत्मा की आवाज उतनी स्पष्ट नहीं हो सकी। अन्यथा गायत्री उपासकों की आत्मा जब पवित्र हो जाती है तो उनके आन्तरिक सन्देश गलत नहीं होते।

परन्तु मुझे हृदय में इस बात की अशान्ति थी कि मैंने इस गुरुवार के पहले गुरुवार के लिये कहा था। जब श्रीमान् हैड मास्टर साहब ने ऑर्डर पढ़कर सुनाया तब मेरा ध्यान 'दिनांक' की ओर गया। मैंने उनसे कहा कि ऑर्डर के आने में १० दिन कैसे लगे। इस पर लिफाफ उठाकर देखा उसमें हटा जिला बालाघाट की मुहर लगी थी। वह लिफाफा गलती से हटा जिला बालाघाट पहुँच गया था व घूमकर १० दिन में हटा (जिला सागर) आया। यदि वह जबलपुर से सीधा आता तो पहले गुरुवार को ही मिल जाता।

गत वर्ष क्वार के महीने में हटा में हैजा फैला था। गुरुवार के सबेरे आठ बजे मैं श्रीमान, हैड मास्टर साहब के घर गया था। वहाँ मुझे पाठशाला के चौकीदार गोरेलाल से विदित हुआ कि आज रात से बसन्ती की माँ बीमार है। बसन्ती शाला के एक नौकर का नाम था। वह भी दो दिन पहले से बीमार था।

गोरेलाल की बात सुनते ही अचानक मेरे मुख से निकल पड़ा कि बसन्ती तो अच्छा हो जायगा किन्तु उसकी माँ मर जायेगी। कहने को तो मैं कह गया पर बाद में मुझे बड़ा पश्चाताप हुआ। संध्या के पांच बजे मुझे सूचना मिली कि बसन्ती की माँ मर गई है पर उसकी तवियत अच्छी है।

यह दो घटनाएँ संक्षिप्त में ही लिखी हैं। इनके अतिरिक्त अनेक बार और भी ऐसे ही अनुभव हो चुके हैं और यह विश्वास बढ़ रहा है कि यदि आत्मिक पवित्रता अधिक हो जाय तो संसार की अज्ञात बातों को जानना और वाक्य सिद्धि प्राप्त करना कुछ कठिन नहीं है।

मन्त्र लेखन की साधना

परशुराम जी आर्य, ओवर सीयर, लिखते हैं कि सबसे पहले यह बताना अच्छा होगा कि मैं कट्टर आर्य समाजी हूँ, हर बात को बुद्धि पूर्वक, विवेक तथा तर्क की कसौटी पर कस कर ही स्वीकार करता हूँ। गायत्री की महिमा तथा उसकी उपासना के महत्व को मैं बहुत समय से जानता हूँ। पर जब गायत्री मन्त्र लेखन की साधना का वर्णन अखण्ड ज्योति में पढ़ा तो उस पर विशेष मनोयोग पूर्वक विचार किया तो लगा कि यह साधना अन्य साधनाओं की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण होगी।

इससे पूर्व भी मैंने श्री स्वामी शिवानन्द जी द्वारा प्रकाशित एक पत्रिका में पढ़ा था कि जप की अपेक्षा मन्त्र लेखन का लाभ विशेष है। मन्त्र लेखन की अनेक विशेषताएँ हैं जैसे १—मन्त्र लिखते समय हाथ, मन, जीभ और आँख चारों एक साथ मन्त्र में लग जाने से चित्त की एकाग्रता बढ़ती है। २—मन्त्र शक्ति से मन वश में होकर नम्र बन जाता है। उससे कोई भी आध्यात्मिक या सांसारिक काम बहुत शीघ्र और अच्छी तरह से करा सकते हैं। ३—मन्त्र या ईश्वर नाम के असंख्य आघात लगने से मन पर चिरस्थायी आध्यात्मिक साधना में शीघ्र प्रगति होती है। ४—किसी प्रकार की मानसिक अशान्ति या चिन्ता दूर होकर मन को शान्ति मिलती है। ५—मन्त्र लेखन पुस्तिका में और स्थान में आध्यात्मिक आन्दोलन और शक्ति पैदा होती है जो सांसारिक तथा आध्यात्मिक प्रवृत्तियों में अदृश्य सहायता करती है। ६—मन्त्रयोग का यह प्रकार (लेखन) आधुनिक चञ्चल स्वभाव की जनता के लिए अधिक सिद्धि प्रद है। उनके लिए माला की सहायता से जप करने में चित्त को बाहरी जगत् की वस्तुओं में भटकने से रोकना अति कठिन है। ७—शास्त्रों में बताये गये भिन्न-भिन्न प्रकार के जपों में से मन्त्र लेखन (लिखित जप) सबसे उत्तम है। इससे चित्त की एकाग्रता होती है और क्रमशः ध्यान की स्थिति प्राप्त होती है।

मन्त्र लेखन—लिखित जप—करने की साधना की ऐसी ही अनेक विशेषताएँ मुझे सूझ पड़ीं और १-५-५३ से गायत्री मन्त्र लेखन की साधना आरम्भ कर दी,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और एक वर्ष में १२५००० (सवालक्ष) मन्त्र लिखने का एक अनुष्ठान पूरा कर लिया । किसी दिन कम किसी दिन ज्यादा लिखा गया है । किसी दिन तो ८०० तक लिखे गये । औसत ३६० प्रतिदिन लिखने का पड़ा। साधारणतः एक गायत्री मन्त्र लिखने में १ मिनट लगता है। इस प्रकार कोई व्यक्ति यदि ६ घण्टे रोज लेखन साधना करें तो एक वर्ष में पूरा कर सकता है । पर अपनी आरम्भ की शिथिलता को पूरा करने के लिए मुझे तो अन्तिम दिनों में आठ-आठ दस-घण्टे लिखना पड़ा है । मेरे जैसे ६० वर्ष की आयु के व्यक्ति के लिए निस्सन्देह इतना श्रम कठिन ही है । पर माता ने यह साहस तथा उत्साह दिया जिसके बल पर एक वर्ष में यह अनुष्ठान पूर्ण हो गया । गत चैत्र की नवरात्रि में गायत्री तपोभूमि में आकर इस लेखन का दशांश १२५०० आहुति का हवन मैंने कर दिया ।

एक वर्ष की इस तपश्चर्या का अनुभव इतना मधुर है कि गूँगे के गुण की तरह इसका लाभ बता सकना कठिन है । स्वयं अनुभव कर के इस मार्ग पर चल कर ही इस प्रकार की तपस्या के लाभों को जाना और अनुभव किया जा सकता है । यों गायत्री उपासक मैं बहुत समय से हूँ । गायत्री जप और अग्निहोत्र मेरा नित्यकर्म है । उसी के प्रताप से अनेक बाधाएँ पार की हैं और इस समय भी सुव्यवस्थित जीवन व्यतीत कर रहा हूँ । मेरे दूसरे साथी जबकि ६० वर्ष की आयु में जीर्ण-शीर्ण हो चुके हैं तब भी मैं अभी तक युवा पुरुष की तरह श्रम करने योग्य अपने स्वास्थ्य को पाता हूँ । आध्यात्मिक सफलताओं की तो चर्चा न करना ही ठीक है ।

भौतिक या दुनियावी लाभ की एक जीती जागती बात आपके सामने पेश करता हूँ—

मैं १-११-४८ को ५५ वर्ष आयु पूरी हो जाने पर रिटायर्ड हुआ । राजकीय कार्य के लिए ऐसे मनुष्य को लेना मना है फिर भी कुछ रियायत ५८ वर्ष की आयु तक की जा सकती है और साठ के पश्चात् तो कतई असम्भव है ।

मैं ५३ के आरम्भ में अर्थात् ५९ वर्ष की आयु में सरकार से एक ओवरसीयरी की जगह के लिए प्रार्थना की जो उन्होंने अस्वीकार कर दी । कोई आशा न रखते हुए भी एक वर्ष पीछे फिर प्रार्थना की अर्थात् जबकि मैं पूरा ६० का हो चुका पर इस मर्तबा मुझे इन्टव्यू के लिए १६-३-५४ को बुलाया गया । इंटरव्यू पूरी तरह से सफल रहा और अब राजस्थान में पुनः सरकारी सर्विस पर नियुक्त हुआ हूँ ।

अपने अन्य साथियों से भी मेरी यह प्रार्थना निरन्तर होती है कि वे गायत्री मन्त्र की लिखित साधना अवश्य करें। यह साधना का एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रकार है।

गायत्री उपासना के प्रत्यक्ष परिणाम

किसी अन्य उपासना में उसकी पूर्ति के पश्चात् ही किसी लाभ की आशा की जाती है आधी अधूरी रह जाने पर नहीं । कई बार तो उनसे हानि भी होती है । किन्तु गायत्री उपासना उसका अपवाद है। इस उपासना को प्रारम्भ करते ही स्थूल, सूक्ष्म और काण तीनों शरीरों पर परिवर्तन और हलचल प्रारम्भ होती है जिससे लोगों को अनेक तरह के नैतिक और आत्मिक लाभ मिलने लगते हैं । यहाँ ऐसे उदाहरण प्रस्तुत हैं जिनसे यह पता चलता है कि गायत्री उपासना से मिलने वाले लाभ कई बार ऐसे भी होते हैं जिन्हें एक तरह से असम्भव ही मान लिया गया होता है ।

आत्मबल की प्राप्ति

असाध्य पित्त रोग के कारण मन में पूरी तरह मृत्यु भय सवार रहता था । गायत्री उपासना से वह अब पास नहीं भी फटकता । सोचा जिस शक्ति ने अभय दान दिया उसका प्रकाश फैलाऊँ । सन् ७२ से सन् ७७ तक प्रतिवर्ष पहले वर्ष से कुछ न कुछ अधिक ही काम होता । इस वर्ष कुछ ऐसी परिस्थितियाँ बनीं कि कुछ काम ही नहीं हो पाया । मैंने फिर माँ को पुकारा उन्होंने मुझे फिर आत्मबल दिया और विगत कुछ समय में ही पत्रिकाओं की संख्या पिछले वर्ष से दुगुनी बढ़ गई । अभी तो आधे से अधिक वर्ष पड़ा है ।

— कँवल धर साहू, मड़वा

बलि प्रथा बन्द

बात अंवागढ़ नैकी ग्राम की है । एक बार मुझे यहाँ नवरात्रि अनुष्ठान करने का अवसर मिला । यों माँ ने मुझे पग-पग पर संकटों से बचाया है पर इस बार मैंने अपने लिये कोई इच्छा नहीं की। बात यह थी कि यहाँ के भूतपूर्व राजघराने में नवदुर्गाओं में बलिप्रथा की वर्षों पुरानी परम्परा चली आ रही है । समूचे अनुष्ठान में एक ही विनय करता रहा—माँ ऐसी क्रूर पूजा क्यों स्वीकारती हैं । इसे तो बन्द कराइये माँ ! दुर्गा अष्टमी का दिन आया लोग प्रतीक्षा करते रह गये और सचमुच उस दिन पशु बलि नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

हुई, यही नहीं यह प्रथा सदैव के लिये बन्द हो गई । इस सबकी प्रेरणा का आधार ढूँढ़ने पर यही लगा कि माँ गायत्री वस्तुतः सर्व समर्थ हैं ।

—रामदयाल यादव अंवागढ

रात और दिन का अन्तर

आर्थिक अभाव के कारण मैट्रिक से आगे न पढ़ सका। टाटा कम्पनी में कुल ९५ रु. प्रति मासिक की लंगड़ी-लूली सर्विस मिली । इन्हीं दिनों पू. गुरुदेव के सम्पर्क में आकर गायत्री उपासना प्रारम्भ की । एक दिन प्रेरणा हुई कि और पढ़ना चाहिये । दिन में नौकरी रात में पढ़ाई, चार वर्ष में बी. ए. उत्तीर्ण कर लिया और अब इसी कम्पनी में सात सौ रुपये से अधिक की सर्विस कर रहा हूँ ।

—गणेश दत्त शर्मा, टाटानगर

दुर्व्यसनों से मुक्ति

बाल्यावस्था में ही पड़ गई नशेबाजी की कुटेव इस जीवन में पिंड छोड़ेगी, ऐसा दुराशा मात्र लगता था किन्तु जब से गायत्री का अंचल पकड़ा मस्तिष्क में मंथन प्रारम्भ हुआ और वह बढ़ता ही गयाय । एक दिन वह भी आया जब तीव्र मनोबल जाग्रत हुआ और नशे-बाजी ऐसे छूट गई जैसे सर्प की केंचुल । अब मन सतोगुणी चिन्तन और अन्तःकरण दिव्य अनुभूति से ओत-प्रोत बना रहता है जिसकी अभिव्यक्ति संभव ही नहीं ।

—श्याम सुन्दर मिश्रा, इन्जीनियर देवधर (बिहार)

प्रधान का पद मिला

मेरा जन्म जिस परिवार में हुआ उसमें मेरे बाबा की पीढ़ी से कोई भी शिक्षित नहीं रहा । मैंने किसी तरह कक्षा चार तक की शिक्षा पाई थी । किन्तु खेती जैसे धन्धे में फँसे होने के कारण उस शिक्षा का मेरे लिये न कोई महत्व था न उपयोग । बात सन् १९५७ की है । मथुरा में होने वाले सहस्र कुंडी यज्ञ के सिलसिले में गायत्री परिवार से मेरा सम्बन्ध स्थापित हुआ । गायत्री अंक पढ़ने से मेरी श्रद्धा फूट पड़ी, और मैंने गायत्री उपासना प्रारम्भ कर दी ।

एक वर्ष बाद ठीक उसी दिन, जिस दिन से मैंने उपासना प्रारम्भ की थी, एकाएक मन में आया कि जीवन को यों ही पेट और बच्चे पैदा करने में गँवा देने में कोई सार नहीं है, अपनी योग्यता बढ़ाने की भी बात मन में उठी और उस दिन से नियमित रूप से सायंकाल दो घण्टे पढ़ाई का अभ्यास कर दिया । पड़ोसी लोग हंसते गाँव वाले ताने कसते—बूढ़े तोते पढ़ने चले हैं । पर सचमुच तोता पढ़ गया । पहले जूनियर हाई स्कूल, फिर हाई स्कूल की प्राईवेट परीक्षा दी, जिसमें प्रथम श्रेणी आई । उसी वर्ष पंचायतों के चुनाव हुए । जो लोग पहले मेरी हंसी उड़ाते थे उन्हीं ने ही मुझे प्रधान पद पर खड़ा किया और मैं निर्विरोध चुन लिया गया । इससे अन्य लोगों में भी गायत्री उपासना के प्रति श्रद्धा बढ़ी । यह सब में माँ की कृपा मानता हूँ ।

मैंने अपने समूचे गाँव को साक्षर बनाने का निश्चय किया। फलस्वरूप पांच वर्षों से नियमित प्रौढ़ पाठशाला चल रही है । अब तक हजारों लोगों तक गायत्री उपासना का प्रकाश फैलाने में सफलता मिली है । माँ ने जितना मुझे दिया वह ऋण इसी जीवन में उतार दूँ इस प्रयत्न में लगा हूँ ।

—श्याम सुन्दर, बैजलपुर

आत्मानुभूति से आत्म शान्ति

गायत्री उपासना प्रारम्भ करने के बाद से ही अनेक व्यक्तिगत व पारिवारिक कठिनाइयों में सहायता मिली है । किन्तु यह सब मेरे लिए गौण है । मैंने उपासना काल में कई बार यह अनुभव किया कि मेरे भीतर कोई इतना तेज बल्ब जल रहा है जिसकी चकाचौंध बर्दाश्त कर सकने में मेरी आँखें समर्थ नहीं हैं । जब ध्यान टूटता तो सारा शरीर गर्म अनुभव होता है । कुछ देर बाद यह गर्मी, स्फूर्ति, सक्रियता, प्रसन्नता और मधुरता में बदल जाती है । यह अनुभूतियाँ अत्यधिक सुख और शान्ति प्रदायक हैं ।

— जगदीश प्रसाद विश्वकर्मा दुर्ग

शीतल छाया अब मिली

वितृष्णा और भटकाव के १७ वर्षों को मुड़क देखता हूँ तो हृदय काँप उठता है । गायत्री उपासना का कोई भौतिक चमत्कार दिखाई भले ही न दिया हो किन्तु माँ ने जो शक्ति, साहस और निर्भयता प्रदान की है उसकी तुलना में भौतिक सफलताएँ मेरे लिए तुच्छ हैं । अपने स्वार्थों तक सीमित रहने की संकीर्णता परमार्थिक संवेदना में बदल गई है । मेरी साध अब यह है कि दूसरे लोग भी इस महाशक्ति के सम्पर्क सान्निध्य में आयें और हीरे जैसे चमकदार जीवन को जंग लगने से बचायें ।

— एस. आर. भारद्वाज, गुना (म. प्र.)

कुछ और पाने की इच्छा नहीं रही

विवाह के १० वर्ष बाद तक भी सन्तान नहीं हुई तो घर वालों से उपेक्षा मिलने लगी । एक दिन बहुत

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करुण स्वरों से माँ को पुकारा, भले ही पुत्री दें पर बाँझ होने के कलंक से बचायें । ठीक नौ माह बाद पुत्री की प्राप्ति हुई और हम दोनों का विषाद् जाता रहा । अनेक तरह की करुण कठिनाइयाँ और उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, पर आज उनकी चिन्ता की अपेक्षा माँ की दया दृष्टि उनकी अनन्य भक्ति की ही भावना बनी रहती है।

—श्री व श्रीमती डॉ. एस. वी. गर्ग, भोपाल

जीवन और सत्य परस्पर घुल गये

गायत्री उपासना प्रारम्भ किये मुझे एक दो वर्ष हुये थे कि मुझे अपने शरीर के भीतर विलक्षण हलचल प्रतीत होने लगी । गृहस्थ होते हुए भी मैंने एक वर्ष तक पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया । उस अवस्था के मेरे अनुभव अत्यधिक सुखद हैं । जाग्रत अवस्था में ही कई तरह की मधुर ध्वनियाँ सुनना, स्वप्नों में मनोरम दृश्य देखना, यह सामान्य क्रम जैसा हो गया है। इससे मुझे आत्मिक आह्लाद और आत्मा की अमरता में विश्वास के दो बहुमूल्य रत्न मिले हैं । ऐसा लगता है मेरे जीवन में सत्य समा गया है । कदाचित वह स्थिति प्रकट कर दिखा सका होता तो लोग गायत्री उपासना का महत्व साकार देख लेते ।

—बदीलाल स्वर्णकार एडवोकेट, नरसिंह गढ़

फिर भूल न हो

गायत्री उपासना से ''सविता के प्राणों से सम्बन्ध'' की बात लोगों ने पढ़ी होगी किन्तु मैंने सीधे सविता से शक्तिपात का प्रत्यक्ष अनुभव किया है । उन दिनों अपने नेत्रों में चमकते ज्योति पुरुष को देखकर अपनी वाणी में छलकते प्राण की सुगन्ध से स्वत: आत्म विभोर हो उठता था, किन्तु मन में छुपे किसी खोट ने आक्रमण किया और उस उपलब्ध प्राण-शक्ति का दुरुपयोग प्रारम्भ हो गया । जब तक भूल मालूम हो तब तक सब कुछ खो गया था । किन्तु पछताकर भी क्या करता ?

अब फिर अपनी मंजिल की ओर चल पड़ा हूँ । अब बाड़ लगाने की अपेक्षा अपने को सम्भालने की तत्परता अधिक है ताकि फिर वैसी भूल न हो ।

— गोकुल प्रसाद त्रिपाठी, नरसिंह गढ़ (म. प्र.)

जप में आनन्द

गायत्री उपासना में बहुत आनन्द आता है । प्राण-संचार साधना में कई बार मुझे ऐसा लगा है कि पू. गुरुदेव सचमुच में समीप है ।

—रामस्वरूप तिवारी, कोटा

माँ ने बचाया

गायत्री उपासना के कारण डॉक्टर होते हुए भी मेरी जीवन रेखा निरन्तर उस लक्ष्य की ओर मुड़ती जा रही है जिसे संतों का जीवन कह सकते हैं ।

एक बार स्वप्न में मुझे माँ का आदेश मिला कि अमुक व्यक्ति को हटा दो। यह बात मेरे मन पर गम्भीरता से तब तक छाई रही जब तक उसे हटा नहीं दिया। पीछे ज्ञात हुआ कि वह सचमुच मेरा पारिवारिक जीवन नष्ट करने का प्रयास कर रहा था । माँ ने मुझे बचा लिया ।

— डॉ. एन. जी. चौधरी, काँसा बेल (म. प्र.)

आशंका मिटी, आस्था दृढ़ हुई

मेरे पतिदेव प्राय: शान्तिकुंज जाते रहते थे जब जब जाते मन आशंका से भर जाता—ये कब चिमटा लें और गेरुये वस्त्र धारण करें । इस बात से मैं मन ही मन घुलती रही ।

किन्तु जब वहाँ जाकर स्वयं सब कुछ देखा तो लगा भूल मेरी थी उनकी नहीं । अपनी अब तक की दूरी पर दु:ख भी हुआ । अब तो मैं स्वयं बड़ी श्रद्धा से माँ का आँचल पकड़े हूँ और दूसरों को भी प्रेरणा देती हूँ।

—श्रीमती विनय चतुर्वेदी, लखनऊ

अदृश्य सहायता

गाँव से आठ मील दूर एक गाँव है बालागाँव, वहाँ के परिजन श्री भागीरथ प्रसाद गौर ने अपने यहाँ शाखा स्थापित कराने का आग्रह किया । एतदर्थ गोष्ठी और गायत्री हवन का कार्यक्रम रख लिया गया। पर मैं बड़ा परेशान था कि कोई उपयुक्त वक्ता है नहीं, यदि ग्रामीण भिनक गये तो सारा गुड़ गोबर हो जायेगा । मैं इसी चिन्ता में था तभी सिराली के कार्यवाहक का पत्र मिला जिसमें उन्होंने श्री वासुदेव को भेजने की बात लिखी थी । इससे चिंता कुछ हद तक कम हो गई ।

श्री वासुदेव आ गये, दिन भर परामर्श किया, रात सोये तो बहुत मनोरम स्वप्न देखा, एक साफ स्वच्छ मकान देखा जहाँ पू. गुरुदेव खड़े थे, मैंने पूछा आप यहाँ कैसे, उन्होंने कहा तुझे बताने आया हूँ कि तू स्वयं कार्यक्रम सम्भाल, मैं तो तेरे साथ हूँ—नींद टूट गयी मैंने वासुदेव को जगाया और बालागाँव चल पड़े वहाँ जाकर जो कुछ देखा उससे हक्का-बक्का रह गया । यह वही मकान था जिसे स्वप्न में देखा था,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यहीं कार्यक्रम होना था, मेरा मन अपूर्व विश्वास से भर गया। तब तक हरदा और पिरली के भी कार्यकर्ता आ गये ऐसा बढ़िया कार्यक्रम हुआ कि प्रतिक्रियावादियों का विरोध धरा रह गया । आज इस क्षेत्र में ५ सक्रिय शाखायें हैं । ९ कुंडी यज्ञ और देव कन्याओं का भी आयोजन हो चुका है । माँ पंगु को पहाड़ पर चढ़ा दें तो आश्चर्य क्या ?

—नर्मदा प्रसाद गौर, दीपगाँव खुर्द (होशंगाबाद)

शारीरिक कष्ट से छुटकारा

लम्बा समय अस्पतालों और सफाखानों में गुजार दिया, पर बीमारी दूर होने के बजाय और समीप ही आती गई । कोई समझ ही नहीं पाता था, रोग क्या है। और मैं घुलता जा रहा था । सन् ६५ तक यही स्थिति रही, हजारों रुपये इलाज में नष्ट कर दिये और समझ लिया किसी भूत-प्रेत का चक्कर है । किन्तु इसी बीच गायत्री तपोभूमि मथुरा के सम्पर्क में आकर गायत्री उपासना प्रारम्भ की और रोग अपने आप घटता-कटता चला गया । उस देव शक्ति को पाकर मैं अपने को धन्य अनुभव करता हूँ । अब मिशन को समर्पित होकर सेवा में दे रहा हूँ ।

— गोपाल लाल सोमाणी माँडलगढ़ (राज.)

साधना से साहस

ब्रह्मवर्चस् चान्द्रायण साधना के बाद से अस्त-व्यस्त मन:स्थिति का अन्त हो गया और इस तरह का साहस पैदा हो गया है कि अब गाँव की महिलाओं को भी कर्मकाण्ड का प्रशिक्षण दे रही हूँ । ४-५ मील बाहर चले जाने पर भी भय नहीं लगता । हर क्षण माँ का संरक्षण साथ अनुभव होता है ।

—लक्ष्मीबाई, भटगाँव (म.प्र.)

सर्वत्र सफलता

यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे प्रारम्भ में ही महा-शक्ति का आश्रय मिल गया । उन्हीं की कृपा का फल है कि मैंने प्रत्येक परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की । अन्तिम वर्ष तो स्वर्ण पदक भी मिला। छात्र संघ का महासचिव, छात्रावास का नायक रहा, पर राजनीति की गन्दगी स्पर्श न कर सकी, यह उन्हीं की प्रेरणा का प्रसाद है । सच्चाई और ईमानदारी का ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करना चाहता हूँ ताकि लोग मेरी वाणी से नहीं कर्तव्य से नसीहत लें ।

—सी. एल. नेमा, खंडवा

ब्रह्मवर्चस के अनुभव

चान्द्रायण व्रत मेरे जीवन की अपूर्व उपलब्धि बन गई है । इन दिनों के स्वप्न भूलते नहीं । भोजन की मात्रा घटने से प्रारम्भ में तो कमजोरी आई, वह अन्तिम दिनों न केवल दूर होती गई अपितु रक्ताल्पता और उससे होने वाले अनेक शारीरिक दोष स्वत: दूर हो गये । मानसिक स्फूर्ति और आत्मिक अनुभूति के दिव्य लाभ उससे इतर है ।

—नारायण गुलाब चंद बंसवाल

मुकदमें में जीत

मेरे कुछ विभागीय अधिकारियों ने षड़यन्त्र कर मुझे निलंबित कर दिया और मुकदमा चला दिया । मेरे कारण यह अधिकारी मनचीती नहीं कर पाते थे, यह उसी का प्रतिफल था । पू. गुरुदेव से बात बताई तो उन्होंने यही कहा—बेटे ! जिसने तुझे अच्छा मनुष्य बनना सिखाया उस पर भरोसा रख, मैं तेरे साथ हूँ ।

जब सारी परिस्थितियाँ इस सफाई से मेरे विपरीत गयीं थीं कि किसी को मेरे निरपराध होने का विश्वास ही नहीं हो सकता था पर बहस के मध्य मेरे वकील के मुँह से कुछ ऐसे अकाट्य तर्क निकल गये जो पहले उसके भी दिमाग में नहीं थे । मैं निर्दोष बरी हुआ । ऐसी सैकड़ों घटनायँ हैं जबकि मुझे माँ का सहारा मिला है ।

जय नरेन्द्र गोपाल नमला राम सुन्दर (इटावा उ.प्र.)

दमे से मुक्ति

बीस वर्ष तक लगातार कष्ट झेलते रहने और डॉक्टरों की गोलियाँ खाते रहने पर भी भयंकर दमे से मुक्ति नहीं मिल सकी । जीवन एक प्रकार से भार बन गया और यह मान बैठा था कि अब उसे किसी तरह ढोना भर है । तभी अपने एक परिचित से पू. गुरुदेव का परिचय मिला और गायत्री उपासना के सम्पर्क में आया । नियमित उपासना के साथ सप्ताहिक हवन का क्रम प्रारम्भ किया । उपासना में इतना रस आया कि उन क्षणों में रोग और कष्ट की याद भी न रहती । पर लगता है वे अपने उपासक की भली-बुरी पर आप दृष्टि रखती हैं । कुछ दिनों में न केवल दमे से मुक्ति मिली अपितु स्वास्थ्य भी अब सवाया है ।

—शिवकुमार खरे—कानीकोट

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

माँ के प्रताप से जीवन के संताप मिटे !

हर किसी के जीवन में अनेकानेक समस्याएँ आती ही रहती हैं, कोई उनका हँसकर सामना करता है और कोई रोते कलपते, झींकते-झींकते उनका बोझ उठाता है । गायत्री उपासना से न केवल समस्याओं का सामना करने वाला मनोबल जुटता है, अपितु कई बार समस्याओं का ऐसा समाधान भी प्रस्तुत हो जाता है, जिन्हें चमत्कार ही कहा जाना चाहिए ।

नष्ट हुई सुख शान्ति मिल गई

मेरी नौकरी छूट गई थी । जीवन निर्वाह का कोई साधन नहीं था । सारे मित्र भी मुँह मोड़ चुके थे और कई मुसीबतों ने आकर घेर लिया था । इन सभी कारणों से मैं जीवन से निराश हो गया था । ऐसी संकटग्रस्त परिस्थिति में ही मैं पूज्य गुरुदेव के सम्पर्क में आया तथा अपनी इस विषम परिस्थिति से पार पाने का किनारा पाया । वह किनारा था माँ गायत्री । उनका आश्रय पाकर मेरा जीवन पुनः हरा-भरा हो गया । नौकरी पर पुनः लौटकर आ गया तथा परिवार में सुखशान्ति का वातावरण छा गया ।

—हरिकृष्ण शर्मा मौं, भिण्ड (म. प्र.)

आर्थिक समस्या सुलझी

पढ़ाई समाप्त करने के बाद मैं बेकार बैठा था । घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी । ऐसे ही समय में गायत्री उपासना की प्रेरणा यहाँ के गायत्री उपासकों से मिली । मैंने उपासना तो प्रारम्भ कर दी और पूज्य गुरुदेव के दर्शन भी किये । उन्हें अपनी समस्या बताई। गुरुदेव ने सहायता का आश्वासन देते हुए गायत्री उपासना की प्रेरणा दी । उनकी प्रेरणा से मैंने उपासना आरम्भ कर दी और उसका फल केवल आठ दिनों में ही मिला । कठलाल में मुझे नौकरी मिल गई तथा मैं चिन्ताओं से मुक्त हो गया । अब मैं गायत्री का नैष्ठिक उपासक एवं मिशन का सक्रिय कार्यकर्त्ता हूँ । कई लोगों को उपासना में निरत कर चुका हूँ ।

—भानुप्रसाद चिमनलाल दवे, कठलाल खेड़ा(गुज.)

पुनः नौकरी मिली

सरकारी उलट-फेर के कारण मेरी तथा मेरे पुत्र की नौकरी एक साथ छूट गई । परिवार पालने का अन्य कोई साधन नहीं था । पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा से हमने माँ की उपासना प्रारम्भ की और पुनः नौकरी के लिए आवेदन-पत्र प्रस्तुत किए । माँ की कृपा जिस पर होती है उस पर सभी कृपा करते हैं । उच्च अधिकारियों ने हमारी प्रार्थना सुनी और पुनः नौकरी में लगा दिए गए ।

—लेखाराम खरे, धगँवा हमीरपुर(उ. प्र.)

परीक्षा में सफलता मिली

मेरा बेटा नारायन, ग्रामीण राष्ट्रीय छात्रवृत्ति परीक्षा में बैठा था । इसमें उत्तीर्ण होने की कोई सम्भावना नहीं थी लेकिन माँ की कृपा ऐसी हुई कि वह उसमें सफल हो गया ।

—रेणुधरराय, पौडेंयाहाट (बिहार)

फैसला मेरे पक्ष में

रेलवे विभाग में मैं सेवारत था । अपने प्रति बरती गई अनीति के विरुद्ध प्रार्थना पेश की थी । इसका केस पटना हाई कोर्ट में चला । अन्य उच्च अधिकारियों द्वारा पेश किए गए सम्बन्धित कागज रद्द कर दिए गए तथा कोर्ट ने मेरे ही पक्ष में न्याय दिया । साथ ही मेरी पदोन्नति भी हुई । इस केस में जीतने की मुझे स्पष्ट आशा नहीं थी । लेकिन माँ गायत्री का आँचल पकड़ने वाला क्या कभी हार भी सकता है ? और वह भी सत्य का सहारा लेने वाला । मेरा तो विश्वास है कि माँ हमेशा ही सत्य की रक्षा करती है । इसमें देर भले ही लगे ।

—जनार्दनसिंह बेगमपुर, पटना (बिहार)

भीड़ शान्त हो गई

होली पर्व के अवसर पर एक छोटे बालक की थोड़ी गलती पर मारपीट होने की नौबत आ गई । सारे गाँव भर के लोग मेरे आँगन में डण्डे लेकर आ धमके थे । दृश्य की भयंकरता से मेरा मन काँप उठा । किंकर्तव्यविमूढ़ होकर मैं पूजास्थली के पास खड़ा हो गया । अश्रुपूरित नेत्रों से माँ से प्रार्थना की । तब माँ की दिव्यवाणी सुनाई दी 'बाहर जाओ, डरो मत, सब शांत हो जायेगा ।' इस पर पूर्ण विश्वास कर मैं बाहर निकला । आश्चर्य यह हुआ कि सभी लोग शान्त हो गए तथा उस भीड़ की भयंकरता समाप्त हो गई । उसी दिन से माँ पर अटूट श्रद्धा एवं विश्वास जम गया । उनकी ज्ञान ज्योति जीवन पर्यन्त जलाते रहने का कार्य कर रहा हूँ ।

—एम. पी. तिवारी, चाटपारा (म.प्र.)

भयानक दुर्घटना में प्राण रक्षा

अम्बिकापुर से वापिस आते समय जिस बस से मैं आ रहा था दुर्घटनाग्रस्त हो गई । दुर्घटना में मोटर पूरी तरह उलट गई थी तथा काफी दूर तक घिसटती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हुई गई थी । उसमें किसी भी यात्री का सकुशल बच निकलना मात्र कल्पना ही कही जा सकती थी । उस मोटर का सारा ढाँचा टूट गया था तथा कई यात्री गम्भीर रूप से घायल हुए, कुछ मर भी गए । लेकिन मैं ही एक ऐसा यात्री था जिसे वहाँ मात्र थोड़ी-सी खरोंच भर लगी थी । मुझे तो ऐसा लगा कि किसी अज्ञात किन्तु समर्थ सत्ता ने मुझे अपनी गोद में उठा लिया हो । इस भयंकर दुर्घटना में भी अपनी प्राण रक्षा होने को मैं माँ की कृपा ही समझता हूँ ।

—विष्णुदत्त गुप्त अधिवक्ता, बैकुंठपुर (म. प्र.)

काँच भी पच गया

एक बार अनजाने में ही भोजन के साथ छोटे-छोटे काँच के कण खा लिए गए । जब ये टुकड़े दिखाई दिए उसके बाद उस भोजन को नहीं खाया गया । लेकिन इस घटना से परिवार के सभी सदस्य बड़े चिन्तित हो गये थे । उस रात किसी को नींद नहीं आई तथा पूरी रात-भर माँ गायत्री का ही ध्यान किया गया । इसका ऐसा चमत्कार हुआ कि उस खाए गए काँच से कुछ भी हानि नहीं हुई तथा सभी सदस्य स्वस्थ ही बचे रहे । इस घटना को औरों ने सुना तो सभी को आश्चर्य हुआ ।

—मुरलीधर चतुर्वेदी, जबलपुर (म. प्र.)

दुर्घटना में प्राण रक्षा

बेटी सुषमा की शादी कर सकना मेरे वश की बात नहीं थी । न तो उसकी शादी ही तय होती थी और न ही मेरे पास उतना धन ही था । लेकिन उसकी शादी सहज रूप से ही सम्पन्न हो गई । उसी समय की एक घटना है कि बिजनौर स्टेशन से सुषमा एवं उसके जेठ रवाना हो रहे थे । रेलगाड़ी में चढ़ते समय उसके जेठ का हाथ डण्डे से छूट गया । गाड़ी रवाना हो गई थी । वे पटरी पर ही गिर पड़े । इसी तरह पाँच डिब्बे गुजर गए । किसी का ध्यान उनकी ओर गया और उन्होंने गाड़ी की जंजीर खींची । प्रायः सभी का यह विश्वास था कि वे बुरी तरह कट गये होंगे । लेकिन गाड़ी रुकने पर देखा कि वे बिल्कुल सुरक्षित हैं ।

—वेदप्रकाश अग्रवाल, बिजनौर (उ. प्र.)

जाऊँ कहाँ तजि चरण तुम्हारे

जब से गायत्री की उपासना आरम्भ की, उसके बाद से ही मेरा जीवन सुखमय बना । सर्वप्रथम सबालक्ष का अनुष्ठान सम्पन्न किया। इसके प्रत्यक्ष चमत्कार देखने में आए । मुझे शासकीय औषधालय में कम्पाउण्डर की नौकरी मिल गई । मेरी निष्ठा माँ के प्रति और भी अधिक बढ़ी । पूर्ण श्रद्धा के साथ साधना करने लगा । एक वर्ष के बाद ही मेरी उन्नति हो गई । एक दिन की घटना है—सामान्य-सी बात पर ही एक घनिष्ठ मित्र क्रोधित हो गए तथा उसी आवेश में उन्होंने ईंट फेंककर मुझमें मारी । ईंट मेरी खोपड़ी में लगी । उस प्रहार को देख कर देखने वाले सभी को विश्वास हो गया था कि सिर फट गया । लेकिन आश्चर्य यह कि मेरा कुछ भी नहीं बिगड़ा । ऐसी रक्षक माँ के चरणों को छोड़कर और कहाँ जाएँ ? मेरा तो विश्वास है कि इससे समर्थ सत्ता और कोई नहीं है ।

—छेदीलाल शर्मा वैद्य, बैकुठाश्रम खड्डी (म. प्र.)

भयंकर दुर्घटना मात्र स्वप्नवत्

मैं कालेज से लौट रही थी । मेरी साइकिल के आगे और पीछे एक-एक टैम्पो थी । मेरी साइकिल एक बैलगाड़ी के बराबर आ गई । दुर्भाग्य ही कहना चाहिए मेरी साइकिल का पिछला पहिया बैलगाड़ी के पहिये से टकराया । साइकिल का सन्तुलन बिगड़ गया। मैं वहाँ पर ही गिर पड़ी । साइकिल हाथ से छूट गई । मेरे पैर के ऊपर से गाड़ी का पहिया गुजर गया । उस स्थिति में मेरी आँखों के सामने अँधेरा छा गया । मैं पूरी तरह चीख भी नहीं सकी । मेरे प्राण भीतर ही भीतर माँ गायत्री को पुकार रहे थे । ''हे माँ ! तुझमें मेरी कुछ भी श्रद्धा हो तो विशेष चोट न आने देना ।'' और उस दुर्घटना के कारण उत्पन्न स्थिति की कल्पना से ही मैं बेहोश हो गई । उसके बाद में पता चला कि उसी समय कोई अपरिचित व्यक्ति आया, उसने मुझे उठाया और साइकिल के साथ घर पहुँचा दिया । मुझे शीघ्र अस्पताल भिजवाया गया । वहाँ ऐक्सरे से जाँच की गई । हड्डी नहीं टूटी थी । थोड़ी-सी सूजन तो आई थी वह भी तीन-चार दिनों बाद ठीक हो गई । यह दुर्घटना मुझे तो मात्र स्वप्नवत् ही लगी । शायद माँ की कृपा न होती तो उसी दिन जीवन लीला की समाप्ति ही थी ।

—कु. सुधा वैश्य, रतलाम (म. प्र.)

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वप्न द्वारा पूर्वाभास

किसी तकनीकी कारण से मुझे सेवा मुक्त कर दिया गया तथा वहाँ के व्यवस्थापक ने पुनः नियुक्ति करके सेवा में वापिस ले लिया । इसका पूर्वाभास मुझे पहिले ही स्वप्न द्वारा हो गया था । मुझे सेवा मुक्ति का आदेश मिला तब मुझे बहुत चिन्तित होना पड़ा था। मैंने, 'हारे को हरि नाम' के अनुसार ही माँ गायत्री का आश्रय लिया । उन्हीं की कृपा से मेरी नौकरी पुनः लग लई ।

—प्रभाकरकृष्ण ठोके, भिलाई (म. प्र.)

दुर्घटना थी कि चुम्बक

पांडुका मोटर स्टेण्ड की एक चमत्कारिक घटना है। पाँच वर्ष की एक कन्या एकाएक सड़क पर दौड़ती आई । सामने से एक एम्बेसडर कार आ रही थी । ड्राइवर अचानक कार रोक नहीं पाया । दुर्भाग्य कहिए बीच सड़क पर लड़की गिर गई और उस पर से कार चली गई । करीब २५ फुट दूर जाकर कार रुकी । ड्राइवर के होश उड़ गए और दुर्घटना को देखने वाले सभी लोग कांप गए । सभी का यही अनुमान था कि वह लड़की चकनाचूर हो गई होगी । लेकिन सभी आश्चर्य के साथ देख रहे थे कि वह लड़की तुरन्त ही उठकर भाग रही थी । लोगों ने उसे रोका । उसे देखा तो उसके कहीं खरोंच भी नहीं थी। बाद में पता लगा कि वह लड़की किसी गायत्री उपासक की है । तब से ही मैं भी माँ का नैष्ठिक उपासक बन गया ।

—नरायनप्रसाद साहू, राजिम

पदोन्नति हुई

जब से मैं माँ गायत्री की उपासना करता हूँ तब से ही मेरा जीवन सुधरा है । साथ ही जीवन में आने वाली अनेकानेक समस्याओं का समाधान भी चमत्कारिक ढंग से सुलझता रहा । होशंगाबाद से मेरा स्थानान्तरण पदोन्नति के आधार पर हुआ । इसे मैं माँ गायत्री की कृपा ही मानता हूँ ।

—वीरेन्द्र परिरहार, होशंगाबाद (म. प्र.)

मेरी तरक्की माँ की कृपा से

जब से मैं पूज्य गुरुदेव के सम्पर्क में आया हूँ तभी से नित्य साधना-स्वाध्याय करता हूँ । इससे मेरे जीवन में जो परिवर्तन हुआ, उससे मैं धन्य हो गया । शुरू में मेरी नौकरी ६५) मासिक पर कृषि उपज मण्डी, धंवा में लगी थी । साथ ही मैं उन्नति के लिए भी प्रयत्न करता रहा । कुछ दिनों बाद ही मेरी नियुक्ति स्टेट बैंक आफ इन्दौर में खजांची के पद पर हो गई । वहाँ मुझे ६५०) मासिक वेतन मिलने लगा । यह माँ गायत्री की कृपा ही है कि दो वर्ष के भीतर ही इतनी अधिक उन्नति हो गई । मैं माँ की इस कृपा का बदला तो चुका नहीं सकता लेकिन उसके आलोक का विस्तार करने में अपने आपको लगाए रखना ही कृतज्ञता समझता हूँ ।

—गोपाल पालीवाल, भीकनगाँव (म. प्र.)

दुर्घटनाओं में रक्षा

मेरे जीवन की कुछ ऐसी घटनाएँ हैं जिनसे मैं माँ की उपासना करने के लिए प्रेरित होती रही । एक बार मेरी धोती में आग लग गयी । उस घटना में मेरा जिन्दा बचना असम्भव ही था । एक बार की दुर्घटना है कि मैं रिक्शे में बैठ कर घर आ रही थी । उस रिक्शे की टक्कर कार से हो गयी । एक बार रेल में जेबकटों ने जेब काट लिया वे भागने ही वाले थे लेकिन किसी कारण से वे घबरा गये तथा वे उस राशि को वहाँ ही फेंक गये । इन दुर्घटनाओं से रक्षा करने वाली माँ गायत्री ही है । माँ का मुझ पर कितना स्नेह है यह सोच-सोच कर मेरा हृदय गद्‌गद् हो उठता है।

—प्रमीला, लखनऊ (उ. प्र.)

जाको राखे साइयां

जिस गांव में मैं रहता था उसी गांव के कुछ लोगों ने मुझे मारने के लिए कई षड़यन्त्र रचे । उनके षड़यन्त्रों से बच सकना असम्भव ही था । ऐसे विकट संकट में मैंने माँ गायत्री का आँचल पकड़ा । पूज्य गुरुदेव से भी आश्वासन मिला । उनके द्वारा भेजा गया रक्षा कवच, मैंने धारण कर लिया । माँ की साधना का ऐसा चमत्कारी प्रभाव हुआ कि लोगों द्वारा रचे गये सभी षड़यन्त्र विफल हो गये । इसी तरह पत्नी की असाध्य बीमारी से मुक्ति, गुम हुए बालक का सकुशल वापिस आ जाना ऐसी घटनायें हैं जो माँ गायत्री के प्रति निष्ठा में और अधिक सहायक हुई हैं । ऐसी जीवन रक्षक माँ को छोड़कर और कहाँ भटका जाये। यही मेरे जीवन की इष्ट बनी हैं ।

—बी. डी. कुकरेती-वाराणसी-५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

माँ की सहायता से भौतिक-सफलता

गायत्री उपासना से साधकों को पग-पग पर माँ की कृपा और अनुग्रह प्राप्त होता है । इस तरह के अनेक अनुभव लोगों को होते हैं । यहाँ उस तरह के कुछ अनुभव दिये जा रहे हैं ।

पूर्वाभास से सफलता

अँग्रेजी प्रश्न-पत्र के बारे में मुझे कोर्स तक की जानकारी नहीं थी अगले दिन परीक्षा थी और आज ही गायत्री यज्ञ, समझ में नहीं आ रहा था पढ़ूँ या यज्ञ में सम्मिलित होऊँ । अन्ततः वोट माँ के पक्ष में पड़ा और परीक्षा की चिन्ता किये बिना मैंने यज्ञ में भाग लिया । रात घर लौट कर गहरी नींद में सो गया ।

प्रथम प्रहर मैंने स्वप्न में प्रश्न-पत्र देखा, नींद टूटी तो वो प्रश्न पूरी तरह याद रह गये । पुस्तक में उन्हें ढूँढ कर सवेरे-सवेरे पढ़ लिया । परीक्षा भवन में पहुँचा तो मेरे विस्मय का ठिकाना न था, ५ में से प्रारम्भ के दो प्रश्न ठीक वही थे, पूर्वाभास के कारण मुझे परीक्षा में सफलता मिली ।

—श्याम सुन्दर सैनी, सकीर

मेरे अदृश्य सहायक, गुरुदेव और माँ गायत्री

पू. गुरुदेव से भेंट हुई तथा मेरा विद्यार्थी जीवन था, बुद्धि कमजोर थी, पढ़ने में मन नहीं लगता था उनकी प्रेरणा से मैंने गायत्री उपासना आरम्भ की और तब से आश्चर्यजनक रूप से मेरी बौद्धिक क्षमताओं का विकास हुआ और हर परीक्षा अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण की । अभी एम. कॉम. की परीक्षा देकर चुका था, परिणाम आने में देर थी तभी सर्विस के लिये बुलावा आ गया । लिखित परीक्षा के बाद प्रैक्टिकल परीक्षा भी ली गई, जो मेरे लिये अत्यन्त दुःसाध्य थी, मुझे ज्ञात नहीं उस क्षण मेरे मुँह से माँ बोली या पू. गुरुदेव, पर जब में वहाँ से चला तो अधिकारियों ने मुझे सफल घोषित करते हुये ''नियुक्ति-पत्र'' भी हाथ में थमा दिया । परीक्षा भी अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण की और परिणाम मिलते ही सर्विस में आ गया ।

—अशोक जानी, गोंडल

डूबने से बचा

उस दिन गंगाजी में अपार भीड़ थी । उत्साह में आकर मैं भी कई सीढ़ियाँ उतर गया और जैसे ही डुबकी मारी कि पानी के भयंकर भँवर में जा फँसा । अभी डूबने ही वाला था कि ऐसा लगा किसी ने हाथ पकड़ कर एक तरफ खींचा, मेरे हाथ में साँकल पड़ गई और मैं बाहर निकल आया । उस स्थान पर जंजीर की जानकारी न होते हुये भी माँ ने मेरी रक्षा की अन्यथा उस दिन प्राणान्त निश्चित था ।

—किशोर कुमार मोतीलाल परमार, साबरमती

किराये का मकान छूटा

जब भी माँ की उपासना करने बैठता या गुरुदेव के दर्शन करता, एक ही प्रार्थना करता—किराये के मकान से मुक्ति मिले । आर्थिक स्थिति अच्छी न होते हुये भी माँ की कृपा ऐसी हुई कि तीन वर्ष में ही अपना मकान बन गया और किरायेदारी से जान बची। धन सहयोग भी बिना ब्याज मिला यह भी उन्हीं की कृपा का फल है ।

—डा. सुखसागर लाल गुप्त, पीलीभीत

दमे से मुक्ति

प्रारम्भ सर्दी-जुकाम-खाँसी से हुआ और अन्त दमे की स्थायी बीमारी के रूप में । दस वर्षों तक आयुर्वेदिक, एलोपैथिक, होम्योपैथिक और प्राकृतिक सभी इलाज करा कर थक गया, किन्तु रोग ने पिण्ड नहीं छोड़ा । अपने बुरे कर्मों का प्रतिफल समझ कर इसे भोग रहा था । तभी एक दिन पू. गुरुदेव का परिचय मिला । उनकी प्रेरणा से गायत्री माँ का अंचल पकड़ा इसे चमत्कार न कहूँ तो क्या कहूँ कि जो रोग असाध्या सा लगता था व उपासना प्रारम्भ करते ही दूर हो गया । माँ की कृपा से दूसरा जीवन मिला जिसमें स्वास्थ्य भी है, शान्ति और सन्तोष भी ।

—हेमराज शर्मा, ग्राम हरदुआ, रीवां (म. प्र.)

दुर्व्यसन छूटे

गायत्री उपासना का प्रत्यक्ष प्रतिफल यह है कि मद्यपान की जो आदत छुड़ाये नहीं छूटती थी। वह उनका अंचल पकड़ते ही अपने आप छूट गई ।

—शिवनारायण सिंह गाप बोझ (पीलीभीत)

१० वर्ष से चली आ रही धूम्र पान की आदत मां गायत्री के प्रताप से ऐसे छूट गई जैसे साँप केंचुल छोड़ देता है ।

—हीरालाल, ग्राम सेवक पीलीभीत

माँ ने मेरे हठ की रक्षा की

गायत्री जैसी महाशक्ति को किसी शर्त से जोड़ना उचित तो नहीं है । किन्तु श्रद्धा वश जब-जब मैंने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हठ ठानी तो उन्होंने उसे पूरा किया है । उनकी कृपा से मैंने कई बार मृतकों में नूतन प्राण संचार होते पाया है ।

—ओम प्रकाश पाण्डेय बल्ली नगर (पीलीभीत)

प्राण घाती दर्द से मुक्ति

पेट और छाती में ऐसा भयंकर दर्द उठता था कि लगता था प्राण अब गये कि तब गये । इन्हीं दिनों उपासना की जानकारी हुई उसके फलस्वरूप जिसे अनेक डॉक्टर भी ठीक न कर पाये वह दर्द तो दूर हुआ ही अनेक दोष-दुर्गण भी अनायास ही छूट गये ।

—शिवदयाल जायसवा, बिरसा

माँ की कृपा, से जीवन दान

धर्मपत्नी का मेडिकल कॉलेज जबलपुर में ऑपरेशन हुआ, ऑरपेशन बड़ा था तो भी मेरी धर्मपत्नी, जो मेरी ही तरह गायत्री की अनन्य उपासिका हैं, को रत्तीभर भी घबराहट नहीं थी । ऑपरेशन के समय एकाएक उसकी हृदय गति रुक गई, डॉक्टर उन्हें मृत घोषित कर ही रहे थे कि एकाएक उनकी चेतना पुनः वापस लौटी उन्होंने बताया कि जब मेरे प्राण निकले तो मैंने बगल में खड़े पू. गुरुदेव को देखा, उन्होंने कहा—बेटी ! अभी तुझे बाल बच्चों की देख-रेख करनी है, तुझे मरने नहीं देंगे, वे मुझे एक दिव्य प्रकाश के सामने ले गये और ऐसा लगा कि वह चेतना मेरे अन्दर भर गई और मैं जाग रही हूँ—उनका यह वृत्तान्त सुनकर डॉक्टर भी विस्मित हुये बिना नहीं रह सके ।

—राम सेवक खँगार, जबलपुर

आर्त पुकार-कभी खाली न गई

मेरे जीवन की दो घटनायें ऐसी है, जिन्होंने गायत्री उपासना में मेरी आस्था पूरी तरह जमा दी है । एक बार पति के बीमार होने पर और दुबारा बड़ी पुत्री के प्रसव के समय, जब डाक्टर ने बताया कि प्रसव बिना बड़ा ऑपरेशन किये नहीं हो सकता । दोनों अवसरों पर मैंने सच्चे हृदय से माँ को पुकारा और उन्होंने मेरी सहायता की । माँ की कृपा से ही हमारा जीवन अब अत्यन्त निर्मल बन गया है ।

—मालती सिन्हा, गवा

कुसंस्कारों से छुटकारा

जब तक भगवती गायत्री का अंचल नहीं पकड़ा था मस्तिष्क कुविचारों की सराय बना हुआ था निरन्तर गन्दे-गन्दे विचार आया करते। मन की यह अस्वस्थता शरीर को भी दुर्बल किये हुये थी । जिस दिन से उपासना प्रारम्भ की और पू. गुरुदेव का आशीर्वाद लिया, गन्दे विचार न जाने कहाँ भाग गये । अब मन में परमार्थ पूर्ण विचार छाये रहते हैं । उपासना में इतना आनन्द आता है कि उसके सम्मुख सांसारिक सुख तुच्छ लगते हैं ।

—नवीन भाई जानी, गोंडल (सौराष्ट्र)

नियमित दिनचर्या

जब से गायत्री उपासना प्रारम्भ की, जीवन की अनियमितताये और अव्यवस्थायें एक-एक कर दूर होती जा रही हैं । समय, धन और साधनों का रत्ती भर भी दुरुपयोग हो जाये तो मन कचोटने लगता है । जीवन में व्यवस्था के फल स्वरूप सब प्रकार की शान्ति व प्रसन्नता बनी रहती है ।

—वाला प्रसाद, देपाल पुर

रोग-शोक से छुटकारे का मार्ग मिला

आस्था-श्रद्धा-विश्वास मन को ही नहीं शरीर और स्वास्थ्य को भी प्रभावित करते हैं । यही है वह कारण, जिससे सब प्रयत्न करके थक जाने के बाद गायत्री माता का आँचल श्रद्धापूर्वक पकड़ने से समस्याओं का सहज समाधान होने के उदाहरण दिखाई देते हैं । यहाँ ऐसी ही कतिपय अनुभूतियाँ प्रकाशित की जा रही हैं ।

अन्ततः माँ की शरण जाना ही पड़ा

मेरा पुत्र सालिकराम बीमार पड़ा । करीब आठ दिनों तक उसने कुछ भी नहीं खाया और न ही मुँह से कुछ बोला ही । कई डॉक्टरों से चिकित्सा करायी गई फिर भी आराम न हुआ । जब उसकी जीवन लीला सामप्त होने के निकट थी तब मैंने यहाँ के ही गायत्री उपासक से माँ की प्रार्थना करने का निवेदन किया । अपनी असमर्थता व्यक्त करते हुए उन्होंने मना तो किया किन्तु माँ की दया की स्मृति से उन्होंने माँ से प्रार्थना की ही तथा यज्ञ की भस्म रोगी के माथे पर लगाई गई । भस्म के स्पर्श से ही रोगी तुरन्त उठ कर बैठ गया और अपने मुँह से ही उसने दूध पीने की इच्छा प्रकट की । माँ की इस शक्ति का अनुभव कर मैं बड़ा लज्जित हुआ क्योंकि पहिले भी मुझे माँ का आँचल पकड़ने की प्रेरणा दी जा चुकी थी और मैंने इस पर विश्वास नहीं किया था । इस घटना ने मुझे चेतना दी।

—मनीराम ठाकरे खैरलाँजी (म. प्र.)

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

माँ ने मुझे बचाया

श्रीमती कपिला देवी के स्वप्न के अनुसार ही एक दुर्घटना घटित हुई और स्वप्न के आधार पर ही मेरी प्राण रक्षा हुई । जब मैं दिल्ली स्टेशन पर जालंधर जाने के लिए जनता एक्सप्रेस की प्रतीक्षा कर रहा था, तब किसी अनजान व्यक्ति ने मुझे सलाह दी कि काश्मीर मेल से यात्रा करना उचित होगा तथा उन्होंने कहा कि जनता का कोई भरोसा नहीं है । वह काफी देरी से वहाँ पहुँचायेगी । उनकी सलाहानुसार मैंने भी काश्मीर मेल से यात्रा सम्पन्न की और दूसरे दिन मुझे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब मैंने सुना कि दिल्ली से आगे जालधंर के बीच जनता एक्सप्रेस दुर्घटना ग्रस्त हो गई है और उसके ६ डिब्बे चकनाचूर हो गये हैं । मेरी इस रक्षा के लिए माँ गायत्री का ही अनुग्रह समझा । इस घटना के बाद ही मेरे परिवार के सभी सदस्य माँ के अनन्य उपासक बन गये ।

—मदनमोहन सारस्वत, जोधपुर (राज.)

ऑपरेशन सकुशल सम्पन्न हुआ

मेरे बड़े भाई को हार्निया की बीमारी हो गई थी । इस बीमारी के कारण उनको बहुत ही कष्ट था । डॉक्टरों द्वारा इसका ऑपरेशन किया जाना तय हो गया था । सभी लोग घबरा गये थे । मुझे बुलाया गया। माँ गायत्री की भक्ति के बल पर ही मैंने उन्हें सान्त्वना दी । धैर्य बँधाया, इससे सबको हिम्मत आई तथा ऑपरेशन की स्वीकृति दी गई । उस समय वहाँ अच्छे अनुभवी डॉक्टर थे । सभी ने बड़ी कुशलतापूर्वक शीघ्र ही ऑपरेशन सम्पन्न किया । कुछ ही दिनों बाद वे स्वस्थ हो गये । वहाँ पर अनुभवी डॉक्टर होते हुए भी स्वयं डॉक्टर भी इस ऑपरेशन के लिए विचार में पड़ गये थे । इसकी सफलता पर सभी को आश्चर्य हुआ ।

—जयन्तीलाल पण्डया, गाँधीधाम (गुज.)

पेट के दर्द से मुक्तिक्ष

करीब २० वर्षों से मैं पेट के दर्द से काफी त्रस्त था । इस बीच कई प्रकार की चिकित्सा करवायी गई। दवाइयों में ही आमदनी का बड़ा भाग खर्च होता था । ऐसे ही समय में मेरे साथी सुखराम ने मिशन का परिचय दिया और गायत्री की उपासना प्रारम्भ करने की प्रेरणा दी । माँ की कृपा बरसी और पेट का दर्द बिना दवाई के ही समाप्त हो गया । दवाइयों में खर्च होने वाला पैसा बचने लगा और मेरा जीवन सुख से बीतने लगा । करुणामयी माँ की उपासना करने की प्रेरणा सभा को दे रहा हूँ । मुझे दुःख उस समय होता है जब कोई आत्मविभ्रमी लोग माँ की गोद में बैठके इन्कार करते हैं तथा अनेकों, शंकाएँ करते हैं ।

—सेवकराम मास्टर खैरागढ़ (दुर्ग म. प्र.)

रोग से मुक्ति

मेरी धर्मपत्नी श्रीमती प्रभावती मानसिक रोग से पीड़ित थी । काफी चिकित्सा के बाद भी आराम न हुआ तब माँ गायत्री की शरण जाना पड़ा । उनकी शरण में जाने वाला कोई भी खाली हाथ नहीं लौटा तब मैं भी कैसे लौटता । माँ की कृपा हुई तथा बाद में जो भी चिकित्सा कराई गई उसमें पूर्ण रूप से सफलता मिली ।

—बंशीधर पंडा डमरा (म. प्र.)

बीमारी से मुक्ति

काफी वर्षों से मैं एलर्जी का रोगी था । अनेक प्रकार की चिकित्सा कराने पर भी कोई लाभ नहीं होता था । तब मैंने माँ का ही आश्रय लिया । श्रद्धा पूर्वक नियमित उपासना करता रहा । आश्चर्य यह कि पहले दबा लेते हुए भी रोग बढ़ता ही जाता था वही अब धीरे-धीरे बिना विशेष दबा के ही आराम होने लगा । इसके लिए स्वयं डॉक्टर भी आश्चर्य प्रगट करते रहे । जगत् जननी माँ के प्रति मेरी निष्ठा बढ़ती ही गई । माँ के इस दिव्य आलोक को अपने आप तक सीमित कैसे रख सकता था ? तब से ही मैं इस कार्य में लगा हूँ ।

—जयन्त सी. पटेल, बड़ौदा (गुज.)

केन्सर से मुक्ति

बड़नगर के सिविल अस्पताल में सेवा रत शारदा बाई को तीसरे दर्जे का केन्सर हो गया था । अस्पताल में भरती कराने पर भी उसे आराम न हुआ । तीन माह तक चिकित्सा चलती रही । रोग यहाँ तक बढ़ गया कि तीन दिनों तक रेडियम लगा कर जीवित रखा गया। सभी डॉक्टरों ने ऑपरेशन कराने की सलाह दी। किन्तु वे सभी ऑपरेशन करने डर भी रहे थे । मेरा विश्वास था माँ गायत्री इसकी रक्षा अवश्य करेगी। इसी उद्देश्य से मैंने अनुष्ठान सम्पन्न किया । न जाने क्या चमत्कार सा हुआ कि जब डॉक्टरों ने दुबारा परीक्षा की तो कहा कि अब ऑपरेशन की आवश्यकता नहीं है । रोग ही समाप्त हो गया है। वे बड़े आश्चर्य चकित हुए।

—चौधमल श्रोत्रिय, बड़नगर (म. प्र.)

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दौरे की बीमारी से मुक्ति

मेरी पुत्री रीता ग्यारह वर्ष की थी । तब उसे बुखार आया । बुखार की चिकित्सा की गई । चिकित्सा से बुखार तो समाप्त हो गया लेकिन दौरे की नई बीमारी समस्या बनकर सामने आ गई । कई बार तो प्राण घाती दौरे आते थे । इससे सभी परिवार वाले चिंतित थे । इसी बीच किसी गायत्री उपासक ने माँ गायत्री के यज्ञ की भस्म सेवन करने तथा उसकी उपासना करने की सलाह दी । ऐसा ही किया गया । देखा गया कि उससे आश्चर्यजनक लाभ हुआ । अब रीता पूर्ण स्वस्थ है । तभी से मेरा परिवार माँ गायत्री का उपासक है ।

—नरेन्द्रसिंह, सरगाँव (म. प्र.)

माँ की कृपा से स्वास्थ्य लाभ

हमारे गाँव के श्री दलजीत कौर भयानक बीमारी से ग्रस्त थे । कई तरह की चिकित्सा करने के बाद भी उन्हें कोई लाभ न हुआ । एक दिन मैं अचानक ही उनके घर पहुँचा तथा माँ गायत्री की उपासना करने की प्रेरणा दी। उनके लिए माताजी के पास से रक्षा कवच मंगवा दिया । माँ गायत्री का आँचल पकड़ने के बाद से उनका रोग धीरे-धीरे ठीक होने लगा तथा अब वे पूर्ण स्वस्थ्य हैं । अब वे नित्य ही गायत्री की उपासना करते हैं। साथ ही अन्य लोगो को भी इसकी प्रेरणा देते हैं ।

—केसरीचन्द्र शर्मा, कुल्लू (हि. प्र.)

ट्यूमर की बीमारी समाप्त

मेरे सीने में ट्यूमर की बीमारी थी । इसकी चिकित्सा कई डॉक्टरों ने की किन्तु आराम न हुआ । पूज्य गुरुदेव के संरक्षण में मैंने माँ गायत्री की उपासना प्रारम्भ की । उसके परिणामस्वरूप सीने के ट्यूमर जल गये । बाद में डॉक्टरों से जाँच कराई गयी । सभी ने एकमत से बताया कि ट्यूमर नहीं हैं ।

—श्रीमती सरला विद्याप्रकाश शुक्ला भोपाल, (म. प्र.)

श्रेय, सफलता और यश प्रदायिनी गायत्री उपासना

हमारे संरक्षण और मार्गदर्शन में विगत ५० वर्षों से लाखों व्यक्ति गायत्री उपासना कर रहे हैं। उपासकों की अनुभूतियों के विवरण प्राय: प्रतिदिन ही मिलते रहे हैं। उन्हें एक साथ प्रकाशित किया जाये तो १८ पुराण बन जायें, उनमें से कुछ इस तरह हैं—

श्रद्धा जीती, तर्क पराजित

जब से गायत्री उपासना प्रारम्भ की गई कई बार संकट आये और टल गये, किन्तु मेरी तर्क बुद्धि ने यह कभी स्वीकार नहीं किया कि इसमें भी कोई दैवी अनुग्रह हो सकता है ।

एक बार मेरे द्वितीय पुत्र चि. सुधाकर की आँख में चोट लग गई, आँख में कैट्रेक्ट बन गया, सरोजिनी नायडू हॉस्पिटल आगरा, में बच्चे का इलाज कराया। ऑपरेशन हुआ डॉक्टरों ने स्पष्ट बता दिया कि आँख में रोशनी तो आ ही नहीं सकती, गड्ढा न पड़े, बस यही प्रयास-शेष है। दुर्भाग्य से ऑपरेशन से दो दिन बाद ही आँख से खून रिसने लगा डॉक्टरों ने दो माह तक बिना करवट चित लेटे रहने को कह दिया । बड़ी दयनीय स्थिति थी। कष्ट देखते नहीं बना, सो भागकर पू. गुरुदेव के पास गया और बच्चे का भविष्य किसी भी प्रकार बचाने के लिए चरणों में गिर गया उन्होंने कहा तुम दोनों (मैं और मेरी धर्मपत्नी) घर जाकर गायत्री माता का लघु अनुष्ठान करा करो, बच्चे को हम सम्भाल लेंगे । आज्ञा मान कर हम दोनों घर आये । अनुष्ठान सम्पन्न कर सीधे आगरा पहुँचे तो यह देखकर आश्चर्य चकित रह गये कि जिसके लिये डॉक्टरों ने २ माह तक एक ही स्थिति में पड़े रहने को कहा था वह दरवाजे पर टहल रहा था, यही नहीं उसके आँखों में हल्की-हल्की रोशनी भी आ गई थी। बच्चे को चरण स्पर्श कराने गुरुदेव के पास ले गया। उन्होंने बच्चे को गायत्री तपोभूमि छोड़ देने को कहा, बच्चा एक वर्ष वहाँ रहा और इस अवधि में उसकी नेत्र ज्योति स्पष्ट हो गई, अब वह बैंक में कैशियर है और आठ सौ रुपये मासिक वेतन पाता है। इस घटना ने मुझे माँ का अनुग्रह मानने को विवश कर दिया ।

—रमेश चन्द्र पाण्डे, वैद्य (पढ़ाम मैनपुरी)

हित चिन्तक मार्गदर्शक मिले

१३ वर्ष का था तभी यज्ञोपवीत संस्कार करा दिया गया, ब्राह्मण परिवार में होने के कारण गायत्री की महत्ता तो खूब सुनने को मिलती थी, किन्तु अन्त:करण उससे भी कुछ अधिक जानने को इच्छुक था, पर उसके लिये कोई सुयोग नहीं जुट पा रहा था ।

इसलिए एम. ए. उत्तीर्ण कर प्रोफेसर भी हो गया । गायत्री उपासना करता तो था पर उसमें रस नहीं आता था । इसी बीच पू. आचार्य जी के साहित्य से सम्पर्क

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हुआ किन्तु पिताजी के रूढ़िवादी विचारों और कट्टर विरोध के कारण न तो उनका साहित्य पढ़ पाता था और भेंट का तो प्रश्न ही नहीं उठता था । एक दिन प्रातःकाल में उस समय-आश्चर्य चकित रह गया जब पिताजी ने स्वयं अपनी ओर से ही आचार्य जी के पास जाकर मन्त्र दीक्षा लेने की आज्ञा दे दी। मैंने पूछ ही लिया—पिताजी यह एकाएक परिवर्तन कैसे हुआ, तो उन्होंने बताया कि मैंने रात में एक सफेद वस्त्र धारण किये कुमारी कन्या के दर्शन किये । उसके मुख में विलक्षण तेज था । उन देवी ने मुझे विरोध के लिये फटकारा, उन्हीं ने ऐसा करने की आज्ञा दी । स्वप्न टूट जाने पर भी यह निर्देश मेरे मन-मस्तिष्क में तेजी से घुमड़ रहे हैं । इसे मैंने माँ की कृपा समझा । मथुरा जाकर गुरुदीक्षा लेकर विधिवत गायत्री उपासना प्रारम्भ की । आज हमें सब प्रकार की सुखा शान्ति और संतोष है ।

—प्रो. ओ. पी. मेहता, विद्यानग

माँ का शक्ति रूप

क्षेत्र में देवकन्याओं का कार्यक्रम था, वहाँ के लोगों ने मुझे भी सहयोग के लिए बुलाया था । मैंने अहंकार वश अनसुनी कर दी । ५-६ दिन शेष थे । एकाएक ऐसा लगा मानों किसी ने कान में चिल्लाकर कहा—कार्यक्रम में क्यों नहीं जाता । मैंने बैग उठाया और चल दिया । ५-६ दिन एक जुट होकर काम किया जिससे आयोजन बड़ी सफलता पूर्वक सफल हुआ । उस दिन मैंने अनुभव किया माँ से माँगना ही नहीं चाहिये, उनका काम भी करना चाहिये । करा तो वे शक्ति से भी लेती हैं ।

—नाथूराम उपाध्याय, बड़ौदा, डूँगर पुर (राज.)

ज्योति दर्शन का आनन्द

गायत्री उपासना प्रारम्भ किये कुछ ही दिन हुये थे सारे शरीर की नाड़ियों में विलक्षण हलचल और गर्मी अनुभव हुई । कुछ डर सा लगा पर उपासना भक्ति नहीं छोड़ी । धीरे-धीरे ऐसा लगा शरीर में कुछ विकार थे छँट गये और मस्तिष्क में शुद्ध ज्योति के दर्शन होते हैं मन में आनन्द छाया रहता था । गायत्री उपासना से जिस श्री समृद्धि की प्राप्ति होती है वह मुझे सब प्राप्त है ।

—अतीतसिंह डा. जड़ेगा, पड़धरी गुप्त

कुविचारों से पिंड छूटा

मक्खी-मच्छरों की तरह मन मस्तिष्क को घेरे रहने वाले कुविचार गायत्री उपासना प्रारम्भ करते ही ऐसे भाग गये जैसे सूरज निकलते ही अन्धकार भाग जाता है ।

—सिंहासन प्रसादसिंह, जागापाकर (बिहार)

उन्हीं की कृपा थी

परीक्षा के दिन समीप थे कि मेरी माँ का निधन हो गया । मेरे एक सहपाठी ओंकार को एक बदमाश ने चाकू मार दिया, पढ़ाई अच्छी तरह नहीं हो सकी, उत्तीर्ण होने की चिन्ता सताने लगी ।

तभी गायत्री माँ की शक्ति का परिचय मिला । सब कुछ छोड़कर दोनों ने नवशक्ति का ९ दिन का अनुष्ठान सफल किया । परीक्षा दी । मैं प्रथम श्रेणी में और मेरा सहपाठी द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हो गये । तब से आज तक गायत्री उपासना में मेरी श्रद्धा बढ़ती ही गई ।

—मेहरबान सिंह

दुर्व्यसनों से मुक्ति

जो बुराइयाँ जीवन का अंग बन गईं थीं, तीन वर्ष हुये जब से गायत्री उपासना प्रारम्भ की गई सत्य बोलने का वहम पैदा हुआ है, मन में विलक्षण शान्ति है ।

—रामनारायण शर्मा, झाँकरी (म. प्र.)

भयंकर कष्ट से मुक्ति

६ माह से न तो रात में नींद आती थी, न दिन में तरह-तरह की नशीली गोलियाँ और इंजेक्शन लिए पर सब नाकाम रहा । एक दिन गायत्री परिवार के एक सदस्य से भेंट हुई उन्होंने मेरे ही घर-पर गायत्री हवन रखा, हवन समाप्त होने के बाद ऐसी नींद आई कि ६ माह की सारी थकावट दूर हो गई । उसी दिन से माँ का आँचल पकड़ा है जो अब मर कर भी छूटेगा नहीं। गायत्री उपासना से ऐसे अनुभव हुये हैं जिनका वर्णन करूँ तो लोग शायद ही विश्वास करें, अतएव अपनी उपलब्धि अपने तक ही सीमित रहने में आनन्द है ।

—भगवानदास गुप्त, ग्वालियर (म. प्र.)

सदा-संरक्षिका

आपसी रंजिश के कारण लोगों ने घर में सेंध कटवाई पर माँ ने उन्हें डराकर भगा दिया, मारने का प्रयास किया पर विफल रहे, अन्त में गोली ही मार दी, उस समय कुछ इस तरह आश्चर्यजनक ढंग से बाल-बाल बचा कि शत्रु पक्ष ने भी यह स्वीकार किया कि उसकी भगवती गायत्री स्वयं रक्षा करती है।

—राजवीर सिंह (अलीगढ़)

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पुत्र रत्न की प्राप्ति

मुझे गायत्री उपासना करते देखकर मेरे मकान मालिक अक्सर कहा करते भारद्वाजजी । मेरी पुत्री के कोई संतान नहीं है, इस कारण ससुराल में उसका सम्मान नहीं होता, आप कोई उपाय बताइये । मैंने लड़की को गायत्री उपासना की सलाह दी, अभी उपासना प्रारम्भ किये ३ माह ही गुजरे थे कि उसने गर्भ धारण किया और एक सुन्दर स्वस्थ बालक को जन्म दिया । तब से माँ में मेरी आस्था और दृढ़ हो गई।

—ओम प्रकाश भारद्वाज, ग्वालियर (म. प्र.)

सुयोग आप ही बना

पू. गुरुदेव की आज्ञा थी तुम्हें सभा में अवश्य आना है । आत्मा रोती थी महीनों चक्कर काटने पर भी अवकाश स्वीकृत नहीं होता, जा कैसे पाऊँगा । माँ का स्मरण कर आवेदन-पत्र दे दिया । यह जीवन का पहला अवसर था जब ४-५ ही दिन में अधिकारियों ने एक माह का अवकाश बिना किसी दिक्कत स्वीकृत कर दिया ।

—डा. रतन सक्सेना, सतना (म. प्र.)

बुराई से घृणा

प्रारम्भ में बढ़ी बुराइयाँ भी विशेषता लगती थीं, पर जब से गायत्री उपासना प्रारम्भ की राई भर की भूल पहाड़ के बराबर लगती है और मैं उससे बच जाता हूँ। निर्मल जीवन माँ की ही देन है ।

—श्याम बाबू अग्रवाल, लश्कर (म. प्र.)

उन्हीं के अनुग्रह से

मेरे अनेक उच्च शिक्षित मित्र बेरोजगार हैं पर मैंने अनायास-प्रेरणा से १७० रु. मासिक साधारण वेतन पर सर्विस प्रारम्भ कर दी । आज मुझे तीन सौ से अधिक वेतन मिलता है, सब प्रकार की शान्ति है । यह गायत्री उपासना का ही सत्य परिणाम और उन्हीं माँ के अनुग्रह का फल है ।

—सुभाषचन्द्र शर्मा, जावरा (म. प्र.)

सद्विचार-सद्चिन्तन

जब से गायत्री उपासना प्रारम्भ की आर्थिक दृष्टि से बढ़ता ही गया, पर सबसे बड़ी उपलब्धि और माँ की कृपा मैं यह मानता हूँ कि मन सदैव सद्विचारों से ओतप्रोत रहता है, कभी-कभी प्रेम और करुणा के ऐसे उद्गार उमड़ते हैं कि आँखें छलक उठती हैं ।

—राम हिमांचल त्रिपाठी, बसखरी

परीक्षा उत्तीर्ण

यों तो माँ ने मुझे पग-पग पर संकटों से बचाया है, पर वह दिन मुझे नहीं भूलता जब मेरे भाई के लड़के को तीव्र ज्वर था और उसी दिन उसकी परीक्षा थी । बच्चा असफलता के भय से दु:खी था । मैंने उसे ढाँढस बँधा कर परीक्षा भवन भेज दिया और स्वयं माला लेकर जप करने बैठ गया । जब तक वह लौटा नहीं तब तक जप करता रहा, बच्चा लौटा तब बड़ा खुश था, बोला—चाचा जी मुझे ऐसा लग रहा था मेरी कलम कोई और चला रहा है, बच्चा पास हो गया तब से मेरी श्रद्धा और भी प्रगाढ़ हो गई ।

—शशिधर सिंह, ककना (बिहार)

परमार्थ की तरंगें

जिस दिन से गायत्री उपासना प्रारम्भ की उस दिन से जीवन का काया कल्प हो गया, पहले अपनी बातें अपना स्वार्थ सब कुछ अपने लिए ही ठीक लगता था पर जब दूसरों की भलाई में, परमार्थ में, अधिक आनन्द आता है । मुझे गायत्री उपासना का पारस मिला उसे जब घर-घर गाँव-गाँव पहुँचाने में जुटा हूँ।

—धीरूभाई के. ठाकोर, सूरत (गु.)

विरोधी भी सहयोगी

जो लोग पहले विरोधी थे, मन में शत्रुता रखते थे जब से गायत्री उपासना शुरू की वे सहयोगी और सहायक बन गये हैं ।

—विन्देश्वरी प्रसाद यादव बसरबारी

एक माँगा दो मिले

विवाह के दस वर्ष बाद भी कोई सन्तान न हुई । डॉक्टरों से सहायता की आशा भी जाती रही । तब माँ का आश्रय ग्रहण किया । माँ की कृपा से मुझे दो सन्तानें उपलब्ध हुईं । मैंने अनुभव किया यदि उन्होंने मेरी इच्छा पूर्ण की तो अब उनका काम मुझे करना चाहिये । अब संयमित जीवन अपना कर मिशन का कार्य करता हूँ ताकि उनके ऋण से कुछ तो हलका हो सकूँ ।

—गिरजा शंकर गुप्त, ग्वालियर

कठिनाइयाँ वरदान

एक समय वह था जब थोड़ा सा भी कष्ट होता तो बेचैन हो उठता । कभी अपने भाग्य को कोसता, कभी भगवान को दोष देता, पर जिस दिन से गायत्री उपासना प्रारम्भ की स्थिति पलट गई । मन में इस तरह का आत्म-विश्वास और साहस भर गया है कि कठिनाइयाँ, कठिनाइयाँ नहीं वरदान लगती हैं, जिससे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने पारमार्थिक लक्ष्य को प्राप्त करने में आने वाले आकर्षणों से रक्षा होती है, अब पाने में नहीं देने में आनन्द आता है ।

—राजेन्द्र प्रसाद सिंह, हटिया (राँची)

पहले ही राह मिल गई

प्रारम्भ में लघु अनुष्ठान किये जिससे वर्षों से शरीर में बसे रोग दूर हो गये । मरे मन में उठा यदि छोटे से अनुष्ठान से असाध्य रोग दूर हो सकते हैं तब तो बड़े अनुष्ठान जन्म-जन्मान्तरों के भवरोगों से पीछा छुड़ाकर आत्म-बोध करा सकते हैं, तब से ५ लघु अनुष्ठान, एक सवा लक्ष जपका पूर्ण अनुष्ठान, एक चान्द्रायण व्रत कर चुका हूँ, इनमें मौन अस्वाद आदि तपश्चर्याओं का पालन किया है । इनसे मुझे कितनी अगाध आत्म शान्ति मिली है, वह वर्णन नहीं कर सकता ।

—दयाराम सोनी, सुनेता (झालावाड़)

प्रथम श्रेणी प्राप्त

पढ़ने में अच्छा विद्यार्थी नहीं था, ज्ञात हुआ गायत्री उपासना से असाधारण बौद्धिक विकास होता है । अतएव इसे प्रत्येक विद्यार्थी को करना चाहिये । सोचा, करके देखूँ उपासना प्रारम्भ की, उस वर्ष विशारद की परीक्षा दी और यह देखकर स्वयं आश्चर्य चकित रह गया कि मुझे परीक्षा में प्रथम श्रेणी मिली ।

—राजदेव ओझा, दुलियाजान (आसाम)

अभावों की पूर्ति कब तक !

सोचा कुयें में बोरिंग हो जाती तो अच्छा था, साधन नहीं थे, तो माँ ने सरल व्यवस्था बना दी, भैंस लेने का मन किया भैंस आ गई, थोड़ी जमीन लेने की इच्छा हुई वहीं जमीन मिल गई, जो चाहता था माँ ने हर अभाव की पूर्ति की, पर उनका जब अन्त होता दिखाई न दिया तो उधर से मुँह मोड़ कर आत्म कल्याण की दिशा में चल पड़ा ।

—महेश्वरसिंह, भरवाड़ी (बिहार)

जीवन दिशा मिली

अस्त-व्यस्त जीवन क्रम के दुष्परिणाम भुगत रहा था, तभी सर्व शक्तिमान गायत्री माता की कृपा मिली । उपासना के फलस्वरूप खान-पान, रहन-सहन परिवारिक जीवन में जमीन-आसमान का अन्तर आया और अब सर्वत्र शान्ति प्रसन्नता के साथ आत्म-विकास की गति अनुभव होती है ।

—के.डी. सिंह एस.ओ., भुवनेश्वर(उड़ीसा)

झोंपड़ी बँगले में बदली

गायत्री उपासना सम्बन्धी एक छोटी सी पुस्तक से जीवन में वह प्रकाश आया कि टूटे-फूटे मकान में रहने वाले व्यक्ति के पास अब अपना ही बड़ा फ्लैट है। शिक्षा-दीक्षा और वर्तमान में १३८० रुपये मासिक वेतन की सर्विस बिना उनकी कृपा के कभी नहीं मिल पाती । सब कुछ छूट जाये पर उपासना न छूटे यह मेरा संकल्प रहा है, उसे आजीवनपूर्ण करता रहूँ, बस यह एक ही अभिलाष शेष है ।

—बनवारी लाल दीक्षित, सवाई माधोपुर (राजि.)

माँ का दिया आत्मबल

न समाज से निकला था, न कोई प्रभाव था, फिर किस तरह लोगों में मिशन का प्रचार करें यही समस्या घेरे थी कि उधर आदेश मिला तिनसुकिया में यज्ञायोजन के लिए । दस-बारह हजार का खर्च कैसे जुटेगा ? इसी चिन्ता में था कि भीतर से प्रकाश फूटा आगे बढ़ मैं तेरे साथ हूँ और मैं हिम्मत लेकर निकल पड़ा । अपने ही कमरे को गायत्री मन्दिर का रूप देकर कार्य प्रारम्भ किया । लगभग ४० सदस्य अखण्ड ज्योति के बन गये । ७०-८० व्यक्तियों ने दुष्प्रवृत्तियाँ छोड़ीं लोगों ने स्वतः सहयोग दिया और ऐसा शानदार यज्ञ हुआ जिसे आज भी यहाँ के लोग भूलते नहीं, अब तो हिम्मत खुल गई है तभी तो यह एक समर्थ शाखा बनाई है ।

—राम चन्द्र यादव, दुलिया जान (आसाम)

गायत्री यज्ञ का व्यक्तिगत अनुभव

सुशीला देवी मुद्गल, मथुरा से लिखती हैं कि अपनी जन्मभूमि पेशावर के आनन्द भरे वातावरण में मेरा बचपन बीता । माँ-बाप के दुलार भरे अञ्चल में बालकपन को बिताते हुए और युवावस्था में प्रवेश करते हुए कभी ऐसी कल्पना तक न आई थी कि जीवन के मध्यान्ह काल में आपत्तियों के ऐसे पहाड़ टूटेंगे, जिससे जिन्दगी का आनन्द तो दूर उसे जीते रहना भी बुरा मालूम पड़े । ईश्वर की लीला और प्रारब्ध का विधान विचित्र है ।

देश का बँटवारा हुआ । पाकिस्तान अलग हो गया । मेरे आनंदमय जीवन के भी दो टुकड़े हो गये । एक टुकड़ा न जाने कहाँ चला गया । दूसरा टुकड़ा जो दर्द, कराह, बेवसी और बर्बादी से भरा हुआ था, वही हमारे हिस्से में आया । भाग्य ने जीवन के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

खट्टे-मीठे अनुभवों को छीन लिया और वह दे दिया जो आज तक चैन नहीं लेने देता । देश के बंटवारे ने मेरे जीवन का बंटवारा कर दिया । जो मिला सो बहुत ही कड़ुआ है । उससे सुनने वाले का भी जी दुःखता है ।

उन दिनों इंसान हैवान बने हुए थे । लगता था अब इंसानियत दुनियां से उठ गई । बेकसूर और बेवस लोग भी गाजर-मूली की तरह काटे जा रहे थे । मैं अपनी बच्ची और बच्चे के साथ जान बचाने के लिए अपने साथियों के साथ रावलपिण्डी के रक्षा कैम्प में जा रही थी कि रास्ते में कहर टूट पड़ा । गोलियाँ बरसीं । मेरा ढाई वर्ष का मासूम बच्चा गोलियों का निशाना बना, पंख फड़फड़ाते हुए कबूतर की तरह बालक कुछ देर तड़फड़ाया खून के फब्बारों से उसने हमें निहलाया और शांत हो गया । उस दृश्य की आज भी जब याद आ जाती है तो ऐसा लगता है कि कलेजा कट-कट कर मुँह की ओर बाहर को निकलने की कोशिश कर रहा है । अपने इतने प्यारे बच्चों की ऐसी दुर्गति हमने देखी जैसे किन्हीं अभागों को देखने को मिलती है । जिस समय बालक का प्राण निकला उस समय अन्तर्चीत्कार से मेरा रोम-रोम फटा जा रहा है, हजार-हजार बिच्छू नस-नस में काट रहे थे, मैं ऐसे समय में मृत्यु से अच्छा वरदान तो क्या मांगती । "हे प्रभु ! यह नहीं देखा जाता, मुझे उठालो ।" यह शब्द मुख से निकल रहे थे ।

दयालु प्रभु सच्ची कामना को पूर्ण करने में देर नहीं करते, यह बात सत्य हो गई । दूसरी गोली कड़कड़ाती हुई मेरे सीने में लगी । गोली और छर्रे छाती और पेट के विभिन्न मार्गों में बिखर गये और लगने लगा मनों सिंह अपने बीसियों नाखूनों से पेट को नोंच कर फाड़ रहा हो । कुछ ही देर में बच्चे का शोक और अपना दर्द शांत हो गया और बेहोशी ने अपने दामन से मुझे छिपा कर इस तड़पन से बचा दिया ।

रावलपिण्ड के अस्पताल में ऑपरेशन हुआ । गोलियाँ निकाल ली गईं । मौत भी मेरे साथ रहम न कर सकी—दुत्कार कर भाग गई । मैं जिंदा बच गई । रावलपिण्डी से दिल्ली अस्पताल आई । अविन अस्पताल अमेरिकन अस्पताल वर्षों तक भाग्य के साथ बँधा रहा । गोलियों ने शरीर के इतने पुर्जे खराब कर दिये थे कि "आधा मुर्दा" कहा जा सकता था । शरीर का दाहिना भाग बिल्कुल काम न करता था हाथ, पैर, धड़ बेकार था । चारपाई पर ही सारी जीवनचर्या पूरी होती, गुर्दे का दर्द, पेशाब बन्द हो जाना, आँखों की रोशनी कम हो जाना, खून की कमी, नसों की कमजोरी, बेहोशी के दौरे, हड्डी टेड़ी-जुड़ जाना और भी न जाने क्या क्या बलायें पीछे पड़ी थीं । ऑपरेशनों और इन्जेक्शनों का तांता लगा रहता। दिल्ली, आगरा, शिमला, अलीगढ़, मथुरा, वृन्दावन आदि के अस्पतालों में पाँच वर्ष का लम्बा समय से ही व्यतीत हो गया ।

तबियत कुछ सुधरी, शरीर काम चलाऊ सहारा देने लगा अस्पताल छोड़ कर घर आई । फिर भी चैन कहाँ ? अनेक रोग पीछे पड़े हुये थे । बेहोशी के दौरे, पेशा बंद हो जाना, गुर्दे का दर्द, नसों की कमजोरी आदि मुसीबतें पीछे पड़ी हुई थीं । इलाज बहुत हो चुका था फिर भी मन न मानता । जिन्दगी बच ही गई तो रोज की तकलीफों से राहत मिले ऐसी चाहना का होना कुछ बेजा नहीं है । मैं भी कुछ रास्ता ढूँढ़ती रहती । दवा-दारू के इलाज चलते रहते । साथ ही मेरा मन पूजा पाठ की ओर भी झुका, डॉक्टरों की अपेक्षा ईश्वर की ओर देखने की प्रवृत्ति बढ़ने लगी । कहीं अच्छे संत महात्माओं की बात सुनती तो वहाँ किसी प्रकार पहुँचने की कोशिश करती, शायद उनकी दुआ से कुछ फायदा हो ।

एक दिन मुझसे शायद किसी पंजाबी ने ही कहा कि—"गायत्री तपोभूमि में रोज यज्ञ होता है । तुम वहाँ जाया करो । हवन से बीमारी दूर होती है । एक तपेदिक का मरीज वहाँ से अभी ही अच्छा होकर गया है ।" मैं तपोभूमि गई, वहाँ का व्यवहार और कार्यक्रम मुझे बहुत ही भला मालूम हुआ । जब तब हवन में शामिल होने के लिए जाने लगी । पर मेरा ऐसा भरोसा न था कि हवन से कोई बहुत बड़ा लाभ हो सकता है । जेठ के महीने में तपोभूमि में एक बड़ा हवन हुआ । बाहर के भी बहुत आदमी आये । कोटा रियासत में कोई कनवास जगह है वहाँ की एक पागल लड़की अपने पिता के साथ आई । यज्ञ से उसे भारी लाभ हुआ और उसकी हालत ठीक हो गई, यह मैंने अपनी आँखों से देखा । इसी तरह भावनगर (सौराष्ट्र) की एक स्त्री तपोभूमि में ऐसी आई जिसे सात वर्ष से मृगी (मिर्गी) आती थी और दो औरतें उसे सहारा देकर खड़ी करतीं, चलीतीं । वह भी एक महीना यज्ञ में शामिल रह कर ठीक हो गई । आचार्य जी यज्ञ द्वारा अनेकों दुःखियों को बहुत लाभ पहुँचाते हैं—यह बात मैंने सुनी तो अनेकों के मुँह से थी पर यह दो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

घटनाएँ जब मैंने अपने सामने देख लीं तो स्वयं भी हवन का लाभ लेने का निश्चय किया ।

आचार्य जी से मैंने पूछा—क्या मेरा रोग भी उस कनवास वाली और सौराष्ट्र वाली स्त्री की तरह दूर हो सकता है ? उन्होंने उत्तर दिया—कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता क्योंकि यज्ञों की पूर्ण विद्यालुप्त हो गई है । थोड़ी सी जानकारी हमें है उससे किसी लाभ की पक्की गारंटी नहीं की जा सकती पर इतना अवश्य है कि हवन की वायु से शरीर की निरोगता व मन की पवित्रता में वृद्धि अवश्य होती है । इस उत्तर से मुझे सन्तोष तो नहीं हुआ फिर भी अजमाने का इरादा कर लिया । तीन महीने तक दोनों समय हवन पर बैठती रही और आचार्यजी के बताये अनुसार गायत्री का जप; अनुष्ठान तथा उपवास करती रही । इन तीन महीनों में मुझे इतना लाभ हुआ है जितने पिछले पाँच वर्षों में अस्पतालों में भी नहीं हुआ था । यों पूर्ण निरोग तो नहीं हुई हूँ पर अस्सी फीसदी लाभ अवश्य हुआ है । बेहोशी के दौरे, पेशाब बन्द होना आदि उपद्रव तो एक दिन भी नहीं हुए । ऐसा दीखता है कि बाकी बीमारी भी जल्दी ही दूर होगी । हवन से इतना लाभ होता है यह देखकर मुझे आश्चर्य होता है ।

पिछले जमाने में लोग हवन के जरिए सब रोग दूर कर लेते थे और सब कामनायें पूरी होती थीं, यह बात बिलकुल सच मालूम देती है । मैं, मेरे पति और लड़की हम तीनों ही गायत्री तपोभूमि में यज्ञों में शामिल होते रहते हैं और यह कल्पना करके बड़े प्रसन्न होते रहते हैं कि आचार्य जी जब यज्ञ अस्पताल की विधिवत् व्यवस्था कर देंगे तो हमारे जैसे रोग, शोक, चिन्ता और दु:ख ग्रस्त मनुष्यों का कितना हित होगा । माता वह दिन जल्दी ही लावें !

गायत्री उपासना से श्रेय, श्री और सफलता

साधन सुविधाएँ और मानवीय संरक्षण होने पर भी बड़े-बड़े लोगों तक को असफल और पदच्युत होते हुये देखा गया है । स्पष्ट है भौतिक साधन सफलता के सम्पूर्णत: आधार नहीं, जब कि गायत्री उपासना से प्राय: लौकिक सहायता के अभाव में भी व्यक्तियों को उन्नति करते हुए पाया गया है । आध्यात्मिक और भौतिक सफलतायें मिलने के कुछ अनुभूत उदाहरण प्रस्तुत हैं ।

ध्यान साधना की सुखद अनुभूति

ध्यान के समय भृकुटी से लेकर रीढ़ की हड्डी, कंठ नाभि तथा कमर के नीचे की ओर तीव्र दबाव की प्रति-क्रिया अनुभव करती हूँ । यही प्रतिक्रिया जब मस्तिष्क के मध्य भाग में होती है तो ऐसा अभास होता है कि वहाँ वर्षा हो रही है । यह अनुभूति थोड़े समय रहती है पर इतनी सुखद होती है कि उस स्थिति से हटने का मन नहीं करता । ब्रह्मवर्चस की यह अनुभूति शक्ति संचार के रूप में घर में भी यथावत् होती है ।

—सुशीला अलीगढ़ (उ. प्र.)

प्रारब्ध कटा

पैर में जोर का पत्थर लगा, उँगली फट गई, खून टपकने लगा, आखिर चलना तब तक रोकना पड़ा जब तक खून रिसना बन्द न हो गया । जिस स्थान पर बैठा था उसके कोई ढाई फर्लांग आगे रास्ते की बगल में एक पुराना मकान था । जैसे चलने के लिए दुबारा उठ खड़ा हुआ, वह दीवार फट पड़ी और रास्ते की ओर बुरी तरह ढह पड़ी । घड़ी में रुकने का समय देखा तो चौंक पड़ा यदि चोट न लगती, रुकना न पड़ता तो ठीक दीवार गिरने के समय मकान की बगल में होता। कठिन प्रारब्ध को इतना हल्का कर देने के लिए माँ को धन्यवाद दिया । उस दिन उपासना में उनकी करुणा के प्रति लगातार आँसू उमड़ते रहे ।

—रामदयाल उपाध्याय, रोहांसी (म. प्र.)

माँ की कृपा से मनोनिग्रह

पहले ऐसा लगता था मन की मलिनतायें दूर नहीं होंगी, पर गायत्री उपासना के फलस्वरूप संयम शक्ति उत्तरोत्तर विकसित होती गई । मन में ऐसी पवित्र भावनायें उठती हैं कि कई बार हृदय सिहर उठता है और अलौकिक आनन्द की अनुभूति होती है ।

—शम्भू प्रसाद आदित्य

कठिनाइयों में माँ का संरक्षण

कोई अप्रिय घटना होने को होती है तो अनायास ही हृदय तेजी से धड़कने लगता है । पीछे अनुभव किया कि यह क्षमता गायत्री उपासना प्रारम्भ करने के बाद विकसित हुई अतएव नि:संदेह यह अनुभव एकाएक उठ खड़ा होना माँ का दिव्य संरक्षण ही है ।

एक बार दालान की ओर जा रहा था, अँधेरा था, एकाएक हृदय में वही धड़कन उठी, पीछे लौटकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लालटेन निकाल कर जलाई और जब फिर उधर बढ़ा तो देखा भयंकर विषधर रास्ते में पड़ा है । अँधेरे में जाता तो पैर निश्चित रूप से इसी पर पड़ता और तब मृत्यु सुनिश्चित थी । लिखूँगा तो इन घटनाओं की पूरी पुस्तक बन सकती है । जब माँ ने मुझे बचाया ।

—विजय कुमार सोलंकी, करवल (म.प्र.)

साधना के प्रत्यक्ष परिणाम

गायत्री उपासना प्रारम्भ की थी कि आर्थिक समस्यायें सुलझेगी पर पीछे देखा कि आर्थिक अभाव तो दूर हुये ही जीवन में आलस्य और प्रमाद दो शत्रु जड़ जमाये बैठे थे उनसे पूरी तरह पिंड छूट गया । उससे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति शान्ति और प्रसन्नता है।

—दुर्गालाल दाखेड़ा, काछोला (राज.)

स्वप्न और व्यवस्था

शान्ति कुंज से शिविर की स्वीकृति मंगायी पर वह समय पर आई नहीं,मिली भी तो उस दिन जब छुट्टी के लिए एक दिन ही बचा था । मन देर रात तक इन्हीं विचारों में उलझा रहा । रात स्वप्न में अनेक साधु-सन्तों के मध्य पू. गुरुदेव की-सी आकृति वाले एक व्यक्ति ने कहा बेटा ! तू हरिद्वार नहीं आयेगा ? तभी मेरी नींद टूट गयी । दूसरे दिन अवकाश, अर्थ-व्यवस्था और रिजर्वेशन आदि सब कुछ हो गया और पहली बार शिविर में भाग लेने तथा पू. गुरुदेव के दर्शनों का लाभ मिला ।

—प्रताप शिंदे, विरलाग्राम (नागदा)

गायत्री उपासना से विराट दर्शन

प्रारम्भ मां के ध्यान से करता हूँ परिणति विराट की अनुभूति में होती है । ऐसा मनोरम दृश्य जिसे बताना भी चाहूँ तो कह नहीं सकता । संक्षिप्त साक्षात्कार से इतनी दिव्य अनुभूतियाँ संभव हैं तो समाधि सुख की तो कल्पना ही क्या की जाये ?

—अशोक कुमार कश्यप, गोदिया (महा.)

बैग सुरक्षित रहा

बस में बैठा, साथ आवश्यक सामान का बैग भी था । जहाँ उतरना था उतर गया । बैग की याद न रही। बड़ी देर बाद याद आई तो ऐसा लगा कि कोई बैग की रक्षा कर रहा है । दूसरे वाहन से जाकर बस पकड़ी, बैग यथास्थान सुरक्षित था । जबकि इस बीच कई यात्री चढ़ते-उतरते हैं ।

—सत्य नारायण त्रिपाठी

वह आवाज

गायत्री उपासना में हम पति-पत्नि दोनों की प्रगाढ़ निष्ठा है । एक बार मेरे पति यात्रा में थे उन्हें गोरखपुर उतरना था । संयोग वश स्टेशन आ जाने पर भी सोते रहे । गाड़ी चलने को हुई तभी किसी ने कहा गोरखपुर आ गया उनकी नींद एकदम टूटी समान उठा कर भागे, अभी वे लाइन पार कर प्लेटफार्म पर पहुँचना चाहते थे कि पीछे गुरुदेव की आवाज सुनाई दी मरेगा क्या ! गुरुदेव यहाँ कैसे इस आश्चर्य से वे रुक कर पीछे देखने लगे तभी पटरी पर से धड़धड़ाता हुआ इंजन गुजर गया । अर्द्धनिद्रित चेतना में यह सब गुजर गया यदि वह आवाज न आती तो दुर्घटना सुनिश्चित थी । माँ की कृपा मैंने पग-पठा पर अनुभव की है ।

—कमला सिंह (लखनऊ)

दुर्घटना टली

पुत्री विमला का पाणिग्रहण सम्पन्न हुआ, उसके उपहार की सभी सामग्री जिस कमरे में रखी थीं, बिजली की स्पार्किंग से उसमें आग लग गई । आग इतनी भयंकर थी कि वह कुछ ही क्षणों में सारे मकान को भस्म कर सकती थी किन्तु माँ ने न केवल इस दुर्घटना को टाला अपितु अमंगल भी होने से बचा लिया । बच्ची का एक पैसे का भी सामान नष्ट या खराब नहीं हुआ ।

—शिवनारायण सिंह, कोरवा (म. प्र.)

शान्ति और प्रसन्नता का वरदान

जीवन का सामान्य क्रम ठीक प्रकार से चल रहा था तो भी विचारों में भयंकर अस्त-व्यस्तता और मन में अशान्ति रहती । इस बैचेनी का कारण समझ में नहीं आता था ।

कुछ दिन पीछे भगवती गायत्री और पू. गुरुदेव का संबल मिला । यों लगा कि सारी छटपटाहट इस स्थल तक पहुँचने लिए ही थी । माँ का आश्रय ग्रहण करने के बाद से हुई आत्मिक प्रगति और आध्यात्मिक अनुभूतियों ने कितनी शान्ति-शक्ति और भाव-संवेदना प्रदान की वह अनिर्वचनीय है । अब परमार्थ में ही आनन्द आता है सो उसी में जुटा पड़ा हूँ ।

—राधाकृष्ण व्यास वानप्रस्थी (मन्दसौर)

जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै

मेरी वाणी नहीं खुलती, गुरुदेव ! मैने प्रश्न किया, इस पर उन्होंने गायत्री उपासना की प्रेरणा दी और कहा माँ तुझे अविराम वाक्-शक्ति प्रदान करेगी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सचमुच यही हुआ मैंने तीन जिलों की यात्रा की और मिशन का प्रचार किया मेरे साथी आश्चर्य चकित हैं कि स्टेज पर चढ़ते जिसे पाँव कांपते थे वह वक्ता कैसे बन गया ।

स्वप्न और जाग्रत अवस्था में भविष्य के आभास होते थे । उनकी चर्चा करता रहता था । जब भी ऐसी चर्चा करता मुझे अपनी श्रद्धा मलीन होती दिखाई दी। पू. गुरुदेव के मना करने पर अब वैसा नहीं करता पर अपनी अनुभूतियों की विलक्षणता स्वीकार किये बिना नहीं रह सकता । एक बार जल में खड़े होकर मैंने अनुष्ठान सम्पन्न किया, उससे प्राप्त परिणाम की चर्चा करूँ तो सम्भव है लोग विश्वास न करें । अत: वैसी आकांक्षा रही भी नहीं अब तो आत्मा को पूर्णतया उन सर्वशक्तिमान सत्ता में घुला देने भर की आकांक्षा शेष रही है ।

—सुमेर लाल भारद्वाज, तिरोड़ी (म.प्र.)

विश्वास की शक्ति

एक बार एक साधु के स्थान पर मैं उपासना कर रहा था । साधु ने गांव चल कर भोजन ग्रहण करने को कहा । मैंने कहा स्वामी जी इसकी चिन्ता मेरी माँ करेगी, मैं क्यों करूँ ? स्वामी जी मुझे पागल समझ कर गांव चले गये । इधर ग्राम की एक महिला बच्ची के साथ आई और मुझे एक किलो से भी अधिक दूध दे गई । इसी प्रकार एक बार गहरे पानी में डूबने से भी माँ की अदृश्य शक्ति ने बचाया था ।

—प्रयाग दत्त ठाकुर गोड्डा, संथाल परगना (बिहार)

गायत्री मन्त्र से जीवनदान

तीनों बैल स्वस्थ और हट्टे-कट्टे थे, पर एकाएक तीनों को छूत का रोग लग गया । कृषि विस्तार अधिकारी होने के कारण उनके मालिक श्री अग्निहोत्री को पशुओं की चिकित्सा का ज्ञान है । उन्होंने बहुतेरा बचाने का प्रयत्न किया पर दो बैलों की तुरन्त मृत्यु हो गई । तीसरा बुरी तरह तड़प रहा था तभी उन्हें माँ की याद आई । न जाने कैसे प्रेरणा हुई बैल के कान में मुँह लगाकर गायत्री मन्त्र तीन बार धीरे-धीरे उच्चारण किया । बैल की बिगड़ती हालत एकाएक बदलनी शुरू हुई और वह बिल्कुल चंगा हो गया ।

इसी तरह एक बार भयंकर ज्वर से पीड़ित मेरी पुत्री भी माँ के ही प्रताप से बची । ऐसी ही कृपा मैंने अपने बवासीर ऑपरेशन के दौरान अनुभव की, जब कि दूसरे लोग हफ्तो अस्पताल में पड़े रहते हैं, मैं स्वस्थ होकर मात्र ३ दिन में घर लौट आया ।

—सुरेश कुमार कौशिक, सेनेट्री इंस्पेक्टर लोदाम (म.प्र.)

जीवन रक्षा हुई

रविवार में सामूहिक यज्ञ की तैयारी चल रही थी, साथियों ने कहा यज्ञ करके जाना पर मैंने परिभ्रमण का कार्यक्रम बना रखा था वह भी मिशन का काम था । अतएव साइकिल लेकर निकल पड़ा । कुछ दूर ही गया था कि पू. गुरुदेव की तीव्र याद आई ऐसा लगा वे कुछ कहे हैं पर अपनी समझ में कुछ न आया। कुछ ही दूर गया था कि सड़क की मिट्टी खिसक गई और मैं साइकिल सहित ३० फुट नीचे गड्डे में जा गिरा । समीप काम कर रहे किसानों ने आकर निकाला । यह देखकर सब आश्चर्य चकित थे कि जहाँ गिरने से हड्डी-पसली का चूरा बन जाना चाहिये था वहाँ देह को खरोंच भी नहीं आयी । यह किसी महाशक्ति की ही कृपा हो सकती है ।

—अयोध्या प्रसाद महाराणा, लोदाम (म.प्र.)

उनके अनुग्रह से दब गया

उपासना प्रारम्भ की तब तक यह पता नहीं था कि गायत्री का आश्रय सम्राटों की कृपा से भी अनन्त गुना समर्थ है । कुछ लोगों ने मेरे विरुद्ध झूठी नालिश करनी चाही । मिनिस्टरों तक का दबाव, पर जब वे वकील करने गये तो उसी ने उन्हें इतना फटकार दिया कि फिर उनकी आगे कार्यवाही की हिम्मत ही न पड़ी। जीवन में निरन्तर आत्मिक प्रखरता विकसित होती जा रही है । यह इस शक्ति का अनुग्रह है ।

—आर. एस. जौहरी, बरेली (उ. प्र.)

गुण-कर्म-स्वभाव में आमूल परिवर्तन

मुकदमे बाजी की जटिल परिस्थितियों में पदोन्नति प्रकरणों में माँ की सहायता से ही सफलता मिली है, पर वह मेरे लिए गौण विषय है । यथार्थ अनुग्रह अपने गुण-कर्म-स्वभाव में छाये तमोगुणी संस्कारों के निष्कासन और उनके स्थान पर सतोगुण वृद्धि के रूप में मानता हूँ । जिसके कारण आज मेरा पारिवारिक जीवन-सामाजिक जीवन अत्यन्त सुखद और सन्तोष प्रदायक है ।

—बलराम राव—बी.एच.ई.एल. (भोपाल)

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दुर्गुणों से मुक्ति

कोई नहीं छुड़ा पाया पर गायत्री उपासना के प्रभाव से शराब, मांसाहार और धुम्रपान सांप की केंचुल की तरह छूट गये । अब मैंने मिशन की सेवा में सर्वस्व सौंप दिया है ।

—ईश्वर लाल त्रिवेदी, पिपला नारायणबाद (म.प्र.)

भौतिक व आत्मिक उपलब्धियाँ

१९६८ से अखण्ड ज्योति पत्रिकाएँ गायत्री उपासना की महत्ता का बोध हुआ तभी से उपासना अनुष्ठान प्रारम्भ किये और तब से निरन्तर आत्मिक और लौकिक प्रगति की ओर अग्रसर हूँ । डिपार्टमेंटल इन्क्वायरी से होने वाली हानि से बचाव, छोटे बच्चे चि. शशि रंजन की जीवन रक्षा, पदोन्नति आदि अनेक अवसर उनकी कृपा से ही उपलब्ध हुये ।

आत्मिक दृष्टि से दोष-दुर्गुणों से निवृत्ति । यज्ञायोजनों में अभिरुचि उपासना में मन लगना और आत्मिक चिन्तन की शान्ति व प्रसन्नता दायक प्रक्रिया निरन्तर विकसित हुई है । कैसी भी स्थिति में अकेलापन या असहाय अनुभव नहीं करता ।

—बिन्देश्वरी प्रसाद सिन्हा, अहमदाबाद

अन्धकार में प्रकाश की किरणें

११वीं कक्षा तक पढ़ाई में कमजोर होने पर पढ़ाई छुड़ा दी गई । किन्तु तभी मिल गया आश्रय भगवती गायत्री का । पारस्थितियाँ इस तरह बनीं कि तीन वर्ष और पढ़ाई का सुयोग मिला और प्रत्येक परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की पारिवारिक जीवन की शान्ति और व्यवस्था भी मुझे उन्हीं की कृपा से मिली है ।

—राजेन्द्र कुमार हटिला, जोधपुर

सघन सम्वेदना

जब से गायत्री उपासना प्रारम्भ की प्रत्येक प्राणी में अपना ही अन्तरंग आत्मा समाया जान पड़ता है । यही सोचता रहता हूँ मुझसे किसी को पीड़ा न पहुँचे ।

—हीराराय, मुजफ्फरपुर (बिहार)

सबसे बड़ी डॉक्टर

धर्मपत्नी को 'साइटिका' या लिम्बर स्लिप जैसी किसी बीमारी ने आ घेरा । बड़े-बड़े डॉक्टरों से इलाज कराया, अनाप-शनाप पैसा खर्च किया, पर कष्ट दूर होना तो दूर डॉक्टर यह भी न तय कर पा रहे थे कि बात क्या है । इन्हीं दिनों गायत्री उपासना का प्रकाश मिला । श्रद्धा कुछ इस तरह जमी कि एक सवा लक्ष जप का अनुष्ठान किया । अनेक बाधाओं के कारण अनुष्ठान ४० दिन की अपेक्षा ५१ दिन में पूर्ण हुआ पर उसे बीच में नहीं छोड़ा । तब से आज तक फिर धर्म-पत्नी को कोई कष्ट नहीं हुआ वे गायत्री माँ की अनन्य उपासक हैं ।

—जुगल किशोर गुप्त, आष्टा (म.प्र.)

सद्भाव के प्रकाश में

बड़ा कुटुम्ब होने में, व्यापार, खान-पान, रहन-सहन आदि को लेकर अनबन हो जाना स्वाभाविक है। किन्तु यह गायत्री उपासना का ही पुण्य प्रतिफल है कि सब कुछ इतने सद्भावपूर्ण वातावरण में आत्मीयता पूर्वक चलता है कि दूसरों को आश्चर्य होता है । सामाजिक जीवन में भी उनकी कृपा से यथेष्ट विश्वास और सम्मान उन्हीं ने दिलाया ।

—लाल जी गुप्ता मूँगरा, जौनपुर (उ.प्र.)

डेढ़ वर्ष बाद

डेढ़ वर्ष पूर्व गायत्री उपासना प्रारम्भ की थी तब से जंग लगे लोहे-सा जीवन निरन्तर निखरता चला जा रहा है । चित्त में आनन्द, मन में शान्ति, वाणी में संयम और सात्विक प्रवृत्ति का विकास उपासना का ही प्रतिफल है ।

—बाबूराम वर्मा, रेंजा (आगरा)

पारस से छू गया मैं

गायत्री उपासना के बाद से ही मुझे यह विश्वास हो चला कि चरित्र-निष्ठा जीवन की सर्वोपरि निधि है। कोई शक्ति मुझे बलात् उच्चस्तरीय ईमानदारी के जीवन की ओर आगे बढ़ाने लगी । परीक्षा का समय आया । एक बार एक स्टोर से लम्बी रकम की वस्तुयें निकाल देने का मुझ पर दबाव डाला गया । पर मैंने इन्कार कर दिया, जन-सम्पत्ति के दुरुपयोग का पाप में नहीं करूँगा,लोगों ने जान से मारने की धमकी दी पर मैं टस से मस नहीं हुआ । आखिर मुझे झूठे बहाने लगाकर नौकरी से निकाल दिया गया । मैंने उस पर भी माँ से नाराजगी व्यक्त नहीं कि अपनी चरित्र-निष्ठा का मुझे सन्तोष था । तभी बैंक के लिए कुछ स्थान निकले मैंने भी फार्म भरा । जिस परीक्षा में उच्च शिक्षा प्राप्त युवक भाग ले रहे थे उसमें मैं पाचवाँ स्थान लेकर उत्तीर्ण हुआ और मुझे बैंक की अच्छी नौकरी मिल गयी ।

—अवतारम राजू, बैंक ऑफ इण्डिया (पटना)

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जीवन के संताप माँ की शीतल छाया

सांसारिक कष्टों पीड़ाओं की ताप में जलते जीवन गायत्री उपासना की शीतल छाया में पहुँचते ही यह अनुभव करते हैं कि परमात्मा ने किसी को निराश्रित नहीं बनाया । दैहिक कष्ट पीड़ितों के लिए उसकी पराशक्ति अमोघ औषधि का कार्य करती है,निराश क्षणों में उसी का प्रकाश, उसी की प्रेरणा गन्तव्य तक पहुँचाती और इच्छायें पूर्ण करती हैं । संसार से जिन्हें वैराग्य हो गया हो उनके मस्तिष्क पर योग धारणा की भस्म भी वही आद्य शक्ति सजाकर उसे परमसत्ता की अनुभूति कराती है । गायत्री उपासना कभी किसी की निष्फल जाती नहीं देखी ।

अवगुण समाप्त

जब से मैंने गायत्री उपासना प्रारम्भ की तब से ही मेरे अवगुण समाप्त होते जा रहे हैं । आज वे अवगुण नहीं रहे जो पहिले थे । मुझे अनुभव हो रहा है कि मेरा देवत्व जाग गया है । कठिनाइयों के बाद भी मिशन के कार्य में रहता हूँ ।

—देवी दयाल महाजन, पूँछ (उ.प्र.)

माँ पर पूर्ण विश्वास

साधारण कृषक हूँ । किसी तरह जीवन निर्वाह करता था । अखण्ड-ज्योति पत्रिका पढ़कर माँ का आँचल पकड़ा, अनुष्ठान सम्पन्न किया । इसके सत्परिणाम स्वरूप मुझे 'मोटर ड्राइवर' की शासकीय सेवा मिली है । सभी कार्य-कठिनाइयाँ सुलझती जाती हैं । अब मुझे माँ पर पूर्ण विश्वास है कि उनका आँचल पकड़ना मानव के लिए कल्याणकारी है ।

—अवधेष कुमार शर्मा, दुर्ग (म. प्र.)

हृदय परिवर्तित हुआ

मैं जोधपुर में बीमार था । गायत्री उपासक श्री आम्बालालजी ने पिताजी को सलाह दी कि वे मुझे अस्पताल में भरती कराने के बजाय पूज्य गुरुदेव के पास ले जायें । पिताजी नास्तिक थे फिर भी वैसा ही किया। विदाई समारोह का सहस्र कुण्डीय यज्ञ प्रारम्भ था । इतनी भीड़ तथा व्यस्तता में भी पूज्य गुरुदेव स्टेज से उतर कर हम तक आये । मैं स्वस्थ हो गया । उसी अवसर पर पिताजी गुरुदेव के चरणों में गिर पड़े । तब से ही वे गायत्री के अनन्य भक्त हैं तथा हमारा सारा परिवार भी ।

—मदनमोहन सारस्वत, जोधपुर (राज.)

उपासना प्रत्यक्ष फलदायिनी

शरीर से कमजोर, स्वभाव से संकोची व्यक्ति भला क्या कर सकता है किन्तु माँ की नियमित उपासना से आत्मबल बढ़ा और मैं मिशन का सन्देश घर-घर पहुँचा रहा हूँ ।

—रामलाल वासनिक, भटगाँव (म. प्र.)

स्वप्न में मार्गदर्शन

करीब दस वर्ष पूर्व की बात है । मैं मन्दिर में पूजा करने गया । वहाँ युग निर्माण योजना शाखा के परिजनों में सम्मिलित हुआ । उसी रात को स्वप्न में पूज्य गुरुदेव ने दर्शन देकर अपनाया । विदाई समारोह में गुरुदेव के दर्शन पाकर मेरा जीवन कृतार्थ हुआ । तब से मैं गायत्री का नियमित उपासक हूँ ।

—कैलास चन्द्र वाणी, जोवट (म. प्र.)

तपश्चर्या-अमोघ अस्त्र

मैंने अनुभव किया कि गायत्री तप, आत्मबल सम्वर्धन तथा दोनों कल्मषों के निष्कासन का अमोघ अस्त्र है । तप का फल दूरगामी होता है किन्तु प्रारम्भ से ही इसके प्रभाव से संकटों को झेलने की सामर्थ्य और उसके निदान का विवेक पैदा होता है । इसी के आधार पर भविष्य समुन्नत और उज्ज्वल बनते जाते हैं। इसी के सत्परिणाम स्वरूप जीवन की दिशा लोक-कल्याण में परिवर्तित हुई है । स्वार्थवृत्ति समाप्त हुई है।

—रामेश्वर अग्रवाल, हजारी बाग (दिल्ली)

माँ की अदृश्य सहायता

परिवार में सम्पत्ति का बँटवारा हो गया । बँटवारे में बहुत ही कम सम्पत्ति आई । नियमित उपासना का क्रम कभी बन्द नहीं किया, कुछ समय के बाद मैंने अपना निजी मकान खरीद लिया तथा जीवन निर्वाह योग्य सभी आवश्यकताएँ पूरी होती गईं । इन लाभों से मुझे अनुभव हो रहा है कि यह सहायता माँ की ही है।

—रामचन्द्र राठौड़

दुर्व्यसन छूटे

गायत्री उपासना-साधना का, मैंने प्रत्यक्ष प्रतिफल देखा कि सिगरेट-बीड़ी पीना, सिनेमा की लत तथा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

फिजूलखर्ची की आदत जो मुझे हर तरह से कमजोर करती जा रही थी, छूट गई ।

—सन्तलाल कौशिक, सीकर (राज.)

माँ ने पुकार सुनी

मेरे जीवन की तीन घटनाएँ हैं, जिन्होंने मेरी ही नहीं सम्पर्क में आने वाले की भी गायत्री उपासना में आस्था पूरी तरह जमा दी है । एक यह कि श्री धीरेन्द्र प्रसाद वाजपेयी (उपखान प्रबन्धक) की पत्नी जो दस दिनों से कोई भी ठोस वस्तु निगल नहीं सकती थी उसने तुरन्त ही दो रोटियाँ खा लीं । इसके लिए मैने माँ से प्रार्थना की थी । दूसरी यह कि श्री के. बी. के. मोरार की पत्नी प्राणघाती बीमारी से ग्रस्त अस्पताल में थी । उन्हें मैंने यज्ञ भस्म दी वह तुरन्त ही स्वस्थ हो गईं । तीसरी यह कि मेरे पैर दो दिनों पूर्व ही सुन्न हो गये तथा चलना फिरना बन्द हो गया । गायत्री जयन्ती के अवसर पर भाग लिया । जप से उठने पर देखा पैर बिल्कुल ठीक हो गये । इन अवसरों पर मैंने सच्चे हृदय से माँ को पुकारा और उन्होंने मेरी पुकार सुनी । इन घटनाओं ने पड़ौसियों को भी माँ का अनन्य भक्त बनाया है ।

—शान्ति सिन्हा दली, राजहरा (दुर्ग)

माँ का असीम अनुग्रह

पिताजी के पास पैसा न होने के कारण मेरी शादी नहीं हो पा रही थी । मैंने गायत्री माँ की उपासना प्रारम्भ की । इसका प्रतिफल यह हुआ कि कुछ ही दिनों बाद मेरी शादी सम्पन्न परिवार के एक व्यक्ति उप-अभियन्ता के साथ हो गई । मेरा जीवन सुखी व्यतीत हो रहा है । उपासना नियमित शुरू है ।

—ज्योति सिंह, पलवपुर (नालन्दा)

रोग मुक्ति

मेरी दो वर्ष की कन्या करीब डेढ़ वर्ष से लगातार बीमार रही । उसका केवल कंकाल ही शेष रह गया था । कई तरह के उपाचार कराये गये । इसमें करीब डेढ़ हजार रुपया तथा लम्बा समय व्यर्थ गया । गाँव में सम्पन्न हुए गायत्री यज्ञ में सम्मिलित तथा मंत्र भस्म का आश्रय लिया । बच्ची का रोग आठ दिनों के अन्दर ही समाप्त हो गया । तब से मेरी आस्था दृढ़ है कि माँ के समान रक्षक और नहीं है ।

—ठानसिंह ठाकरे, खैरलाजी (म.प्र.)

स्वास्थ्य लाभ

शान्ति कुंज में १० दिवसीय शिविर में सम्मिलित हुआ । यहाँ के शान्त वातावरण, संयमित, सात्विक आहार-विहार एवं साधना के प्रभाव से मेरी कई दिनों की लम्बी बीमारी समाप्त हो गई । मुझे अपूर्व शान्ति मिली ।

—मोहनलाल श्रवसार, डग (राज.)

असाध्य रोग से मुक्ति

नागपुर में डिकसा कालेज से, जीवन की आशा छोड़ कर घर वापिस आ गया था । मेरा वृषण सूजकर बहुत बड़ा हो गया था । डॉक्टरों ने उसे असाध्य बता दिया था । गायत्री परिवार के लोगों ने मुझे गायत्री उपासना की प्रेरणा दी । कुछ दिन में ही अण्डकोष का फोड़ा अपने आप फूट गया तथा करीब दो-तीन लीटर मवाद बहा । उसी दिन से मैं स्वस्थ होने लगा अब पूर्ण स्वस्थ हूँ ।

—मनीराम पटेल, टेकाड़ी (म.प्र.)

माँ के अनुग्रह से श्री-समृद्धि सफलता

गायत्री उपासना प्रारम्भ करते ही शरीर, मन और अन्त:करण में आश्चर्यजनक परिवर्तन प्रारम्भ होते हैं। इन परिवर्तनों से सीधे चेतना प्रभावित होती है । भौतिकवाद की दिशा में दौड़ते मन की दिशा जैसे ही आत्ममुखी होती है उसकी प्रेरणाओं-अनुभूतियों का क्रम एकदम बदलता है । सकाम साधनायें यद्यपि पूरी तरह मन को उन अनुभूतियों का लाभ नहीं लेने देतीं तथापि माँ इतनी वत्सल है कि उन्हें भी यह विलक्षण अनुभूतियाँ होती हैं, सफलता की आश्चर्यजनक प्राप्ति इन आत्मिक प्रेरणाओं का प्रतिफल ही होती है । कई बार तो यह इतनी विलक्षण होती है कि उसे विशुद्ध चमत्कार ही कहा जा सकता है ।

हमारे संरक्षण मार्गदर्शन में गायत्री उपासना करने वालों की संख्या कई लाख है । उनमें बीस-पच्चीस अनुभूतियाँ प्रतिदिन आती रहती हैं उन्हीं के कुछ अंश यहाँ दिये जा रहे हैं ।

रक्त कैन्सर में लाभ

पूज्य गुरुदेव की आज्ञानुसार मैंने गायत्री की साधना प्रारम्भ की है । मैं रक्त कैन्सर की असाध्य बीमारी का रोगी हूँ । इसके पहिले काफी चिकित्सा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भी करवायी । डॉक्टरों ने इसे असाध्य कह कर छोड़ दिया था तथा उन्हें मेरे जीवन की आशा न थी । जब से मैंने साधना प्रारम्भ की है तब से इसमें आश्चर्यजनक लाभ हुआ है । साधना प्रारम्भ करने के पूर्व रक्त में कैन्सर के विषाणुओं की संख्या १३२००० थी । साधना प्रारम्भ करने के कुछ दिनों बाद डॉक्टरी जाँच में पाया कि विषाणुओं की संख्या ९४८०० शेष रह गई । इसके ८ माह बाद पुनः जाँच में यह संस्था ६३००० ही रह गई। अब मुझे अटूट विश्वास है कि यह रोग मात्र साधना से ही समाप्त हो जायेगा । मेरा स्वास्थ्य भी पहिले की अपेक्षा काफी अच्छा है । मेरे जीवन की आशा छोड़ देने वाले डॉक्टर आश्चर्य में पड़े हैं कि यह कौन-सा चमत्कार है ।

—जमुना प्रसाद पटेल गडर पिपरिया, जबलपुर (म.प्र.)

गायत्री यज्ञ का प्रतिफल

मिशन की विचारधारा से परिचित होने के बाद मैं इस क्षेत्र में सम्पन्न होने वाले यज्ञायोजनों में निष्ठा-पूर्वक भाग लेता रहा । प्रत्येक यज्ञों से कुछ न कुछ प्रेरणा लेकर जीवन को श्रेष्ठ मार्ग पर अग्रसर करता रहा । साहित्य का अध्ययन करता रहा । इन सबसे मुझे आत्मसन्तोष मिला । शादी को सोलह वर्ष हो जाने के बाद भी कोई सन्तान पैदा न हो पाई थी, मेरी कामना केवल इसी की थी । माँ की कृपा से मेरी यह कामना भी पूर्ण हुई । यज्ञ पिता एवं माँ गायत्री के आशीर्वाद से पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई ।

—प्रेमसिंह भदोरिया लश्कर, ग्वालियर

ढाल कवच बनकर रक्षा

दिन में दोपहर के ढाई बजे के करीब ट्रक से स्कूटर टकरा जाने की दुर्घटना हो गई । इस दुर्घटना का पूर्वाभास मुझे ५-१० मिनट पूर्व ही हो गया । यह दैवी कृपा ही समझ आती है । तदनुसार मैंने एक हाथ से स्कूटर संभाल कर दूसरे हाथ से स्वयं को बचाने का उपाय किया और आश्चर्य यह है कि वह हाथ ही ढाल कवच के रूप में मेरी रक्षा कर गया । मानसिक सन्तुलन के बने रहने के परिणाम-स्वरूप ही इतनी भयावह दुर्घटना घटने के बाद भी प्राण बच सके। लोगों को आश्चर्य तब हुआ जब उन्होंने मुझे सकुशल बिना किसी चोट-खरोंच के भी अच्छी स्थिति में देखा। मुझे अब विश्वास है कि आने वाली विपत्तियाँ तो आयेंगी ही किन्तु मेरे पास—ऐसी समर्थ ढाल है जो मुझे बचाती रहेगी ।

—बलराम राव, भोपाल (म.प्र.)

दिव्य शक्ति का ही सहयोग

एक विचित्र प्रकार के रोग से मैं ग्रस्त था । इस रोग के कारण जीवन से मुझे निराशा हो गई थी । वायु प्रकोप एवं हृदय प्रदेश में वायु भर जाने से सदैव भयंकर पीड़ा रहती थी । इसमें प्राणान्त होने की स्थिति आ जाती थी । किन्तु माँ गायत्री की उपासना साधना से ही यह रोग बिना किसी चिकित्सा के ही समाप्त हो गया ।

—सीताराम पाण्डे, गढ़ारोड सागर (म.प्र.)

माँ की अनुकम्पा सब पर ही

जब से मैं माँ गायत्री के सान्निध्य सम्पर्क में आया तभी से मेरा काया-कल्प हो गया, पारिवारिक जीवन में सुख-शान्ति एवं शारीरिक स्वास्थ्य मिला । आलस्य, प्रमाद, दुर्गुण आदि समाप्त होकर अब मेरा जीवन सज्जनोचित है । मेरी जानकारी में और भी कुछ घटनायें हैं जिनमें माँ की अनुकम्पा बरसी । हमारे ग्राम की तीन विधवा असहाय महिलाओं को शासकीय वृत्ति प्राप्त होना, मेरी नौकरी में प्रमोशन का मार्ग खुलना तथा कुमारी ओम की शादी, योग्य वर से सम्पन्न हो जाना, आदि माँ की अनुकम्पा को ही सिद्ध करते हैं ।

—रिसाल सिंह रीडर झुंझनु (राज.)

आश्चर्यजनक प्रेरणा

जब से मैं पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में आया तथा उनके साहित्य का अध्ययन करना प्रारम्भ किया तब से मुझे समय-समय पर आश्चर्यजनक प्रेरणा मिलती रही। जब कभी निराशा के भाव आने लगते हैं मैं साहित्य को पढ़ कर प्रेरणा ग्रहण करता । इसी क्रम से मैंने एम.ए. तक उच्च शिक्षा प्राप्त की, जिसके फलस्वरूप मेरी नौकरी में अच्छी तरक्की हुई । यदि मुझे पू. गुरुदेव के साहित्य से प्रेरणा न मिलती तो मैं जहाँ का तहाँ पड़ा रह जाता ।

—ईश्वर दास वैष्णव, मनेन्द्रगढ़ (राज.)

सत्-साहित्य की सक्षमता

मैं बचपन से माता-पिता तथा परिवार वालों की चिन्ता का विषय बना हुआ था । प्रारम्भ से शरीर दुर्बल, रोगग्रस्त तथा बुद्धि मन्द थी । सभी मुझे बेवकूफ समझते थे । जब से मैंने गायत्री उपासना का आश्रय लिया और अखण्ड ज्योति का अध्ययन करना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आरम्भ किया तब से ही सूक्ष्म रूप से आध्यात्मिक प्रेरणायें मिलती रहीं । मेरा आत्मबल बढ़ा तथा मिशन के प्रचारात्मक कार्यों के प्रति सक्रियता आयी । इस आत्म-विश्वास के आधार पर ही मेरा व्यवहार, स्वाध्याय, ज्ञान आदि पूर्वापेक्षा काफी बदल चुका है । लोगों को आश्चर्य हो रहा है कि मुझमें इतनी उत्कृष्टता कहाँ से आ गई । किसी को विश्वास हो या न हो, गायत्री उपासना के साथ सत्-साहित्य का स्वाध्याय निश्चित ही जीवन दिशा बदलने में सक्षम है ।

—चन्द्र प्रकाश शास्त्री, गंज डुण्डवारा (एटा)

स्वप्न में पूर्वाभास

मीसा के अन्तर्गत मैं जेल गया । एम. कॉम. की परीक्षा में मुझे प्रथम श्रेणी के अंङ्कों में ५ अङ्क कम मिले तथा युग-निर्माण योजना मिशन के प्रति सक्रिय सहयोग प्रदान कर रहा हूँ । इन तीनों घटनाओं का पूर्वाभास मुझे स्वप्न में ही हो गया था । जो अक्षरशः सत्य घटित हुई । यह क्षमता गायत्री उपासना से ही विकसित हुई ।

—कैलाशचन्द्र महाजन, खरगौन (म.प्र.)

बीमारी से मुक्ति मिली

पिछले दिनों मैं लीवर तथा लोब्लड प्रेशर की बीमारी से ग्रस्त था । पूज्य गुरुदेव के निर्देशानुसार गायत्री की साधना शुरू की । पूर्ण निष्ठा-श्रद्धा के साथ माँ का आँचल पकड़ रहा । माँ की कृपा से अब यह बीमारी नहीं रही । मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ ।

—शिवशंकर मिश्र, राजेन्द्र नगर (उ.प्र.)

गायत्री मन्त्र की अद्भुत शक्ति

मेरे जीवन की दो घटनायें हैं जिनसे गायत्री मन्त्र को अद्भुत शक्ति की अनुभूति मुझे हुई है । प्रथम यह कि मेरी माँ गत चालीस वर्षों से असाध्य बीमारी से ग्रस्त थी । इस बीच शायद ही उनका कोई क्षण प्रसन्नतापूर्वक बीता हो । इस बीमारी की चिकित्सा कई डॉक्टरों से करवाई गई किन्तु सब निष्फल ही रहा। मैंने गायत्री मन्त्र से अभिमंत्रित जल पिलाना प्रारम्भ किया, धीरे-धीरे रोग ठीक हो गया । इसी तरह की एक घटना है कि एक घर में शैतान का बड़ा आतङ्क था । इससे उनका जीवन बड़ा ही भयभीत एवं अशान्त था । मैंने माँ का अवलम्बन लेकर उस घर में गायत्री यज्ञ किया । उसी दिन से सभी तरह की भूत बाधायें समाप्त हो गईं ।

—प्रेमदास मुण्डा, शान्ति कुंज (हरिद्वार)

माँ की अद्भुत सहायता

मैं यज्ञायोजन सम्पन्न कराने ग्राम बुदबुदा गया था। आयोजन की पूर्णाहुति के बाद मुझे वहाँ के स्थानीय लोगों द्वारा देवी पूजन करा देने के लिए विवश कर दिया गया । इसी कारण मुझे काफी देर हो गई । इसी बीच रेलगाड़ी आने का समय हो गया । मैं मन ही मन घबरा रहा था कि गाड़ी अब न मिल पायेगी । गाड़ी के आने का समय हो गया । रेलवे स्टेशन पर गाड़ी पहुँच गई । गाड़ी के रवाना होने के लिए सिगनल भी मिल गया। ड्राइवर के द्वारा अनेकों प्रयास किये जाने पर भी गाड़ी बढ़ नहीं रही थी । करीब १ घण्टा तक सभी रेलवे कर्मचारी परेशान हो गये । गाड़ी वहाँ पर ही रुकी रह गई । इसी बीच मैंने अपना कार्य पूरा किया, स्टेशन पहुँचा, टिकिट खरीदा तथा गाड़ी में बैठा । मेरे बैठते ही गाडी चल पड़ी । इस प्रकार की अज्ञात खराबी एवं स्वतः ही गाड़ी चल पड़ने की घटना ने सबको हतप्रभ कर दिया । मैंने इसे माँ की कृपा का चमत्कार ही समझा ।

—खुरसीराम भगत, खैरलॉजी (बालाघाट, म.प्र.)

नौकरी मिली

पुत्र अनिरुद्ध को नौकरी में लगाने के लिए मैं काफी परेशान था । पूज्य गुरुदेव को इसके लिए पत्र लिखा । पत्र द्वारा ही गुरुदेव ने आशीर्वाद दिया और और गायत्री उपासना की प्रेरणा दी । नौकरी के लिए आवेदन किया गया तथा हिसार (पंजाब) एग्रीकल्चर कॉलेज में उसे नौकरी मिल गई ।

—छेदालाल भगत, (भागलपुर)

सफलता की चाबी हाथ लगी

मैं काफी परेशान था । मुझमें काफी व्यसन थे । इस कारण से मेरी आर्थिक स्थिति असन्तुलित थी। मैं अपने ही निवास स्थान में स्थानान्तरण कराना चाहता था किन्तु सफलता नहीं मिल पा रही थी । सभी तरफ से निराश था ही कि मित्र जगनलाल चोरसिया ने गायत्री साधना की प्रेरणा दी । अमूल्य कुंजी मेरे हाथ लगी । इस कुंजी के द्वारा सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान किया जा रहा है । अब मैं पूर्ण रूप से सन्तोष तथा सुख का अनुभव कर रहा हूँ । मेरा स्थानान्तरण इच्छित जगह में हो गया । मेरे पहले के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जीवन तथा अब के जीवन में जमीन आसमान का अन्तर है । अटूट श्रद्धा के साथ आत्मबल के आधार पर असम्भव कार्यों में सफलता प्राप्त होती है ।

—माधवलाल रेवा (नीमच)

टी. बी. रोग से मुक्ति

मुझे टी.बी. की बीमारी हो गई थी । इसकी चिकित्सा कई डॉक्टरों से करवायी । किन्तु सफलता नहीं मिली । प्राय: सभी डॉक्टरों ने चिकित्सा करने के लिए मना कर दिया । हताश होकर मैं पूज्य गुरुदेव के पास आया । गुरुदेव की आज्ञानुसार एक वर्ष तक गायत्री उपासना और तुलसी के पत्ते खाकर रहा । इसी से मेरा रोग समाप्त हो गया । इससे डॉक्टरों को भी आश्चर्य हुआ । —श्यामलाल, मथुरा (उ.प्र.)

मैं दूसरा ही हो गया

बुरी संगति के कारण मुझमें कई दुर्गुण आ गये थे। पारिवारिक कलह बना रहता था । मेरा स्वास्थ्य गिरता जा रहा था । जब से गायत्री उपासना प्रारम्भ की सारी दुर्गुण धीरे-धीरे समाप्त हो गये, मेरा स्वास्थ्य सुधरता गया तथा ग्रह-कलह भी शान्त हो गये । पुत्र की प्रप्ति हुई । इस तरह मेरा सारा जीवन ही बदला हुआ है ।

—दीपासिंह तोमर, नगला-इटावा (उ.प्र.)

चिन्ता दूर हुई

ईर्ष्यालु लोगों के पीछे पड़ने के कारण मेरा स्थानान्तरण करवाया जा रहा था । इसके लिए काफी प्रयास भी किया गया । किन्तु यह सब निष्फल ही रहा । मुझे मेरी पुत्री के विवाह की चिन्ता थी । किन्तु यह भी अधिक दिनों तक बनी नहीं रह सकी । गायत्री माँ की कृपा से मेरी ये समस्यायें सरलतापूर्वक समाप्त हो गईं ।

—रामप्रसाद शर्मा, शुजालपुर मण्डी (म. प्र.)

पत्नी का स्थानान्तरण हुआ

मैं, मेरी धर्मपत्नी का स्थानान्तरण जोमटा से गोंडल करवाना चाहता था । किन्तु मुझे सफलता नहीं मिल रही थी । पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से यह कार्य सरलतापूर्वक सम्पन्न हो गया ।

—कनुभाई पण्डया, गोंडल (गुज.)

प्राणदान

पुत्री रामा कुमारी की रक्षा माँ गायत्री ने की । दु:साध्य रोग के कारण इसकी जीवन लीला समाप्त हो जाने वाली थी । कोई औषधि काम न आने पर गायत्री उपासना का आश्रय लिया । माँ के आशीर्वाद से यह बच्ची बच गई । अब यह पूर्ण स्वस्थ एवं नीरोग है ।

—गनेशदास अरोड़ा, आरा (बिहार)

भयंकर रोग से मुक्ति

मेरी पुत्री मंजुला किडनी के दर्द से बुरी तरह परेशान थी । इस रोग के कारण उसका शरीर मात्र कंकाल ही रह गया था । जीवन की कोई आशा नहीं थी । जिन चिकित्सकों से चिकित्सा करवाता, सभी इसके जीवित न रहने की बात कहते । मैंने परेशान होकर गायत्री माता की शरण ली । पुत्री मंजुला को भी नियमित जप के लिए प्रोत्साहित किया । मात्र जप करने से ही उसका रोग पूरी तरह समाप्त हो गया । पुत्री स्वस्थ हो गई । इसके साथ ही मेरी पारिवारिक स्थिति सन्तोषजनक हो जाना गायत्री की कृपा का ही सत्परिणाम है ।

—मगनचन्द्र पाण्डेय (मुंगेर)

माँ की वत्सल रक्षा

मेरी दुर्बुद्धि ही कही जानी चाहिए कि मैं चलती ट्रेन से चढ़ रहा था । साथ में भारी सामान रहने के कारण मैं अपने आप को सम्भाल न सका । प्लेट फॉर्म तथा रेलगाड़ी के बीच गिर पड़ा । चलती हुई ट्रेन के बीच काफी थपेड़े खाये । मेरे होश-हवाश उड़ गये थे। न जाने कौन सी शक्ति ने मेरी रक्षा की । मुझे कुछ भी चोट नहीं आई थी । मुझे केवल इतना याद है कि गिरते समय मैने पू. गुरुदेव का आह्वान किया था।

—श्रीराम अग्रवाल तेन्दूकोना (म. प्र.)

माँ गायत्री—अमृत, पारस और कल्पवृक्ष

यों अदृश्य सहायतायें कभी भी किसी को भी मिल जाती हैं । किन्तु लम्बे समय तक गायत्री उपासकों के अनुभव सुनने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि गायत्री उपासकों की अन्त:स्थिति कुछ इस तरह विनिर्मित होती है जिससे प्राय: प्रत्येक साधक को किसी न किसी रूप में अदृश्य सहायतायें अवश्य मिलतीं और उपासकों को अमृत से अरोग्य, पारस के स्वर्णिम जीवन और कल्पवृक्ष से मनोकामनाओं की पूर्ति का पुण्य लाभ सुनिश्चित मिलता है, यहाँ ऐसे ही कुछ अनुभव प्रस्तुत है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चमत्कारी संरक्षण

गया नगर के नादिरा गंज की सच्ची घटना है । वहाँ की एक बिल्डिंग के तीसरे मंजिल पर गायत्री उपासक परिवार रहता था । विगत दिनों वहाँ पर यज्ञायोजन भी सम्पन्न हुआ था । उसी अवसर पर गायत्री चित्र स्थापित किया गया । एक दिन अचानक ही मकान गिर गया । मकान गिरने का संकेत पाकर नीचे की मंजिलों में रहने वाले लोग भाग गये । किन्तु इस परिवार के लोग कि कर्त्तव्यविमूढ़ होकर माँ गायत्री के सामने आत्म-समर्पित भाव से खड़े हो गये । लोगों को आश्चर्य तब हुआ जब मकान गिर जाने के बाद भी तीसरी मंजिल का वह हिस्सा सुरक्षित बचा रहा । तभी से इस परिवार के सभी सदस्यों का जीवन माँ गायत्री के आलोक को फैलाने में लगा है । उनका कहना है कि यह शेष जीवन अब माँ का ही है । हमारा जीवन तो उसी दिन समाप्त हो गया ।

—मालती सिन्हा, गया (बिहार)

वही पुत्र पुनः मिला

मेरा एक ही पुत्र था । किसी रोग से वह चल बसा। इसका शोक मुझे था । पूज्य गुरुदेव ने सान्त्वना देते हुए कहा था कि धैर्य धारण करो वही पुत्र तुम्हें मिल जायेगा । इसके लिए माँ गायत्री की साधना उपासना करो । मैंने वैसा ही किया । माँ की समर्थता का ज्ञान मुझे तब हुआ जब एक वर्ष बाद पहिले वाले पुत्र के समान रूप वाला पुत्र जन्मा । माँ की कृपा से वह बालक बड़ा ही बुद्धिमान निकला ।

—नागूलाल शर्मा, नागदा (म. प्र.)

आध्यात्मिक सम्पदा प्राप्त हुई

प्राण प्रत्यावर्तन साधना शिविर में सम्मिलित होकर मैं धन्य हो गया । उस समय मुझे प्रथम बार इस जीवन की कीमत ज्ञात हुई । वहाँ अध्यात्म की विपुल सम्पदा मिली और जो शान्ति-सन्तोष का अनुभव हुआ वैसा इससे पहिले कभी नहीं हुआ । मेरा भौतिक शरीर तो वही रहा किन्तु विचार और हृदय बिल्कुल ही बदल गये । ज्ञान की दिव्य ज्योति के प्रकाश में जो देखा वह अवर्णनीय है । लेकिन उसी समय मेरा संकल्प जाग गया कि इसे देव परिवार का सदस्य आजीवन बना रहूँगा । तब से ही माँ गायत्री का आँचल पकड़े हुए हूँ । अन्य अनेक लोगों को भी इस माला में पिरो दिया है । अब मेरा जीवन धन्य है । सुख-शान्ति से बीत रहा है।

—भगवत प्रसाद एम. इनामदार, बड़ौदा ५ (गुज.)

डगमगाती नैय्या सम्भली

परिवार की आर्थिक स्थिति काफी गम्भीर थी । शारीरिक एवं मानसिक रूप से मैं अस्वस्थ था । चिन्ता, भय, निराशा, क्रोध, कामुकता आदि विकारों से घिरा जीवन जी रहा था । करीब १० वर्षों से मैं असाध्य बीमारी से ग्रस्त था । काफी चिकित्सा के बाद भी कोई लाभ न हुआ । जीवन नैया मझधार में पड़ी डगमगा रही थी । इसी समय माँ गायत्री का सहारा मिला । युग-निर्माण योजना शाखा के परिजनों से सम्पर्क हुआ । उनके निर्देशानुसार मैंने साधना उपासना के साथ अपने जीवन व्यवहार आहार-विहार पर संयम किया । इस सबके चमत्कारिक सत्परिणाम सामने आये । मुझमें सक्रियता बढ़ी, इससे मेरी पदोन्नति हुई । पदोन्नति से आर्थिक समस्या हल हुई तथा चित्त की प्रसन्नता तथा संयमित दिनचर्या से १० वर्ष पुराना रोग समाप्त हो गया । आज मेरा जीवन हर तरह से सुख सुविधा पूर्ण सन्तोष प्रिय है ।

—अश्विनी कुमार शर्मा, पिपलानी (भोपाल)

श्रद्धा और विश्वास की जड़ जमी

दिनांक ७ नवम्बर, ७८ की घटना है । मेरे पिताजी की मृत्यु हो गई । उन्हें जमीन पर लिटा दिया गया तथा सारे परिवार में शोक छा गया । करीब एक घण्टा बाद ही एक आश्चर्यजनक घटना घटित हुई । पिताजी अचानक ही जाग उठे । सभी शोकग्रस्त समाज को आश्चर्य हुआ । जागने पर पिता जी ने बताया कि चार भयानक आकृति वाले व्यक्तियों से लड़कर एक सज्जन व्यक्ति मुझे छुड़ाकर लाया । सज्जन व्यक्ति का तर्क था कि "इन्हें यज्ञ में तथा कन्या पार्वती के विवाह में भाग लेना है ।" और वास्तव में पाया गया कि दूसरे ही दिन से झांसी में २५ कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न होना था तथा यज्ञ के एक दिन पूर्व ही पार्वती का विवाह तय हो गया तथा यज्ञ में उसका विवाह सम्पन्न हो गया । इस घटना ने हमारे परिवार वालों में श्रद्धा और विश्वास की जड़ जमा दी । सभी सदस्य माँ की उपासना में रत हुए हैं तथा मिशन के कार्यों के प्रति सक्रियता पूर्ण सहयोग दे रहे हैं ।

—पन्नलाला नामदेव बगरा झाँसी

उज्जवल भविष्य हेतु दिया बोध

युग-निर्माण योजना शाखा, आगरा के सदस्यों से सम्पर्क होने के बाद जीवन में चमत्कारिक मोड़ आया। मैंने मिशन का साहित्य पढ़ा । इससे अध्यात्म

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के प्रति रुचि जाग्रत हुई और उज्जवल भविष्य की दिशा मिली । तभी से मैं जीवन साधना की ओर प्रवृत्त हुआ। नित्य नियमित साधना-स्वाध्याय, संयम सेवा का क्रम अपनाने लगा । मुझमें पुरुषार्थ जाग्रत हुआ । इसके सत्परिणाम स्वरूप कार्य-व्यापार में उन्नति हुई तथा यश भी मिला । न केवल भौतिक लाभ वरन् आध्यात्मिक क्षेत्र में भी काफी उपलब्धियाँ हुई । सारा परिवार ही सुख-सन्तोष भरे बातावरण में स्वर्गीय आनन्द प्राप्त करने लगा । मेरे जीवन की कुछ घटनाएँ है जिन्हें माँ गायत्री का अनुग्रह ही कहा जा सकता है। दो बार पानी में डूबते समय किसी अज्ञात शक्ति द्वारा ही रक्षा हुई, एक बार बिजली का करेण्ट प्रवाहित हो जाने के बाद भी सुरक्षित बचा रहा ।

—दुर्गा प्रसाद शर्मा एडवोकेट (आगरा २)

दिव्य शक्ति का दिव्य संरक्षण

मैं ग्राम कँवरपुरा के चार दिवसीय यज्ञायोजन में सम्मिलित होने घर में ताला लगाकर गया । पूर्णाहुति के बाद जब घर वापिस आया तो मैं माँ गायत्री की कृपा से कृतकृत्य हो गया । घटना यह थी कि घर में भीतर से कुण्डी बन्द थी । उस दशा में किसी तरह पल्ले निकाल कर घर में प्रवेश किया गया । और सभी ने देखा कि पिछवाड़े के दरवाजे टूटे थे, घर का सभी समान आँगन में पड़ा था । लेकिन उसमें से सभी समान सुरक्षित था । इस दृश्य को देखकर मैं क्या उस समय उपस्थित सभी लोगों को आश्चर्य हुआ । प्रश्न यह उभर कर मस्तिष्क में बार-बार आता था कि जिस चोर ने इतनी हिम्मत की, इस सामान को ले क्यों नहीं गया । बहुत दिनों के बाद चोर ने अपने पश्चाताप स्वरूप उस दिन की घटना का चमत्कार सुनाया और कहा कि माँ गायत्री के स्वरूप वाली ही दिव्य महिला ने इस सामान की चौकसी की । इसीलिए सामान कुछ भी नहीं ले जा पाया । तभी से वह व्यक्ति भी अनन्य भाव से माँ गायत्री का उपासक बन गया है तथा उसने पहिले का व्यवहार त्याग दिया है । उसका कहना है कि अपने भक्तों की ऐसी रक्षा करने वाली शक्तिशाली और कोई नहीं है ।

—रामचन्द्र गुप्त सीसवाली (राज.)

स्वप्नों में माँ की भावभरी प्रेरणायें

गायत्री उपासना से अन्त:स्थिति किस तेजी से प्रभावित होती है उसका प्रमाण साधकों के निर्मल स्वप्न और उनमें मिलने वाले दैवी संकेत होते हैं इस तरह के स्वप्न प्राय: हर गायत्री उपासक को आते हैं कई बार पूर्व जन्मों में की गई गायत्री साधना की शृंखला को वर्तमान जीवन के संयोग से जोड़ने में भी यह स्वप्न सहायक होते हैं । वर्षों से सैकड़ों साधकों से इस तरह की अनुभूतियाँ सुनते रहे हैं इनमें कई तो बहुत ही विलक्षण होती हैं । इन पंक्तियों में इन स्वप्न जन्य पूर्वाभासों के अतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं—

स्वप्न में पूर्वाभास

मैं अपने जीवन से ऊब गया था । अनेकों तरह की विपत्तियाँ डेरा डाले पड़ी थीं । इनसे छुटकारा पाने को भरथरी पंथ में जाने की तैयारी कर ली थी । उसी रात को मैंने अद्‌भुत स्वप्न देखा कि एक प्रतिभावान व्यक्ति मुझे मन्दिर में ले गया और देवी की प्रतिमा की ओर संकेत करते हुए कहा कि "इसी की आराधना कर, इससे ही समस्या सुलझेगी तथा शान्ति मिलेगी जागने पर मैंने अपना निर्णय बदल दिया तथा स्वप्न में देखे गये मन्दिर की खोज में निकल पड़ा । सौभाग्य ही कहें कि मुझे एक अखण्ड ज्योति पत्रिका मिली । उसे पढ़ा। पढ़ने से ही कुछ शान्ति मिली । उसमें लिखे पते के अनुसार मैं मथुरा पहुँचा और स्वप्न का पूरा दृश्य साकार देखा । स्वप्न के अनुसार ही मैं मां गायत्री का अनन्य उपासक बना हूँ और सुख-शान्तिपूर्वक जी रहा हूँ ।

—जगतराम शर्मा जोगिया पालगढ़ (म. प्र.)

बेकारी का निराकरण

उस दिन चित्त बहुत अशांत था । पिता का सर्विस से अवकाश, पेंशन से परिवार का गुजारा नहीं, बहिन यशोधरा पाणिग्रहण योग्य। चार वर्ष हो गये सर्विस की तलाश में, निराशा ने थका-सा दिया था । तभी एक दिन श्रीराम शर्मा आचार्य कृत गायत्री महाविज्ञान प्रथम भाग अपने एक मित्र से पढ़ने को मिला । उसे पढ़ने से लगा गायत्री उपासना में संकटों के निवारण के तत्व हैं । अन्धा क्या चाहे, दो आँखें । गायत्री उपासना की । चौबीस हजार जप का अनुष्ठान किया। पूर्णाहुति के दिन-रात में सोया तो बड़ी शान्ति थी । गहरी निद्रा में था । एक कुमारी कन्या ने दर्शन दिये । उनकी अभूतपूर्व प्रतिभा आज भी नहीं भूलती । उनके शब्द थे—"मनुष्य होकर निराश होता है, कुछ काम क्यों नहीं करता ।" दूसरे दिन यही शब्द गूँजते रहे । न जाने क्यों बैंक की ओर चल पड़ा वहाँ जाकर देखा तो मैनेजर मेरे पिताजी के मित्र थे । बातचीत में उन्होंने ही परामर्श दिया—ऋण लेकर कोई काम क्यों नहीं करते । बात चलाई चौथे दिन ऋण मिल गया ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साइकिल पार्ट्स की दुकान खोल ली जो अब नगर की प्रमुख दुकानों में से है । माँ की कृपा से न केवल समस्याएँ सुलझीं अपितु इतना कुछ मिला जो नौकरी में कभी भी न मिलता ।

—श्री दिलीपकुमार, सीसूपुर

प्राण रक्षा के पूर्वाभास

माँ गायत्री की साधना, उपासना तथा उनकी कृपा से मैं कई बार अनेकों संकटों से प्राण रक्षा कर सका । इसका पूर्वाभास मुझे स्वप्न द्वारा ही मिलता रहा । टेबिलफेन से करेण्ट लग जाना, पाकिस्तान युद्ध के समय अपने प्राणों की रक्षा कर लेना, पत्नी की चिकित्सा कराना आदि अवसरों पर प्राणों की रक्षा कर देने की युक्ति स्वप्न द्वारा ही आभासित हो गई थी। इसके सिवाय और भी अनेक विषयों में संकटों से पार पाने की युक्ति भी स्वप्न द्वारा ही आभासित हुई ।

—मानसिंह सामन्त गनाछे (आल्मोड़ा)

स्वप्न में प्रेरणा

मेरा पुत्र—अकाल मृत्यु—जल में डूब जाने के कारण मरा था । इसका मुझे बड़ा शोक था । एक रात्रि को स्वप्न में ही उसने अपनी मृत्यु का वृत्तान्त सुनाया तथा पुनः इसी घर में जन्म लेने की सूचना दी । इसे तो मैं मात्र स्वप्न ही मान रहा था । किन्तु समय आने पर उसी रूप-आकार का एक पुत्र रत्न प्राप्त हुआ। मुझे यह आश्चर्य लगा उस स्वप्न को मैंने सच माना । तब से ही मैं माँ गायत्री की उपासना में लग गया । क्योंकि स्वप्न में ही मुझे उस बालक ने माँ गायत्री की उपासना की प्रेरणा दी थी ।

—सहदेव सा. मुंगेर (बिहार)

यों प्रेरणा मिली

मैं निद्रा देवी की गोद में विश्राम कर रही थी कि एक सुन्दर एवं दिव्य रूप वाली महिला के दर्शन हुए। उस महिला के रूप को देखकर मैं आकर्षित हो गई । उनसे मैं लिपट कर रोमांचित हो उठी । उस दिव्य महिला ने मुझे भावी जीवन के लिए आशीर्वाद दिया साथ ही एक पुस्तक । उस पुस्तक पर "गायत्री" नाम अंकित था । इतना दृश्य देखने पर मेरी नींद टूट गई । दूसरे ही दिन मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि स्थानीय श्री रामदीन जी मेरे घर पधारे और उन्होंने मुझे गायत्री चालीसा की पुस्तक दी तथा गायत्री की साधना करने की प्रेरणा दी । उसी दिन से मैंने साधना प्रारम्भ कर दी । आज मेरी अनन्य निष्ठा माँ के प्रति जमी है, जीवन भी सुखी एवं सम्पन्न है ।

—दुर्गा देवी जोधपुर (राज.)

काफी भटकने के बाद राह मिली

बचपन से ही अध्यात्म के प्रतिरुचि जाग्रत थी । इसके लिए मैं काफी प्रयास रत था कि मुझे कुछ अनुभूतियाँ हों, अनेकों तरह की साधनाएँ कीं । धार्मिक ग्रन्थों का पारायण किया, सत्संग किया, किन्तु कहीं भी मेरी जिज्ञासा शान्त नहीं हुई और न ही सन्तोष मिला । सभी तरह से असफलता मिलने के बाद मैं नास्तिक होने लगा । मन में व्याकुलता रहने लगी । तब ही गायत्री के एक उपासक के द्वारा गायत्री उपासना की प्रेरणा मिली । अखण्ड ज्योति पत्रिका पढ़ने को मिली। कुछ ही दिनों बाद मुझे ऐसा लगा कि बचपन से मैं जिस खोज में था वह असीम सम्पदा मिल गई । श्रद्धा और निष्ठा के साथ पुरुषार्थ का जागरण हुआ । जीवन प्रगति की दिशा में अग्रसर होने लगा । कई बार असम्भव रोगों तथा समस्याओं में चमत्कारिक लाभ हुआ । अब मैं इस राह पर अकेला ही नहीं अन्य अनेकों को भी साथ लेकर चल रहा हूँ।

—नगद नारायण शर्मा धुर्वा (राँची)

गायत्री मन्त्र का सूक्ष्म प्रभाव

मेरे अग्रज की अकाल मृत्यु काफी दिनों पूर्व हो गई थी । मृत्यु के बाद भी उनका उद्धार नहीं हो पाया था तथा उनकी आत्मा अशान्त थी । इसकी सूचना मुझे स्वप्न द्वारा मिलती थी और वे अपने उद्धार के लिए मुझसे गायत्री मन्त्र जप की याचना करते थे । पहिले तो इसे मैं मात्र स्वप्न ही समझता रहा । लेकिन बार-बार इसी तरह के स्वप्न आते रहे तो विश्वास हो गया कि उनका उद्धार नहीं हो पाया है । मैंने उनके उद्धार के लिए गायत्री अनुष्ठान सम्पन्न किया । अनुष्ठान के बाद उन्हें शान्ति मिल गई तथा उनका उद्धार हो गया। इसकी भी सूचना मुझे स्वप्न में ही मिल गई । तब से ही मेरा विश्वास माँ गायत्री की उपासना के प्रति जाग्रत हुआ है और मैं संयमित रूप से जीवन जी रहा हूँ । इसके परिणाम स्वरूप घर में सुख-शान्ति, एकता, प्रेम का वातावरण बना हुआ है ।

—पुरुषोतम दास गुप्त, आमला (म. प्र.)

स्वप्न से जीवन रक्षा

प्रातःकाल पहली बस से सुरौली जाना था । रात पूरी तैयारी करके सोया । प्रथम पहर में स्वप्न में लगा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कोई जाने से मनाकर रहा है । नींद टूट गई । फिर सोया—उत्तरार्द्ध रात फिर वैसा ही स्वप्न-"आज यात्रा पर मत जा"—सोकर उठा तो इन शब्दों के अतिरिक्त कुछ सूझ ही नहीं पड़ रहा था । काम बहुत जरूरी था । अतएव द्विविधा सामने खड़ी थी । कभी जाऊँ, कभी न जाऊँ यही हो रहा था । देखा बस का समय हो गया है । सो अनजाने ही बस अड्डे की तरफ दौड़ा, पर मालूम हुआ उस दिन बस पाँच मिनट जल्दी चली गई। घर लौट आया पर शाम को यह पता चला कि वह बस एक ट्रक से टकरा गई और भीषण दुर्घटना हुई । उस दिन माँ की कृपा आज भी नहीं भूलती ।

—सीताराम पलटा

अनन्त वत्सला के आँचल की छांव में

गायत्री उपासना द्वारा होने वाले सत्परिणाम न तो अंध विश्वास हैं और न ही अनायास ही । बल्कि उन परिणामों के मूल में वैज्ञानिक नियम होते हैं जिनके अनुसार व्यक्ति की मान्यताओं, आस्थाओं और विश्वासों का परिष्कार होता है । उसी परिष्कार के फलस्वरूप सामान्य स्थितियों में भी उस प्रकार की आनन्दानुभूति होती है जिसे प्राप्त करने वालों को देवोपम भाग्यशाली ही कहा जाता है ।

डूबते को नैया मिल गयी

सभी तरह की विकट समस्याओं के कारण मैं इस जीवन से त्रस्त हो चुका था तथा जीवन के प्रति घोर निराशा हो गई थी । जब तब ही यह नैया भीषण भंवर में डूबना ही चाहती थी । ऐसे ही संकट-ग्रस्त अवसर पर माँ गायत्री की उपासना का अवलम्बन मिला । इसकी प्रेरणा मिलते ही मैंने निष्ठा के साथ साधना-उपासना प्रारम्भ की । साथ ही पूज्य गुरुदेव का साहित्य भी पढ़ा । इससे आत्मबिश्वास, आशा तथा पुरुषार्थ का दीप जला और मैं अपने दायित्वों को पूरा करने लगा । अनायास ही उसके श्रेष्ठ फल मिले । लॉ की परीक्षा उत्तीर्ण कर वकालत करने लगा । इससे भी काफी ख्याति मिली । जन-सहयोग मिला और साथ ही पद प्रतिष्ठा भी । आचार-विचार, व्यवहार में सुधार हो जाने से शारीरिक-मानसिक कष्ट-क्लेष समाप्त हुए। आर्थिक समस्या भी हल हो गयी तथा मेरी जीवन प्रगति अनेकों झंझावातों पर विजय प्राप्त करती हुई निर्बाध रूप से आगे बढ़ती रही । इतनी प्रगति कर पाया इसका श्रेय माँ गायत्री की उपासना को ही है ।

—विष्णुदत्त एडवोकेट बैकुण्ठपुर (म. प्र.)

वर्षा के बाद भी यज्ञ सम्पन्न

कसारडीह में सम्पन्न होने वाले यज्ञ आयोजन के अवसर की एक घटना है जिससे दैवी सत्ता पर विश्वास करने के लिए मन को विवश होना पड़ता है। रात्रि की गोष्ठी समाप्त होने के बाद सभी लोग अपने-अपने घर गये । उस समय आकाश बिल्कुल स्वच्छ था । किन्तु करीब ३ बजे रात को अचानक ही वर्षा शुरू हुई और करीब १ घण्टे तक मूसलाधार वर्षा होती रही । पानी से खेत भर गये । मडाल में पानी ही पानी हो गया । यज्ञ शाला में भी पानी भर गया । पानी बन्द होने का नाम ही नहीं ले रहा था । हम लोग घबरा गये । सिवाय माँ गायत्री को याद करने के कुछ सूझ नहीं रहा था । इस कार्य को निर्विघ्न सम्पन्न होने की प्रार्थना करते हुए हम लोग पण्डाल और यज्ञ शाला की सफाई में जुट गये । सफाई करते-करते ही पानी अचानक बन्द हो गया । कुछ देर पहले जहाँ घटाटोप बादलों को छाया हुआ देखकार लग रहा था कि पानी बन्द ही नहीं होगा, वहीं इस प्रकार पानी बन्द हो जाने को चमत्कार ही समझा ।

—वी. आर. साठ वाने, कसारीडीह दुर्ग

अदृश्य सहयोग मिला

पेन्डा में ९ कुण्डीय यज्ञायोजन सम्पन्न होना था इसका काफी विरोध किया जा रहा था । विरोधियों की गतिविधियों से पता लगता था यज्ञ सफल नहीं हो पायेगा । लेकिन चमत्कार यह हुआ कि उन विरोधियों ने भी यज्ञ में सहर्ष भाग लिया । उन्होंने स्वयं भी आश्चर्य व्यक्त किया ।

—शूम्भूरतन जायसवाल पेंड्रा

माँ ने विश्वास बंधाया

गत दिनों की बात है । शाखा में सामूहिक यज्ञ सम्पन्न होना था । आयोजन की विशालता को देखते हुए सभी परिजन घबरा गये थे । एक रात्रि को मैंने स्वप्न में देखा कि यज्ञायोजन प्रभावशाली ढंग से सानन्द सम्पन्न हो गया है । इसमें माँ गायत्री की असीम कृपा थी । यह स्वप्न मैंने सभी परिजनों को सुनाया । स्वप्न को माँ का निर्देश समझ कर सभी परिजन श्रद्धा के साथ यज्ञ की तैयारी में जुट पड़े और इसके परिणाम स्वरूप ही यज्ञायोजन सानन्द सम्पन्न हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गया । इस यज्ञ की सफलता से सभी परिजन सदा के लिए ही मिशन से जुड़ गये ।

—रूद्रनाथ पाण्डेय कोटमी, विलासपुर

अपने आप का बोध हुआ

मेरे स्वभाव एवं व्यवहार में पहले काफी मलीनता छाई हुई थी । इनके परिणाम स्वरूप मेरे चारों ओर असहयोगी एवं विषम परिस्थितियाँ घिर आई थीं । इस घोर अन्धकार के समय में ही पूज्य गुरुदेव के सम्पर्क में आया । उनके निर्देशानुसार माँ गायत्री की उपासना प्रारम्भ की और मिशन के साहित्य का स्वाध्याय भी । इसके प्रकाश में मैं अपने आपको स्वच्छ बनाने में जुट गया । इससे जो आनन्द और प्रकाश मिला है उसमें अपना सौभाग्य, परमात्मा की अनुकम्पा ही मानता हूँ।

—एस. एस. साहू, बलौदा, विलासपुर

जहाँ चाह है वहाँ राह है

दीक्षा संस्कार के बाद ही मेरी इच्छा जाग्रत हुई कि इसका महात्मा क्या है । क्रमशः उम्र बढ़ती गई । उम्र के साथ ही यह इच्छा प्रबलतर होती गई । संयोग ही कहिये कि युग-निर्माण योजना के कार्यकर्त्ता श्री गोपी बल्लभ अवस्थी से भेंट हुई । उस समय मैं करीब ४० वर्ष का था । श्री अवस्थी जी के पास गायत्री महाविज्ञान की पुस्तक देखी और पढ़ा कि गुरुदीक्षा का मन्त्र गायत्री मन्त्र ही है । उनसे और भी प्रश्नों द्वारा इस महामंत्र की जानकारी प्राप्त की और तब से ही मैं इसका नियमित जप करने लगा । उपासना के परिणामस्वरूप माँ की कृपा बरसती रही । अनेकों संकटों के आने पर भी कभी उदासी या खिन्नता आयी है, ऐसा मुझे याद नहीं पड़ता । बल्कि अनुभव तो यही कहता है कि माँ गायत्री भक्त वत्सला हैं । जीवन में कई ऐसी घटनायें घटीं जिनके कारण मेरी माँ गायत्री के प्रति आस्था बढ़ी है ।

—मदनमोहन सारस्वत, जोधपुर (राज.)

माँ की गोद में हूँ

भाई मानसिंह टाक के माध्यम से पूज्य गुरुदेव के सम्पर्क में आया । मैं भी अपनी श्रद्धा-निष्ठा के आधार पर साधना-उपासना करता रहा और पूज्य गुरुदेव का साहित्य पढ़ता रहा । इस सबके परिणाम-स्वरूप मुझे जीवन का प्रकाश मिला । उससे मुझे जीवन की व्यावहारिक समस्याओं में काफी सहयोग मिला । उन्हें सुलझाने, सहने का विवेक तथा साहस मिला । कई बार स्वप्नावस्था में भी अज्ञात शक्ति से प्रेरणा प्रोत्साहन मिलता रहा । इसी के आधार पर मैं जीवन को प्रगति की दिशा में अग्रसर करता रहा । आज मैं उस परम स्नेह सलिला माँ की गोद में आनन्दपूर्वक रह रहा हूँ ।

—कन्हैया लाल मिश्र जोधपुर (राज.)

प्रकाश मिला

पूज्य गुरुदेव के सम्पर्क में आने के बाद मैंने उनके संरक्षण में माँ गायत्री की साधना उपासना प्रारम्भ की। इसके पहिले मैं घोर नास्तिक था । लेकिन अब माँ गायत्री के पारस से छू जाने पर आस्तिक बन चुका हूँ और इसके फलस्वरूप में समाज सेवा के कार्यों में रुचि ले रहा हूँ । जीवन सुखी और सन्तोषी है ।

—एम. एल. एरण, मन्दसौर

जीवन पथ सुगम बना

सुसम्पन्न परिवार होने के बाद भी मन में शान्ति नहीं थी । इसके लिए मैं सदा प्रयत्नशील रहती थी । इसी बीच पूज्य गुरुदेव के साहित्य से परिचय हुआ । इससे मन में श्रद्धा-विश्वास के बीज जमे और साहस पुरुषार्थ के साथ जीवन पथ सुगम हो गया । जीवन सभी तरह से अच्छा है । निराशा के स्थान पर अब आशाभरी उमंगें छलकती रहती हैं ।

—श्रीमती सु. निचत जाँजगीर (म. प्र.)

मेरा सौभाग्य ही है

पूज्य गुरुदेव का शिष्य बनने को अपना सौभाग्य ही कहा जाना चाहिए । उनके समर्थ संरक्षण और योग्य मार्गदर्शन से मेरा जीवन, अव्यवस्था, पीड़ा, कष्ट और क्लेश की महान विकट परिस्थिति से मुक्त हुआ। इसके लिए प्रयत्न पुरुषार्थ तो मुझे ही करना पड़ा किन्तु मार्गदर्शन भी अपना विशेष स्थान रखता है । यह बात भी समझ में आयी । पूज्य गुरुदेव के साहित्य से ही मिली प्रेरणाओं के आधार पर मैंने अपनी जीवन नैया खेना शुरू किया और इन प्रयासों में ही मुझे इतना आनन्द आया कि फल की तो बात ही क्या कहना ।

—देवी प्रसा चौवे, तारागंज ग्वालियर (म. प्र.)

मैं द्विज बना

मैं अपने पहले के रहन-सहन, खान-पान आदि की याद करता हूँ तो मेरा हृदय पश्चाताप की ज्वाला से जलने लगता है । उस समय का मेरा व्यवहार एक राक्षस से कम निष्ठुर नहीं था । लेकिन मिशन के साहित्य को पढ़ने से मुझे जो प्रेरणा मिली और माँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री की साधना-उपासना के कारण इन सबसे अपने आप अरुचि होने लगी । विगत दिनों की एक घटना बड़ी चमत्कारिक ही घटित हुई । वह इस प्रकार है— मेरी पुत्रवधू बीमार थी । उसके कारण वह मरणासन्न स्थिति तक पहुँच गई । निकट में कोई अस्पताल न होने से सभी घबरा गये । तभी मुझे एकाएक स्मरण हो आया कि यज्ञ भस्म रखी है । तुरन्त ही उसका प्रयोग किया गया । भस्म के सेवन से थोड़ी देर बाद ही पुत्रवधू स्वस्थ होकर बैठ गई । इस घटना ने सब में माँ के प्रति निष्ठा जाग्रत की ।

—सज्जन पाणावत, धैसुन्डी (राज.)

निष्ठा की परीक्षा

हमारी शाखा में सम्पन्न होने वाले २५ कुण्डीय यज्ञायोजन की मैं प्रमुख यजमान थी । यज्ञ प्रारम्भ था। मैं और मेरे पति यज्ञवेदी पर हवन करने बैठे थे । इसी अवसर पर घर में सूचना आई कि हमारे परिवार के माननीय सदस्य श्री रामदयाल गुप्त इस लोक से विदा लेने वाले हैं । वे काफी दिनों से बीमार थे और अब अचानक हालत बिगड़ गयी थी । यज्ञवेदी पर से उठकर जाने और न जाने की समस्या उत्पन्न हुई । तभी एक बोध हुआ कि यह तुम्हारी निष्ठा की परीक्षा है । हम पूर्णाहुति तक निष्ठापूर्वक सभी कर्मकाण्ड करते रहे । मन ही मन माँ की आराधना करते रहे । इसके सत्परिणाम स्वरूप ही कहना चाहिए तब तक घर से सूचना आ गई कि उनकी तबियत अब सामान्य है । **—श्रीमती शकुन्तला गुप्ता साकौली (महा.)**

साधना की दिव्य अनुभूति

गोंडल में सामूहिक साधना का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया था । उस अवसर पर ४-५ साधकों को दिव्य अनुभूति हुई कि एक छोटी सी प्रकाश ज्योति से इतनी आभा फैल गई कि उससे सारा आन्तरिक ही आलौकित हो उठा । इस अलौकिक दृश्य से उन सभी परिजनों के व्यवहार में चमत्कारिक परिवर्तन हुआ है तथा वे मिशन के प्रति काफी सक्रिय हुए हैं ।

—अशोक, ज. जोषी. मजेवड़ी (गुज.)

सदा ऋणी रहूँगा

पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में आने के बाद मुझे जो शान्ति मिली वैसी इसके पहिले कभी नहीं मिली थी । उनकी कृपा, उनकी सद्भावनाएँ, और उनकी सहायता का मैं हमेशा ऋणी रहूँगा । इस ऋण से मैं इस जीवन में तो उऋण नहीं हो सकता । उनकी प्रेरणा से ही मेरा यह जीवन नेक बना सका है ।

—चिन्तामन राव गौतम, बालाघाट (म. प्र.)

अनुदानों का प्रत्यक्ष फल

प्राण प्रत्यावर्तन साधना शिविर के अनुदानों का प्रत्यक्ष फल अनुभूत हुआ है कि लोक मंगल के लिए क्रियाशीलता बढ़ी है । मिशन का कार्य प्रिय बन गया है तथा इसके प्रचार के लिए गांव-गांव धूम कर ज्ञान की ज्योति जलाने में बड़ा आनन्द आता है ।

—भानु भाई एच. गढ़वी, बरेड़ा (गुज.)

आत्मा का विस्तार माँ की कृपा

प्राण प्रत्यावर्तन साधना शिविर से लौटने के बाद मैं उसी साधना का अभ्यास नित्य करती हूँ । इसके ही सत्परिणाम स्वरूप अपने जीवन लक्ष्य को पहिचान सकने में समर्थ हुई । अब मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि जन-सेवा का प्रत्येक कार्य उस परम पिता परमेश्वर की ही सेवा है । यह मेरा सौभाग्य ही कहा जाना चाहिए कि मुझे इसी विचारधारा को अपनाने वाला जीवन साथी मिला । साधना शिविर के समय की साधनाएँ जितनी रुख थीं उतनी ही अनुभूति पूर्ण भी । उनके अभ्यास की उपलब्धि के रूप में मां गायत्री की कृपा हुई है । लोगों को माँ की कृपा के विषम में भ्रमित न होना पड़े इसलिए यह कह देना उचित है कि जिस पर भी माँ की कृपा वरसती है उसमें जन सेवा और सत्ज्ञान प्रचार के प्रतिनिष्ठा जाग्रत हो जाती है ।

—यशोदा शर्मा कुल्लू (हि. प्र.)

माँ की कृपा बरसती ही रही

पूज्य गुरुदेव के कहने पर मैं मिशन का प्रचार प्रसार सक्रियतापूर्वक कर रहा हूँ । एक बार पूज्य गुरुदेव ने मुझे आश्वासन दिया था कि "अपनी चिन्ता न करो, तुम माँ का काम करो, तुम्हारा काम माँ करेगी ।" इन शब्दों पर मुझे अटूट विश्वास हो गया । इसी विश्वास के आधार पर मैं पारिवारिक दायित्वों को निभाते हुए मिशन के कार्य में भी जुटा रहा । मैं माँ का कार्य करता था और वास्तव में माँ मेरा कार्य करती ही गई । सेवानिवृत्ति की समस्या हल हुई, मेरी आँखें ठीक हुईं । बेटी कृष्णाकुमारी का विवाह योग्य वर से हो गया तथा इसी प्रकार की अन्य छोटी बड़ी समस्याएँ सुलझती ही रहीं । मेरा जीवन वास्तव में माँ की कृपा से धन्य हो गया ।

—सीताराम शर्मा, विदिशा (म. प्र.)

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अक्षय धन की प्राप्ति हुई

मेरा जीवन विकट संकटों से ग्रस्त था । बेकारी बीमारी और अन्यान्य समस्याओं के कारण मैं जीवन से निराश हुआ जा रहा था । ऐसे ही संकट ग्रस्त अवसर पर मुझे पूज्य गुरुदेव का पता लगा । मैं ४०) रु. लेकर घर से निकल पड़ा । इसके पहले मैं कभी भी मथुरा नहीं गया । किन्तु घर से निकलने के बाद मेरे पैर अनायास ही मथुरा की ओर बढ़ते गये । इलाहाबाद में कोई अपरिचित व्यक्ति मिला और उसने सगे-सम्बन्धी के समान ही मथुरा पहुँचा दिया । मुझे माँ गायत्री के चरणों को पकड़े रहने की प्रेरणा पूज्य गुरुदेव ने दी । वहाँ से वापिस आते ही मुझे चल पुस्तकालय चलाने का काम दिया गया । इससे आजीविका तो मिली ही सद्ज्ञान का अक्षय भण्डार भी प्राप्त हुआ । उसी ज्ञान के आधार पर मैंने अपने नारकीय जीवन को स्वर्गीय बना लिया । माँ की गोद में आज भी सानन्द हूँ ।

—रामचन्द्र प्रसाद, पाली (बिहार)

झोला पुस्तकालय वनाम समर्थ रक्षक

मेरे जीवन की विगत दुर्घटनाओं की याद आती है तो मैं अभी भी भय से काँप जाता हूँ । तीनों बार रेल दुर्घटनाओं में सकुशल बचा रहा । यदि मेरे पास झोला पुस्तकालय न होता तो मेरी मौत निश्चित ही हो जाती। ऐसा मेरा विश्वास है । मैं रेलवे विभाग में कर्मचारी था । समय के सदुपयोग के लिए तथा मिशन के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से हमेशा ही झोला-पुस्तकालय साथ में रखता था । इसलिए माँ गायत्री की शक्ति मेरे साथ सदा बनी रहती थी । वही मेरी रक्षा करती भी थी ।

—विश्वेश्वर सिंह बघेर, वीना (म. प्र.)

लोक सेवा में निरत हुई

गृहस्थ जीवन काफी विलासिता के साथ बीता । पति की मृत्यु के बाद मेरा जीवन संकट ग्रस्त हो गया। ऐसे भयावह समय में मिशन से परिचय हुआ । इसके विचारों एवं उद्देश्यों के प्रभाव से मेरा मन अध्यात्म की ओर आकर्षित हुआ । माँ गायत्री की उपासना करती रही । यह निष्ठा लोक-सेवा के रूप में परिवर्तित हो गई तथा जन-सेवा के उद्देश्य से ही मैंने एक पाठशाला खुलवायी, जिसमें आज भी कई विद्यार्थी ज्ञानार्जन कर रहे हैं । इस लोक-सेवा का अद्भुत आनन्द मिला वह पहिले कभी न मिला था ।

—श्रीदेवी यादव, कटैना हसा (मैपनुरी उ. प्र.)

अनन्य कृपा बरसती रही

मेरा जीवन नैया जब-जब भी भंवर में फँसी, अनेकों तरह के संकट उपस्थित हुए तब-तब मैंने माँ का आश्रय लिया । उन्होंने पतवार बनकर मेरी नैया को इन भंवरों से पार किया । कई बार अकाल मृत्यु की दुर्घटनाओं से मेरी प्राण रक्षा हुई । माँ की कृपा मुझ पर सदैव बरसती रही । इसी के आधार पर मैं माँ गायत्री के आलोक का प्रचार-विस्तार कर रहा हूँ ।

—एन. आर. सोलंकी, सेंधवा (म. प्र.)

गायत्री उपासना से आत्मिक प्रगति

प्राण-शक्ति के अभिवर्द्धन, आत्मिक प्रगति तथा स्वप्नों आदि के पूर्वाभास आत्मिक प्रगति का संकेत करते हैं । इस तरह के अनुभव साधकों को प्रायः होते रहते हैं ।

पग-पग पर सहायता

मेरा संकल्प था कि ब्रह्मवर्चस सत्र में तब भाग लूँगा, जब पू. गुरुदेव स्वप्न में दर्शन देंगे । मैं उन्हीं की पुस्तकें पढ़कर कई वर्षों से गायत्री उपासना कर रहा हूँ । आखिर एक रात पू. गुरुदेव में दर्शन हुये, मैंने स्वप्न में ही उन्हें अपनी आर्थिक कठिनाई बताई तथा उन्होंने कहा—तू मेरे पास आने की तैयारी कर शेष सब में ठीक करूँगा और सचमुच अनायास ही मार्ग व्यय का प्रबन्ध हो गया । शन्ति कुंज पहली बार आया, पू. गुरुदेव के दर्शन करते समय वह स्वप्न बार-बार याद आता है जिन्हें पहले कभी नहीं देख था, स्वप्न में ठीक उन्हीं के दर्शन कैसे हुये ?

गायत्री उपासना के फलस्वरूप ही मेरे भाई तथा मेरी पुत्री को जीवन दान मिला है । इन सब कारणों से उपासना में मेरी आस्था अटूट हो गई ।

—जयपाल सिंह, दुर्ग

जैसी प्रेरणा पाई वही नीति निभाई

मेरी माँ अस्वस्थ रहा करतीं । पिताजी ने बहुत इलाज कराया पर वे ठीक नहीं हुईं । गायत्री उपासना प्रारम्भ करने के बाद पिताजी ने माताजी के लिये दो अनुष्ठान किये, तब से माताजी स्वस्थ है । यह देखकर मेरे मन में माँ के प्रति असीम श्रद्धा जागृत हुई, तब से मैं नियमित उपासना करता हूँ मेरे जीवन में सब प्रकार शान्ति है । सत्प्रेरणाओं का महत्त्व समझकर ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मैंने सद् वाक्य लिखने का संकल्प लिया है और उसे पूरा करने में जुट गया हूँ ।

—अखिलेश मालवीय, छिन्दवाड़ा

चमत्कार से अरुचि

गायत्री उपासना सर्विस के लिये माँ की कृपा पाने के लिये, प्रारम्भ की । दो जगह आवेदन किये किन्तु स्थानों के बावजूद मुझे स्थान नहीं मिला । निराश होकर घर लौटा तब यही भाव उठे रहे थे कि क्या माँ पर विश्वास करना मिथ्या ही है । अगले दिन अचानक ही मुझे तार मिला जिसमें मुझे नियुक्त किये जाने की सूचना थी । मुझे अपनी अश्रद्धा पर बड़ी आत्मग्लानि हुई । तब से अब तक मुझे सैकड़ों बार माँ की कृपा के दर्शन हुये । मैंने एक ऐसे मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया जिसके बारे में यह कहा जाता था कि जिसने उसे हाथ लगाया उसी की मृत्यु हुई । अब मैंने उनकी ओर ध्यान न देकर माँ से भक्ति, शक्ति ज्ञान और वैराग्य ही माँगा, इन्हें ही पुष्ट करने में लगा हूँ ।

—राम नरेश प्रसाद, नवादा

पारिवारिक जीवन में आत्मीयता

हमारे कौटुम्बिक जीवन में स्नेह, आत्मीयता का बिल्कुल अभाव था । रीवाँ में एक यज्ञ आयोजित किया गया था । मैंने उसमें सहयोग दिया । उस यज्ञ के बाद अनायास ही विलक्षण मोड़ आया और मेरे पिताजी का स्नेह मेरे लिये उमड़ आया । तब से मेरी श्रद्धा अत्यधिक धनीभूत हो उठी है । अब अपना सारा जीवन गायत्री माता और यज्ञ पिता के लिये अर्पण करने का निश्चय कर लिया है ।

—अवधेश प्रताप सिंह, नरेन्द्र नगर (रींवा)

आत्मबल मिला

मुझ जैसी महिला को गायत्री उपासना से इतना आत्मबल मिला है कि गाँव-गाँव तीर्थ यात्रा का साहस जागृत हो उठा है । माँ के उपकारों को मैं घर-घर उनकी प्रतिमा पहुँचाकर चुकाऊँगी ।

—श्रीमती चन्दा तिवारी, छिन्दवाड़ा

लोहे जैसा जीवन सोना बना

जीवन में कई बार ऐसे क्षण आये जब मेरी और मेरे परिवार बालों की माँ ने प्राणघातक परिस्थितियों से रक्षा की । माँ को अपने भक्त की इतनी चिन्ता रहती है यह विश्वास सुदृढ़ हो गया तो अब उधर ध्यान ही नहीं जाता वे मेरी रक्षा करती हैं और मुझे दिन-रात एक ही लगन रहती है कि किस तरह उनका प्रकाश, उनका सन्देश घर-घर पहुँचे ।

—हरिकिशन माहेश्वरी-कुबेर गांव

पाने की इच्छा से मुक्त हुई

गायत्री उपासना से जीवन में ऐसी स्नेह धारा आप्लावित हुई है कि कुछ पाने की इच्छा ही नहीं रही । मेरी क्षमतायें और योग्यतायें पूरी तरह समाज के हित में उत्सर्ग हो जायें, बस यही एक कामना शेष है ।

—श्रीमती शक्ति शुक्ल

दो-दो विद्यालयों की स्थापना

इस युग में नवयुवक समाज में सर्वाधिक अविश्वास्त माने जाते हैं । संभवतः आज की उच्छृंखलता उसके लिये जिम्मेदार है । मेरी भी यही स्थिति थी किन्तु जिस दिन से गायत्री माता का आश्रय लिया मस्तिष्क से असद् चिन्तन न जाने कहाँ गायब हो गया। परमार्थ की भावनायें उमड़ने लगीं । उनकी कृपा का ही चमत्कार है कि लोगों से चन्दा एकत्र कर पच्चीस वर्ष की अल्पायु में ही मैंने अपने गांव में बालिका उच्च विद्यालय तथा अभिनव शिशु विद्या निकेतन की स्थापना की । माँ ने जो श्रेय दिया उसी का प्रतिफल है कि आज हमारी शाखा में ६० कर्मठ सदस्य हैं । जिनमें अनेक वयोवृद्ध परिजन भी है ।

—केदार नाथ महतो, अमरपुर (भागलपुर बिहार)

संकट दूर हुआ

मेरे बेटे को बहुत तेज बुखार था । डॉक्टर तक पहुँचने के दिक्कत थी । माँ को पुकार लगाई । उन्होंने करुण पुकार सुनी, थोड़ी ही देर में यह तेज बुखार न जाने कहाँ चला गया और बच्चा स्वस्थ हो गया । इसी तरह मेरी दुकान नहीं चलती थी किन्तु जिस दिन से गायत्री माँ की उपासना प्रारम्भ की बिक्री और आय बढ़ती चली गई अब किसी प्रकार की कठिनाई नहीं है ।

—केदार प्रसाद गुप्ता, ग्राम तेलीबीहा
जि. पूर्णिया (बिहार)

बाल-बाल बचा

पू. गुरुदेव के संरक्षण में गायत्री उपासना और उपब्धियों का लम्बा इतिहास है । वह सब लिखें तो पूरी पोथी बन जाये । माँ की कृपा का अनुभव हर क्षण होता रहता है । अभी इसी १ से १० जून, ७८ के शिविर में मैं वापसी यात्रा के टिकट रिजर्वेशन के लिये

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्टेशन जा रहा था तभी एक सरदारजी की मोटर साइकिल ने मुझे जोर का धक्का मारा और मैं गिर गया । दुर्घटना ऐसी थी कि मृत्यु नहीं तो हाथ-पाँव और सिर की हड्डियाँ तो अवश्य टूट जानी थीं, पर मुझे जैसे किसी ने गोद में उठा लिया हो, मामूली खरोंच के अतिरिक्त कोई चोट नहीं थी । रिजर्वेशन भी करा आया, पूरा शिविर भी किया । माँ ने किसी अवश्यम्भावी दुर्घटना को हल्का कर टाल दिया नहीं तो उस दिन मृत्यु सुनिश्चित थी ।

—बाल शंकर आर. जोशी-सब पोस्ट मास्टर
राणी (गुज.)

बेकारी अपने आप भागी

मेरे पतिदेव बेकारी से तंग थे, इन्हीं दिनों पू. गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की लिखी एक गायत्री उपासना सम्बन्धी पुस्तक पढ़कर ऐसा लगा मानों सब कुछ मिल गया । गुरुदेव का केवल फोटो देखा था । उन्हें गुरू मानकर हम दोनों ने गायत्री उपासना प्रारम्भ की । एक दिन स्वप्न में पू. गुरुदेव के दर्शन हुये उन्होंने पूछा—बेटी कोई कष्ट है तो मैंने उन्हें सर्विस मिलने का कष्ट बताया । उन्होंने कहा १७ जनवरी को सर्विस मिल जायेगी । साथ ही स्वप्न भी टूट गया ।

मुझे अत्यधिक आश्चर्य है कि बिना प्रार्थना-पत्र दिये एक प्रिन्सिपल साहब के आग्रह पर मेरे पतिदेव को ठीक १७ जनवरी के दिन अध्यापक की सर्विस मिल गई ।

—सावित्री सारस्वत, आगरा

●●●

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री द्वारा आत्मोत्कर्ष

संसार में सबसे बड़ी शक्ति आत्मबल की ही है। वैसे व्यवहार में इस समय सबसे अधिक आवश्यकता अर्थ अथवा धन की दिखालाई पड़ती है, पर यदि तनिक भी विचार किया जाये तो स्पष्ट जान पड़ेगा कि अर्थ तो सर्वथा जड़ पदार्थ है। उसमें अपनी कोई शक्ति नहीं, वरन् उसका उपयोग करने वाले पर ही उसकी भलाई-बुराई निर्भर है। जैसे तलवार या बन्दूक के द्वारा जानकार व्यक्ति अपनी और दूसरों की रक्षा कर सकता है, पर इन्हीं हथियारों को यदि एक अनजान या बुद्धिहीन व्यक्ति के हाथ में दे दिया जाय तो वह स्वयं अपने को चोट लगा सकता है। ठीक यही स्थिति अर्थ की भी है। समझदार व्यक्ति धन सम्पत्ति को पाकर उसका उचित रीति से उपभोग करता है, जिससे उसे सुख और लाभ प्राप्त होता है, पर एक मूर्ख अथवा उन्मत्त के हाथ में सम्पत्ति पड़ जाने से वह प्राय: उसका दुरुपयोग ही करता है, जिससे उसका भी अनिष्ट होता है और दूसरों को भी वह हानि ही पहुँचाता है। इस उदाहरण से स्पष्ट है कि संसार में प्रधानता आत्मशक्ति और बुद्धि की ही है और बुद्धि भी वही श्रेष्ठ है जो आध्यात्मिकता से युक्त होती है । तामसिकता अथवा आसुरी भावों से युक्त बुद्धि भी कल्याण के स्थान में अकल्याणकारी होती है।

यही कारण है कि हम गायत्री को सबसे बड़ा शक्ति देने वाला साधन बतलाते हैं। गायत्री का मुख्य उद्देश्य आत्मशक्ति और सद्बुद्धि की कामना करना है, जिसके द्वारा मनुष्य अपना लौकिक और पारलौकिक, दोनों प्रकार का हित भली प्रकार सम्पन्न कर सके। गायत्री केवल स्थूल जगत् की समृद्धियाँ ही प्रदान नहीं करती, वरन् वह हमारी आत्मा और बुद्धि को ऐसी सूक्ष्म शक्तियाँ भी प्रदान करती है, जिनसे हम किसी आकस्मिक आवश्यकता या संकट के अवसर पर भी अपनी रक्षा का उपाय कर लेते हैं। कितने ही अवसरों पर तो हमको तत्काल ही प्रेरणा देकर ऐसे कार्य करा देती है कि जो साधारणत: हमारी शक्ति और योग्यता से बाहर होते हैं और जिन्हें हम दैवी सहायता के अतिरिक्त कुछ नहीं समझ सकते। इतना ही नहीं जो साधक गायत्री-साधना को अचल विश्वास के साथ करते हैं, उनमें अनजाने ही ऐसी दैवी शक्तियों का विकास हो जाता है जिनसे वे आत्मोत्कर्ष के ऊँचे दर्जे पर चढ़ सकने में समर्थ होते हैं।

आधुनिक युग में भी कितने ही साधक गायत्री-उपासना से सिद्धावस्था की ओर अग्रसर हुए हैं।

जयपुर रियासत में जौन नामक गाँव में पं. हरराय नामक एक नैष्टिक गायत्री उपासक रहते थे। उनको अपनी मृत्यु का पहले से ही पता चल गया था। उन्होंने सब परिजनों को बुलाकर धार्मिक उपदेश दिये और बोलते बातचीत करते-गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हुए प्राण त्याग कर दिये।

रतनगढ़ के पं. भूधरमल नामक एक विद्वान् ब्राह्मण गायत्री के अनन्य उपासक हो गये थे। वे संवत् १९६६ में काशी आ गये थे और अन्त तक वहीं रहे। अपनी मृत्यु की पूर्व जानकारी होने से उनने विशाल धार्मिक आयोजन किया था और साधना करते हुए आषाढ़ सुदी ५ संवत् १९८२ को शरीर समाप्त किया। उनके आशीर्वाद पाने वाले कई बहुत ही सामान्य मनुष्य आज भी लखपती सेठ बने हुए हैं।

अलवर राज्य के अन्तर्गत एक ग्राम के सामान्य परिवार में पैदा हुए एक सज्जन को किसी कारण वश वैराग्य हो गया। वे मथुरा आये और एक टीले पर रह कर गायत्री साधना कराने लगे । एक करोड़ गायत्री का जप करने के अनन्तर उन्हें गायत्री का साक्षात्कार हुआ और वे सिद्ध हो गये। वह स्थान 'गायत्री टीले' के नाम से प्रसिद्ध है। वहाँ एक छोटा-सा मन्दिर है जिसमें गायत्री की सुन्दर मूर्ति स्थापित है। उनका नाम बूटीसिद्ध था। सदा मौन रहते थे। उनके आशीर्वाद से अनेकों का कल्याण हुआ। धौलपुर और अलवर के राजा उनके प्रति बड़ी श्रद्धा रखते थे।

माधांता ओंकारेश्वर मन्दिर के पीछे गुफा में एक महात्मा गायत्री जप करते थे। मृत्यु के समय उनके परिवार के व्यक्ति उपस्थित थे। परिवार के एक बालक ने प्रार्थना की कि—"मेरी बुद्धि मन्द है मुझे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विद्या नहीं आती, कुछ आशीर्वाद दे जाइए जिससे मेरा दोष दूर हो जाय ।'' महात्माजी ने बालक को समीप बुलाकर उसकी जीभ पर कमण्डल में से थोड़ा-सा जल डाला और आशीर्वाद दिया कि तू! पूर्ण विद्वान हो जायेगा। आगे चलकर वह बालक असाधारण प्रतिभाशाली विद्वान हुआ। इन्दौर में ओंकार जोशी के नाम से प्रसिद्धता पाई और इन्दौर-नरेश उनसे इतने प्रभावित थे कि सबेरे घूमने जाते समय उनके घर से उन्हें साथ ले जाते थे।

बिठूर के पास खंडेराव नामक एक वयोवृद्ध तपस्वी एक विशाल खिरनी के पेड़ के नीचे गायत्री साधना करते थे। एक बार उन्होंने विराट् गायत्री यज्ञ और ब्रह्म-भोज किया। दिन भर हजारों आदमियों की पङ्गतें होती रहीं। रात के नौ बजे भोजन समाप्त हो गया । भोजन भी कई हजार आदमियों का होना शेष था। खांडेरावजी को सूचना दी गई। उन्होंने आज्ञा दी गंगाजी में से चार कनस्टर पानी भर लाओ और उससे पूड़ियाँ सिकने दो। ऐसा ही किया गया। पूड़ियाँ घी समान स्वादिष्ट थीं। दूसरे दिन चार कनस्टर घी मँगाकर गङ्गाजी में डलवा दिया।

अहमदाबाद के श्री डाह्यभाई रामचन्द्र मेहता गायत्री के श्रद्धालु उपासक और प्रचारक थे। शरीर और मन में सतोगुण की अधिकता होने से वे सभी गुण उनमें परिलक्षित होते थे जो सिद्ध महात्मा में पाये जाते हैं ।

दीनवा के स्वामी मनोहरदासजी ने गायत्री के कई पुरश्चरण किये थे। उनका कहना है कि इस महासाधना से मुझे इतना अधिक लाभ हुआ कि उसे प्रकट करने की उसी प्रकार इच्छा नहीं होती, जैसे कि लोभी को अपना धन प्रकट करने में संकोच होता है।

वृन्दावन के काठिया बाबा, उड़िया बाबा, प्रज्ञाचक्षु स्वामी गंगेश्वरानन्दजी, गायत्री-उपासना से आरम्भ करके अपनी साधना को आगे बढ़ाने में समर्थ हुए थे। वैष्णव सम्प्रदाय के प्रायः सभी आचार्य गायत्री की साधना पर बहुत जोर देते रहे हैं।

नवाबगञ्ज के पं. बलभद्रजी ब्रह्मचारी, सहारनपुर जिले के श्री स्वामी देवदर्शनानन्दजी, बुलन्दशहर प्रांत के परिव्राजक महात्मा योगानन्दजी, ब्रह्मनिष्ठ श्री स्वामी ब्रह्मर्षिदासजी उदासीन, बिहार प्रांत के महात्मा अनाशक्तजी, यज्ञाचार्य पं. जगन्नाथ शास्त्री 'ॐ', राजगढ़ के महात्मा हरिॐ तत्सत् आदि कितने ही सन्त-महात्मा गायत्री-उपासना में पूर्णतया प्राप्ति की ओर अग्रसर हुए हैं। अनेक ग्रहस्थ भी तपस्वी जीवन व्यतीत करते हुए इस महान् साधन में प्रवृत्त हैं। इस मार्ग पर चलते हुए उन्हें महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक सफलता प्राप्त हो रही है।

हमने स्वयं अपने जीवन के आरम्भ काल से ही गायत्री की उपासना की है और वह हमारा जीवन-आधार ही बन गई है। दोषों, विकारों, कषाय-कल्मषों, कुविचार और कुसंस्कारों को हटा देने में जो थोड़ी-सी सफलता मिली है उसका श्रेय इसी को ही। ब्राह्मणत्व की ब्राह्मी भावनाओं की, धर्मपराणता की, सेवा, संयम, स्वाध्याय और तपश्चर्या की जो यत्किंचित् प्रवृत्तियाँ हैं वे माता की कृपा के कारण ही हैं । अनेक बार विपत्तियों में उसने बचाया है और अन्धकार में मार्ग दिखाया है। आपबीती ऐसी घटनाओं का वर्णन बहुत विस्तृत है जिनके कारण हमारी श्रद्धा दिन-दिन माता के चरणों में बढ़ती चली आई है। इन वर्णनों के लिए इन पंक्तियों में स्थान नहीं है। हमारे प्रयत्न और प्रोत्साहन से जिन सज्जनों ने वेदमाता की उपासना की है उनमें आत्म-शुद्धि, पापों से घृणा, सन्मार्ग में श्रद्धा, सतोगुण की वृद्धि, संयम, पवित्रता, आस्तिकता, जागरूकता एवं धर्मपरायणता की प्रवृत्तियों को बढ़ते हुए पाया है । उन्हें अन्य सांसारिक लाभ चाहे हुए हों-चाहे न हुए हों, पर ये आत्मिक लाभ हर एक को निश्चित रूप में हुए हैं और विवेक पूर्वक विचार किया जाये तो ये लाभ इतने महान् हैं कि इनके ऊपर धन-सम्पत्ति की छोटी-मोटी सफलताओं को निछावर करके फेंका जा सकता है।

इसलिए हम अपने पाठकों से आग्रहपूर्वक अनुरोध करेंगे कि वे गायत्री की उपासना करके उसके द्वारा होने वाले लाभों का चमत्कार देखें। जो वेदमाता की शरण ग्रहण करते हैं, अन्तःकरण में सतोगुण, विवेक, सद्विचार और सत्कर्मों की ओर उनकी असाधारण प्रवृत्ति जागृत होती है। यह आत्म-जागरण लौकिक और पारलौकिक, सांसारिक और आत्मिक सभी प्रकार की सफलताओं का दाता है।

गायत्री साधना से सात्विक सिद्धियों का विकास

यों तो प्राचीन काल के ऊँचे दर्जे के साधकों ने गायत्री-साधना के फलस्वरूप ऐसी उल्लेखनीय सफलताएँ प्राप्त कीं कि सर्वसाधारण में भी उनकी प्रसिद्ध हो गयी, पर अनेक संसारी, गृहस्थ-जीवन में फँसे हुए व्यक्ति भी वर्तमान समय में गायत्री-उपासना के द्वारा आत्मोन्नति कर रहे हैं और तरह-तरह के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

१२.३ गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार

मनोवांछित लाभ भी उठा रहे हैं, उनके कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

* श्री मु. ग. पाटील, खामगांव से लिखते हैं—मेरे विचार बुरे थे, सपने भी इतने बुरे आते थे कि जिसकी हद नहीं। किसी प्रेरणा ने गायत्री-उपासना में प्रवृत्त किया। फिर देखा वे सारे बुरे सपने क्रमशः लुप्त होते गये और उसके स्थान पर ज्योतिर्मय स्वप्न अवतरित होने लगे।

ध्यानावस्था में, प्रकाशपुञ्ज के मध्य दिव्य आलोकपूर्ण ॐ का आविर्भाव हुआ और मैं न जाने कितनी देर तक मुग्ध भाव से , सुस्पष्ट रूपेण देखता रहा। उसी दिन से मेरे अन्तर हृदय में असीम शान्ति का अवतरण हुआ, जो कि आज भी क्रमशः बढ़ती ही जा रही है। कई बार मैं अपने को स्वप्न में एक दिव्य देवी की उपासना करते हुए पाता हूँ। कभी गायत्री माता, दिव्य सूर्य बनकर, जिसकी किरणें अत्यन्त सौम्य, सुखद स्पर्श वाली हैं--सपने में मेरे सामने आ जाती हैं और अपनी मधुस्रावी रश्मिधारा से मेरे शरीर और प्राण के कण-कण को सींच देती हैं। मैं भीग उठता हूँ और मेरे शरीर से भी किरणें विकीर्णित होने लगती हैं। शरीर शिथिल हो जाता है एवं अवर्णनीय आनन्द की अनुभूति होती है। इस आनन्द का प्रभाव ऐसा चिरन्तन है कि, किसी दुःखद स्थिति में पड़ने पर भी मुझे आनन्द का वेग ऊपर ही उठाये रखता है। दुःख की पीड़ा जरा भी अनुभूत नहीं होती।

भौतिक दृष्टि से भी मेरी अभ्युन्नति हुई है। साम्पत्तिक दुरवस्था का प्रवेश मेरे जीवन में कभी नहीं हो पाया। मुझे जटिल खाँसी रोग था। मैंने कितने ही डॉक्टरों से इसके अनेक इलाज किये, किन्तु इससे पिण्ड न छूटा। खाँसी क्रॉनिक एवं दुःसाध्य हो गयी। डाक्टरों ने असाध्य रोग घोषित कर पराजय स्वीकार कर ली। माता की कृपा से यह रोग कैसे मूल से ही नष्ट हो गया—इसका मुझे भी पता नहीं चला। आज मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ। पहले मेरी बात को ओर कोई ध्यान नहीं देता था, पर आज जैसे मैं चुम्बक बनता जा रहा हूँ। सभी मेरी बात ध्यान से सुनते हैं, उसे सम्मान देते हैं, मुझसे मिलकर प्रसन्नता लाभ करते हैं—पुनः मिलने की उत्कण्ठा अनुभव करते हैं। मानसिक विश्वास और शारीरिक ओज दिनानुदिन बढ़ता-सा अनुभव होता है। मेरा व्यक्तित्व का परिविकास हो रहा है। सभी माता की कृपा से ही साधित हो रहे हैं।

* श्री मदन गणेशरामदेव, पूना से लिखते हैं-गत वर्ष से ही मैं प्रतिदिन १००० गायत्री मन्त्र जप नियमित रूप से करते रहने का प्रयत्न करता आ रहा हूँ, पर ऐसा नहीं कि इस प्रयत्न में कभी त्रुटि नहीं आयी। इसमें कई-कई दिन खाड़े(नागा) जरूर होते हैं और उसका पश्चाताप भी जरूर होता है।

गत वर्ष में गुरुदेव के आज्ञानुसार २८ दिन का ''उपपोषण'' किया था, जिसमें फलाहार में केवल आधा पाव दूध और दो मुसम्मी रोज लेता था, इसके अलावा और कुछ भी नहीं। इन २८ दिनों में निष्काम भाव से सवा लक्ष के अनुष्ठान का भी सङ्कल्प सम्मिलित था। चूँकि यह आयोजन सार्वजनिक था, इसलिये इसके सारा कार्य पूर्ण शास्त्रोक्त नियमों सहित तथा सर्वथा निष्काम होकर ही किया गया था। चौथे दिन मेरी हालत बड़ी ही दयनीय हो गयी। आगे उपवास करने का साहस और सहन शक्ति दोनों नहीं रहे। अब न तो आगे मैं उपवास ही कर सकता था और न उसे छोड़ने की शक्ति मुझमें थी। पाँचवें दिन मुझमें जरा भी शक्तिबोध नहीं होती थी। ज्यों-त्यों कर दिवस कटा। रात में गायत्री माता का स्मरण करता सो गया। ब्रह्म मुहूर्त्त था। मैं स्वप्न या सत्य ही देख रहा था-पूजन पीठ पर, पुष्पों का हार धारण किये हमारे गुरुदेव ध्यान मग्न बैठे हैं और मुझे आशीर्वाद देते हुए कह रहे हैं, हिम्मत नहीं हारना, मैं सदैव तुम्हारे पीछे हूँ। मैंने अपने को उनके चरणों में समर्पित कर दिया। नींद टूटने पर मैंने अपने में, अत्यधिक स्फूर्ति एवं उपवास जन्य अशक्ति का अभाव पाया। इसके उपरान्त शेष तेइस दिन, उपवास में कैसा कष्ट होता है, इसका जरा-सा भान भी मुझे नहीं हुआ, एक सबल स्वस्थ पुरुष की भाँति सारा क्रम निभाता रहा। उपवास की बीसवीं रात में घनीभूत कामिला की छोटी-छोटी बिन्दी मेरे सामने आकर चारों ओर फिरने लगीं। इक्कीसवें दिन उसमें भिन्न-भिन्न रंगों की ज्योतियाँ विकीर्णित होने लगीं और चौबीसवें दिन दो बजे रात में, माता की छवि से पीत रश्मियों की धारा साक्षात् रूप से निकल कर मेरी ओर आने लगीं। मधुरता के आधिक्य से मैंने आँखें बन्द कर लीं, उसके उपरान्त ज्योतिबिन्दु से माता की साक्षात् प्रतिमा को निकलते देखा, जो सम्पूर्णतया चेतना से भरी हुई थी, वे मुझे आशीर्वाद दे रही थीं, मैं अपने शारीरिक भान से ऊपर उठ गया था। वह मेरे जीवन की अपूर्व आनन्दमयी अवर्णनीय स्थिति थी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

* श्री होतीलाल शर्मा, अलीगढ़ से लिखते हैं—आज माता की कृपा का बखान करने की इच्छा से, मेरे सामने जीवन के वे सारे शारीरिक] आर्थिक एवं मानसिक कष्टों के अतीत-दाद्धह्लण चित्र सामने में प्रत्यक्षवत् प्रतीत हो रहे हैं। मेरे जीवन के विकास काल में ही मुझे प्यार करने वाले ताऊजी एवं पिताजी की एक-एक कर मृत्यु हो गयी। मेरा एक छोटा भाई था, वह भी काल कवलित हो गया। केवल मैं , एक छोटा भाई और मेरी माता अनाथ बनकर दु:ख भोगने के लिये रह गयह्य। सभी ने एक स्वर से कहा—इसका सुन्दर परिवार एक बारगी ही नष्ट हो गया।

यज्ञोपवीत संस्कार के समय ही मेरे ताऊजी ने कहा था—"गायत्री माता की शरण लेने से मनुष्य सांसारिक जीवन को सुखपूर्वक बिताकर अन्त में भी शान्ति प्राप्त करते हैं।" यह पुनीत वाणी शैशव के कोमल-हृदय में अमर भाव से बस गई थी और तभी से मैं गायत्री उपासना करने लगा था। पिता-ताऊ एवं भाई की मृत्यु की सूचना मुझे पूर्व ही माता ने खड़ी होकर सुना दी थी, साथ ही कष्ट दूर होने का आश्वासन भी दिया था। इसके उपरान्त छोटे भाई की मृत्यु हो गयी। जीविका की कोई सुस्थिर-व्यवस्था नहीं रहने से भोजन भी भार स्वरूप हो गया। शरीर भी शीर्ण हो गया, पर उपासना करता ही रहा जिसके फल से आज अनायास ही हम सभी भाँति सुखी-स्वस्थ और प्रसन्न हो सके हैं।

* श्री चुन्नालाल जे. राजा, साणंद लिखते हैं—मैंने गायत्री उपासना सम्बन्धी(गायत्री महाविज्ञान) पुस्तकों में पढ़ा था कि गायत्री उपासना करने से गुरु विहीनों को सद्गुरु की प्राप्ति होती है। मैंने वही पढ़कर आध्यात्मिक पथ पर चलने के लिये सद्गुरु की आवश्यकता समझी और उन्हें पाने के लिए गायत्री उपासना प्रारम्भ की। दस हजार जप पूरा होते ही मुझे श्रीचरणपादुका जूना अखाड़ा में ब्रह्मचारी जी का दर्शन हुआ। उनसे बातें भी कीं, किन्तु मैं अपने सद्गुरु को पहिचान नहीं पाया। इसके १५ दिन उपरान्त ही मुझे सद्गुरु का परिचय कराया गया। तदुपरान्त मैंने स्वप्न निर्दिष्ट स्थान गिरनार पर्वत की तलहटी में जाकर उनका दर्शन किया। वहाँ गिरनार पर्वत की आनन्द गुहा में चार महीना तक उनके साथ रह कर सतसंङ्ग किया।

चार महीने के उपरान्त उन्होंने मुझे सांणद ग्राम के श्मशान घाट में रह कर साधना करने का आदेश दिया। वहाँ सिद्धनाथ महादेव का भी एक स्थान है। मुझे चिंता थी कि मेरे भोजन आदि के निर्वाह व्यय की व्यवस्था कैसे होगी? इस स्थान में रह कर गुरु के आदेशानुसार मैं २४ लाख गायत्री का महापुरश्चरण करने लगा। माता की कृपा से श्री नाथालाल-चुन्नालाल ने स्वेच्छा से मेरा भोजनादि का भार उठा लिया। इसमें ३४)रु. लगभग प्रतिमास खर्च पड़ते हैं। एक वर्ष हुआ मैं अन्नाहार परित्याग कर केवल फलाहार ही करता हूँ। एक और सज्जन प्रतिदिन तीन बार मेरे आश्रम में आते हैं और मुझसे मेरी आवश्यकताओं के सम्बन्ध में पूछते हैं। इस भाँति तो शायद ही कोई पुत्र अपने माता-पिता की खोज खबर लेता हो।

माता की कृपा से मेरे पुत्र एवं पुत्रियों को भी जीविका सम्बन्धी सारी सुखद स्थितियाँ स्वत: ही प्राप्त हो गई हैं। वे सभी प्रसन्न और सुखी हैं। माता ने उन सभी की ओर से भी निश्िंचत कर मुझे साधना करने का दुर्लभ अवसर प्रदान किया है। ऐसी परम सुखदा गायत्री माता के पावन चरणों में मैं बारम्बार नमस्कार करता हूँ !

* श्री सुमन्त कुमार मिस्त्र बी. ए., लिखते हैं—यज्ञोपवीत संस्कार के समय मेरे पुरोहित जी ने बेगार की भाँति गायत्री मन्त्र की दीक्षा दी थी। आज की भौतिकवादी विचारधारा का व्यक्ति भला उसका क्या प्रभाव ग्रहण करता? मैं सब भूल-भाल गया। एक दिन मेरे परम मित्र श्रीजीवनधर दीवानजी ने (जिनका मैं चिरकृतज्ञ हूँ और रहूँगा) मुझे गायत्री उपासना की चर्चा के संग पं. श्रीराम शर्मा आचार्य और "अखण्ड ज्योति" पत्रिका की चर्चा सुनाई और उसी रात में मैंने स्वप्न देखा कि गायत्री मन्त्र के पवित्र उच्चारण सहित में महायज्ञ में आहुति दे रहा हूँ। उस समय मुझे अनिर्वचनीय आनन्द मिल रहा था। जागने पर भी मेरे अङ्गों में उस आनन्द का स्मरण होता रहा। मैं भाव-मुग्ध हो रहा । उसी दिन अपने स्वप्न की चर्चा सहित सारी बातें लिख भेजीं। उनका उत्तर जो कुछ मिला वही मेरे अध्यात्म-जीवन के प्रवेश की अमूल्य और श्रेष्ठ थाती है। मेरी आत्मा को उद्‌बोधन मिला और मैं गायत्री-उपासना में संलग्न हो गया।

मेरा छोटा भाई बीमार था। उस दिन उसे बहुत कष्ट था। नींद नहीं-केवल छटपटी। घर वाले भी उसकी यह बैचैनी देख बेचैन हो रहे थे। मैं उसके सिरहाने बैठ कर उसके ललाट पर हाथ फेरने लगा। तन्मय दशा में स्वत: ही गायत्री मन्त्र उच्चारित हो रहा था। उसकी बेचैनी कम होने लगी और नींद आ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

१२.५ गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार

गयी । जब कभी मेरे जीवन में संकट उपस्थित होते हैं, तो मैं माता का आह्वान करता हूँ और देखते ही देखते वे कष्ट और संकट विलुप्त होने लगते हैं और मुझे उनसे छुटकारा मिल जाता है। आने वाली शुभाशुभ घटनाओं की छाया मेरे मानस पटल पर पहले ही अङ्कित हो जाती है। अपनी बुद्धि में प्रकाश और मनोबल नित्य बढ़ता हुआ अनुभव करता हूँ।

आज तो भौतिक विज्ञान ने भी शब्दों के सस्वर ताल-मात्रा युक्त उच्चारण करने की क्रियात्मक शक्ति को मान लिया है, फिर उसमें श्रद्धा-विश्वास के समयोग से वह क्यों न और भी महान् शक्ति धारण करने में समर्थ हो जाये ? लाखों वर्षों से करोड़ों व्यक्तियों ने गायत्री मन्त्र के शब्दों में अपने आत्म-विश्वास की अनन्त शक्तियों को भरपूर कर दिया है। प्रत्येक कल्याण कामी को इस मन्त्र से लाभ उठाना चाहिए।

* श्री नगीनदास, ठाकुरदास शाह, बुरहानपुर से लिखते हैं—मेरे मन में बहुत दिनों से लालसा थी, कि जिस भूमि को भगवान् ने अपनी साक्षात् उपस्थिति से, अपनी पावन लीला से पवित्र किया है, उसका दर्शन करूँ और सौभाग्य हो तो वहाँ कुछ दिन निवास भी करूँ, पर इसकी पूर्ति का हमारे पास कोई भी उपाय नहीं था। अचानक एक दिन गुजराती भाषा में डॉ. गणपति सिंह जी द्वारा लिखित 'गायत्री महिमा' नामक पुस्तक पढ़ी। फिर इस मंत्र की अधिक महिमा जानने के लिए व्यग्रता हुई और "अखण्ड ज्योति" मथुरा का पता लगा। वहाँ से पत्रिका मँगायी, पुनः गायत्री साहित्य मँगाकर अध्ययन किया। इससे गायत्री उपासना पर मेरी श्रद्धा दृढ़ हो गयी और नित्य गायत्री जप करने लगा।

सहसा ही गायत्री माता की कृपा से मेरे जीवन में आशा अवसर उपस्थिति हुआ। मुझे मथुरा आना पड़ा। मैं प्रसन्नता से फूला नहीं समाता था। मथुरा स्टेशन पर उतरा और गायत्री तपोभूमि आकर मातृ-मूर्त्ति एवं गुरुदेव का दर्शन किया। दो दिन तक वहीं निवास किया। प्रातः ही यमुना जी में स्नान कर उसी पवित्र किनारे पर जप कर लिया करता। फिर गुरुदेव के आदेशानुसार वृन्दावन आया और सभी मन्दिरों में घूम-घूम कर पावन प्रतिमाओं का दर्शन किया। फिर वहीं एक धनी सेठ के यहाँ अनायास मुझे नौकरी भी लग गयी, फिर तो छः महीने तक वृन्दावन-धाम में रह कर, नित्य यमुना स्नान कर माधुरी-मूर्ति की उपासना करता रहा। आषाढ़ मास की पूर्णिमा में गोवर्द्धन परिक्रमा की। इसी भाँति ब्रजधाम की सारी लीला-शोभा देखी। फिर गायत्री तपोभूमि आकर दो दिन ठहरा । सारी ब्रजभूमि को भली-भाँति देखभाल कर गुरुदेव के आदेश से घर चला आया। आज घर में रह कर ही गायत्री उपासना करता हूँ और जीवन में चारों ओर सुख-शान्ति ही मुझे नजर आती है।

* श्री महावीर प्रसाद गुप्त, शाहजहाँपुर से लिखते हैं—दो वर्ष बीत गये। वायु मंडल स्वच्छ था। शीतल सुगन्धित वायु बह रही थी। मैं पद्मासन लगाये माता के ध्यान में तल्लीन था। माला पास में नहीं थी। मैं बड़े ही आर्तभाव से माता की आराधना कर रहा था। समय काफी हो चुका था। उस समय इतना अच्छा ध्यान लगा हुआ था कि वैसा आनन्द ध्यान में आज तक नहीं आया। हृदय से एकदम ऐसा प्रकाश पुँज निकला जो सारे शरीर में प्रविष्ट हो गया। ऐसा मालूम होता रहा कि मेरे शरीर के साथ-साथ सारी पृथ्वी काँप रही है। ऐसा बहुत देर तक अनुभव हुआ। सामने हँसारूढ़ माता का वरदहस्त था। माता कह रही थी—पुत्र प्रसन्न हूँ! पुत्र प्रसन्न हूँ!! यह शब्द कई बार हुआ। मुझे माता का वरदहस्त उसी मूर्ति में सोते-जागते, चलते-फिरते हर समय लगभग दो सप्ताह तक निरन्तर मालूम होता रहा। उस समय मेरे नेत्रों से आँसू बह रहे थे। जब आसन छोड़ा तो माता से प्रणाम करके यही प्रार्थना की कि "जन्मान्तर तक आपके चरणों में ध्यान रहे।" इस घटना के बाद से मुझे अपने में काफी परिवर्तन मालूम हुआ और जितना कष्ट मुझे आर्थिक एवं मानसिक था, सब दूर हो गया। उसी समय से माता के चरणों में मुझे दृढ़ विश्वास है।

* श्रीरामपाल सिंह, राठौर लिखते हैं—उपासना सभी करते हैं, पर गुरु कृपा से इसमें जितनी जल्दी सफलता मिलती है, उतनी शीघ्रता से सफलता देने वाला शायद ही कोई साधन हो। मेरा तो अपने अनुभव के आधार पर यही विश्वास है। मैंने गुरुदेव के चरणों में अपने को सौंपते हुए, उनकी बताई सारी विधियों का ठीक-ठीक पालन करते हुए ऋषिपंचमी से गायत्री-उपासना प्रारम्भ की। उस दिन अँग्रेजी ता. २१-९-५५ थी। मैं ब्राह्म मुहुर्त से ही साधना में संलग्न हो जाता था। दूसरे दिन २२-९-५५ को मैं जप कर रहा था। आँखें खुली थीं। सहसा ही मेरे आगे एक त्रिमुखी देवी प्रगट हुईं। उनके अङ्गों से सुनहले रङ्ग का प्रकाश निकलकर टौर्च के प्रकाश की भाँति मेरे अङ्गों को पवित्र कर रहा था। आनन्द के आधिक्य से मेरे रोम-रोम प्रफुल्लित हो उठे। मैं अनुपम शान्ति से ओत-प्रोत था।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आँखों से प्रेम के आँसू झर रहे थे। पाँचवें ही क्षण वह सारा दृश्य न जाने कैसे छिप गया। मुझे बराबर उन 'चार-क्षण' की याद आती है और उसे फिर से पाने के लिए मेरा अन्तर विह्वल होने लगता है। गुरुदेव! अनन्त मातृ-स्नेह से भरे मेरे प्रभो! एक बार पुनः वह पावन दर्शन देकर सदा के लिये मुझे अपना लो ।

* श्री भगवानदास मीतल, मथुरा से लिखते हैं—गायत्री मंत्र से तो मैं बहुत पहले से परिचित था, पर उसके महान् ज्ञान एवं रहस्य से अनभिज्ञ था । कुछ समय पूर्व श्री आचार्यजी के संरक्षण में मुझे इसका समुचित ज्ञान लाभ प्राप्त हुआ । मैंने विशेष रूप से गायत्री जाप आरम्भ कर दिया । जब से मैंने विशेष साधना की है, तब से अब तक मुझको बहुत सुख और बहुत शान्ति प्राप्त हुई है । जिस आर्थिक चिन्ता से हृदय नित्य-प्रति दग्ध रहा करता था, उसमें महान् शान्ति प्राप्त है और आत्मबल बहुत उन्नति की ओर बढ़ता जा रहा है । भगवत् कृपा और निर्भयता का आनन्द अनुभव होता जा रहा है । इससे पूर्व भी जब मैंने गायत्री जप किया था, मुझे यही गुण और शक्तियाँ प्राप्त हुई थीं, अतः मेरा यह अनुभव है कि निर्भयता और महान् शान्ति एवं विवेक बुद्धि के लिये यह गायत्री उपासना एक अद्वितीय महौषधि है ।

* श्री गोविन्दलाल नृसिंह शाह, रामगञ्ज से लिखते हैं—मेरा सवा लक्ष का अनुष्ठान चल रहा था । अरुणोदय की पुनीतारुण आभा, दिव्य जागरण के सन्देश से हृदय में घुसे से जा रहे थे । मैं खुली आँखों जप करता हुआ तल्लीन हो रहा था । सहसा अरुण रंग के मध्य से श्वेतोपम आलोक का उदय हुआ और वह गायत्री माता की साक्षात् प्रतिमा बन गयी । मैंने प्रणाम किया एवं अपनी भूल-चूक के लिये क्षमा याचना की। माता की आँखों से वात्सल्य के भाव विकीर्णित होकर मुझे स्पर्श करते से प्रतीत होते । धीरे-धीरे तिरोधान का क्रम उपस्थित हुआ । प्रेमोद्रेक से मेरी आँखें भर आयी थीं और उसी क्षण माता का रूप मेरी दृष्टि से न जाने कब तक के लिये तिरोहित हो गया । आज भी उस पुनीत-क्षण की याद, मुझे भाव-विभोर कर देती है।

* श्री विष्णुदत्त जी, दरियागन्ज, दिल्ली से अपने पुरश्चरण काल में हुए अनुभवों को लिखते हैं—कुछ दिनों तक लगातार उपासना के बाद प्रथम बार मुझे भृकुटी के मध्य में प्रकाश का दर्शन हुआ । प्रथम दीपक जैसा, पुनः बिन्दु-सी ज्योति हो गयी । फिर तो नित्य रंग-बिरंगे—प्रकाश, सूर्य, चन्द्र, अनन्त दिव्य प्रकाश दिखाई देता रहा । कभी कृष्ण, विष्णु, शिव एवं सूर्य देव साक्षात् से दीख पड़ते, कभी बड़े-बड़े सुन्दर महल, मन्दिर, हंस, बैल, हाथी, घोड़े भी दिखाई दिये । कई बार हृदय देश में अत्यन्त चमकीला प्रकाश भी देखा । कई दिन तो कुछ मित्रों के सामने दीवाल पर एक उज्ज्वल प्रकाश आकर स्थिर हो गया । वे लोग देखकर आश्चर्य चकित थे ।

* श्री सत्यप्रकाशजी कुलश्रेष्ठ, सिकन्दरपुर, भाण्डेर अपनी जीवन दिशा बदलने का वर्णन करते हैं—कॉलेज की शिक्षा ने मुझे पूरा नास्तिक बना दिया था । पूजा-उपासना तो दूर ईश्वर के अस्तित्व तक में मेरा विश्वास नहीं रह गया था ।

एक स्वजन गायत्री-उपासक का अनुभव सुनकर मैंने प्रयोग रूप में गायत्री जपना प्रारम्भ किया । एक लघु अनुष्ठान कर डाला । रात को स्वप्न में एक तेजोमयी कुमारिका ने मुझे आदेश दिया—तदुपरान्त मैंने विधिपूर्वक सवा लक्ष का अनुष्ठान पूरा किया । इसके बाद तो भविष्य में घटने वाली अनेकों घटनाओं को मैं स्वप्नादि द्वारा जान लेने लगा । एक बार घर में डकैती होने का स्वप्न देखा । दो-चार दिन बाद पिताजी के पत्र में स्वप्न देखी घटना का वर्णन पढ़ने को मिला । ऐसी अनेकों घटनायें मेरे जीवन में घटती ही जा रही हैं ।

* श्री जयमंगल जी, हजारीबाग से लिखते हैं—गायत्री उपासना करने के बाद से मैं अपना आत्मबल पर्याप्त बढ़ा हुआ अनुभव करता हूँ । कैसी भी चिन्ता भरी परिस्थिति में, मेरा चित्त जरा भी क्षुब्ध और उद्विग्न नहीं होता । भयानक से भयानक परिस्थितियाँ जीवन में उपस्थित होकर अनायास ही उनका शमन भी हो जाता है । मन और शरीर में स्फूर्ति बढ़ती हुई अनुभव करता हूँ ।

* श्रीमती मगनदेवी अध्यापिका, बिजनौर (यू. पी.) से लिखती हैं—पहले मेरा मन प्रायः अशांत रहा करता था, पर जब से गायत्री जप व हवन का नियम बना लिया है तब से एक अजीव प्रकार की शान्ति का अनुभव हुआ करता है और अब कठिन से कठिन काम या समस्या आ जाने से भी कोई अशांति पैदा नहीं हो पाती । माता की कृपा से एक चमत्कार का अनुभव हुआ करता है ।

* श्री ताराचन्द अधरिया गाँव सोनासिली (जि. रायपुर) से लिखते हैं—बचपन से मैं अनेक दुर्व्यसनों में फँस गया था । न मालूम किस आकर्षण से मैं गायत्री तपोभूमि मथुरा की तरफ खिंच गया और वहाँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

३९ दिन में सवा-सवा लाख के तीन अनुष्ठान किये । इस बीच में एक दिन रात के आठ बजे गायत्री माता की मूर्ति के सामने बैठे-बैठे मुझे उन्माद-सा हो गया और चीख मार कर माता के सामने गिर पड़ा तथा बीस मिनट के लगभग रोता हुआ पड़ा रहा । इस समय में मैं माता की अनौखी वाणी को भी सुनता रहा जिससे मेरी खराब आदतें सदा के लिये दूर हो गईं और मेरी समस्त शंकाओं का समाधान होकर मेरा जीवन ही बदल गया ।

* श्री सूर्यशरण गुप्त नवाबगंज (गोंडा) से लिखते हैं—४ वर्ष पूर्व श्रद्धेय आचार्य जी ने सहस्त्रांशु यज्ञ का अनुष्ठान प्रारम्भ किया था । सौभाग्यवश मैं भी उसमें सम्मिलित हो सका था । उस समय पत्र द्वारा आचार्य जी ने सूचित किया था कि इससे आपको परम शांति मिलेगी । वास्तव में उस अलौकिक शांति का अनुभव कुछ ही दिन बाद अपने पिता की मृत्यु के अवसर पर हुआ । मेरे जैसे अनुभवशून्य व्यक्ति के लिए पिता की मृत्यु किस प्रकार दु:खद हो सकती है, यह समझ सकना कठिन नहीं है, पर गायत्री माता के प्रभाव से उस घटना का कुछ भी कुप्रभाव मेरे ऊपर नहीं पड़ा और मैं पूर्ण शान्त बना रहा ।

* श्री मक्खनलाल जी दीक्षित, "साहित्य रत्न" दिगौड़ा से लिखते हैं—ता. २०-२१ अप्रैल को गायत्री परिवार, दिगौड़ा की ओर से देवरवा ग्राम में गायत्री जप का विशेष आयोजन किया गया था । इस कार्य का संचालन करने के हेतु दादा दुर्गाप्रसाद जी टीकमगढ़ से आमंत्रित किये गये, किन्तु किसी कारणवश वे प्रथम दिन न आ सके । उसी दिन रात को सोते समय किसी ने उनको आदेश दिया कि तुम शीघ्र ही आमन्त्रित स्थान पर जाओ । दादाजी चौंक पड़े और दूसरे ही दिन प्रात: देवरवा पहुँच गये । वहाँ के मंदिर में हनुमानजी की प्रतिमा थी, वह सपाट पत्थर की तरह थी, उसी पर सिंदूर चढ़ा दिया जाता था । दादाजी ने हनुमानजी का दर्शन किया और प्रेम विभोर होकर उनको नया सिंदूर चढ़ाने लगे । अचानक मूर्ति पर वर्षों से चढ़ा अंगराग खिसक पड़ा और भीतर से हनुमान जी की ऐसी सुरम्य और विशाल मूर्ति निकल पड़ी कि वैसी बहुत कम मन्दिरों में दिखाई पड़ती है । यह दृश्य देखकर जनता जय-जयकार कर उठी और सबके मुँह से यही निकलने लगा—"प्रेम से प्रकट होंहि भगवाना।"

* श्री लालमणि शर्मा, हापुड़ से लिखते हैं—जंगल में एक शिवजी का मन्दिर था । मैं बचपन में उसी मन्दिर में बैठकर नित्य-प्रति जप किया करता था । अन्दर से किवाड़ों को बन्द कर लिया करता था । एक दिन जप करते समय एक बेले का ताजा फूल सिर पर से मेरे आगे गिरा । इसके थोड़ी देर बाद एक अञ्जलि ताजे खिले हुए पुष्पावलि पुन: मेरे शिर से आग गिर पड़े । मैं विस्मय और आनन्द से भर उठा ।

एक बार मैंने विधिपूर्वक नित्य पाँच सहस्र गायत्री जपने का निश्चय किया । नित्य दोनों सन्ध्या जप करता था । उस समय जीविका के लिये कोई उद्यम नहीं कर रहा था । सो एक दिन हमारे पास की भोजन सामग्री समाप्त हो गयी । रात्रि में जप करते समय ख्याल आया—कल क्या भोजन होगा ? उसी समय मुझे स्पष्ट रूप में आकाशवाणी सुनाई पड़ी—कल तुम्हें इतने रु. मिल जायेंगे और प्रात: स्वत: एक सज्जन ने ठीक उतने ही रुपये मुझे दे दिये । वह आवाज इतनी मधुर और सुरीली थी कि आज भी उसकी याद से मैं पुलक भरी माधुरी से भर उठता हूँ । मेरे पड़ोस के एक सज्जन चार वर्ष से एक मुकद्दमें के पीछे परेशान थे । इस वर्ष उन्होंने सवा लक्ष गायत्री का अनुष्ठान किया । उसे पूरा होते-होते उस मुकद्दमे विजय भी प्राप्त हो गयी ।

श्री पुरुषोत्तम दास, कलोल से लिखते हैं—इधर गुजरात में जरा भी वर्षा नहीं हुई । अकाल पड़ने के भय से सभी हा-हाकार कर उठे । खेत के धान सूख गये, यहाँ तक कि मवेशियों को चरने के लिए कहीं स्थान नहीं रहा । भूख से तड़प-तड़प कर अनेकों गायें और भैंसे मर गयीं । अन्न की महँगायी बढ़ जाने से गरीब लोग व्याकुल होने लगे ।

मैंने इस अवसर पर ही संकटत्राता गायत्री माता की करुणा देखने का विचार किया और अन्न परित्यागपूर्वक गाँव के बाहर एक मन्दिर में अपने एक अनन्य साथी दण्डे सहित गायत्री-उपासना करना प्रारम्भ किया । जन-कल्याण की हमारी भावना के कारण या स्वार्थ के कारण गाँव की जनता ने भी वहाँ अखण्ड नाम-कीर्तन, सत्संग आदि करना शुरू किया । एक-एक कर ६ दिन बीत गये, पर वर्षा की कहीं कोई सम्भावना नहीं दिखाई दी । फिर भी हम दोनों श्रद्धा-विश्वास सहित उपासना करते ही रहे । सातवें दिन माता ने हमारी पुकार सुनी और दल बादल न जाने कहाँ से उमड़ आये । इतनी वर्षा हुई कि सभी आनन्द से परिपूर्ण हो उठे । सभी के हृदयों के साथ खेतों में भी हरियाली छा गयी और जड़-चेतन दोनों ने अपने-अपने स्वर में माता का जय-जयकार मनाया ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

* श्री चन्द्रपाल सिंह, अलीगढ़ से लिखते हैं—करुणामयी माता की उपासना को छोड़ते ही प्रेतों के उपद्रव खड़े हो गये । आधा भाद्रपद तक मेरी पत्नी को पर्याप्त कष्ट पहुँचाया । बन्धु दलवीर सिंह जी की प्रेरणा से पुनः गायत्री-उपासना प्रारम्भ की । दो-तीन दिन के उपरान्त ही आश्चर्यपूर्ण दृश्य देखा । मैं जिस छत पर सोता था, उस पर रात में कभी-कभी मनुष्य की साक्षात् मूर्ति मुझे दिखाई देती । मैं उसे बुलाता तो उत्तर में वह कहता—"अब मैं नहीं आ सकता ।" एक दिन रात में मैं अपनी पत्नी को छत पर अकेली सोयी छोड़कर किसी कार्यवश नीचे उतरा, मुझे वापस आने में कुछ देरी हुई । इतने में उसने स्पष्ट सुना, देखो, तुम्हें अकेली छोड़ कर चला गया है । उसने आँखें खोली तो देखा सिरहाने की ओर एक दिव्य मातृ-मूर्ति खड़ी है । उसके एक हाथ में शंख है और दूसरे में कमण्डल, उज्ज्वल गौर अंग से जैसे ज्योति निकल रही हो । प्रेत की कल्पना से वह भयाकुल हो उठी । उसी समय माता ने उसके सिर पर हाथ रखते हुए कहा—"बेटी ! कोई भय नहीं, अब तो मैं तुम्हारी रक्षिका हूँ । कोई तुम्हें अब नहीं सता सकता ।" उसी समय मैं आ रहा था । माँ तिरोहित हो गयी । अब मेरी पत्नी भी मुग्धभाव से नित्य पञ्चाक्षरी गायत्री का जप करती है । भूत-प्रेत कभी नहीं दीख पड़ता है । हम दम्पत्ति नित्य माता के चरणों में फूलों से पूजा करते हैं ।

* श्री जगतराम पस्तोरे गनेशगंज (टीकमगढ़) से लिखते हैं—मेरे जीवन का पिछला समय ऐसे वातावरण में व्यतीत हुआ है जहाँ नास्तिकता की ही प्रधानता थी। पूजा-पाठ को ढोंग और बेवकूफी माना जाता था। पिछली बार परीक्षा में अनुत्तीर्ण रहा तो मेरे मित्र पं. छेदीलाल शर्मा ने बुद्धि, वृद्धि एवं सांसारिक सुख शान्ति के लिए अचूक उपाय गायत्री मन्त्र बताया। विश्वास तो न होता था, पर परीक्षा के रूप में नवरात्रि में एक अनुष्ठान, माला के अभाव में १०८ कंकड़ गिन-गिन कर पूरा किया । परीक्षा में पास हुआ, उसी वर्ष ट्रेनिंग में भी नाम आ गया । अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण होकर आज अच्छे ग्रेड पर अध्यापन कार्य कर रहा हूँ । साथ ही गायत्री उपासना का क्रम भी चलता है ।

* श्री सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी, कोट पूतली से लिखते हैं—गत वर्ष परीक्षा में फेल हो गया, सारे सर्टिफिकेट तथा सारे सामान और रुपयों समेत बक्स चोरी चला गया, नौकरी के लिए सर्वथा मारा-मारा फिरा पर कहीं सफलता न मिली । इन परेशानियों से घबरा कर मैंने गायत्री अनुष्ठान आरम्भ किया । जप पूरा होते ही एक छोटी नौकरी मिल गई । श्रद्धा बढ़ी और सवा लक्ष अनुष्ठान किया । अब मुझे साइंस अध्यापक की अच्छी जगह मिल गई है । अधिक उन्नति होने की आशा है ।

* श्री पुरुषोत्तम आत्मारामजी साखरे, जासलपुर से लिखते हैं—१९५५ की गुरुपूर्णिमा की सुपुनीति रात्रि में ब्रह्ममुहूर्त्त का आरम्भ हो चला था और मैं स्वप्न देख रहा था कि एक योगीराज एक हाथ से स्वादेन्द्रिय (जिह्वा) और दूसरे हाथ से शिश्नेन्द्रिय पकड़े मेरे सामने खड़े हैं और मुझसे पूछते हैं—"क्या इसका अर्थ तुम समझते हो ?" उत्तर देने के प्रथम ही मेरी नींद टूट गई । प्रातः ही सौभाग्य से उस योगीराज का दर्शन मिला । उन्होंने बिना पूछे ही मुझसे कहा—वत्स जब तक तुम स्वप्न निर्देशित दोनों प्रधान इन्द्रियों पर काबू नहीं पा लेते, तब तक इष्ट की प्राप्ति असम्भव है। एक और अपेक्षाकृत सूक्ष्म चाहना है—मान प्रतिष्ठा । इस चाहना को भी छोड़ना अनिवार्य है । एक दिन वे मधुर स्वर लहरी में गायत्री हवन कर रहे थे । मैं भी सौभाग्यवश उपस्थित हुआ । यज्ञ से उठते ही उन्होंने मुझे गायत्री उपासना विधि बताई और कहा—इससे तुम्हारे सारे संकट दूर हो जायेंगे । आज हमारे जीवन में गायत्री उपासना के लाभ नित्य-प्रति प्रत्यक्ष हो रहे हैं ।

* श्री मातादीन शर्मा, दोहद से लिखते हैं—मैं अपनी जन्मभूमि से छः सौ मील की दूरी पर रह रहा हूँ । अपंगु हूँ । गायत्री ही मेरी सब सार-सम्भाल करने वाली माता है । मेरी एकमात्र यही उपासना है । एक दिन मैं जप कर रहा था, सहसा देखता हूँ कि "मेरा एक भाई क्षय रोग से मर गया है और हमारे मकान को नष्ट कर चचेरे भाइयों ने उस स्थान को अन्यायपूर्वक कब्जा कर लिया है ।" इसके दूसरे दिन ही पत्र आया, उसमें ध्यान में देखी सभी बातें ठीक-ठीक अंकित थीं । यह माता की कृपा का ही प्रसाद था कि ६०० मील की घटना को मैंने प्रत्यक्ष की भाँति देखा । गायत्री उपासना के फलस्वरूप ऐसी दिव्य दृष्टि का खुलना एक चमत्कार ही है ।

* सीमेंट फैक्टरी सवाई माधोपुर (राजस्थान) से श्री रामनारायण जी लिखते हैं—यहाँ से कुछ ही दूरी पर पहाड़ी में 'महादेव जी की खोह' नामक रमणीक स्थान है । यहाँ सदैव पानी की छोटी-सी धारा शिवजी पर गिरती रहती है । ता. १४ जुलाई, ५७ को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सभी गायत्री सदस्य टीलों और जंगलों को पार करके वहाँ पहुँचे और गायत्री यज्ञ करने लगे । इतने में दिखाई दिया कि एक नाग देवता पास ही फन फैलाये खड़े हैं। जब तक यज्ञ होता रहा वे वहाँ से जरा भी न हठे । माता की आरती के बाद वे वहीं गायब हो गये।

* तनोड़िया (शाजापुर) से श्री मुन्नलाल जी माता की करुणा के विषय में सूचित करते हैं—मैं अपना पुरश्चरण पूर्ण कर रहा था, परन्तु साथ ही यह भी चिन्ता थी कि पूर्णाहुति किस प्रकार की जावे । मैं बड़ा ही परेशान हो चला था । बहुत कुछ प्रयत्न करने के पश्चात् भी किसी सुदृढ़ मार्ग पर नहीं पहुँच सका । एक दिन मैं मन्दिर में बैठकर जप कर रहा था कि अचानक ही माता द्वारा प्रेरणा हुई कि अब से एक माह के उपरान्त श्रावण आ रहा है, उस समय मन्दिर में उपासक तथा अन्य व्यक्ति भी एकत्रित होंगे, उनसे अखण्ड दीपक के लिए एक-एक रुपया एकत्रित कर लिया जावे । मैंने यथा समय ऐसा ही किया । प्रथम दिन केवल ३०) ही एकत्र हुए । इसके पश्चात् क्रमशः कुल योग २७८) रुपया तक पहुँच गया । बड़ी धूमधाम के साथ पूर्णाहुति हुई । माता की ऐसी वात्सल्यता देखकर मैं तथा अन्य उपासक बड़े ही आकर्षित हुए । मुझे तो पूर्ण विश्वास है कि माता की शरण में जाकर सभी कठिनाइयाँ सरल हो जाती हैं ।

[गायत्री उपासना बुद्धि के विकास में विशेष रूप से सहायक होती है । इसके प्रभाव से मन्द बुद्धि अथवा लापरवाही के कारण विद्याभ्यास में पिछड़े हुए व्यक्ति भी आकस्मिक रूप से अपूर्व प्रतिभा का परिचय देते देखे गये हैं । नीचे कुछ ऐसे ही विद्यार्थियों के अनुभव दिये जा रहे हैं ।]

* श्री दिवाकर राव चिपड़े, बिलासपुर से लिखते हैं—इस वर्ष बिना किसी विशेष तैयारी के ही बी. ए. की परीक्षा देने के आग्रह को टाल न सका । इस समय पढ़ना भी सम्भव नहीं था, इसीलिए अध्ययन के बदले गायत्री उपासना ही करता । परीक्षा दी । किसी तरह परचे पूरे कर दिये । मुझे तो अपने किये परचों के आधार पर उत्तीर्ण होने की कोई भी आशा न थी । केवल मन ही मन माता की रट लगाये रहता । गंगा दशहरा में भी यही रट लेकर लघु अनुष्ठान किया । अन्तिम दिन लगातार उपासना करता रहा । घी के दीप जल रहे थे । पूजा समाप्त कर ज्यों ही नीचे आया कि हमारी शाला के दो शिक्षक आये, कहा—'बधाई आपको ! आप बी. ए. पास हो गये ।' मैंने उसे उपहास समझा और संकोच से झुक गया । मेरे मनोभाव को देखकर फिर दृढ़-गंभीरता से उन्होंने विश्वास दिलाया । विश्वास होते ही मेरा रोम-रोम प्रसन्नता से उल्फुल्ल हो उठा । शिक्षक का सम्मान कर उन्हें विदाई दी और उपासना गृह में आकर माता के निकट घण्टों रोता रहा । यह रुदन माता की करुणा के प्रति श्रद्धा, प्रेम और कृतज्ञता का उद्रेक था। माता की इस प्रत्यक्ष कृपा ने हमारे सारे परिवार का हृदय मुग्ध कर दिया । आज हमारे परिवार में सभी गायत्री उपासक हो गये । आगे तो परिवार की सारी आवश्यकता जैसे अनायास ही पूरी होती दीख रही है। मेरी छोटी बहिन का विवाह एक सम्पन्न परिवार में एक सुन्दर तरुण बी. ए. पास के साथ हो गया । उन लोगों ने विवाह में एक पैसा भी रीति-रिवाज, तिलक-दहेज का नहीं लिया । मेरे एक मित्र बिहारीलाल जी का भी इसी वर्ष बी. ए. का पेपर एक दम बिगड़ गया था । उसने अपने को अनुत्तीर्ण मान लिया था, फिर भी माता का भरोसा लेकर वे गायत्री तपोभूमि मथुरा गये और लघु अनुष्ठान किया । माता की कृपा से अनुष्ठान समापत होते ही उन्हें भी अपनी आश्चर्यकारी सफलता की सूचना तपोभूमि में ही मिल गयी । हमें तो विश्वास है कि गायत्री माता शीघ्र ही द्रवित होती हैं और अपने शरणागतों का सदा ही संरक्षण करती रहती हैं ।

* श्री रामचन्द्र शर्मा, (प्रयाग) अपना अनुभव लिखते हैं—बचपन में मेरी बुद्धि इतनी बोदी थी कि मैं विद्यालय में मामूली-मामूली बातों में खूब मार खाता था । जीवन भार-सा लगता । मर जाने की इच्छा होती। एक बार सनावद अपनी आजी माँ के यहाँ गया। उन्होंने मेरी दशा जान कर गायत्री-उपासना की प्रेरणा दी और मैं उपासना करने लगा । मेरे पिताजी इन्कमटैक्स महकमे में थे । मेरी कुछ दिन की उपासना के बाद ही उन्नत करके जबलपुर बदली कर दी गयी । यहाँ के विद्यालय में आते ही मेरी बुद्धि का प्रकाश दिनों-दिन बढ़ता ही चला गया । फिर तो कठिन से कठिन विषय मिनटों में समझ लेता था । फिर ऊँचे दर्जे से मैट्रिक पास कर सुसम्पन्न हुआ । तदुपरान्त सुशील कन्या से विवाह सम्पन्न हुआ और अध्ययन करते हुए बिना परेशानी के बी. कॉम. एम. ए. और एल. एल. बी. पास कर लिये । आजकल सरकारी महकमे में अच्छे पद पर हूँ और जनता की सेवा करते हुए शान्त उपासनामय जीवन-यापन करता हूँ । मेरे प्रसन्न-शान्त स्वभाव से मेरे सम्पर्क में आने

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाले मुझे छोड़ना नहीं चाहते । माता की प्रेरणा से मुझे सभी प्राणियों में ईश्वर की झलक ही दीख पड़ती है और मैं आनन्द से उत्फुल्ल रहा करता हूँ ।

* विद्यार्थी सन्तोष कुमार श्रीवास्तव लिखते हैं—मैंने पाँच-छः महीना मिडिल वर्ग में पढ़कर विद्यालय छोड़ दिया, क्योंकि मुझे पढ़ने में जरा भी मन नहीं लगता था । परिवार के सभी लोगों के बार-बार समझाने पर भी मैं नहीं गया । यहाँ तक कि मेरे पढ़ने के सारे सामान, जो मैं विद्यालय में ही छोड़ आया था, मेरे बड़े भाई साहब उठा लाये ।

अनुपस्थिति अधिक होने पर विद्यालय के रजिस्टर से मेरा नाम भी काट दिया गया । कुछ दिनों के उपरान्त मेरे चाचा साहब, जो गायत्री उपासक थे, आये । उन्होंने भी मुझे पढ़ने के लिये कहा । मैं जरा भी तैयार नहीं हुआ । वे चुप रहे । पुनः उन्होंने पता नहीं गायत्री माता से क्या प्रार्थना की और उसके दूसरे दिन उन्होंने मुझे पढ़ने के लिए जाने को कहा और इस बार बिना कुछ विरोध किये, मैं विद्यालय चला गया । प्रधान अध्यापक जी ने कहा—अब तो परीक्षा के दिन एक महीने शेष हैं, अतः तुम्हें भर्ती करना व्यर्थ है। फिर कहा—डिप्टी साहब के कहने से ही मैं ऐसा कर सकता हूँ । गायत्री माता की कृपा से पता नहीं किधर से कुछ देर में डिप्टी साहब भी आ गये । उनसे पूछने पर उन्होंने स्वीकृति दे दी ।

उस दिन से मुझे भी गायत्री माता पर श्रद्धा हुई मैं भी यथा-सम्भव उपासना करने लगा । मैं पढ़ने में इतना कमजोर था कि विद्यालय के सहपाठीगण मुझे गधा कहा करते थे और सबको विश्वास था कि मैं अवश्य फैल हो जाऊँगा । परीक्षा काल आया । मैंने माता का स्मरण करते हुए सभी विषयों की परीक्षा दी। परीक्षाफल निकला । सभी ने आश्चर्य से देखा कि मेरा रोल नं. ३५५ भी उसमें अंकित था । मैंने माता के चरणों में प्रेम के आँसू चढ़ाये ।

* मोहनलाल गालब, कोटा से लिखते हैं—रत्तीराम जी कोयला निवासी हैं । उनका लड़का हरिकिशन मिडिल में पढ़ता था । वह वर्ष में आठ महीना बीमार ही रहता था । स्वास्थ्य की भाँति पढ़ाई भी कमजोर थी । वार्षिक परीक्षा देने के समय रत्तीरामजी ने परीक्षा शुल्क देना पैसे की बर्बादी समझ कर अस्वीकार कर दिया । हम लोगों ने गायत्री माता के नाम पर साढ़े सात रुपया परीक्षा शुल्क देने के लिये जोर दिया तो मान गये। जब लड़का परीक्षा देकर घर आया तो माता-पिता दोनों ने एक स्वर से कहा—हमारे साढ़े सात रुपये निश्चय ही बर्बाद चले गये । सदा ऐसी निराशा भरी वाणी निकालते रहते । जब जून में परीक्षाफल निकला तो हरिकिशन द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ । फिर तो रत्तीरामजी ने बड़े प्रेम से गायत्री उपासना प्रारम्भ की । उनकी पत्नी भी उनकी अनुगामिनी बनीं । कुछ दिनों की उपासना के बाद उनका लड़का स्वस्थ रहने लगा और पढ़ने में उसकी बुद्धि विकसित होती चली गयी । अब वे लोग लगातार गायत्री उपासना कर रहे हैं ।

* श्री माधुरी बाई, रायपुर से माता की वात्सल्य-कोमल भावना का वर्णन करती हुई अपनी बीती लिखती हैं—अपनी कक्षा में सबसे कम समझ वाली तथा याद करने में भोंदी मैं ही थी । अध्यापिका जी का प्रश्न सदा मुझे कठिन जान पड़ता और मैंने कभी उसका उत्तर नहीं दिया । परीक्षा के पाँच महीने पहिले मैं बीमार पड़ी और चार महीने के बाद स्वस्थ हो पायी । अब परीक्षा के पन्द्रह दिन ही शेष थे । वर्ग में उत्तर नहीं दे सकने के कारण अध्यापिका जी ने मुझे काफी फटकार दी । घर आकर बिना खाये सो रही । मैं नित्य थोड़ी-थोड़ी गायत्री उपासना किया करती थी, सो आज उस माता की याद कर बड़ी रोयी और रोते-राते सो गयी । स्वप्न में देखा—मैं परीक्षा कक्ष में बैठी सवाल को कठिन देखकर रो रही हूँ । सहसा खिड़की की राह से माता आयीं और सान्त्वना के स्वर में कहा—माधुरी बेटी ! रोती क्यों हो—मन लगाकर पढ़ती रहो । परीक्षा में तुम सर्वप्रथम और तेरी सहपाठिनी भूला द्वितीय होंगी । परीक्षा हुई और माता की स्वप्न की वाणी साकार हुई । ऐसी माता की सदा जय हो !

* श्री द्वितेन्द्र प्रसाद शर्मा, पाली (पटना) अपनी गायत्री-उपासना के लाभों का वर्णन करते हैं—मैं नित्य टूटे-फूटे रूप से गायत्री जप लिया करता था । विद्यालय में स्कॉलरशिप की दरखास्तें पड़ रही थीं । मैं अयोग्य तो था ही, फिर भी दरखास्त दे दिया करता था । जब वह रुपया आया तो स्वयं मुझे अपना नाम देखकर आश्चर्य हुआ और माता की कृपा की याद से परिप्लुत हो गया । अब पढ़ने और गायत्री उपासना में मेरी दिलचस्पी बढ़ गयी थी । इस बार की परीक्षा देने के बाद मेरे सहपाठी मेरी खिल्ली उड़ाते—कहते तुम अपनी श्रेणी में सबसे ऊँचा नम्बर पाओगे । आज परीक्षाफल निकलने वाला था । स्कूल जाते ही मेरे सहपाठीगण हँसी उड़ाने के लिए मेरे चारों ओर जुट गये—उसी समय नम्बर सुनाने का अवसर आया । मेरे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सहित सभी को मेरा प्रथम नम्बर से पास होना विस्मित कर रहा था ।

* श्री सुदर्शन गुप्त, कोटा से लिखते हैं—मैंने जब से गायत्री माता का आँचल पकड़ा, तब से बराबर ही मुझे संकट के अवसर पर सहायता मिलती गयी है । बुद्धि भी पहले की अपेक्षा अधिक तीव्र हो गयी है । मेरे कुविचार क्रमशः दूर होकर विनष्ट हो गये हैं । जब नवीं कक्षा में अनुत्तीर्ण होकर घर में सभी की उपेक्षा का पात्र बना तो मेरा उत्साह टूट गया । आगे पढ़ने की हिम्मत नहीं होती थी, पर गायत्री-उपासना करते ही मुझमें उत्साह की बाढ़ आ गयी और पढ़कर परीक्षा दी । अच्छे नम्बरों से पास हुआ । परीक्षा के प्रथम मैं विशेष रूप से उपासना में संलग्न रहा था । इसी भाँति माता की कृपा के बल से दसवीं-ग्यारहवीं कक्षा भी पास कर आज बारहवीं कक्षा में पढ़ रहा हूँ। प्रत्येक बार अच्छी तरह पास होते रहने के कारण अब घर में भी मेरा सम्मान बढ़ा गया है । माता की कृपा से पढ़ना भी मेरे लिये सुन्दर और सरस हो गया है । चारों ओर मुझे माता की सहायता के हाथ दिखाई देते हैं ।

* डा. राजाराम शर्मा, भार्थू (उ. प्र.) से लिखते हैं—गायत्री साक्षात् सरस्वती है । बुद्धि बढ़ाने की, स्मरण शक्ति को तीव्र करने की तथा विद्या-प्राप्ति के लिये सब प्रकार के साधन जुटा देने की उसमें विलक्षण शक्ति है । जो विद्यार्थी अपनी पढ़ाई के साथ-साथ थोड़ी बहुत उपासना किया करते हैं, उनकी उन्नति बड़े सन्तोषजनक ढंग से होती चलती है । परीक्षा के दिनों में इस महामंत्र का थोड़ा साधन करना भी बड़ा अच्छा रहता है । इससे परीक्षार्थी को पिछला पढ़ा हुआ आसानी से याद हो जाता है और परीक्षा काल में चित्त शान्त रहने से प्रश्न-पत्र का तात्पर्य भली प्रकार समझने की सुविधा रहती है ।

इस सम्बन्ध में अपने परिवार के ही कुछ अनुभव पाठकों के सम्मुख उपस्थित करता हूँ । मेरी पुत्री सावित्रीदेवी ने आयुर्वेद की उच्च परीक्षा की तैयारी की, फॉर्म भर दिया और फीस भेज दी, पर परीक्षा से कुछ ही दिन पूर्व वह टाइफाइड से ऐसी बीमार हुई कि घर में सब लोगों को बड़ी चिन्ता होने लगी । लड़की को अपनी बीमारी की उतनी चिन्ता न थी जितनी कि परीक्षा की । यह देखकर मैंने उसे सलाह दी कि "बेटी, मन ही मन गायत्री का जप व ध्यान करो ।" मेरी सलाह को उसने बड़े उत्साह से माना और रोग-शय्या पर पड़े-पड़े ही मानसिक जप आरम्भ कर दिया । परिणाम बड़ा आशाजनक हुआ । बीमारी अपनी मियाद से पहले ही सुलझ गई । फिर भी कमजोरी बहुत अधिक थी । सावित्री ने उसी अवस्था में परीक्षा दी और अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण हो गई ।

ऐसी ही घटना मेरे पुत्र की है । चि. व्यासदेव मैट्रिक की पढ़ाई के लिये आग्रह करता था । गाँव में प्रायमरी स्कूल ही था और बाहर जाने का साधन न था । उसने गायत्री माता की उपासना की और उनकी कृपा से इलाहाबाद में उसकी पढ़ाई का सब प्रबन्ध आसानी से हो गया ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुख व शान्तिदायिनी गायत्री

गायत्री उपासना से मनुष्य की बुद्धि शुद्ध होती है । जिसकी बुद्धि शुद्ध हो जायेगी उसके जीवन की अनेक कठिनाइयाँ सरलतापूर्वक हल होने में देर न लगेगी । दरिद्रता, शत्रुता, बेकारी, बीमारी, मुकदमेबाजी आदि में प्रधान कारण मनुष्य की कुबुद्धि ही होती है । जैसे-जैसे मनुष्य की मनोभूमि में उदारता, स्नेह, दया, क्षमा, परिश्रमशीलता, सद्भावना, संयम, नियमितता, मधुर भाषण, उत्साह आदि गुण बढ़ते जाते हैं, वैसे-वैसे उसका दरिद्र घटता है, जीवन की ठीक व्यवस्था बनती है, और शत्रुता का विनाश होकर लोगों का सद्भाव एवं सहयोग बढ़ता है । जिसका आहार-बिहार ठीक होगा, उसे बीमारी से छुटकारा पाने में कुछ विशेष समय न लगेगा ।

गायत्री उपासना में मनुष्य के शरीर और मन में निवास करने वाला "श्री" तत्त्व बढ़ता है, जिससे उसकी क्रिया, चेष्टा, वाणी, विचारधारा, दृष्टि तथा कल्पना शक्ति में ऐसी वृद्धि प्रारम्भ हो जाती है कि सांसारिक व्यवहार में कम से कम हानि उठाकर अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करें ।

माता की कृपा जिसे प्राप्त होती है उसे माता के पास की सभी वस्तुएँ सरलतापूर्वक मिल जाती हैं । माता अपने जिस बालक पर स्नेह करती है, उससे उसका कोई दुराव नहीं होता । कुछ भी उससे छिपाती नहीं और पुत्र की सच्ची आवश्यकता होने पर उसे अपने पास की सभी वस्तुएँ दे देती है । जब साधारण माताएँ अपने बालकों के साथ ऐसा व्यवहार करती हैं तो अपार करुणा रखने वाली, जगजननी महामाया गायत्री अपने बच्चों के अभाव एवं कष्ट दूर करने में संकोच क्यों करेगी ? उनके हाथ में सब कुछ है, उनके पास किसी वस्तु की कमी नहीं, फिर उसका पुत्र बनने वाला ही किसी वस्तु से वंचित क्यों रहेगा ?

गात्रयी उपासना द्वारा जहाँ आध्यात्मिक लाभ होते हैं वहाँ ब्याज रूप से सांसारिक अभाव एवं कष्ट भी दूर होते हैं । गेहूँ की खेती करने पर धान्य राशि तो प्राप्त होती ही है, साथ ही भूसा एवं घास पात भी मिल जाते हैं । इस प्रकार माता की कृपा से मनुष्य का जहाँ आत्म-कल्याण होता है, वहाँ उसे सांसारिक सुख-शान्ति की भी कमी नहीं रहती । आवश्यकता केवल इस बात की है कि हमारी भावना सच्ची और उपासना विधिपूर्वक हो । माता की कृपा प्राप्त होने में यही दो हेतु मुख्य होते हैं ।

प्राचीन काल में अनेक साधक ऐसे हुए हैं जो प्रभु की शरण में जाकर सांसारिक ऐश्वर्यों से परिपूर्ण बने हैं । ध्रुव का चरित्र ऐसा ही है, तपोबल से उन्होंने चक्रवर्ती राज्य पाया था । राजा नृग को यद्यपि पीछे अहंकार आने से नष्ट हो गया, पर पहले तो वह तपोबल से सांसारिक वैभव का ही नहीं देवताओं के सम्राट इन्द्र के सिंहासन का स्वामी बन गया था ।

नरसी भगत की प्रार्थना पर स्वर्ण वर्षा होने की कथा प्रसिद्ध है । निर्धन सुदामा को प्रभु के अनुग्रह से विपुल धन-ऐश्वर्य मिला था । ऐसी घटनाएँ प्राचीन काल में भी अनेक हुई थीं और अब भी होती हैं । जिस पर सर्वशक्तिमान् दिव्य शक्ति का अनुग्रह होगा, उसे किसी बात की कमी क्यों रहेगी?

वृन्दावन के अनन्य गायत्री उपासक काठिया बाबा केवल काठ की कोपीन लगाकर नंगे रहते थे । वे प्रतिदिन इतना धन दान-पुण्य करते थे कि देखने वालों को दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती थी । चोरों ने कई बार उन्हें घेरा और कोपीन में सोना छिपा होने की आशा से उनकी तलाशी ली, पर वहाँ कुछ भी प्राप्त न हुआ । इसी प्रकार कुष्टिया (बंगाल) में एक बंगाली महात्मा मौन रहते थे, उनके यहाँ भी प्रतिदिन सैकड़ों रुपया खर्च होता था । लोग समझते थे कि वे रसायन विद्या से सोना बनाना जानते हैं, पर वस्तुतः ऐसा न था। यह गायत्री उपासना की ही एक सिद्धि थी ।

लछमन गढ़ में एक विश्वनाथ नामक गोस्वामी प्रसिद्ध गायत्री उपासक हुए हैं, उनके जीवन का अधिकांश भाग गायत्री उपासना में ही व्यतीत हुआ था। वे स्वयं तो तपस्वी थे इसलिए अपने लिए किसी से कुछ माँगते न थे पर उनका आशीर्वाद सीकर के एक गरीब वीदायत परिवार को प्राप्त हो गया जिससे वह परिवार अत्यन्त ही समृद्धिशाली एवं सम्पन्न बना ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

इस परिवार के लोग अब तक उन गोस्वामी जी की समाधि पर अपने बच्चों का मुण्डन कराते हैं ।

कोटा राज्य में खतौली नगर से ७ मील दूर धोंकलेश्वर स्थान पर महात्मा मगनानन्द जी नामक गायत्री के सिद्ध पुरुष रहते थे । उनके अनुग्रह से खतौली की जप्त हुई लाखों रुपये की जागीर सरकार द्वारा पुनः वापिस मिली थी ।

रतनगढ़ में भूधरमल नामक एक परम नैष्ठिक गायत्री उपासक हुए हैं । ये सम्वत् १९१६ में काशी आये और जीवन भर वहीं रहे । अपनी मृत्यु की उन्हें पूर्ण जानकारी थी, उन्होंने आषाढ़ सुदी ५ सम्वत् १९८२ को अपना मरणोत्सव स्वयं बड़े समारोह पूर्वक मनाया और तब साधना करते हुए सबके सामने शरीर छोड़ा । इनका आशीर्वाद पाने वाले कई बहुत ही सामान्य मनुष्य आज भी करोड़पति सेठ बने हुए हैं।

इस प्रकार गायत्री के सच्चे उपासकों को आशीर्वाद भी अनेक बार भगवान् की कृपा के समान सुख-समृद्धि देने वाले बन जाते हैं । साधक स्वयं साधना करके भी माता का अनुग्रह प्राप्त करके दीनता और दरिद्रता से छुटकारा पाता है । इसके अनेक उदाहरण मौजूद हैं ।

वृन्दावन के स्वर्गीय श्री उड़िया बाबा की प्रेरणा से हाथरस निवासी लाला गणेशीलाल ने २४ लक्ष गायत्री का अनुष्ठान कराया था । उस समय से लाला गणेशीलाल की आर्थिक दशा दिन-दिन ऊँची उठती गई और अब उनकी प्रतिष्ठा तथा सम्पन्नता पहले की अपेक्षा अनेकों गुनी अधिक है ।

प्रयाग के पास जमुनीपुर ग्राम में रामनिधि शास्त्री नामक एक विद्वान ब्राह्मण रहते थे । वे अत्यन्त निर्धन थे । उन्होंने कई गायत्री पुरश्चरण किये । एक दिन अर्ध रात्रि के समय भगवती गायत्री ने उन्हें बड़े ही दिव्य रूप में दर्शन दिया और कहा कि तुम्हारे इस घर में अमुक स्थान पर स्वर्ण मुद्राओं से भरा घड़ा रखा हुआ है, उसे निकाल कर अपनी दरिद्रता दूर करो । पण्डित जी ने घड़ा निकाला और वे निर्धन से धनपति हो गये ।

गुजरात के मधुसूदन स्वामी का नाम संन्यास लेने से पूर्व मायाशंकर दयाशंकर पण्डया था । वे सिद्धपुर रहते थे । आरम्भ में वे २५) रुपये मासिक के नौकर थे । उन्होंने प्रतिदिन एक हजार से गायत्री जप आरम्भ करके चार हजार तक बढ़ाया । फलस्वरूप उनकी आशाजनक पद वृद्धि हुई । नौकरी छोड़ने से पूर्व उन्हें ४५०) मासिक का रेलवे में उच्च पद मिला हुआ था ।

इलाहाबाद के पं. प्रताप नारायण चतुर्वेदी की नौकरी छूट गई थी । बहुत तलाश करने पर भी कोई जगह न मिली तो उन्होंने अपने पिताजी के आदेशानुसार सवा लक्ष गायत्री अनुष्ठान किया । जप समाप्त होने पर उन्हें उसी पानियर प्रेस में पहली नौकरी की अपेक्षा ढाई गुने वेतन की जगह मिली जहाँ कि पहले उन्हें बार-बार प्रार्थना करने पर भी मना कर दिया गया था ।

जोधपुर राज्य के एक छोटे गाँव में मोड़क मल कंजडीपाल नामक सज्जन बहुत समय पूर्व १२) मासिक के अध्यापक थे । गायत्री उपासना में उनका बहुत मन लगा रहता था । एक दिन जप करते-करते उन्हें स्फुरणा हुई कि मुझे कलकत्ता जाना चाहिए वहाँ मेरी आर्थिक उन्नति होगी । वे कलकत्ता गये । कुछ समय तो छोटी मोटी नौकरी करते रहे, फिर उन्हें रुई के व्यापार में भारी लाभ हुआ और थोड़े ही दिन में लखपती बन गये ।

मानिकचन्द चाचोदिया नामक एक मारवाड़ी व्यापार में घाटा होने के कारण बड़े कर्जदार हो गये थे। दिवालिया होकर अपनी प्रतिष्ठा खोने के भय से उन्होंने गायत्री अनुष्ठान कराया । समय कुछ ऐसा फिरा कि दिन-दिन तीव्र गति से लाभ होने लगा । पिछली खाई पूरी तरह नहीं पट गई पहले की अपेक्षा अधिक अच्छी स्थिति में पहुँच गये ।

ठोरी बाजार के पं. पूजा मिश्र का कथन है कि हमारे पिता पं. देवीप्रसाद जी एक गायत्री उपासक महात्मा के शिष्य थे । पिताजी की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी । उनको दुःखी देखकर महात्मा जी ने उन्हें गायत्री उपासना बताई । फलस्वरूप खेती में भारी लाभ होने लगा । छोटी-सी खेती की विशुद्ध आमदनी से अब हमारी हालत बहुत अच्छी हो गई है और बचत का २० हजार रुपया बैंक में जमा हो गया है ।

ऐसी घटनाएँ एक नहीं अनेकों हैं, जिनसे यह सिद्ध होता है कि गायत्री उपासक जिस प्रकार आध्यात्मिक सुख-शान्ति से भरपूर रहते हैं, उसी प्रकार सांसारिक सुखों की भी उन्हें कमी नहीं रहती । सद्बुद्धि और सुमति मिलना करोड़ों रुपयों से अधिक शान्तिदायक होता है । फिर जो थोड़ी कमी रहती भी है तो वह माता की कृपा से पूरी हो जाती है । गायत्री उपासकों को अर्थ नष्ट से ग्रसित जीवन व्यतीत नहीं करना पड़ता। सत्यनारायण व्रत कथा के महात्म्य में बताया गया है कि सतानन्द ब्राह्मण, काष्ठ विक्रेता भील, साधु

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वैश्य, लीलावती-कलावती, तुंगध्वज राजा आदि को सत्यनारायण भगवान की कृपा से श्री समृद्धि प्राप्त हुई। गायत्री उपासना का भी ऐसा ही महात्म्य प्रत्यक्ष है। उससे मनुष्य की अनेकों कठिनाइयों का समाधान होता है।

कितने ही रोगग्रस्त व्यक्ति गायत्री उपासना से निरोग होते हैं। अभी थोड़े दिनों में ही ऐसी घटनाओं के अनेक अनुभव सामने आये हैं। सीकार के शिव भगवान सोमनी जो आज कल पूर्वी पाकिस्तान में जूट का व्यापार करते हैं कुछ वर्ष पूर्व तपैदिक से सख्त बीमार पड़े थे। उनके साले मालेगाँव बम्बई निवासी शिवरतन मारू ने उन्हें गायत्री का मानसिक जप करने की सलाह दी, क्योंकि वे स्वयं भी अपने पारिवारिक कलह तथा स्त्री की अस्वस्थता से छुटकारा पा चुके। सोमानी जी की बीमारी इतनी घातक हो चुकी थी कि बम्बई के प्रसिद्ध सर्जन डॉक्टर विलमोरिया को कहना पड़ा कि पसली की तीन हड्डियाँ कटवा दी जायें तब ही कुछ सुधार की सम्भावना है अन्यथा पन्द्रह दिन में हालत काबू से बाहर हो जायेगी। ऐसी भयंकर स्थिति में रोगी ने माता का अंचल पकड़ा और वे अब पूर्ण स्वस्थ लाभ करके अपना कारोबार कर रहे हैं।

रोहेड़ा (राजस्थान) निवासी श्री नैनूराम को २० वर्ष पुरानी बात व्याधि थी। बड़ी-बड़ी दवाएँ करा लेने पर भी वह पूर्णतया ठीक न हुआ। जधरापुर के ठा. रामकरण सिंह की स्त्री वर्षों से संग्रहणी ग्रस्त थी, रोग असाध्य मान लिया गया था। किन्हीं की सलाह से वैद्य जी ने सवा लक्ष गायत्री जप का अनुष्ठान कराया। रोगिणी चंगी हो गई और अब उसे एक पुत्र भी पैदा हुआ है। कनकुवा (हमीरपुर) के श्री लक्ष्मीनारायण जी बी. ए., एल. एल. बी. की धर्मपत्नी प्रसव काल में अत्यन्त कष्ट पीड़ित रहती थीं। गायत्री उपासना से उनका कष्ट बन्द हो गया। एक बार वकील साहब का लड़का भयंकर रूप से बीमार हुआ। चिकित्सकों के हाथ-पाँव फूल रहे थे। वकील साहब ने गायत्री उपासना की और बच्चा थोड़े ही समय में निरोग हो गया।

सनाढ्य जीवन इटावा के सम्पादक पं. प्रभुदयाल शर्मा की पुत्र वधू तथा नातियों को कोई दुष्ट प्रेतात्मा लग गई थी। हाथ, पैर और मस्तक में भारी पीड़ा होती थी और बेहोशी आ जाती थी। रोगमुक्ति के सब प्रयत्न जब असफल हुए तो गायत्री का आश्रय लिया गया और वह व्याधा दूर हुई। अमरावती के सोहनलाल मेहरोत्रा की पत्नि को भूत बाधा पड़ती थी। वैद्यों तथा ओझाओं को हजारों रुपये दिये जा चुके थे। स्त्री दिन-दिन घुलती जा रही थी, सूख कर काँटा हो रही थी। गायत्री अनुष्ठान करने से उसका दुःख दूर हुआ। चांचोड़ा (गुना) के डॉ.भगवान स्वरूप की स्त्री भी इस प्रेत बाधा के चंगुल में पड़कर मरणासन्न स्थिति को पहुँच गई थी, उसकी प्राण रक्षा गायत्री द्वारा ही हुई। भूत व्याधा चाहे मस्तिष्क की खराबी से हो, चाहे भ्रम मूलक विश्वासों से हुई हो, चाहे वस्तुतः सच्ची ही हो, सभी कारणों का गायत्री द्वारा समाधान हो जाता है। जहाँ गायत्री की पूजा होती है, वहाँ भूतव्याधा ठहर नहीं सकती।

झाँसी के पं. लक्ष्मीकांत झा व्याकणाचार्य गायत्री के अनन्य उपासक हैं। उन्होंने एक सेठ के १६ वर्षीय पुत्र के प्राण गायत्री जप के प्रभाव से बचते हुए प्रत्यक्ष देखे थे, उसी से उनकी इस मन्त्र पर अटूट श्रद्धा हुई। गोवर्धन विद्यापीठ के शंकराचार्य ने अपनी पुस्तक मन्त्र शक्ति योग के पृष्ठ १६७ पर लिखा है कि—रायसाहब मागलतदार पहाड़पुर कोल्हापुर वाले गायत्री मन्त्र से साँप का जहर उतार देते हैं।

ग्रहस्थ जीवन में अनेक प्रकार की उलझनें तथा चिन्ताएँ रहती हैं। कई बार आवश्यकताएँ और चिन्ताएँ इतनी बड़ी होती हैं कि उनकी पूर्ति का कोई मार्ग न देखकर मनुष्य निराश होने लगता है। उसे चारों ओर अन्धकार दीखता है, परन्तु देखा गया है कि कई बार ऐसे अवसरों पर भी माता की कृपा से समस्या को हल करने वाले कोई ऐसे उपाय निकल आते हैं जिनकी पहले कोई सम्भावना, आशा एवं कल्पना भी नहीं होती।

बुलढाना के श्री बद्रीप्रसाद वर्मा बहुत निर्बल आर्थिक स्थिति के आदमी थे। ५०) रुपया मासिक से उन्हें अपने आठ आदमियों के परिवार का गुजारा करना पड़ता था। कन्या विवाह योग्य हो गई। अच्छे घर में विवाह करने के लिये हजारों रुपया दहेज की आवश्यकता थी। वे दुःखी रहते और गायत्री माता के चरणों में आँसू बहाते रहते। अचानक ऐसा संयोग हुआ कि एक डिप्टी कलक्टर के लड़के की बरात, कन्या पक्ष वालों से झगड़ कर बिना विवाह वापिस लौट रही थी। डिप्टी साहब ने, वर्मा जी के पास प्रस्ताव भेजा कि अपनी कन्या का विवाह आज ही हमारे लड़के से कर दें। वर्मा जी राजी हो गये। एम. ए. पास लड़का जो नहर विभाग में ६००) मासिक का इन्जीनियर है इससे उनकी कन्या की शादी कुल १५०) में हो गई।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

१३.४ गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार

संभलपुर के बा. कौशलकिशोर माहेश्वरी असवर्ण माता-पिता से उत्पन्न होने के कारण जाति बहिष्कृत थे। विवाह न होने के कारण उनका चित्त बड़ा दु:खी रहता था। गायत्री माता से अपना दु:ख रोकर चित्त हल्का कर लेते थे। २६ वर्ष की आयु में उनकी शादी एक सुशिक्षित उच्च घराने की अत्यन्त रूपवती तथा सर्वगुण सम्पन्न कन्या के साथ हुई। माहेश्वरी जी के अन्य भाई-बहिनों की शादी भी उच्च तथा सम्पन्न परिवारों में हुई। जाति बहिष्कार के अपमान से उनका परिवार पूर्णतया मुक्त हो गया।

कितने ही परिवार सन्तान के अभाव से दु:खी रहते हैं। माता उनकी कामना पूर्ण करती हैं। प्राचीन काल में राजा दलीप ने वशिष्ठ के आश्रम में अपनी धर्मपत्नी सहित गौ सेवा तथा गायत्री उपासना करके सन्तान पाई थी। दशरथ ने पुत्रेष्ठि यज्ञ करके सन्तान सुख पाया था। राजा अश्वपति को सात जन्मों तक सन्तान न होने का जो पातक लगा हुआ था वह गायत्री का आश्रय लेने से ही दूर हुआ था। अब भी ऐसी अनेकों घटनाएँ होती रहती हैं। प्रयाग जिले के छितौनी ग्राम निवासी पं. देव नारायण संस्कृत भाषा के विद्वान हैं। अधिक आयु हो जाने पर भी कोई सन्तान न हुई तो उनकी स्त्री अपने को बन्ध्या मानकर दु:खी रहने लगी। पण्डित जी ने पत्नी का दु:ख निवारण करने के लिये गायत्री पुरश्चरण किया। कुछ ही दिन में उनके एक प्रतिभावान् पुत्र उत्पन्न हुआ, जो अब संस्कृत की आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण कर चुका है। दिल्ली में नई सड़क पर बुद्धराम भट्ट नामक एक दुकानदार है। उन्हें ४५ वर्ष की ढलती आयु में पुत्र प्राप्त हुआ। गौहाटी के वैजनाथ भाई को छ: कन्याओं के बाद गायत्री उपासना से पुत्र पैदा हुआ। सन्तान दु: ख से दु:खी मनुष्यों को गायत्री उपासना एवं महत्वपूर्ण उपचार है।

बहावलपुर के राधाबल्लभ तिवारी को विवाह के १६ वर्ष बीत जाने पर भी कोई सन्तान न हुई तो उन्होंने गायत्री उपासना का आश्रय लिया, फलस्वरूप उन्हें एक कन्या और एक पुत्र की प्राप्ति हुई।

सरसई ग्राम के जीवन लाल नामक मनुष्य का तीन वर्षीय होनहार बालक स्वर्गवासी हो गया था। उनका घर भर बालक के बिछोह में उद्विग्न था। उन्होंने गायत्री की विशेष उपासना की। दूसरे मास उनकी पत्नी ने स्वप्न में देखा कि "उसका स्वर्गीय बालक गोदी में चढ़ आया है और जैसे ही उसने उसे छाती से लगाना चाहा कि बालक उसके पेट में घुस गया है।" इस स्वप्न के ९ महिने बाद जो पुत्र जन्मा वह हर बात में उसी मरे हुए बालक की प्रतिमूर्ति था। इस बच्चे को पाकर उनका शोकपूर्ण परिवार शान्त हो गया। बालक की सूरत, शक्ल, बोली, वाणी तथा शरीर में अनेकों निशान पहले बालक के थे। गायत्री माता की कृपा से स्वर्गीय बालक फिर उसी घर में लौट आया।

परस्पर के द्वेष एवं शत्रुता के कारण उत्पन्न होने वाले अनिष्ट सरलतापूर्वक शान्त होते देखे गये हैं। आक्रमणों से एवं शत्रुओं से रक्षा होती है। ऐसे भय जिनमें यह प्रतीत होत है कि कोई भारी मुसीबत सिर के ऊपर मँडरा रही है, अब तक भी कोई विपत्ति का पहाड़ सिर पर टूटने ही वाला है ऐसे समय में गायत्री माता का आश्रय उन आपदाओं को शान्त करने में बड़ा सहायक होता है।

रानीपुरा के ठा. जङ्गजीत सिंह राठौर एक डकैती केस में फँस गये थे। जेल में वे गायत्री का जप करते रहते थे। मुकद्दमें में निर्दोष छुटकारा मिला। बिझौली के बाबू उमाशंकर खरे के परिवार से गाँव के जाटों के साथ पुस्तैनी दुश्मनी थी। इस रंजिश के कारण कई बार खरे जी के यहाँ डकैतियाँ पड़ चुकी थीं और बड़े-बड़े नुकसान हुए थे। सदा ही जान जोखिम का अंदेशा रहता था। खरे जी ने गायत्री भक्ति का मार्ग अपनाया । उनके मधुर व्यवहार ने अपने परिवार को शान्त स्वभाव और गाँव वालों को नरम बना दिया। अब पुराना वैर भाव समाप्त होकर नई सद्भावना कायम हुई है। सब लोग प्रेमपूर्वक रहते हैं।

राजनंद गाँव के नारायण प्रसाद जी के बडे भाई पर कुछ लोगों ने फौजदारी मुकदमा चलाया। वह भारी मुकद्दमा ४ वर्ष चला। इसी प्रकार उनके छोटे भाई पर कत्ल का अभियोग चलाया गया। इन सब भाइयों ने गायत्री माता का अँचल पकड़ा और सब मुकद्दमों से उन्हें निर्दोष छुटकारा मिला।

हृदय नगर (मंडला) के शम्भु प्रसाद मिश्र गायत्री के अनन्य भक्त हैं। अपने से कई गुने साधन सम्पन्न निरोध को परास्त करके वे डिस्ट्रक्ट बोर्ड के चेयरमैन चुने गये। दिल्ली के प्रसिद्ध पहलवान गोपाल कृष्ण जब कोई बड़ी कुस्ती लड़ने जाते थे तो पहले गायत्री पुरश्चरण कराते थे, वे सदा ही विजय होकर लौटते थे। चन्दन पुरवा (हमीरपुर) के सत्यनारायण श्रीवास्तव एक अच्छे गायत्री उपासक थे। गुण्डों ने उन्हें अकारण सताने का साहस किया। सताई आत्मा का शाप गुण्डों पर ऐसा पड़ा कि उनमें से एक तो २४

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

घण्टे के अन्दर हैजे से मर गया। शेष को पुलिस एक भंयकर मुकद्दमें में पकड़ ले गई और वे पाँच-पाँच वर्ष की जेल काटकर छूटे। स्वामी योगानन्द जी को सताने वाले म्लेच्छों को शरीर में एक बार भारी अग्नि दाह तथा त्रास प्राप्त हुआ था।

माता की शरण लेने वाले व्यक्तियों के लिए गायत्री एक रक्षा करने वाली डाल है, जिसकी छाया में वे अपना बचाव ही नहीं करते अनीति करने वालों को समुचित दण्ड भी मिलता हुआ देखते हैं। निर्बल का बल भगवान् होता है। गज को ग्राह के फन्दे से छुड़ाने वाली, द्रौपदी की लाज बचाने वाली, बिल्ली के बच्चों को कुम्हार के अवे में से जीवित निकालने वाली, भरदूर पक्षी के अण्डे को महाभारत में गज घण्टे से बचाने वाली भगवान् की शक्ति का नाम ही गायत्री है, उसे जो कोई प्राप्त कर लेता है, वह अरक्षित नहीं रहता। जिसकी पीठ पर इतना बड़ा बल मौजूद हो उसे कहीं भी भय नहीं रहता और न त्रास की आशंका से उसे उद्विग्न होना पड़ता है।

मनुष्य के सत्कर्म से शुभ प्रारब्ध बनता है। अनिष्टों का परिमार्जन होता है। ग्रह दशा तथा कुसमय का कष्टदायक चक्र टलता है। ऐसे सत्कर्मों में गायत्री उपासना का स्थान बहुत ही महत्त्वपूर्ण है । इस मार्ग पर चलने से आत्मा को शान्ति तो मिलती ही है साथ ही सांसारिक अभावों तथा आवश्यकताओं की पूर्ति भी होती है।

गायत्री उपासना एक प्रकार का आध्यात्मिक व्यायाम है जिसका परिणाम जीवन शरीर को पुष्ट, बलवान एवं सुव्यवस्थित बनाना है। सकाम कामना के लिए की हुई गायत्री साधन से अभीष्ट परिणाम प्राप्त न भी हो तो भी उसका शुभ परिणाम अन्य मार्ग से अवश्य प्राप्त हो जाता है। कोई बड़ी कुश्ती पछाड़ने के लिए कोई व्यक्ति अखाड़े में जाया करे तो उसका शरीर दिन-दिन अवश्य मजबूत होगा। वह मनोवाञ्छित कुश्ती पछाड़ने में सफल न भी हो तो भी यह नहीं सोचना चाहिए कि उसका व्यायाम तथा पौष्टिक आहार व्यर्थ चला गया। कुश्ती वह भले ही हार जाये पर निरोगता, सौन्दर्य स्फूर्ति, जीवन शक्ति दीर्घजीवन, कमाने की क्षमता, बलवान सन्तान, शत्रुओं से निपट लेने को सामर्थ्य आदि अनेकों लाभ प्राप्त होते हैं, जिन्हें कुश्ती पछाड़ने से कम महत्त्वपूर्ण नहीं समझना चाहिए। इसी प्रकार गायत्री उपासना कभी भी असफल नहीं होती। अटल प्रारम्भ का कोई सुनिश्चय न टल सके तो भी अन्य अनेकों रीतियों से उपासना साधक के लिए शुभ परिणामों का आयोजन करती है।

कहा गया है कि—भगवान् जिस पर प्रसन्न होते हैं उसे सद्बुद्धि प्रदान करते हैं। इस पारस मणि को पाकर उसके चारों ओर की लोहे जैसी कलुषित वस्तुएँ तथा परिस्थितयाँ सोने जैसी बहुमूल्य एवं शोभायमान बन जाती हैं। जिन परिस्थितियों के कारण हमें क्लेश एवं असन्तोष रहता है उनका मूल हेतु हमारी नासमझी एवं गलत कार्य पद्धति को अपनाना ही है। जब हम अपने दृष्टिकोण को सुधार लेते हैं, तब अनेकों कठिनाइयाँ तो कठिनाइयाँ दिखाई ही नहीं पड़तीं, वरन् जीवन को शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल, हल्का बनाने एवं उपयोगी अनुभवों से परिपूर्ण कर देने वाली अमूल्य शिक्षाएँ एवं परीक्षाएँ दिखाई पड़ती हैं, उन्हें मनुष्य हँस-खेलकर काट लेता है। जो थोड़े से अटल प्रारम्भ भोग, बिना भोगे टल नहीं सकते, उन्हें सदबुद्धि युक्त मनुष्य धैर्य, साहस, विवेक और सन्तोषपूर्वक सहन कर लेता है। अविवेकी व्यक्ति उस थोड़े से कष्ट के लिए जितनी हाय-हाय मचाते हैं, उसका सौवां भाग भी परेशानी उसे नहीं होती। संसार की नाशवान् वस्तुओं एवं बदलती रहने वाली परिस्थितियों का क्रम उसे मालूम होता है। इसलिए अप्रिय घटनाएँ भी उसके लिए एक कौतूहल एवं मानसिक हेरफेर मात्र ही दिखाई पड़ती हैं।

सद्बुद्धि एक शक्ति है जो जीवन क्रम को बदलती है। उस परिवर्तन के साथ-साथ मनुष्य की परिस्थितियाँ भी बदलती हैं। रेडियो की सुई घुमा देने से कोई दूसरा प्रोग्राम सुनाई पड़ने लगता है। कुबुद्धि के मीटर से सद्बुद्धि की ओर सुई घुमाई जाती है तो पहले अप्रिय गाने बन्द होकर मङ्गलमय नवीन सन्देश सुनाई पड़ते हैं। गायत्री माता की ओर उन्मुख होने वाला व्यक्ति सद्बुद्धि तथा सुख-शान्ति का वरदान प्राप्त करता है।

●●●

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवनदर्शन : समग्र वाङ्मय

परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने जीवन भर जो अपनी लेखनी से लिखा, औरों को प्रेरित कर उनसे सृजनात्मक लेखन करवाया, पुस्तकों-पत्रिकाओं में जो प्रकाशित हुआ, समय-समय पर उनने अमृतवाणी के माध्यम से जो विचारों की अभिव्यक्ति की, विचारसार व सूक्तियाँ जो वे लिख गये या अनायास कभी कह गये तथा पत्रों के माध्यम से जो अंतरंग स्पर्श जन-जन को दिया, वह समग्र इस वाङ्मय के खण्डों में है । जिनके नाम इस प्रकार हैं :-

१. युगद्रष्टा का जीवन-दर्शन
समग्र वाङ्मय का परिचय
२. जीवन देवता की साधना-आराधना
३. उपासना-समर्पण योग
४. साधना पद्धतियों का ज्ञान और विज्ञान
५. साधना से सिद्धि-१
६. साधना से सिद्धि-२
७. प्रसुप्ति से जाग्रति की ओर
८. ईश्वर कौन है, कहाँ है, कैसा है ?
९. गायत्री महाविद्या का तत्वदर्शन
१०. गायत्री साधना का गुह्य विवेचन
११. गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार
१२. गायत्री की दैनिक एवं विशिष्ट अनुष्ठान-परक साधनाएँ
१३. गायत्री की पंचकोशी साधना एवं उपलब्धियाँ
१४. गायत्री साधना की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि
१५. सावित्री, कुण्डलिनी एवं तंत्र
१६. मरणोत्तर जीवन : तथ्य एवं सत्य
१७. प्राणशक्ति : एक दिव्य विभूति
१८. चमत्कारी विशेषताओं से भरा मानवी मस्तिष्क
१९. शब्द ब्रह्म-नाद ब्रह्म
२०. व्यक्तित्व विकास हेतु उच्चस्तरीय साधनाएँ
२१. अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवी व्यक्तित्व
२२. चेतन, अचेतन एवं सुपर चेतन मन
२३. विज्ञान और अध्यात्म परस्पर पूरक
२४. भविष्य का धर्म : वैज्ञानिक धर्म
२५. यज्ञ का ज्ञान-विज्ञान
२६. यज्ञ : एक समग्र उपचार प्रक्रिया
२७. युग-परिवर्तन कैसे और कब ?
२८. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-१
२९. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-२
(सतयुग की वापसी)
३०. मर्यादा पुरुषोत्तम राम
३१. संस्कृति-संजीवनी श्रीमद्भागवत एवं गीता
३२. रामायण की प्रगतिशील प्रेरणाएँ
३३. षोडश संस्कार विवेचन
३४. भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्त्व
३५. समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान
३६. धर्मचक्र प्रवर्त्तन एवं लोकमानस का शिक्षण
३७. तीर्थ सेवन : क्यों और कैसे ?
३८. प्रज्ञोपनिषद्
३९. नीरोग जीवन के महत्त्वपूर्ण सूत्र
४०. चिकित्सा उपचार के विविध आयाम
४१. जीवेम शरदः शतम्
४२. चिरयौवन एवं शाश्वत सौन्दर्य
४३. हमारी संस्कृति : इतिहास के कीर्ति स्तम्भ
४४. मरकर भी अमर हो गये जो
४५. सांस्कृतिक चेतना के उन्नायक : सेवाधर्म के उपासक
४६. भव्य समाज का अभिनव निर्माण
४७. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता
४८. समाज का मेरुदण्ड सशक्त परिवार तंत्र
४९. शिक्षा एवं विद्या
५०. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-१
५१. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-२
५२. विश्व वसुधा जिनकी सदा ऋणी रहेगी
५३. धर्मतत्त्व का दर्शन व मर्म
५४. मनुष्य में देवत्व का उदय
५५. दृश्य जगत् की अदृश्य पहेलियाँ
५६.ईश्वर विश्वास और उसकी फलश्रुतियाँ
५७. मनस्विता प्रखरता और तेजस्विता
५८. आत्मोत्कर्ष का आधार- ज्ञान
५९. प्रतिगामिता का कुचक्र ऐसे टूटेगा
६०. विवाहोन्माद : समस्या और समाधान
६१. गृहस्थ : एक तपोवन
६२. इक्कीसवीं सदी : नारी सदी
६३. हमारी भावी पीढ़ी और उसका नवनिर्माण
६४. राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने ?
६५. सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक क्रान्ति कैसे ?
६६. युग निर्माण योजना-दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम
६७. प्रेरणाप्रद दृष्टान्त
६८. पूज्यवर की अमृतवाणी (भाग एक)
६९. विचारसार एवं सूक्तियाँ (प्रथम खण्ड)
७०. विचारसार एवं सूक्तियाँ (द्वितीय खण्ड)

वाङ्मय के आगे प्रकाशित होने वाले ३८ खण्ड निम्न विषयों पर होंगे--

७१. मनोविकारों की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि
७२. तनाव के कारण एवं उनके निवारण के उपाय
७३. चिन्तन का विधेयात्मक-निषेधात्मक स्वरूप
७४. पुरुषार्थ और मानवी जिजीविषा
७५. संकल्प बल का अनूठा प्रभाव
७६. बाल-विकास के विविध सोपान
७७. बाल मनोविज्ञान का सही उपयोग
७८. पारिवारिकता में सुसंस्कारों का योगदान
७९. पारिवारिक पंचशील और परिवार-निर्माण
८०. व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया
८१. विचार-विज्ञान का महत्त्व
८२. सामाजिक समस्याएँ और उनका समाधान
८३. समाज-निर्माण के विभिन्न चरण
८४. सामाजिक जीवन में सद्गुणों की भूमिका
८५. नर-नारी की सामान्य समस्याएँ और उनका समाधान
८६. नारी जागृति की बाधाएँ एवं उनके निराकरण के उपाय
८७. पारिवारिक जीवन: एक तप-साधना
८८. दाम्पत्य जीवन के संयुक्त दायित्व
८९. नीति-विज्ञान और नैतिकता
९०. कृषि, व्यवसाय और उद्योग की उन्नति के आधार
९१. पूज्य गुरुदेव के स्फुट विचार
९२. पूज्यवर की अमृतवाणी-२
९३. पूज्य गुरुदेव की दिव्य अनुभूतियाँ
९४. पूज्य गुरुदेव के लिखे स्मरणीय पत्र
९५. तंत्र महाविज्ञान विवेचन
९६. मंत्र महाविज्ञान विवेचन
९७. महापुरुषों के प्रेरक जीवन-प्रसंग
९८. प्रेरणाप्रद कथा एवं गाथाएँ
९९. हृदयस्पर्शी विविध कथाएँ
१००. शान्तिकुंज का प्रज्ञा अभियान
१०१. युग निर्माण मिशन का क्रमिक इतिहास
१०२. वेद-सार-चिन्तन
१०३. पुराण-शोध-सार
१०४. उपनिषद् और आरण्यकों की दार्शनिक विषयवस्तु
१०५. काव्य-गीत-मंजूषा
१०६. मिशन के रचनात्मक कार्यक्रमों का क्रमिक इतिहास
१०७. मिशन की लोक-व्यवहार संहिता
१०८. गुरुदेव की अपने आत्मीय जनों से अपनी बातें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

HIN-B-0046